प्रकाशक
जयतकृष्ण ह दवे
मंत्री, गुजराती साहित्य परिषद
भारतीय विद्याभवन, मुंबई–७

प्रथम आवृत्ति, सप्टेम्बर, १९५५

पंदर रूपिया

मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद – १४

प्रकाशकना बे बोल

गुजराती साहित्य परिषद तरफथी स्व० श्री रामनारायणभाई विरचित 'बृहत् पिंगल'नो आकर ग्रंथ प्रसिद्ध करता अमने घणो आनंद थाय छे; पण साथे दु:खनी वात ए छे के आ आखो ग्रंथ एमनी इच्छा प्रमाणे छपाईने तैयार थयो, एमनी प्रस्तावना पण लखाई, अने प्रसिद्ध थवानी तैयारीमां हतो ते दरम्यान ता० २१ ऑगस्ट १९५५ने दिवसे एमनुं हृद्‌रोगना हुमलाथी ओचिंतुं अने आकस्मिक अवसान थयुं, अने वर्षोनी अथाक महेनत बाद तेमनो आ प्रसिद्ध थतो ग्रंथ जोवाने तेओ पार्थिव देहे विद्यमान नथी एमना शास्त्रीय परिशीलनना समृद्ध परिपाकरूपे लखायेलो आ ग्रंथ चिरंजीवी रहेवाने ज सर्जायो छे अने आ यशःकायने जरामरणज कशो भय नथी

दलपतराम, रणछोडलालभाई, केशवलाल ध्रुव वगेरे विद्वानोए आ विषय खेड्यो छे पण जेम कर्ता प्रस्तावनामां लखे छे तेम कोईए पोतानी दृष्टिए सळंग पिंगळ लखवानो प्रयत्न कर्यो नथी कर्ताए एमनुं पोतानुं सळंग शृंखलाबद्ध निरूपण प्रकरणोमां उतारेलुं छे अने विस्तृत चर्चाओ परिशिष्टमां आपेली छे कर्ताए ऐतिहासिक दृष्टिए पण चर्चा करी छे, साथे वैदिक छन्दोथी मांडी मराठीना ओवी अभंगोनी पण चर्चा करी छे. प्रवाही छंदनी चर्चा माटे एक स्वतंत्र परिशिष्ट आप्युं छे

आ ग्रन्थ मोटे भागे कर्ताए भारतीय विद्याभवनमां तेमनी नियुक्ति दरम्यान लख्यो छे आ विषयमां जेटलां पुस्तको उपलब्ध हतां ते सघळां श्री रामनारायणभाईए जोयां छे, विचार्यां छे, अने अनेक प्रश्नो उपर पोतानो नवीन दृष्टिनो प्रकाश पाड्यो छे हिन्दी अने मराठी ग्रंथकारोना मतनी पण आमां चर्चा छे अन्य भाषाना विद्वानो आ ग्रंथनो पण उचित विचार करे ए उद्देशथी आखो ग्रंथ देवनागरीमां छपायो छे

श्री रामनारायणभाई १९४६ नी राजकोटनी सोळमी गुजराती साहित्य परिषदना प्रमुख हता आजे साक्षरभूमि नडियादमां श्री गोवर्धनरामभाईना

शताब्दमहोत्सव प्रसंगे अने गुजराती साहित्य परिषदनां ५० वर्ष पूरा थतां होई तेना सुवर्णमहोत्सवप्रसंगे आ छन्दःशास्त्रनो महान अने आकर ग्रंथ जेमां पिंगळनी शास्त्रीय अने सर्वांगीण समीक्षा छे तेने प्रसिद्ध करी स्व० श्री रामनारायणभाईने श्रद्धांजलि आपतां आनंद थाय छे.

आश्विन शुक्ल १० सं. २०११
ता० २६–१०–१९५५
भारतीय विद्याभवन
मुंबई

जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे
मंत्री, गुजराती साहित्य परिषद

अर्पण

मारां मातापिताने —

प्रस्तावना

१९३९ मां, सद्गत डॉ० आनन्दशंकर ध्रुवना मीठा आग्रहने वश थईने में 'प्राचीन गुजराती छंदो' पर पुस्तक लखवानु काम स्वीकार्युं; त्यारे कामनो प्रारंभ करता समजायु के आ कामनी मोटामा मोटी मुश्केली ए छे के, पिंगलना भिन्नभिन्न छंदोने अंगे अने नवा प्रयोजायेला छंदोने अंगे, आपणा विद्वानोए पोतपोतानी दृष्टिए चर्चा करेली छे, पण ए बधी छूटक छे; कोईए पोतानी दृष्टिए सळंग पिंगल लखवानो प्रयत्न कर्यो नथी. आथी मारुं मन समग्र पिंगलना निरूपण तरफ दोरायु अने मारा मनमा पिंगलनिरूपणना मुख्यमुख्य सिद्धान्तो अने नियमो नक्की थया ते पछी ज हु स्वीकारेलु काम करी शक्यो; जो के ए मात्र ऐतिहासिक समालोचना होनाथी त्या आखा पिंगलना निरूपणने अवकाश न हतो. ए काम, ए पुस्तक पूरू करी तरत हाथमा लेवानो में निश्चय कर्यो.

छता आ काम बहु मोटु छे, जेम जेम हुं करतो गयो तेम तेम मने तेना भिन्नभिन्न प्रदेशोना विस्तारो वधता जता ज देखाया छे. अने श्री क. मा. मुनशीए आ ज कामने माटे भारतीय विद्याभवनमा मारी नियुक्ति न करी होत तो ते आज सुधीमा पण हु पूरु करी शक्यो न होत अत्यारे आ ग्रन्थ बहार पाडता हजी, एवा अनेक मुद्दाओ अने प्रश्नो मने सूझे छे जेना पर महेनत करी दृष्टान्तो भेळा करी, वस्तुनी व्यवस्था करी तेमा प्रवर्तता नियमो बतावबा जोईए. पण आवा मोटा विषयमा, अने तेना नवी दृष्टिना निरूपणमा तो एम बन्या ज करवानु, अने एवी सपूर्णतानो लोभ करवा जता कदाच आ पुस्तक ज अधूरू रही जाय एवो भय रहे छे. एटले ए काम भविष्यमा यथावकाश करवानु राखी मूळ योजनानु पुस्तक पूरू करवा तरफ में लक्ष राखेलु छे.

भारतीय विद्याभवननी सेवा दरमियान आ पुस्तकना बार प्रकरणो लखाया. बाकीना परिशिष्टो अने प्रकरणो ते पछी लख्या छे केटलाक लखाई गयेला प्रकरणो, गुजरात विद्यासभामा जूना पुस्तको उपलब्ध थता फरी लख्या छे

विषयनिरूपणमा में मारु सळग शृंखलाबद्ध निरूपण प्रकरणोमा उतारेलु छे ए निरूपणने अगे ऊभा थता प्रश्नो उपरनी, अथवा निरूपण साथे अनिकट सबध धरावती बाबतोनी चर्चा ते ते दरेक प्रकरणने अते आपेला परि-

शिष्टोमां करेली छे आखो एक विषय अमुक प्रकरणोमा चर्चाई जाय ते पछी ए आखा विषय विशे कंईक विशेष कहेवानु होय तो ते पण परिशिष्टमां कहेलु छे. जेम के मात्रामेळ छंदोनो विषय पूरो थता ए दृष्टिए जोवानी केटलीक विशेष विगतो स्वतंत्र परिशिष्टोमा आपी छे. पुस्तकने अंते प्रवाही छंदनी चर्चा पण एक स्वतंत्र परिशिष्टमा आपेली छे.

आ पुस्तकमा विषयना नवीन निरूपणनु साहस कर्यु छे तेथी हिंदी मराठी वगेरे भाषाना विद्वानो पण आने विचारमा ले एवा मनोरथथी आखु पुस्तक देवनागरीमा छपाववानो निर्णय कर्यो छे. आशा छे के आ अतिमनोरथ नही नीवडे.

पुस्तकने देवनागरीमा छपाववानो निर्णय कर्यो तेथी अवतरणोनी जोडणी बाबत एक फेरफार कर्यो छे, ते गुजराती वाचको आगळ स्पष्ट करवो जोईए. गुजराती काव्यमा प्रचलित जोडणीमा छदने अनुकूल लघुनो गुरु के गुरुनो लघु करवानी छूट छे अत्यारनो आपणो गुजराती काव्यनो सुपरिचित वाचक आ जाणे छे अने जरा पण आयास विना प्रचलित जोडणीने पण छंदने अनुकूल करी वाची शके छे. पण हिंदी मराठी वाचक आम करी शके नहीं. तेथी बनी शके त्या सुधी में काव्यना अवतरणोमा छदोनुकूल जोडणी करी छे. क्याक ज एटलाथी न पते त्या ह्रस्वनु आवु ⌣ अने दीर्घनु आवु — चिह्न करेलु छे. तेम छता सरतचूकथी क्याक जोडणीना फेरफारमा स्खलन थयु हशे; क्याक चिह्नो ऊडी गया हशे ते विद्वानो दरगुजर करशे एवी आशा छे.

आ काम दरमियान मने जे अनेक मित्रोए सहाय करी छे तेमनु स्मरण करतां एक विशेष आनद थाय छे. आ पुस्तकमां छदोना मुख्य चार प्रकारो पर्की त्रण प्रकारो —- मात्रामेळ, सख्यामेळ अने पद के देशी —- ने सगीतना ताल साथे सबंध छे. अने छेल्लो पद के देशी तो छद होवा साथे गेय पण छे, ए रीते आ विषयनो घणो मोटो प्रदेश, सगीत साथे संबध धरावे छे, एटले घणा प्रश्नोमा मारे आपणा गुजरातना संगीतज्ञो साथे चर्चा करवी पडी छे. पडित श्री ओमकारनाथ साथे में ठीक ठीक समय लई चर्चाओ करी छे. श्री मामासाहेब, श्री ज्योतीन्द्र दवे, अने श्री रमणलाल महेताए बंने शास्त्रोना ज्ञानथी मारा विषयने परिष्कृत करवामा मदद करी छे. श्री उमाशंकर जोशी, प्रो. रा. व. आठवले अने श्री जयशंकर (सुदरी)ए आत्मीयताथी में मागेली वस्तु पूरी पाडी छे. श्री उमाशंकर जोशीए मारी मादगीमा हायप्रतनो केटलोक महत्त्वनो भाग जोई आपी मने अशक्त थई पडे एवा आयासथी बचावी लीधो छे. श्री नगीनदास पारेखे, लेखक तरीकेनी तेमनी चोकसाई ओणपट अने पिंगलना अभ्यासनो मने घणो ज लाभ खूब निष्ठापूर्वक

आपेलो छे प्रो० चीमनलाल त्रिवेदीए शब्दसूची वगेरेनु काम लई मारा परनो बोजो ओछो कर्यो छे श्री जीवणजी देसाईए नवजीवन प्रेसमा आ ग्रन्थ सारी रीते छपाय तेने माटे काळजी लीधी छे ते माटे तेमना ऋणी छु, अने आ ग्रन्थना छापकामना खास कर्मचारीओ श्री बालुभाई पारेख, अने श्री बालमुकुन्द दवेए जे ममत्वथी अने उत्साहथी आ काम करेलु छे तेनु स्मरण करता सतोष अने[1] [आनद थाय छे]

गुजराती साहित्य परिषदे आ मोटो ग्रथ पोताना प्रकाशन तरीके प्रसिद्ध करीने ग्रन्थने गौरव आप्यु छे आना अनुसधानमा एक बाबत तरफ विद्वानोनु ध्यान खेंचवानी जरूर जणाय छे पुस्तकना अतना प्रकरणो अने परिशिष्टोमा देशी के पदोनु निरूपण छे. ए आखो प्रदेश पिंगलमा नवो लीधेलो छे एनु माग निरूपण पिंगलनी दृष्टिनु ज छे, पण एटलु बस नथी. ए देशीओनु खरु स्वरूप ए गवाय त्यारे ज मूर्त थाय एटले आपणा विश्वविद्यालयो अने विद्योपसेवी महान मस्थाओए एनी रेकर्डो उतरावी एनु स्वरांकन करावी लेवु जोईए ए आखु साहित्य आ रीते उताराशे तो ज ए जीवशे, अने जीवशे तो जरूर विकसशे, पण एम नहीं थाय तो ते कदाच ऐभागु साहसिकोना हाथमा पडी बगडशे, अने एक अमूल्य खजानो लुप्त थवा देवानु लाछन गुजरातने शिरे रहेशे

ता० २५–४–'५२[2] रामनारायण वि० पाठक
(जुलाई-ऑगस्ट, १९५५)
मुबई

१ आ वाक्य हस्तलेखमा अधूरु छ

२ आ तारीख, पुस्तक लखाई पूरु थयु के तुरत लखायेली प्रस्तावनाना मूळ मुसद्दानी छे एनी उपर एमणे एवी नोध लखी राखी हती के आ प्रस्तावना आखु पुस्तक छपाई रह्या पछी ज छपाववी, कारण, पुस्तक पूरु थता सुधीमा कदाच एमा कईक फरफार पण करवो पडे पुस्तक पूरु छपाई रह्या पछी एमणे प्रस्तावनामा केटलाक फेरफारो अने उमेरा कर्या पण खरा अहीं प्रस्तावनानो ए सुधारेलो पाठ छाप्यो छे एटले एनी नीचे १९५२नी साथे १९५५नी साल पण मूकी छे अही ए पण नोधवु जोईए के आ ग्रथमा न चर्चायेला एवा एक बे मुद्दानो निर्देश लेखक सुधारेली प्रस्तावनामा करवा मागता हता, अने एटला माटे ज ए प्रेसने मोकली नहोती, पण दुर्भाग्ये ए पूरी थई शकी नहि.

—हीरा पाठक

संक्षेपोनी समज

आ. का. म.	आनंद काव्य महोदधि.
क. के.	कलापीनो केकारव.
का. द.	काव्यदर्पण.
का. मी. चौ.	काव्यमीमांसा चौखम्बा सिरीझ.
का. प्र. झ.	काव्यप्रकाश. झळकीकर संपादित.
का. शा. र.	काव्यानुशासन रसिकलाल परीख संपादित.
का. सू. वृ.	काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.
के का.	केटलांक काव्यो.
के. कृ.	केशवकृति.
गा. व पा.	गायन वादन पाठशाळा.
छन्दोनु.	छन्दोनुशासन.
छ. प्र.	छन्दःप्रभाकर.
छ. मं. क.	छन्दोमंजरी — कलकत्ता सिरीझ.
–रा.	रामधन दत्त शास्त्री संपादित.
छ. र.	छन्दोरचना.
छ. शा नि.	छन्दःशास्त्र. निर्णयसागर.
छ. सा. सं.	छन्द सारसंग्रह.
द. का.	दलपत काव्य.
द. पिं.	दलपत पिंगल.
द. र.	दयाराम रसमुधा.
न. का.	नरसिंह काव्य
प. ऐ. आ.	पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना.
परा. स्मृ.	पराशर स्मृति.
पा. सू.	पाणिनि सूत्र.
पिं. सू.	पिंगल सूत्र.
प्र. पु.	प्रवास पुष्पांजलि.
प्रा पिं.	प्राकृत पिंगल. Bibliotheca Indica.
प्रा का. सी.	प्राचीन काव्यमाला सिरीझ.
बरुआ.	A book of prosody with Āgneya-chandahsār & Vṛttaratnākara by Anandoram Barooa.
बृ. का. दो.	बृहद् काव्यदोहन
भ. ना शा.	भरत नाट्यशास्त्र काशी.
–गा	गायकवाड ओरियेन्टल सिरीझ.
–चौ.	चौखंबा सिरीझ.
–नि.	निर्णयसागर प्रेस.
र रू गी	रघुनाथ रूपक गीतांरो.
र. पिं.	रणपिंगल.
वृ. र. नि.	वृत्तरत्नाकर. निर्णयसागर;
–चौ.	चौखंबा सिरीझ.
वृ. वा.	वृत्तवार्तिक.
शि. व.	शिशुपालवध.
सा द.	साहित्यदर्पण
–नि.	निर्णयसागर.
सं. र.	संगीत रत्नाकर.
सा वि.	साहित्य अने विवेचन.
सु ति	सुवृत्ततिलक.
H. S. L.	History of Sanskrit Literature.

अनुक्रमणिका

शुद्धि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१५	संयोगपरम्	संयोगपरम्
६९	९	मन्यते	तन्मते
१२२	११	छदं तथा	छदस्तथा
१७०	१९	लीलातणी	लीला — तणी
२१६	७	गागागालगा	गागालगा
३७४	१७	प्रमाणे	प्रमाण
५११	छेल्ली २	अति	अनी

बृहत् पिंगल

यस्य मात्रां समालम्ब्य, जगत्यां जगतीव वै ।
प्रपंचितानि छंदांसि, तं कालं प्रणतोऽस्म्यहम् ।।

आलंबी जेनि मात्राने, जगमां जगती सम,
प्रपंचित थया छंदो, प्रणमूं तेह कालने.

१

उपोद्‌घात

पिंगल के छन्दःशास्त्र ए छन्द के पद्यरचनाना बंधना स्वरूपनुं निरूपण करे छे. वाङ्‌मयना बे स्वरूपो छे: गद्य अने पद्य. तेमा गद्य सामान्य व्यवहारमा बोलाती भाषानु स्वरूप छे. तेमा भाषा केवळ अर्थने अनुकूल रीते, अर्थने अनुसरीने बोलवानी होय छे. पद्यनी रचना विशेष करीने काव्यने माटे योजायेली होय छे — जोके काव्य गद्यमा पण होई शके, होय छे, जेम के कादंबरी. पद्यनु पठन पण अर्थने ध्यानमा राखीने करवानु होय छे, पण ते उपरात ते पद्यनी रचनाना बंधने अनुसरीने, ते बंधना संस्कार पडे एवी रीते करवानु होय छे वाणी ज्यारे काव्यनु प्रयोजन सिद्ध करवा अमुक मेळवाळु स्वरूप ले छे त्यारे ते पद्य कहेवाय छे. आ मेळ अमुक मापथी सधाय छे. वाणी शब्दोनी अने शब्दो अक्षरना बनेला छे. अक्षर ए वाणीना उच्चारनो एकम छे. पद्यरचनामा प्रयोजाता अक्षरोना उच्चार बे स्वरूपे थाय छे, जेने लीधे अक्षरो लघु के गुरु अने एक के बे मात्राना गणाय छे कविओ पोतानी कृतिमा वाणीने प्रयोजता तेना अक्षरोना मापथी अनेक जातनी हृद्य आकृतिओ रचे छे. आ आकृति के आकार ते छन्द अने छन्दोबद्ध वाणी ते पद्य छन्दो अनेक होई शके. कविओए आवा अनेक छन्दो आज सुधीमा रच्या छे, अने हजी पोतानी प्रतिभाना बळथी नवा नवा रचता जाय छे. पिंगल आ छंदोना बंधनो अने तेना मेळनो अभ्यास करे छे.'

बधी भाषाना अक्षरो एक ज रीते उच्चाराता नथी, अने बधी भाषानी पद्यरचनाओ अक्षरोच्चारना एक ज तत्त्वने अवलबती होती नथी. आपणी गुजराती अने हिंदनी बीजी संस्कृतोद्‌भव भाषाओमा अक्षरना लघुत्व-गुरुत्व अने मात्राथी पद्यना मापो रचाय छे. अंग्रेजी भाषामा शब्दना उच्चारणमा अमुक अक्षरमा उच्चाराता एक्सन्ट (accent) एटले स्वरभारना तत्त्वने अवलंबीने जुदी जुदी पद्यरचनाओ थाय छे. आपणा गवेषणनो प्रदेश गुजरातीमा थती पद्यरचनानो छे अलबत्त गुजराती जेवी बीजी संस्कृतोद्‌भव भाषानी पद्यरचनाओमा कोई तात्त्विक भेद नथी. अने ए रीते एवी भाषानी पद्यरचनाना अभ्यासथी पण आपणी पद्यरचनाओ उपर प्रकाश पडे. वळी आ बधी

भाषाओना सीमाडा लगोलग अने सेळभेळ छे, अने तेमनी वच्चे वाङ्मय-व्यवहार पण छे, जे हवे तो वधतो जाय छे, तेने लीधे एक भाषाना पद्य उपर अन्य भाषाना पद्ये अनेकविध असर करी छे, अने ए असर वधती जवानी छे ए दृष्टिए पण संस्कृतोद्भव बीजी भाषाना पिंगलो पण आपणा गवेषणने उपकारक थाय.

समग्र काव्यमा छंदनुं शुं स्थान छे, छन्द काव्यना कया अशने अव-लबे छे ते एक दृष्टात लई स्पष्ट करवा प्रयत्न करीए अमुक प्रयोजन माटे आ दृष्टान्त गुजराती कवितामाथी न लेता तुलसीदासना रामायणमाथी लउ छु —

विकसे सरसिज नानारगा
मधुर मुखर गुजत बहु भृगा।
बोलत जलकुक्कुट कलहसा
प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा॥

— अरण्यकाड, पृ० ६७६.

आ पपा सरोवरना वर्णननी एक चोपाई छे धारो के ए चोपाईने आपणे तुलसीदासनी चोपाईओ गवाय छे ते रीते गवाती साभळी तो ए चोपाई साभळती वखते सगीतना जे स्वरो आपणे साभळ्या ते स्वरो छदनो विषय नथी छन्द एनो ए रहे अने कोई बीजो सगीतकार तेने जुदा स्वरोमा गाई शके. एटलु ज नहि, आपणे अग्रेजी काव्यना परिचयथी जे सगीतथी स्वतत्र पठन करवाना सस्कार मेळव्या छे ते सस्कारो प्रमाणे आपणे आ चोपाईने सगीतना स्वरोने प्रयोज्या विना पण पठी शकीए अर्थात् छन्दने सगीतना स्वरो साथे सबध नथी तेम ज आ चोपाईमा जे शब्दोच्चारनु माधुर्य छे तेने अने छदने पण कशो सबध नथी आ काव्य उच्चाराता जे आ काव्यनो अर्थ नही समजतु होय तेने पण आ काव्यना अक्षरोना उच्चारणमा एक प्रकारनु माधुर्य जणाय हशे कह्यु छे के

येऽपि शब्दविदो नैव नैव चार्थविचक्षणा ।
तेषामपि सता पाठ सुष्ठु कर्णरसायनम् ॥

— का० मी० चौ० १–७, पृ० १०७–०८

जेओ शब्दने जाणता नथी, तेम ज अर्थ करवामा विचक्षण नथी तेमने पण सारा माणसोए करेलो (काव्यनो) पाठ सारी रीते कर्णरसायन बने छे

आ प्रकारनु उच्चारमाधुर्य चोपाईनी बीजी पंक्तिमा आवता 'मधुर मुखर' शब्दोना उच्चारथी, अने त्रीजी पंक्तिमा 'ल' अने 'क'ना उच्चारथी तेम ज अनुस्वारना रणकारथी अनुभवाय छे. पण आ माधुर्य (आने काव्यशास्त्रमा माधुर्य ज कहेलुं छे)ना तत्त्व साथे एटले अक्षरोनां स्थान साथे पण छन्दने संबंध नथी. काव्यनो अर्थ न समजायो होय एवो विकल्प आपणे माधुर्यने अंगे विचारी लीधो एटले काव्यनो अर्थ ए पण छन्दना अवलंबननु प्रत्यक्ष तत्त्व नथी. ए प्रत्यक्ष तत्त्व ते अक्षरोनु माप छे. उपरनी चोपाईनो अक्षरविन्यास एवो छे के तेमा दरेक पंक्तिमा चच्चार मात्राना अक्षरगुच्छोना चार चार आवर्तनो थाय छे. गुरुनी बे मात्रा अने लघुनी एक मात्राना धोरणे दरेक अक्षर उपर तेनी संख्या मूकी हुं ए नीचे दर्शावुं छु:

१ १ २   १ १ १ १   २ २ २ २
विकसे सरसिज नानारंगा
१ १ १   १ १ १   २ १ १   १ १   २ २
मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।
२ १ १   १ १ २   १ १   १ १ २ २
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा
१ १   १ २ १   १ १   १ १ १   १ २ २
प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा ॥

अही 'विकसे', 'सरसिज', 'नाना', 'रंगा', ए दरेक शब्द चच्चार मात्रानो छे, ते पछी 'मधुरमु' एटलाथी एक चार मात्रानो अक्षरगुच्छ रचाय छे, पछी 'खरगुं', 'जत बहु', 'भृंगा' ए प्रमाणे, अने ते पछी 'बोलत', 'जलकु', 'क्कुटकल', 'हंसा', ए प्रमाणे गुच्छो रचाय छे. पण पछीनी पंक्तिमा अर्ध सुधी एवा गुच्छो रचाता नथी, अर्ध एक आठ मात्रानो गुच्छ पूरो थई पछी, पाछा 'करतप्र' अने 'शंसा' एवा चार मात्राना बे गुच्छो रचाय छे. आ अपवादनो खुलासो आगळ ए छन्दनी चर्चाना प्रसंग पर रहेवा दई आपणे एटलु कही शकीशु के आमा चच्चार मात्राना चार अक्षरगुच्छोथी एक एक पंक्ति के चरण थाय छे अने एवी चार पंक्तिनो एक छन्द बने छे अर्थात् छन्द वाणीना मापथी बने छे अने ए माप ते अक्षरना उच्चारणनु माप छे अक्षरना उच्चारणने अमुक माप छे, अने कवि ए मापनो उपयोग करीने छन्द रचे छे. कवि एवी रीते अक्षरोने योजे छे के ए अक्षरोना उच्चारणना मापथी अमुक छन्द रचाय. अने अक्षरना मापथी छन्दो रचवानी पद्धतिओ पण जुदी जुदी होय छे. दाखला तरीके उपरनी चोपाईमा दरेक अक्षरगुच्छनी मात्रासंख्या नियत छे, अने दरेक पंक्तिमा एवा अक्षरगुच्छनी संख्या पण नियत छे. पण एक चरणना कुल

अक्षरोनो नियम नथी पहेली पंक्तिमां कुल ११ अक्षरो छे, बीजीमां १३ छे, त्रीजीमां १२ छे, अने चोथीमां वळी १३ छे आ जातनी रचनामां अक्षरनी कुल संख्या सरखी होवी नथी, होई शके पण नहीं ए आपणे आगळ जोईशु पण एक बीजा प्रकारनी रचना छे तेमां एनो पण नियम होय छे जेम के —

शिखरिणी

हवे तो मेदाने परतनु दिसे छे विचरती,
विशेषे सामे, त्या त्वरित चरणोनी गति थती,
रह्या बन्ने बाजू तरुवर, नहीं काइ वचमां,
वसेलू आवीने पण सकल सौन्दर्य मचमां।
—'देवयानी', पूर्वालाप.

आ छन्दमां जोईशु तो दरेक पंक्तिमां सतर अक्षरो छे एटलु ज नही, पहेली पंक्तिमां पहेलो अक्षर लघु छ, तो बधेय ए स्थाने लघु ज आववानो, ते पछी पाच गुरु आवे छ, ते दरेक पंक्तिमां एम ज आववाना आ प्रमाणे मापोनी आकृतिओना प्रकारो जुदा जुदा होय छे पण माप विना छन्द नथी थई शकतो, अने ए माप अक्षरना उच्चारणतत्त्वनु माप छ आ मापथी एक प्रकारनो वाणीनो मेळ अनुभवाय छे ए मेळ ए मापबद्ध वाणीना उच्चारणमांथी अनुभवाय छे,—पछी आपणे काव्य जाते पठता होईए, के कोईने पठतो सामळता होईए, के काव्य वाचता कल्पनाना काने सांभळता होईए काव्य श्राव्य छे, तो ए वाणीनो मेळ पण श्राव्य छे पद्य एटले मापथी सिद्ध सुमेळवाळी वाणी पद्यनी विशिष्ट आकृति के आकार ते छन्द

आपणे जोयु के छन्दोनु अवलम्बनतत्त्व वाणीनो अक्षर छ, छन्दोनु माप अक्षरना लघुत्व गुरुत्व अने मात्राथी रचाय छे पण एनो अर्थ ए नथी के काव्यमां छन्दने अर्थ साथे लेवादेवा ज नथी काव्यनु सौन्दर्य मुख्यत्वे तेना अर्थथी निष्पन्न थाय छे अने काव्यना उच्चारमाधुर्यनी पेठ ज काव्यनो छद पण अर्थने पोषवा प, अर्थने सुन्दर करवा ज आवे छे खरु तो एम कहेवु जोईए के काव्यना ए अर्थ माटे वाणीनो छन्दरूप आकार आवश्यक हतो कोई कहे के मात्र छन्दमां ते एटलु बधु एवु शु छे? पण उपरनी चोपाई के शिखरिणीनो पद्यबंध छोडी नाखी तेने गद्यमां मूकी जोईशु तो जणाशे के ए वाणी सुन्दर नथी रहेती कदाच एम पण लागे के ए छन्द विना ए ज अर्थनी वाणी पछी कहेवा जवी पण नथी रही। चोपाईना लकार अने ककारना अनुप्रासो छदमां शोभे छे ते गद्यमां नही शोभे, अस्थाने लागशे माटे ज

काव्यसाहित्यनो प्रारंभ थयो त्यारथी ते छन्दमां ज वहेतुं आव्युं छे. अने जोके काव्य गद्यमां होय छे छतां हजी पण छन्द ज काव्यनुं स्वाभाविक वाहन गणाय छे. ते एटले सुधी के घणा तो छन्दमां आवे ते बधाने काव्य गणी काढे छे. पण एम नथी ए पण साथे साथे कहेवुं जोईए. काव्य मुख्यत्वे तेना अर्थथी काव्य बने छे, अने छन्द ए तेनो बाह्य आकार छे, तेना उच्चारनो आकार छे. अने काव्यने उपकारक थवा सिवाय तेने कोई स्वतंत्र प्रयोजन नथी. अने माटे ज कुशळ कवि पोतानी प्रतिभाथी वस्तुने अनुकूल ज छन्द योजे छे.

आपणे जोयुं के अक्षरोना लघुत्व-गुरुत्व अने तेनी मात्राथी छन्दो रचाय छे. एटले पिंगलनो पहेलो प्रश्न ए छे के अक्षरनुं स्वरूप शुं अने तेना लघुत्व-गुरुत्व अने मात्रानुं स्वरूप शुं?

अक्षर ए बोलाती वाणीनो एकम छे. आ एकम माटे जुदा जुदा शब्दो योजाय छे. पण प्राचीन परंपरा[१] अने शास्त्रव्यवस्थानी सगवड बन्ने जोतां ए एकम माटे अक्षर शब्द योजवो ठीक छे. आपणे बोलाती वाणीना एकमनी वात करीए छीए एटले फलित थाय छे के बधा स्वरो अक्षरो छे, स्वर विनाना व्यंजनने अक्षर गणी शकाय नहीं. कारण के स्वर ज स्वतंत्र उच्चारी शकाय छे, स्वर विना व्यंजन स्वतंत्र उच्चारी शकातो नथी. पण एक स्वर एकलो बोलाय तो अक्षर छे, ते साथे ए पण स्वीकारवुं जोईए के एक स्वरने आधारे जे व्यंजनो बोलाय ते पण ए अक्षरनुं ज अंग छे. अर्थात् दरेक स्वर, ते व्यंजन सिवाय बोलातो होय त्यारे ते एकलो स्वर, अने व्यंजनो साथे बोलातो होय त्यारे ते स्वरने आधारे जे व्यंजनो बोलाता होय ते साथेनो आखो उच्चारपिंड ते अक्षर छे. अर्थात् 'अक्षर' शब्दमां प्रथम आवतो एकलो 'अ' स्वर ए अक्षर छे, पछी आवता 'अ' अने तेना आधारे रहेला बन्ने व्यंजनो 'क्ष्' साथेनो आखो उच्चारपिंड 'क्ष' ए पण एक अक्षर छे, अने 'र' पण ए प्रमाणे एक अक्षर छे. एटलुं ज नहीं 'क्वचित्' शब्दमां 'क्व' ए पहेलो अक्षर छे, अने 'चित्' ए पण एक ज अक्षर छे, कारण के छेल्लो व्यंजन 'त्' आगला 'इ'ने आधारे ज बोलाय छे.

स्वरथी ज उच्चारण थाय छे एटले अक्षरोमां रहेला स्वरने ज लघुत्व-गुरुत्व अने मात्रानुं माप छे. व्याकरणमां आवता बधा दीर्घ स्वरो, ए गुरु

१. जुओ आ प्रकरणनुं परिशिष्ट १.

छे. एटले आ ई ऊ ए ऐ ओ औ बधा गुरु छे 'अं' अने 'अः' एने पण आपणे दीर्घ स्वर गणीए छीए एटले ए पण गुरु छे. ह्रस्व स्वर लघु छे पण तेमां एवो अपवाद छे के ह्रस्व स्वर पछी संयुक्त व्यंजनो आवे अने तेनो धडकारो ए ह्रस्व स्वरने लागे तो ते गुरु थाय छे. तेम ज लघु स्वर पछवाडे कोई व्यंजन आवे तो पण ते गुरु बने छे. दाखला तरीके उपर आपेला 'क्वचित्' शब्दमां पहेलो आवतो 'क्व' लघु छे अने 'चित्'नो 'इ' लघु होवा छतां व्यंजनांत होवाथी गुरु छे. ते ज प्रमाणे 'दिक्' शब्द पण एक ज अक्षरनो छे अने ए पण गुरु छे. प्रो. ठाकोर, गुजराती अव्यय 'पण'-ना उच्चारणमां 'ण'नो 'अ' द्रुत बोलाय छे तेथी तेने 'पण्' जेवो गणी ते शब्दने बे लघु अक्षरनो नहीं पण एक गुरुनो गणे छे. ते आ नियम प्रमाणे. आमां णकार खोडो 'ण्' जेवो छे के नहीं ते भाषाना उच्चारणनो प्रश्न छे, पण णकारने खोडो गणीए तो 'पण' एक गुरुनो ज गणाय ए बराबर छे. आ नियम गुजराती पिंगळोमां साधारण रीते आवतो नथी कारण के गुजरातीमां खोडा अक्षरो लगभग नहीं जेवा ज वपराय छे.

'पण' अक्षरने अंते आवतो आ खोडो व्यंजन, तेनी पछी कोई स्वर आवे तो तेनी साथे एक थई जाय अने त्यारे पूर्वनो स्वर ए व्यंजनथी अलग बनी जाय, एनो भार एना माथेथी ऊतरी जाय, अने त्यारे ए व्यंजनने लीधेनुं एनुं जे गुरुत्व हतुं ते बध पडे; जेम के 'चित्' शब्दमां स्वर पछी व्यंजन होवाथी ते अक्षर गुरु छे पण तेमां 'आकाश' शब्द भळी 'चिदाकाश' शब्द बनतां 'चि' लघु बने छे. ते ज प्रमाणे 'दिक्' शब्दनो अक्षर पण व्यंजनांत होई गुरु छे ते पण 'दिगंबर' शब्दमां पाछो लघु बने छे. पण 'चित्तंत्र' के 'दिक्काल' शब्दोमां 'चि' अने 'दि' वळी पाछा तेमनी पछीना संयुक्त व्यंजनना धडकाराने लीधे गुरु बने छे.

अहीं सुधी आपणे परंपराथी चालती आवेली वर्णमालाना स्वरो संस्कृतमां जे रीते उच्चाराई लघु के गुरु गणाय छे तेनी वात करी. पण गुजरातीमां बधा उच्चारो संस्कृत प्रमाणे ज थता नथी. दाखला तरीके गुजरातीमां 'ए' 'ओ' ह्रस्व बोली शकाय छे. प्राकृतमां 'ए' 'ओ'ना ह्रस्व उच्चारो हता अने ते गुजरातीमां ऊतरी आव्या छे. बीजुं, आपणे जोयुं के लघु स्वरने पछीना संयुक्त व्यंजनोनो धडकारो लागे त्यारे ए लघु गुरु थाय छे. पण गुजरातीमां घणी वार संयुक्त व्यंजनोनो धडकारो आगला स्वरने लागतो नथी. ए संयोग एवो निर्बल रीते बोलाय छे के तेनो प्रयत्न आगला स्वरथी शरू थतो नथी. एने निर्बल संयोग कहे छे.

'तर्यु' 'नम्यो' वगेरेमा व्यजनोनो आवो निर्बल सयोग छे. एव दाखलाथी आ तरत स्पष्ट थई शकशे. सस्कृत शब्द 'रहस्य'नु बहुवचन गुजरातीमा 'रहस्यो' थाय. आमा स्पष्ट रीते 'र'नी एक मात्रा छे, पण 'ह'नी, पछीना सयुक्त व्यजनोना थडकाराने लीधे बे मात्रा छे, 'स्यो'नी बे मात्रा विशे प्रश्न नथी. हवे 'रहस्यो' ए तत्सम शब्दना उच्चारणमा 'ह'नो उच्चार अने गुजराती क्रियापद 'हस्यो'ना उच्चारणमा 'ह'नो उच्चार बन्नेने सरखावी जोता तरत जणाशे के गुजराती क्रियापदना उच्चारणमा थडकारो नथी गुजरातीमा 'लाव' अने 'लाव्य' एवा आज्ञार्थ एकवचन रूपना बन्ने उच्चारो छे ते ज प्रमाणे 'कर' अने 'कर्य' (जेम के 'काम कर्य') एवा बन्ने उच्चारणो साचा छे आ 'कर्य'ना उच्चारने सस्कृत 'सौकर्य'माना 'कर्य'ना उच्चार साथ सरखावी जोता जणाशे के गुजराती 'कर्य'ना उच्चारणमा व्यजनसयोग निर्बल छे, अने तेथी ते थडकाईने पूर्व लघुने गुरु करतो नथी

आपणे आगळ 'अ' अने 'अ'ने दीर्घ अने तेथी गुरु स्वीकारी लीधा पण ए स्वीकार पण परीक्षवा जेवो छे सस्कृतमा अनुस्वारने पछी आवता व्यजनना अनुनासिकनु रूप आपी शकाय छे, जेम के 'समत्ति' के 'सम्पत्ति'. एटले आ अनुस्वारनु गुरुत्व एक रीते सयुक्त व्यजनना नियमथी ज थमल छे अलबत सस्कृत अनुस्वारो सर्वत्र अनुनासिकनु रूप नथी पामी शकता, जेम के 'अश' 'कम' 'सवरण' पण त्या सर्वत्र अनुस्वारनी तीव्रता एकसरखी ज छे गुजरातीमा जेम व्यजनसयोग निर्बल छे, तेम क्यारेक अनुस्वारनो रणको पण मद होय छे, अनुस्वारो कोमळ होय छे, अने एवा अनुस्वारो निर्बल व्यजनसयोगनी पेठे लघु स्वरने दीर्घ करी शके नही. दाखला तरीके गुजराती तद्भव 'पाच'ना उच्चारणमा अनुस्वार कोमल छे. ते, पछीना व्यजननो अनुनासिक बनी शकशे नही, एटले के तेनो उच्चार 'पाञ्च' एवो करी शकाशे नही सस्कृत 'पाचजन्य' शब्दना 'पाच' जेवो तेनो उच्चार नथी 'वाघो' 'गाधी' ए बधा 'वान्घो' 'गान्धी' जेवा उच्चारो नथी आ प्रमाणे गुजरातीमा अनुस्वार कोमळ छे छता वाणीपठनमा आवा अनुस्वारथी गुरुत्व निष्पन्न नथी थतु, एवु चेतावनानी व्यावहारिक रीते जरूर पडती नथी, कारण के आ कोमल अनुस्वार लगभग नियम तरीके दीर्घ स्वर उपर ज आवे छे बेत्रण ज तेना अपवादो छे, जेम के 'सुवाळु', 'कुवारो'. हिन्दीमा ह्रस्व उपर पण कोमल अनुस्वार आवी शके छे, जेम के 'रँग' हिंदीमा ते अही दर्शाव्यु ते प्रमाणे अर्धचद्राकारथी दर्शावाय छे पण व्यावहारिक जरूरनी जुदी वात छे. सिद्धान्त तरीके

आपणे स्वीकारवु जोईए के गुजराती शब्दोना उच्चारणमा, ज्या कोमल अनुस्वार आवे त्या, आगळनो स्वर ए अनुस्वारने कारणे, सस्कृतमा थाय छे तेम, गुरु थतो नथी

गुजरातीमा तत्सम शब्दोना उच्चारणमा सयोगनी अने अनुस्वारनी तीव्रता जळवाई रहे छे एवो सामान्य नियम करी शकाय पण तेमा पण एक शब्दना प्रारभमा आवता सयोगथी आगला शब्दनो अत्य लघु गुरु थतो नथी जेम के 'तेने एक कूतरा उपर प्रेम हतो' ए वाक्यमा 'प्र' ना सयोगनो थडकारो 'उपर'ना अत्य 'र'नें आपी शकाय नही एटलु ज नही आगलो शब्द सस्कृत होय तोपण तेने थडकारो अपातो नथी जेम के 'तेणे सकल द्रव्य दानमा आप्यु' एमा 'सकल'ना छेल्ला 'ल'ने थडकारो अपातो नथी तत्सम समासमा थडकारो अपाय छे, जेम के 'रणक्षेत्र', 'लोकप्रिय', 'शस्त्रक्रिया' आमा समासना बीजा शब्दना आद्यसयोगने लीधे आगला शब्दना अत्य स्वरने सामान्य रीते थडकारो अपाय छे पण 'लोकप्रिय' शब्दना उच्चारणमा थडकारानो अभाव घणी वार देखाशे केटलाक एवा थडकाराने पांडित्य प्रदर्शन पण करेश घणी वार था फरक सस्कृत शब्दना शुद्ध उच्चारणना पक्षपातने लईने थाय छे, अने छता प्राकृत भाषाआनु वलण थडकारो लुप्त करवा तरफ छ ए स्वीकारवु जाईए 'शकरप्रसाद' नामना उच्चारणमा तो सस्कृत पक्षपाती पण 'र'ने थडकारा नही आपे एम गुजराती भाषामा घणी जगाए जेम ह्रस्वदीर्घनो अनिर्णय छ तेम आ थडकारानो पण अनिर्णय प्रवर्ते छ[२]

सस्कृत वर्णमालामा आवता 'ऋ' स्वरनो उच्चार चर्चा मागे छे गुजरातीओ सस्कृत वाचता पण 'ऋ'नो उच्चार 'रु' के 'र' जेवो करे छे 'अमृत'नो उच्चार 'अम्रुत' के 'अम्रत' जेवो करे छ त्या सयोग नथी अने तेथी आगळनो स्वर गुरु न बालाय एनी समाळ राखवा आ 'म्रु' के 'म्र'नो सयोग निर्बल बोलाय छे पण उच्चार तो रकारनो ज थाय छे अने तेथी घणी वार आगळना स्वरने तेनो थडकारो पण लागे छ सस्कृत तत्समनो उच्चार अणीशुद्ध राखनार वान्ते पण क्याक रकारसयोगनो उच्चार करी थडकारा आप्यो छ जम के

'सुगुप्त राजगृहनी दिशामा'

—'अभिज्ञान', पूर्वालाप

---

२ जुओ आ प्रकरणनु परिशिष्ट २

अहीं 'गृ'ना थडकाराथी 'ज' गुरु बोलाय छे.' आने अनियमितता न गणवी जोईए कारण के भाषामां ए उच्चार रूढ थई गयो छे. खरु तो 'ऋ'ना उच्चार विषे हिन्दनी तद्भव प्रांतीय भाषाओमां एकता नथी, एटलु ज नही ठेठ वेदकालमां पण जुदा जुदा वेदो तेनो जुदो जुदो उच्चार करता हता एम जणाय छे.

एटलु ज नही, वर्णमालामां जेनो उल्लेख नथी एवा स्वरो पण आपणे स्वीकारवा जोईए. अर्वाचीन भाषाउच्चारणनु शास्त्र स्वरव्यवस्था जुदी रीते करे छे. ते बधा साथे आपणे अहीं संबंध नथी पण तेमां जे संयुक्त स्वर (डिफ्थॉंग dipthong) कहेवाय छे, तेनो थोडो पण निर्देश करवानी जरूर छे. केम के कोई कोई कविओए एवा प्रयोग कर्या छे जेम के:

जोइए तेमां एक पण, ओछें नही निभाय;
पावा ईंसो ऊपळा, मळी खाटलो थाय.
—द० का०, भा २, पृ० ४२.

नही मारे जोइए तपफल, भले ए सहु जतु.
—'वसन्तविजय', पूर्वालाप.

अहीं बन्ने जगाए 'जोइ'ना उच्चारमां संयुक्त स्वर छे, अने पिंगलदृष्टिए 'जोइ' एक गुरु थाय छे तेवो ज बीजो दाखलो·

जूओ भाइ आ मोटा झाड, तेमां सौथी ऊंचो ताड.
द० का०, भा० २, पृ० २७७.

---

३. संस्कृतमां पण आवा दाखला मळे छे:

प्राप्ते संनिहिते मरणे
नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे।
—चर्पटपंजरिकास्तोत्र, वृ० श्लो० २०.

अहीं 'डुकृञ्'नो 'डु', पछी आवता 'कृ'ने लीधे गुरु थयो छे.

आपणा 'कीर्तिकौमुदी'ना गुजरातना प्रसिद्ध संस्कृत कवि सोमेश्वरना 'रामशतक'मां पण आवु दृष्टान्त मळे छे:

प्राप प्रौढिं क्रमेण दृढयतु नितरां राघवः स श्रियं वः।
—Journal of the Oriental Institute, Vol. 1, No. 1, p. 12. श्री भोगीलाल सांडेसरानो लेख, The Ramas'ataka.

अहीं दृने लीधे आगलो ण गुरु थाय छे.

मारा वखतमा निशाळमा आ कविता पठता 'जू' दीर्घ ज पठातो अने ए प्रमाणे पठता 'भाई'ने एक गुरु अक्षरवाळो शब्द गणवो जोईए.

चार चार गाउ चालता, लावो पय अपाय[४]

ए दोहरामा पण 'गाउ'ने एक गुरु अक्षरवाळो शब्द गणवो जोईए कविओना प्रयोगमा आवता आवा उच्चारोने पण स्वीकारवा जोईए.

आ उपरात लघुगुरुना निरूपणमा एवो नियम पण अपाय छे के पादान्ते लघु विकल्पे गुरु थाय छे आने लघुगुरुना स्वरूपनो नियम न गणता पिंगलनो पारिभाषिक नियम गणवो जोईए एना उपर पिंगळोमा केटलीक चर्चा थाय छे पण ए चर्चामा न ऊतरता आपणे एवो नियम करी शकीए के छन्दमा पादान्ते ज्या गुरु आवश्यक होय त्या लघु पण मूकी शकाय 'गुरु आवश्यक होय त्या' एम ज कहेवु जोईए कारण के चरणने अते लघु ज आवश्यक होय त्या लघुने गुरु करवानो प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी एवो लघु पण जो गुरु थई जतो होय तो पछी एवा छन्दो कोई रीते निर्दोष करी ज न शकाय एटले एवो ज नियम होई शके के गुरु आवश्यक होय त्या लघु मूकी शकाय आ नियम स्वाभाविक छे कारण के घणी जगाए चरणने अते अत्य स्वरनु विलबन आवे छे, सस्कृत वृत्तोमा तो आवे ज छे (जोके सस्कृत पिंगलना नियम प्रमाणे अमुक वृत्तोमा श्लोकार्धे ज आवे, थोडामा ज दरेक चरणे आवे) अने एटला माटे त्या लघु होय तो ते पण विलबनथी गुरु थई जाय

गुजराती पिंगल आ लघुगुरुना उच्चारणनी छूटने घणी विस्तारी मूके छे। गुजराती पिंगलमा कविने छन्द साचववा गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करवानी छूट छे/आ छूट बधी तद्‌भव प्राकृत भाषाओमा हती पण ते धीमे धीमे धीमे ए छूट नाबूद करवानो प्रयत्न कविओए करेलो छे अने आपणा कविओ पण एवो प्रयत्न करता जाय छे आवी छूट लेवी होय, त्या पण ए छूटथी शब्दनु उच्चारण कर्णकटु न थाय एनी सभाळ लेवी जोईए, कारण के उच्चारणकटुत्व एक दोष छे आवी छूट क्या शोभे ने क्या न शोभे तेना नियमो थोडाघणा करी शकाय, जेम के अत्य इकार के उकारमा आवी छूट कर्णकटु बनती नथी सस्कृत 'वहू' शब्द गुजरातीमा तत्समरूपे ज लखाय छे, पण तेनु 'वहू' एवु उच्चारण आपणने आघात आपतु नथी पण सस्कृत 'गूढ' शब्दनो उच्चार 'गुढ' करवा जतां ते कर्णकटु लागे छे एनु

४. होप वाचनमाळामा हु आ पाठ भणेलो

कारण एवु जणाय छे के गुजरातीमा शब्दने अते आवता 'इ' 'उ' लगभग दीर्घ जेवा उच्चाराय छे पण आ विषयनी लाबी चर्चा हु अही करवा इच्छतो नथी आ, पिंगल करता भाषाना उच्चारणनो प्रश्न छे अलबत, पिंगलनी चर्चामा भाषा साथे जोडायेला प्रश्नोनी चर्चा न आवे एम मारु कहेवु नथी, एवा प्रश्नो आवे छे ते आपणे आगळ जोईशु पण पिंगलनी दृष्टिए आ घणो नानो प्रश्न छे सामान्य कवि के कवितावाचक पोताना सामान्य अनुभवथी आनो सहेलाईथी निर्णय करी शके छे, अने तेना नियमो बाधवा जता घणी बारीकाईमा ऊतरवु पडे, जेने माटे अही अवकाश नथी.

पिंगलमा सामान्य रीते लघुनी एक मात्रा अने गुरुनी बे मात्रा गणाय छे सामान्य रीते व्याकरणमा पण एम मनाय छे, अने लोकोमा पण एम मनाय छे के लघुथी गुरुनी बमणी मात्रा ए उच्चारणनु साचु प्रमाण छे पण ए यथार्थ नथी अत्यारे पश्चिममा उच्चारो मापवानु यत्र (kymograph) शोधायु छे अने तेना उपर प्रो० टी० एन० दवेए अनेक अखतरा करीने तेने परिणामे बतावेलु छ के आपणा कोई स्वरो उपर बतावेला प्रमाणवाळा कोई बे वर्गमा पडता नथी, तेम ज बधा दीर्घो अने ह्रस्वो पण पोताना वर्गमा पण एकसरखा नथी ('गुजराती भाषामा वर्णव्यवस्था', पृ० ३२-३३ उपरनो कोठो) तेमणे ऍ ऑ अ अ सिवायना स्वरोने बार प्रकारमा वहेंच्या छे अने दरेकना उच्चारणनी कालमात्रानो समय सेकन्डना हजारमा भागमा दर्शाविल छे अलबत आ परिणामो अनेक व्यक्तिओना अखतरा पछी ज वधारे आधारभूत गणाय, पण तेमना प्रयोगो उपरथी एटलु तरत कही शकाय के भाषाना स्वाभाविक उच्चारणमा कोई बे स्वरो एकसरखा नथी

अर्थात्, आ लघुगुरुनु नियत करेलु प्रमाण पिंगलगत छे अने पिंगलना प्रदेशमा ए साचु छ अर्थात् मात्रामेळ छन्दोमा ज्या एक गुरुनी जगाए बे लघु अने बे लघुनी जगाए एक गुरु मूकी शकाय छे त्या छन्दना उच्चारणमा खरेखर ज गुरु लघु ए प्रमाणनी कालमात्रामा बोलाय छे पण अही एक बीजी हकीकत पण नोंधवी जोईए पिंगलपरपरा सर्व प्रकारना छन्दो माटे आ प्रमाण माने छे, ते यथार्थ नथी आपणे जेने अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो कहीए छीए तेमा एक गुरुनी जगाए बे लघुओ के ब लघुओनी जगाए एक गुरु आवी शकतो नथी जम के

रह्या वने याजू तरुवर, नही वाड वचमा

—'देवयानी', पूर्वालाप

ए पंक्तिमा 'तरुवर' चार लघुनो शब्द छे तेनी जगाए बे गुरुनो 'वृक्षो' शब्द मूकी नहीं शकाय :

रह्या वन्ने थाकू वृक्षो नहीं काइ वचमा

एम करवा जता मूळ शिखरिणी वृत्तनो सवाद जरा पण रहेतो नथी. अने आ हकीकत ए आखा वृत्तप्रकार माटे साची छे. ज्यारे पहेला आपेला चोपाईना दृष्टान्तमा

विकसे सरसिज नानारगा

चार मात्राना 'सरसिज'ने बदले 'वारिज', 'कुसुमो', 'पद्मो' एम गमे ते चार मात्रानो शब्द मूकी शकाशे अर्थात् लघुगुरुनु प्रमाण वहेमु छे ते मात्रामेळ छदो माटे साचु छे अने ए छन्दोना पठनमा अक्षरोनु ए प्रमाणे पठन थाय पण छे. पण अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तोमा लघुगुरुने परस्पर अप्रमेय अने भिन्न मापवाळा अक्षरो मानवा जोईए अने एना पठनमां लघुगुरुनी, कोई पण प्रमाणने अनुसरी, परिवृत्ति के अदलाबदली थई शकती नथी.

पिंगलमा प्लुतनो स्वीकार करवामा आवतो नथी आनो अर्थ एवो नथी के छन्दोना पठनमा प्लुत आवतो ज नथी प्लुत आवे छे पण पिंगळकारोए तेनो गुरुमा समावेश कर्यो छे तेमने प्लुतनो भिन्न स्वीकार करवानी जरूर जणाई नहोती सस्कृत वृत्तोमा प्लुतने स्थाने गुरु ज आवी शकतो, एटले वृत्तनी परीक्षा करवामा लघुगुरुना स्थान तपासी जोवाथी वृत्तनी परीक्षा थई शकती. तेम ज वृत्त रचनार शिखाउने माटे पण लघुगुरुना स्थाननो उपदेश पर्याप्त हतो, कारण के प्लुतने स्थाने गुरु मूकवाथी छन्दोरचना निर्दोष थई जाय छे पछी प्लुतो पठन द्वारा ज दर्शाववा रहे छे अने ए ज्ञान गुरु द्वारा अथवा परपराना पठनमाथी मळी शके छे छन्द विषे गमे तेटलु निरूपण थाय तोपण तेनु खरु स्वरूप तो पठन द्वारा ज शीखी शकाय छे एटले छन्द शास्त्रने प्लुतना अस्वीकारथी पोताना शासनकार्यमा कशाय विघ्न आवतु नही पण शास्त्रनी पोतानी पूर्णता खातर प्लुतना स्वीकारनी जरूर छे आपणे आगळ जोईशु के प्लुतना स्वीकार विना केटलाक मात्रामेळ छन्दोनु स्वरूप ज पूरु निरूपी शकातु नथी अने शास्त्र मात्र छन्दने कसी जोता शीखवे एटलु आपणे बस मानता नथी शास्त्रनो समग्र विषय अने तेनी सघळी विगतो, शास्त्रे व्यवस्थित करवी जोईए, तेना नियमो शोधवा जोईए, अने ए काम प्लुतना स्वीकार विना थई शकतु नथी माटे आ शास्त्रमा लघुगुरु साथे प्लुत पण स्वीकारवो जोईए अने ते पण मात्र त्रण मात्रानो ज नही, पण तेथी

विशेष मात्रानो पण, ते जेटली मात्रानो आवतो होय तेटली मात्रानो स्वीकारवो जोईए. अने आपणे गुरु ज प्लुत थई शके एवो संस्कृत व्याकरण अने पिंगलनो नियम पण स्वीकारी शकता नथी, लघु पण प्लुत थई शके ए स्वीकारवुं जोईए. मात्रामेळ छंदोमा क्वचित् लघु, गुरु थाय छे एटलुं ज नही पण एक ज लघु क्यांक त्रण अने क्यांक तो सात मात्रानो बने छे. एटले गुरु तेम ज लघु बे मात्राथी वधारे लंबाय एटले प्लुत गणावो जोईए.

पण आथी पण एक विशेष तत्त्व पिंगले स्वीकारवु जोईए. ते छे ध्वनिशून्य काल. चित्रकार चित्ररचनामा जेम अनेक रंगोनो उपयोग करे छे तेम ज ते चित्रनी भूमिका—भोयना रंगनो पण उपयोग करे छे. ए रीते ध्वनिशून्यता ए ध्वनिनो भोंय छे. छन्दना पठनमा वच्चे आवतो ध्वनिशून्य अवकाश ए पण ए छन्दनो ज भाग छे. श्लोकार्धे विराम आववो ज जोईए. श्लोकान्ते विराम आववो ज जोईए ए विराम ए श्लोकनु ध्वनिशून्य अंग छे मात्रामेळमा तो ज्यां विराम लेवानो आवे त्यां, छन्दना अक्षरोनी पेठे ज, ए विरामनुं पण माप छे. एटले छंदोनु माप छन्दोनो बंध, अक्षरोनु लघुत्वगुरुत्व, अक्षरोनी मात्रा, तेम ज छन्दना पठनमध्ये आवता ध्वनिशून्य अवकाश, अने तेनी मात्रा, ए बधाथी थाय छे.

आथी फलित थाय छे के छन्दमा थतु भाषानु उच्चारण कृत्रिम छे. आ खरु छे, पण ए दोष नथी मात्र उच्चारण शु, गद्यनी अपेक्षाए काव्यनी भाषा पण कृत्रिम ज गणाय. एटलु ज नही भाषा पोते पण मनुष्यकृत होई प्राणीओना रवोनी अपेक्षाए कृत्रिम छे. काव्यनी भाषा भले कृत्रिम होय, छन्दोगत भाषानु उच्चारण भले कृत्रिम होय, ए जे अर्थे कृत्रिम बने छे ए अर्थ सिद्ध थाय एटले बस छन्द काव्यनु प्रयोजन सिद्ध करवा आवे छे अने छन्दथी वाच्य सिद्ध थाय एटले उच्चारणनी कृत्रिमता दोषरूप रहेती नथी. कलामात्र मनुष्यकृत होई कृत्रिम छे.

आ प्रकरण पूरु करता पहेला लघु गुरु प्लुतनी संज्ञा आपणे नियत करी लईए. ज्यां अक्षरसंज्ञानी जरूर पडे त्यां लघुने माटे सर्वत्र 'ल' राखीशु; जे गुरुने में लघु प्रति अप्रमेय गण्यो तेने माटे 'गा' संज्ञा राखीशु; अने जे गुरुने आपणे लघुथी बमणी कालमात्रानो गण्यो छे तेने माटे अक्षरसंज्ञा 'दा' राखीशु बीजी रीते कहीए तो दा एटले बे मात्रा जे एक गुरुथी अथवा बे लघुथी पूरी शकाय, ल एटले एक मात्रा रेखात्मक चिह्नो लघु माटे ‿ आवु अर्धचन्द्राकार अने गुरु माटे — आवी आडी लीटी राखीशु, जे

आपणे लिपिमां गुरु अक्षरने लघु दर्शाववा अने लघुने गुरु दर्शाववा अक्षर उपर मूकवाना चिह्न तरीके अत्यार सुधी वापरता आव्या छीए प्लुतने माटे अक्षरनी पोनानी मात्रा उपरातनी मात्रा आ रेखाचिह्नोथी ज हु बतावीश जेम के गुरु प्लुत थयो होय त्यारे गा ‿ एटले त्रण मात्रानो प्लुत गुरु, गा — एटले चार मात्रानो प्लुत गुरु, गा ‿ — अथवा गा — ‿ एटले पाच मात्रानो प्लुत गुरु अने लघु प्लुत थयो होय त्यारे ल ‿ ‿ के ल — बरावर त्रण मात्रानो प्लुत लघु क्यारेक लघु गुरुने स्थाने होय तेनो निर्देश हु ल॑थी करीश अने अक्षरनी उच्चारशून्य मात्रा बताववा रेखाचिह्नो उपर हु पोलु माडु मूकीश, जेम के ० के ० ११/८

परिशिष्ट १

अक्षर

आ प्रकरणमा भाषाना उच्चारणना एकमने माटे अक्षर शब्द वापरेलो छे ते अंग्रेजी सिलेबल (syllable)ना समानार्थ शब्द तरीके वापर्यो छे आ अर्थमा पिंगलमा वर्ण शब्द पण वपरायो छे अही जेने अक्षरमेळ कहेलो छे तेने घणा वर्णमेळ पण कहे छे 'वृत्तरत्नाकर' पण छदोने मात्राछन्द अने वर्णछद एम विभेदे' छे पण वर्ण ए स्वरव्यजन बन्नेनो सामान्यवाचक शब्द छे वर्णमाळामा स्वरव्यजन बन्नेनो समावेश थाय छे एटले वर्ण शब्द उच्चारणना एकम माटे काम आवे एवो नथी 'ऋक्प्रातिशाख्य' एने माटे अक्षर शब्द वापरे छे अक्षर शब्दना अर्थमा अग्रेजी सिलेबलनो अर्थ आवी जाय छे, पण शब्दोच्चारणमा एकमो छूटा पाडवानी प्रातिशाख्यनी पद्धति अंग्रेजी सिलेबलो छूटा पाडवानी पद्धतिथी जरा भिन्न छे एटले प्रातिशाख्यनो मत तेना सूत्रो टाकीने ज नीचे दर्शावु छु पहेला पटलना १६ सूत्रोमा वर्णमाला आप्या पछी कहे छे "ओजा ह्रस्वा सप्तमान्ता स्वराणाम्" ॥१७॥ पहेला आठ समानाक्षरो अ आ ऋ ॠ इ ई उ ऊ मायी ओज एटले एकी अक्षरो ह्रस्व छे "अन्ये दीर्घा" ॥१८॥ बाकीना दीर्घ छे "उभये स्वक्षराणि" ॥१९॥ बन्ने अक्षरा कहेवाय छे "गुरूणि दीर्घाणि" ॥२०॥ दीर्घ स्वरो गुरु

---

१ पिंगलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लौकिकं द्विधा ।
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते ॥
—वृ० र०, नि०, १, ४.

गणाय छे "तयेत्तरेषा सयोगानुस्वारपराणि यानि" ॥ २१ ॥ दीर्घ सिवायना बीजा एटले ह्रस्वो, जेनी पछी सयोग के अनुस्वार आवतो होय ते पण गुरु कहेवाय छे सयोग एटले व्यजनोनो सयोग : अर्थात् सयुक्त व्यजनो; अने अनुस्वार पहेलानो ह्रस्व पण गुरु गणाय छे "अनुस्वारो व्यजन, चाक्षराङ्गम्" ॥ २२ ॥ अनुस्वार अने व्यजन अक्षरनु अग छे नीचे भाष्यकार उवट कहे छे, अक्षरनु अग एटले स्वरनु अग जे व्यजनो स्वरोनी वच्चे न आवता होय ते अही उदाहरण बने छे जेम के 'प्र'मा 'प्' अने 'र्' 'अ'नु अग छे 'वर्क्'मा 'व्' 'र्' अने 'क्' त्रणेय 'अ'नु अग छे[२] "स्वरान्तरे व्यञ्जनान्युत्तरस्य" ॥ २३ ॥ बे स्वर वच्चे आवता व्यजनो बेमाथी पाछळ आवता स्वरनु अग गणाय, आगळ आवता स्वरनु नही दृष्टान्त तरीके 'देव' शब्दमा 'व्' व्यजन 'ए' अने 'अ' स्वरोनी वच्चे आवे छे, ते 'व्' पाछळ आवता 'अ'नु अग गणाय अर्थात् 'व' सव्यजन एक आखो अक्षर थयो २२ मा सूत्रमा 'वर्क्' मा 'अ' पछी आवता व्यजनो पूर्वना 'अ'नु अग गणाता हता, माटे अही स्पष्ट कर्यु "पूर्वस्यानुस्वारविसर्जनीयौ" ॥ २४ ॥ अनुस्वार अने विसर्ग बन्ने पूर्वस्वरनु अग गणाय अनुस्वार माटे अलग सूत्र मूकवानु कारण ए छे के आ 'प्रातिशाख्य' अनुस्वारने स्वर अने व्यजन एम बन्ने वर्गमा मूके छे ('अनुस्वारो व्यजन वा स्वरो वा।' आ ज पटलनु पाचमु सूत्र) आथी अनुस्वार अने विसर्ग आगळना स्वरनु अग बने छे आगळ २१मा सूत्रमा आवी गयु के अनुस्वारनी आगळनो ह्रस्व गुरु गणाय अही एटलु उमेर्यु के अनुस्वार आगळना स्वरनु अग बने छे अलबत, सूत्रमा कह्या प्रमाणे विसर्गनु पण एम ज थाय छे "सयोगादिर्वा" ॥२५॥ सयोगमा आदिव्यजन विकल्पे आगला स्वरनो गणाय एनो अर्थ ए थयो के सयुक्त व्यजनोनो पहेलो व्यजन आगला स्वरनो पण गणाय, पाछला स्वरनो पण गणाय अर्थात् 'अग्ने' शब्दना अक्षरो बे रीते जुदा पाडी शकाय अ + ग्ने ए रीते, तेम ज, आ सूत्र प्रमाणे, अग् + ने अग्रेजीमा सिलेबलो मात्र आ बीजी रीते ज छूटा पड छे दाखला तरीके magnate शब्दना सिलेबलो mag-nate मॅग् + नेट् ए प्रमाणे ज पडी शके छ, ma-gnate मॅ-ग्नेट ए प्रमाणे पडता नथी, ए नोधवा जेवु छ आ उपरथी स्पष्ट थयु हशे के

---

२ आ 'वर्क्' धातु परिचित नथी तो दृष्टान्तनी खातर 'तर्क्' के एवो कोई बीजो लई शकाय अहीं 'अ' पहेला आवतो 'त्' अन 'अ' पछी आवतो 'र्' अने 'क्' त्रणेय व्यजनो 'अ'नु अग छे

'प्रातिशाख्ये' जेने अक्षर कह्यो छे तेमां 'सिलेबल'नो अर्थ संपूर्णपणे आवी जाय छे. हजी 'प्रातिशाख्य'ने संयुक्त व्यंजन संबंधी थोडु कहेवानुं छे. "च.परक्रमे द्वे"॥२६॥ अने ज्यां क्रम होय त्यां बन्ने व्यंजनो पण पूर्वस्वरना अथवा उत्तरस्वरना अंगभूत थई शके. अही 'क्रम' शब्द पारिभाषिक छे. वेदमां घणी वार व्यंजनो बेवडाता. जेम के 'अग्नि'ने बदले 'अग्ग्नि' एम बोलातु. आ बेवडा वर्णने 'क्रम' कहेलो छे. आवो 'क्रम' आवे त्यारे ते बेवडायेलो व्यंजन आगला अथवा पाछलानुं अंग विकल्पे बनी शके. एटले के अ+ग्ने एम अक्षरो जुदा कराय अथवा अग्+ने एम पण कराय.

अक्षरो छूटा पाडवानी आ बे भिन्न पद्धतियी अक्षरोना लघु-गुरु मापमां कशो फरक पडतो नयी. 'अग्नि'ने अ+ग्ने एम छूटो पाडीए के अग्+ने एम छूटो पाडीए तो बन्ने रीते 'अ' गुरु ज रहे छे. पहेला विकल्पमा 'ग्ने'ना संयुक्त व्यंजनना थडकाराने लीधे 'अ' गुरु थाय छे, बीजा विकल्पमा 'अग्' व्यंजनात होवायी गुरु थाय छे. अही ए पण स्पष्ट थशे के जो संयुक्त व्यंजनना पहेलाने आगला स्वरनुं अंग ज एक नियम तरीके गणीए तो संयुक्त व्यंजनयी गुरु करवाना नियमनी जरूर न रहे. एक व्यंजनातना नियमथी ज सर्व गुरूकरणनो खुलासो थई जाय. पण शास्त्र पिंगल आटली लांबी परंपरायी सयोगपरना नियम पर ज विशेष करीने चाल्यु छे. व्यंजनातनो नियम तो घणाने अजाण्यो छे. अने गुजरातीमां तो एथी मुश्केली वधशे. कारण के 'कर्युं' शब्दमा 'यु'-नो सयोग मंद छे. तेथी 'क' थडकातो नथी अने तेथी 'क' गुरु थतो नथी एम कहेवु सरल छे, पण 'कर्-।-यु' एम कर्या पछी 'कर्' गुरु नथी, एने माटे नवो खुलासो शोधवो पडशे. एनो खुलासो छे, अही 'कर्' अने अने 'युं' ए रीते पृथक्करण ज नथी थतु एम कहेवु जोईए. पण एम पिंगलना शासनने वधारे जटिल करवु योग्य नथी. एटले व्यंजनात अने संयोग बन्नेना नियमो तत्त्वतः एक होवा छता बन्ने भिन्न रहे ते इष्ट छे.

परिशिष्ट २

लघु-गुरु विवेक : ऐतिहासिक दृष्टिए

आपणा पिंगलशास्त्रे लघुगुरुना स्वरूपनी चर्चा व्याकरणने अवलंबीने करी छे अने ए स्वाभाविक छे पिंगळनो विषय छंद ए वाणीनी आकृति छे, अने वाणीनु स्वरूप ए व्याकरणनो विषय छे माटे ज व्याकरण अने छन्दोविचिति प्रथम वेदांगो गणाया

लघुगुरुनो विवेक प्राचीनमा प्राचीन पाणिनिना व्याकरणमा मळे छे छता लघुगुरु संबंधी नियमो धीमे धीमे ज विकास पामी स्पष्ट थया छे, अने एनो विकास जाणवा जेवो छे

पाणिनिना व्याकरणमा ह्रस्व दीर्घ प्लुत उपरात लघु गुरुनो स्वीकार छे आ संबंधी त्रण सूत्रो छे "ह्रस्व लघु॥ संयोगे गुरु॥ दीर्घं च॥" अध्याय १, पा० ४, सूत्र १०–११–१२ 'ह्रस्व एटला लघु पण तेनी पछी संयोग एटले संयुक्त व्यंजनो आवे तो लघु पण गुरु थाय अने दीर्घ पण गुरु', आटला प्राचीन समयमा संयोगना उच्चारणनी आ असर आपणा आर्योए पकडी ए एमनी बुद्धिनी सूक्ष्मता बतावे छे तेम छता आ बाबतमा पाणिनिना नियमोनी अपूर्णता पण ध्यान खेंचे एवी छे पाणिनि अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ एटला स्वरो स्वीकारे छे एमा अं अने अः आवता नथी. एटले गुरुमा तेनी गणना थवी रही जाय छे पाणिनि अनुस्वारने 'म्'नो अने विसर्गने 'स्'नो आदेश गणे छे एमा भाषानो दृष्टिए आपणे दोष दई शकीए नही पण आ रीते स्वरोमाथी रही गयेला 'अं' अने 'अः'ने गुरु गणवाने बीजु कोई सूत्र छे नही विचित्र स्थिति तो एवी थाय छे के पाणिनि प्रमाणे 'सपत्' अने 'सम्पत्' एवा बन्ने रूपो खरा छे आमाथी 'सम्पत्'मा 'म्प'ना संयोगने लीधे 'स' गुरु गणाशे अने 'सपत्'मा 'स' गुरु नही गणाय अलबत "स्थानिवद् आदेश।" (१–१–५६) एवु पाणिनिनु सूत्र छे एनो अर्थ एवो छे के आदेशने तेना मूळ स्थानमा जे होय तेना जेवो गणवो ए नियम अही लगाडीए तो एनो अर्थ एवो थाय के अनुस्वारने अने विसर्गने एना मूळ स्थानी 'म्' अने 'स्' जेवो एटले के व्यंजन गणवो पण ए रीते 'दुःख' शब्दमा 'विसर्ग' अने 'ख'नो संयोग आपणे नथी गणी शकता ए सूत्रनो उपयोग पाणिनिए पोते आपेला सूत्रो पूरतो ज थई शके एटले

पाणिनि प्रमाणे 'सपत्' 'दुःख' वगेरेमा अनुस्वार अने विसर्गथी आगळनो ह्रस्व स्वर गुरु थई शकतो नथी

आ वात आपणा विद्वानो जाणता पण हता पिंगलना 'छन्दशास्त्र'ना पहेला अध्यायमा 'गन्ते।' एवु दसमु सूत्र छे एनो अर्थ एवो छे के पादने अते लघु आवे तो तेने पण गुरु गणवो आनी टीकामा हलायुध पूर्वपक्ष करी समाधान करे छे, तेमा पाणिनिना आ नियमोने स्पर्शे छे ते कहे छे "अन्ये त्वाहु—ननु पदान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य पाणिनिना गुरुसज्ञा न कृता। तेनोक्तम् 'सयोगे गुरु' (पा० सू०, १–४–११), 'दीर्घं च' (पा० सू०, १–४–१२) इति। नाय सयोगादिर्न च दीर्घ। तस्मात् 'गन्ते' इति सूत्रमयुक्तम्। अत्रोच्यते—पाणिनिना स्वशास्त्रप्रयोजनार्थं गुरुसज्ञा कृता। पदान्ते वर्तमानस्य लघोर्गुरुत्वातिदेशे पाणिने प्रयोजनमेव नास्ति। किंचानुस्वारादिपूर्वस्य, वर्णस्य बल सपदित्यादौ स्थितस्य गुरुसज्ञा पाणिनिना न कृता, किमेतावतान्यैरपि न कर्तव्या। तस्मात्सूत्रमिद 'गन्ते' इति।" "बीजाओ वाधो ले छे के — चरणने अते आवेला ह्रस्वनी पाणिनिए गुरुसज्ञा करी नथी तेणे कह्यु छे 'सयोगे गुरु', 'दीर्घं च' चरणने अते आवेलो लघु सयोगनी पहेलानो नथी, तेम दीर्घ पण नथी माटे 'गन्ते' एवु सूत्र अयुक्त छे हवे उत्तरमा कहीए छीए के पाणिनिए पोताना शास्त्र माटे गुरुसज्ञा करी छे चरणने अते आवता लघु उपर गुरुत्वनो अतिदेश करवा पाणिनिने प्रयोजन ज नहोतु तेम ज 'बलम्' 'सपत्' वगेरे शब्दोमा अनुस्वार वगेरेना पूर्वना वर्णनी पाणिनिए गुरुसज्ञा करी नथी एटला माटे बीजाओए पण न करवी? माटे 'गन्ते' एवा सूत्रनी जरूर छे' छ शा, नि, पृ ४

आ अपूर्णता सौथी पहेली 'भरतनाटयशास्त्र'मा सुधरे छे 'भरतनाटयशास्त्र' जोके नाटयनो ग्रथ छे, पण तेमा छन्दोनु निरूपण पण आवे छे ए ग्रन्थनो रचनाकाल नक्की नथी, अने वधारे मुश्केली तो ए छे के तेमा लावा काल सुधी सुधारावधारा थया कर्या छे छता ए प्राचीन छे तेनो चौदमो अध्याय वागभिनय एटले पात्रो जे भाषा बोले छे ते विशे छे तेमा मोटो भाग छन्दोने पण विषय करे छे त्या गुरु विशे कहे छे "गुरु दीर्घं प्लुत चैव सयोगपरमेव च। सानुस्वारविसर्गं च तथान्त्य च लघु क्वचित्॥" भ० ना० शा० १४,९० कॉ २, पृ २४२ अही सयोगपरना उल्लेख साथे अनुस्वार अने विसर्गनो पण उल्लेख छे

पण हजी आ लक्षण पण अपूर्ण छे अनुस्वार अने विसर्गथी स्वर गुरु थाय छे तो व्यजनात स्वरनु शु ? अनुस्वार अने विसर्गने पाणिनि व्यजन गणे छे ते निष्कारण नथी अनुस्वार एक दृष्टिए 'म्' छे, विसर्ग 'स्' छे. अने जो 'य' अने 'य' एटले के 'यम्' अने 'यस्' बन्ने गुरु होय तो 'यत्' केम नही ? अलबत, आपणे आगळ अनुस्वार अने विसर्गना सबधमा जोयु तेम आवा व्यजन पछी स्वर आवे तो ए 'त्' ए स्वरमा भळी जाय एटले व्यजनातनो प्रश्न न रहे, 'त्' पछी व्यजन आवे तो ए प्रसग सयुक्त व्यजननो थई जाय अने तेथी आगलो ह्रस्व स्वर गुरु बने पण पाघडीनो वळ छेडे आवे तेम वाक्यने अते व्यजन आवे त्या आ प्रश्न आवीने ऊभो रहे

प्रत्यक्ष ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्त मया यत्।

मेघदूत, उ. मे ३१

यही 'यत्'ने गुरु गण्या विना छूटको नथी अने आ अपूर्णताने सौथी पहेली हलायुधनी वृत्ति, पूरती होय एम जणाय छे पिंगलना 'छन्द शास्त्र'नी टीका करता प्रारभमा ज मगल पछी विषयना उपोद्घातमा ते कहे छे

दीर्घं सयोगपर तथा प्लुत व्यञ्जनान्तमूष्मान्तम्।
सानुस्वार च गुरु क्वचिदवसानेऽपि लघ्वन्त्यम्॥'[1]

---

१ निर्णयसागरनी 'छन्द शास्त्र'नी आवृत्तिमा आ श्लोक हलायुधनी वृत्तिना प्रारभमा आवे छे तेमा मगलना चार अनुष्टुपो पछी गणसज्ञानी त्रण आर्या आवे छे अने ते आर्या पछी आ लघुगुरुना स्वरूपनी आर्या आवे छे, एटले के त्या यथेच्छ आ विषयनो निर्देश स्थाने छ पण 'बिब्लियोथेका न्डिका' (Bibliotheca Indica)नी कलकत्ता शाखाथी प्रसिद्ध थयेल पिंगलना 'छन्द सूत्र'मा मात्र मगलना चार अनुष्टुपो ज आप्या छे अने नीचेनी टीपमा आ उपरात बीजी आर्याओ उतारीने जणाव्यु छे के आ आर्याओ मात्र एक ज प्रतिमा मगलना श्लोकोनी पूर्वे मळे छे पुस्तकमा आ पाठ विषे कशी चर्चा नथी पण एक ज प्रतिमा आ पाठ छे ए कईक शकाजनक तो खरु वळी गुरुलघुना स्वरूप विशेना पिंगलना सूत्रो उपरनी टीकामा हलायुध क्याय व्यजनातनो निर्देश करतो नथी पिंगलनु सयोगपरनु सूत्र ते तेनु पहेला अध्यायनु ११ मु सूत्र 'ध्रादिपर ।' छे ते उपर मुबई अने कलकत्ता बन्नेना पुस्तकोमा टीका, मात्र एक स्थाने शब्दफेर छे ते सिवाय, एकसरखी छे हु मुबई-निर्णयसागरनी आवृत्तिमाथी उतारु छु, "ध्र इति व्यजनसयोगस्योपलक्षणार्थमेतत्। ध्र आदिर्येषा ते ध्रादय । आदिशब्देन विसर्जनी-

अही दीर्घ, प्लुत अने संयोगपर उपरांत व्यंजनांत स्वर, ऊष्मान्त स्वर अने सानुस्वार स्वरनी पण गुरुमां गणना करी छे, ऊष्मान्त शब्दनी नीचे सपादके टीप आपी छे के 'विसर्ग जिह्वामूलीय अने उपध्मानीय'नो ऊष्मान्त शब्दमां

यानुस्वारजिह्वामूलीयोपध्मानीयाना ग्रहणम् । ध्रादय. परे यस्मात् स ध्रादिपर । ततश्चाय सूत्रार्थ.—व्यजनसयोगात्पूर्वस्य ह्रस्वस्यानुस्वारविसर्जनीय जिह्वामूलीयोपध्मानीयेभ्यश्च पूर्वस्य गुरुसज्ञातिदिश्यते ।" भावार्थ : 'ध्र' ए व्यजनसंयोग बताववा वहेलो छे ध्र जेना आदिमा छे ते ध्रादि आदि शब्दयो, विसर्ग अनुस्वार अने जिह्वामूलीय, उपध्मानीयनो समावेश थाय छे. ध्र वगेरे जेनी पछी आवे छे ते तेथी सूत्रार्थ आ प्रमाणे थयो' व्यजनसंयोगनी पहेलाना ह्रस्वनी, अने अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय अने उपध्मानीयनी पहेलाना ह्रस्वनी गुरुसंज्ञा पण अतिदेशथी समजवी.' अही व्यजनांतना उल्लेखनी आपणे स्वाभाविक रीते अपेक्षा राखीए, पण तेनो उल्लेख नथी. नारायण भट्ट 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामा संयोगपरत्वना सदर्भमा आ ज चर्चा करता हलायुधवाळी आर्या उतारे छे. त्या नारायण आ आर्याने हलायुधनी गणतो होय एम जणाय छे. हलायुध पहेला आ आर्या बीजे क्याई मळती नथी. तेम अत्यार सुधी ए हलायुधनी गणाई छे, एटले कोई बीजानी साबित न थाय त्या सुधी एने हलायुधनी गणवामा हु बाध जोतो नथी.

२-२ जिह्वामूलीय ए 'क' पहेलाना विसर्गनु अने उपध्मानीय ए 'प' पहेलाना विसर्गनु नाम छे सद्गत के० ह० ध्रुवे आ बे, आपणी वर्णमालाना अतिप्राचीन समयर्था लुप्त थयेला कोई बे वर्णो छे एवी कल्पना करी छे (वाग्व्यापार, साहित्य अने विवेचन, भा २, पृ ३७-३९). पण ए अतितर्क जणाय छे विसर्ग, 'च' वर्ग 'ट' वर्ग अने 'त' वर्ग पहेला आवे त्यारे तो ते तेते वर्गनो ऊष्मा बने छे, एटले के 'च' वर्ग पहेला 'श्', 'ट' वर्ग पहेला 'ष्' अने 'त' वर्ग पहेला 'स्' बने छे मात्र 'क', 'ख' अने 'प', 'फ' पहेला ज ते सधि थया विना विसर्गने रूपे रहे छे जेम के 'अतःकरण', 'अतःपुर'. 'च', 'ट', 'त' पहेलानो विसर्ग, पछी आवता व्यजनने अनुकूल ऊष्मा बने छे, ते बतावे छे के पछीना व्यजनने अनुरूप थवानो विसर्गनो स्वभाव छे ते प्रमाणे 'क' अने 'प' पहेला आवतो विसर्ग, 'क' 'प'ने अनुरूप थवा बदलातो नथी तोपण ते, तेते व्यजनना उच्चारनी नजीक जाय छे, अने तेथी 'क' पहेलाना विसर्गनु उच्चारण जिह्वामूल सुधी, कठ नजीक जाय छे, अने तेम ज 'प' पहेलानो विसर्ग

समावेश थाय छे ए रीते अही गुरुनु पूर्ण स्वरूप आपवामा आव्यु छे ते पछीना लगभग बधा प्रमाणभूत पिंगलो आ बधानी गुरुमा गणना करे छे 'वृत्तरत्नाकर' गुरुनी नीचे प्रमाणे व्याख्या आपे छे —

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च य ।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजु ॥
—वृ र, चौ १, ९, पृ ७

अही सानुस्वार, विसर्गान्त, दीर्घ अने युक्तपर एटलानी ज गणना थई छे पण तेनो समर्थ टीकाकार नारायण भाष्यमा अनुक्तनु कथन करे छे ए कहे छे "'युक्तपरश्च' इति व्यजनोपध्मानीयजिह्वामूलीयपराणामुपलक्षणम्। तथा च 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्' (रघु० १–९) 'मन्द कवियश प्रार्थी' (रघु० १–३) इत्येवमादिषु सकारस्य, जिह्वामूलीयोपध्मानीयपक्षे च दकारशकारयोर्गुरुत्व सिद्ध भवति । इतरथा नकारस्य पादान्तत्वात् सकारस्य न प्राप्नोति, जिह्वामूलीयोपध्मानीययोश्च सयोगत्वाभावाद्दकारशकारयोर्न प्राप्नोति। तदुक्तम —

दीर्घ सयोगपर तथा प्लुत व्यजनान्तमूष्मान्तम्।
सानुस्वार च गुरु क्वचिदवसानेऽपि लघ्वन्त्यम् ॥
—वृ र चौ पृ ८

टीकाकार कहे छे के 'युक्तनी आगळनो' एम कहेवामा व्यजननी उपध्मानीयनी अने जिह्वामूलीयनी आगळनो एम पण समजी लेवु ए रीते 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्।' अने 'मन्द कवियश प्रार्थी' वगेरेमा पहेला दृष्टान्तमा 'सन्'ना 'स'नु अने बीजा दृष्टान्तमा 'मन्द'ना 'द'नु अने 'यश'ना 'श'नु गुरुत्व सिद्ध थाय छ नही तो पहेला दृष्टान्तमा पादने अते 'न्' आवतो होवाथी 'पादान्ते लघु गुरु बने छे' ए नियमनु गुरुत्व 'स' सुधी न पहोचे, अने 'मन्द कवि' अने 'यश प्रार्थी' ए प्रसगोमा 'द' पछीना जिह्वामूलीय अने 'श' पछीना उपध्मानीयनो पछीना व्यजन साथे सयोग न थतो होवाथी सयुक्त व्यजननु गुरुत्व 'द' अने 'श' सुधी न पहोचे माटे 'कह्यु छे के',

---

पण होठथी फूक मारता होईए तेना जेवो बोलाय छे माटे तेमने अनुक्रमे 'जिह्वामूलीय' अने 'उपध्मानीय' कहेला छ विसर्गना आ स्वरूपने प्राकृत भाषाना वाग्व्यापारथी पण समर्थन मळे छे सस्कृत 'दुख' शब्द प्राकृतमा 'दुक्ख' बने छे अही विसर्ग जिह्वामूलथी आगळ जई पोते कठ्य ज बनी जाय छे

एम कहीने नारायण पण हलायुधनी ज आर्या उतारे छे अर्थात् नारायणना समयमां हलायुधनी आर्या प्रमाणभूत परंपरामां पडी गई हती

नारायणे उपर 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्।' नुं दृष्टान्त आपी कह्युं छे के अहीं अंत्य 'सन्' व्यंजनांत छे माटे गुरु छे ए मत यथार्थ छे पण तेने माटे तेणे कहेली युक्ति मने अयुक्त जणाय छे ए कहे छे के 'सन्'ने गुरु न गणो तो पादान्ते गुरु करवाना नियमथी एने गुरु नहीं करी शको, कारण के 'स' नहीं पण 'न्' पादान्ते छे हवे लघुत्व के गुरुत्व ए स्वरने ज होय छे, व्यंजनने होतुं नथी, अने अक्षरसंख्या, व्यंजन साथे के व्यंजन विना आवेला स्वरोनी ज गणवानी होय छे अनुष्टुप आठ अक्षरनो होय छे, ते रीते गणता उपरनी पंक्तिमां आठमो अक्षर 'सन्' छे, 'न्' नथी 'न्' ए अक्षर ज नथी एटले 'सन्' ज अंत्य छे, अने ते पोते ज व्यंजनांत होई गुरु छे 'न्'ने अंत्य गणवो ए अशास्त्रीय छे अने नारायणनी अहीं एक बीजी पण सरतचूक थई छे मारा मत प्रमाणे अनुष्टुपनो अंत्य अक्षर गुरु जोईए, पण 'वृत्तरत्नाकर'मां क्याय पण, तेम तेना उपरनी टीकामां नारायणे क्याय पण अनुष्टुपनो अंत्य अक्षर गुरु जोईए एम कह्युं नथी परंपराथी ए अक्षर लघु के गुरु गमे ते होई शके एम मनातुं आव्युं छे, अने नारायणे पण एम ज मानेलुं छे पण नारायणनी मूळ वात साची छे के 'सन्' गुरु छे अने युक्तपरना नियममां व्यंजनांतनो ते समावेश करे छे ते पण तत्त्वत खरु छे

हवे उच्चारण संबंधी एक प्रश्न अहीं ज विचारता जईए, अलबत गुजरातमां अत्यारे जे रीते उच्चारण थाय छे ए रीते

आपणे जोयु के चरणान्ते लघु आवे तो ते पण जरूर होय तो गुरु थाय संस्कृत वृत्तोमां चरणान्ते आवतो गुरु प्लुत होय छे त्यां उच्चारनुं विलंबन थाय छे हवे चरणान्ते ह्रस्व इ के उ आवतो होय त्यारे उच्चारमां तेनुं प्लुतत्व साधवुं सरल छे 'इ' के 'उ' ज लंबावावाथी दीर्घ अने गुरु बने छे, अने ए ज उच्चारण वधारे लंबाववाथी प्लुत बने छे पण बीजा केटलाक उच्चारोमां शुं थाय छे ते विचारवा जेवुं छे दाखला तरीके छेल्ले अनुस्वार आवे त्यां उच्चार केवा प्रकारनो थाय छे? आपणे नीचेनी पंक्ति लईए

को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥

— रघुवंश ६, ७५

अही अन्त्य 'अ'नु लघु उच्चारण थईने पछी तरत ज श्वास नासिकामांथी ज नीकळतो लबावाय छे आपणे 'वदे मातरम्'नो छेल्लो अक्षर 'रम्' जेम नाकमांथी ज श्वास काढीने लबावीए छीए तेम ज अही 'हस्तम्' नो छेल्लो अक्षर लबावाय छे 'इ' ह्रस्व पण ए ज प्रमाणे लबावाय छे जेम के

मृत्पात्रशेषामकरोद् विभूतिम् ॥

— रघुवंश ६, ७६

अही पण 'इ' ह्रस्व बोलाई पछी नासिक्यविधानथी प्रलंब स्वर नीकळे छे 'अम्'नो नासिकामांथी नीकळतो स्वर अने 'इम्'नो नासिकामांथी नीकळतो स्वर एक ज छे कारण के 'अ' अने 'इ' बोलाई रह्या पछी ज आ नासिक्य-विधान चालु थाय छे अने ते उच्चारणना बनमां एक ज छे दीर्घ स्वर पछी आवतु अनुस्वार बे रीते बोलाय छे तेमांनो पहेली रीत ते उपरनी ज जेम के

निद्रा विहारार्धपथे गतानाम् ।

— रघुवंश, ६, ७५

अही 'ना'ने दीर्घ बोलीने पछी नासिकामांथी स्वर काढी उच्चार लबावाय छे अने त्यां पण ए नासिकामांथी उच्चारातो ध्वनि, 'रम्'मां थतो हतो तेवो ज थाय छे पण अही बीजी पद्धतिए पण उच्चारण थाय छे 'ना'-ने ज पूरतो लबावी प्लुत करीने पछी अनुस्वारथी उच्चारनो उपसंहार पण थाय छे आनी उपर आपेला दृष्टान्तमां 'विभूतिम्'मां पण 'ति'ने ज प्लुत करीए तो करी शकीए छीए, अने त्यारे 'इ' प्लुत थई उच्चारनो उपसंहार अनुस्वारथी थाय

सविसर्ग स्वर प्लुत बोलाय त्यारे शु थाय छे? आपणे नीचेनो दाखलो जोईए

गण्डस्थली प्रोषितपत्रलेखा ॥

— रघुवंश, ६, ७२

अही 'ला'नो उच्चार दीर्घ अने प्लुत थई पछी तेने विसर्गनो धडकारो लागे छे उपर आवी गयेला दाखलामां 'गतानाम्'ना अनुस्वारनी पेठे ज 'ई'नु पण एम ज थाय तेने माटे दाखलो शोधीने मूकवानी हु जरूर जोतो नथी पण 'अ'मां शु थाय? नीचेनो दाखलो लईए

कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीप ।

— रघुवंश, ६, ७४

अहीं पहेला 'अ'ने विसर्गनो यड्कारो लागे छे अने पछी 'अ' आगळ लवाय छे. ए रीते ए प्लुत थाय छे 'इ' अने 'उ'नु पण एम ज थाय अने 'उ'नो दाखलो सुलभ छे तेथी मूकु छु:

श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रु ॥

—रघुवंश, ६, ८५

अहीं 'उ'ने विसर्गनो यड्कारो पहेलो लागे छे, अने पछी 'उ' लवाईने प्लुति साधे छे

आपणे आ उच्चारणनी चर्चा करता प्रारंभमा बहुधु के अत्य 'इ' अने 'उ' मात्र प्रलंबनथी प्लुत बने, पण चरणान्ते 'अ' आवे त्या शु करवु? जेम के

पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव ॥

—रघुवंश, ७, १

अत्य 'अ'ने ज लंबावीने तेने दीर्घ अने प्लुत करी शकाय छे, ए देखीतु छे पण केटलाक विद्वानो अहीं आवता 'अ'नो उच्चार 'आ' करवो एने शास्त्रीय पद्धति गणे छे ऋग्वेदना पठनमा ज्या 'अ'ने प्लुत करवानो आवे छे त्या ऋग्वेदपाठीओ 'आ' उच्चारीने तेने प्लुत करे छे अने घणा संस्कृत पंडितो ए प्रमाणे संस्कृत छदोमा पण 'अ'नो 'आ' करी प्लुत करे छे उपरनी पक्तिमा 'बभूव'ने तेओ 'बभूवा' करी प्लुत करे मने पोताने आ पद्धति संस्कृत अने तद्भवभाषाओ माटे साची नथी लागती व्याकरणमा आने 'अ'नु दीर्घ रूप बहुधु छे ए खरु छे, पण उच्चार करता जणाय छे के बन्ने स्वतंत्र स्वरो छ 'इ' ह्रस्वना विलंबनथी जेम 'ई' दीर्घ थाय छे तेम 'अ'ना विलम्बनथी 'आ' थतो नथी 'आ' ए 'अ' नु वृद्धिथी साधेलु रूप छे उच्चारण प्रमाणे 'अ'ने गमे तेटली मात्रानो प्लुत करी शकाय छे मात्रामेळमा तो केवळ 'अ'ने ज प्लुत करवानी पद्धति केटलाक जातिछन्दोमा होय छ अने गुजरातीमा तो 'अ'नो 'आ' शोभतो ज नथी

'गाळी नाखे हलावी, रसिक हृदयने, वृत्तिथी दाब जाय'

— *'वसन्तविजय', पूर्वालाप*

अहीं 'जाय'ने बदले 'जाया' एवो उच्चार जरा पण शोभतो नथी एटले 'अ'ने ज प्लुत करवानु स्वीकारवु जोईए

हजी एक प्रश्न रहे छ वृत्तने अते व्यजनात 'अ' आवे त्या उच्चारमा प्लुति केवी रीते करवी?

प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत्।
—मेघदूत उ मे. ३१

अहीं 'यत्'नो प्लुत उच्चार केवी रीते करवो? आगळ आपेला दृष्टान्तमां 'हस्तम्'मां 'अ' पछी तरत अनुस्वार बोली पछी नासिकामांथी ज श्वास काढी स्वर लंबावी शकातो हतो तेम अहीं 'य'ने ह्रस्व बोली तेनी पछी तरत 'त्' बोली नाखीए तो ते पछी स्वरने लंबावी शकातो नथी माटे 'अ'ने ज प्लुत करवो पडे एटलेके 'य'ना 'अ'ने पूरतो लंबावी उच्चारणनो उपसंहार 'त्'थी करवो पडे 'य . त्' आ प्रमाणे अर्थात् अनुस्वार अने विसर्ग ज एवा छे जे उच्चारी लीधा पछी पण स्वरने आगळ लंबावी शकाय छे बीजा व्यंजनोमां एम थई शकतुं नथी आवा स्थाने 'य'ना 'अ'ने प्लुत न करवो होय तोपण 'यत्' नुं उच्चारण गुरु तो छे ज अने पछीनो विराम लंबावी श्लोकार्धनो अंत व्यक्त करी शकाय

परिशिष्ट ३

अपवाद : शैथिल्य : छूट

आपणे आ प्रकरणमां जोई गया के संस्कृतमां संयोगपरत्वयी अने अनुस्वारथी स्वर गुरु थतो गुजरातीमां निर्बळ संयोगने लीधे आगळनो लघु गुरु नथी थतो, अने गुजरातीमां अनुस्वार पण कोमळ होय त्यां अनुस्वारने लीधे स्वर गुरु नथी बनतो वळी गुजरातीमां तो छन्दनी खातर गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करवानी छूट लेवाय छे आ अपवादो, शैथिल्य अने छूट पिंगलमां पण स्वीकारायां छे आमांना घणाखरा अपवादो तो प्राकृत अने तेमांथी नीकळेली भाषाना उच्चारणनी खासियतना छे पण गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करी शकाय, ए, अने एना जेवी बीजी छूटो तो स्पष्ट रीते छूट ज छे ए छूटो प्राकृत अने तज्जन्य भाषाओमां होय ए समजी शकाय छे पण ए सर्व संस्कृतमां पण लई जवामां आवी छे, ए भाषाना आघात-प्रत्याघात जोवा जेवा छे माटे तेने बने तेटला व्यवस्थित करी नीचे मूकवानो प्रयत्न करुं छुं

प्रथम, निरूपणनी सगवड खातर, पादान्त गुरुनो नियम लउं छुं गया परिशिष्टमां आपणे जोयुं के एने माटे पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'मां 'गन्ते' एवुं सूत्र छे एनो स्पष्ट अर्थ एवो छे के पादने अन्ते आवतो लघु गुरु थाय

आनो सामे एवी दलील कराय के समानी (गाल गाल गाल गाल) जेवा छन्दोमा पादान्ते लघु ज कहेलो छे, त्या आ सूत्र लागु कराय तो छन्दनु स्वरूप बगडे तेनो रदियो ए छे के 'गन्ते' सूत्र सामान्य छे, अने समानी वगेरेना निरूपणना सूत्रो अपवाद छे — विशेष रूपना छे अने सामान्य सूत्रने हमेशा विशेष सूत्रनो बाध लागे छे एटले 'गन्ते।' सूत्रथी समानी जेवा छन्दोने बाध थतो नथी[1] आपणे आ विवाद साथे सबध नथी पण आ सूत्रना अर्थ विशे आपणने शका रहेती नथी, के अही पादान्त लघु गुरु थई शके एटलो ज आ सूत्रनो अर्थ छे पण पछीना पिंगलो आ सूत्रने वधारे छूटवाळु करे छे पिंगलमा बहु ज प्रतिष्ठावाळो ग्रन्थ 'वृत्तरत्नाकर', पादान्त सूत्रने जुदी रीते आपे छे आपणे ए सूत्र जरा जुदा सदर्भमा आगळ जोई गया छीए

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च य ।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजु ॥
वृ र, चो, १, ९

अही 'वा पादान्ते' कहीने विकल्प मूक्यो छे आनो अर्थ नारायण नीचे प्रमाणे करे छे "पादान्ते श्लोकचरणान्ते वर्तमानो लघुर्गुरुर्वा भवति। लघुत्वेऽपेक्षिते लघुकार्यं, गुरावपेक्षिते गुरुकार्यं करोतीत्यर्थः ।" "पादान्ते एटले श्लोकना चरणान्ते आवतो वर्ण लघु अथवा गुरु थाय ज्या लघुत्वनी अपेक्षा होय त्या लघुनु कार्य करे, गुरुनी अपेक्षा होय त्या गुरुनु कार्य करे" अही 'वृत्तरत्नाकर' हजी 'गन्ते' सूत्र सुधी ज गयो छे अर्थात् आ सूत्रनो एटलो ज अर्थ थाय छे के पादने अते आवेलो लघु, जो त्या लघुनी ज जरूर होय तो लघु ज रहे, लघुनु ज काम करे, पण जो त्या गुरुनी जरूर हाय तो गुरुनु काम पण करी शके. भाष्यकार नारायण आना दृष्टान्तमा समानीने बदले उद्गतानु दृष्टान्त आपे छे

---

१. "ननु 'ग्लिति समानी' (पि सू ५,७) इत्यादीना पादान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य गुरुत्व न दृश्यते। नैष दोष । सर्वत्र पादान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य गुरुत्वमुत्सर्गसिद्धम् । तच्च लकारश्रुत्यापवादेन बाध्यते । यथा — 'ग्लिति समानी' (पि सू ५, ७) 'गीतयार्गौ ल' (पि सू ४-४८) इत्यादौ सामान्यस्य विशषेण बाध कस्य न समत. तस्मात् युक्तोप्रमेतत् ।" मारी निर्णयसागरनी १९२७ नी आवृत्तिना पृ ४ उपर 'सामान्येन विशेषस्य बाध ' एम छापेलु छे ते देखीती रीते मूल हावाथी अहीं उपर प्रमाणे सुधारी लीधु छे

अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ॥ वगेरे.

आ उद्गता वृत्त छे. तेमा पहेला पादने अन्ते छन्दमा लघु आवश्यक छे, अने ते प्रमाणे अही लघु छे, ते लघुनु ज कार्य करशे. पादान्ते होवाथी ए गुरुनु कार्य नही करे. पण

तस्याः खुरन्यासपवित्रपासु-
मपासुलाना धुरिकीर्तनीया ॥

एमा प्रथम चरणने अन्ते ह्रस्व छे, त्या गुरुनी अपेक्षा छे माटे ते गुरुनुं कार्य करशे. आ प्रमाणे आ विकल्प छे पण ते व्यवस्थित छे. नारायण अने हलायुध अही एक ज वात करे छे. हलायुध जे वस्तु सामान्य विशेषनी दलीलथी कहे छे ते ज वात नारायण व्यवस्थित विकल्पथी कहे छे. अने नारायण आ पछी हलायुधनु ज उपर आपेलु अवतरण उतारीने तेने पण प्रमाण गणे छे. मारे मुख्य कहेवानु ए छे के पादान्त नियमनो बन्ने एटलो ज अर्थ करे छे के पादने अन्ते लघु होय, तो, ते गुरुनी आवश्यकता होय तो गुरुनु काम करी शके छे. बेमाथी कोईनो —खास करीने अही ध्यान दोरीने ए कहेवानु छे के नारायणनो— अभिप्राय गुरु पण लघु थई शके एवो नथी. तेने माटे 'वृत्तरत्नाकर' आ पछी जुदो ज नियम मूके छे :

पादादाविह वर्णस्य सयोग. क्रमसज्ञक ।
पुर स्थितेन तेन स्याल्लघुताऽपि क्वचिद्गुरो ॥ १० ॥
वृ. र. चौ. पृ. १७

'पादना आदिमा वर्णोनो क्रम नामनो सयोग होय, तो तेनी पहेला आवतो गुरु कोई जगाए लघु थाय'. क्रम पारिभाषिक शब्द छे, अने तेनो अर्थ अही सयुक्त व्यजन एवो करेलो छे नारायण गया श्लोकमा आपेला पादान्तनियमथी आने भिन्न समजाववा कहे छे "वा पादान्ते इत्यत्र पादान्ते लघोर्गुरुत्व विकल्पितम् । इह तु गुरोर्लघुत्वमिति न पौनरुक्त्यमिति भावो वक्ष्यते।" आगळ आवी गयेला 'वा पादान्ते' सूत्रथी लघुना गुरुत्वनो विकल्प कह्यो, अही गुरुना लघुत्वनी वात कही तेथी पुनरुक्तिदोष नथी" आ उपरथी निःशंक जणाशे के 'वा पादान्ते'ना सूत्रथी मात्र लघु ज गुरु थई शकतो हतो अने आ ११ मा श्लोकथी हवे गुरु लघु थई शके छे आपणे हजी 'रत्नाकर'मा ज आगळ चालीए.

गुरोर्लघुतायामुदाहरणं सम्प्रतिमाह। इदमस्योदाहरणम् —

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि ।
अल्पव्ययेन सुंदरि! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति ॥ ११ ॥

ए ध्यानमां राखवानुं छे के आ उदाहरण भाष्यकार आपतो नथी पण मूळ 'रत्नाकर' ज आपे छे. आ श्लोक आर्यानो छे. आर्यामां बार मात्राए यति आवे छे. ते प्रमाणे 'अल्पव्ययेन सुन्दरि!' त्यां यति आवे छे. एटलामां चार चतुष्कलो आववा जोईए. ते प्रमाणे 'अल्प', 'व्ययेन', 'सुन्दरि', एम चतुष्कलो थाय. पण 'सुन्दरि' शब्द पछी 'ग्राम्य' शब्द आवे छे. तेना आदिमां 'ग्र' संयुक्तव्यंजनो छे. तेने लीधे आगला चतुष्कलनो 'रि' गुरु थाय. 'रि' ने गुरु करीए तो 'सुन्दरि' शब्दनी पांच मात्रा थई जाय, अने छंद खोटो पडे. माटे अहीं एवो नियम लगाडयो छे के 'ग्राम्य' शब्दथी नवु पाद शरू थाय छे, अने नवा पादना प्रारंभमां जो क्रम — संयुक्त व्यंजनो आवे तो तेनी आगळना गुरुने पण लघु करी शकाय. आ नियमथी 'सुन्दरि'नो 'रि' लघु थाय — रहे, अने तेथी छन्दमां दोष न आवे. आ रीते पादने अंते आवता गुरुनी लघुता करी, पण ते एक ज प्रसंगे, के पछीना पादना प्रारंभमां संयुक्त व्यंजनो होय तो ज. अभिप्राय एवो जणाय छे के जुदा चरणमां आवेला संयोगनो थडकारो आगला चरण सुधी जई न शके अने तेथी ए लघु ते लघु ज रहे. क्रम सिवाय त्रीजा चतुष्कलमां *गुरु आवी गयो होय तो? — तेने माटे अहीं नियम नथी.*

आ बचाव अथवा अपवादमां एक मोटो वांधो आवे छे. आर्यामां बार मात्राए पाद थतुं नथी. एम गणतां आर्यानां चार पाद थाय, ज्यारे आर्या बे ज पादनी गणवी ए प्रामाणिक छे. 'रत्नाकर' पोते आर्याने बे पादनी गणे छे (वृ. र., २,१) *छतां नारायण भट्ट 'श्रुतबोधे' चार पाद गण्या छे एना प्रमाणथी* उपरना नियमनो बचाव करे छे. पण 'वृत्तरत्नाकर'नुं पोतानुं लक्षण पोताने बाध करतुं होय, अने टीकाकारने बहारनुं प्रमाण लाववुं पडे, ते ज बतावे छे के तंत्रव्यवस्था खोटी छे.

आपणे पादान्ते गुरुनो नियम जोइशे. 'रत्नाकर'मां एनो अर्थ एटलो ज थाय छे के पादान्ते लघु होय तोपण छन्दनी आवश्यकताथी ते गुरु थई शके छे. 'रत्नाकर'ने पगले जती 'छन्दोमंजरी' तेनाथी एक डगलुं आगळ जईने पादान्त लघुनुं गुरुत्व अने गुरुनुं लघुत्व बन्नेनो एकसाथे विकल्प करे छे. गुरुनी व्याख्या ते नीचे प्रमाणे करे छे :—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्ण संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

— छ. म., क, १, ११

पादान्तगोऽपि वा' उपर वृत्ति छे: 'अत्र पादान्तगो लघुर्गुरुर्भवेद् वा। यथा —

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि।
अल्पव्ययेन सुन्दरि! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति॥

अत्र ग्राम्यशब्दे परे सुन्दरीत्यस्य विकल्पेन लघुत्वम्। तथा भट्टि'—

अथ लुलितपतत्रिमालं तृणासनबाणकेसरतमालम्।
स वनं विविक्तमालं सीता द्रष्टुं जगामालम्॥

(१०, १४ श्लो०)

अत्र प्रथमपादान्तगुरोर्लघुत्वम्।'

वृत्ति आ प्रमाणे छे 'अहीं चरणने अंते आवेलो वर्ण लघु अथवा गुरु थाय. जेम के तरुण अहीं ग्राम्य शब्द पछी आवे छे माटे सुन्दरि शब्द विकल्पना नियमथी लघु थाय छे तेम ज भट्टिनु अर्थ. अहीं प्रथम पादने अंते आवेलो गुरु लघु थाय छे'

अहीं 'मंजरी'कार पादान्त गुरुना विकल्पनो बन्ने रीते ऊलटोसूलटो अर्थ करे छे. पादान्ते आवेलो लघु तो विकल्पे गुरु थाय, पण ए ज रीते पादान्ते आवेलो गुरु पण विकल्पे लघु थाय अने तेना दृष्टान्त तरीके बे आर्या आपे छे, जेमानी पहेली आपण 'रत्नाकर'मा पण दृष्टान्त तरीके जोई 'रत्नाकर' अने 'मंजरी' बन्ने पासे प्रश्न एक ज छे के 'सुन्दरि' मा छन्दनी दृष्टिए 'रि' ह्रस्व ज जोईए, अने तेनी पछी संयोग होवाथी ए गुरु थई जाय छे, ते गुरुत्व कई रीते टाळवु 'रत्नाकर', आपणे जोई गया के, एने माटे एवो नियम बतावे छे के पादान्त गुरु थवामा पछीना पादना प्रथम संयुक्त व्यंजनो जवाबदार होय तो त्या गुरु विकल्पे लघु थाय 'मंजरी'कार कहे छे के पादान्ते लघु गुरु थाय छे ते साथे ए विकल्पना बळे ज गुरु पण लघु थई शके. ते तरुण' वाळी आर्या उपरांत भट्टिनी अथ'वाळी आर्या आपे छे एमा पहेला पादमा बार मात्रा करवा छेल्लो गुरु लघु करवो पडशे बार मात्राना आ खंडना चतुष्कलो आ प्रमाणे पडे छे 'अथलुलि', 'तपत', 'त्रिमाल' एटले 'ल' ने लघु करवो पडे. पण उपर प्रमाणे 'त्रिमाल'ना छेल्ला अक्षरने लघु करवा सामे घणा वाधा छे पण एक वाघो तो तरत ज देखाय एवो छे आ श्लोकमा एक

शब्दालकार बहु स्पष्ट रीते तरी आवे छे ते ए छे के आर्याना चारेय यतिखडमा अते कविए 'माल' अक्षरो मूकेला छे पहेला यतिखड सिवायना त्रणेय यतिखडोमा 'माल' बन्ने गुरु छे हवे जो पहेला यतिखडमा 'माल'मा बीजो लघु करीए तो ए आखो शब्दालकार खडित थाय.

पण ए सिवाय आर्याना बधने लगता पण महत्त्वना वाघा छे तरुण[*] आर्याना सबधमा में कह्यु हतु के एटलाने आर्यानु पद गणवु ए अप्रामाणिक छे, ते अही पण लागु पडे छे 'मजरी'कार पण आर्याने बे ज दलनी गणे छे, (छ म ६ १) अने एम गणता बार मात्राना खडने पाद न कही शकाय पण अही एक बीजो वाघो पण आवे छे 'ल'ने लघु गणता ए चतुष्कल लगाल एटले ज-गण बने छे, जे आर्यामा त्रीजे स्थाने निषिद्ध छे (एजन)

आ जगण सबधी वाघ, 'छन्दोमजरी'ना विद्वान सपादक अने व्याख्याकार श्री रामचनदेव शर्माए चर्चेलो छे हु ते चर्चा ज नीचे उतारु छु "एतच्छ्लोक-व्याख्यानावसरे भरतोऽप्यमुमेवार्थमधिकृत्य—यद्यपि छन्द शास्त्रे सानुस्वारस्य-गुरुत्वमनुशिष्ट तथाऽपि 'तथा पादान्तगोऽपि वा' इति वचनात् तस्य लघुत्वात् प्रथमपादे द्वादशमात्रा भवन्ति, किन्तु 'भवति नेह विषमे ज' (छ म रा, ६ १) इत्यार्यायां प्रायिक, तृतीयगणस्यात्र मध्यगुरुत्वात्। 'सत्तगणा दीहता जो णलहू छट्ठ णेह जो विसमे'[१] (प्रा पं B. मात्रावृ० सू० ५६) इत्यत्र नञ्प्रशसापरत्वमिति टीकाकृतोक्तम्, 'जा पढम तीअ पचम सत्तम ठाण ण होइ गुरुमज्झा। गुव्विणिए गुणरहिआ गाहा दोस पआसेइ'। 'इत्यनेना-प्राशस्त्यस्योक्तत्वात्, न तु विषमस्य जगणे लक्षणबहिर्भूता गाथा भवतीति। वस्तुत पत्रिमालमिति पाठ मध्ये तत्कारपाठो लेखकप्रमादात् इत्याहु। इति॥"

भावार्थ 'आ श्लोकना व्याख्यानने प्रसगे भरत (भट्टि काव्यनो टीकाकार) पण आ ज अर्थने विषय करीने लखे छे —"जोके छन्दशास्त्रमा सानुस्वार स्वरने गुरु गणेलो छे, तो पण 'तथा पादान्तगोऽपि वा' ('छन्दोमजरी'नु आगळ आवो गयेलु ज अवतरण अर्थ पादने अते आवेलो स्वर विकल्पे गुरु थाय) एवा वचनने लीधे ते लघु थाय छ, अने तेथी पहेला पादमा बार मात्रा थाय छे पण 'भवति नेह विषमे ज (छन्दोमजरी, ६,१, अर्थ आर्यामा विषम(एकी) स्थाने जगण आवतो नथी) ते, आर्यामा, घणे भागे एवु थतु

१ बन्ने प्राकृत अवतरणो 'प्राकृत पंगल' प्रमाणे सुधारीने मूक्या छे बीजु अवतरण 'प्राकृत पंगल'नो ६५ मो श्लोक छे मजरीना मूळ अवतरणमा घणा पाठदोषो आवी गयेला छ

नथी एवा अर्थना लेवु. कारण के अहीं बीजो गण मध्यगुरु एटले जगण छे. सत्तगणा[*] वगेरे (अर्थ: अने दीर्घवाळा सात चतुष्कल संधिओ, तेमा छठ्ठो जगण अथवा चतुर्लघु, अने विषमस्थाने जगण नहीं) एमा 'नही'नो नकार प्रशंसाना अर्थमा समजवो[२] एम टीकाकारे कहेलु छे, केम जे जा पढम[*] वगेरे (अर्थ: जेमा पहेला त्रीजा पांचमा स्थाने जगण होय ते गुणरहित गुर्विणी [बे अर्थ: (१) गर्भिणी (२) गुरुवाळी — जगणना अंतरमा गुरु छे माटे.]नी पेठे गाथानो दोष प्रकाशे छे.) एम कहीने प्रशस्यता कहेली छे, नही के विषमस्थाने जगणवाळी गाथा लक्षण बहारनी बनी जाय छे, एम. खरी रीते तो 'पत्रिनाल' एवो पाठ छे. लेखकना प्रमादथी तकार थयी गयेलो छे', एम भरते कहेलु छे.

अहीं भरत पण 'त्रिनाल'ना अंत्य 'ल'ने लघु गणवायी विषमस्थाने जगण आवे छे ए वाधो दर्शावे छे अने एवो बचाव करे छे के जगणनिषेध ए प्रशस्यता अर्थ समजवो. विषमस्थाने जगण आववायी गाथा लक्षणबहार जती नथी. पण बधु कही रह्या पछी छेवटे तो पाठदोष बतावे छे: 'पतत्रि'-ने बदले 'पत्रि', बन्नेनो एक ज अर्थ थाय छे — पक्षी. पहेलाने बदले बीजो लेता गुरुने लघु करवानी के जगणनो बचाव करवानी जरूर रहेती नथी. सद्गत के. ह. ध्रुवे पण आ पाठने स्वीकार्यो छे. (प. ऐ आ., पृ० ५६) आ पाठ स्वीकारता पादान्ते गुरुना विकल्पनी जरूर रहेती नथी.

पण आ पाठ हुं स्वीकारी शकतो नथी 'भट्टिकाव्य'ना पाना उथलावी जोता जणाय छे के ते वारवार 'पतत्रि' शब्द वापरे छे. जेम के, ४,४४; ५,८०; ५,१०७; अने ज्या टूको शब्द वापरवो होय त्या 'पक्षि' शब्द वापरे छे. जेम के २, २५ मा 'पक्षिगणै.', १, २७ मा 'पक्षिण', ५,९६ मा 'पक्षीन्द्र'. 'पत्रि' अने 'पक्षि' बन्नेनु अक्षरमाप एकसरखु छे तो आ स्थाने ते अनेक वार वापरेलो 'पक्षि' शब्द न वापरता तेनी अपेक्षाए विरल-प्रयुक्त 'पत्रि' शब्द वापरे ए मने संभवित लागतु नथी. भरते 'पत्रि' पाठान्तर छन्दना दोषमायी मुक्त थवा योजेलु होय एवुं जणाय छे, अने माटे ज ते छन्दनी चर्चा करीने योजे छे पण ज्या सुधी एवा पाठवाळी कोई प्रत मळे नही त्या सुधी आ पाठातर तर्कथी सुधारी शकाय नही. भट्टि उपरनी प्राचीनतम टीका 'जयमगला' 'पतत्रि' पाठ स्वीकारे छे. अलबत 'जयमगला' क्याई छन्दना स्वरूपनी चर्चा करती नथी. पण एवी चर्चा करनार मल्लिनाथ पण 'पतत्रि' पाठ ज आपे छे, जोके आ

---

२. अर्थात् विषमस्थाने जगण न आवे ए रचना प्रशस्य गणाय.

श्लोकमा ए छन्दोदोषनी चर्चा करी नथी (जुओ K. P. Trivedi संपादित 'भट्टिकाव्य' १०,१४. संपादके पण आ पाठनी चर्चा करी नथी.)

हु मानु छु के आने भट्टिना पाठनु शैथिल्य गणवु जोईए. हु एम मानवा ललचाउ छु तेनु कारण ए छे के अन्यत्र एवो दोष मने भट्टिमा जणायो छे. भट्टिकाव्यना सर्ग ११ नो ४२ मो श्लोक नीचे प्रमाणे छे.

निवृत्तमत्तद्विपकुम्भमांसं
सपृक्तमुक्तैर्हरयोऽप्रपादं ।
आनिन्यिरे श्रेणीकृतास्तयाऽन्यं.
परस्पर वालधिसन्निबद्धा ॥

'भट्टिकाव्य', ११, ४२

अहीं त्रीजी पंक्तिमा 'श्रेणी'नो 'णी' दीर्घ छे, व्याकरण दृष्टिए ए च्वि रूप छे एटले त्या दीर्घ ज जोईए पण छन्दनी दृष्टिए त्या लघुनी जरूर छे. जयमंगला अहीं 'णी' दीर्घ ज आपे छे, दरेक स्थळे छन्दने ओळखावनार मल्लिनाथ पण अहीं 'णी' दीर्घ आपे छे, जोके छन्दोदोषनो उल्लेख टीकामा करतो नथी. प्रसिद्ध संपादक धर्मळावकर जेओ व्याकरणशास्त्री हता ते पण दीर्घ पाठ ज आपे छे. *निर्णयसागर आवृत्तिना संपादक वि ना शास्त्री* 'णि'नो ह्रस्व पाठ आपी नीचे टीप करे छे "अत्र छन्दोभंगपरिहारार्थं 'श्रेणिकृता' इत्येव युक्तं प्रतिभाति। '२।२०। च्वौ च ७।४।२६' इति शास्त्रापेक्षया 'अपि माषं मषं कुर्याच्छन्दोभंगं न कारयेत्' इति छन्दःशास्त्रस्य प्रबलत्वात्।" अर्थात् शब्द तो 'श्रेणीकृत' ज जोईए पण छन्दनी खातर 'णि' ह्रस्व करवो जोईए. आम कहेवु ए तो छन्दोदोष उपर महोर मारवा जेवु छे. आ बधा उपरथी स्पष्ट थाय छे के 'णी' दीर्घ ज जोईए जोके तेथी छन्दोभंग थाय छे. पण आ प्रसंगे पण भरत 'णि' ह्रस्व पाठ आपे छे. कलकत्तामा १८७१ मा यदुनाथ तर्करत्नसंपादित भट्टिकाव्यमा भरतमल्लिकनी मुग्धबोधिनी टीकामा 'श्रणि' पाठ आपी टीकाकार कहे छे अश्रेणयः श्रेणयः कृता अभिधान नियामक इति उक्ते च्व्यर्थे श्रेण्यादे कृतादिना समास इति बोध्यम्। भरत कहे छे के अहीं 'श्रेणि' अने कृत शब्दनो समास च्विना अर्थमा थयो छे पण 'श्रेणि' शब्द वपराई गयो तो एने ज नियामक मानवो. एटले आ भरत घणो विद्वान होवा छता पाठनी बाबतमा मनस्वी रीते छूट लेनारो जणाय छे, अने तेथी तेणे सूचवेला पाठो स्वीकारी शकाय नहीं एम हु मानु छु.

भट्टिनो एक त्रीजो पण शिथिल प्रयोग मारा जोवामा आव्यो छे ते नीचे उतारु छु :

मृषाऽसि त्वं हविर्याजी राघव ! छद्मतापस ।
अन्यव्यासक्तघातित्वाद् ब्रह्मघ्ना पापनमित ॥

एजन, ६–१२६

अही बीजु चरण 'राघव' शब्दथी शरू थाय छे अनुष्टुपमा कोई चरणनो बीजो अने त्रीजो वर्ण लगारो ह्रस्व न होई शके, ते अही छे, ए दोष छे अलबत्त अनुष्टुपना स्वरूप मरथी घणो गोटाळो छे, पण ए छन्दनी चर्चामा आपणे जाईशु के आ नियम आवश्यक छे आ बधा उपरथी हु एम ज मानु छु के त्या 'पतत्रि' शब्द ज हतो अने ते छन्दोदोष ज छे, अने उच्चार शैथिल्यने लीधे थवा पाम्यो छ

आ आखी चर्चा उपरथी स्पष्ट थाय छ के पादान्त गुरुत्वनो मूळ नियम मात्र एटलो ज हतो के पादान्ते लघु आवतो होय, पण जो त्या छन्दनी दृष्टिए गुरुनी अपेक्षा होय तो ए लघु गुरुनु काम करी शके आ तद्दन स्वाभाविक छ, कारण के संस्कृत वृत्तोमा पादान्ते विलबन होय छे अने तेथी विलबनथी लघु एनी मेळे गुरु थई जाय छे पिंगलना छन्दशास्त्र अने तेना टीकाकारनो आ ज नियम हता 'वृत्तरत्नाकर' उपरनो नियम स्वीकारे छ पण तेनी पासे तरुण॰ ए आर्या आवी, अने त्रीजा चतुष्कलना 'सुन्दरि'ना अत्य 'रि'ने लघु राखवानी तेने जरूर जणाई ते तेणे क्रमना नियमथी कर्यु पण ए नियम, आर्याने लागु करी न शकाय ते आपणे जाणु ता 'मजरी' तेथी पण आगळ जई नियम करे छ के पादान्ते लघु के गुरु गम तेने गुरु के लघु करी शकाय ते पण तरुण॰नु ज दृष्टान्त आपे छ अलकारग्रन्थोनी पेठे पिंगलो पण एकना एक श्लोकोने चलणी दृष्टान्तो तरीके वापरे छ भट्टिनायी ते बीजु दृष्टान्त आपे छे, पण ए दोष ज छ तेने सुधारवा पादान्त गुरुने लघु करवो, ए कविना दोष खातर पिंगलमा दोष उमेरवा बराबर छ लघुनु गुरूकरण, पादान्तविलबननु जेवु स्वाभाविक परिणाम छे, तेवु, पादान्त गुरुना लघूकरण पक्ष कशु ज नथी जो पादान्ते गुरु लघु करी शकातो होय तो गमे त्याय करी शकाय

'रत्नाकर' 'सुन्दरि'ना 'रि'ने लघु राखवा क्रमनो नियम कहे छे, 'मजरी'कार पादान्त विकल्पनो नियम कहे छ पण 'रत्नाकर'ना टीकाकार नारायणने अने 'मजरी'कारने आथी सतोष थतो नथी नारायण आ क्रमना प्रकरणने अते कहे छ "इद चोपलक्षण प्रशब्दे ह्रशब्दे च परतोऽपादान्तस्य-

न्यापि लघुताया कविप्रयोगे दर्शनात्। तथा च कुमारसभवे—'गृहीत-प्रत्युद्गमनीयवस्त्रा' (कु ७-११) इति प्रशब्दे परतस्तस्य लघुता दृष्टा। माघे च—'प्राप्यनाभिह्रदमज्जनमाशु' (शि व १०-६०) इति। अन्यत्रापि—'तव ह्रियापह्रियो मम ह्रीरभूत्' इति ह्रशब्दे परतो लघुता दृष्टा। अन्ये तु सयोगमात्रे परभूते लघुत्वमतीवतीव्रप्रयत्नतयेत्याहु। अत एव सरस्वतीकण्ठाभरण उक्तम्—

> यदा तीव्रप्रयत्नेन सयोगादेरगौरवम्।
> न च्छन्दोभग इत्याहुस्तदा दोषाय सूरय ॥ (सर १-१२२)

तथा च कविप्रयोगा . . ."

नारायण कहे छे के उपर जे कमनो नियम आप्यो ते पादान्त न होय त्या पण लागु करवो, कारण के कविओना प्रयोगोमा प्र अने ह्रसयुक्ताक्षरोनी आगळनो अक्षर पादाते न होय तोपण लघु रहे एवा दाखला मळे छे जेम के 'कुमारसभव'मा गृहीत° ए श्लोकमा 'प्र'नी आगळनो अक्षर 'त' लघु ज रहे छे माघमा तव° ए श्लोकमा 'ह्र'नी पहेलानो 'भि' लघु रहे छे बीजे पण तव° ए श्लोकमा 'ह्र' पहेलाना त्रणेय अक्षरो लघु रहे छ बीजा केटलाक कहे छे के अत्यत तीव्र प्रयत्नने लीधे थाय सयोगमा आगळ आवेलो लघु लघु ज रहे तेथी 'सरस्वतीकठाभरण' कहे छे के "ज्यारे तीव्र प्रयत्नने लीध सयोगनी पहेलानो अक्षर गुरु न बने त्यारे सुज्ञो तनाथी छदोभग थतो मानता नथी"

अही सौथी पहेली आवश्यकता तीव्र शब्दनो अर्थ करवानी छ तेनी चर्चा न करता एटलु ज कहीश के 'छन्दोमजरी' पण आ ज अपवादमा आ ज दृष्टान्तो अने 'कठाभरण'नो आ ज श्लोक उतारे छे, अने त्या रामचन्द्रदेव तीव्रनो अर्थ द्रुततर एवो करे छे "यदा 'यदि तीव्रप्रयत्नेन द्रुततरपठनप्रयासेन सयोगस्य आदि सयोगादि तस्य, सयुक्तपूर्ववर्तिनो वर्णस्य इत्यर्थ अगौरव लघुत्व भवतीति शेष, वस्तुतोऽलघुरपि लघुरिव प्रतीयेत चेद् इति भाव।'" छ म व पृ १५ अही अर्थ स्पष्ट छे के तीव्रनो अर्थ द्रुततर छे गुजरातीमां तो आपु घणी जगाए थाय छे अने तेने आपणे निर्बल सयोग कहीए छीए तेने ज अही तीव्र कहेलो छे

नारायणनो अभिप्राय स्पष्ट छे के प्र अने ह्र पहेलानो लघु लघुरूपे ज रही शके छे 'छन्दोमजरी' वळी आने माटे पिंगलनु नवु सूत्र मूके छे "प्रे ह्रे वा इति पुन पिंगलमुनेर्विकल्पविधायक सूत्रम्।" अने दृष्टातमा उपरनो

ज श्लोक आपे छे पण संपादक पोते ज नीचे टीप मूके छे के पिंगलना मुद्रित छन्दशास्त्रना पुस्तकोमा आ पाठ मळतो नथी. (छ म च पृ १३)

आ आखो प्रश्न पूरेपूरो छणवा योग्य छे ते हु आगळ हेमचन्द्रनो मत टाक्या पछी हाथमा लईश पण ते पहेला आ दृष्टान्तो जरा परीक्षवानी जरूर छे. 'कविओना प्रयोगोमा' अनेक जगाए 'कुमारसमव'नो ७–११ मुकाय छे आपणे ते जोईए.

सा मगलस्नानविशुद्धगात्री
गृहीतप्रत्युद्‌गमनीयवस्त्रा ।
निर्वृत्तपर्जन्यजलाभिषेका
प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे ॥
कुमारसमव, ७, ११

हवे निर्णयसागरना मल्लिनाथनी टीकावाळा 'कुमारसमव'मा 'गृहीतपत्युद्‌गमनीयवस्त्रा' एवो पाठ छे तेमा आ पक्तिनु एक ज पाठान्तर आपेलु छ अने ते 'धुद्धोद्‌गमनीय' एवु छे पण गुजराती प्रेसना 'कुमारसमव'मा मल्लिनाथ उपरात चारित्रवर्धननी टीका आपेली छे तेमा उपरनो एटले 'प्र' वाळो पाठ छे, जोके तेमा टीकाकारे 'प्र' पाठथी आगळनो 'त' गुरु थई छन्दोभग थाय ते सबधी कशो खुलासो कर्यो नथी हवे मल्लिनाथ, कीथ प्रमाणे, १४०० आसपास थया (H.S.L, p. 87) अने चारित्रवर्धने 'कुमार' उपरनी टीका स ११९२ मा लखी एटले चारित्रवर्धन मल्लिनाथ पहेलानो छे पण मल्लिनाथ 'उद्‌गमनीय' शब्दनो अर्थ आपता 'अमरकोष'नु प्रमाण आपे छे "तत्स्यादुद्‌गमनीय यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् । इत्यमर । युगग्रहण तु प्रायिकाभिप्रायम् । अत एवात्र क्षीरस्वामी—'युग प्रायशो यल्लक्ष्य तदेव' इति व्याख्याय 'गृहीतपत्युद्‌गमनीयवस्त्रा' इत्येतदेवोदाहृतवान् ।" अमर प्रमाणे 'उद्‌गमनीय'नो अर्थ धोयेला लूगडानी जोड पछी मल्लिनाथ कहे छे के युग (जोड)नो अर्थ 'घण भागे जोड' एवो करवो तेने माटे 'अमरकोष'ना टीकाकार क्षीरस्वामीनु प्रमाण आपे छे अने कहे छे के क्षीरस्वामीए आ अर्थने माटे 'गृहीतपत्युद्‌गमनीयवस्त्रा' ए ज उदाहरण आपेलु छे क्षीरस्वामी कीथ प्रमाणे ११मा सैकानो हता (H. S. L. p. 414) अेटले क्षीरस्वामी चारित्रवर्धन पहेलानो थयो ए रीते समयदृष्टिए मल्लिनाथनो पाठ प्राचीनतर छे

पण मने कोईनो पाठ सतोषकारक जणातो नथी प्रथम चारित्रवर्धन लईए ए पहेला चरणनो अर्थ आपी कहे छे "तथा गृहीत प्रत्युद्‌गमनीय 'यद्धौत-

गांवस्त्रयोर्युगम्' इति हैम ।" चारित्रवर्धन प्रत्युद्गमनीय शब्दना अर्थ माटे हेमाचार्यना 'अभिधानचिंतामणि'नु प्रमाण आपे छे, जोके एना शब्दो अमरना छे. तेनु काई नहीं, कारण के हेमाचार्य पूर्वगामीना शब्दो श्लोको वगेरे स्वीकारे छे पण नरो वांधो ए छे के चारित्रवर्धन प्रत्युद्गमनीय शब्द माटे प्रमाण आपतो होय एम देखाय छे, पण हेमाचार्यना 'चिंतामणि'मा 'प्रत्युद्गमनीय' शब्द ज नथी, 'उद्गमनीय' ज छे, अने अपेरो अर्थ 'उद्गमनीय'नो ज छे एटले के 'प्रति'नो त्या क्यो अर्थ थतो नथी तेम मल्लिनाथना 'पति' पाठथी पण मने संतोष थतो नथी 'पत्यु' पतिनु वस्त्र एटले शु ? पतिए आपेलु ? पण पति वस्त्र मोकले एवो रिवाज कोई गृह्यसूत्रमा जणातो नथी विवाहविधि वखतनु वस्त्र तो पिताना घरनु ज होय पिता वस्त्राभूषणथी विभूषित कन्याने दानमा आपे छे ए मूळ भावना छे मल्लिनाथने आ मुश्केली जाणे जणाती होय तेम ते 'पत्यु'नो फरी अर्थ करे छे "गृहीत पति प्रत्युद्गमनीयवस्त्र यया सा। धौतवस्त्रमाच्छादितवतीत्यर्थ ।" मल्लिनाथ 'पत्यु' (छठ्ठी विभक्ति)नो अर्थ पति प्रति एवो करे छे कदाच 'प्रति'वाळो पाठ तेनी पासे छे अने तेथी 'प्रति'नो अर्थ पण 'पति'ना पाठमाथी नीकळे छे एम बतावबानो तेनो अभिप्राय होय. पण तोपण शु ? पति प्रति योग्य वस्त्र पहेर्यु एटले शु ? 'अमरकोष'नी (२-११२) टीकामा क्षीरस्वामी उद्गम्यते अभिलष्यते — उद्गमनीयम् । एटले उद्गमनीयनो अर्थ अभिलषणीय — अभिलाषा करवा योग्य एवो आपे छे, पण तोपण 'पति तरफ अभिलाषा करवा योग्य' ए अर्थ पण बेसतो नथी. हु मानु छु कोई जुदो ज पाठ छे अने ते लुप्त थता थे नहीं समजातो आ वे पाठो उपस्थित थया छे कालिदास जेवानी कृतिओ पण आपणा देशमा हजी शास्त्रीय रीते संपादित थई नथी! आ श्लोक उपर वधारे कालक्षेप करवानो मने अवकाश नथी, पण हु प्रति पाठ स्वीकारतो नथी, अने कालिदासना समयमा प्र विकल्पे पण थडकारा विनानो थयो हतो एम स्वीकारी शकतो नथी एवु वलण प्राकृतोमा हतु पण कालिदास आवा वलणने संस्कृतमा लई जाय एम आटला एक संदिग्ध दाखला परथी हु मानी शकतो नथी.

ते पछी बीजु दृष्टान्त माघमाथी नीचे प्रमाणे आपाय छे.

प्राप्य नाभिह्रदमज्जनमाशु
प्रस्थित निवसनग्रहणाय।
औपनीविकमरुन्ध किल स्त्री
वल्लभस्य करमात्मकराभ्याम् ॥

शि० व०, १०-६०

हवे अहीं पण मल्लिनाथ 'नाभिह्रदने' बदले 'नाभिनद' पाठ आपे छे पण नाभिने 'ह्रद'ने बदले 'नद' साथे सरखाववी ए मने अनुचित लागे छे तेम ज परंपरानो विरुद्ध छे. नाभिने कविओ ह्रद ज कहेता आव्या छे. माघे पोते पांचमा सर्गना २९ मा श्लोकमां "नाभिह्रदे परिगृहीतरयाणि निम्नैः." करीने लख्यु छे. अने मल्लिनाथने पण नद नो अर्थ ह्रद ज करवो पडे छे, अने तेने माटे ते कोई कोपन् प्रमाण आपी शकतो नथी. एटले त्या हु 'नाभिह्रद' पाठ साचो मानु छु. अर्थात् संस्कृतमा 'ह्र' अने 'प्र' पहेलानो लघु नहो थडकावानु वलण कालिदासना समयमा होय तोपण कालिदासे तेने संस्कृतमा अपनाव्यु होय एम हुं मानतो नथी. माघमा ए वलण छे, ए स्पष्ट छे. नारायण बीजा पण दृष्टान्तो आपे छे तेमानां घणाखरा हेमाचार्यमा आवे छे, जेने हवे हुं उतारु छु.

हेमाचार्य गणोनी संज्ञा कह्या पछी लघुगुरुनी चर्चामा प्रथम "ह्रस्वो लृजु।" कहे छे. यथा ह्रस्वो ल संज्ञावाळा एटले के लघु छे. ते पछी "वाते ग्वक्र:।" सूत्र उपर टीका करे छे: "पादान्ते वर्तमानो ह्रस्वो ग्संज्ञो भवति।... वेति व्यवस्थित विभाषा, तेन यत्र 'जौंग्ली समानी' स्यादावपवादस्तत्र ग्संज्ञो न भवति। वंशस्थादौ च पादान्ते लवोर्गुरुत्व न भवति। यदाह 'वंशस्थकादिचरणान्त निवेशितस्य, गत्व लघोर्नहि तथा श्रुतिशर्मदायि। श्रोतुर्वसंततिलकादिपदान्तवर्ति लंगत्वमत्र विहित विवुधैर्यथा तत्।'"

सूत्रनो अर्थ करता कहे छे के 'पादान्ते ह्रस्व होय ते गुरुसंज्ञानो व' छे. अहो 'वा'नो अर्थ व्यवस्थित विकल्प एवो छे. तेथी रगण जगण ग ल (गाल गाल गाल गाल) समानी छन्द वगेरेमा अपवाद होवाथी त्या गुरु न थाय आटला उपरथी जणाशे के हेमचन्द्र, सूत्रना शब्दोमा जरा फरक करनो होवा छता पिंगलना मूळ सूत्रने ज अनुसरे छे, अने पादान्तनो लघु, गुरुनी आवश्यकता होय त्या, गुरु थई शके छे एटलु ज कहे छे. 'छन्दोमंजरो'नो पेठे पादान्तगुरु लघु थई शके एवु कहेतो नथी. ते पछी ते पादान्त लघु, गुरु क्या थाय ते संबंधी कहे छे के 'वंशस्थ वगेरे वृत्तोमा पादान्ते लघु गुरु न थाय, अने तेना प्रमाणमा प्रास्ताविक श्लोक उतारे छे तेनो अर्थ एवो छे के 'वसततिलका वगेरेमा पादान्त लघु गुरु थाय ए जेवु शोभे छे तेवु वंशस्थ वगेरेमा शोभतु नथी' आ बाबत जरा स्फुट करवानी जरूर छे. श्लोकान्ते अने श्लोकार्धे, लघु गुरु थई शके एवो नियम सार्वत्रिक छे. पण एकी चरणने अंते एटले के पहेला अने त्रीजा चरणने अन्ते थोडा छंदोमा ज ए छूट छे. उपरना प्रास्ताविक प्रमाणमा 'वसन्ततिलका वगेरे'मा ज थई

थाय छे एम कहेलुं छे. आ 'वगेरे'मां कोनो कोनो समावेश करवो ए बाबतनुं विधान घणां प्रसिद्ध पिंगलोमां पण मने मळ्युं. [illegible] आ बाबती कशुं ज कहेतो नथी. 'वृत्तरत्नाकर' तेम ज तेनो टीकाकार नारायण भट्ट पण अहीं मूक रह्यो छे. 'छन्दोमंजरी' पादान्त लघु गुरु बनवानां बे दृष्टान्तो वसन्ततिलकानां ज आपे छे. तेमां पहेलामां, 'अत्र तृतीयचतुर्थपादान्तलघोर्गुरुत्वम्।' 'अहीं त्रीजा अने चोथा पादने अंते लघु गुरु थाय छे' अने बीजामां 'अत्र प्रथमतृतीय-पादान्तस्यापि लघोर्गुरुत्वम्' 'अहीं पहेलो अने त्रीजो पादान्तलघु पण गुरु थाय छे,' एम कहे छे. (छ म. प पृ १२,१३) 'पहेलो अने त्रीजो पण' ए शब्दो उपरथी अनुमान थाय छे के साधारण रीते पहेला त्रीजामां तेम नहीं थतुं होय. पण क्यां थाय, क्यां न थाय, ए बाबती कशुं कहेलुं नथी. पण साहित्यदर्पणना छन्दो-दोष विशे कहेलुं छे त्यांथी वधारे स्पष्ट विचार मळे छे. में जोया तेटला ग्रन्थोमां सौथी स्पष्ट विधान मने 'साहित्यदर्पण'मां जणाय छे हतवृत्तनुं दृष्टान्त आपी ते कहे छे : "यत्पादान्ते लघोरपि गुरुभाव उक्तस्तत्सर्वत्र द्वितीयचतुर्थपादविषयम्। प्रथमतृतीयपादविषयं तु वसन्ततिलकादेरेव।" 'पादान्ते लघु पण गुरु थाय एम कहेलुं छे ते बीजा अने चोथा पाद विषे छे पहेला अने त्रीजा पादमां वसन्ततिलका वगेरेमां ज थाय.' अहीं पण वसन्त-तिलका उपरांत कया ए नथी कहेलुं, पण नीचे टीप आपी छे : "आदिपदेनेन्द्र-वज्रोपेन्द्रवज्रयोः संग्रहः।" 'आदि पदमां इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रानो समावेश थाय छे' सा. द. नि. पृ. ४०२–३. पिंगलोमां 'वृत्तवार्त्तिक'मां मने आनो स्पष्ट उल्लेख जणायो छे :

पादान्ते गुरुसंज्ञाया विभाषात्वं यदीरितम्।
व्यवस्थितविभाषात्वं तस्य स्यादिष्टसिद्धये ॥ ५८ ॥

वृ० वा०, पृ० ३१

'पादान्ते गुरुसंज्ञानो जे विकल्प कह्यो छे, ते व्यवस्थित विकल्प समजवो.'

भवेदुपेन्द्रवज्रादेरोजान्तेषु विकल्पतः।
नियमेनेतरेषां तु गुरुत्वमविकल्पितम् ॥ ५९ ॥

एजन

'ए गुरुसंज्ञा उपेन्द्रवज्रा वगेरे छन्दोना विषम पादने अंते विकल्पथी थाय बीजा छन्दोनी बाबतमां गुरुत्वनो विकल्प न थाय' ते उपर टीका : "उपेन्द्र-वज्रादेरिति। अत्र परिगणनम्—'उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजातयः,

वसन्ततिलकम्, इत्येतेषामेव तावत् प्रथमतृतीयपादान्तवर्णेषु 'लघुत्वस्य विकल्पेन गुरुत्व' न त्वन्येषामिति भाष्यादौ स्थितम्। द्वितीयचतुर्थ-पादान्तवर्णेषु विकल्पस्तु सर्वेषामपि वृत्ताना सर्वसम्मत एव।'" (एजन) 'उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका, ए छन्दोमा ज पहेला अने त्रीजा पादना अते आवता वर्णने लघुना गुरुत्वनो विकल्प लागु पडे, बीजा छन्दोमा नही बीजा अने चोथा पादना अतवर्णनो विकल्प तो बधा वृत्तोमा थाय ए सवधी सर्वसमति छे'

अर्थात्, हेमचन्द्र पादान्ते लघु गुरु बने एम कहे छ, अने त्या परम्परा प्रमाणे इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति अने वसततिलका सिवायना बीजा बधा वृत्तोमा ए नियम बीजा अने चोथा पादने अते आवता लघु अक्षर विशे छे हेमचन्द्र आ बाबतमा पिंगल, हलायुध जो 'वृत्तरत्नाकर'ना मतनो ज छे, 'मजरी'ना मतनो नथी ·

आपणे अही सस्कृत वृत्तोनी वात करीए छीए प्राकृत सबधीनो नियम वधारे छूटवाळो छे उपरना ज सूत्रने अगे ए कहे छ "ध्रुवासु विवक्षावशाद् गुरुत्व लघुत्व च।" 'ध्रुवाओमा विवक्षा प्रमाण गुरु के लघु थाय'

आ पछी हेमचन्द्र सयोगपरत्व वगेरेनो नियम आपे छ "ᳵक ᳵप विसर्गानुस्वारव्यजनाह्लादि सयोगे।" आ सूत्रनो अर्थ एवो छ के जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, विसर्ग अने अनुस्वार तेम ज व्यजनना सयोगथी आगळनो ह्रस्व गुरु थाय छे 'व्यजनसयोगे' एम कहेता वचमा 'अह्लादि' ह्ल सिवायना एवो अपवाद मूकी दीधो छ हवे ते उपरनी टीका जोईए "जिह्वामूलीये, उपध्मानीये विसर्जनीये, अनुस्वारे, व्यजने, ह्लादिवर्जिते सयोग च परे, ह्रस्वोऽपि गो भवति । अह्लादीति समस्तव्यस्तसग्रहान् ह्लसयोगे हसयोग रसयोगे च न गुरु । आदिशब्दात् यथादर्शनम्।" अह्लादि मा ह्ल ने समस्त अने व्यस्त बन्ने रूपे समजवो, एटले के ह्ल ना सयोगे ह ना सयोगे अने र् ना सयोग गुरु न बने अह्लादिमा आदि शब्द मूक्यो छ तेनो अर्थ ज्या ज्या एवु देखाय त्या ए नियम समजवो' आ पछी तेना दृष्टान्तो आपेला छ दृष्टान्तोमा सस्कृत अने प्राकृत बधा भेगा आप्या छे पण हु सस्कृत अने प्राकृत जुदा विचारी जोवा इच्छु छु.

स्पष्ट त्वयेत्यपह्नियु खलु कीर्तयन्ति (१)
तव ह्रियापह्नियो मम ह्लीरभू (२)
च्छद्मिग्रहेऽपि द्रुत न धृता तत ।
बहलभ्रामरमेचकतामस

३-३ मूळमा––"गुरुत्वस्य विकल्पेन लघुत्व' एम छपायु छे तेने बदले पाठ उपर प्रमाणे जोईए एम हु मानु छु

मम प्रिये यव रामेष्यति तत्पुन ॥
धन प्रदानेन श्रुतेन वर्णो। (३)
लीलासिताब्जमुत दर्पणमातपत्र (४)
किं दतपनमथ किंशुकमौलिरत्नं।
किं चामर तिलकबिंदुरपेंदुबिंब-
मेवद्विवो निहनुतदीप्ति मुदे न कस्य॥

उपर ह्र एटले ह्, र् ना सयोगना आ दृष्टान्तो मह्या छे पण दृष्टान्तोमा ए ज क्रम सचवायो जणातो नथी पहेलु दृष्टान्त स्पष्ट रीते ह्र ना सयोगनु छे. बीजा दृष्टान्तमा पहेली पक्तिमा ह्र त्रण जगाए आवे छे एटले एने पण ह्र नु गणी शकाय पण बीजी, त्रीजी, चोथी पक्तिमा ग्र, द्र, भ्र, प्र आवे छे अने ह्र मा पण र् तो छे ज एटले ए आखा दृष्टान्तने र् ना सयोगनु दृष्टान्त गणी शकाय त्रीजु तो स्पष्ट र् ना सयोगनु ज छे चोथा दृष्टान्तमा र् नो सयोग घणी जगाए आवे छे पण त्या क्याय थडकारनो लोप थतो नथी एटले छेल्ली पक्तिनु 'निह्नुत' ए ज ह् सयोगनु मात्र दृष्टान्त छे त्या सयोग छता आगलो लघु गुरु थतो नथी

अही एक वात तरत ध्यानमा आवशे उपरना दृष्टान्तमा ज्या ज्या ह् नो सयोग छे त्या सर्वत्र, ह् सयोगनो पहेलो व्यजन छे अने ज्या ज्या र् सयोग छे त्या सर्वत्र र् सयोगनो बीजो व्यजन छ आने आपणे नियम गणवो जोईए जोके हेमचन्द्रे आना उपर ध्यान आप्यु नथी प्राकृत दृष्टान्तो हजी अही न लेता हेमचन्द्रनी टीका हु आगळ चलावु छु "ऐष्वतीव्रप्रयत्नत्व सयोगस्य गुरुत्वाभावहेतु'। तीव्रप्रयत्ने तु भवत्येव गुरु.। यथा 'बर्हभारेषु केशान्' इत्यादि।" आ दृष्टान्तोमा सयोग होवा छता लघु गुरु बनतो नथी तेनु कारण हवे हेमचन्द्र कहे छे "अही सयोगनो प्रयत्न अतीव्र छे ए गुरु नही थवानु कारण छे तीव्र प्रयत्न होय तो अवश्य गुरु बने छे जेम के 'बर्हभारेषु केशान्'" 'र्ह' नो सयोग अही तीव्र छे तेथी 'ब' गुरु बने छे, एवो अभिप्राय छ

अही प्रथम ए कहेवानु के हेमाचार्यनो तीव्र प्रयत्ननो नियम साचो छ आपणे निर्बल सयोगने लीधे थडकारो नथी थतो अने सबल सयोगने लीधे थाय छ एम गुजरातीमा कहीए छीए ते आ सबळ सयोगने माटे ज तीव्र शब्द वापरेलो छे आपणे अनुस्वारने कोमल अने तीव्र कहीए छीए, तेम अही सयोगने तीव्र कह्या छे अनुस्वार अने सयोग बन्नेने माटे तीव्र अने मद शब्द राखी शकीए तो कई खोटु नथी पण अही एक बीजी ज बाबत ध्यानमा लेवा जेवी आवे छ 'कठाभरण' 'रत्नाकर' अने 'मजरी' ए त्रणेए

तीव्र शब्द लगभग आथी ऊलटी रीते वापर्यो छे त्या तीव्रनो अर्थ द्रुततर एवो करेलो छे सयोगना व्यजनो द्रुततर बोलवाथी आगळनो लघु गुरु न थाय तो तेने दोष न गणवो एवु 'सरस्वतीकंठाभरण'नु वचन 'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमजरी' बन्नेए उतार्यु छ ए आपणे आगळ (पृ० ३६) जोई गया हेमचन्द्रथी ऊलटो ज अर्थ! परिभाषानो केटलो गोटाळो!

पण हजी एक वात कहेवानी रहे छ जा थडकारानो अभाव हजी सुधीना दृष्टान्तोमा क्याय शब्दनी अदर थयो नथी 'तव ह्रिया।' (दृष्टान्त १ लु) एमा तव शब्द स्वतत्र छे अने पछी प्रारभमा सयोगवाळो शब्द आवे छे, 'शशिग्रह'मा समास छे छता शशि शब्द जुदो छे, अने तेनी पछी प्रारभमा सयोगवाळो शब्द आवे छे 'अपह्रिये (दृ० २) अने 'निह्नुत' मा अप अने नि बन्ने उपसर्ग छे, अर्थात् मूळ क्रियापदना अगभूत नथी आ बधा दृष्टान्तो, अने आपणी भाषाना शब्दोच्चारमा बधा थडकारो नथी जतो ए जोता, अही नियम एवो जणाय छे के शब्दनी अदरनो थडकारो एम ने एम रहे छे पण एक शब्दना आदिमा आवता सयोगनो थडकारो तेनी आगळना शब्द सुधी नथी पहोचतो ए रीते आ अपवादो थाय छे

उपर मे कह्यु के 'निह्नुत' मा 'ह्नु' धातुना सयोगनो थडकारो तेना उपसर्ग 'नि' सुधी जतो नथी आनो लाभ 'पतत्रि' शब्दने आपी शकाय? 'पतत्रि' मा मूळ 'पतत्र' शब्द छे तेमा 'पत्' धातु छ, जनो अर्थ 'ऊडवु' एवो थाय छे तेमाथी 'पतत्र' शब्द थाय छ जेनो अर्थ 'ऊडवानु साधन', 'पाख' एवो थाय छे तो ए 'त्र'ना थडकारो मूळ धातुना पिंड सुधी उपरना दृष्टान्तोनी पेठे न ज पहोचे एम कही शकाय? मे उपरना दृष्टान्तोमाथी 'र्' सयोग विशे जे नियम तारव्यो छे ते प्रमाणे ए समर्थन आ 'पतत्र' शब्दने मळे नही. कारण के अही प्रत्यय लाग्यो छे, अने प्रत्ययने उपसर्ग जेटलु स्वतत्र अस्तित्व नथी, ए शब्दनो ज भाग छे एटले 'पतत्रि' शब्द ए छदनु शैथिल्य ज छे. तेम छता हु मानु छु के "अथ लुलितपतत्रिमाल" ए यतिखडमा 'माल'ना 'ल'ने लघु गणवा करता 'पतत्रि'ना 'त'ने लघु गणवो ए वधारे निर्वाह्य छे. सस्कृतमा सानुस्वार अक्षरने लघु गणवो पडे ते करता सयोगने मद के कोमल करवो ए प्रयोगोनी वधारे नजीक छे

हवे आपणे हेमचन्द्रना ह् र् सयोगना प्राकृत दृष्टान्तो जोईए "प्राकृतेऽपि यथा" 'प्राकृतमा जेम के'—

जह ण्हाउ ओइण्ण अब्भुत्तमुल्हसि अमसुअद्ध त।
जहव ण ण्हाआमि तुम सच्छ गोलानईतूहे॥ (१)

"तथा" 'तेम ज':—

वोद्रह्द्रहम्मि पडिआ (२)
मुवत्य सित्त द्रहि (३)

पहेला दृष्टान्तमां 'ह्'ना संयोगवाळा 'ण्हाउ', 'ल्हसि', 'ण्हाओसि' ए शब्दोनी आगळना ह्रस्वो लघु ज रहे छे. अने बीजा त्रीजा दृष्टान्तमां 'द्रहम्मि' अने 'द्रहि' पहेलाना लघुओ लघुओ ज रहे छे पण संस्कृत दृष्टान्तोमां आवता सघा अने आ सघा ए ब वच्चेनो एक फरक नोंधवा योग्य छे संस्कृतमां संयोगमां 'ह्' पहेलो आवतो, प्राकृतनां त्रणेय दृष्टान्तोमां 'ह्' बीजो आवे छे अने प्राकृतमां एवो नियम ज छ

प्राकृतमां आ नियम एक बीजी दृष्टिए जोवो जोईए अहीं खरो प्रश्न ए छे के आने संयोग गणवो के केम? आपणे जाणीए छीए के 'प्'मा अने 'ब्'मा 'ह' मळवाथी अनुक्रमे 'फ्' अने 'भ्' थाय छ तथा आपणे संयोग गणता नथी अहीं आवता 'ल्ह्'मा अने गुजरातीमां बोलाता 'न्हावु', 'रहेवु', 'म्हीवु' ए बधामां पण 'ह्'नो एने मळनो सश्लेष गणवो जोईए ए व्यंजनसंयोग नथी उपर आपेला प्राकृतना दाखलामां 'ण्हाउ' वगेरे आ दृष्टिए संयोग ज नथी

'र्'ना संयोगनी निर्बळतानु कारण ए छ के तेनो संयोग पूर्ण स्पर्शव्यजनो जेटलो सबळ के हेमचन्द्रनो शब्द वापरीए तो तीव्र होतो नथी तेथी ए संयोगो निर्बळ थाय छ तेनो धडकारो मंद होय छ, अने तेथी तेनी आगळनो व्यंजन लघु होय तो गुरु थई शकतो नथी गुजरातीमां 'य्'नो संयोग पण एवो ज थई गयो छे 'नम्यो', 'वयुं', 'वर्यं', 'आस्य' ए बधामां 'य्'नो संयोग निर्बळ छ 'य्' अने 'र्' बन्ने अर्धस्वरो छे, पूर्णव्यंजनो नथी

आ संयोगनी निर्बळतानो आखो इतिहास जोतां जणाय छ के ए, वैदिकथी मांडीने उत्तरोत्तर निर्बल ज थतो गयो छे संस्कृतनो संयोग, जाके तेमां आगला लघुने गुरु करवा जेटलु प्राबल्य हतु, पण वैदिकनी अपेक्षाए ओछो बळवान हतो ज, अने तेथी वैदिक छन्दोना पठनमां क्रमनो एटले व्यंजनोने बेवडा उच्चारवानो विधि करवो पडयो,—आपण आगळ जोई गया तेम 'अग्ग्ने', 'अश्श्व', 'सर्व्व', वगेरे

हवे स्वरोना उच्चारोमां फर पडयो,—संस्कृतमां गुरु गणाता लघु थया, ते लईए अहीं एक वात ए ध्यानमां राखवा जेवी छे के हेमाचार्य, संयोगनी पेठे, आ फरकने संस्कृत प्राकृत बन्नेनो नथी गणता, मात्र प्राकृतनो गणे छे आ संबंधीनु सूत्र पण उपरना सूत्रोनी नजीक ज संज्ञाप्रकरणमां आपे

छे "एदोतौ पदान्ते प्राकृते ह्रस्वौ वा।" 'ए अने 'ओ' पदने अंते, प्राकृतमा विकल्पे ह्रस्व थाय छे ' आ स्पष्ट छे एटले एना उपरनी टीका उतारवानी जरूर नथी पण टीकामा हेमचन्द्र उमेरे छे के "ईं हिं इत्येतयार्ह्रस्वत्व शब्दानुशासने निर्णीतमिति नेहोच्यते।" 'ईं अने हिं नु ह्रस्वत्व शब्दानुशासनमा एटले व्याकरणमा निर्णीत करेलु छे एटले अहा कहेता नथी' 'सगीतरत्नाकरे' आ बाबत प्रबन्धाध्यायमा लीधी छे ते बधानो निचोड काढतो होय तेम लखे छे

> गुरुर्लघुरिति द्वेधा वर्णोऽनुस्वारसयुत ॥५३॥
> सविसर्गो व्यजनान्तो दीर्घो युक्तपरो गुरु ॥
> वा पदान्ते त्वसौ वक्रो द्विमात्रो मात्रिको लघु ॥५४॥
> ऋजुर्लिपौ भ्रे प्के प्ने च रहोर्योगे स वा लघु ॥
> ए ओ इ हिं पदान्ते वा प्राकृते त्वघवो मता ॥५५॥
> पदमध्येऽप्यपभ्रशे हु हे ए ओ इमित्यमी॥
>
> स र, ४, पृ २८०-८१

'वर्ण गुरु अने लघु, एवा ब प्रकारनो छे सानुस्वार, सविसर्ग, व्यजनात, दीर्घ अने सयोगनी आगळनो ए गुरु छे चरणने अते आवतो विकल्पे गुरु छ गुरु वाकी रेखाथी दर्शावाय छे तेनी व मात्रा गणाय छे लघु लखवामा सीधी लीटीथी बताबाय छे भ्र प्क प्प तथा र अने हना सयोगमा वर्ण विकल्पे लघु रहे छे प्राकृतमा ए ओ इ हिं पदने अते विकल्पे लघु रहे छे अने ए वर्णो अपभ्रशमा पदनी मध्ये होय तोपण विकल्पे लघु रहे छे अने अपभ्रशमा ते उपरात हु हे ए ओ अने इ पण विकल्पे लघु रहे छ' एक नानी बाबत अही उमेरवानी जरूर छ प्क अने प्प कहेल छ तेनो अर्थ जिह्वामूलीय अने उपध्मानीय छे अने तेने पण अही विकल्पे गुरु कहेलो छ आवो मत हेमचन्द्र पण 'कोईक' एम कहीने नोंधे छ "केचित्तु ﾠ क ﾠ पयोरपि परत्र स्थितयो पूर्वस्य लघोर्गुरुत्व नेच्छन्ति॥" 'सगीतरत्नाकरे' 'भ्र' नो खास उल्लेख केम कर्यो छे ते समजातु नथी आ श्लोकथी स्पष्ट रीते जणाशे के उच्चारोमा शैथिल्य केवी रीते वधतु जाय छ

अहीं सुधी नहीं नोंधायली एवी एक छूट 'प्राकृत पैंगल' नोंधे छे प्राकृतनी खासियतो अने अपवादो नोंध्या पछी 'प्राकृत पैंगल' कहे छे

> जइ दीहो विअ वण्णो लहु जीहा पढइ होइ सो वि लहू।
> वण्णो वि तुरिअ पढिओ दोतिण्णि वि एक्क जाण हू॥ १, ८
>
> प्रा पं B. पृ ११

'जो दीर्घ वर्ण जिह्वा वडे लघु पठाय, तो ते पण लघु थाय वर्ण पण त्वरित पठाया होय तो बे त्रणने पण एक जाणवा '

अलबत आ बधी छासियतो प्राकृत अने अपभ्रंशनी ज छे, अने ए तरीके ज नोंधायेली छे. पण 'प्राकृत पैंगल'नो एक टीकाकार प्राकृतमा 'ए' 'ओ' ह्रस्व होय छे एम कही आगळ वहे छे: "क्वचित् संस्कृतेऽपि 'तं प्रणमामि च बालगोपाल' एवं 'रौद्रायै नमो नित्यायै'—इत्यादावोकारस्य लघुत्वम्।" (एजन पृ ८) अर्थात् आ टीकाकार संस्कृतमा पण क्याक ओ ह्रस्व मळे छे एम कही ये दृष्टान्तो आपे छे पहेलामा 'गोपाल'मा 'गो' ह्रस्व छे, बीजामा 'नमो' मा 'मो' ह्रस्व छे बन्ने जगाए में ह्रस्वनी निशानी करी छे

गुजरातीमां कविने लघुनो गुरु अने गुरुनो लघु करवानी जे हद विनानी छूट मनायेली छे, ते गुजरातीने प्राकृत अपभ्रंशना वारसामा मळेली छे नवा उच्चारशुद्धिना आग्रहथी कविए एने अंकुशमा लेवानी छे अने कर्णकटुत्वना दोषथी तेने बचाववा सदा जागृति राखवानी छे

२

छन्दोना प्रकारो

आ पुस्तकनो विषय, पिंगलकारो जेने लौकिक छन्दो कहे छ ते छे. छन्दशास्त्रनो आद्य प्रणेता पिंगल छन्दने वैदिक अने लौकिक एवा बे मोटा वर्गोमा वहेंचे छे, अने बन्नेना अलग अलग निरूपण करे छे पछीना घणाखरा पिंगलो वैदिक छन्दोना निरूपण विना ज लौकिक छन्दोनी चर्चा करे छे आ रीते वैदिक छन्दोथी स्वतन्त्र रीते लौकिक छन्दोनी चर्चा करवानी पद्धति परंपराथी चाली आवे छे अने ते सकारण छे वैदिक भाषा उदात्त, अनुदात्त अने स्वरित एवा स्वरोथी बोलाती जे घणा काळथी भाषामाथी अदृश्य थया छे, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश के देश्य भाषाना साहित्यमा ऊतर्या नथी वेदवाक्यना छन्दोमाथी कोई छन्द ए ने ए रूपे पछीना साहित्यमा ऊतरी आव्यो नथी एटले वैदिक छन्दोने आपणा निरूपणनो मुख्य विषय[1] कर्या विना, आपणे लौकिक छन्दोना आपणा निरूपणमा आगळ चालीए अने तेमा प्रथम विषयव्यवस्था माटे छन्दोना प्रकारोनो निर्णय करीए

१ वैदिक छन्दो उपर एक टूकु परिशिष्ट आ प्रकरणने अंते आपेलु छे

पिंगलनी घणीखरी चर्चामा प्रथम दृष्टांत लई, तेने दृष्टि आगळ राखी चर्चा करवी सुकर पडे छे. तेथी ए पद्धति हु वने त्या सुधी अखत्यार करीश. छन्दोना बे मुख्य प्रकारोनु प्रथम अकेक दृष्टान्त लउं छु.

वसन्ततिलका

आकाशमाथि उडुमडल संचयूं'तू.
आतिथ्यअर्घ्य रवि एक ज अर्पतो'तो,
ते लेइ लेइ नमणू उर नामनू'तू,
लीलाविमुग्ध पडतू ढळि देवपादे.

'गिरनारने चरणे' के. का., भा. २, पृ. ९१

आनी साथे सरखाववा हु नीचेनी दलपतरामनी एक चोपाई लउं छु:

अरजुन पछि आगरे सिधाव्या
मारग ज्यारे सो गाउ आव्या
कावाए कामिनिओ लूटी
नहि अरजुने खणाई खूटी.

द. का., भा. २., पृ. ६०

निरूपणनी सरलता खातर पहेला चोपाईनी पक्तिओने लगात्मक न्यासमां नीचे उतारु छु

लललल ललगा लगाल गागा
गालल गागा गागा गागा
गागा गागा ललगा गागा
लललल लगाल गागा गागा

में आगला प्रकरणमा कह्यु तेम 'गाउ' शब्दना बन्ने स्वरो सयुक्त होवाथी 'गाउ' एक ज गुरुनो शब्द अही थाय छे. अने अही ए रीते 'सोगाउ'नु एक चतुष्क गागा बने छे आ चोपाई चार चार मात्राना चार चतुष्कोनु एक चरण, एवा चार चरणोनो बनेली छे आ चतुष्कोमा चार मात्रा अमुक ज सख्याना लघु के गुरुथी थवी जोईए एवो कोई नियम नथी चार मात्राना जे कुल पाच पर्यायो थई शके छे ते बधाय अही पहेला पाच चतुष्कोमा आवी जाय छे. अमुक स्थाने अमुक ज पर्याय जोईए एवो पण कोई नियम नथी —सिवाय के अते सर्वत्र गागा चरणान्तने व्यक्त करवा आवे छे. आवा चतुष्को जाळवीने पक्तिमा आपणे गमे तेवो फेरफार पण करी शकीए. जेम के

अरजुन पछि आगरे सिधाव्या

ने बदले

प्रगट अर्जुन पछी सिराव्या

आनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

लगाल गाल लगाल गागा

सामळनी चोपाईनी एक बीजी पंक्ति लईए:

सिपपुर नामे सुन्दर गाम

तेनो न्यास

लललल गागा गालल गाल

अहीं अते गागाने बदले गाल आवे छे, एनो आ, पण पठन उपरना दृष्टान्त-ना जेवुं ज लागशे अटला फेर छतां आ बन्ने चोपाई केम कहेवाय छे, ते प्रश्न आपणे आ प्रकारना स्वरूपनी घटनानो विचार करीशुं त्यारे जोईशुं. पण ए सिवाय आ पंक्ति पण आगळ जेवी ज छे. आमां पण सिपपुर (लललल) ने बदले पूना (गागा) मल्हन (लगाल) सूरत (गालल) पटणा (ललगा) एम मूके ते मूकी शकीए. अहीं अत्य गालने चार मात्राना चतुष्क बराबर गणीए तो एक चरणना चतुष्कोना चार आवर्तनो जणाशे अने ए चतुष्कनी अदर एक गुरुना बे लघु, के बे लघुनो एक गुरु, करी शकीए छीए, एक चतुष्कना गुरुओनी अंदर लघुगुरुना स्थानोनी अदलाबदली करी शकीए छीए, जेम बे गालनो बदले ललगा मे लगाल. अहीं मात्रानु जे जूथ आवर्तन पामे छे, तेने आपणे संधि कहीशु. अमुक मात्राना संधिओना आवर्तनथी आनो मेळ थयाय छे तेथी आने आवृत्तसंधि मात्रामेळ के एकलो मात्रामेळ छन्द कहीशु. तेनु टूकु नाम जाति छे.

हवे हवे आपेल वसततिलका सरखावशो तो तेना स्वरूपमा बहु फेर जणाशे. तेमा कोई एक संधिना आवर्तनो नहीं जणाय. आपणे एनो प्रथम लगात्मक न्यास करीए

वसंततिलका

गागालगा ललगा ललगा लगागा

आपो वधारे लखवानी जरूर नथी, कारण के पछी दरेक पंक्तिमां आ ज रूपो अदलीअदल आववाना. दरेकमा १४ ज अक्षरो आववाना अने दरेकमा लघुनी जगाए लघु अने गुरुनी जगाए गुरु ज आववानो आमो, लखीने जुदा पाडी बताव्या प्रमाणे संधिओ छे, ते कोई एकसरखा नथी; अक्षरसख्यामा सरखा नथी, मात्रासख्यामा पण सरखा नथी पण मात्रासख्यामा सरखा छे के केम

ए प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी, कारण के आमां मात्रासंख्या कायम राखीने एक गुरुना बे लघु के बे लघुनो एक गुरु करी शकाता नथी. अरे, एक ज संधिमां लघु-गुरुनो क्रम पण फेरवी शकातो नथी. 'आकाशमां' 'गागालगा' छे तेने बदले 'व्योममांहे' 'गालगागा' पण करी शकाशे नही. एम करतां पंक्तिमां मेळ रहेशे नही अने आपणे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ के टूंकमां दलपतरामे आपेल अक्षरमेळ नामथी ओळखीशु. संस्कृतमां आने वृत्त कहेलु छे, ते नामने आपणे आ अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ माटे ज राखीशु. 'माटे-ज' एटला माटे के पिंगलशास्त्रनी परिभाषामां आवृत्तसंधिनो एक प्रकार अक्षरमेळमां गणाई गयो छे. तेनो सरल दाखलो तोटक छे:

तोटक

यदुनंदनने यदुनंदनने
नमु प्रात समे यदुनंदनने

चार पंक्ति पूरी करवानी जरूर नथी. आनो न्यास

तोटक: ललगा ललगा ललगा ललगा

आमां पण संकेत एवो छे के गुरुलघुनी अदलाबदली के मात्रामेळी[2] परिवृत्ति करी शकाय नही पण आ स्पष्ट रूपे चतुर्मात्रिक संधिना चार आवर्तनोनो छंद छे तेनो मेळ चोपाई जेवो ज छे, मात्र तेना संधिने ललगानु स्थिर पासादार रूप आपेलु छे एना मेळनो सिद्धान्त मात्रामेळनो छे, एटले हु आने मात्रामेळनी लगात्मक[3] जाति गणु छु

अही एक विशेष बाबत मारे नोधवानी जरूर छे. आवा लगात्मक मात्रामेळमां संधिनु एक ज लगात्मक रूप वपराय अने तेना भिन्न पर्यायो न वपराय एवी कोई मर्यादा हु स्वीकारतो नथी दाखला तरीके तोटकमां ललगा चतुष्कलनां चार आवर्तनो छे भ्रमरविलसितामां पण चतुष्कल संधिनां चार आवर्तनो छे पण ते भिन्न भिन्न पर्यायोना

भ्रमरविलसिता. गागा गागा लललल ललगा। (छ. शा, ६, २१)
अही चतुष्कल संधिना त्रण पर्यायो गागा लललल अने ललगा वपराया छे कोई एक ज लगात्मक संधिना आवर्तनो नथी. छतां आनो मेळ मात्रामेळ

---

२ मात्रामेळी एटले मात्रामेळ छंदमां थाय छे तेवी, अर्थात् कुल मात्रा एटली ज राखीने करेली लघुगुरुनी परिवृत्ति.

३. लघु अने गुरुना स्थिर क्रमवाळु ए अर्थमां में आ पारिभाषिक शब्द योज्यो छे

सधिना आवर्तोनो बनेलो छे तेथी आ पण तोटक जेवो ज मात्रामेळी चोपाईनो जुदो लगात्मक रचना छे आवी घणी रचनाओ छे अने ते सघळीनो मात्रामेळनी लगात्मक जातिमा समावेश थाय एटले मात्रामेळथी कोई जुदा वर्गनी गणवानी हु जरूर जोतो नथी.

आपणा साहित्यना इतिहासमा एवु देखाय छे के प्रथम अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो विकास पाम्या छे, अने ते पछी आवृत्तसधि मात्रामेळ छन्दो एटले जातिछदो विकास पाम्या छे एटले अही छन्दोनु निरूपण ए क्रमे करीनु उपर वृत्त पछी जातिनी ओळखाण करावी ते मात्र निरूपणनी सगवड खातर वृत्तो अने जातिओ ए बे प्रकार पछी आगळ जता पहेला आपणे मात्रागर्भ वृत्तोनी नोध करवी जोईए तेमा चरणनो अतभाग, अक्षरमेळ वृत्त जेवो, सधिना आवर्तन विनानो, अने स्थिर लगात्मक छे, अने चरणना प्रारभनो भाग अमुक सख्यानी मात्रानो, एटले स्थिर लगात्मक नहीं पण पाछो मात्रासधिवाळो पण नहीं एवो छे आमा मुख्य वैतालीय वर्ग आवे छे आ प्रकार तो जुदो छे, पण तेमा घणा थोडा छन्दो आवे छे, अने वळी ए वर्गना मुख्य छदो लगात्मक रूप पामी सस्कृत वृत्तो बनी गया छे तेथी तेनु निरूपण सस्कृत वृत्तो जोडे ज करवु अनुकूल पडशे अही आथी वधारे तेनी चर्चा आवश्यक नथी आने के ह ध्रुवे मात्रागर्भ कहेल छे ते नाम स्वीकारी आने मात्रागर्भ वृत्त कहीशु

हवे एक बीजो प्रकार लईए—सख्यामेळनो तेनो प्रसिद्ध दाखलो मनहरनो छे.

मनहर के कवित

ऊट कहे आ समामा वाका अगवाळा भूडा,
भूतळमा पक्षीओ ने पशुओ अपार छे,
बगलानी डोक वाकी पोपटनी चाच वाकी,
कूतरानी पूछडीनो वाको विस्तार छे,
वारणनी सूढ वाकी वाघना छे नख वाका,
भेंसने तो शिर वाका शीगडानो भार छे,
साभळी शियाळ बोल्यु दाखे दलपतराम,
अन्यनु तो एक वाकु आपना अढार छे

द का, भा २, पृ ८९

आमा सधिओ छे, सधिओमा आवर्तनो पण छे पण तेमा सधिओनु माप अमुक मात्रा-सख्यानी नथी, अपातु पण अक्षरसख्यानी अपाय छे उपर आपेला मनहरमा

चारचार अक्षरोना सांधिओ छे आ कुल आठ पंक्तिओमां लखाय छे, पण खरी रीते ते ३१ अक्षरोना चार चरणोनो छंद छे, अने दरेक चरणमां चतुरक्षर संधिना सात आवर्तनो पछी एक त्र्यक्षर संधि आवे छे आम होवाथी ते स्थूल दृष्टिए वृत्त अने जाति बन्नेथी भिन्न देखाय छे, अने तेथी तेने एक अलग सख्यामेळ प्रकारमां आपणे गणीशु

आ पछी हु जे प्रकार लेवा इच्छु छु तेने हु 'पद के देशी' एवु अति व्यापक नाम आपु छु तेमां ढाळ, गरबी, पद वगेरे सर्व गेय पद्यरचनानो समावेश करवा इच्छु छु गुजराती प्राचीन अने मध्यकालीन, कहो के आखा प्रागर्वाचीन साहित्यमां आ प्रकार ज सौथी मातबर छे अने अत्यारे पण ए वध पडचो नथी कदाच पहेलां जेटलो ज विपुल पण बने आनु एक दृष्टान्त प्रथम गरबीनु आपु

चरण हरीना रे शोभे,
जोई जोई मुनिमन मधुकर लोभे,
छबी अलौकिक रे न्यारी,
सोळे चिह्न तणी बलिहारी

बृ का दो, भा १, पृ ८०३

'जोई' संयुक्त स्वर छ तेने एक गुरु गणवो ए रीते नीचे प्रमाण अहीं चतुष्कलो जणाशे· चरण ह, री ना, शोभ, जोई जोई, मुनिमन, मधुकर, लोभे, छबी अ, लौकिक, न्यारी, सोळे, चिह्न त, णी बलि, हारी टूकमां 'रे' आवे छे तेने बाद करता सखर चतुष्कलो थई रहे छे पठनमां पण आ आगळ आवेलो गरेली चोपाई जेवु ज जणाशे मात्र एमां संगीतनो अश विशेष जणाश अने ए संगीतना तत्त्वना प्रतीक रूप 'रे' तरफ स्पष्ट ध्यान जश ए 'रे'नी मात्रा केटली अने केवी रीते गणवी, एने लीधे पिंगलनु पिंगलत्व दूषित थयु गणवु के केम ए बधा प्रश्नो आ छंदप्रकारना छ उपर करता जराक ज वधारे अटपटी रचनानु एक लग्नगीत लउ छु

एक झारा ऊपर झारी रे
ए तो वन्या थई अगारी रे

आनु पठन पण चोपाई जवु जणाश ज आमां पण पठन करता चतुष्कलो तरत छूटा पडता जणाश झारा, ऊपर, झारो, वन्या, थई अ, गारी, ए प्रमाणे पण बाकी रहेला 'एक' अने 'ए तो' अने 'रे'नु शु करवु, एनी मात्राओ केवी रीते गणवी, वगेरे प्रश्नो आ प्रकारना छे आ ज्हां तो बहु

खादो प्रश्न छे, पण एथी घणा वधारे अटपटा प्रश्नो आनी चर्चामा आवशे. एटले मात्रामेळ रचनानी बहु नजीक होवा छता, आ छन्दप्रकारना प्रश्नो जुदा छे, तेनु महत्त्व विशेष छे एटले आपणे एनो जुदो वर्ग गणीशु

आ उपरात अर्वाचीन कालमा सळग पद्यरचनाना जे जे प्रयोगो थया छे ते पण आ शास्त्रनी मर्यादामा आवे छे अने अर्वाचीन पिंगले तेनी आलोचना करवी जोईए ते आपणे यथास्थाने करीशु

आ प्रकरण पूरु करवा पहेला, पद के देशीने पिंगलनो विषय करवा सामेनी एक शकानो निर्देश अने तेना खुलासानु दिग्दर्शन अही ज करवु योग्य छे उपर आपेली देशीमा अमुक अमुक चतुष्को स्पष्ट जणाया, पण सळग चतुष्को न जणाया, अने एनु कारण तेमा सगीतनो अश रहेलो छे एम में कह्यु पहेला प्रकरणमा में कह्यु हतु के पिंगल सगीतने विषय करतु नथी अही कोईने प्रश्न थाय के तो त्यारे आ छदोनु स्वरूप सगीतने लीधे नियत थयु छे तेने पिंगलमा केवी रीते स्थान आपी शकाय आनो जवाब तो पिंगळ अने सगीतनो अहीं शो सबध छे ते सपूर्ण चर्चीए त्यारे आपी शकाय ते यथास्थाने हु करीश पण अही एटलु कही शकु के पिंगलनो विषय मापने लीधे थयेली मेळवद्ध वाणी छे ज्या सुधी वाणीमा मेळसाधक माप होय त्या सुधी ते पिंगलनो विषय छे पदोमा सगीत छे अने ए सगीत पिंगलनो विषय नथी ए पण खरु, पण मारु एम कहेवु छे के त्या सगीत छता वाणी मेळनिष्पादक मापवाळी ज छ, ए वाणी पण सघिना आवर्तनोवाळी छे. मात्र सगीतने लीधे त्या अक्षरोनु माप लेवानी पद्धतिमा फेर पडे छे एटला मात्रथी ए रचना पिंगळ बहार जती रहेती नथी एम तो में कहेलु के अर्थ पण पिंगलनो विषय नथी, छता अर्थनी असर पिंगल उपर छे, तेम ज सगीतनी असर पण पिंगल उपर छे पिंगलनी दृष्टि वाणीना माप उपर ज रहेशे पण ए प्रमाण निरूपण करवु जोईए.

परिशिष्ट १

वैदिक छन्दो

लौकिक छन्दोना निरूपण माटे वैदिक छन्दो निरूपवानी जरूर नथी तो पण हमणा हमणा प्राचीन साहित्य तरफ विद्वानोनी अने कविओनी दृष्टि जाय छे, अने नवीन रीते तेनो अभ्यास थाय छे आपणा साहित्यमा नवा योजाता वृत्तो के छन्दो उपर वैदिक छन्दोनी थोडीघ पण असर छे माटे ए

असर समजवाने उपयोगी होय तेटला पूरतु तेनु निरूपण अही टूकमा करी जवु हु जरूरनु मानु छु

प्रारभमा आपणे पिंगलना 'छन्द शास्त्र'माथी ज वैदिक छन्दना मुख्य प्रकार दर्शावता चार सूत्र लईए

"गायत्र्या वसव ।३।३।।

" . . . गायत्र्या पादो वसवाऽष्टाक्षराणि भवन्ति। यत्र गायत्र्या पादोऽभिधास्यते तत्राष्टाक्षरो ग्राह्य ।"

सूत्रनो अर्थ एवो छे के 'गायत्रीना पादना वसु एटले आठ अक्षरो छे' हलायुध टीकामा ए ज कहे छ 'गायत्रीनो पाद वसु एटले आठ अक्षरनो थाय छे ज्या गायत्रीनो पाद कहे त्या आठ अक्षरनो समजवो'

"जगत्या आदित्या ।३।४।।

" जगत्या पादो द्वादशाक्षरो भवति। यत्र क्वचिज्जागत पादस्तत्र द्वादशाक्षरो गृह्यते।"

'जगतीनो आदित्य एटले बार' 'जगतीनो पाद बार अक्षरनो थाय छे ज्या जागत पाद एम कहेलु होय त्या बार अक्षरनो समजवो'

विराजो दिश ।३।५।।

". यत्र क्वचिद्वैराज पाद इत्युच्यते, तत्र दशाक्षर प्रत्येतव्य ।

'विराजनो दिश एटले दश 'ज्या वैराज्यपाद एम कहयु होय त्या दश अक्षरनो समजवो'

"त्रिष्टुभो रुद्रा ।३।६।।

"त्रैष्टुभपाद इत्युक्ते सवत्रैवादशाक्षरो गृह्यते।"

रुद्र एटले अगियार 'त्रैष्टुभपाद एम कहयु होय त्यारे सवत्र अगियार अक्षरनो पाद एम स्मजवु'

आ उपरथी जणायु हश के वैदिक छन्दोना मापो मात्र अक्षरनी सख्याथी थता तेमा लघु गुरुनो भद नहोता, तेम ज मात्रासख्यानो नियम पण नहोतो अमुक सख्याना अक्षरोथी अमुक पाद करवानु तमा अक्षरो लघु केटला, गुरु केटला एनो नियम नहोतो

आ अक्षरसख्या उपर ज चालती वैदिक छन्दोनी गणना वधारे वधारे अटपटी थती जाय छ, अन ए गणना पछी मूळ छन्दोना स्वरूप उपर प्रकाश

पाडवा करतो, परिभाषाथी जाणे तेने ढांकी दे छे. अने ते मारा विषयने उपयोगी नथी. तद्गत वे. ह ग्रंथे आ मारा विषयने पिंगलदृष्टिए सारी रीते चर्चो छे अने तेनो निष्कर्ष प अहीं आपणे प्रस्तुत छे.

वे. ह. ग्रंथ वैदिक छन्दोनी आलोचनामा वेदनां बीजभूत चरणो त्रण ज गणे छे पांच अक्षरनु, आठ अक्षरनु अने अगियार अक्षरनु तेना दृष्टान्तो जोता पहेलां वैदिक ऋषिओना पठननी केटलीक छूट के विशेषताओ *समजवी जोईए एकाद अक्षर खूटता पठनमा वधार अने वधारनु सम्प्रसारण* थई खोट पुरातो. कोई प्रसंगे अल्प श्वासी जगाए अथवा उच्चारातो पदान्त विरामना संकेतथी अन्त्य ह्रस्व स्वर दीर्घ उच्चारातो. क्वचित् एकाद वधारे अक्षर निभावी लेवातो. (प ऐ आ. पृ. ७४)

हवे ध्रुवनु प विराजनु दृष्टान्त टाउ छु.

एभिर्नो अर्कै–
भवा नो अर्वाङ्
स्वर्णज्योति
अग्ने विश्वेभि
सुमना अनीकैः ॥ प. ऐ आ, पृ ७५

अहीं पाठमा बीजी पंक्तिमा 'स्वर्ण' ने बदले 'सुवर्ण' उच्चार करी पचाक्षर पूरा करवाना छे छेल्ली पंक्तिमा एक अक्षर वधारे छे अवतरणोमा में स्वर-चिह्नो राख्या नथी.

अने ध्रुव केवला विराज एवु नवु नाम आपे छे एनु कारण ए छे के अति प्राचीन कालथी आ बीजभूत वैराज पदना सळंग पाठथी बननारा बे पदनो द्विपदा विराज नामे छन्द बने छे. पिंगलना सूत्रोमा आपणे जोयु के तेमा वैराज पदना दस अक्षरो कह्या छे अने दृष्टान्तो पण एना ज मळी आवे छे, जे आपणे आ पछी जोईशु पण बीजभूत विराज पांच अक्षरना पादनो ज हतो अने तेने द्विपदाथी जुदो पाडवा ध्रुव तेने केवला विराज कहे छे ए केवला विराजना दृष्टान्तो क्वचित ज टकी रहेला छे तेमाथी तेमणे उपरनु दृष्टान्त आपेलु छे छान्दसो एने पचीस अक्षरनी पदपंक्ति गणे छे (छ शा नि ३, ४६) पण ए विराजना मूळभूत स्वरूपनो साक्षी आपतो मंत्र छे

हवे नीचे ध्रुवे उतारेला द्विपदा विराजना दृष्टान्तो उतारु छु·

वनेषु पूर्वीरर्या मनीषा
अग्नि सुशोको विश्वान्यश्या । १

आ दैव्यानि व्रता चिकित्वा—
ना मानुषस्य जनस्य जन्म । २
गर्भो यो अपां गर्भो वनानां
गर्भश्च स्थातां गर्भश्चरथाम् । ३
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे
विशां न विश्वो अमृतः स्वाधीः । ४
स हि क्षपावां अग्नीरयीणां
दाशद् यो अस्मा अर सूक्तैः । ५
एता चिकित्वो भूमानि पाहि
देवानां जन्म मर्तांश्च विद्वान् । ६
वर्धान् य पूर्वी क्षपो विरूपा ।
स्थातुश्चरथ मृतप्रवीतम् । ७
अराधि होता स्वर्निषत्त
कृण्वन् विश्वान्यपांसि सत्या ८
गोषु प्रशस्ति वनेषु धिषे
भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः ९
वि त्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन्
पितुर्न जिव्रे वि वेदो भरन्त । १०
साधुर्न गृध्नुरस्तेव शूरो
यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु । ११

एजन, पृ ७६

आ दृष्टान्तो आपी ध्रुव लख छे "ऊतारेला दृष्टान्त विचारता निष्कर्ष ए नीकळे छे के वैराज पद मूळ पाच वर्णनू हशे, ते उपरथी द्विपदा विराज्नू दस वर्णनू पद ऋक्कालमा ज उद्‌भव्यू हशे, ते मुखपाठमां पाछळथी वीस वर्णनू अकायू हश" (प ए आ ७६-७७) आगळ जोईशु तेम वेदमा छन्दोना मिश्रणो थता तेवो एक मिश्र छन्द ध्रुवे उतारेलो छे, जे पण पचाक्षर केवळा विराजनी साक्षी पूरे छे.

अग्न तमद्या—
श्व न स्तोमैः
क्रतु न भद्रम् ।
हृदिस्पृश ऋध्या मा त ओहैः ।

प ऐ आ, पृ ७५

अहीं पण वैराज पदो साथे एक त्रैष्टुभनु मिश्रण छे 'ऋद्ध्या'माना 'य'नु सप्रसारण करवाथी अगियार अक्षरो थई रहेशे 'ऋद्-धिया' ए प्रमाणे

हवे गायत्रीना उदाहरणो लईए

अग्निमीळे पुरोहित
यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतार रत्नधातमम्॥

एजन, पृ ७९

बीजा केटलाक वरूआए आपेला दृष्टान्तो उतारु छु.

वायवा याहि दर्शत
इमे सोमा अरकृता।
तेषा पाहि श्रुधी हवम्॥
सदसस्पतिमद्भुत
प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनि मेघामयासिषम् ॥

बीजी ऋचामा 'काम्यम्' ने बदले 'कामियम्' उच्चार करवाथी आठ अक्षरो पूरा थई रहेशे (वरूआ पृ २४, २५) आपणी उपनयनदीक्षानी प्रसिद्ध गायत्रीमा पण आ प्रमाणे एक पादमा अक्षर उमेरवो पड छे

तत्सवितुवरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो न प्रचोदयात्॥

'वरेण्यम्'नो उच्चार 'वरेणियम्' करवानो होय छ ते उपरांत एक गायत्री नीचे उतारु छु.

परा हि मे विमन्यव
पतन्ति वस्य इष्टये।
वयो न वसती रुप॥

हवे अनुष्टुपनु दृष्टान्त ध्रुवनु ज उतारु छु

यत् पर्जन्य कनिक्रदत्
स्तनयन् हसि दुष्कृत।
प्रतीद विश्व मादते
यत् किंच पृथिव्यामधि।

प ऍ आ पृ ७९

वरूआना थोडा दृष्टान्तो उमेरु छु:

विद्मा हि त्वा वृषतम, वाजेषु हवन श्रुतम्।
वृषतमस्य हूमहे ऊतिं सहस्रसातमाम्॥
एषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भिय कृधि।
पराङ मित्र एषतु अर्वाची गौरुपेषतु॥

वरूआ पृ. ४१

हवे त्रिष्टुभना दृष्टान्तो लईए:

चित्र देवानामुदगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

प ऐ आ., पृ ८०

वरूआनु एक दृष्टान्त उमेरुं छु:

पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद
वि अस्य धारा असृजद् वि धेना.।
गुहा चरन्त सखिभि शिवेभि।
दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव॥

वरूआ पृ. ५७

त्रिष्टुभमा एक ज अक्षर उमेरवाथी जगती थाय छे दृष्टान्त, के. ह ध्रुवनु ज लउ छु.

ममेरिरे भृगवो विश्ववेदस
नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना।
अग्नि त गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे
य एको वस्वो वरुणो न राजति॥

प ऐ आ., पृ ८१

वधारे लेवानी हु जरूर जोतो नथी

आना स्वरूप विशेनी ध्रुवनी चर्चा अने अभिप्रायो तथा निर्णयो आपणे जोई जईए तेओ कहे छे के पदान्ते नन्द पूरो थवो जोईए ए वैदिक छन्दोमा सार्वत्रिक नियम छे, तेमा मात्र विराजना त्रण अपवादो मळे छे. ते विशे तेओ कहे छे के, "बीजा कोई पण आर्चिक छन्दमा नहि ने विराज्मा आ छूट लेवाती

जोवामा आवे छे; तेथी वैराज पदरचनानी, अर्थात् विराज छन्दनी उत्पत्ति विनअपवादे पदाते विराम स्वीकारनारा गायत्री आदि बीजा बधा छदना पूर्वे थयेली सभवे छे" (प. ऐ. आ, परिच्छेद १४, पृ. ८२)

पदान्त अक्षरो विशे तेओ आगळ चर्चा करे छे "गायत्री आदि छदना चरणनी समाप्तिए आवेलो वर्ण ह्रस्व होय, तो पण ते स्वाभाविक रीते ज दीर्घ बोलाई विवर्धित थतो हतो, तेथी पदान्ते विरामना सकेत माटे विवर्धितनी योजना मूळे थई जणाय छे पछीथी 'द्विर्बद्ध सुबद्धम्।' ए न्याये एक ज वर्णमा नहीं पण छेल्ला बे वर्णमा अने तेथी आगळ वधी त्रण वर्णमा ए सकेत रूढ थयो जोवामा आवे छे सदर सकेत सूचवनार वर्णने हु स्थिरवर्ण कहु छु" (एजन, परि० १५, प ८२) तेओ आ रीते आगळ कहे छे के वैराज पदमा मात्र छेलो गुरु ज पदान्त सूचववा स्थिर थयो हतो, गायत्रीमा छेल्ला बे अक्षरो लघु अने गुरु ए रूपे अने ए क्रमे स्थिर थया हता, अनुष्टुपमा गायत्रीना ज बे अक्षरो लघुगुरु स्थिर थता हता, पण विषमपदो, लघुगुरु तरफथी बे गुरु तरफ ढळता जाय छे त्रिष्टभना छेल्ला त्रण अक्षरो एक लघु अने बे गुरु रूपे, अने जगतीमा गुरु-लघु-गुरु ए रूपे स्थिर थता जता जणाय छे अने आ स्थिर अश पदान्त व्यक्त करवा माटे योजातो लघुगुरुना स्वरथी कोई विशिष्ट सवाद उपजाववाना प्रयोजनथी नहीं (एजन पृ ८२-८३) अही गायत्रीमा तेमणे स्थिर भाग अत्य ब अक्षरनो बताव्यो छे पण मने छेल्ला चार अक्षर जेटलो लागे छे उपरना दाखलाना जोईशु तो गायत्रीमा अते लघु-गुरुना द्विकना बे आवर्तनो स्थिर जणाशे: तत्सवितुर्वरेणिय, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न प्रचोदयात्। एमा 'वरेणिय', 'स्य धीमहि', 'प्रचोदयात्' पैय लघु-गुरु-लघु-गुरु ए क्रमे छे,—अ त्यत वचला चतुष्कनो अत्य 'हि', पदान्त होई गुरु गणवानो छ अनुष्टुपना समपादनो अत्य स्थिरभाग गायत्रीनो ज छे एटले त्या पण आ ज चार लघु-गुरु लघु-गुरु स्थिर थता जाय छे अने अनुष्टुपना विषममा उपान्त्य गायत्रीनो मूळ लघु, गुरुता तरफ ढळतो जाय छ एटले विषम पादनो स्थिर अश लघु पछी पण गुरुओ ते थाय छे, एम हु मानु छु ए रीते वेदकालथी ज अनुष्टुप शिष्ट अनुष्टुप तरफ ढळतो जाय छ एम हु मानु छु[1] त्रिष्टुभमा पदान्त त्रण अक्षरो लघु-गुरु-गुरुरूपे स्थिर थाय छ ए खरु पण जगतीमा ए स्थिर अशमा उपान्त्य लघु उमेराय छे एम हु

---

१ आने Macdonell's 'A Vedic Grammar for Students' नो टेको छे ते कहे छे 'Thus the prevailing scheme of the whole verse is ⏓–⏓–।⏑–⏑⏓।' p. 438

मानु छु एटले के जगतीमा छेल्ला चार अक्षरो स्थिर बने छे, अने ते लघु-गुरुना द्विकना बे आवर्तनो रूपे उपर आपेला जगतीना दृष्टान्तमा छेल्ला चार अक्षरो रूपे स्थिर जणाशे

मूळ प्रकृतिभूत विराज, गायत्री अने त्रिष्टुभ शब्दोमा पण ध्रुव अमुक सबध जुए छे "वैराज पदमा त्रण अक्षरना बधाराथी गायत्र पद थयु तेनो जे नवा छन्द बन्यो ते सामगानने अनुकूळ नीवड्यो अने, गायत्री एटले सामना रूपमा गोठवाय एवी छदोमयी वाणी, एवा अर्थवाहक नामथी ओळखायो . अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ् शब्दनी घटनामा नजरे पडतो 'स्तुभ' शब्द छूटो वपरायेलो मळी आवतो नथी परतु ते स्तुतिवाचक स्तुभ् धातु उपरथी उत्पन्न थई एक काळे वपरातू स्त्रीलिंग धातुनाम होवू जोइए गायत्र त्रण पद पछी (अनु) जेमा एक पद (स्तुभ्) अधिक आवे, ते अनुष्टुभ् आनाथी स्हेज जुदो त्रिष्टुभ्नो विग्रह छे ए शब्दो हू 'शाकपार्थिव'ना जेवो मध्यम-पदलोपी समास समजु छु अष्टवर्ण गायत्र पदमा त्रण वर्ण जेमा वर्धित होय ते, अर्थात् एकादशवर्ण पदनो छद, ते त्रिष्टुभ् " (प ए आ, पृ ९२)

अही ध्यान खेंचे तेवी ये वात छे एक ए के त्रिपदा गायत्रीमाथी चतुष्पद अनुष्टुप थयो सामान्य पठनथी पण आ वात तरत स्वीकाराय एवी लागे छे पण अनुष्टुपमाथी त्रिष्टुभ थयो ए वात पठनसस्कारो जाता स्वीकार्य जणाती नथी अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ शब्दोनो शब्दो तरीके सबध छे, अने शब्दोना सबध विशेना एमना तकनु विद्वानो ज वस्तुआछु मूल्य आवे ते खरु पण पठनना सस्कारो जोता मने, त्रिष्टुभ ने द्विपदा विराज साथे वधारे सबध जणाय छे द्विपदा विराज, त्रिष्टुभ, अने इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा, एम मने विकासक्रम जणाय छ मारो अभिप्राय दृष्टान्तोथी स्पष्ट करवा प्रयत्न करु

विराजना पचाक्षर बीजना आगळ आपेला दृष्टान्तो अने बीजा दृष्टान्तोना अनेक वार पाठ करता मने ए पचाक्षरनु मध्यलघु पचकमा परिणमवानु वलण बहु स्पष्ट जणाय छ मध्यलघु पचक एटले गुरु-गुरु-लघु-गुरु गुरु आगळ आवी गयेला दृष्टान्तोमाथी ज हु दाखला लईश पठनमा घटता अक्षरो पूरीने नीचे पाठ उतार छु पचके पचके अल्पविराम करु छु

१	वनेम पूर्वी, रयी मनीषा,	२
३	अग्नि सुशोको, विश्वानियश्या, ।	४
५	आ दैवियानि, व्रता चिकित्वा –,	६
७	ना मानुषस्य, जनस्य जन्म ॥	८

कुल आठ पचकोमाथी २, ३, ४, ५, ७ ए सख्यावाळां पचको मध्यलघु छे. बाकीना बेमा एटलो ज फरक छे के पचकनो प्रथमाक्षर गुरुने बदले लघु छे, तेम छता पठनना सस्कारो स्पष्ट रीते मध्यलघु पचकना आवर्तनो जेवा पडशे. आ रचना इन्द्रवज्रानी बहु ज निकट छे. इन्द्रवज्रामा आदिमा तो विराजनु पंचक ज आवे छे, अने ते पछी विराजना पचकना पहेला गुरुनी जगाए बे लघु आवे छे. वेदमां कोई वार एकाद अक्षर वधारे आवतो, जेम के आगळ आवी गयेल 'सुमना अनीकैः।' आवु बे लघुवाळु पदक विराजना पचकने लगाडो तो बराबर इन्द्रवज्रा थई रहे:

"अग्निः सुनीकः" "सुमना अनीकैः"

अहीं बीजा पंचकना आद्य गुरुने स्थाने बे लघु आववाथी पवित्रतो मेळ पण वधारे सुन्दर बने छे. एक तो तेथी बे आवर्तनोनी एकविधता टळे छे बीजु बन्ने पचको भेगा करता वचमा चार गुरुओ भेगा थई जाय; अनावृत्तसधि अक्षरमेळने ए भारे पडे. आपणे आगळ जोईशु के आ वृत्तोमा चार गुरुओ भेगा थता यति आव्या विना रहेती नथी. ए आपत्तियी उपरना पदकथी बची जवाय छे विराजमा कोई कोई पचकमा आद्य गुरु स्थाने लघु पण आवतो, जेम के उपर उतारेल 'वनेम पूर्वी', अने एवु पचक आदिमा आवतां उपेन्द्रवज्रा बने. ए प्रमाणे बधी रीते विचार करता इन्द्रवज्रा विराजना पचकमाथी ज ऊतरी आवेल जणाय छे

आ तर्कने एक बीजी रीते पण टेको मळे छे. वेदमा जे त्रिष्टुभोमाथी इन्द्रवज्रादि विकास पाम्या तेमा पाच अक्षरे घणे भागे यति आवती. मेकडोनल कहे छे: 'Verses of eleven syllables . . . have caesura, which follows either the fourth or the fifth syllable.' ('A Vedic Grammar for Students', by A. A. Macdonell, p. 440) अर्थात् अगियार अक्षरना छन्दमा यति होय छे जे चोथा के पाचमा अक्षर पछी आवे छे. आमा चोथा अक्षर पछी आवती यतिवाळा वैदिक छन्दोमाथी शालिनी विकास पाम्यो, अने पाचमा अक्षर पछी आवती यतिवाळा छन्दोमाथी इन्द्रवज्रा वगेरे सस्कृत साहित्यमा पण बहु ज प्रसन्न पठनवाळा छन्दमा आ यति जणाय छे, जेम के:

कर्पूरगौर करुणावतार
ससारसार भुजगेन्द्रहार।
सदा वसन्त हृदयारविन्दे
भव भवानीसहित नमामि॥

पटवर्धन इन्द्रवज्रादि वृत्तोमा पाचमे यति जेवु चिह्न मूके छे (जुओ 'छन्दोरचना' पृ० १११), अने वर्वे इन्द्रवज्रा वगेरेमा पांचमे यति कहे छे. (गायनवादन पाठमाळा, पु. १., वि. ३, पृ० ९), तेने हु पठनमा रही गयेल विराजनु अवशेष गणु छु.

अलबत्त मारो आ मात्र तर्क छे. पठनना संस्कारोना साम्य उपरथी आवो तर्क बाधवा हु ललचायो छु. वैदिक छदो मारो मुख्य विषय न होवाथी मात्र तेनो उल्लेख करी हु आगळ चालु छु.

के० ह० ध्रुव कहे छे के वैदिक छन्दो त्रण रूपे मळे छे. शुद्ध रूपे एटले के ज्या बधी पक्ति एक ज छन्दनी होय ते. आगळ आवी गयेला एक (अग्ने०वाळु) सिवाय बधा दृष्टान्तो शुद्ध रूपना छे बीजु रूप ते मिश्ररूप जेमा बे जुदा जुदा छन्दोना मिश्रणो होय छे. हु एमना ज दृष्टान्तो लउ छु:

अग्ने वाजस्य गोमत –
ईशान सहसो यहो।
अस्मे धेहि जातवेदो मही श्रव ॥

अहीं बे गायत्रीना अने एक जगतीनु पद छे.

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषज –
मपामुत प्रशस्तये।
देवा भवत वाजिनः॥

पहेलु जगतीनु, अने पछी बे गायत्रीना पदो छे.

अधाहीन्द्र गिर्वण
उप त्वा कामान् मह. ससृज्महे ।
उदेव यन्त उदभि ॥

पहेलु अने त्रीजु गायत्रीनु पद छे, वचलु जगतीनु.

स नो नेदिष्ठ ददृशान आ भरा –
ग्ने देवेभि सचनाः सुचेतना
महो राय सुचेतुना
महि शविष्ठ नस्कृधि
सचक्षे भुजो अस्यै।
महि स्तोतृभ्यो मघवन्त्सुवी
र्यमीरुग्रो न शवसा॥

अहीं पहेलुं बीजुं अने छठ्ठुं जगतीनुं पद छे बाकीना गायत्रीना छे (प ऐ आ, पृ. ८६-८८) आ बधा मिश्र छंदोने वैदिक पिंगल जुदां जुदां नामो आपे छे

शुद्ध अने मिश्र छन्द पछी विचारणीय त्रीजो प्रकार प्रगाथने नामे जाणीता समिश्र छंदनो आवे छे अहीं पण ध्रुवना ज दृष्टान्तो उतारु छुः

आ नो अश्वावदश्विना
वर्तिर्यासिष्ट मधुपातमा नरा।
गोमद् दस्रा हिरण्यवत्॥
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्टु वार्य —
मनाधृष्टं रक्षस्विना॥
अस्मिन्नावामायाने वाजिनीवसू
विश्वा वामानि धीमहि॥

आमा एकी पंक्ति गायत्रीनी छे, अने बेकी जगतीनी छे एक बीजुं दृष्टान्त

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना
क्रिविर्न सेक आगतम्।
मध्व सुतस्य स दिवि प्रियो नरा
पात गौराविवेरिणे॥
पिबत घर्मं मधुमन्तमश्विना
बर्हिः सीदत नरा।
ता मन्दमाना मनुषो दुरोण आ
नि पात वेदसा वय॥

अहीं २, ५, ७ ए पदो जगतीना छे बाकीना गायत्रीना छे (प ऐ आ, पृ ८८-८९) ध्रुव माने छे के सामगानमां गावाने लीधे आनुं नाम प्रगाथ पडेलुं छे (एजन, पृ ९३)

आ उपरथी वैदिक ऋषिओ छन्दोना मिश्रणो केवी रीते करता तेनो ख्याल आवशे आ उपरांत हवे एक ज विशेष वात कहेवानी रहे छे आपणे जोई गया के वैदिक ऋषिओने अमुक नियत सख्याना चरणोथी थता श्लोकना एकमनो बरावर ख्याल छ पण ते साथे तेओ भिन्न भिन्न छन्दना एक के बे पादनो पण एकम स्वीकारता आवो स्वीकार मिश्र छन्दोनी रचनामा ज गर्भित रीते आवी जाय छे कारण के तेमा जुदा जुदा छन्दोना छूटा एक के बे पादो मळी आवे छे पण एवो स्वीकार पिंगलमा स्पष्ट रूपे पण मळे छे

पिंगलना वैदिक विभागमां एवुं सूत्र छे "एकद्वित्रिचतुष्पादुक्तपादम्। ३। ७॥" तेना उपर हलायुधनी टीका "एभिश्चतुर्भिर्लक्षणैरुक्त पादो यस्य तत् 'उक्तपादम्' छन्द। यस्य च्छन्दसो यादृश पाद परिभाषितस्तच्छन्दसस्तेनैव पादेन क्वचिदेकपात् क्वचिद्द्विपात् क्वचित्त्रिपात् क्वचिच्चतुष्पाद् भवति।" 'परिभाषामां ज छन्दो गायत्री, जगती, विराज, त्रिष्टुभ कह्या ते छन्दना एक पाद वडे ते छन्द एकपाद, बे पाद वडे ते छन्द द्विपाद, त्रण पाद वडे ते छन्द त्रिपाद अने चार पाद वडे ते छन्द चतुष्पाद थाय छे ' वरुआ आ स्वीकारे छे अने दरेकना दाखला आपे छे एकपदा गायत्रीना बे दृष्टान्तो

(१) उर्वन्तरिक्षमन्विहि॥

(२) इन्द्रो विश्वस्य राजति॥

द्विपदा गायत्रीना बे दृष्टान्तो

(१) पवस्व सोम मन्दयन्
इन्द्राय मधुमत्तम॥

(२) देवस्य सवितु सवे
कम कृण्वन्ति वेधसे॥

वरुआ पृ २७

वरुआ एकपदा त्रिष्टुभ अने द्विपदा त्रिष्टुभना दृष्टान्तो पण आपे छे (वरुआ पृ ६०–६१)

सद्गत एम० कृष्णमाचारियारना संस्कृत साहित्यना इतिहासना History of Classical Sanskrit Literature ना पुस्तकमां २८ मा छन्दोविचितिना प्रकरणमां पृ० ९०० म नीचेनु अवतरण छ "The following passage from Mahabhasya is instructive: 'तथा छन्दो ग्रन्थोऽप्युपयुज्यते छन्दोविचयागा तत्र तत्र विहितत्वात्। तस्मात्सप्तचतुरुत्तराणि छन्दांसि प्रातरनुवाकेऽनूच्यत इत्याम्नात। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगतीत्येतानि सप्तछन्दांसि। चतुर्विंशत्य(त्य)क्षरा गायत्री। ततोऽपि चतुर्भिरक्षरैरधिकाष्टाविंशत्यक्षरोष्णिक्। एवमुत्तरोत्तराधिका अनुष्टुबादयोऽवगन्तव्या। तथान्यत्रापि श्रूयते। गायत्रीभिर्ब्राह्मणस्यादध्यात् त्रिष्टुभीराजन्यस्य जगतीभिर्वैश्यस्येति। तत्र गणगणादिसाध्यो गायत्र्यादिविवेकश्छन्दोविचयमन्तरेण न सुविशद। किं च यो ह वा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवत ब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वाध्यापयति वा स्थाणुं वर्च्छति-

गर्तं वा पद्यदि प्रवामीयते पापीयान् भवति। तस्मादेतानि मंत्रे मंत्रे विद्यादिति श्रूयते। तस्मात्तद्वेदनाय छंदोग्रन्थ उपयुज्यते।'"

आ अवतरण कया मुद्दा उपर आप्यु छे, ते समजातु नथी. गायत्री वगेरे वैदिक छन्दो मगणयगण वगेरे गणोना लक्षणवाळा छे एवो अभिप्राय होय तो ते अयथार्थ छे. आने विशे विशेष अन्वेषण करवाय छे कारण के मने आ पंक्तिओ महाभाष्य जोता मळी नथी. महाभाष्यना सारा विद्वान श्री भागवत शास्त्री व्याकरणाचार्य जेमणे महाभाष्यनु संपादन कर्यु छे तेओ जणावे छे के आ पंक्तिओ महाभाष्यमा छे नहीं. अमदावाद, ब्रह्मचारीनी वाडीना, पंडित सत्यदेव मिश्र व्याकरणाचार्य पण एम ज जणावे छे अने कहे छे के 'तत्र तत्र विहितत्वात्' ए शैली महाभाष्यना समयमा हती नही. कृष्णमाचारियारना पुत्र श्री एम. श्रीनिवासाचारियारने पुछावता तेमणे कशो जवाब आप्यो नथी. एटले आ वात अहीं ज अटके छे.

परिशिष्ट २

छन्दोना प्रकार : पूर्वचर्चा

अत्यार सुधीमां पिंगलोक्त छन्दोना कया कया प्रकारो गण्या छे ते टूंकमा जोई जवा अस्थाने नथी.

पिंगले रचेला अने प्राचीन गणाता 'छन्द.शास्त्र'ना ग्रन्थमा आगळ बताव्युं तेम प्रथम वैदिक अने लौकिक एवा छन्दोना बे प्रकारो छे. लौकिकना प्रकारोनी चर्चा 'छन्द.शास्त्र'नी 'भूमिका'माथी हुं उतारुं छु.

"(१) तत्र पद्यजातं द्वेधा—वृत्त जातिश्च। यत्र नियतवर्णव्यवस्थया छन्द.सिद्धिस्तद् वृत्तं। यत्र तु नियतमात्राव्यवस्थया छन्द.सिद्धिः सा जातिः। तथा चाह नारायण:—

पद्य चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसंख्यात जातिर्मात्राकृता भवेत्॥"

'पद्य बे प्रकारनुं छे. वृत्त अने जाति. जेमा नियतवर्णनी व्यवस्थाथी छन्द सिद्ध थाय ते वृत्त. जेमा नियतमात्रानी व्यवस्थाथी छन्द सिद्ध थाय ते जाति. नारायणे एम कह्यु छे : 'पद्य चार पदनु छे, ते वृत्त अने जाति एम बे प्रकारनुं छे. अक्षरनी नियत संख्यावाळु ते वृत्त, अने जाति मात्राथी थाय."

"(२) परे तु वृत्तिर्जातिरिति द्वधा विभज्य तयोरुभयोरेव वृत्तशब्देन छन्दःशब्देन च सामान्यतो व्यपदेशमिच्छन्ति। वर्णवृत्त वर्णछन्द, मात्रावृत्त मात्राच्छन्द इति। तथा चैषां मते छन्दोवृत्तशब्दयो च पर्यायवाचित्वम्।"

'बीजाओ वृत्त अने जाति एम बे विभागो करीने बन्नेने वृत्त अने छन्द शब्दनु नाम आपवु इष्ट गणे छे जेम के वर्णवृत्त, वर्णछन्द, मात्रावृत्त, मात्राछन्द तेमना मते छन्द अने वृत्त शब्द पर्यायो छ'

"(३) छन्दःपरिमलकारस्तु तयो पर्यायार्थत्व प्रत्याख्याय—'मात्राक्षरसख्यया नियता वाग् छन्द, गलसमवेतस्वरूपेण नियता वाग् वृत्तम्।' इत्येव व्यवस्थापयति। तथा च मन्यते —

'उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठिका।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहतीपङ्क्तिनिष्टुभ ॥
जगती चातिजगती शक्वरी चातिशक्वरी।
अष्टचत्यष्टी धृति सातिकृति प्रकृतिराकृति ॥
विकृति सकृतिश्चातिकृतिरुत्कृतिदण्डका ।
एतानि वर्णच्छन्दांसि तद्भेदाना तु वृत्तता॥
एवमेव षडादीना मात्राच्छन्दस्त्वमिष्यते।
तदवान्तरभेदाना जातित्वमिति सिद्धयति॥'"

'छन्दपरिमल'ना कर्ता ए शब्दो पर्याय होवानो निषेध करे छे मात्राक्षरनी सख्याथी नियत थयेली वाणी ते छन्द, अने गल (गुरुलघु) समवेत स्वरूपथी नियत थयेली ते वृत्त एम कहे छ ए प्रमाणे व्यवस्था करे छे, अने माने छे' के वगेरे आ श्लोकमा उक्तादि छव्वीस वर्गो गणाव्या छे एवी बधारे अक्षरोना वृत्तोने ते दडको कहे छ ए बधा वर्णछन्दो छ ए प्रकारोना भदोने ते वृत्तो कहे छ अर्थ एवो छ के १२ अक्षरनो वर्णछन्द ते जगती पछी तेना पेटाना आवता इन्द्रवशा, वशस्थ, द्रुतविलबित ए बधा वृत्तो ते ज प्रमाणे अमुक सख्यानी मात्राना छन्दो ते मात्राछन्दो, अने तेना अवान्तर भेदो ते जाति वृत्तनो अने जातिनो आवो अर्थ पण छे ते नोधवा जेवु छे

"(४) अपरे तु पुनरन्यथा विभज्य व्याचक्षते। तथा हि—पद्यच्छन्दस्ता वत्त्रेधा—वैदिक च लौकिक च उभयसाधारण च। तत्र लौकिक पुनस्त्रेधा—गणच्छन्द, मात्राच्छन्द, अक्षरच्छन्दश्चेति। तथा चोक्तम्—

'आदौ तावद्गणच्छन्दो मात्राच्छन्दस्ततः परम्।
तृतीयमक्षरच्छन्दश्छन्दस्त्रेधा तु लौकिकम्॥

आर्याद्युद्गीतिपर्यन्तं गणच्छन्दः समीरितम्।
मात्राच्छन्दश्चूलिकान्तमौपच्छन्दसिकादिकम्।
समान्याद्युत्कृति यावदक्षरच्छन्द एव च॥' इति"

'बीजाओ वळी बीजी रीते विभागो करे छे आ प्रमाणे'

पद्यछन्दना त्रण प्रकारो (१) वैदिक, (२) लौकिक, अने (३) उभयसाधारण तेमां लौकिकना वळी त्रण प्रकार (१) गणछन्द, (२) मात्राछन्द, (३) अक्षरछन्द कह्युं छे के — पहेलो गणछन्द ते पछी मात्राछन्द त्रीजो अक्षरछन्द एम लौकिक त्रण प्रकारनो आर्याथी उद्गीति सुधीना गणछन्दो कहेवाय छे औपच्छन्दसिकथी चूलिका सुधीना मात्राछन्द समानीथी उत्कृति सुधीना अक्षरछन्द' अहीं गणछन्द कह्यो छे ते आपणा आवृत्तसंधिमायामेळ छे गण शब्द संधिना अर्थनो अहीं छे मात्राछन्द ते मात्रागर्भ छे अने अक्षरछन्द ते वृत्तो छे उपर कह्युं तेम लगात्मक जातिओ मायेना

"(५) परे तु पद्यच्छन्दश्चतुर्धा — अक्षरच्छन्द, मात्राच्छन्द, अक्षरगणच्छन्द, मात्रागणच्छन्दश्चेति भेदात्। यत्र मात्राणां न्यूनातिरेकेऽप्यक्षरसंख्यान तत्र तदक्षरच्छन्द। यथा वेदे बहुलं प्रयुक्तं गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यादि। यत्राक्षराणां न्यूनातिरेकेऽपि मात्रासंख्यान तत्र तन्मात्राच्छन्द — यथौपच्छन्दसिकवैतालीयादिकम्। यत्र पुनरक्षरगणानां क्रमसंनिविष्टानां व्यवस्थया स्वरूपसिद्धिस्तत्राक्षराणां गुरुलघुस्थानानां च नियतत्वादक्षरगणच्छन्दस्त्वेन व्यवहार। यथेन्द्रवज्रास्रग्धरावसन्ततिलकामन्दाक्रान्तादि। अथ यत्र मात्रागणानां क्रमसंनिविष्टानां व्यवस्थया छन्दःसिद्धिस्तत्राक्षरनियमाभावान्मात्रागणच्छन्दस्त्वेन व्यवहार। यथा आर्यादोहाकुण्डलिकादि — इत्येव पश्यन्ति।"

छ शा नि भूमिका पृ ४७–४८

'बीजा केटलाक पद्यछन्दने चार प्रकारनो गणे छ अक्षरछन्द, मात्राछन्द, अक्षरगणछन्द, अने मात्रागणछन्द जेमां मात्रा न्यूनाधिक थाय तोपण अक्षरसंख्या एक ज रहे एवुं जे छन्दोनुं तंत्र छे ते अक्षरछन्द जेम के वेदमां अनेक वार प्रयोजाता गायत्री, त्रिष्टुभ, जगती वगेरे जेमां अक्षरो न्यूनाधिक थतां मात्रासंख्या एक ज रहे एवुं तंत्र छे ते मात्राछन्द, जेम के औपच्छन्दसिक, वैतालीय वगेरे जे छन्दो, अमुक क्रममां आवता अक्षरगणोथी सिद्ध थाय छ ते गुरु-लघुस्थानना नियतपणाने लीधे अक्षरगणछन्दने नामे बोलावा जोईए जेम के इन्द्रवज्रा, स्रग्धरा, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता वगेरे ज छन्दो, अमुक क्रममां आवता मात्रागणोथी सिद्ध थाय छे, ते, तेमां अक्षरनियम न होवाथी मात्रागणछन्दने नामे बोलावा जोईए जेम के आर्या, दुहो, कुंडळियो वगेरे एम कहे छे' आ विभागो ठीक ठीक स्पष्ट जणाय छे आमां वैदिक छन्दोनुं

स्वरूप टूकमा पण बहु स्पष्ट दर्शाविलु छे. अने बाकीना विभागो पण कंईक सिद्धान्त उपर रचायेला छे. जोके एक बाबत अही स्पष्ट करवी जोईए के अही कहेलो अक्षरगण ते आपणो वृत्तोनो सघि नथी. तेम ज मात्रागण ते पण आपणो मात्रासधि नथी. आनी चर्चा आगळ आवशे. पण एकदरे आ विभागो सारा छे.

प्रसिद्ध पिंगल के छन्दःशास्त्र छन्दोना वैदिक अने लौकिक एवा बे विभागो करे छे. वैदिक पूरा थया पछी लौकिकमा प्रथम आर्या गीति वगेरे मात्राछन्दो आपे छे, अने वैतालीय जेवा मात्रागर्भ छन्दो पण तेनी साथे ज लई ले छे. पछी वृत्तो ले छे. तेमा सम, अर्धसम, विषम विभागो करी पाछला बे नाना छे तेने प्रथम उकेली नाखे छे. अने ते पछी समवृत्तो उक्तादि क्रमे ले छे. अने दडकोथी ए प्रकरण पूरु करे छे. अने छेवटे नही आवी गयेला (जमा नवा छदो पण आवे) छन्दोनो गाथा नाम नीचे सग्रह करी विषय पूरो करे छे.

'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमंजरी' पण आ ज प्रकारो स्वीकारे छे, जोके 'छन्दोमजरी' लक्षण आपता प्रकारोने जुदा क्रमे ले छे.

'प्राकृत पंगल' बे ज प्रकारो स्वीकारे छे मात्राछन्द अने वर्णछन्द.

अर्वाचीन कालमा आवता दलपतराम पण बे ज प्रकारो स्वीकारे छे मात्रामेळ अने अक्षरमेळ. संख्यामेळनो तेओ अक्षरमेळमां समावेश करे छे, अने मात्रागर्भवृत्तोने ए स्वरूपे चर्चता नथी

सद्गत के. ह. ध्रुवे पिंगल उपर नवी दृष्टिए पुष्कळ चर्चा करी छे. पद्यरचना उपर ध्यान खेंचे एवो एमनो पहेलो निबध 'पद्यरचनाना प्रकारो' (सा वि मा. २, २६२-३०८) १९०८ मा प्रसिद्ध थयेलो. ए विषयनु वधारे लाबु अने विस्तृत निरूपण पामेलो निबध 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना' १९३२ मा प्रसिद्ध थयो. एटले पहेलानी अपेक्षाए बीजाने ज प्रामाणिक गणवो जोईए. तेमा तेओ पद्यरचनाना प्रथम बे विभागो करे छे : निबद्ध, अने अबद्ध. अबद्ध एटले मे जेने मळग पद्यरचना कही छे ते. निबद्ध पद्यरचनाना चार प्रकारो तेओ बतावे छे वर्णात्मक, रूपात्मक, मात्रात्मक, लयात्मक. वर्णात्मकमा बे वर्गो प्राचीन, तेमा गायत्री, त्रिष्टुभ वगेरेनो समावेश थाय छे. अर्वाचीनमा कवित, अभग वगेरेनो, जेने में सख्यामेळ कह्या छे. रूपात्मक ते मे जेने अक्षर-मेळ कह्या छे ते. "वर्णना बे रूप छे, लघु अने गुरु मेळमा मेळवायेला ए रूपना रूपवध बने छे रूपवधमा चार ज चरण होय छे." ते पछी तेओ

तेओ सम, अर्धसम, विषम ए विभागो दर्शावे छे यतिदृष्टिए छंदो यतिक के अखंड अने यतिक के सखंड छे. फरी संधिनी दृष्टिथी तेओ रूपमेळ वृत्तोमां अनावृत्तसंधि अने आवृत्तसंधि एवा बे विभागो करे छे आ विभागोनी शास्त्रीयता मने चिन्त्य जणाय छे एटले ए विशेनी चर्चा अहीं करवानी तक लउं छुं.

तेओ कहे छे "सखंड तेम ज अखंड चरणनो घटकावयव संधि छे संधिमां एकथी वधारे अभिन्न के भिन्न रूप आवे छे. . . चरणनी घटनामां आवता संधिना त्रण प्रकार छे एकल, अभ्यस्त अने आवृत्त जे संधि चरणमां लागलागट यतिकृत विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय ते आवृत्त; लागट बे वार वपरायो होय ते अभ्यस्त; अने अणलागट वपरायो होय, के एकल छेल्ला बे संधिनो अनावृत्त संज्ञामां अंतर्भाव थाय छे" (प ऐ आ, पृ० २०) आ पछी तेओ आवृत्तसंधि रूपमेळना दृष्टान्त तरीके तोटक आपे छे (एजन, पृ २१) अलबत तोटकमां ललगा संधिना चार आवर्तनो छे अने तेथी ते आवृत्तसंधि रूपमेळ बने छे पण अहीं महत्त्वनी वात ए छे के ललगा ए मात्रामेळी चतुष्कल संधिनूं एक लगात्मक रूप छे अने ओ मात्रामेळी होवाथी तेना आवर्तनोथी छंदनो मेळ सधाय छे एने भले रूपात्मक के अक्षरमेळ कहो पण मेळनी दृष्टिए ए आवर्तनोथी सिद्ध थतो एक जातनो मात्रामेळ छन्द ज छे आवृत्तसंधिनो मात्रामेळ साथेनो आ संबंध तेमणे स्पष्ट रूपे कह्यो नथी अने तेथी छन्दना निरूपणमां अनेक जगाए संदेह अने विषमताओ ऊभी थाय छे जे शास्त्रने दूषित करे दाखलाथी एक एवी विषमता तरत समजाशे. आपण तोटक, दोधक अने भ्रमरविलासितानो न्यास पासे पासे मूकीए:

तोटक .	ललगा ललगा ललगा ललगा
दोधक	गालल गालल गालल गागा
भ्रमरविलासिता	गागा गागा लललल ललगा ,

आ त्रणेय छन्दो रूपमेळ के अक्षरमेळ तो छे ज, कारण के तेना लघुगुरुस्थान नियत छ त्रणेय, मात्रामेळी चतुष्कल संधिना भिन्नभिन्न लगात्मक पर्यायोना आवर्तनोथी बनेला छे तेमां पहेला बेमां एक ज लगात्मक पर्यायना त्रण आवर्तनो छे, त्रीजामां नथी त्यारे हवे के हं ध्रुव प्रमाणे त्रणयने आवृत्तसंधि गणवा के पहेला बेने ज? जो मेळने ज छन्दमां प्रधान गणवो होय तो त्रणेयने एक ज वर्गमां — आवृत्तसंधि अक्षरमेळमां मूकवा जोईए अने संधिना आवर्तननुं कथन, आ दृष्टान्तनो समावेश थाय ए रीते करवु जोईए आ ज चर्चामां, भ्रमरविलासिता जेवो दाखलो आवृत्तसंधिमां आवी शके एवी

जातनी एक दलील पण तेमने करी छे. आवृत्तसंधि अने अनावृत्तसंधि रूप-मेळने सरखावता तेओ कहे छे : "... अनावृत्त संधिना रूपबंध प्रत्ये पूर्वकाळना कविओने पक्षपात सकारण जणाय छे. रूपरचनाना समपद छंदोमां चरण अभिन्न मापनां छे, एटले के आवृत्त छे. तेने लीधे वैविध्य खातर संधि अनावृत्त होवानी अपेक्षा रहे छे. आवृत्त संधिमां अंतर्गत रूप ज्यां भिन्न होय छे, त्यां संधिनी आंतर घटनामां एक प्रकारनी विविधता रहे छे खरी. पण ते उक्त संधिना आगळ पडता आवर्तनथी दबाई जाय छे. ज्यां आवृत्त, संधिमांना रूप पण अभिन्न होय छे, त्यां तो वैविध्यनो भास सरखो ए रहेतो नथी." (एजन, पृ. २१-२२) 'संधिनी आंतर घटनामां एक प्रकारनी विविधता रहे छे खरी' एम कहे छे ते भ्रमरविलासिता जेवा रूपमेळोमां ज समजे छे. 'ज्यां आवृत्त संधिओना रूप पण अभिन्न होय' एम कहे छे ते तोटक जेवा छंदोने लागु पडे छे. अहीं एमना कथननो पूरेपूरो अर्थ करी तेने व्यवस्थित करीए तो मने इष्ट छे ए ज अर्थ नीकळे के भिन्न भिन्न लगात्मक रूपोथी पण एक ज मात्रामेळी संधिनां आवर्तनो थतां होय तो छन्द आवृत्तसंधि ज गणाय. पण दृष्टान्तोमां तेम ज निरूपणमां एवुं थयुं नथी. दाखला तरीके ध्रुव 'मध्यक्षामा'ने आवृत्तसंधि गणता नथी. तेओ एनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे, अने तेने सखंड अनावृत्तसंधि गणे छे; न्यास (बेवडी ऊभी लीटीओ यतिनी छे) :—

| | || | | |
गागा गागा || लललललल गागा गागा

(रा वि. भा. २, पृ. २८१)

ज्यारे खरी रीते ते मात्रामेळी छे, नीचे प्रमाणे—

गागा गागा, ललल ललगा गागा गा

अने आवी रीते मात्रामेळी आवृत्तसंधि लगात्मक छन्दो अनावृत्तसंधि गणावाथी यतिचर्चा दूषित थाय छे.

एटलुं ज नहीं, ऊलटी रीते जे छन्दो खरी रीते अनावृत्तसंधि छे ते, तेमना न्यासमां कोई जगाए एक संधिना त्रण आवर्तनो आवतां आवृत्तसंधि गणाई जाय छे तेओ प्रमदा अथवा कुररीरुता छदने नर्दटकनी प्रकृति गणावे छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे·

| | | | |
ललगाल गाल गाल ललगा ललगा

नर्दटकना न्यासमां उपरना न्यास उपरांत अंतमां एक ललगा विशेष छे. हवे अहीं एक ललगा विशेष थवाथी त्रण ललगा भेगा थई जाय छे.

अने तेथी ए आवृत्तसंधि बनी जाय छे आ वृत्त विशे तेओ पोते कहे छे
"वंशपत्रपतितना आरंभना गुरु बदल बे लघु अने अगियारमा तथा बारमा[1] रूपना बे लघु बदल एक गुरुनी योजनाथी आ छंद ऊपजी आवे छे उक्त रूपांतरथी एकंदर उच्चारणमां कांई फेर पडतो नथी अनावृत्तसंधिना वंशपत्रपतित उपरथी नीपजता नर्दटकनो उत्तर भाग ललगा ललगा ल्लगा एम आवृत्तसंधिनो बनेलो छे 'वृत्तरत्नाकर'मां आ छंदना चरणना सातमा अक्षरे मध्ययति कही छे परंतु 'मालतीमाधव'माना बे नर्दटक पैकी एकेमा ए मध्ययति पळायेली जणाती नथी वळी 'सुवृत्ततिलक' पण नर्दटकने यतिरहित लेखवे छे 'रघुवंश'ना निशा वृत्तनी[2] पेठे 'मालतीमाधव'ना आ छंदना चरणमा अनावृत्त अने आवृत्त संधिनो मनोहर योग छे." (प ऐ आ, पृ २५३) प्रथम वंशपत्रपतित अने नर्दटकनो न्यास जोईए हु न्यास मारी रीते संधि जुदा पाडी मूकु छु

---

१ अहीं ध्रुवनी कईक सरतचूक थई जणाय छे वंशपत्रपतितना आरंभना गुरुनी जगाए नर्दटकमा बे लघु छे ए खरु पण वंशपत्रपतितना अगियारमा बारमा नहीं पण तेरमा चौदमा लघुओनी जगाए नर्दटकमा एक गुरु छे आ मात्र सरतचूक ज छ

२ आ निशा वृत्तने बे हु ध्रुव अनावृत्तसंधि अने आवृत्तसंधिना मनोहर मेळना दाखला तरीके गणावे छे पण मे अन्यत्र ('अर्वाचीन गुजराती काव्यसाहित्य' पृ ३३, ३४, टीप) कह्यु छे तेम ते दंडकनो एटले आवृत्तसंधिनो ज एक टूको प्रयोग छे संस्कृत पिंगला प्रमाणे २६ अक्षरथी लांबा वृत्तो बधा दंडको गणाय छे दंडकमा हमेशा पहेला छ अक्षरो लघु आवी पछी —गालगा के एवा बीजा कोई संधिना आवर्तनो आवे छे आ निशा के नाराच (प ऐ आ पृ २०६) तमा पण एम ज पहेला छ अक्षरो लघु आवी पछी गालगाना आवर्तनो ज थाय छे मात्र २६ अक्षरथी वधारे लांबो ए छंद बनतो नथी माटे ज एने दंडक कह्यो नथी बाकी मेळ अने चाल दंडकनी ज छे 'रघुवंश'नो ए प्रसिद्ध श्लोक

रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियां
　　　　　　　　　　　　रघुवंश, सर्ग १२, श्लोक १०४

निशा　ललललल गालगा गाल्गा गालगा गालगा

एटले ए दंडक जेवो आवृत्तसंधि छंद ज छे तेने नर्दटक साथे जरा पण सरखावी शकाय नहीं

वशपत्रपतित : गाललगा लगा ललगा ललललललगा
नर्दटक : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा

हवे वशपत्रपतित अने नर्दटकमा थोडो फेर होवा छता थे. ह. ध्रुव 'वर्णेनी उच्चारणामा थाई फेर पडतो नथा ' एम स्वीकारे छे अर्थात् वर्णनो मेळ एा ज रहे छे एम स्वीकारे छे तो तेमायी एक एटले वशपत्रपतित अनावृत्तसधि गणाय अने नर्दटक आवृत्तसधि गणाय एम केम बने ? बीजु · तेओ प्रमदा अथवा कुररीरुताने नर्दटकनी मूळ प्रकृति गणे छे. तो मूळ प्रकृति अनावृत्तसधि रहे अने तेनायी निष्पन्न थती कृति केवळ भिन्न प्रकारनी बनी जाय एम केम बने ? वळी तेओ कहे छे, नर्दटकमा 'अनावृत्त अने आवृत्त सधिनो मनोहर योग छे ' अस्तु पण आ योग पछी आखु वृत्त अनावृत्तसधि गणाय के आवृत्तसधि गणाय ? छेवटना त्रण ललगा ए समसधिओ छे, ते पहेलाना विषम सधिओ छे, तो ए समविषम भेगा थई एक मेळ सधाता, पछी बधा सधिओ एकदर सम गणाय के विषम ? मने तो सदेह नथी के विषममा सम भळे तो समग्र विषम ज गणाय. अने ए छन्दनो मेळ अनावृत्तसधिनो ज गणाय. तेम ज बे सधिओ एक होय त्या सुधी अनावृत्तसधि गणाय अने बेथी वधी त्रण थाय एटले आवृत्तसधि बनी जाय ए फेरफारनु कारण समजातु नथी.

बधी विषमतानु कारण ए छे के तेमणे आवृत्तसधि अक्षरमेळने मात्रामेळना सधिना आवर्तनोवाळी मात्रामेळ रचना तरीके स्वीकार्यो नथी तेथी मेळदृष्टिए मात्रामेळी घणी लगात्मक रचनाओ अनावृत्तसधि वृत्तो साथे सेळभेळ थई गई छे तेथी तेओ ए जोई शक्या नही के यति पूर्वे गुरु आवे ज छे. एटले यतिनु स्वरूप दूषित थयु. तेथी अनावृत्तसधि अक्षरमेळनी यति अने मात्रामेळनी यतिनु स्वरूप भिन्न छे ए एमणे जोयु नही एम एक छिद्रमायी अनर्थपरपरा चाली छे

आ अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो पछी तेमणे मात्रामेळी रचनाओ चर्ची छे मात्रामेळी रचनाओनी तेमण भिन्नभिन्न सधिओ अने ते उपरथी निष्पन्न थती भिन्नभिन्न रचनाओनो निर्देश कर्यो छे अने ते पछी तेओ लयमेळनो प्रकार ले छे लयमेळमा पद, गीत, गरबो, गरबी, मास, तिथि, वार, आरती प्रभातिया वगेरेनो समावेश थाय छे

गुजरातीमा पिंगल विशे जे जे अत्यार सुधी लखायु छे तेमा के ह. ध्रुवे ज सौथी प्रथम पिंगलने शास्त्रीय निरूपणमा मूकवानो प्रयत्न कर्यो छे. खरु कहीए तो अेमना सुधीनी आखी पिंगलपरपरा मात्र नोध जेवी हती, शास्त्रीय निरूपण जेवी नही अलबत्त क्याक क्याक यतिनी चर्चा के

गीतिना स्वरूप जेवा निरूपणमां ए शास्त्रनी दिशामां जती अने ऊंडां रहस्यो पण आपती, पण ते सिवाय ते नोंध जेवी ज रही छे. जेम लेखानी रीत साची होय छे, तेमांथी जवाब खरो आवे छे, पण ते गणितशास्त्र नथी, एम आज सुधीनुं पिंगल ए छन्दोनी साची कूचीओ होवा छतां ए शास्त्र नहोतुं. ये ह ध्रुवे एनी चर्चाने शास्त्रीय पीठिका पूरी पाडी एम कही शकाय ए रीते एमनो फाळो महत्त्वनो छे, पण एमणे पण पिंगळनुं सळंग निरूपण कर्युं नथी, अने तेथी तेमनी चर्चामां घणुं अविशद अने केटलाक विसंवादो रही जवा पाम्या छे

आखा पिंगळनुं विस्तृत शास्त्रीय सळंग निरूपण सौथी प्रथम आपणने पटवर्धनना 'छंदोरचना' पुस्तकमां (प्रसिद्ध १९३७) मळे छे तेमणे 'वृत्त', 'जाति' अने 'छंद' एम त्रण प्रकारोथी व्यवस्था करी छे तेमणे मेळना बे स्वरूप स्वीकार्यां छे, आवर्तनी अने अनावर्तनी, अने वृत्तोना वर्गप्रकारना मेळना बताव्या छे अलबत्त आ दृष्टि मराठी छंदचर्चामां नवी ज छे अने मराठीमां आ नवीन दृष्टि साम पुष्कळ ऊहापोह थयो छे, पण ते पहेलां घणां वरस पहेलां आपणने ए सुरेख रूपे के. ह. ध्रुवना लेखोमां जोवा मळे छे एटले पटवर्धनने सळंग निरूपणनुं मान घटतुं होवा छतां मौलिकता के. ह. ध्रुवनी ज रहे छे

३

अक्षरमेळ वृत्तो : तेमनुं परंपरागत स्वरूप

पिंगलनो मुख्य उद्देश छंदना स्वरूपनो अभ्यास छे ए अभ्यासमां पिंगले छन्दना स्वरूपनुं पृथक्करण करी तेना मेळनुं तत्त्व शोधी काढवुं जोईए आपणे आ विशे चर्चा शरू करीए ते पहेलां छन्दोनुं परंपरागत स्वरूप जोई जवुं जोईए ए आपणी चर्चानी भूमिका बनशे

आपणे आगळ जोशुं तेम आ वृत्तोमां मात्र अनावृत्तसंधि अक्षरमेळनो ज समावेश थाय छे, तोटक जेवां आवृत्तसंधिवृत्तो जे आज सुधी अक्षरमेळ गणातां पण वास्तविक रीते अमुक जातिछन्दोनां मात्र रूपात्मक रूपो हतां तेने शास्त्रीय दृष्टिए वृत्तोमां ज्यां स्थापी शकाय नहीं

वृत्तोनुं लक्षण ए छे के वृत्तो बधां श्लोकबद्ध होय छे श्लोक ए वृत्त-बद्ध साहित्यनो एकम छे साधारण रीते श्लोक चार चरणनो के पादनो गणाय छे (जोके वेदमां त्रिपदा गायत्री वगेरे) हलायुध तो पादना संयोगने

लीधे ज पद्य थतुं माने छे,[1] अने संस्कृत साहित्यमां पाद ज पद्यने गद्यथी व्यावृत्त करतुं लक्षण मनाय छे.[2] आ श्लोक चतुष्पाद हतो अने श्लोकार्ध अने दरेक श्लोकार्धना बन्ने पादो ए श्लोकना स्वाभाविक अवयवो हता. दलपतरामे पण श्लोकनुं आ स्वरूप स्वीकारेलुं छे, जो के एमणे श्लोकार्धनी जुदी गणना करी नथी. ए मात्र श्लोकना चार चरणो ज स्वीकारे छे.

दरेक चरणने अंते यति होवी जोईए एवो पिंगळनो नियम छे. यतिनो सामान्य अर्थ विराम कराय छे, अर्थात् श्लोकना पठनमां चरणने अंते विराम लेवाय छे. आ विरामना स्थान पहेलां शब्द पूरो थवो जोईए एवो नियम छे. एम न करीए तो विरामने लीधे ए शब्द पठनमां भांगे अने तेथी सहृदयना मनने क्लेश थाय. एवी रीते शब्द भांगे तेने यतिभङ्गनो दोष कहे छे. अहीं नोंधवुं जोईए के दलपतराम वगेरे पिंगळकारो श्लोकार्ध यति, अने एकी चरणने अंते आवती यतिनो भेद करता नथी. पण पठनमां स्वाभाविक रीते ज एकी चरणने अने आपनी यति करता श्लोकार्ध यति लांबी होय छे.

कोई कोई वृत्तोमां आ चरणान्त यति उपरांत चरणनी अंदर पण यति आवे छे. तेने मध्ययति कहे छे. आ यति चरणान्त यतिथी टूंकी होय ए स्वाभाविक छे. चरणान्त यति तो वृत्तोमां सार्वत्रिक छे[3], एटले श्लोकना स्वरूपना निरूपणमां एनो उल्लेख करवामां आवतो नथी, मात्र मध्ययतिनो उल्लेख करवानो आवे छे. आथी घणी जगाए यति शब्द मात्र मध्ययतिनो ज वाचक बने छे. आ मध्ययतिने अवलंबीने श्लोकना सयतिक अने अयतिक एवा बे विभागो पडे छे. आपणे दरेकनुं एक एक दृष्टान्त लईए. प्रथम एक अयतिक छन्द लईए, इन्द्रवज्रा.

इन्द्रवज्रा

मोजां विकासी मुख शां तडे छे!
चोपास शी पंक्ति तमिस्रनी छे!
तो ये न कम्पे खडके पनोती
ना झबकाये शुचि स्नेहज्योति!

'डिडेल्स लाईट', प्र० पु०

---

१. पादेन सयोगात्पद्यम्। छ. शा नि, पृ. ५२

२ अपाद पदसंतानो गद्यम्। का. द, १, २३, पा. वि.नुं पद्योनुं संतान ते गद्य.

३. मात्र उदगता आनो एक अपवाद छे, तेनी योग्य स्थळे चर्चा करीशुं.

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

इन्द्रवज्रा गागालगागा ललगा लगागा

हवे आपणे एक सयतिक वृत्तनु दृष्टान्त लईए

मन्दाक्रान्ता

छूपी ऊघे घनमद मही तारला व्योम अवे ,
निद्रा मीठी गिरि नद अने विश्व आखूय ले छे
ने रूपेरी भ्रमित दिसती वीजळी एक स्थाने,
सूती सूती हसति मधुरू स्वप्न माही दिसे छे
बिल्वमगल केकारव

आ छन्दमा चरणान्त यति उपरात प्रथम चार अक्षर पछी, अने तेनी पछी पाच अक्षर पछी, एम बे मध्ययतिओ आवे छे आ मध्ययतिने वृत्तना न्यासमा आपणे दडथी दर्शावीशु ए रीते आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय

मन्दाक्रान्ता गागागागा । ललललगा । गालगा गालगागा

चरणान्त यति सर्वत्र छे एटले आपणे बेमाथी कोई न्यासमा एने दर्शावी नथी

आपणा पिंगलोमा छन्दोना निरूपणमा आ अयतिक अने सयतिक वृत्तनी चर्चा भिन्न भिन्न थती नथी सस्कृत पिंगलो वृत्तोने प्रथम सम, अर्धसम अने विषम एवा विभागोमा वहेंचे छे जेना चारेय चरणो सरखा होय ते समवृत्तो, जेना विषम एटले एकी अने सम एटले बेकी सरखा होय, एटले पहेलु त्रीजु अने बीजु चोथु सरखा होय, ते अर्धसम, अने जेना चारेय चरणो अणसरखा होय ते विषम समवृत्तोनी सख्या ज मोटी छे अने एनु निरूपण ज पिंगलोनो मोटो भाग रोके छे पिंगलो आ समवृत्तोने तेना अक्षरोनी सख्याना क्रमे विभाजे छे अने पछी दरेक विभागना जुदा जुदा छदोना चरणमा आवता लघु गुरुना स्थानो जुदी जुदी तत्रयुक्तिथी दर्शावे छे ए रीते एक अक्षरथी माडीने छब्बीस अक्षरो सुधीना वृत्ताना नीचे प्रमाणे छब्बीस विभागो करवामा आवे छे

अक्षरसख्या	वृत्तनु नाम	अक्षरसख्या	वृत्तनु नाम
१	उक्था	४	प्रतिष्ठा
२	अत्युक्था	५	सुप्रतिष्ठा
३	मध्या	६	गायत्री

७	उष्णिक्	१७	अत्यष्टि
८	अनुष्टुप्	१८	धृति
९	बृहती	१९	अतिधृति
१०	पंक्ति	२०	कृति
११	त्रिष्टुभ्	२१	प्रकृति
१२	जगती	२२	आकृति
१३	अतिजगती	२३	विकृति
१४	शक्वरी	२४	संकृति
१५	अतिशक्वरी	२५	अतिकृति
१६	अष्टि	२६	उत्कृति

एक बे अने पचीसमा वर्णना अनुक्रमे उक्ता, अत्युक्ता, अने अधिकृति एवा नामो पण मळे छे वेदमा अक्षरसख्या उपरथी ज छन्दोना प्रकारो करेला छे ते प्रकारोना नामो ज अही थयाक अर्थविस्तार करी प्रयोजेला छे आ छव्वीस अक्षरोथी वधारे लावा वृत्तोने दडको कहेला छे अने जे छदोनो नामथी निर्देश न करेलो होय तेने संस्कृत पिंगलो गाथा कहेता.

आ वृत्तमा लघु गुरु अक्षरोना स्थानो दर्शाववानी अनेक तत्रयुक्तिओ जुदा जुदा पिंगलोए अखत्यार करी छे पण तेमानी बेनो ज अही निर्देश करीशु[४] एक पद्धति लघु के गुरुना स्थाननी सख्या आपवी ए हती घणे भागे गुरुओ ओछा होय छे एटले गुरुना ज स्थानो अपाता आ पद्धति प्राचीन हशे एम हु मानु छु 'भरतनाट्यशास्त्र'मा आ पद्धति प्रमाणे छन्दोना लक्षणो आपेला मळी आवे छे (जोके थयाक थयाक गणपद्धतिथी पण लक्षण आपेलु छे जेने हु पछीथी उमेरायेलु गणु छु) दाखला तरीके.

नवमं सप्तमं षष्ठं तृतीयं च भवेल्लघु।
एकादशाक्षरे पादे इन्द्रवज्रेति सा यथा॥

भ ना गा, २, पृ २५८

नवमे, सातमे, छठ्ठे, त्रीजे लघु आवता अगियार अक्षरोनो पाद ते इन्द्रवज्रा. आपण आगळ आनो न्यास आपेलो

१ २ ३ ४ ५   ६ ७ ८ ९ १० ११
गा गा ल गा गा   ल ल गा ल गा गा

---

४ बाकीनी मुख्य मुख्य पद्धतिओ आ प्रकरणना परिशिष्टमा आपेली छ

तेनो गणात्मक न्यास जोईए बधा पिंगळोनी पेठे दलपतराम आ प्रमाणे आपे छे:

रथोद्धता

रे नरो लगि घसे अशुद्धता
तो नरोनि धिक छे रथोद्धता

प्रथम आवता रे न रो लगि ए तत्रयुक्ति प्रमाणे रगण नगण रगण लघु गुरु बतावे छे अर्थात् एनु लक्षण र न र लग थयु स्वागतानु

स्वागता

रे नभागि गढनाथ जुओ छो
स्वागता शिद समृद्धि खुओ छो

उपरनी रीते ज अही स्वागतानु लक्षण र न भ ग ग थयु. बन्नेने सरखावता एम जणाय के आमा र अने न समान छे, पछी वशु समान नथी. अने बन्नेना आखा बधनी समानतानो तो ख्याल ज न आवे हवे अही हु जे सन्धिन्यासनी पद्धति अखत्यार करु छु अने जेनु सपूर्ण निरूपण हु आगळ उपर करवानो छु ते प्रमाणे सन्धिन्यास मूकता ए बे वृत्तोनी समानता अने भेद बन्ने एकदम व्यक्त थई जशे

रथोद्धता गालगा लललगा लगालगा
स्वागता गालगा लललगा ललगागा

पहेला बे सधिओ एकनो एक छ, अने छल्ला सधिओ जुदा छे अने तेमा शो भद छे, ते सर्व अहीं मात्र सधिन्यास उपर एक ज नजर नाखता प्रत्यक्ष थाय छे

गणपद्धतिनी अपूर्णता दर्शाववा आवो ज एक दाखलो ब सयतिक छन्दोनो लउ

शालिनी. गागागागा । गालगा गालगागा
मालिनी. ललललललगागा । गालगा गालगागा

बन्नेने आ सधिन्यासोथी सरखावता तरत समजाशे के बन्नेमा मध्ययति पछीना आखा यतिखडो सरखा छे ए यतिखडोमा बन्ने सधिओ एना ए ज छे हवे तेना अक्षरगण लक्षणो जोईए·

शालिनी म त त ग ग
मालिनी न न म य य

आ लक्षण उपरथी बन्ने छन्दोमां पराय पण समान संधिओ हशे एवी केम पण सूचना मळशे नहीं

अने ज्यां मात्रामेळना लगात्मक रूपोने आ अक्षरगणोथी बतावेला छे त्यां क्यांक क्यांक तो छन्दनुं आखुं स्वरूप ढंकाई जाय छे. दाखला तरीके 'छन्द शास्त्र'मां वरसुन्दरी वृत्त आपेलुं छे तेनो मेळ दालदाना आवर्तनोनो छे. दालदान त्यां गाललल एवुं लगात्मक रूप आपेलुं छे. अने ए गाललललना त्यां त्रण आवर्तनो थई अंते गागा आवे छे. सम्पूर्ण पंक्ति पण समजाय एवी छे.

स्वादु शिशिरोज्ज्वलसुगन्धिजलपूर्णम्

मात्रामेळ छन्द तरीकेना तेना आवर्तनो ध्यानमां राखीने तेनो गणविन्यास नीचे प्रमाणे थाय

वरसुन्दरी: गाललल गाललल गाललल गागा

आमां तेनां आवर्तनो स्पष्ट देखाई आवे छे 'छन्द शास्त्र'मां तेनो अक्षरगण-न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे

वरसुन्दरी भ ज स न ग ग (छ शा, नि. ८, ९)

आ न्यास उपरथी जरा पण नहीं समजाय के आमां क्यांई आवर्तनो छे एक पण अक्षरगणनुं क्यांय आवर्तन नथी देखातुं, ज्यारे वास्तविक रीते छन्द आवर्तनात्मक छे

छन्दोनो मेळ व्यक्त थाय, तेना स्वाभाविक संधिओ स्पष्ट देखाय, अने छन्दोनो परस्पर संबंध देखाय ए रीते तेना लक्षणो आपवा जोईए. संधिओनी संपूर्ण चर्चा तो आगळ आवशे, पण वृत्तनुं स्वरूप अने वृत्तोना संबंध, तेना समविषम अंशो प्रगट करवाने आ गण-पद्धति असमर्थ छे एटलुं तो आटला दृष्टान्तो उपरथी समजायुं हशे

हवे छन्दोना लक्षणो आपवानुं शरू करवा पहेलां एक गूंचवणवाळा प्रश्ननी चोखवट करी लेवी जोईए आपणा पिंगळोए आपेला छन्दो जोतां घणा छन्दो कविओए न वापर्या होय एवा मळी आवे छे आ स्वच्छन्द बे दिशाए प्रवर्तेलो छे आपणे उपर जोई गया तेम पिंगलकारोए उक्तादि वर्गो पादनी अक्षरसंख्या उपरथी नक्की कर्या छे हवे कोई एक एक के बब्बे अक्षरना छन्दो प्रचलित काव्योमां मळी आवता नथी पण छव्वीस सुधी संख्या लई गया तो एक पण संख्या, वृत्त विनानी शा माटे रही जाय एवा आग्रहथी छव्वीस सुधीनी बधी संख्याना वृत्तो आप्या छे वृत्त माटे पिंगलकारोने प्रसिद्ध काव्योमांथी दृष्टान्तो

आमां उपर कहेल स्थाने लघु आवे छे. बाकीना गुरु एम समजी लेवानुं. छन्द गुरुबहुल होवाथी अहीं लघुनां स्थानो आपेलां छे. पण रथोद्धता स्वागतामां गुरुनां आपेलां छे.

आद्यं तृतीयमन्त्यं च सप्तमं नवमं तथा।
गुरूण्येकादशे पादे यत्र सा तु रथोद्धता॥

एजन, पृ. २५९

अगियार अक्षरना पादमां पहेलो, त्रीजो, छेल्लो, सातमो, नवमो गुरु ते रथोद्धताः जेम के

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
गालगा ललल गा लगा लगा

ते ज प्रमाणे स्वागतानुं लक्षण

आद्यं तृतीयमन्त्यं च सप्तमं दशमं गुरु।
यस्यास्तु त्रैष्टुभे पादे विज्ञेया स्वागता हि सा॥

एजन

त्रैष्टुभ एटले अगियार अक्षरना पादमां पहेलो, त्रीजो, छेल्लो, सातमो, दशमो, गुरु ते स्वागता

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
गालगा ललल गा लल गा गा

कालिदास कविने नामे चडेला नाना पण सुघड 'श्रुतबोध'मां आ ज पद्धतिथी लक्षणो आपेलां छे. 'भरतनाट्यशास्त्र'मां आ प्रमाणे अनुष्टुपमां लक्षणो आप्या पछी ते छन्दनुं दृष्टान्त आपेलुं छे. अने दरेक दृष्टान्तमां ते छन्दनुं नाम गूंथेलुं छे एटले के दृष्टान्त चालु साहित्यमांथी न लेतां पिंगलकारे पोते नाम गूंथीने रचेलुं छे. 'श्रुतबोध'मां तो लक्षण ज नाम साथे ते छन्दमां ज आपेलुं छे. आमां अभ्यासीने याद राखवानी सगवड छे, पण दृष्टान्त चालु साहित्यमांथी न लेवामां पिंगलनो मुख्य विषय कविओए प्रयोजेला छन्दो छे, ए तरफ कईक दुर्लक्ष थाय छे. पण ते विशे आगळ विचार करीशुं.

बीजी प्रसिद्ध अने लगभग सर्वमान्य नीवडेली पद्धति ते गणपद्धति छे. आमां लघु-गुरुने जुदे जुदे स्थाने मूकीने त्रण त्रण अक्षरोना आठ गणो करेला छे, अने दरेकने एकएक अक्षरनी टूंकी संज्ञा आपी छे (१) सर्व गुरु गागागा मगण, (२) आदिलघु लगागा यगण, (३) मध्यलघु गालगा रगण, (४) अन्तगुरु ललगा सगण, (५) अन्तलघु गागाल तगण, (६) मध्यगुरु लगाल

जगण, (७) आद्यगुरु गालल भगण, (८) सर्वलघु ललल, नगण. आ सज्ञाओ याद राखवानी एक बीजी टूंकी अने चतुराईवाळी युक्ति छे ते पण नोंधवा योग्य छे. यमाताराजभानसलगं एटलामां उपरनी बधी सज्ञाओ आवी जाय छे. जे गणाक्षरनुं स्वरूप जोवुं होय ते आ सूत्रमांथी जोई लेवो. ए अने एनी पछीना बे अक्षरो ए ज एनुं लगात्मक स्वरूप. यगण जाणवो होय तो यमाता = लगागा ए यगण. रगण जाणवो होय तो राजभा = गालगा ए रगण. जभान = लगाल ए जगण. सलगं = ललगा ए सगण. छेवटे ल = लघु अने ग = गुरु.

आ गणपद्धति ते मात्र स्मरणनी सगवड खातर ज करी होय एम जणाय छे बे अक्षरोनो गण करवा जतां एक चरणमां गणनी सख्या घणी वधी जाय. ए करतां तो प्राचीन मात्र लघु के गुरुना स्थानोनी सख्या आपवानी पद्धति वधारे टूंकी अने सहेली पडे. चार अक्षरोनो गण करवा जतां गणोनी सख्या घणी वधी जाय, सोळ थई जाय, अने गणो आपतां शेष अक्षरो त्रण वधी जाय त्यां ए त्रगणनो पाछो निर्देश करवो पडे. एम सगवड करतां अगवड वधी जाय. त्रणना गणो मात्र आठ थया ते याद राखवा सहेला पडे, अने एक के बे अक्षरो शेष वधे त्यां लघुनो ल अने गुरुनो ग सज्ञाथी तेनो सहेली रीते निर्देश करी शकाय. एटले आ गणपद्धतिनो ज विशेष उपयोग थयो छे. आ पद्धतिनो मुख्य फायदो ए के तेथी छन्दना लक्षणो सूत्रोथी आपी शकाय छे पिंगलना गणातां छन्दशास्त्रनुं माहात्म्य तेना प्राचीनत्व करतां पण तेना सूत्रनिरूपणनुं छे एम हुं मानुं छुं

आ बन्ने पद्धतिमां अमुक अमुक लाभो रह्या छे आमां वर्गीकरण मुख्यत्वे छन्दोना चरणनी अक्षरसख्याने अवलबे छे एटले ए वर्गीकरण सहेलुं पडे, ते अवश्य निःशेष होय, अने तेमां नवा छन्दो समाववामां कशो प्रश्न उपस्थित न थाय वळी तेनो एक बीजो लाभ ए छे के आ वृत्तोमां प्राचीनतम अनुष्टुभ, त्रिष्टुभ अने जगती ए वेदमांथी सस्काराई सस्काराईने सस्कृत साहित्यमां ऊतरी आव्या छे, अने सभव छे के बीजा घणा, ए रीते ऊतरी आव्या हशे तेनी निरूपणपद्धति साथे एक नामनो पण सबध रहे छे अने गणपद्धति याददास्तने माटे सहेली छे अने तेमां निश्चितता पूरेपूरी सपादित करी शकाय छे तेथी आज सुधी आ पद्धति चालु रहेली छे. विशेष शुं, आ छन्दोने ज केटलाक अक्षरगणछन्दनुं नाम आपे छ पण आ पद्धति शास्त्रीय नथी ज वृत्तोना चरणमां त्रण त्रण अक्षरोना स्वाभाविक अवयवो पडता नथी ज अने बीजुं ए के तेथी वृत्तोना बधा अदरअदरनो सबध स्पष्ट करी शकातो नथी दाखला तरीके आपणे उपर रथोद्धता अने स्वागताना लक्षणो जोई गया

आपवाना नहोता, पण जाते बनावीने छन्दनु नाम अदर गूथीने ते मूकवाना हता, एटले आवा कल्पित वृत्तो मूकवामा तेमने वस्तुस्थितिनो बाध न आव्यो आ रीते अनुपयुक्त छन्दो पण पिंगलमा पेसी गया आ अनिष्ट वलणने एक बीजी दिशार्थी अवकाश अने कदाच उत्तजन मळ्यु

संस्कृत वृत्तो, उपर जोयु तेम, एक चरणमा आवती अक्षरसंख्या उपरथी जुदा जुदा वर्गोमा पड छे तो ते उपरथी पिंगलकारोए हिसाब करवा माडयो के अमुक अक्षरसंख्यामा गुरुलघुनी शक्य एटली बधी गोठवणीथी कुल केटला वृत्तो थई शके? दाखला तरीके उक्ता एकाक्षरी छन्द छ, तेमा बे छन्दो थई शके, पहेलो एक लघुनो, बीजो एक गुरुनो बे अक्षरना छन्दो चार रीते थई शके गागा, गाल, लगा, लल त्रण अक्षरना छन्दो आठ थई शके, आपणे ए निर्णय करेलो ज छे — मगण वगेरे आठ गणो छे चार अक्षरोना एवा सोळ छन्दो थाय छे 'वृत्तरत्नाकर' आनो आखो हिसाब आपे छे सहेज जाणवा लखु छु के अगियार अक्षरना त्रिष्टुभना आ रीते २०४८ वृत्तो थाय छे 'रणपिंगल' तो आर्थी पण आगळ जईने अमुक वृत्त आ गणतरीए गणता केटलामु आवे तेनो पण आवडो आपे छ दाखला तरीके इन्द्रवज्रा 'रणपिंगल' प्रमाणे ३५७ मु आवे छ आ गणतरी नकामी छे एटलु ज नहीं भ्रामक छे नकामी एटला माट के कोई वृत्त समजवामा, एटले के तेनो मळ समजवामा आ गणतरी कशा पण उपयोगनी नथी सगीतना रागनो मळ समजवामा तेना स्वरोना आदोलनोनी संख्या गणवा बेसीए तेना जेवी ज आ नकामी छ पण ए भ्रामक पण छे एथी जाणे एवी गेरसमजण ऊभी थाय छ के नवा वृत्तो आवी कोई गाणितिक पद्धतिए शोधाता हशे अने आटली बधी शाय सख्या, अने तेने मुकाबले वपरायेला वृत्तोनी सख्या आटली, वध। ओछी जोता, पिंगलकारो खाली पडेली सख्या पूरवा जाणे के नवा नवा वृत्तो रचवा लल्चाया परिणाम ए आव्यु के पिंगलमा आवता छदोमाथी कविओए वापरेला केटला अने पिंगलकारोना उपजावेला केटला ते अत्यारे कहेवु मुश्केल छे अलकारोनी पेठे छन्दोनी सख्या वधती ज गई छे दडक बाद करता 'रणपिंगल' लगारभग (एटले एमा आवृत्तभिद आवी जाय) अक्षरमेळनी सख्या १४२३ आपे छ मराठी छन्दोरचना ८९६ आपे छे

आ केवळ स्वच्छन्द, पिंगलकारोनी नजरमा नथी आव्यो एम पण नथी क्षेमेन्द्र पोताना 'सुवृत्ततिलक'मा कहे छे के "न पट्टप्तादरे वृत्ते विश्राम्यति गम्यता। (सु ति २, ७) 'छ के सात अक्षरना वृत्तोमा गम्यतीनो विरामो मळतो नथी ' अने 'वृत्तरत्नाकर'न पण्य चालनार 'छन्दोमजरी' प्रमाणे तो दाखतमा मतभर बाध छे

व्यवहारोचित प्रायो मयाच्छन्दोऽत्र कीर्तितम्।
प्रस्तारादि पुनर्नोक्त केवल कौतुक हि तत्॥
(छ. म. क. ६.५)

'में व्यवहारोचित छन्द अही कहेलो छे. प्रस्तार वगेरे कह्यो नथी, कारण के ते केवल कौतुक छे'

आ उपरात पिंगलोमा एक बीजो पण जबरो गोटाळो छे एक ज छन्दना अनेक नामो मळी आवे छे अने एक ज नामना अनेक छन्दो छे आपणे आ बधी भुलभुलामणी छोडी बने तेटला सीधा अने सरल मार्गे चालीशु.

त्यारे छन्दोनी लक्षणचर्चा करवामा आपणी पहेली प्रतिज्ञा ए छे के आपणे वपरायेला वृत्तो ज लईशु. आम करवामा मने 'दलपतपिंगल' पाया तरीके लेवु ठीक लागे छे. एम करवाथी आपणी भाषाना प्रथम पिंगल साथे आपणे अनुसधान रहेशे. अने दलपतराममा जे एक ठावकाई हती ते एमना पिंगलमा पण जणाय छे. तेओ पण प्राचीन पिंगलपरपराने ज अनुसर्या छे, पण तेमना अक्षरमेळ वृत्तोमा, अनावृत्तसधि अक्षरमेळवृत्त मात्र २५ ज छे. छन्दोरचनाना प्रसिद्ध मराठी पुस्तकमा सद्गत पटवर्धने वीस ज वपरायेला गणाव्या छे,. तेमाना श्रढार 'दलपतपिंगल'मा आवी जाय छे मात्र बे रही जाय छे प्रहर्षिणी अने सुवदना, ते बन्ने पण लईशु अने ते उपरात निरूपणना प्रयोजन माटे हु नर्दटक लईश आटली स्पष्टता पछी हवे छंदोनु निरूपण हाथमा लउ छु अने तेमा प्रथम अयतिक वृत्तो लउं छु.

मे 'दलपतपिंगल'ना वृत्तो स्वीकार्यां छ पण आगळ कही गयो तेम हुं पद्धति तो मारी ज राखीश हु वृत्तोने गोत्रवार लईश, तेमना अदर अदरना सबधो ध्यानमा राखी तेमने भेगा के पासे पासे निरूपीश, अने लक्षणो पण सधिन्यासथी आपीश, गणपद्धतिए नही एम करवामा सख्यावलबी उक्तादि वर्गीकरण सचवाशे नही ए कहेवानी जरूर नथी, जोके एक माहिती तरीके न्यास साथे अक्षरोनी सख्यानो आकडो मूकीश

अहो वेदमाथी ऊतरी आवेला त्रिष्टुभोथी आपणे प्रारभ करीशु प्रथम न्यास आपीश अने पछी तेना दृष्टान्त तरीके बने त्या सुधी प्रचलित साहित्यमाथी एक एक दृष्टान्त आपीश

इन्द्रवज्रा गागालगागा ललगा लगागा - ११

आनु दृष्टान्त आ ज प्रकरणमा आवी गयु छे एटले अही जुदु उतारतो नथी.

उपेन्द्रवज्रा. लगा लगागा ललगा लगागा ११

दृष्टान्त. अगाद छो तोय गती करो छो,
धरो नथी तोय करे ग्रहो छो,
अचक्षु छो तोय तमे जुओ छो,
अकर्ण छो तोय तमे सुणो छो

'ईश्वर प्रार्थनामाळा'

आ बन्नेनी पंक्तिओना मिश्रणथी उपजाति छन्द बने छे उपरना बेनी अपेक्षाए आ छन्द ज वधारे व्यापक रीते संस्कृत तेम ज गुजराती साहित्यमा वपरायो छे ते साथे नोंधवु जोईए के गुजरातीमा उपजातिमा आ बे उपरांत बीजा घणा छन्दोना मिश्रणो करवामा आवे छे, जेनी आपणे आगळ चर्चा करीशु दृष्टान्त —

आयुष्यना ऊंबरमा उभेलो
जुवान झखे क्षितिजो वळोटी, ·
ने पेखि ले प्राण प्रयाणघलो
भविष्यनी कूच तणी रजोटी

'मोखरे', गगोत्री

आमा १ ली अने ३ जी इन्द्रवज्रानी छ, २ जी अने ४ थी उपेन्द्रवज्रानी छ आ बे छन्दनी पंक्तिओ अमुक क्रममा ज आववी जोईए के सरखी सख्यानी ज आववी जोईए एवो कोई नियम नथी गमे तेटली ओछीवत्ती आवे, गमे ते क्रममां आवे अने आमा एकी पंक्तिओनो अने बकीनो प्रास मेळव्यो छ ते पण शोभा अर्थे मेळव्यो छ, छन्दने ए आवश्यक नथी वृत्तोमा कोई प्रकारनो प्रास आवश्यक होतो नथी गुजरातीमा प्रारंभमा कविओ वृत्तोमा पण प्रास मेळवता, पण थोडा ज समयमा तेनो त्याग थयो छे, अने अत्यारे कोई नियम तरीके प्रास राखता नथी, शोभा तरीके राखे ते जुदो प्रश्न छे

इन्द्रवंशा गागालगागा ललगा लगालगा १२
वंशस्थ लगा लगागा ललगा लगालगा १२

आ बन्नेमा, उपर आवी गयेला इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रामा उपान्त्य स्थाने एक लघु वधारे छ पण तेथी तेना संधिओना विभागो फरी गया छ आने दृष्टान्तोनी जरूर मानतो नथी हलायुध आना मिश्रणना उपजाति स्वीकारे छे गुजरातीमा त्रिष्टुभना उपजाति साथे आ जगतीना उपजातिनु पण मिश्रण थाय छ दृष्टान्त —

हती गढी पारतणी ज टोचे
चोपास नागा नग ऊपरे पणी;
गया हठी शत्रु, पडी ज गाढ,
दिवाल ठेवी निवळयो गढीधणी.

'शेरदोरो', भणकार, पृ. २२७

अही पहेली अने त्रीजी उपेन्द्रवज्रानी छे बीजी इन्द्रवंशानी अने चोथी वंशस्थनी छे.

आ पछी वसन्ततिलका लईए· तेनो रूपात्मक न्यास :—

वसततिलका : गागालगा ललगा ललगा लगागा १४

पहेला दृष्टान्त आवो गयु छे छता एक बीजु लईए·

छे एक जो! गभळ निर्बळनो ज पाता,
व्हाली! हवे स्थिर थई धर्य चित्त दाता —
जो! देखु आ असि प्हणे चमके अनन्त,
ने चित्त आ चमकिने वन्यु वेगवन्त

· 'उत्तरा अने अभिमन्यु' हृदयवीणा, पृ. ७३

आवृत्तना लक्षणामा घणाखरा सस्कृत पिंगळा यतिनो उल्लेख करता नथी पण 'श्रुतबोध' आठमे अक्षरे यति कहे छे भाग कालिदासे आ यति मानी नथी गुजराती कविओए पण पाळी नथी उपरना दृष्टान्तमा ज प्रथम चरणमा आठमे अक्षरे शब्द पूरो थतो नथी दलपतरामे पण आ यतिनो निर्देश करेलो नथी एटले सर्व रीते आ वृत्त अयतिक वृत्तोमा पडे छे

आ पछी हु चपला लउ छु ए वपराशमा भाग्य ज आवे छे पण दलपतराम आपे छे माटे लउ छु अने आपणने एक दृष्टान्त तरीके ए आगळ काममा आवशे

चपला . गागालगा ललगा लगा ११

दृष्टान्त तें भाजि लागविज हाथ लई,
वा खाधि खूब चपळा ज थई,
ते ठाममा न धरि तें ठरवा
पस्ताव छोड पछियी करवा

द पि अक्षरमेळ छद ४९, पृ ४१

आ पछी हु रथोद्धता लउ छुं.

रथोद्धता : गालगा ललगा लगालगा ११

कालिदासे रघुकुमारना केटलाक सर्गोमा आ छन्दनो व्यापक रीते उपयोग कर्यो छे. अर्वाचीन युगमा कविओए आ बहु वापर्यो नथी. जोके मध्यकालीन युगमां कविओए एनो प्रयोग ठीकठीक कर्यो छे (वृत्तरचना, पृ. ५५) कान्ते अप्रसिद्ध राखेला पूर्व काव्योमाथी एक दृष्टान्त नीचे उतारु छु :

राज्ज ए झटपथी थई रही,
नीकळ्या सुखदता भने चही,
मद मद प्रिय साथ जाउ छु,
वाटमां सरस कांइ गाउ छु.

'मृष्टिमौदर्यथी मन उपर थती असर', पूर्वालाप

आधुनिक समयमा पाछो आ वपरावा माडयो छे आ पछी आने मळतो स्वागता लईए.

स्वागता : गालगा ललगा ललगागा ११

आ पण रथोद्धतानी पेठे मध्यकालीन गुजरातीमा वपरायो छे. (वृत्तरचना, पृ. ५५) आनु दृष्टान्त पण कान्तना पूर्व काव्योमाथी लउ छु :

वार तो बहु गई न हती ज्यां
ए प्रदेश थकि मुक्त थया त्या.
अवकार टळता अजवाळु,
ए सुशोभित बहू ज निहाळु.

एजन

अने मध्यकालीन साहित्यमा रथोद्धता-स्वागतानो उपजाति पण थयो छे :

देवि द्रूपदिय राडि साभली,
हाथि लेइ हथियार आविली,
भीमु भीर इम कीचक कूटइ
तेह आगलि न कोइ विछूटइ

वृत्तरचना, पृ. १३

पहेली बे पक्तिओ रथोद्धतानी छे बीजी बे स्वागतानी छे अही प्रासमा आवतो 'टइ' सयुक्तस्वरनो होई तेने एक गुरु गणवानो छे

आ पछी हु मजुभाषिणी लउ छु तेना दृष्टान्त तरीके दलपतरामनो लक्षणछद ज उतारु छु .

मंजुभाषिणी: ललगा लगा लललगा लगालगा १३

सज साज गोखि गुणनो गुवासिनी,
वळि था भली ज विध मंजुभाषिणी;
जश तो जरूर जग मध्य जामशे,
परिपूर्ण सुख पण तो तुं पामशे.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ७५, पृ. ४९

आ छन्द गुजरातीमां बहु वपरायो नथी, जोके सुन्दर छे. माघे 'शिशुपालवध'ना तेरमा सर्गमां आनो व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. हुं के. ह. ध्रुवना चित्रदर्शनना भाषान्तरमांथी एक दृष्टान्त नीचे उतारुं छुं:

उर जाणु आज धरते सुलग्न ते,
जव गीतमे घटित युक्त कंकणे,
तव पाणि उत्सव समान पामिने,
प्रमदे! प्रमोद प्रसर्यो रुंवे रुंवे.

सा. वि. भा. १, पृ. ३४

आ पछी कलहंस. ते पण गुजरातीमा वपरायो नथी:—

कलहंस: ललगा लगा लललगा ललगागा १३

सजशे समाधि शुभ स्नेह रहीने
कलहंस कंठ करि वाणि कहीने;
सुख साज आज धरि लाज वधारे,
शुभ काज ते ज जन सर्व सुधारे.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ७७, पृ. ४९

आनु मूळ नाम कुटज छे. माघे 'शिशुपालवध'मा ते पहेली वार वापर्यो अने तेमां कुटज शब्द आवे छे तेथी ए नवा छंदनु नाम 'कुटज' पड्यु. पटवर्धन नोंध करे छे के ए श्लोकमा 'भ्रमर' शब्द पण आवे छे तेथी ए छंदने कोई भ्रमर पण कहे छे. ('छन्दोरचना' पृ. १०१) तेनुं मुक्त समश्लोकी भाषान्तर नीचे मूकुं छुः

वनमा प्रमत्त भ्रमरो कुटजोमां
निरखी, वळी गगनमा जलभारे
लळता घनो, शिखरिनी सहुपाथी
टहुकी रहे मयुर गीत लहेके.

आ पछी प्रमिताक्षरा लउं छु.

प्रमिताक्षरा : ललगा लगा लललगा ललगा १२

दाठ धू मरे तु तरुणी तरणी,
धरणी विचार, मलनी भरणी;
मनुष्यावतार परनी करणी,
हरिमति मुक्तिपदनी सरणी.

वृत्तरचना, पृ. ५५

अर्वाचीन साहित्यमा बहु वपरायो नथी पण छन्द सुन्दर छे, अने माघे आखो नवमो सर्ग आ छन्दमा लख्यो छे.

आ पछी चन्द्रवर्त्म लईए

चन्द्रवर्त्म : गालगा ललगा ललललगा १२

आ छन्द सस्कृत साहित्यमा पण वपरायेलो जोयानु स्मरण नथी. दलपतरामे लीधो छे तेथी, अने आ ज बुट्टननो होवाथी अही आपु छु. तेनु दृष्टान्त दलपतराममाथी लउ छु:

रान भारवि भयानक सरगु,
चन्द्रवर्त्म नजरे नहि निरखु,
झाडझुड झुकिया बहु झरणा,
हाथि वाघ वरु ने वळि हरणा.

द. पि, अक्षरमेळ छद ६०, पृ. ४३

अने प्रियवदा

प्रियवदा : ललगा ललगा लगालगा १२

न भजरे प्रभुजि वेम तू कदा,
परम मित्र प्रभु छे प्रियवदा,
सरस शाति प्रभुथी पमाय छे,
प्रभु विना दुख खरा समाय छ

द पि, अक्षरमेळ छद ६७ पृ. ४७

आ पण सस्कृत के गुजराती साहित्यमा बहु वपरायेलो जोयो नथी. 'राईना पर्वत'माथी एक दृष्टान्त मळी आवे छे

प्रणयना मधुर रगनी पिछी
हृदयना पटपरे फरति ज्यां,

सळगनो प्रबळ अग्नि कष्टनो
निकट ए पट पुठे अदृष्ट त्यां
'राईनो पर्वत' अंक ७, प्रवेश १, पृ. १३२.

आ पछी द्रुतविलंबित लईए :

द्रुतविलंबित ललगा ललगा ललगा लगा १२

यहि जता झरणां श्रमने हरे,
निरखतां रचना नयनो ठरे,
मधुर शब्द विहंग घणां करे,
रसिकनां हृदयो रसथी भरे.
'वसन्तविजय', पूर्वालाप

आ सधिओमा ललगा अक्षरोना आवर्तनो थाय छे तेथी कविओ यमक-चमत्कृति लाववा आ छन्दनो पुष्कळ उपयोग करे छे गुजरातीमा तेवो एक दाखलो पडित गट्टुलालना श्लोकनो नीचे उतारं छु:

नवि मरी धकरी मति ह्यामा
अमर हेम रहे नहि सायमा
नर सदा रसदायक देवने
निरख मूरत मूरति सेवने
सुभाषित रत्नभाडागार (गुजराती भाषातर साथे)
पृ. ५९७

हवे हु अर्धसमवृत्तो लउ छु, अलबत अही लीधेला आ वृत्तो लगात्मक ज छे, अने तेथी तेमने विशे एटलु कहेवानी जरूर छे के ते बधा मूळ मात्रा-गर्भ छन्दो छ अने तेमनो मात्राखड सस्कृत साहित्यकारोने हाथे स्थिरलगत्व पामवाथी ते सपूर्ण लगात्मक वृत्तो बन्या छे, एटले एने हु अही स्थान आपु छु दलपतरामे आवा बे छन्दो आपेल छे तेमा पहेलाने वैतालीय कहेल छे पण ए नाम भ्रामक छ, कारण के एक अर्थमा ते मात्रागर्भ छन्दोना आखा वर्गनु वाचक छे आ वर्गमा ब अवान्तर वर्गो आवे छे (१) वैतालीय (विशेष अर्थमा), (२) औपच्छन्दसिक बन्नेना अनुक्रमे दाखला लईए पहेलामा प्रथम वियोगिनी के सुन्दरी (जने दलपतरामे वैतालीय कहेल छे)

वियोगिनी के सुदरी ललगा ललगा लगालगा १०
ललगागा ललगा लगालगा ११

गगने घुमराइ वादळी
विरहीनां हृदया दर्द दळी;
रहि हा महि रेलि वृष्टिए!
न पडे पंथि रवीदु दृष्टिए.

'छायाघटकर्पर', सा. वि. १, पृ. १०

आ छन्दमा द्रुतविलंबितनी पेठे ललगानां आवर्तनो छे अने तेथी आ छंद पण यमकरचनाने अनुकूळ छे. जेम के:

वरखा भार वावरी गर्ने,
सुखियारो सुखिया भजूं तने;
वणसे वगसेवना थकी
नरधारी नरधारणा नवी.

'द. पि.', पृ. ६६

आ ज पेटावर्गनो बीजो छंद अपरवक्त्र:

ललललललगा लगालगा ११
लललगा ललगा लगालगा १२
मनवि उपरला ज मीठडां
वणरस जे करिये मनामणां,
न चतुर उर ते हरी शके;
ज्यम मणि कृत्रिम रागना, राखे!

'पराक्रमनी प्रसादी' २–२१ (१९१८)

आ बन्ने वैतालीय पेटावर्गना लगात्मक रूपो थया. हवे वैतालीयना बीजा प्रकार औपच्छन्दसिकना लगात्मक रूपो जोईए:

माल्यभारा अथवा माल्यभारिणी : ललगा ललगा लगा लगागा ११
ललगागा ललगा लगा लगागा १२

जळ दड्दड आभथी दडूडे,
भरवेगे गिरिगह्वरे हडूडे;
घडुडे घन; वीजळी डबूके,
अहि ते जोइ डरे दरे डबूके.

'छायाघटकर्पर', सा. वि. १, ११

पुष्पिताग्रा : ललललललगा लगा लगागा १२
ललललगा ललगा लगा लगागा १३

प्रमुदित पदो सुणी रहे ए,
अनुभवो मद भाव ए नवीन;
अविदित गतिथी मरे य देवी
अरव पणा नविए रहे निहाळी.

'दर्शन', स्मृति

आ बन्ने छन्दो, वैतालीयना औपच्छन्दसिक विभागो छे, पण ए नामे पण ए बन्नेनु एक लगात्मक रूप बनेलु छे आपणे ते जोईए.

औपच्छन्दसिक : ललललललगा लगा लगागा १२
ललगागा ललगा लगा लगागा १२

जळ झरमर मेहुलो झरता,
रसमां मग्न पवन पागरंता;
नवल अवल फूलनी कळी ए
निरखता खटके कुळी कुळी ए

'छायाघटकपंड', सा वि १, पृ. १५

जरा ज पृथक्करणथी जणाशे के अहीं पहेली पंक्ति पुष्पिताग्रानी छे अने बीजी माल्यभारानी बीजी छे वळी पुष्पिताग्राने पण कोई औपच्छन्दसिक कहे छे (वृ र, चौ ४, ११, पृ ११२)

मध्ययति विनाना लांबा वृत्तो बहु थोडा छे तेमाथी हु प्रथम पृथ्वी लईश न्यास —

पृथ्वी : लगा लललगा लगा लललगा लगा गालगा १७

दृष्टान्त विहग, उड ! जो लसे अखुट व्योम आशाभर्यो !
चहे नयन जे दिशा नभ नवीन ते दाखवे.
चहे हृदय रग जे सुरखमान ते खीलवे :
विहग उड ऊड रे ! उडण धन्य हो ताहरा

'उड्डयनोन्मुख नौजुवानने', भणकार पृ १५३

पिंगलनु 'छन्द शास्त्र', 'वृत्तरत्नाकर', 'छन्दोमजरी' वगेरे सर्व सस्कृत पिंगलो आ वृत्तमा आठमे अक्षरे यति माने छे के ह ध्रुव कहे छे तेम "प्राचीन

साहित्यमां महाकवि कालिदास, भवभूति आदिए ते स्वीकारी नथी."[५] ('सत्यवाद अने पक्षवाद,' सा. वि भा. १., पृ. ११५-६) एटले आनुं स्थान अयतिक वृत्तोमां ज छे.

आ पछी हुं नर्दटक लउं छुं. तेनो न्यास —

नर्दटक : ललललगा लगा ललगा लगा ललगा　　१७

दृष्टान्त :　　अगणित वर्ष ने युग अनेक व्यतीत थया
　　　　　　नरतर मन्त्रथी बधिर केवळ कर्ण बन्या;
　　　　　　नहि बलिदाननो पळ पळे पण पार रह्यो,
　　　　　　कलुषित भस्मथी अखिल कुंड भराइ गयो
　　　　　　　　　　　　'नरमेघ', स्रोतस्विनी

आ वृत्त गुजरातीमां नही जेवुं ज वपरायुं छे. बोटादकर सिवाय कोईए वापर्यानुं मने स्मरण नथी. भागवतमां आवती वेदस्तुति आ वृत्तमां छे अने तेथी ते पुराणीओने प्रिय छे आने पिंगले अवितथ कह्युं छे (छ. शा. नि. ८, १४) अने अयतिक गण्युं छे, त्यारे 'वृत्तरत्नाकर' अवितथमां दशमे मध्ययति मूके छे (वृ र चौं, पृ १२५) अने सातमे यति मूकी तेने नर्कुटक कहे छे (एजन, पृ ९८) आम अवितथ संबंधी पिंगलोमां मतभेद होवाथी हुं ए नाम नथी स्वीकारतो वळी ए नाम गुजरातीमां कदी वपरायुं नथी गुजरातीमां बे नामो कईक परिचित छे बोटादकरे उपरना काव्य उपर वृत्तनुं नाम नर्दटक अथवा नरकूटक कहेलुं छे पण नरकूटकमां 'वृत्तरत्नाकर' यति मूके छे, एटले ए नाम न स्वीकारतां हुं बीजुं नर्दटक स्वीकारुं छुं, जेने 'छन्दोमंजरी' अयतिक गणे छे (छ म क. द्वितीय स्तबक, अत्यष्टिमां वृत्त ६, पृ १२८). बहु ओछुं वपरायेलुं होवा छतां लेवानुं कारण ए बे अयतिक लांबा वृत्तोनी चर्चामां ए उपयोगी छे

हवे हुं सयतिक वृत्तो लउं छुं तेमां शालिनी गोत्र सौथी मोटुं छे ते प्रथम लउं छुं अयतिक वृत्तोमां प्रथम आवतुं इन्द्रवज्रा जेम त्रिष्टुभ एटले अगियार अक्षरनुं छे तेम आ शालिनी पण अगियार अक्षरनुं छे, अने

---

५ भर्तृहरिशतकना प्रसिद्ध नीचेना श्लोकमां पण आठमे अक्षरे यति नथी.

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दित ।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादये-
न्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

उपनिषदोमा पुष्कळ वपरायेलु छे. आगळ अही गया प्रमाणे मध्ययतिनु स्थान बतावया हुं दंड मूकीश.

शालिनी : गागागागा। गालगा गालगागा ११

मृत्यु आजे आव बेसी घडीक
के दहाडानी वात पूरी करीए;
तारेमारे नाहि सबध जूज,
जे भाखो तो मेळव्यो तें ज भाई !

'मृत्युने', निशीथ

अही चोथे अक्षरे यति आवे छे. अने ए यतिथी वृत्तना बे खडो पडे छे, जेने आपणे यतिखडो कहीशु. अही पहेलो यतिखड चार अक्षरनो छे, बीजो सातनो. आ दृष्टिए अयतिक वृत्तने आपणे अखड अने समयतिकने सखंड कही शकीए.

शालिनी पछी आपणे वैश्वदेवी लईए :

वैश्वदेवी : गागागागागा। गालगा गालगागा १२

दृष्टान्त. ए ते सपातीपुत्र शू वामनो छे?
के अश्वत्थामा कुंति ने रामनो छे?
के शु रावानो रावणी शौर्यसेतु?
पडे पाडूनो के शु छे श्वेतकेतु?

'मृच्छकटिक'नो अनुवाद सा वि भा १, पृ. ५४

अही तरत समजाशे हशे के शालिनीना पहेला खडमा एक गुरु मळवाथी वैश्वदेवी वृत्त थयु छे

ए गोत्रनु हवे जरा लाबु—सत्तर अक्षरनु बीजु वृत्त लउ.

मदाक्रान्ता गागागागा । लललललगा । गालगा गालगागा १७

दृष्टान्त· छूपी ऊचे घनपड मही तारला व्योमअके
निद्रा मीठी गिरि नदि अने विश्व आखूय ले छे,
ने रूपेरी श्रमित दिसती वीजळी एक स्थाने,
सूती सूती हसति मधुरू स्वप्न माही दिसे छे

'बिल्वमगल' केकारव, पृ. ५५

आमा बे मध्ययतिओ छे आने शालिनी साथे सरखाववाथी बन्नेना समान सधिओ एक ज पठनथी छता थई जशे ए गोत्रनु बीजु वृत्त स्रग्धरा :

स्रग्धरा : गागागागा लगागा। लललललगा। गालगा गालगागा २१

धू ध्धू धू धू धुधवती ! गहनगिरि, गुफा, भानने भाजि ऊठे !
फाडोए ब्रा'ड तोडी गगन घुमि जती, शाभना गात्र छूटे !
ऊभी छे पिंगळा शी पटघटित सटा ! पुच्छ तू वीज वींझे ;
स्वारी ए केसरीनी ! त्रिभुवनजयिनी भव्यता गर्वि रीझे !
'विकराळ वीर केसरी', प्रवास पुष्पांजलि पृ. ४२

आमां पण ये गजगतिओ छे. आ पछी हुं मालिनी लउं छुं.

मालिनी : ललललललगागा। गालगा गालगागा १५

दृष्टान्त : सरस सरळ वाक्ये, चोरती चित्त प्यारी,
चरण गुरुचरणोथी संगुणी कान्ति धारी;
गुणगणपति गुरुना, मूर्तिमान प्राणी,
नव त्रिप? नहि, भाळी कान्तनी शान्त वाणी!
'साभरगप्तव.', नथुराम सुन्दरजी

वानी पछी हरिणी लईए:

हरिणी : लललललगा। गागागागा। लगा ललगा लगा १७

दृष्टान्त : हृदयवनना मीठाबोला मुसाफर हंसला!
विपुल जलना वासी! भोळा! न मानस होय आ!
श्रमित दिसतो रहोवे जा जा जहीं तुज स्थान छे!
उजड वनमां थानो, आपू! क्यांय विराम छे?
'नूतन सखा प्रति', येकारव, पृ. २९२

आ पछी हुं सुवदना लउं छुं. गुजरातीमां ते बहु वपरायो नथी. तेनुं दृष्टान्त के. ह. ध्रुवना 'मुद्राराक्षस'ना समश्लोकी अनुवादमांथी लउं छुं.

सुवदना : गागागागा लगागा। लललललगा। गागा ललगा २०

दृष्टान्त : गर्जंता, भेंगडोने बळ करि दळता, काळा तन छता,
सिंदूरे शोण, प्रौढा मुज गज मदनूं वारी वहवता;
प्रौढो जे शोण नामे नद, पण वनथी काळो, तट वळे,
मोडे ने नीर रेले गरजि, पि ज जशे तेनूं राहु जळे.
'मुद्राराक्षस', ४, १६ के. ह. ध्रुव

अहीं शालिनी गोत्र पूरुं थाय छे. ए पछी एक नानुं गोत्र लउं छुं. प्रहर्षिणी अने रुचिरानुं. प्रथम प्रहर्षिणीनो न्यास आपुं छुं.

प्रहर्षिणी : गागागा। ललललगा लगा लगागा १३

दृष्टान्त : क्रोधाग्नी तणि निज झाळ मध्य जेणे
नदोरे झउपि प्रनाळिया नवेने
ते चद्रग्रहणनि गाय हेरि हावे
घेरावो नरपति चद्र क्षवि थावे

'मुद्राराक्षस', प्रस्तावना, ७ बे. ह. ध्रुव

गुजरातीमा आ वृत्त बहु नथी वपरायु, पण सस्कृत महाकाव्योमा ए घणु प्रचलित छे अने सुन्दर पण छे. आ पछी रुचिरा.[६]

रुचिरा : लगालगा। ललललगा लगालगा १३

दृष्टान्त : गजेन्द्र या मदभर मणिमुख्य वे
महीतळे बळ अतुळे पढी मरे,
तही ढिल्ली करिणि शि राजलक्ष्मि ते
अनिश्चये अति अटवाय छे त्यारे!

एजन, २, ४

---

६ 'भरतनाट्यशास्त्र'मा आ वृत्तने प्रभावती कहेल छे (भ ना. चौ. १६, ५८ पृ. १८६)

के ह ध्रुवे 'दलपतपिंगळ'नी २२ मी आवृत्ति सुधारी त्यारे दलपतरामना मूळ प्रभावती नीचे नीचे प्रमाणे टिप्पण मूक्यु "प्रभावनीमा चोथा अक्षर पछी यति छे सस्कृत ग्रथो प्रमाणे रुचिरा किंवा प्रभावतीनु लक्षण नीचे मुजब छे

जिमे सजी गृह जगमा बढावती,
प्रभाव तु, श्रुति रुचिरा प्रभावती,
सदैव हु भजु तुजने ज, भारती,
रखे मने वविजननी! विसारती"

द पिं अक्षरमेळ छद ७९. पृ. ५०

अही स्पष्ट रीते रुचिरा अने प्रभावती एक छ, अने तेनु लक्षण उपर आप्या प्रमाणे छे एवो ध्रुवनो अभिप्राय छे आ आवृत्ति १९२२ नी छे एटले आने ज हु, तेमनो छेवटनो अभिप्राय गणु छु ते पहेलाना १९०८ना 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमा तेमणे प्रभावतीनु दलपतरामे आपेलु स्वरूप स्वीकार्यु हतु (सा वि २, २७५) ते नीचे प्रमाणे हतु

तू भासि ज, गुण गणना शिखावती,
स्नेही सदा, मुज पण तु प्रभावती,

आ पछी हु शिखरिणी लउ छु, जे सस्कृत गुजराती बन्ने साहित्यमा पुष्कळ वपरायो छे एने बीजा कोई प्रचलित छन्दो साथे बुट्टबसबध जणातो नथी

शिखरिणी : लगा गागागागा। ललललललगागा ललगा १७

दृष्टान्त : क्वचिद् रगे घेरे सरवर लहेरे ठमक्ती,
क्वचित् ज्योत्स्नामाही स्वरणमयि कान्ती झमकती,
क्वचित् प्राचीमांही शिरमणि धरीने रिझवती;
क्वचिद् अधारामा प्रणतलय खेले खिजवती.
'क्लांत कवि', क्लान्त कवि

आ पछी प्रसिद्ध शार्दूलविक्रीडित लईए

शार्दूलविक्रीडित : गागागा ललगा लगा लललगा। गागालगा गालगा १९

दृष्टान्त : आवे शान्त समे शि खळ्खळ वही, झर्णो, नदीओ, ळळी —
सगीत-ध्वनि विस्तरे! अनिलनी रहेरो विलासे ढळी!
तारामडळ साथ रास रचिने बाळा तरगोज्ज्वळा
शी आदर्शसमे सरोवर-जळे नाचे शशीनो वळा! ?
'रात्रिवर्णन अने मधुरावाशदर्शन', कुजविहार

आ वृत्तोने केवळ उपलक नजरे जोता पण केटलाक सामान्य विचारो आवे छे अयतिक अने सयतिक बन्ने प्रकारना वृत्तोमा प्राचीनतम त्रिष्टुभ अगियार अक्षरनो नीक्ळे छे, अने ए मूळभृत वृत्तना गोत्रो ज सौथी वधारे विस्तरे छ अयतिक वृत्तोमा लाबामा लाबु पृथ्वी अने नर्दटक सत्तर अक्षरनु छे॰ सयतिकमा लाबामा लाबु स्रग्धरा एकवीस अक्षरनु छे तेनाथी टूकु सुवदना २० नु, शार्दूलविक्रीडित १९ नु अने मदाक्रान्ता अने शिखरिणी १७ नु छे अयतिकमा अगियार अने बार अक्षरना अने चौद अक्षरनु वसन्ततिलका एमना

तारो ज छू, जन भगवति भारती,
देवी रखे, दिल मुजने विसारती
द पि, अक्षरमेळ छद ७९

आनो न्यास, गागालगा। ललललगा लगालगा (१३) आ प्रमाणे थाय रुचिरा साथे सरखावता तेना फर मात्र एटलो ज छ के रुचिराना पहेला लघुनी जगाए आमा पहेलो गुरु छे सस्कृत साहित्यमा आ छन्द सारी रीते वपरायो हु जाणतो नथी तेथी आपणा मुख्य छन्दोमा तेने स्थान आपतो नथी.

वपराश सौथी वधारे छे, पृथ्वीनो हमणा च वध्यो छे; सयतिकमा सतर अक्षरना मदाक्रान्ता शिखरिणीनो वपराश सौथी वधारे छे, अने तेथी ऊतरतो ओगणीस अक्षरना शार्दूलविक्रीडितनो, अने एकवीस अक्षरना स्रग्धरानो. सुवदना बहु ओछु वपराय छे यतिखडोमा टूकामा टूको पूर्व यतिखड प्रहर्षिणीनो त्रण गुरुनो छे, लाबामा लाबो शार्दूलविक्रीडितनो बार अक्षरनो छे प्रारभमा ज यतिना विराम पहेला एटली लाबी फाळ भरवी पडे छे माटे कदाच तेने शार्दूलविक्रीडित—सिहनी फाळ—कहेल हशे[*] मालिनीनो आठ अक्षरनो, ते पछी तेथी टूको स्रग्धरानो सात अक्षरनो, तेथी टूको शिखरिणीनो छनो, वैश्वदेवीनो पाचनो, मदाक्रान्ता – शालिनीनो चारनो अत्य यतिखड शार्दूलविक्रीडितनो सातनो, शालिनी कुटुबनो सातनो पण सौथी लाबो शिखरिणीनो अगियार अक्षरनो आ केटलीक सामान्य हकीकत छे, जोके ते पण मवाद समजवामा कईक उपयोगी थाय छे एम आपणे आगळ जोईशु

परिशिष्ट १

संस्कृत पिंगलोमां यतिचर्चा

वृत्तो एटले अगावृत्तसधिवृत्तो लगभग बधा ज सस्कृत साहित्यमा खेडाया छ अर्वाचीन युगमा आपणे नवेसरथी तेनु खेडाण माटयु छ, जने हु बहु आशाजनक मानु छु पण एटला माट ज आपणे सस्कृत साहित्य-कालमा ज खडाण थयु तेनो निचोड काढी लेवो जोईए

सस्कृत वृत्तोना स्वरूपनो लगभग बधो ज ख्याल आपणने तेनी यति-चर्चामा मळे छे ए यतिचर्चा आपण बराबर समजी शकीए माट सस्कृत भाषानी एक प्रसिद्ध खासियत, ए सर्वविदित होवा छता, अही जोई जवानी जरूर छे ते खासियत ते सस्कृतमा नजीक आवता स्वरव्यजननी सधि थाय छ ते छ आ स्वरव्यजननु नजीकपणु एटले बे सधि थवा माटेनी तेमनी

---

७ छन्दशास्त्र' (निर्णयसागर प्रम, सने १९३८) नी प्रस्तावनामा लेखक पृ ७ म वृत्तोना नामोनी सार्थता विचारता कहे छे के 'व्याघ्रस्य प्लुतिर्द्वादशहस्तेति प्रसिद्धेर्द्वादशाक्षरेषु यतिमच्छार्दूलविक्रीडितम् । वाघनी (सिंहनी कहेवी जोईए) फाळ बार हाथनी होय छ तेथी बार अक्षरे यति-वाळा छदने शार्दूलविक्रीडित कह्यो

सनिधि, एने माटे पारिभाषिक शब्द संहिता छे संहिता क्या अवश्य थाय, क्या विकल्पे थाय, ते सबंधी प्रसिद्ध नियम नीचे प्रमाणे छे:

संहितैकपदे नित्या नित्याधातूपसर्गयो ।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

आनो भावार्थ ए छे के एक ज शब्दनो अदर पासे पासे आवता वर्णोनी सधि आवश्यक छे धातु अने उपसर्गनी सधि आवश्यक छे एक ज समासमा आवता शब्दोनी सधि आवश्यक छे पण वाक्यमा पासे पासे आवता शब्दोनी सधि बोलनारनी इच्छा उपर आधार राखे छे, वैकल्पिक छे वाक्यमा आवता शब्दो एम कहेवु एनो अर्थ साथे साथे ए थयो के वाक्यनी बहार, वाक्यो वाक्यो वच्चे सधि होई शके नही सस्कृत साहित्यलेखनमा अग्रेजी लेखनपद्धति जेवा अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्णविरामना चिह्नो नथी पण सस्कृतलेखनमा वाक्य पूरू थये दड मुकाय छे, अने ए दड बहार सधि थई शकती नथी आ नियमोने बदले काव्यशास्त्र पोतानो नवो ज नियम मूके छे तेमा प्रथम नोंधवा जेवु ए छे के वाक्यमा आवता शब्दोनी सधिनो विकल्प काव्यशास्त्रने लागु पडतो नथी गद्यमा आपणे कही शकीए के "न असत विद्यते भाव । न अभाव विद्यते सत ।" पण पद्यमा तो ए सधि करीने ज बोलवु पडे छे "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत ।" अही एक वाक्यनी अदर आवता शब्दोमा तो सधि थई ज छे, पण बे वाक्योमा पण पासे पासे आवता शब्दोमा सधि थई छे आ नियम कविओ चुस्तपणे पाळे छे, अने तेथी पद्यपक्तिमा श्लेष सधाय छे एम काव्यशास्त्रकारो कहे छे श्लेष एटले पक्तिमा आवता शब्दोनो दृढ बध, घन वणाट जेम कपडामा जुदा जुदा दोरा देखाय ते वणाटना दोष छ, तेम पद्यपक्तिमा शब्दो छूटा वेरायेला देखाय ते दोष छ आ नियमनो आग्रह एटले सुधी जाय छे के सस्कृत सधिनियम प्रमाणे ज अमुक स्थाने पासे पासे आवेला स्वरोनी सधि नथी थई शकती, —एटले के ए सधि तो पद्यमा पण न थई शके —एवा प्रसगो पण पद्यनी एक पक्तिमा एकसाथे बे न आववा जोईए दाखला तरीके

मानेर्प्ये इह शीर्यंते स्त्रीणा हिमऋतौ प्रिये ।
आसु रात्रिष्विति प्राज्ञैराम्नात व्यस्तमीदृश ॥

वा द भा ३, १६१

अही 'मानेर्प्ये' अने 'इह' ए बे शब्दोमा स्वरो पासे पासे आव्या छे छता त्या सधि नथी थई शकती, अने तेथी अही पण नथी थई एमा दोष नथी. पण एवा बे बे वधारे स्थानो आवे —जेम के

पण एवा बे के वधारे स्थानो आवे — जेम के

कमले इव लोचने इमे अनुबध्नाति विलासपद्धति
का द भा ३, १५९ उपरनी टीका.

आमा 'कमले' अने 'इव', 'लोचने' अने 'इमे', 'इमे' अने 'अनु'० एम त्रण स्थान संधि विनाना आवे छ, तो तेने दोष गणे छे पवितमा श्लेषने माटे संस्कृत कविओने केटलो बधो आग्रह छे ते आ उपरथी जोई शकाशे

संस्कृत काव्यशास्त्रमा जेम संधिनी आवश्यकतानो नियम छे तेम तेमा संधिना निषेधनो पण नियम छे आ सबधी चर्चा यतिने अगे करवामा आवे छे ते हवे आपणे लईए नीचेना श्लोको 'छन्द शास्त्र'ना भाष्यमा हलायुध टाके छे ए ज श्लोको 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामा नारायण उतारे छ अने ए ज हेमचन्द्र 'छन्दोनुशासन'मा उतारे छ हलायुधने आपणे लगभग प्रथम टीकाकार गणीए तो आ श्लोक एनी पण घणा समय पूर्वेना गणवा जोईए ए एने 'उपदेशोपनिषद्' कहो, प्राचीन समयथी चाल्या आवता तरीके उतारे छ

यति सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषत ।
समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ॥

चरणने अंते सर्वत्र यति आवे छे. श्लोकार्धे विशेष करीने आवे छे. अने समुद्र' वगेरे शब्दोथी अक्षरसख्या कही होय त्या आवे छे अने त्या ए शब्द

१ सूत्रोमा मध्ययति, समुद्र वगेरे सख्यावाचक शब्दोथी बताववामा आवे छे जेम के "शालिनी म्तौ त्गौ ग् समुद्रऋषय।" (छ शा ६, १९) अही समुद्र एटले चार (समुद्रो चार मनाय छे माटे) अक्षरे यति अने पछी ऋषि एटले सात अक्षरे यति एवो अर्थ छे आ सकेतशब्दो प्राचीन कालथी चाल्या आवे छे एटले संस्कृत पिंगलो ते आपता नथी 'वृत्तरत्नाकर'ना टीकाकारो थोडा नीचे प्रमाणे आपे छे वेद, अब्धि ४, भूत ५, रस ६, ऋषि, स्वर ७, वसु ८, ग्रह ९, दिशा १०, रुद्र ११, आदित्य १२, वगेरे. दलपतराम आ विशे नीचेना श्लोको आपे छे,

अकसज्ञा
(शिखरिणी)

शशी भूमी एके, भुज नयन बे युग्म ज भणो,
वळी वह्नी नाडी, भुवन गुण ते तो त्रण गणो,
रहो वेदो मुक्ती, जुग चरण ते चार सजनो,
शरो भूतो पाचे, खट ज ऋतु चक्रो दरशनो. १०

विभक्तिवाळो होय के (समासमा आवी जवाथी) विभक्ति विनानो होय, पण ते पूरो थवो जोईए एवो आनो अर्थ छे. एनु उदाहरण

(१) नमोस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥

आ अनुष्टुप छे. श्लोकार्ध दण्डथी बताव्यो छे, अने एकी चरण अल्पविरामथी बतावेलु छे ते चार स्थाने विभक्तिप्रत्यय साथे शब्द पूरो थाय-छे. तेथी विरुद्धनो दाखलो :—

(२) नमस्तस्मै महादेवा,– य शशाकार्द्धधारिणे।

अही 'महादेवाय' ए शब्दनो विभक्तिप्रत्यय चरणान्तयतिथी जुदो पडी जाय छे, एटले यतिभंग थाय छे. अही चरणान्तयति पहेलाना शब्दो सविभक्तिक हता. नीचेना दृष्टान्तमा

(३) केनचिन्नवतमालकोमल–
श्यामलेन पुरुषेण नीयते ॥

पहेला चरणान्ते 'कोमल' शब्द पूरो थाय छे, ते समासमा आवेलो होवाथी तेने प्रत्यय लागेलो नथी, एटले के यति सचवाय छे

यति पादान्ते सर्वत्र होय छे, श्लोकार्धे विशेष करीने होय छे एम कह्युं एनो अर्थ ए थाय छे के श्लोकार्धे आवेला शब्दनी, तेनी पछी आवता शब्द साथे संधि न थई शके. अने संधि न थाय एटले श्लोकार्ध पछी समास पण आगळ सळंग न चाली शके जेम के

(भुजंगी छंद)
मुनी सिन्धु साते, वसू सिद्धि आठे,
नवे खंड भक्ती, दशे दीश पाठे.
कहो रुद्र एकादशे, भानु बारे.
पछी यक्ष छे, रत्न चौदे विचारे. ११
तिथी ते पछी, सोळ शृंगार जाणो,
पछी अक्षनी तो गती नाम आणो.
मुनी भूमि ते सत्तरे जेम मानो,
अढारे पुराणो कह्याथी पिछानो. १२

द. पिं. संख्याविचार

संस्कृत पिंगलोमा समुद्रनो अर्थ ४ छे, गुजराती पिंगलोमा ७ छे ते नोंधवा जेवु छे.

(४) नमस्यामि सदोद्भूत, मिन्धनीकृतमन्मथम्।
ईश्वरास्य पर ज्योति, रज्ञानतिमिरापहम्॥

अही पूर्वार्धमा 'उद्भूतम्' अने 'इन्धनी'नी सधि थई छे उत्तरार्धमा 'ज्योति' अने 'अज्ञान'नी सधि थई छे पण श्लोकार्धे आवता 'मन्मथम्'नी ते पछी आवता 'ईश्वर' शब्द साथे सधि थई नथी पण

(५) मन्दानिलेन चलता अगनागडमडले

वा द भा ३, १६०

अही 'चलता' अने 'अगना'नी सधि करवी जोईए, पण एम करवा जता बीजा चरणमा एक अक्षर खूटे एटले सधि थई शकती नथी श्लोकार्धे सुधी सधि आवश्यक छे पण अही थई नथी ए विसन्धि दोष छे श्लोकार्ध पछी सधि न जोईए तेम, समास पण न चालवो जोईए नीचे

(६) सुरासुरशिरोरत्नस्फुरत्किरणमजरी –
पिंजरीकृतपादाब्जद्वद्व वदामहे शिवम्॥

आ श्लोकमा श्लोकार्ध पछी समास आगळ चाले छे ते दोष छे आ ज नियमो यथायोग्य मध्ययतिने पण लागु पडे छ जेम के,

(७) तस्मिन्नद्रौ क्वतिचिदबलाविप्रयुक्त स कामी।

अही पहेली मध्ययति चार अक्षरे आवे छे तेनी पहेला 'अद्रौ' शब्द पूरो थाय छे ते विभक्तिवाळो छे, बीजी मध्ययति पहेला 'अबला' शब्द पूरो थाय छे ते समासमा होवाथी अविभक्तिक छ आपण आगळ चालीए

क्वचित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत्।
यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ॥

भावार्थ एवो छे के क्याक समुद्र वगरेथी दर्शावाती मध्ययति शब्दनी वच्चे पण आवे, जो तेनाथी वहेंचाई जतो पूर्वापर भाग एक वर्णनो न थई जतो होय तो आ वात सामान्य रीते गुजराती पिंगलोमा जाणीती नथी अने महत्त्वनी छे आपण आना दाखला जोईए

(८) स्रग्धरा पर्याप्त तप्तचामी, – करकटकतट श्लिष्टशीतेतराशौ।
(९) स्रग्धरा कूजत्कोयष्टिकोला – हलमुखरभुव प्रान्तकान्तारदेशा।
(१०) स्रग्धरा हासो हस्ताग्रसवा, – हनमपि तुलिता, द्रीन्द्रसारद्विपोऽसौ।
(११) स्रग्धरा वैरिचाना तयोच्चा, – रितरुचिरऋचा चाननाना चतुर्णाम्।

(१२) स्रग्धरा खड्ग पानीयमाह् ला,—दयति च महिष पक्षपाती पृथक्क ।
अहीं ज्यां ज्यां शब्दमध्य यति आवी छे त्यां अल्पविरामथी ते बतावी छे, अने शब्द चालु रह्या छे एम बताववा—आवु सयोग चिह्न मूक्यु छे आ बधा दाखलामा यतिथी शब्दोना जे टुकडा थया छे, तेमा एक पण टुकडो मात्र एकवर्णनो नथी चामीकर, पाला-हल, सवा-हन, उच्चा रित आ बधामा शब्दाना वच्चे अक्षरोना टुकडा पड छे अने छेल्ला दृष्टान्तमा आह् ला-दयति एमा पहेलो टुकडो बे अक्षरनो अने बीजो पण अक्षरनो छ आ दृष्टान्तोमा *यतिभग दोषरूप गणातो नथी पण आ प्रमाणे यतिथी थतो शब्दनो कोई टुकडो* एक ज अक्षरनो थई जाय तो ते दोष गणाय छ जेम के

(१३) मदाक्रान्ता एतस्या ग,—ङतलममल गाहते चन्द्रवक्षाम् ।

(१४) मदाक्रान्ता एतासा रा,—जति सुमनसा दामकठावलवि ।

(१५) प्रहर्षिणी स्वीकुर्व,—न्ति हि सुधिय प्रभुर्वने च ।

अहीं यतिथी थता शब्दना टुकडामा क्याक पहेलो *क्याक बीजो* एकाक्षर बने छे अने तेथी अहीं पदमध्ययति दोषरूप छे अने आ पदमध्ययति पण मात्र मध्ययति होय तो, ज चाले, चरणान्त यतिमा शब्दनो टुकडो न ज थई शके जेम के

(१६) *मालिनी प्रणमत भवबन्धक्लेशनाशाय नारा—*
यणचरणसरोजद्वन्द्वमानन्दहेतुम् ॥

अहीं *'नारा-यण'* शब्दनो एकेय टुकडो एकवर्ण नथी छता आ दोष छे कारण के चरणान्त यतिमा एम शब्द भागी शकातो नथी

पण यतिस्थानो पर सधि करता ब अक्षरोनी सधिथी एक ज अक्षर निष्पन्न थतो होय त्या ए एक अक्षर यतिनी बीजी बाजु चाल्यो जाय, यतिनी *आगळ के पाछळ चाल्यो जाय ए दोष गणातो नथी, पण एम अक्षर यति* पार चाल्यो गया पछी बाकी रहेलो शब्दनो टुकडो एकाक्षर थई जवो *जोईए नहीं दृष्टान्तोथी आ स्पष्ट थश*

(१७) अनुष्टुप दिक्कालाद्यावच्छिन्ना,—नन्तचिन्मात्रमूर्तये ।

(१८) मालिनी विततघनतुषारक्षोदशुभ्राशुपूर्वा—
स्वविरलपदमाला श्यामलामुल्लिखन्त ॥

पहेला दृष्टान्तमा 'आवच्छिन्न' अन 'अनन्त' ए बे शब्दोनी *सधि थाय* छे तमा बे 'अ' नी जगाए एक 'आ' आवे छ आ 'आ' पहेला चरणमा

स्थिर थाय छे, अने तेथी 'अनन्त' शब्द खडित थाय छे, पण ते दोष नथी, कारण के सधिने लीधे एम थाय छे अने तेथी बाकी रहेलो टुकडो 'नन्त' एकाक्षर बनतो नथी; तेम ज 'पूर्वासु' अने 'अविरल'नी सधि थता 'सु+अ'नी जगाए 'स्व' अक्षर आवे छे, अने ए यतिनी पछी चाल्यो जाय छे, पण एथी 'पूर्वासु' शब्दनो बाकीनो टुकडो 'पूर्वा' एकाक्षर थई जतो नथी, माटे दोष नथी.[२] पण ज्या आवी सधिथी टुकडो एकाक्षर थई जाय त्या ए दोष गणाय ज जेम के

(१९) मदाक्रान्ता · अस्यावक्रा – ब्जमवजितपू – र्णेन्दुशोभ विभाति।

अही 'वक्र' अने 'अब्ज'नी सधि थता यति पछवाडे 'अब्ज'माथी मात्र 'ब्ज' रह्यो, ते एकाक्षर छे, माटे दोष छे. ते ज प्रमाणे 'पूर्ण' अने 'इन्दु'नी सधि थता यति पूर्वे मात्र 'पू' एकाक्षर रह्यो ए पण दोष छे.

बीजा सस्कृत भाषानी खासियतने ज लगता नियमो लेतो नथी पण एक बाबत हजी कहेवा जेवी छे 'च' (=अने) जे बे शब्दोने जोडतो होय, तेनी साथे तेनो नित्यसबध छे तेथी यतिथी तेने ते शब्दोथी छूटो पडवा देवो जोईए नही जेम के

(२०) मदाक्रान्ता · स्वादु स्वच्छ, च हिमसलिल प्रीतये कस्य न स्यात्।

अर्थ एवो छे के स्वादु अने स्वच्छ हिमसलिल कोने न गमे? सस्कृत वाक्य-रचना प्रमाणे 'स्वादु' अने 'स्वच्छ' ए बे शब्दोथी, ए बन्नेने जोडनार 'च'ने

२ भरतनाट्यशास्त्रनो टीकाकार अभिनवगुप्त तो आवी रीते प्रत्यम-सधिने लीधे चरणान्तयति बहार चाल्यो जाय एने पण दोष गणे छे.

यत्रार्थस्य समाप्ति स्यात्स विराम इति स्मृत ।
पादश्च पठ्यते धातोश्चतुर्भाग प्रकीर्तित ॥ १०४

भ ना शा वॉ २, पृ २४४-४५

आना उपर टीका करता अभिनवगुप्त लखे छे "चतुर्भाग इति पादान्ते छेद. कर्तव्य, न तु 'ताबूलवल्लीपरिणद्धपूगास्वेला'। इति।" आ प्रतीक 'रघुवश'ना छठ्ठा सर्गना ६४ मा श्लोकनु छे ते श्लोकनो पूर्वार्ध नीचे प्रमाणे छे:

ताम्बूलवल्लीपरिणद्धपूगा–
स्वेलालतालिंगितचन्दनासु।

अही 'पूगासु'नी एनी पछीना 'एला' शब्द साथे सधि थता तेनो 'सु' चरणान्त यति बहार चाल्यो जाय तेने ते यतिदोष गणे छे हु मानु छु के नाट्यमा अर्थ प्रमाणे पाठ करवा जता आवी सधि विघ्नकर नीवडे माटे अभिनवगुप्त आटली सख्ताई करे छे काव्यशास्त्रकारोए आवो वाधो लीधो नथी.'

दूर करी शकाय नही. एटले के आ नियम तो यति सबधी जे सामान्य नियम, के यति आगळ शब्द पूरो थवो जोईए, एथी पण एक डगलु आगळ गयो यति आगळ 'स्वच्छ' शब्द पूरो थाय छे छता 'च' छूटो पडी जाय छे एने दोष गण्यो छे

आ चर्चा अने दृष्टान्तो मुख्यत्वे 'छन्द शास्त्र' (६-१)उपरनी हलायुधनी टीकामाथी, 'वृत्तरत्नाकर' (१, १२)उपरनी नारायणनी टीकामाथी अने 'छन्दोनुशासन' (अध्याय १) उपरनी स्वोपज्ञ टीकामाथी लीधा छे

यति सबधी मुख्यत्वे आ चर्चा छे ते उपरथी ओछामा ओछु एटलु जणाशे के आपणा पिंगलकारोए यतिनी बाबतमा बहु सूक्ष्मबुद्धिथी विचार कर्यो छे पदमध्ये यति क्यारे आवे अने क्यारे न आवे एना विचारमा शब्दना उच्चारणनी झीणी स्पष्ट समज रहेली छे पदमध्ये यतिना दाखलानु पठन करता जणाशे के त्या शब्द तूटवा छता क्लेश थतो नथी, अने तेना दोषना दाखला वाचता, खास करीने दृष्टान्त १९मु वाचता, स्पष्ट क्लेश थाय छे यति सबधी नारायण छेवटे तो ए ज कहे छे के

एव यथा यथोद्वेग सुधिया नोपजायते ।
तथा तथा मधुरतानिमित्त यतिरिष्यते ।

भावार्थ के सहृदयने उद्वेग न थाय अने काव्यमा मधुरता आवे एटला माटे यतिने इष्ट गणी छे

आ चर्चा बध करता पहेला ए पण नोधवु जोईए के मध्ययतिने न स्वीकारनारा पिंगलकारोनो उल्लेख पण आवे छे नारायण भट्ट उपरना श्लोकथी यतिचर्चा समेटी लईने कहे छे "शुक्लाबरादयस्तु पादान्त एव यतिमाहु । भरतादयस्तु यतिमेव नेच्छन्ति ।" शुक्लाबर वगेरे मात्र पादान्ते यति कहे छे भरत वगेरेने यति इष्ट ज नथी आ मतना वधारे नामो स्वयभूए आपेला छे

जयदेवपिंगला सक्कयमि दुच्चिय जइ समिच्छन्ति।
मडव्वभरहकासवसेयवपमुहा न इच्छन्ति॥

"जयदेव अने पिंगल ए बे सस्कृतमा यति इच्छे छे माडव्य भरत काश्यप अने सैतव वगेरे नथी इच्छता " नारायण तो एक डगलु आगळ जईने कहे छे के भरत तो पादान्त यति पण इच्छतो नथी आ बधाथी परीक्षाने अही अवकाश नथी पण एक बे वात स्पष्ट छे ते नोधवी जोईए पहेलु ए के माडव्य वगेरे

जे गणाव्या ते बधा प्राचीन छे. अर्वाचीन काळ तरफ आवता जईए तेम तेम यतिस्वीकार ज नजरे पडे छे. पिंगलथी मांडीने नारायण अने 'छंदोमंजरी'कार गगादास तेम ज आपणी भाषाना पिंगलो पण यति स्वीकारे छे. बीजु ए, के कोई पिंगलकारे लक्षणमां यतिनो उल्लेख न कर्यो होय छतां जो दृष्टान्तो बधां यतिवाळा होय तो त्यां पिंगलकारनो सिद्धान्त अयतिनो छे एम न गणतां एनुं शास्त्रनिरूपण अपूर्ण गणवुं, अने सिद्धान्तमा तेने यतिवादी ज गणवो जोईए एम हु मानुं छु दाखला तरीके भरतनाट्यशास्त्रमां छन्दोनां ,लक्षण आपता भरत सयतिक वृत्तोमा क्याक मध्ययतिनो उल्लेख करे छे, क्यांक नथी करतो, पण त्यां पण दृष्टात तो सयतिक ज आपे छे. ते रुचिरा अथवा प्रभावतीनुं लक्षण आ प्रमाणे छे:

द्वितीयं च चतुर्थं च नवमैकादशे गुरु।
विच्छेदोऽतिजगत्या च चतुर्भिः सा प्रभावती॥

भ. ना. का. १५, ५४

अही 'चतुर्भिः विच्छेदः' एम कही चार अक्षरे यति वतावी छे. ते ज प्रमाणे प्रहर्षिणीमा त्रण अक्षरे यति वतावी छे. (एजन १५, ५६) पण शालिनीना लक्षणमा यतिनो उल्लेख नथी:—

षष्ठं च नवमं चैव लघूनि त्रैष्टुभे यदि।
गुरूण्यन्यानि पादेषु सा ज्ञेया शालिनी यथा॥

एजन, १५-३२

पण तेना दृष्टान्तमा यति छे.

दुःशीलं स्यादल्पकं वा सुशीलं
लोके धैर्यादप्रियं न ब्रवीति।
तस्माच्छीलं साधुहेतोः सुवृत्तं
माधुर्यार्थं सर्वथा शालिनीव॥

एजन, १५, ३३

तेवी ज रीते शिखरिणीमा पण यति कहेली नथी पण दृष्टान्तमा पाळी छे. आवा दृष्टान्तो प्राकृत पिंगलमा पुष्कळ छे शालिनी शार्दूलविक्रीडित वगेरे वृत्तोमा ए पिंगले यति क्याय कही नथी पण दृष्टान्तो ते ते जगाए यतिवाळां छे. आने हु मान निरूपणनी अपूर्णता, आ ग्रथमा तो मात्र खासियत ज गणुं छु. एटला उपरथी आनो अज्ञात कर्ता अयतिवादी हतो एम मानवु मने मुनासिब लागतु नथी.

वरुआ यतिभंगना खराब दाखला तरीके नीचेना बे श्लोको उतारे छे:

> सतुष्टे तिसृणा पुरामपिरिपौ कडूलदोर्मंडली—
> लीलालूनपुनःप्ररूढशिरसो वीरस्य लिप्सोर्वरम्।
> याच्ञादैन्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मिथस्त्वं वृणु,
> त्वं वृणिवयमितो मुखानि स दशग्रीव कथ वर्ण्यताम्॥

अने

> साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवत. शर्करे कर्कशासि,
> द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृत मृतमसि क्षीर नीर रसस्ते।
> माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितल गच्छ यच्छन्ति यावत्,
> भाव शृगारसारस्वतमिह जयदेवस्य विश्वग् वचासि।

पृ २११-१२

पहेला श्लोकमा 'कलहायन्ते'नी वच्चे यति आवी शब्दना बे टुकडा थाय छे पण पहेलामा त्रण अक्षरो आवे छे अने बीजामा बे अक्षरो बाकी रहे छे एटले एने यतिदोष कही शकाय नही 'दशग्रीव'मा तो 'दश' आगळ यति आवे छे एटले त्या समासनो एक शब्द पूरो थाय छे एटले जरा पण दोष रहेतो नथी बीजा श्लोकमा 'जयदेवस्य'मा यतिनो खराब रीते भग थाय छे, एम कहे छे पण अही पण एक बाजु त्रण अने बीजी बाजु बे अक्षरो रहे छे एटले एने आगळ कहेला अपवादोमा केम न गणी शकाय ते मने समजातु नथी

पण बीजा दृष्टान्तमा एक बीजी दृष्टिए पण विचार करवानो रहे छे. त्या वृत्त स्रग्धरा छे कविए 'गीतगोविन्द'मा सर्वत्र अमुक अमुक स्थाने पोतानु नाम छन्दमा वणेलु छे ज अने तेने अही ए मूकवु छे हवे स्रग्धरामा आ स्थान सिवाय 'जयदेवस्य' शब्द बीजे क्याय मूकी शकाय एम छे ज नही जुओ

गागागागा लगागा ललललललगा गालगा गालगागा
ललगा गाल
जय दे वस्य

यतिभग विशे विचार करता आ पण ध्यानमा राखवु जोईए

यतिनी चर्चा करता आपणे एक बीजी बाबत पण ध्यानी साथे ज जोई लेवी जोईए ते ए छे के संस्कृत साहित्यमा घणे भागे एक श्लोकमा वाक्य पूरु थतु प्रबन्धोमा पण घणे भागे एम ज थतु प्रबन्धोना श्लोको जोईशु तो दरेक श्लोकमा घणे भागे एक आखु वाक्य जणाशे मुक्तकनु तो ए लक्षण ज छे के एक वाक्य एक श्लोकमा समाप्त थवु जोईए "एकेन च्छन्दसा वाक्यार्थ-

समाप्तौ मुक्तकम् ।" (का शा र. १ पृ ४६६) प्रबन्धोमां ज्यां लांबां वर्णनो आवे छे त्यां बे श्लोकना के तेथी वधारे श्लोकना लांबां वाक्यो आवे छे, पण ते विरल जगाए ज अने त्यां पण घणे भागे दरेक श्लोके अर्धविराम के अल्पविराम आवे छे ज अने त्यां पण दरेक श्लोकमां एक प्रकारनी एकता देखाया विना नहीं रहे 'रघुवंश'मां पहेला ज सर्गमां कालिदास ५ थी ९ श्लोकोमां रघुओनुं सामान्य वर्णन सुन्दर गौरवयुक्त भाषामां करे छे, त्यां पांचेय श्लोकमां एक सळंग वाक्य छे, पण तेमां दरेक श्लोके अर्धविराम जेवुं जणाया विना नहीं रहे

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥ ५ ॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् ।
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् ॥ ६ ॥

त्यागाय सभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥ ७ ॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगनान्ते तनुत्यजाम् ॥ ८ ॥

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन् ।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रणोदितः ॥ ९ ॥

पांच श्लोकनुं एक वाक्य होवा छतां दरेक श्लोक पाछो तेना शब्दन्यासथी ज जुदो पडी आवशे आ रीते संस्कृत साहित्य बधुं श्लोकबद्ध थयुं छे

घणे भागे एक श्लोकमां एक ज वाक्य होय छे पण कोई वार एक ज श्लोकमां बे वाक्यो आवे छे अने त्यारे घणे भागे एक वाक्य श्लोकार्धमां पूरुं थवुं जोईए एवो नियम छे पहेला वाक्यनो एकाद शब्द वधी पडे अने तेने श्लोकार्ध बहार लई जवो पडे तो ते दोष गणाय छे 'काव्यप्रकाश'कार तेने अर्धान्तरैकवाचक (का प्र उ ७, ७५) ए नामनो दोष गणे छे अने वामन स्पष्ट कहे छे के 'नार्धे किंचित्समाप्तं वाक्यं।' (का सू वृ ५, १, ६) श्लोकार्धे थोडा सारु समाप्त न होय एवुं वाक्य न प्रयोजवुं जेम के नीचेनुं वाक्य दोषयुक्त गणाय

इन्दुर्विभाति कर्पूरगौरैर्धवलयन् करैः ।
जगन्मा कुरु तन्वंगि ! मानं पादानते प्रिये ॥

अर्थ : 'इन्दु कर्पूरगौर किरणथी जगतने धोळनो सोहे छे. हे तन्वगी! पाये लागता प्रिय तरफ रीस न कर ''सोहे छे' सुधीनु एक वाक्य छे, तेमा आवतो एक ज शब्द 'जगतने' ए द्वितीयार्धमा चाल्यो जाय छे माटे दोष छे. एवो ज बीजो दाखलो :

जगत्प्रकाशयन्निन्दु करै शुभ्रैर्विभाति मा।
मानमायतनेत्रान्ते [1] कुरु पादानते प्रिये॥

अर्थ 'जगतने शुभ्र किरणथी प्रकाशतो इन्दु सोहे छे हे दीर्घनेत्रवाळी पाये लागता प्रिय तरफ मान मा कर.' अही पण बे वाक्यो छे बीजा वाक्यनो 'मा' शब्द पहेला श्लोकार्धमा चाल्यो गयो छे ए दोष छे.

एटले श्लोकार्धथी आगळ सधि नथी लई जवाती, तो त्या वाक्य पण पूरु करवानो आम्नाय छे ए यति आगळ मात्र शब्द नही पण वाक्य पण पूरु थवु जोईए पण उपर कह्यु तेम वाक्यनो घणो भाग शेष रही जतो होय तो एने दोष गण्यो नथी वाक्यबोधनी श्रेणी समज उपर आ नियमो थया छे ए स्पष्ट थशे उपरनानो अर्थ ए छे के श्लोकार्धे वाक्य पूरु थवानी अपेक्षा थती होय तो त्या एक शब्द वधी जवो ए दोष छे, एवी अपेक्षा न थती होय तो ए दोष नथी

आ रीते सस्कृत छदशास्त्र यतिओनो विवेक करे छे बधी यतिने ते एक सरखी गणतु नथी अने यतिना महत्त्व प्रमाणे सस्कृत भाषाना सधि-नियमो उपर असर थाय छे मध्ययति पदमध्ये पण आवी शके, मात्र एनाथी शब्द एवी रीते न तूटवो जोईए के एकाद अक्षर वधाईने नोखो पडी जाय पादान्त यतिए शब्द पूरो थवो ज जोईए पण सधिने लीधे शब्दनो छेवटनो भाग यतिथी विच्छेदाई जाय तो बाधो नही पण श्लोकार्धे तो सधि पण अटकी जवी जोईए वाक्य पण ए रीते न तूटवु जोईए के तेनो एकाद शब्द बीजा श्लोकार्धमा चाल्यो जाय श्लोकान्ते वाक्य पूरु थवु जोईए एम एक श्लोक बधी रीते अर्थदृष्टिए पण बराबर बेसी जवो जोईए एक ज वाक्य एकथी वधारे श्लोकोमा विस्तरेलु होय त्या पण दरेक श्लोक एना शब्द-विन्यासथी तेना विभक्तिप्रत्ययोथी, जुदो तरी आवे एवो तो होवो ज जोईए, एवो आम्नाय छे अने आखा पाठमा दृढबन्ध होवो जोईए सस्कृतमा सधि थती होवाने लीधे सस्कृत पद्यसाहित्य जेवो दृढबन्ध बीजी कोई पण भाषामा भाग्ये ज शक्य होय!

परिशिष्ट २

निरूपणपद्धतिओ

वृत्तोना स्वरूपनिरूपणमा में बे मुख्य पद्धतिओ वतावी छे. पहेली वृत्तमां आवता लघु के गुरुओना — मुख्यत्वे गुरुओना कारण के वृत्तोमा गुरुओनी संख्या ज ओछी होय छे — स्थानो सख्याथी वतावता. आ पद्धति भरतमा छे, अने अर्वाचीनोमा 'श्रुतवोध 'मा पण छे. पण वधारे शास्त्रीय मनाती पद्धति म य र स त ज भ न ए अक्षरगणोनी छे. पिंगलना 'छन्द शास्त्रमा' टूका टूका सूत्रोमा आ अक्षरगणोथी अने लघुगुरुथी वृत्तनो अक्षरविन्यास, अने समुद्र वगेरे संख्यावाचक प्रतीकोथी यतिस्थान दर्शाववानी पद्धति आवे छे. 'वृत्तरत्नाकरे' पण अक्षरगणोथी ज स्वरूप दर्शाव्युं छे पण त्या विशेषमा दरेक सूत्र ते ते छन्दमा आपेलुं छे. ते उपरात वीजा दृष्टान्तो पण आपेला छे 'छन्दोमजरी'मा पण आ ज पद्धति छे. पण 'प्राकृतपैंगल'मा पद्धति बदलाय छे.

'प्राकृतपैंगल' मुख्य मात्रामेळवृत्तो माटे छे. तेनो अर्ध उपरनो भाग मात्रावृत्तो रोके छे ते पछी ते वर्णवृत्तो आपे छे, जेमा अनावृत्तसधि साथे आवृत्तसधि पण आपे छे. एमा वृत्तोनी निरूपणपद्धति जुदी छे. प्रथम तो ते मध्ययतिनो क्याय उल्लेख नथी करतु, जोके सयतिक वृत्तोना लक्षणछन्दोमा अने दृष्टान्तोमा यति आपे छे तेथी तेने हु अयतिवादी नथी गणतो. आ पिंगल मुख्यत्वे मात्रामेळ माटे होवाथी तेणे मात्रागणो कर्या छे. अने ए गणो नीचे प्रमाणे छे ते ६ मात्राना गण माटे छ अने ट एवी वे सज्ञाओ स्वीकारे छे ते ज प्रमाणे ५ मात्रा माटे प अने ठ, ४ मात्रा माटे च अने ड, ३ माटे त अने ढ, २ माटे द अने ण आ पछी प्रस्तारथी दरेक गणमा लघु गुरु न्यासथी थता जुदा जुदा पर्यायोने ते पारिभाषिक नामो आपे छे, ते नीचे प्रमाणे.

छ के ट गणना तेर पर्यायो.

हर = गागागा, शशी = ललगागा, सूर्य = लगालगा, शक्र = गाललगा,
शेष = ललललगा, अहि = लगागाल, कमल = गालगाल, ब्रह्मा = लललगाल,
कलि = गागालल, चद्र = ललगालल, ध्रुव = लगाललल, धर्म = गालललल,
शालिकर = लललललल.

प के ठ एटले पाचकलना कुल आठ पर्यायो थाय ते नीचे प्रमाणे:

इन्द्रासन = लगागा, सूर = गालगा, चाप = लललगा, हीर = गागाल,
शेखर = ललगाल, कुसुम = लगालल, अहिगण = गाललल, पापगण = ललललल.

च के ढ एटले चतुष्कल गणना कुल पांच पर्यायो:—

वर्ण = गागा, करतल = ललगा, पयोधर = लगाल, चरण = गालल, विप्र = लललल.

त के ढ एटले त्रिकल गणना कुल त्रण पर्यायो थाय. तेमा पहेला लगा ने माटे ध्वज, चिह्न, चिर, चिरालय, तोमर, तुंबुरु, पत्र, चूतमाला, रस, वास, पवन, वलय, एटला नामो छे. बीजा पर्याय गाल ने माटे सुरपति, पटह, ताल, करताल, (आ) नद, छंद, समुद्र, तूर्य; अने ललल माटे भाव, रस, तांडव, नारी, कुलभाविनी.

द के ण एटले द्विकल गणना बे पर्यायो तेमा गा एटले गुरुनां नामो: नूपुर, रसनाभरण, चामर, फणी, मुग्ध, कनक, कुंडल, वक्र, मानस, वलय, हारावलि, अने लल गणना नामो: निजप्रिय, परम, सुप्रिय.

आ उपरांत आ पिंगल चतुर्मात्रिक गणना बीजा अनेक नामो आपे छे तेमाथी दृष्टांत तरीके मात्र जगण लगालनां ज जोईए; भूपति, अश्वपति, गजपति, वसुधाधिप, रज्जु, गोपाल, उन्नायक, चक्रवर्ती, पयोधर, स्तन, अने नरेन्द्र.

आ जोता सहेजे जणाशे के परिभाषा सगवड खातर वधारता होय ते करता मात्र आडंबर खातर वधारे छे. आ निरर्थक 'भुलभुलामणी'मा आगळ न जता आपणे एक लक्षण जोईशु. दूको शालिनी ज लउं छु:

वण्णो दुण्णो हार एक्को विसज्जे
सल्ला कण्णा गंध कण्णा सुणिज्जे।
वीसा रेहा पाअ पाए गणिज्जे
सप्पा राए सालिणी सा भुणिज्जे॥ १०६॥
प्रा. पैं. B. पृ. ४१८.

आनो अर्थ: बे वर्ण (गागा), एक हार (गा) मूकवो. ते पछी शल्य (ल) कर्ण (गागा) गंध (ल), वर्ण (गागा) पादे पादे संभळाय छे. वीस मात्रा गणाय छे. तेने सर्पराज (पिंगल) शालिनी माने छे

अहीं अक्षरसंख्या न आपता मात्रानी कुलसंख्या वीस आपेली छे, जे अशास्त्रीय छे. अने गुरु लघुना क्रमथी शालिनी सिद्ध थाय छे ए खरुं पण क्याक एक अक्षरनो क्याक बे अक्षरनो गण गणेलो छे ते केवळ मनस्वी छे शार्दूलविक्रीडितनु आखु लक्षण उतारतो नथी. एना लक्षणना बे श्लोको आपेला छे पहेलामा अक्षरगणोथी लक्षण आप्यु छे, बीजामा पोतानी मात्रागण सज्ञाथी

आपेलु छे (एजन, श्लोक १८६-१८८ पृ. ५२५, ५२९) अने पहेला लक्षणमा अक्षरगणो आपी रह्या पछी कह्यु छे के तेमा अक्षर १९ छे, पाद चार छे, कुल ७६ वर्ण छे, तेमा ३२ मानाना लघुओ छे, अने ८८ मानाना, एटले ४४ गुरु छे केवळ गणतरी करवा खातर गणतरी करी छे

आ प्रकारनी कोई बीजी परिभाषाना ग्रन्थोनी आगळ नोध करवानी जरूर जोतो नथी

अर्वाचीन कालमा 'रणपिंगल' अक्षरगणोथी न्यासो आपे छे दलपतराम अक्षरगणोथी आपे छे विशेष एटलु छे के ते अनावृत्तसंधि वृत्तोमा पण ताल दर्शावे छे जेनी चर्चा आपणे आगळ करीशु

'छन्दोरचना' वृत्तोनो न्यास लघु माटे ◡ आवी अने गुरु माटे — आवी निशानीथी आपे छे अने यति आश्चर्यचिह्न ! थी बतावे छे ते संधिओनो उल्लेख करतु नथी पण अयतिक छन्दोना चरणना पण विभागो पाडे छे अने तेने । आवा चिह्नथी बतावे छे जेम के

इन्द्रवज्रा (——◡——।◡◡—◡——) (छ र पृ १११)

शालिनी (————! —◡——◡——) (एजन, पृ ११७)

शालिनीमा ! आ चिह्नथी यति बतावेली छे पण इन्द्रवज्रामा यति नथी छता पहेला पाच अक्षरे चरणनो एक विभाग पूरो थाय छे एम बताववा एक दड करेलो छे आ दडनी जगाए जरा टूकी एवी यति पण ते माने छे (एजन पृ ६५)

परिशिष्ट ३

आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो

में आगळ कह्यु तेम आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोने प्राचीन पिंगलकारो अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ साथे ज गणता जे अशास्त्रीय छे एमनो मेळ माना-मेळ ज छे आपणे वृत्तोना प्रकरणमा तेमनो समावेश नथी कर्यो छता बधा पिंगलो ते आपे छ, 'दलपतपिंगळे' पण ते आपेल छे, एटले 'दलपत-पिंगळ'ना अने बीजा केटलाक महत्त्वना रूपकोनो न्यास अही परिशिष्टमा आपु छु एथी एनु आवृत्तसंधि स्वरूप पण स्पष्ट थशे आठ अक्षरथी माना बनावटी छदो घणाखरा आवृत्तसंधि ज छे छदनो अने 'दलपतपिंगळ'नो

मूक्यो छे. ने ताल पण बताव्यो छे. ताल बने त्यां सुधी 'दलपतपिंगळ'नो ज राख्यो छे, पण क्याक छापभूल जणाई त्यां सुधारी लीधुं छे.

		अक्षरसंख्या
१ श्री:	गा	१
२ कामा अथवा स्त्री:	गागा	२
३ मंदर:	गालल	३
४ मधु:	ललगा	४
५ वार अथवा वारि:	गाल गाल	४
६ समूही:	गालल गा	४
७ हसा:	गालल गागा	५
८ विलास:	लगाल गागा	५
९ प्रिय:	ललगा लगा	५
१० हारी:	गागाल गागा	५
११ संमोहा:	गागा गागा गा	५
१२ चतुरशा अथवा शशिवदना:	लललल गागा	६
१३ दीपा:	गागागा गागागा	६
१४ विमोहा:	गालगा गालगा	६
१५ सोमराजी:	लगागा लगागा	६
१६ तिलका:	ललगा ललगा	६
१७ मालती:	ल गालल गाल	६
१८ समानिका:	गाल गाल गाल गा	७
१९ कलिता:	गालल गालल गा	७
२० कुमार ललिता:	लगाल ललगा गा	७

२१ मदलेखा :	गागा गालल गागा	७
२२ शीर्षा :	गागा गागा गागा गा	७
२३ चित्रपदा :	गालल गालल गागा	८
२४ केतुमाळ :	गागाल गागाल गागा	८
२५ तुंगा :	लल लललल गागा	८
२६ कमळ :	ललललल गालगा	८
२७ विद्युन्माळा :	गागा गागा गागा गागा	८
२८ खंजा :	गागा गागा ललगा गा	८
२९ मल्लिका :	गाल गाल गाल गाल	८
३० नगस्वरूपिणी अथवा प्रमाणिका :	लगा लगा लगा लगा	८
३१ माणवकाक्रीड :	गालल गागा ललगा	८
३३ रत्नकरा :	गागा गालल गालल गा	९
३४ तोमर :	ललगालगा ललगाल	९
३५ सारंग :	लल ललगा गालल गा	९
३६ बिंबा अथवा ललिततिलका :	ललल लगाल गागा	९
३७ मणिबंध :	गालल गागा गालल गा	९
३८ महालक्ष्मी :	गालगा गालगा गालगा	९
३९ पवित्रा :	गागा गागा लललल गा	९
४० रूपमाळा :	गा गागा गागा गागा गागा	९
४१ पावक :	गालल गागा गागा ललगा	१०
४२ चंपकमाळा :	गालल गागा गालल गागा	१०
४३ बिंदु :	गालल गालल गागा गागा	१०

४४ सजुक्ता अथवा सगतिका:	ललगालगा ललगालगा	१०
४५ दोधक:	गालल गालल गालल गागा	११
५० सुमुखी:	लललल गालल गालल गा	११
५१ शाही	गागाल गागाल गागाल गागा	११
५२ अनुकूला:	गालल गागा लललल गागा	११
५६ सेनिका:	गाल गाल गाल गाल गाल गा	११
५७ ललित:	ललल गाल गा। गाल गाल गा	११
५८ मोदक:	गालल गालल गालल गालल	१२
६१ तोटक:	ललगा ललगा ललगा ललगा	१२
६२ मोतीदाम:	ल गालल गालल गालल गाल	१२
६३ स्रग्विणी	गालगा गालगा गालगा गालगा	१२
६४ भुजंगी:	लगागा लगागा लगागा लगागा	१२
६५ कुसुमविचित्रा:	लललल गागा लललल गागा	१२
६६ तामरस:	लललल गालल गालल गागा	१२
६९ शैल:	लगागा लगागा लगागा लगाल	१२
७० तरलनयन:	लललल लललल लललल	१२
७१ दलछद:	गाललल गाललल गालगा गा	१२
७६ तारक:	लल गालल गालल गालल गागा	१३
७८ मत्तमयूर अथवा माया.	गागा गागा। गालल गागा ललगा गा	१३
८० कंद:	लगागा लगागा लगागा लगागा ल	१३
८२ लीला	गागाल गाल लल। गागाल गालगा ल	१४
८३ पडघमी.	ललगा। ललगा। ललगा। गागा	१४

८४ चामर:	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा	१५
८५ निशिपाळ:	गाललल गाललल गाललल गालगा	१५
८७ माळा अथवा सृणि:	लललल लललल लललल ललगा	१५
८८ सारंगी:	गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गा	१५
८९ नलिनी अथवा भ्रमरावळी:	ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा	१५
९० हंस:	ललगालगा ललगालगा ललगालगा	१५
९१ चंचला:	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल	१६
९२ विशेष अथवा नील:	गालल गालल गालल गालल गालल गा	१६
९३ नाराच:	लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा	१६
९४ रूपमाळी:	गालगालल गालगालल गालगालल गाल	१७
९९ चर्चरी अथवा विबुधप्रिया:	गालगालल गालगालल गालगालल गालगा	१८
१०० चंद्रक्रीडा:	लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा	१८
१०१ झूलणा:	लल गालगालल गालगालल गालगालल गाल	१९
१०३ शंभु:	ललगा गागा ललगा गागा ललगा गागा गागा गागा	१९
१०४ गीतक अथवा मुनिशेखर:	लल गालगालल गालगालल गालगालल गालगा	२०
१०६ मदिरा:	गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा	२२
१०७ हंसी:	गागा गागा गागा गागा ललल लललल लललल गागा	२२
१०८ केकिनीशारदा:	गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गाल	२३

१०९ सर्वगामी अथवा
अग्रछंद : गागाल गागाल गागाल गागाल गागाल
गागाल गागाल गागा २३

११० वर्णवागीश्वरी : लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगा २३

१११ इन्द्रविजय
अथवा गालल गालल गालल गालल गालल
मत्तगयद : गालल गालल गागा २३

११२ मल्लिका : ल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल गा २३

११३ किरीट : गालल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल २४

११४ देवछंद : लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगागा २४

११५ वैकुंठधामा : गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा
गालगा गालगा गालगा २४

११६ दुमिला : ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा
ललगा ललगा ललगा २४

११७ मुसदा, विष्णु
अथवा ल गालल गालल गालल गालल
सुरेश्वर : गालल गालल गालल गागा २४

११८ वळावुगाळ
अथवा ल गालल गालल गालल गालल गालल
लवगलता : गालल गालल गालल २५

११९ अरविंदमुखी : ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा
ललगा ललगा ल २५

१२० किशोर: लल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल गालल २६

आ पछी हुं दलपतपिंगलमां मणे भागे नहीं आवेला अने छन्दःशास्त्रमां आवता केटलाक महत्त्वना मात्रामेळी लगात्मक छन्दो नीचे आपुं छुं. दरेक छन्दना नामनी साथे सूत्र जणावतो जईश.

समानी (५, ६)	गाल गाल गाल गाल
प्रमाणी (५, ७)	लगा लगा लगा लगा
द्रुतमध्या (५, ३३)	गालल गालल गालल गागा
	लललल गालल गालल गागा
	अर्धसम छे.
वेगवती (५, ३४)	ललगा ललगा ललगा गा
	गालल गालल गालल गागा
	अर्धसम छे.
केतुमती (५, ३६) :	ललगा लगाल ललगा गा
	गालल गालगालल गागा
	अर्धसम छे.
यवमती (५, ४२) :	गाल गाल गाल गाल गाल गाल
	लगा लगा लगा लगा लगा लगा गा
	अर्धसम छे.
तनुमध्या (६, २) :	गागा ललगा गा
भुजगशिशुसृता (६, ७)	लललल ललगा गागा
हलमुखी (६, ८) :	गालगालल लललगा

अही सप्तकल संधिनां बे आवर्तनो छे. बीजा आवर्तननो छेल्लो गुरु खंडित थयेलो छे.

पणव (६, १०) :	गागा गालल ललगा गागा
रुक्मवती (६, ११) :	गालगालगा लगाल गागा
मयूरसारिणी (६, १२) :	गालगालगा लगाल गागा
मत्ता (६, १३) :	गागा गागा लललल गागा

उपस्थिता (६, १४):	गागा ललगा ललगा लगा
भ्रमरविलसिता (६, २१):	गागा गागा ललल ललगा
वृन्ता (६, २४):	ललल ललल गागा गा
श्येनी (६, २५):	गाल गाल गाल गाल गाल गा
विलासिनी (६, २६):	लगा लगा लगा लगा लगा गा
तोटक (६, ३१):	ललगा ललगा ललगा ललगा
जलोद्धतगति (६, ३३):	लगाल ललगा। लगाल ललगा
तत (६, ३४):	ललललल लगागा गागाल गा
चचलाक्षिका (६, ३६):	ललल ललगा लगागालगा
कान्तोत्पीडा (६, ४०):	गालल गागा गालल गागा गागा
नवमालिनी (६, ४३):	ललल गालगालल गागा
मत्तमयूर (७, ३):	गागा गागा। गालल गागा ललगा गा
गौरी (७, ४):	लललल ललललल लगागा
असबाधा (७, ५):	गागा गागा गालल ललल गागा गा
प्रहरणकलिता (७, ७):	ललल ललगा ललल ललगा
चन्द्रावर्ता (७, ११):	ललल ललल ललल ललगा
माला (७, १२):	ललल ललल ललल ललगा
मणिगुणनिकर (७, १३):	ललल ललल । ललल ललगा
वृत्त (७, २४):	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल
मत्ताक्रीडा (७, २८):	गागा गागा गागा गागा। ललल ललल ललल ललगा
तन्वी (७, २९):	गालल गागा। ललल ललगा।गालल गालल ललल गागा
क्रौंचपदा (७, ३०):	गालल गागा। गालल गागा। ललल ललल। ललल ललगा
अपवाहक (७, ३२):	गागा गालल ललल। ललल ललल ललल। ललगा गागा
कुड्मलदन्ती (८, २):	गालल गागा। ललल गागा
जलधरमाला (८, ४):	गागा गागा। ललल गागा गागा
गौरी (८, ५):	ललल ललगा लगागालगा
ललना (८, ६):	गालल गागा। ललल ललगा
वरसुन्दरी (८, ९):	गाललल गाललल गाललल गागा

कुटिल (८, १०): गागागागा। ललल लल।गा गागा गा

विबुधप्रिया (८, १६): गालगालल गालगा।ल गालगालल गालगा।

नाराचक (८, १७): ललललल गालगा गालगा गालगा गालगा

हु आने टूंकावेलो दश्य गणु छु 'माटे अही लीधो छे. सूत्रमां यति नथी पण हलायुध दशमे[1] यति दर्शावे छे ते आवश्यक नथी कारण के माघना 'शिशुपालवध'मा आ छंद छे तेमा क्या यति नथी.

वृत्तसवलजगद्विबोधोऽपूतान्ध्वरोदयः
क्षयितकुमुदनारकश्रीर्वियोग नयन् कामिन. ।
बहुतरगुणदर्शनादभ्युपेताल्पदोषः कृती
तव वरद करोतु सुप्रातमह्नामय नायक ॥

शिशुपालवध, ११, ६७

श्री अंबालाल पटेले तेनु भाषान्तर करेलु छे ते जोईए:

अखिल जगत जागता, भागता तामसी तो तमो,
सकल कुमुद तारको रोळतो, बाळतो कामिने;
जग बहु ज गुणाढ्यमां अल्पदोषे लहे दोष ना,
वरद तव दिनेश आजे प्रभाते भरो सार्थता

'शिशुपालवध'नी टीकामा आ छंदने मल्लिनाथे महामालिका कहेलो छ.

परिशिष्ट ४

वृत्तोनुं परंपरागत पठन

आपणे गया प्रकरणमा वृत्तोनु परपरासिद्ध स्वरूप जोयु पण ए स्वरूप पिंगलसज्ञानिर्दिष्ट ज जोयु कोई पण पद्यरचनानु एटले श्लोकोनु पण पूर्ण स्वरूप तेना पठनमा ज व्यक्त थाय छे एटले खरेखर पठनमा ए केवु हतु ते आपणे विचारी जोवु जोईए

पठन शब्द वापरता एक वात समजवी जोईए पठन अनेक प्रकारना होई शके एक ब्राह्मण शतचंडीमा होम करता वसततिलका वृत्त अमुक रीते लाबा रागे गाय, ते ज ब्राह्मण एक साथे सो वार चडीपाठ करवा बेसाड्यो होय

१. जुओ अर्वाचीन गुजराती काव्यसाहित्य पृ ३३, पादटीप ६

त्यारे, वह्नु ज स्वराथी जुदी ज रीते पाठ करे अने वळी कोई विद्यार्थी ए श्लोको मोढे करवा गोखे त्यारे जुदी रीते पाठ करे आवा उतावळा अवैधिक पठनो ते खरां पठनो नथी. पण सामो माणस साभळे अने भाषा समजतो होय तो समजे एवा उद्देशथी, अने ते गद्य नथी पण पद्य छे एवा भानथी करेलु पठन तेने ज खरु विधिपूर्वकनु पठन कहेवाय, अने एवु पठन ज पद्यरचनानु खरु स्वरूप प्रगट करी शके आपणे एवा पठननो विचार करवानो छे

आवा पठन सबधी सौथी पहेलु ए कहेवानु के आपणा सघळा सस्कृत वृत्तो परपराथी सगीतना स्वरो साथे पठाता अत्यारे लग्नसमयना मगलाष्टको सामळो, के चडीपाठमा होम समये ब्राह्मणोने लावे स्वरे वसततिलका वृत्तो ललकारता सामळो, के ब्राह्मणोनी नातोमा श्लोको बोलाता साभळो के पुराणीओने कथा कहेता श्लोको ललकारता साभळो तो सर्वत्र तेमना पठनमा सगीतना स्वरोनो प्रयोग जणाशे अलबत्त तेमा सगीतनो अमुक राग छे एम नही कही शकाय रागनी सिद्धिने माटे जे पाच के वधारे स्वरो आवश्यक होय छे तेटला आवा पठनोमा नही मळे (जो के केटलाक सगीतशास्त्रीओ सगीतना अमुक रागमा आपणा वृत्तो गाई बतावे छे) पण सगीतना स्वरो तो पठनमा जणाशे ज अने ए ज रूढ पठनपद्धति छे कारण के लग्नसमयना मगलाष्टको, चडीपाठना होम समयना श्लोको, के पुराणीओना श्लोको एव ज रीते गवाता समळाय छे तेनु स्वराकन करी शकाय'. पटवर्धने 'छन्दोरचना'मा पण आ परपराने हकीकत तरीके स्वीकारी छे ते कहे छे. पहेला अने त्रीजा चरणोनो

१. पुराणीओ वगेरेनी रूढ पठनपद्धतिने शास्त्रशुद्ध गणवी के केम ए प्रश्न छे हु 'रघुवश' मारी नातना परपरा प्रमाणे अभ्यास करेला एक विद्वान पासे भण्यो छु तेमा रघुवशमा नीचेनो स्वागता छद आवे छे.

कुभपूरणभव पटुरुच्चै
रुच्चचार निनदोऽम्भसि तस्या ।
तत्र स द्विरदबृहितशकी
शब्दपातिनमिषु विससर्ज ॥ ९, ७३

ते तेमणे जे रीते गायो तेमा लघुगुरु नीचे प्रमाणे उच्चाराता हता

ललललललगा . ललगा गा

टपाकं मूक्यां छे ते विल्बा दर्शावे छ आमा विश्वनने जबा दईए पण प्रथमना छ वर्णो बधा लघु थई जाय छे ते तो अशास्त्रीय ज गणवु जोईए वळी जैन साधुओ अनुष्टुभोनो पाठ करे छे तेमां बधा अक्षराने एक सरखा गुरु करी उच्चारे छे तेने पण अशास्त्रीय गणवु जोईए जैम के मे

न्यास घणाखरा वृत्तोमा ऋषभ स्वर पर थाय छे त्यारे बीजा अने चोथा चरणोनो न्यास षड्ज उपर थाय छे. उदाहरणार्थ इन्द्रवज्रा बोलता पहेला चरणमा सा सा रे ग म प म ग रे सा रे एवो स्वरक्रम होय छे, त्यारे बीजा चरणमा ग ग रे सा नि नि रे ग रे सा सा एवो स्वरक्रम होय छे (छन्दोरचना पृ ९. पाद टीप) वर्वे पण श्लोको गावानी साधारण परपरा छे एम स्वीकारी ते परपरा प्रमाणेनु स्वराकन आपे छे, जो के उपरना पटवर्धनना स्वराकनथी ते जुदु पडे छे पटवर्धन विषम अने सम पक्तिना स्वरो भिन्न रहे छे पण विषमना अने समना अदर अदर सरखा रहे छे, त्यारे वर्वे चारेयना जुदा आपे छे महेज सरखाववा इन्द्रवज्राना स्वरो उपरनी ज रीते हु वर्वेमाथी आपी जाउ: री ग रि गरि ग रिं ग म प म ग ए रीते पहेली पक्तिना स्वरो दरेक अक्षर माटेनो स्वर जुदो लख्यो छे गरि अर्धचद्र साथे कर्यु छे तेनो अर्थ एवो छे के ए स्थानना अक्षरनी बे मात्राओ ए बे भिन्न स्वरोथी बोलवानी छे बीजी पक्ति · रिग री स री ग म ग री ग री सा. त्रीजी पक्ति म प प प प म प प ध म ग अने चोथी · रिग री स री ग म ग री ग री सा वर्वे पहेला पाच अक्षरो पछी यति माने छे एटले पहेला पाच अक्षरे ते यतिनो दड मूके छे अही वर्वे भिन्न स्वरो दर्शावे छे पण ते पण आ स्वरोने परपराना ज गणे छे आ स्वराकननु शीर्षक छे "व्यवहारमा बोलाती श्लोकनी सादी ढब" (गायन वादन पाठमाळा पु १ वि ३ छदोगान विनोद खड १ पृ ९)

प्राचीन समयमा पण पद्यरचनाओ गवाती अेवा प्रमाणो मळे छे मत्रपुष्पाजलिमा बोलाय छे "तदप्येष श्लोकोऽभिगीत। मरुत परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवा सभासद इति।" अही अनुष्टुप श्लोक अभिगीत एटले गवायानो उल्लेख छे अने आद्यकवि वाल्मीकिनो प्रसिद्ध श्लोक 'मा निषाद०' पण 'तन्त्रीलयसमन्वित' तत्रीना लयमा गाई शकाय एवो, के ह ध्रुवना शब्दोमां "वीणा साथे मेळ खाय एवो" हतो अने रामायणमा वर्णन छे के लवकुशे रामायणनो अमुक भाग मार्गसपदा

साभळेला पाठमा

धम्मो मगल मुक्किट्ठं अहिसा सयमो तवो।
देवावि त नमस्सन्ति जस्स धम्मे सयामणो।।

आनु उच्चारण नीचे प्रमाणे हतु

गागा गागागा गागागा गागागा गागागा गागा।
गागा गागा गागागागा गागा गागा गागागागा।।

गायो मार्ग शब्दनो अर्थ करता टीकाकार कहे छे "गान द्विविध मार्गो देशी चेति। तत्र प्राकृतावलबि गान देशी। सस्कृतावलबि तु गान मार्ग।" 'गान बे प्रकारनु छे, मार्ग अने देशी तेमा प्राकृतने अवलबीने करेलु देशी अने सस्कृतने अवलबीने करेलु मार्ग' अही आखा सर्गमा (रामायण, बालकाड सर्ग ४) लवकुशे रामायण गायानु ज वर्णन छे आ सर्ग प्रक्षिप्त छे छता प्राचीन छे, कालिदास पहेलानो छे एटले अत्यारे जे अनुष्टुपने आपणे वधारेमा वधारे अगेय मानीए छीए ते पण गवानो

खरी रीते, सगीतस्वरोना जरा पण आरोहअवरोह विनानु सादु पठन ए ख्याल आधुनिक छे, अग्रेजी साहित्यना पठनना परिचय उपरथी आवेलो छे कलाओनो विकासक्रम जोता सगीतस्वरो काव्यने आवश्यक न गणवा जोईए, जो के ए बन्ने कलानु सख्य योग्य स्थाने बहु ज सुभग नीवडे छे अने ए आधुनिक दृष्टि स्वीकारवा साथे स्वीकारवु जोईए के अग्रजी साहित्यना परिचय पहेला बधु पद्य सगीतना स्वरोथी एक रीते गवातु अत्यारे काव्यनु गान अने पठन बे भिन्न प्रक्रियाओ छ

आ उपरथी प्राचीन समयमा बधा पद्यो एक सरखी रीते ज गवाता के पठन गान वच्चे कई भेद हतो ए प्रश्न ऊभो थाय छे भरतनाट्यशास्त्रमा गान अने पठन बन्नेनो उल्लेख आवे छे एटले ए प्रश्न बहु ज जिज्ञासाप्रेरक बने छे भरतनाट्यशास्त्रना पाठनो अर्थ करवो बहु ज कठिन छे, एनी परपरा तूटी गई छे, तेमा क्षेपक भागो पुष्कळ छे, हजी एना परनी अभिनवगुप्त पादनी टीका आखी छपाई नथी, अने ए टीका पण दुर्बोध छे, ए बधी मुश्केलीओ छता ते विशे विचार करता हु जे कई समज्यो छु ते विद्वानोनी विचारणा माटे अही रजू कर छु

एक मुश्केली प्रारभमा ज आवे छे भरतनाट्यशास्त्रना प्रारभना अध्यायमा ज नीचेनो श्लोक आवे छ

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ १७॥

पितामहे नाट्यात्मक पाचमो वेद केवी रीते रच्यो तेनु आमा वर्णन छे "ऋग्वेदमाथी पाठ्य लीधु, सामवेदमाथी गीत लीधु यजुर्वेदमाथी अभिनयो लीधा अने अथर्वमाथी रसा लीधा" अही पाठ्य अने गीत बन्ने भिन्न कर्या छे ए उपरथी अत्यारे आपण काव्यने माटे इष्ट मानीए छीए तेवु सगीतरहित काव्यपठन ते समये पण थतु हतु एवो आनो अर्थ केटलाक करे छे पण एटलो बधो अर्थ

श्लोकमां अभिप्रेत गणातो नथी अहीं नाटयनो वेद गायेनो संबंध केवळ तेनु माहात्म्य बताववा कल्पेलो छे नहितर यजुर्वेद कई अभिनय माटे प्रसिद्ध नथी अने मरणादि अभिचारप्रयोगोवाळो अथर्ववेद कई रसोनु उत्पत्तिस्थान न घटी शके छता आ श्लोकनो गभीर रीते आ सदर्भमा विचार करवो होय तो कहेवु जोईए के आमा कहेला चार तत्त्वो एकबीजाथी अवश्यव्यावृत्त नथी एम जेम पाठय अभिनय सने गीत साथे होई शके तेम गीत पण पाठय साथे होई शके. पण एक तो अही पाठयनो अर्थ ज उपर कल्पेलो छे ते करता जुदो छे. अही पाटयनो अर्थ वागभिनय, नाटयमा प्रयोजाती वाणीसमग्र, गद्य पद्य गीत सर्व एवो थाय छे वाणीने नाटयमा मुख्य गणी छे माटे तेनो पहेलो उल्लेख कर्यो छे, अने तेना प्रमाणमा अभिनवगुप्त नीचेनो श्लोक उतारे छे

वाचि यत्नस्तु कर्तव्यो नाटयस्यैता तनू स्मृता।
अगनैपथ्यसत्त्वानि वाक्यार्थं व्यजयन्ति हि[२]॥ १४, २

भ ना गा वॉ १ पृ १४.

'सगीतरत्नाकर'ना नर्तनाध्यायमा पण नाटय विशे ए ज अर्थनो श्लोक छे.

ऋग्यजुःसामवेदेभ्यो वेदाच्चाथर्वण क्रमात्।
पाठ्य चाभिनयान्गीत रसान्सगृह्य पद्मभू ॥

'सगीतरत्नाकर' ७, ९

अही पण नाटयसामग्री वेदोमाथी उपर प्रमाणे लीधानु ज कहयु छे अने तेनी टीका करता कल्लिनाथ कहे छे "पाठ्य नाम वाचिकाभिनेय ।" अर्थात् पाठ्य एटले वाचिकाभिनय, नाटयमा उपयुक्त वाङ्मय समस्त एटले मात्र आ शब्द उपर आधार राखी पाठ्यगेयनो आपणा हालना अर्थमा भेद करी शकाय नही एटलु ज नही, आ "जग्राह पाठ्य ऋग्वेदात्" एमाथी अभिनवगुप्त पोतानी विलक्षण रीते स्वरसहित पठननो अर्थ काढे छे ते कहे छे, "तद् (पाठ्य) ऋग्वेदात् गृहीतम् । तस्य त्रैस्वर्यप्रधानस्य स्तोत्रद्वारेण मार्गोपकारित्वात् पाठ्यमपि च त्रैस्वर्यान्वितम्।" ऋग्वेदना पठनमा त्रण स्वरो प्रयोजाता, अने आ नाटयनु पाठ्य पण त्रैस्वर्यवाळु छे एम अभिनवगुप्त कहे छे आपणे आगळ जोईशु के अभिनवगुप्त पाठ स्थायिस्वरोमा करवानु कहे छे षड्ज पचम अने उपरनो षड्ज ए स्थायी स्वरो कहेवाय छे (भ. ना गा वॉ १ पृ १४)

२ अर्थ वाणी माटे यत्न करवो कारण के ते नाटयनु शरीर छे; अगनो अभिनय वस्त्रादिनो अभिनय अने सात्त्विक अभिनय वाक्यार्थने ज व्यक्त करे छे

भरतनाट्यशास्त्रमा आ वागभिनयनु लक्षण चौदमा अध्यायमा विस्तारपूर्वक आपेलु छे त्या स्वरव्यजन अने पदच्छेदथी माडीने व्याकरणना नियमो पण आपेला छे, जे बतावे छे के अही आसा वाणीना प्रयोगनो अर्थ छे "द्विविध हि स्मृत पाठ्य सस्कृत प्राकृत तथा॥" (एजन चौ २ अध्याय १४, ५ पृ २२५) सस्कृत अने प्राकृत एवा बे पाठ्यना प्रकारो छे अही पण पाठ्यशब्द वाणीमात्रनो वाचक छे आ अध्यायमा समासनु लक्षण आप्या पछी कहे छे के शब्दोथी बे प्रकारना पदबन्धो थाय छे, निबद्ध अने अनिबद्ध • —

विभक्त्यन्त पद ज्ञेम निबद्ध चूर्णमेव च।
तत्र चूर्णपदस्येह सविबोधत लक्षणम्॥ ३९:

'अनिबद्धपद छन्द' तथाचानियताक्षरम्।
अर्थापेक्ष्यक्षरस्यूत ज्ञेय चूर्णपद बुधै॥४०॥

निबद्धाक्षरसयुक्त यतिच्छेदसमन्वितम्।
निबद्ध तु पद ज्ञेय प्रमाणनियतात्मकम्॥ ४१॥

एजन पृ २३४

भावार्थ के पदोना ग्रथो बे प्रकारना निबद्ध अने चूर्ण तेमा चूर्णना पदो अनिबद्ध होय छे, तेमा छन्दोनो पादबध होतो नथी, तेना अक्षरो अनियत होय छे अने तेना अक्षरो अर्थनी अपेक्षाथी गूथायेला होय छे ते चूर्ण निबद्ध अक्षरोवाळु, यति अने छेद वाळु, अने प्रमाणथी नियत थयेलु ते निबद्ध आमा चूर्ण एटले गद्य, अने निबद्ध एटले पद्य ए ज वात अभिनवगुप्त पण कहे छे "यति विराम च्छन्दोऽक्षरसख्यानियम अक्षरनियमो गुरुलघुनिवेशनियम एतद्विहीन चूर्णपदमर्थशृगारवीराद्यपेक्ष्यक्षराणि परिमितानी भूयासि वा यत्रेति असमाससघट्टनात्मकमुक्तकमिति।³ इद तु केवल पठनकर्मत्वाद्गद्यमित्युच्यते।" (एजन पृ २३४-२३५) अही उपर मूळ श्लोकमा आवेली वात ज फरी कही छे (थोडु गाठनु उमेरेलु छे ते मारे अप्रस्तुत छे) महत्त्वनु ए छे के आपणे जेने गद्य कहीए छीए तेने अभिनवे पण गद्य ज कह्यु छे अने गद्यने 'केवळ

२-२ आनी जगाए काशी सस्कृत सीरीझनो 'अनिबद्ध पदवृन्दम्' (भ ना चौ अ १५, ३५, पृ १७२) पाठ छु वधारे सारो गणु छु

३ मूळमा 'मुक्तमिति' छे ते मे सुधारीने 'मुक्तकमिति' एम करेलु छे अही सादा गद्यने माटे ज चूर्ण शब्द वापर्यो छे तेनु पारिभाषिक नाम मुक्तक छे जुओ "वृत्तगन्धोज्झित गद्य मुक्तकम्" साहित्यदर्पण ६-३३०

पाठ्य' बरपु छे अही पाठ्य शब्द आपणने इष्ट पाठ्यना अर्थमा वापरेलो छे वाच्य पाठ्य छे पण गद्य जेवु 'केवळ पाठ्य' नथी एवो आनो फलितार्थ छे

गद्य विशे आटलु कह्या पछी (अने आ पछी गद्य विशे विशेष आवतु नथी) पद्य विशे विवरण आवे छे चौदमा अध्यायना वाकीना भागमा एकथी छव्वीश अक्षर सुधीना वृत्तोना नामो अने तेमनी प्रस्तारसख्या आपेली छे अक्षरगणो अने लघुगुरुना स्वरूपो, यतिनु स्वरूप वगेरे पिंगलनी चर्चा करेली छे पदरमा अध्यायमा अक्षरमेळ वृत्तो अने आर्यानु स्वरूप आपेलु छे सोळमा अध्यायमां काव्यना अलकारो आपेला छे सत्तरमा अध्यायमा प्राकृत पाठ्यना लक्षणो कह्या छे, अने त्या पण सस्कृतनी पेठे ज वर्णथी शरू करी व्याकरण आपेलु छे, जे बतावे छे के पाठ्य अही पण भाषाना अर्थमा वापरेलु छे छेवटे कहे छे

"एव भाषाविधान तु ज्ञात्वा कर्माण्यवेक्षत ॥ १०२ ॥
तत पाठ्य प्रयुजीत षडलकारसयुतम् ॥ (एजन पृ ३८५)

अही सुधी वाणीनी वात करी हवे ए पाठ्यनो प्रयोग केम करवो, नाटकमा ए केवी रीते उच्चारवु ते कहे छे अही एक वात कहेवी जोईए के पाठ्यमा जोके गद्यनो समावेश थाय एवी आपणे अपेक्षा राखीए पण अहीयी जे चर्चा चाले छे ते सर्व छदोना पठननी ज छे चर्चामा जेटला दृष्टान्तो आवे छे ते सघळा श्लोकोना ज छे आखो सदर्भ जोता तेनी खातरी थशे

हवे आपणे जोईए के भरत पाठ्य विश शु कहे छे उपर षडलकारसयुत पाठ्य कह्या पछीनी चर्चा गद्यमा आवे छे "पाठ्यगुणानिदानी वक्ष्याम । तद्यथा सप्तस्वरा, त्रीणि स्थानानि, चत्वारो वर्णा, द्विविधा काकु , षडलकारा , षडगानीति ।' 'पाठ्यमा आटला गुणो जोईए (१) सप्त स्वरो (२) त्रण स्थानो (३) चार वर्ण (४) बे प्रकारना काकु (५) छ अलकारो (६) छ अगो ' "एषामिदानी लक्षणमभिव्याख्यास्याम तत्र सप्त स्वरा नाम–षड्जर्षभगान्धारमध्यमपञ्चमधैवतनिषादा । त एते रसेषूपपाद्या । यथा —

हास्यशृगारयो कार्यौ स्वरौ मध्यमपचमौ । १०३ ॥
षड्जर्षभौ तथा चैव वीररौद्राद्भुतेष्वथ ।
गान्धारश्च निषादश्च कर्तव्यौ करुणे रसे ॥
धैवतश्चैव कर्तव्यो बीभत्से सभयानके ।" एजन पृ ३८७

'सात स्वरो छे तेमा हास्यमा अने शृंगारमा मध्यम अने पचम, वीर रौद्र अने अद्‌भुतमा षड्ज अने ऋषभ, करुणमां गान्धार अने निषाद⁴, बीभत्स अने भयानकमा धैवत प्रयोजवो।'

अही एक प्रश्न थाय छे भरतनाटयशास्त्रमा गेय उपर स्वतत्र अध्यायो छे वळी सस्कृत नाटकोमा अमुक जगाए पात्र गाय छे एवो निर्देश होय छे अने सामान्य रीते घणाखरा पद्यो उपर एवी सूचना होती नथी एटले प्रश्न थाय छे के सामान्य पद्योना पठनमा अने नाटयसूचना प्रमाणे गवाता गीतमा फरक शो? आ ज प्रश्न टीकाकार अभिनवगुप्त लई तेनो खुलासो करे छे "स्वरगत वितत्य गेयाधिकारे प्राटयिष्याम। . उदात्तानुदात्त-स्वरितकपितरूपतया स्वराणा यद्रक्तिप्रधानत्वमनुरणनमय तत्त्यागेन उच्च-नीचमध्यमस्थानस्पर्शितमात्र पाठ्योपयोगीति दर्शितम्। यदि हि स्वरगता रक्ति पाठ्ये प्राधान्येन थवलब्येत तदा गानक्रियासौ स्यात्, न पाठ।" (एजन पृ ३८५) भावार्थ के स्वर सबधी विस्तार करीने गेयना प्रकरणमा कहुचु छे कहेवानु ए छे के 'स्वरो उदात्त अनुदात्त स्वरित अने कपित थता तेनु रणकार जेवु जे रक्तिप्रधानत्व थाय तेनो त्याग करीने स्वरो उच्च नीच मध्यम स्थानने मात्र स्पर्श करे एटलु ज पाठ माटे उपयोगी छे जो स्वरनी रक्ति—अनु-रणन—लावो रणकार पाठ्यमा पण थाय तो ते पछी गान थयु पाठ्य न थयु' आगळ जता ए ज वात जुदी रीते कहे छे "प्राणभूत तावद् ध्रुवागान प्रयोगस्य, तत्र जात्यशकविनियोगो भविष्यति तदिदानी पाठावसरे किं सर्वथैव त्यक्तव्यमित्याशकादामनाय तत्स्थायिस्वराश्रयण प्रमुखीकृत्य पाठ कर्तव्य इत्येतत्स्वराभिधानस्येह प्रयोजनम्।" (एजन पृ ३८६) भावार्थ के "ध्रुवागान (जेने विशे आगळ अध्याय आवे छे) ए प्रयोगनो प्राण छे, तेमा जाति अने अशकनो विनियोग थशे, ते आ पाठ करती वखते सर्वथा छोडी देवा? एवी शकाना समाधान माटे 'स्थायी स्वरोना आश्रयने मुख्य राखीने पाठ करवा' एम आ स्वरोना उल्लेखनु अही प्रयोजन छे" अही आवता घणा पारिभाषिक शब्दोनो अर्थ अज्ञात रहेता पण एटलु निष्पन्न थाय छे के गानमा अने आ पाठमा मुख्य भेद ए हतो के गानमा लाबु अनुरणन—रणकार—आणवु प्रधान हतो तेने आ पाठ्यमा स्थान नथी, पण नाट्य-शास्त्रने अभिमत पाठमा छन्दोना पठनमां स्वरोनु अवलबन थतु अने आ समजी शकाय एवु छे लाबे स्वरे–रणकार साथे गाता शब्दोनु उच्चारण

४ तोडी राग करुण रसने अनुकूळ गणाय छे अने तेमा गान्धार प्रधान होय छे

गीतमा ढवाई जाय, अने तेनो अर्थ स्फुट न थई शके. पण स्वरोधी अनुरणन विना पठता अर्थ स्फुट थई शके.

अभिनव गुप्तनी टीका १८ मा अध्याय सुधी ही गायकवाड ओरिएन्टल सिरीझमा बहार पडी छे ते पछीना अध्याय माटे चौखबानी अने निर्णयसागरनी टीका विनानी आवृत्तिओ उपर आधार राखवानो रहे छे ते उपरथी जणाय छे के अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो पण ध्रुवा बनी शकता अने त्यारे ध्रुवा तरीके गवाता ३२मा ध्रुवाध्यायमा आवा अनेक विधानो मळी रहे छे.

गान्यगानि वस्तादयैव गीतकान्तर्गतानि तु।
तानि छन्दोगनैर्वृत्तर्विभाव्यन्ते ध्रुवास्तथा।
भ ना चौ ३२, ११ पृ ३८४

भावार्थ के गीतनी अदरना अगो अने वस्तु छन्दोगत वृत्तमा आवे त्यारे ते छन्दो पण ध्रुवा कहेवाय. आ अध्यायमा ध्रुवा तरीके केटलीक पद्यरचनाना स्वरूप आपेला छे तेमा केटलीक जातिरचनाओ आवे छे, अने ते साथे रथोद्धता वशपत्रपतम् प्रमिताक्षरा जेवा अक्षरमेळवृत्तो पण आवे छे (एजन ३२, ३०६ पृ ४१४) तेम ज पुट (एजन ३२, ४१२ पृ ४२३) अपरवक्त्र (एजन ३२, ४१५) जेवा पण आवे छे अपरवक्त्रनो प्रयोग गीत तरीकेनो शाकुन्तलमा पण मळी आवे छे पाचमा अकना प्रारभमा ज अपरवक्त्र आवे छे अने ते गवाय छे एवु नाट्यसूचन छे तेनी टीकामा राघव भट्ट एना गानना लक्षणो रचित ग्राम राग आलाप वगेरेनो उल्लेख करे छे

निर्णयसागरनी आवृत्तिमा एक बीजो भेद कह्यो छे ते पण जाणवा जेवो छे

प्रायेण तु स्वभावात् स्त्रीणा गान नृणा च पाठ्यविधि ।
भ ना नि ३३, ५ पृ ६०४

आने ज मळता अर्थनु वाक्य चौखबानी आवृत्ति (३२, ४६८ पृ ४२७) मा आवे छे आ उपरथी मने लागे छ के गान घणे भागे स्त्रीओने भागे ज आवतु हशे अने पुरुषो त्रिस्वरथी पाठ करता हशे

आ साथे एक बीजी बाबत पण नोधवा जेवी छे 'सगीतरत्नाकर'ना चोथा प्रवन्धाध्यायमा गद्य गावानी पद्धति छे तेमा ताल साथे तेम ज ताल विना गावानु आवे छे एटले गद्यप्रबन्धो गवाता हशे एम जणाय छ ('सगीत-रत्नाकर,' ४, १८४–१९७) तेना उपरनी कल्लिनाथनी टीका जोता पण ए

४

मात्रागर्भ वृत्तो अने अनुष्टुप

संस्कृतवृत्तोना संधिओ विशे अने तेना पादना स्वरूप विशे आगळ चर्चा करीए ते पहेला मात्रागर्भ वृत्तो अने अनुष्टुपने गया प्रकरणनी दृष्टिए ज जोई लेवा ठीक पडशे. मात्रागर्भ वृत्तो आगळ कह्यु तेम अर्धां मात्रामेळी छे, अर्धां लगात्मक छे, पण ए सस्कृत साहित्यकारोने हाथे केळवाई केळवाई छेवटे जुदा जुदा स्वरूपोमा सळग लगात्मक बनेला छे. ए रूपोने आपणे वियोगिनी वगेरे अर्धसम वृत्तोमा गया प्रकरणमा जोया. ए रीते आ मात्रागर्भ वृत्तोने सस्कृत वृत्तो साथे मार्मिक सबध छे. विषमवृत्तो सपूर्ण लगात्मक गणाय छे पण गया प्रकरणमा ते में लीधा नथी. तेने पण वृत्तोना मेळनी चर्चा पहेला लई लेवा जोईए. तेने आ प्रकरणमा लई आववानु एक कारण ए छे के हु एक दृष्टिए तेमने मात्रागर्भ गणु छु. एटले आ प्रकरणमा ए विषमवृत्तो आवी जशे.

अनुष्टुपने पण आ ज प्रकरणमा हु लईश. ते लगात्मक वृत्त नथी, तेम तेमा मात्रामेळ जातिना लक्षणो पण स्पष्ट नथी. तेने कया वर्गमा मूकवो ए पण चर्चानो विषय छे. सस्कृत शिष्ट साहित्यमा वपराता बधा वृत्तोमा ते सौथी वधारे वपरायेलो छे. ए जूनामा जूनो छे, अने वेदकालना वृत्तो साथे ए सौथी वधारे गाढ सबध राखे छे, ए रीते एनु स्थान जातिछन्दोमा नथी, पण सस्कृत वृत्तोमा छे तेथी तेना परपरागत स्वरूपनु दर्शन पण आपणे अही ज करीशु

मात्रागर्भ वृत्तोमा वैतालीयने नामे ओळखातो वर्ग ज महत्त्वनो छे वैतालीयनु लक्षण एवु अपाय छे के तेना विषम पादमा १४ मात्रा होय छे अने सम पादमा १६ मात्रा होय छे. आ पादोना अत तरफनी आठ मात्राओ स्थिर लघु-गुरु क्रमवाळी छे. तेनु स्वरूप छे गालगालगा अर्थात् वैतालीयना चारेय चरणोमा अते गालगालगा आवे छे ए लगात्मक भाग बाद करता विषम चरणमा छ मात्रा अने सम चरणमा आठ मात्रा लगात्मक नथी. पण एटलो नियम छे के बेकी स्थाननी मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे मळवा देवी नही. एटले बे बन्ने चरणोमा बीजी त्रीजी साथे, चोथी पाचमी साथे उपरात सम चरणोमा छठ्ठी सातमी साथे, मळवा देवी नही. अर्थात् ए बे

ज वक्तव्य जणाय छे. पण आ, प्रबन्धोने ज लगतु हशे, नाटकना गद्यभागने लगतु नही होय एम हुं मानु छु.

अत्यारे पण गद्य गवाय छे. लूटारा संबधी गद्य पवाडाओ मैं गवाता साभळया छे. कोईए आनो सग्रह करी लेवो जोईए. ते सिवाय आपणामा आज सुधी गद्यने आरोहअवरोहथी बोलवानी पद्धति चालनी आवेली छे. कोसियो कोस चलावता कूवा काठे ऊभो रही लाबा रागे रामैयो बोले छे ते गद्य छे जूनी ढबे स्त्रीओ ओरडामा बेसीने मो वाळे छे त्यारे आरोहअवरोहथी गद्य बोलती होय छे. डायलावाळा डाकला वगाडता लाबे स्वरे आरोह-अवरोहथी गद्य बोले छे धूणनी स्त्रीने गद्य गाती एक जग्याये श्री पन्नालाल पटेले वर्णवी छे. हरिकीर्तनकारो उपदेश करता गद्यने स्वरोनो आरोहअवरोह आपे छे. वार्ता करनारो मीर घणीवार गद्य पण आरोहअवरोहमा बोले छे. जूनी पद्धतिए कथा करता महाराजो पण ए ज आरोहअवरोहनो उपयोग करे छे. नवी रीते नही भणेलाओने आरोहअवरोहथी वार्ता वाचता साभळया छे. स्त्रीओ अने छोकरीओ एकबीजीने गाळो देता के शाप आपता लाबे रागे स्वरो वापरती घणाए साभळी हशे. हु मानु छु के वधु लागणी-वाळु गद्य आज सुधी आपणे त्या स्वरोना आरोहअवरोहथी बोलातु. गद्य, वातचीत करता होईए एम बोलवु—वाचवु, ए पण आधुनिक पद्धति ज हुं गणु छु. जो के हवे शिक्षितोमा ए एटली व्यापक थई गई छे के एथी अन्यथा हशे, अने समाजना सूणेखाचरे अत्यारे पण छे एवु घणा जाणता नथी.

अही प्रारम्भनी मात्राओ विशे आपेला नियमो स्वाभाविक छे. बेकी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे मळी न जवी जोईए ए नियम तो आगळ मात्रामेळ रचनामा वारवार आवतो जणाशे. छ मात्रा भेगी न थवा देवी ए नियम पण एकविधता अने लघुबाहुल्यथी थती शिथिलता टाळवा छे ए स्पष्ट छे. पण ए नियमो वर्या पछीना बधा रूपो पण मने सुन्दर नथी लागता. नारायणे बधा शक्य पर्यायो आप्या छे अने वस्तुत ते परपरागत पिंगल-नियत छे. पण ए बधा रूपो वपरायेला मळी आवता नथी. पटवर्धन 'छन्दोरचना'मा (पृ० १०७–०८) कहे छे के 'सूत्रकृतांग'मा आ वृत्तनो पुष्कळ वपराट थयो छे अने तेमा मात्र गागागागा रूप ज घणुखरू वपरायु छे अने समसा क्याक ज गालगालगा वपरायु छे पण वैतालीयनु स्वरूप मात्र 'सूत्रकृताग' उपरथी निर्णीत न करी शकाय. ए सूत्रकाल तेम ज पुराणोनो आख्यानकाल ए बन्नेने हु छन्दोनो प्रयोगकाळ मानु छु, तेमा छन्दोना अतिम स्वरूपो आवता नथी, अने तेथी ए स्वरूपोने हु कलाशुद्ध गणतो नथी, — जोके तेमाथी कलाना भिन्नभिन्न स्वरूपोना सूचनो मळे ए शक्य छे. एटले वैतालीयनु स्वरूप निर्णीत करवा माटे आपणे शिष्ट साहित्यमाथी दृष्टान्तो लई तेनो अभ्यास करवो जोईए. पण शिष्ट साहित्य जोता जणाय छे के आ छन्द बहु ओछो वपरायो छे कालिदासे क्याय — तेना नाटकोमा पण — ते वापर्यो नथी. तेथी ऊलटु, एना लगात्मक रूपोनो शिष्ट साहित्यमा पुष्कळ प्रयोग थयो छे. ए बतावे छे के शिष्ट साहित्यकारोने आ मात्रागर्भ स्वरूप सुन्दर जणायु नथी. एटले शिष्ट साहित्यमाथी आपणे जे दृष्टान्तो लईशु तेना अभ्यासमा ए पण जोवानु के आ छन्दो धीमे धीमे केवी रीते लगात्मक रूप लेता जाय छे.

आपणा नाटकोमा मने मात्र भासना एक नाटकमा, अने 'मृच्छकटिक'मा ज मात्रागर्भ रूपो मळ्या छे. तेमा हु पिंगलना दृष्टान्तो उमेरीने आ प्रश्ननी पर्येषणा करीश मूळ श्लोकनी साथे तेनु लगात्मक रूप पण सामे आपीश.

(१) णेवच्छविसेसमडिदा। — गागा ललगा लगालगा
पीदिं उवदेदु उवटिठ्आ॥ — गागालल गागा लगालगा
ळाअगिहे दिण्णमुळिळ आ। — गालल गागा लगालगा
काळत्तसेण मुहुत्तदुव्वळा॥ — गाललगा ललगा लगालगा
प्रतिज्ञायौगन्धरायण, अक ३, १

(२) सुअर्णेहु भिच्चाणुकंपके। — ललल गागा लगालगा
शामिएँ णिद्धणके वि शोहदि॥ — गाललगा ललगा लगॉलगा
पिशुणे उण दव्वगव्विदे। — ललगा ललगा लगालगा

मात्राओ मळीने त्या गुरु थई शके नहीं. आ नियम विषम चरणमा दा सशाथी बताबी शकाशे. ए नियमनो उपयोग करता विषम चरण नीचे प्रमाण थाय :—

दादादागा लगालगा

दा मूकवाथी कोई बेकी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे भळी शकशे नही. दा एटले गा अथवा लल. गा मा बीजी मात्रा वधाई गई छे ते छूटी पडी शकशे नहीं, अने लल मा बेकीमात्रा छूटी स्वतन्त्र छे, ते पछीनी मात्रा साथे भळी शकशे नही आ नियम प्रमाणेना निषिद्ध स्वरूपो लगागाल लगालदा, दालगाल थाय. ए बाद करता उपादेय रूपोनो प्रस्तार नारायण भट्ट 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामा आ प्रमाणे आपे छे: गागागा, ललगागा, गाललगा, लललल्गा, गागा लल, ललगालल, गाललल, लललललल. आपणे जोई गया ते वियोगिनीमा आमानु ललगालल रूप आवे छे.

गगने घुमराइ वादळी
ललगा ललगा लगालगा

अने अपरवक्त्रमा सर्व लघु रूप लललललल वपरायु छे.

मनवि उपरना ज मीठडा
लललललगा लगालगा

विषमपाद माटे आपणे दादादागा लगालगा न्यास स्वीकार्यो तेम समपाद माटे आपणे दादादादा नही मूकी शकीए तेनु एक ज कारण ए छे के समचरण विशे एक एवो विशेष नियम छे के तेमा कोई जगाए छ मात्राओ निरंतर एटले अव्यवहित, सळग लघुओथी न भरी शकाय. दादादादा करीए तो छ लघुओ वाळा पर्यायो अंदर आवी जाय. आ निषिद्ध पर्यायो बाद करता सम-चरणमा नीचेना स्वरूपो आवी शके एम नारायण भट्टे बतावे छे. : गागा-गागा, ललगागागा, गाललगागा, लललल्गागा, गागाललगा, ललगाललगा, गाललललगा, गागागालल, ललगागालल, गाललगालल, लललल्गालल, गागा-लललल, ललगालललल. (वृ. र. २, १२ अने तेना पर नारायणनी टीका)

आ वैतालीयना चरणोमा अंते एक गुरु उमेरवाथी औपच्छन्दसिक नामनो वैतालीयनो पेटाविभाग थाय छे.[1] (छ. शा. ४, ३३)

---

१. छन्दशास्त्र आने औपच्छन्दसक कहे छे. बीजा पिंगलो अने काव्योमां औपच्छन्दसिक नाम मळी आवे छे.

अही प्रारंभनी मात्राओ विशे आपेला नियमो स्वाभाविक छे बेकी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे मळी न जवी जोईए ए नियम तो आगळ मात्रामेळ रचनामां वारवार आवतो जणाशे छ मात्रा भेगी न थवा देवी ए नियम पण एकविधता अने लघुबाहुल्यथी थती शिथिलता टाळवा छे ए स्पष्ट छे पण ए नियमो कर्या पछीना बधा रूपो पण मने सुन्दर नथी लागता. नारायणे बधा शक्य पर्यायो आप्या छे अने अलबत्त ते परपरागत पिंगल-नियत छे पण ए बधा रूपो वपरायेला मळी आवता नथी पटवर्धन 'छन्दोरचना'मा (पृ० १०७-०८) कहे छे के 'सूत्रकृतांग'मा आ वृत्तनो पुष्कळ वपराट थयो छे अने तेमा मात्र गागागागा रूप ज घणुखरू वपरायु छे अने सममा बधाक ज गालगालगा वपरायु छे पण वैतालीयनु स्वरूप मात्र 'सूत्रकृतांग' उपरथी निर्णीत न करी शकाय ए सूत्रकाल तेम ज पुराणोनो आख्यानकाल ए बन्नेने हु छन्दोनो प्रयोगकाल मानु छु, तेमा छन्दोना अंतिम स्वरूपो आवता नथी, अने तेथी ए स्वरूपोने हु कलाशुद्ध गणतो नथी, —जोके तेमाथी कलाना भिनभिन स्वरूपोना सूचनो मळे ए शक्य छे एटले वैतालीयनु स्वरूप निर्णीत करवा माटे आपणे शिष्ट साहित्यमाथी दृष्टान्तो लई तेना अभ्यास करवो जोईए पण शिष्ट साहित्य जोता जणाय छे के आ छन्द बहु ओछो वपरायो छे कालिदासे क्याय —तेना नाटकोमा पण —ते वापर्यो नथी. तेथी ऊलटु, एना लगात्मक रूपोनो शिष्ट साहित्यमा पुष्कळ प्रयोग थयो छे ए बतावे छे के शिष्ट साहित्यकारोने आ मात्रागर्भ स्वरूप सुन्दर जणायु नथी एटले शिष्ट साहित्यमाथी आपणे जे दृष्टान्तो लईशु तेना अभ्यासमा ए पण जोवानु के आ छन्दो धीमे धीमे केवी रीते लगात्मक रूप लेता जाय छे

आपणा नाटकोमा मने मात्र भासना एक नाटकमा, अने 'मृच्छकटिक'मा ज मात्रागर्भ रूपो मळ्या छे तेमा हु पिंगलना दृष्टान्तो उमेरीने आ प्रश्ननी पर्येषणा करीश मूळ श्लोकनी साथे तेनु लगात्मक रूप पण सामे आपीश.

(१)	णेवच्छविसेसमंडिदा।	गागा ललगा लगालगा
	पीदिं उवदेदु उबट्टिआ॥	गागालल गागा लगालगा
	ळाअगिहे दिण्णमुळ्ळि आ।	गालल गागा लगालगा
	काळवसेण मुहुत्तदुव्वळा॥	गाललगा ललगा लगालगा
	प्रतिज्ञायौगन्धरायण, अक ३, १	
(२)	सुअणहु भिच्चाणुकंपके।	लललल गागा लगालगा
	सामिएँ णिद्धणके वि सोहृदि॥	गालल्गा ललगा लगालगा
	पिशुणे उण दव्वगव्विदे।	ललगा ललगा लगालगा

दुक्कले क्खु पलिणामदालुणे ।।	गालगाल ललगा लगालगा
मृच्छकटिक, अक ३, १	
(३) पचज्जण जेण मालिदा ।	गागा ललगा लगालगा
इत्थिअ मालिअ गाम लविसदे ।।	गाललगा ललगा लगालगा
अवले अ चडाल मालिदे ।	ललल्ल गागा लगालगा
अवस्र शे णल शग्ग गाहृदि ।।	ललगागा ललगा लगालगा
एजन ८, १	
(४) शिल मुडिदे तुड मुडिदे ।	ललगा ललगा लगालगा
चित्तण मुडिदे कीदा मुडिदे ।।	गाललगा ललगा लगालगा
जाह उण अ चित्त मुडिदे ।	गालल ललगा लगालगा
शाहु शुस्टु शिल ताह मुडिदे ।।	गालगाल ललगा लगालगा
एजन ८, २	
(५) लज्जाए भीलुदाएँ वा ।	गागा गागा लगालगा
चालित्त अलिए णिगूहिदुम् ।।	गागागा ललगा लगालगा
दाअ मालिअ अत्थकालणा ।	ललगा ललगा लगालगा
दाणिँ गूहदि ण त हि भस्टके ।।	गालगाल ललगा लगालगा
एजन ९, १७	
(६) सच्चेण सुह क्खु लब्भइ ।	गागा ललगा लगालगा
सच्चालावि ण होइ पावअ ।।	गागागा ललगा लगालगा
सच्च त्ति दुवेवि अक्खरा ।	गागा ललगा लगालगा
मा सच्च अलिएण गूहेहि ।।	गागागा ललगा लगालगा
एजन ९, ३५	

अही (२), (३), (४) अने (६) श्लोको श्री गोडबोले सपादित 'मृच्छकटिक'नी पहेली आवृत्तिमाथी उतार्या छे. (५) निर्णयसागरनी ७मी आवृत्तिमाथी छे. (६)नी बीजी पक्तिना छेल्ला शब्दनो पाठ खोटो जणायाथी टीकामा आपेला 'पापकम्' शब्दनो आधार लइ सुधार्यो छे.

आ पछी हु पिंगलना 'छन्द.शास्त्र'ना दृष्टान्तो उतारु छु:

(७) धुरक्षीणशरीरसचया	गागा ललगा लगालगा
व्यक्तीभूतशिरास्थिपजरा ।	गागागा ललगा लगालगा
पैर्दा. परर्पैस्तवारयो	गागा ललगा लगालगा
वैतालीयतनु वितन्वते ।।	गागागा ललगा लगालगा ।
(८) तव सन्ति मदाश्रवीक्षितै:	ललगा ललगा लगालगा
प्रसरद्भिः श्रवणान्तगोचरे ।	ललगागा ललगा लगालगा

विशिखैरिव तीक्ष्णकोटिभि ललगा ललगा लगालगा
प्रहत प्राणिति दुष्कर नर ॥ ललगागा ललगा लगालगा

आ पछी बे दृष्टान्तो औपच्छन्दसिकना लउ छु

(९) वाक्यैर्मधुरै प्रतार्य पूर्व गागा ललगा लगा लगागा
य पश्चादतिसदधाति मित्रम्। गागागा ललगा लगा लगागा
त दुष्टमतिं विशिष्टगोष्ठ्या गागा ललगा लगा लगागा
मौपच्छन्दसक वदन्ति बाह्यम्॥ गागागा ललगा लगा लगागा

(१०) परमर्मनिरीक्षणानुरक्त ललगा ललगा लगा लगागा
स्वयमत्यन्तनिगूढचित्तवृत्तिम्। ललगागा ललगा लगा लगागा
अनवस्थितमर्थलुब्धमारा ललगा ललगा लगा लगागा
दौपच्छन्दसक जहीहि मित्रम्॥ गागागा ललगा लगा लगागा

आपणे वैतालीयना लक्षणमा आगळ जोयु के तेनी चारेय पक्तिमा अते गालगालगा आवे छे आपणा दसेय दृष्टान्तो जोता जणाशे के आमा लगालगा ए अत्यसधि छे अने तेनी आगळनो गा ए मात्रात्मक खडना सधिनो अत्य गुरु छे आवता प्रकरणमा जोईशु तेम दरेक सधिने अते गुरु होय छे, अने ए रीते आ गुरु पण पोताना सधिनो अत्य गुरु छे हवे आ दसेय दृष्टान्तो जोता जणाशे के आ गुरुवाळो सधि धीमे धीमे ललगानु रूप ले छे आ दस श्लोकोना चालीस चरणोमा पाच ज स्थाने मात्र गागा रूप मळे छे अने पहेला ज 'प्रतिज्ञायौगधरायण'ना दृष्टान्तमा एक ज श्लोकमा बे वार गागा आवे छे, बाकी पछीना दृष्टान्तोमा जे गागा मळे छे ते आखा श्लोकमा एक ज होय छे अर्थात् आ रूप धीमे धीमे ललगा रूप करता ओछु सुन्दर जणायु अने पिंगलना दृष्टान्तोमा पण ललगा ज छे, जो के त्या गागा थई शकतु हतु, ए बतावे छे के ललगा वधारे सुन्दर छे, ते ज धीमे धीमे स्थिर थतु जाय छे अने अते वियोगिनीमा ते ज स्थिर थाय छे

आ गागा के ललगा रूपनी पहेला हवे विषम चरणमा चार मात्राओ रही आवा विषम चरणो आ दस श्लोकमा वीस आवे ते वीसमाथी मात्र बे ज चरणोमा लललल रूप वपरायु छे अर्थात् ए रूप सुदर नथी ए रूप एक ज श्लोकमा बे वार क्याई वपरायु नथी ए पण बतावे छे के ए सुनिर्वाह्य नथी तेम ज गालल रूप पण वीस चरणमा मात्र बे वार वपरायु छ ए रूप धीमे धीमे अदृश्य थतु थतु गुर्वन्त ललगाने स्थान आपे छे अने ए रीते वियोगिनीना प्रारभमा ललगा बे वार स्थान प्राप्त करे छे ते पछी विचारवा जेव रूप गागा रहे छे वृत्तामा गागा सधि तरीके आवी शके छे

ते गुर्वन्त छे ज. एटले ए रूप शक्य छे. ए बीज चरणोमां नव वार वपरायुं छे अने ए स्वरूप वृत्तमां पण स्वीकारायुं छे. जो के ए कविओने प्रिय बन्युं नथी. ए न बन्युं एनुं कारण ए छे के आ लघुबहुल वृत्तनुं पठन ललित-भावोने अनुकूल छे, तेमां प्रारंभमां ज बे गुरुओ शोभता नथी. ए बे गुरुवाळो वैतालीय छन्द रणपिंगल आपे छे. तेनुं नाम छे वैसारी.

वैसारी: गागा ललगा लगालगा
गागागा ललगा लगालगा
रणपिंगल पृ. ४७२

बीजा कोई पिंगलमांथी मने आ छन्द मळ्यो नथी. पण आनुं ज औपच्छन्दसिक स्वरूप, एटले अंते एक गुरु उमेरेलुं स्वरूप बीजा पिंगलोमां पण प्रसिद्ध छे तेनुं नाम छे भद्रविराट.

भद्रविराट: गागा ललगा लगा लगागा
गागागा ललगा लगा लगागा
रणपिंगल पृ. ४७३, तेमज छं. शा. ५, ३५

आ रीते विचार करतां मात्रागर्भ वैतालीयना स्वरूपमां विषम चरणनो न्यास नीचे प्रमाणे आपी शकाय.

ललगा ललगा लगालगा
गागा गा

अलबत्त आमां गुरुपक्षना बधा विकल्पो भेगा करीए तो पंक्तिना प्रारंभमां एक साथे चार गुरुओ आवे छे पण प्रयोगमां कोई कवि एवुं भाग्ये ज करे. उपर आपेला वैसारी अने भद्रविराट बन्ने दृष्टान्तो बतावे छे के गुरु-ओनी एवडी लांबी कतार टाळवानी छे.

हवे सम चरणनो विचार करीए. आ प्रश्ननो विचार जरा जुदी रीते करवानी जरूर छे. वैतालीय समूहना विषम अने सम चरणोनी मात्रामां जे फरक छे ते मात्र बे मात्रानो छे. हवे वैतालीयना बधा लगात्मक रूपो जोतां जणाशे के आ वधारानी बे मात्रानुं न्यासमां चोकस स्थान छे:

वियोगिनी: ललगा ललगा लगालगा
ललगागा ललगा लगालगा
अपरवक्त्र: ललललललगा लगा लगा
ललललगा ललगा लगालगा

बन्नेमा ए बे मात्रा, गुरु रूप लई चरणना न्यासमा पाचमी छठ्ठी मात्रानु स्थान ले छे में उपरना न्यासमा ए गुरुने दर्शाववा तेनी नीचे रेखा करी छे. वैतालीयना बधा लगात्मक रूपोमा ओक सरखी रीते प्रतीत थतु आ लक्षण हवे मात्रागर्भमा छे के नही ते जोईए.

आगळ आपेला दृष्टान्तोमा आ पाचमी छठ्ठी मात्रा शोधवा जता जणाशे के दृष्टान्त २, ४ अने ५ नु चोथु चरण गालगाल छे आमा चोथी अने पाचमी मात्रानो गुरु छे, अर्थात् अही पाचमी छठ्ठी मात्रा छूटी ज नथी हवे आ रूप ए रीते वैतालीयना सामान्य नियमोनी विरुद्धनु छे वैतालीयमा कोई वेकी मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे भळी शके नही अही चोथी मात्रा पाचमी साथे भळी छे पिंगलना सूत्रो जोता जणाय छे के आ एक अपवादरूप वैतालीय छे जेने प्राच्यवृत्ति कह्यो छे तेमा चोथी मात्रा पाचमी साथे जोडाई शके छे. (छ शा ४, ३७) आ अपवादना त्रण दाखलाना त्रण चरणो बाद करता बाकीना दाखलाना सत्तर सम चरणोमा मात्र दृष्टान्त १ मा ज पाचमी छठ्ठी मात्रा बन्ने लघु छे, एक गुरुरूपे बधायेली नथी, बाकी बधा दृष्टान्तोमा ए मात्राओ गुरुरूपे ज उपस्थित थाय छे एटले आपणे एव नियम करी शकीए के सम चरणोमा पाचमी छठ्ठी मात्राओ मळीने गुरु थवो जोईए आम करीशु एटले वैतालीयना सम चरणनो बीजो नियम के तेमा प्रारभमा थयाय पण छ लघुओ निरतर —अव्यवहित आववा न जोईए ए एनी मेळे पळाई जशे सम चरणमा मात्रागर्भ विभागमा कुल आठ मात्राओ छे, तेमा पाचमी छठ्ठी गुरु बनता ए गुरुनी आगळ के पाछळ थयाय पण छ लघु मात्राने आववाने अवकाश रहशे नही एटले एवो नियम करी शकाय के सम चरणमा पाचमी छठ्ठी मात्रा गुरु तरीके आववी जोईए एम करीशु एटले सम चरणमा पण विषमनी पेठे, पहेली चार मात्राओ मात्र मात्रागर्भ रहेशे आपला दृष्टान्तोमा चार मात्राओ कोई पण जगाए सर्वलघु (लललल) रूपे आवती नथी मात्र चार ज जगाए १, २, ३, ४ श्लोकोमा गालल रूपे आवे छे एटले ए लघ्वन्त रूपने आपणे सहेलाईथी सौष्ठवने माटे अनुचित गणी शकीए बाकी गागा रूपे नव जेटला मळी आवे छे एटले अही पण आपणे गुर्वन्त गागा अने ललगानो ज विकल्प राखी शकीए ए रीते सम चरणनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय

$$\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}\ \text{गा}\quad \frac{\text{लल}}{\text{गा}}\ \text{गा लगालगा}$$

बन्ने चरणो भेगा मूकता:

विषम . $\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}$ $\frac{\text{लल}}{\text{गा}}$ गा लगालगा

सम : $\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}$ गा $\frac{\text{लल}}{\text{गा}}$ गा लगालगा

अही एटलु उमेरवु जोईए के उपरना न्यासमा विषम पादमा चार गुरुओ अने सम पादमा पाच गुरुओ सळग आववानी शक्यता छे, पण एटला बधा गुरुओ आवा ललित वृत्तमा सुन्दर लागता नथी हलायुधे आपेला दृष्टान्तोमा क्याय विषममा वेथी अने सममा त्रणथी वधारे गुरुओ भेगा आवता नथी. औपच्छन्दसिक विशे कई विशेष वहेवानी जरूर नथी, कारण के तेनो मात्रागर्भ भाग वैतालीयनो ज छे.

मात्रागर्भमा आ वैतालीय समूह ज मुख्यत्वे आवे छे उपर आप्या ते सिवाय वैतालीय समूहमा पिंगलो थोडा बीजा छन्दो गणावे छे पण ते महत्त्वना नथी. साहित्यमा ते वपराया नथी पण पिंगलना वृत्तो जोता एक बीजो मोटो समूह एक जुदा ज मात्रागर्भ छदमाथी ऊतरी आव्यो जणाय छे. आ समूहनु प्रकृतिभूत मात्रागर्भस्वरूप कोई पिंगल आपतु नथी, पण अमुक अमुक लगात्मक वृत्तो, अने बीजा हेमचद्रे आपेला त्रण मात्रावृत्तो भेगा मूकी अभ्यास करता, ए बधाना मूळमा कोई मात्रागर्भ छद होवो जोईए एम जणाय छे एटले ए वर्गनु निरूपण पण हु अही करवा इच्छु छु आ वर्गने हु नर्दटक-समूह कहु आ नर्दटक ते आगला प्रकरणमा आवी गयेलु ज नर्दटकवृत्त छे. वैतालीयनु सुदर लगात्मक स्वरूप जेम वियोगिनी छे, तेम आ समूहनु सौथी सुदर स्वरूप नर्दटक छे तेथी वृत्तोना न्यासो आपता हु सौथी पहेलु नर्दटक हवे मूकीश. आने ज हलायुध अवितथ कहे छे अने 'वृत्तरत्नाकर' अवितथमा यति मूके छे ते हु आगळ कही गयो हवे न्यासो लईए.

(१) नर्दटक :	ललललगा	लगा	लललगा	ललगा	ललगा
(२) कोकिलक :	ललललगा	लगा	ल । ललगा	लल । गा	ललगा
(३) मणिकल्पलता :	ललललगा	लगा	लगागा	ललगा	ललगा
(४) उन्माल्या	गागागा	लगा	लललगा ।	ललगा	ललगा
(५) शैलशिखा .	गाललगा	लगा	लललगा	ललगा	ललगा
(६) वरयुवती	गाललगा	लगा	लगागा	ललल	ललगा
(७) वशदल अथवा वशपत्रपतित	गाललगा	लगा	लललगा ।	ललल	ललगा

(८) उडुपथ :	ललललगा	लगा	लललगा	लललल	ललगा
(९) भ्रमरपद	गाललगा	लगा	ललललल	लललल	ललगा
(१०) वीरललिता ·	गाललगा	लगा	लललगा	लगाल	ललगा
(११) समदाविलासिनी.	ललललगा	लगा	लललगा	लगाल	ललगा
(१२) गरुडरुत	ललललगा	लगा	लललगा	लगागालगा	
(१३) मागधनर्कुटी	६+	ल+२+	ल+४+	२+गा+	गागा
(१४) नर्कुटक:	६+	ल+२+	ल+४+	२+गा+	ललगा
[2](१५) समनर्कुटक	६+	लगा+	ल+ललगा+	ललगा+	ललगा

कोकिलक तो नर्दटकमा बे यति मूकीने ज नवु करेलु वृत्त छे, जे यति मात्र शोभानी छे आपणे आ पछीना प्रकरणमा जोईशु तेम ए यति आवश्यक नथी. ए ज रीते उन्माल्या, वशदल अने वीरललितानी यतिओ पण आवश्यक नथी. एटले ए यतिओ उपर ध्यान आप्या सिवाय आपणे आ समूहनो विचार करीशु.

आ बधा छन्दोमा देखीती रीते छेल्ला त्रण मात्रागर्भ छे आमा आकडाथी लखेला मात्रासमूहो लगत्वहीन समजवाना छे पण पूरु स्वरूप समजवा माटे त्रणेयना दृष्टान्तो जोवानी जरूर छे

मागधनर्कुटी नवमयरदपाणपायडमयउत्ताला
भमरा रुणरुणन्ति कायलिकयसद्दाला।
पचमभुग्गिरति एआ अवि दिट्ठीओ
चूअङ्कुरकसायकठा कलयठीओ ॥

नर्कुटक . परिमलु लुद्धलोलअलिगीअसणक्कुडय
जाव न जग्गवेइ विसमरथमहाभडय।
माण मोत्तुआण माणसिणि सप्पणय
पेम्मभरेण ताव अणुसर सहि वल्लहय ॥

समनर्कुटक सयलसुरासुरिंदपरिखदिअपायतलो
निरवमझाणनाणवसनासिअकम्ममलो।
निवसउ मे मणम्मि भवय सिरिवीरजिणो
विलय जति वामपमुहा जह ते अरिणो॥
छदोनु० पृ ३२ ब

---

२ कोकिलक माटे जुओ छ. शा. ८ १५. छदो ३ थी १२ माटे जुओ छ र पृ १६० १३-१५ माटे छदोनु० पृ ३२ ब

आनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

(१३) मागधनर्कुटी: ललललगा लगा लगा ललललगा गागा
ललगा ललगा लगा ललललगा गागा
गालल गा लगा लगागा ललगा गागा
गागालल लगा लगागा ललगा गागा

(१४) नर्कुटक : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा
गाललगा लगा लललगा ललगा ललगा
गागागा लगा लगागा ललगा ललगा
गाललगा लगा ललललल ललगा ललगा

(१५) समनर्कुटक : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा
ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा
लललगा लगा ललगा ललगा ललगा
ललगागा लगा ललगा ललगा ललगा

छेल्ला त्रणेय मात्रागर्भ वृत्तोमा हेमचन्द्रना न्यासमा पहेली छ मात्रा पछी स्थिर रूप मात्र एक लघुनु ज आप्यु छे, अने तेनी पछी बे मात्रा दर्शावेल छे, पण पदरेय वृत्तो जोवाथी जणाशे के पहेली छ मात्रा पछी लगा संधि स्थिर छे पहेला मूकेला बार लगात्मक रूपोमा तो मे पहेली छ मात्रा पछी लगा जुदु लखेल छे, जेथी तरत जणाई आवशे, पण त्रण मात्रागर्भमा पण ए जुदु तरी आवे माटे में तेनी नीचे रेखा दोरी छे आ लगा पछी ल+४ आवे छे. बधा वृत्तो जोता आ पाच मात्रानो एक भिन्न संधि ज छे जेनु सौथी सुदर रूप लललगा जणाशे, जे नर्दटक वगेरेमा स्थिर थयेलु छे. आ पछी १३, १४ मा बे मात्रा अने गा कट्घु छे, जेनु सुन्दर रूप ललगा जणाशे, अने अत्य ललगा तो १४, १५ मा सिद्ध रूपे ज छे. ६ थी १२ वृत्तो जोता अत्य आठ मात्रानो रूढ पण मात्रागर्भ जणाशे कारण के तेमा ए मात्राओ एक ज लगात्मक स्वरूपमा आवती नथी पण आमा पण अत्य गुरु तो स्थिर छे, आगळनी छ मात्राओ प्रवाही स्वरूपे छे. पण आ रूढ पण वैतालीयना पूर्व मात्रागर्भ सडमी पेठे ललगा ललगा स्वरूप पामे छे, कारण के ए ज सुन्दर छे.

उपर आपेला वृत्तोमा क्याक छये मात्राओ लघुथी पूरी छे, जेम के (६) वस्तुवती, (२) मदादल अने (८) उडुपथमा, पण त्या लघुबहुलत्वथी

देखीती रीते ज शैथिल्य आवे छे अने अुपान्त्य छ अने तेनी पहेलानी पांच एम अगियारेय मात्राओ ज्या लघुथी पुराय छे, ए (९) भ्रमरपद तो केवळ कनिष्ठ छे आ बधा वृत्तोनु मूळ मात्रागर्भ रूप केवु हशे तेने विशे तर्क करवो होय तो नीचे प्रमाणे मूकी शकाय.

६+लगा+५+६+गा

पण दरेक सधि, आपणे आ पछीना प्रकरणमा जोईशु तेम, गुर्वन्त होय छे एटले पहेली छ मात्राना सधिमा अते गुरु जोईए उपरना न्यासोमा जोईशु तो आ छ कलनो सधि गुर्वन्त थवानु ज वलण धरावे छे उपरना बधा न्यासोमा मागधनर्कुटीनी बीजी पक्तिमा ज ल्लगाल्ल आवे छे ते लघ्वन्त पट्क छे, ते सिवाय बधा ज पट्को गुर्वन्त छे एटले ए छ मात्रा पण ४+गा नु रूप पामे छे पछी ए पहेली चार मात्राओ ज मात्रामेळी रही अने एनु सुदरतम सधिरूप ललललगा एवु थयु ते पछी आवता स्थिर सधि लगा पछी पचमात्रक सधि आवे छे ते पण मुख्यत्वे गुर्वन्त ज छे मात्र भ्रमरपदमा त्या सर्वलघु पचक छे मागधनर्कुटीनी पहेली बे पक्तिओमा ते ल्गालल छे, अने नर्कुटक (१४)मा छेल्ली पक्तिमा ज ते सर्वलघु छे बाकी बधे गुर्वन्त छे ए पछी आठ मात्राओ आवे छे जेनानी छेल्ली बे गुरु होय छे एटले छ मात्रा छूटी छे ते उपर कहीं गयो तेम ललगा ललगा रूप ले छे मात्र १०, ११ मा ते लगाल ललगा अने १२ मा लगागालगा रूप ले छे अने मागधनर्कुटीमा ललगा गागा एवु स्थिर रूप ले छे एटले अही पण वैतालीयना प्रारभनी पेठे ललगा ललगा रूपो स्थिर थाय छे ए रीते आ नवो समूह पण मूळ मात्रागर्भ हशे, अने तेना लगात्मक रूपो आपणे उपर जोया तेवा थया, पण तेमा सौथी सुन्दर नर्दटक थयु छे

हवे आपणे विषम वृत्तो लईए तेमा सौथी महत्त्वनु उद्‌गता छे तेना चरणोनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे छे

ललगा लगा ललगा ल	१०
लललल्लगा ल्गाल्गा	१०
गाल्ल लल्ल्ल गाल्ल गा	११
ललगा ल्गा लल्लगा ल्गालगा	१३

आ छन्द गुजरातीमा ऊतर्यो नथी एटले एना उदाहरण तरीके 'छन्द-शास्त्र'नु उदाहरण लउ छु

मृगलोचना शशिमुखी च
रुचिरदशना नितम्बिनी।

हसललितगमना ललना
परिणीयते यदि भवेत्कुलोद्गता ॥

आना त्रीजा पादमा गालगालललल गालल गा मूकीए तो आ छंद सौरभक कहेवाय एम करवाथी ए पादमां एक अक्षर घटे छे एटले के ए श्लोक १०, १०, १०, १३ अक्षरोनो थयो आनु पण दृष्टान्त 'छन्दःशास्त्र'मांथी ज आपु छु

विनिवारितोऽपि नयनेन	१०
तदपि किमिहागतो भवान् ।	१०
एतदेव तव सौरभकम्	१०
यदुदीरितार्थमपिनावबुध्यते ॥	१३

एना त्रीजा पादमा लललल लललल गालल गा मूकीए तो एनु नाम ललित आ पाद १२ अक्षरनु थाय दृष्टान्त अही पण 'छन्दःशास्त्र'नु ज उतारु छु

सतत प्रियवदमनून	१०
ममरुहृदय गुणोत्तरम् ।	१०
सुललितमतिकमनीयतनु	१२
पुरुष त्यजन्ति न तु जातु योषित ॥	१३

आ त्रण लगात्मक वृत्तोमा मात्र त्रीजा पादमा फरक छे पण ए नोंधवा जेवु छे के ए त्रणेयमा त्रीजा पादनी मात्राओ कुल १४ थाय छे एटलु ज नही दरेकमा त्रण चतुष्कल साधिओ अने पछी अंते गुरु आवे छे अर्थात् आ वृत्त पण मात्रागर्भ छे एमा दरेक पंक्तिनो अमुक भाग मात्रानो होवाने बदले आखु त्रीजु पाद मात्रामेळी छे एटले आ वृत्तने मात्रागर्भ गणवामा कशी सिद्धान्तहानि थती नथी

आ उद्गता वृत्त अनेक रीते विचित्र छे आ वृत्तना पहेला पादने अंते लघु आवे छे अने वळी 'छन्दःशास्त्र'नु खास सूत्र छे के त्या यति नथी 'छन्दःशास्त्र'मा उद्गताना सूत्रना प्रारंभमा ज 'उद्गतामेकत' एम कह्यु छे तेनो अर्थ वृत्तिकार एवो करे छे के "एकत इति प्रथम पाद द्वितीयेन सहाविलबेन पठदित्यर्थ ।" सूत्रमा 'एकत' कहेलु छे तेनो अर्थ एवो छे के पहेलु पाद बीजा पादनी साथे विलब विना पठवु[३] अर्थात् पाद पूरु थया छता अही यति एटले विराम के विलब करवानो नथी आ बन्ने लक्षणो

३ 'वृत्तरत्नाकर'मा 'चरणमेकत पठेत्" (वृ र ५, ६) एम ज कहेलु छे अने नारायण भट्ट तेनो ए ज अर्थ करे छे

असाधारण छे, बीजा कोई वृत्तोमां नथी. मारी दृष्टिए यतिना स्वरूप उपर एथी पुष्कळ प्रकाश पडे छे. आपणे ते हवे पछीना प्रकरणमा विचारीशु.

आ छन्द विलक्षण छे ते साथे मने सुसंवादवाळो लागतो नथी. महाकाव्योमा कविओए तेनो उपयोग कर्यो छे. माघे 'शिशुपालवध'मा पंदरमा सर्गमा आ वृत्तनो व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. तेनी पहेला भारविए 'किरातार्जुनीय'मा अने अश्वघोषे 'सौन्दरनन्द'मा पण तेनो सर्गना व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. पण कालिदासे तेनो नाटकमा के प्रबन्धोमा क्याय उपयोग नथी कर्यो. नहितर कालिदासने आ वृत्त अज्ञात होय ए संभवित नथी. अश्वघोष अने कालिदासना पौर्वापर्य विशे मतभेद छे; कीथ अने घणा हिन्दना पुरातत्त्वविदो अश्वघोषने कालिदासनो पुरोगामी गणे छे. ए ज साचु होय तो तो कालिदास पहेला उद्गता वृत्त पूरेपूरुं प्रचलित हतु एमा सदेह रहेतो नथी. पण सद्गत के० ह० ध्रुव अने बीजा कोई कोई विद्वानो कालिदासने अश्वघोषनो पुरोगामी गणे छे. पण तेमा पण के० ह० ध्रुव बन्ने वच्चे पोणो सो वरसथी वधारे लाबो गाळो गणता नथी. एटले कालिदास पुरोगामी होय तो पण, तेना समयमा उद्गता जाणीतु होय ज कारण के अश्वघोष कोई पण वृत्तने सर्गमा व्यापक तरीके प्रयोजे ते पहेला ते एटला समयथी तो प्रसिद्ध होय ज. नवा ज वृत्तनो कोई व्यापक तरीके एकदम उपयोग न करे. अने कालिदासने हु बहु ऊची कोटिनो सवादपरीक्षक गणु छु. उद्गता जाणीतु होय छता तेणे एनो उपयोग न कर्यो ए वातने हुं उद्गताना हीन सवादनु प्रमाण गणु छु. बीजु. उद्गता नाटकमा क्याय वपरायानु मने स्मरण नथी. अलबत्त उद्गता अने ललिताना लक्षणो अत्यारना भरतनाट्यशास्त्रमा मळे छे, पण ते अक्षरगणोमा आपेला छे, जेने हु क्षेपक गणु छु (भ ना गा वॉ २, १५, श्लो १८८-९१ पृ. २८६). एवी बाबतमा नाटकना प्रयोगने ज प्रमाणभूत गणवो जोईए अने नाटकोमा एनो प्रयोग नथी एने पण हु तेना पठनसवादनी निर्बळतानु समर्थन गणु छु. नाटक तो जाहेरमा भजववानु छे एटले त्या निर्बळ सवाद चाले नही. महाकाव्यकारोए एने प्रयोज्यो ए वृत्तवैविध्यना प्रदर्शनना शोखथी, एम हु मानु छु.

अने तेम छता आ वृत्तना सवादने घटाववा प्रयत्न करवो जोईए. आपणे जोयु के एना प्रथम पादने अते लघु आवे छे, अने ए पादनो पाठ पछीना पादनी साथे अविलबथी करवानो छे. एनो अर्थ ए थयो के पहेला बे पादोनो पाठ सळग करवानो छे तो आपणे ए बे पक्तिने सळग मानीने ज तेनो विचार करी जोईए पहेला पादनो अत बताववा आपणे त्या यतिसूचक दंड -

नहीं करीए पण मात्र शब्दान्त सूचववा एकवडु अवतरण चिह्न करीशु अने ज्यारे पहेला बे चरणोने एक मानीए छीए त्यारे बीजा बेने पण एक मानवानी आवश्यक्ता ऊभी थाय छे, कारण के नहितर आ वृत्तने त्रण चरणनु गणवु पडे, जेने माटे वृत्तोमा कोई दाखलो नथी बे चरणो के द्विदल छदो पण थोडा छे, पण आर्यानो प्रसिद्ध वर्ग द्विदल छे एटले ए एटलु बधु विलक्षण नथी. त्यारे हवे आपणे एने द्विदल गणी तेनो न्यास मूकीए:

ललगा लगा ललगा ल'ललललगा लगालगा ।
गालल ललल गालल गा' ललगा लगा ललगा लगालगा ।

एक लक्षण तरत नजरे चडे छे मूळनु चोथु चरण ललगा लगा ललगा लगालगा ए अखड मजुभाषिणीनु चरण छे अने ए एक वार दृष्टिमा आव्या पछी ए पण देखाय छे के प्रथम चरणना प्रथम त्रण सधिओ ललगा लगा ललगा ए पण मजुभापिणीना ज छे पण ए वृत्त त्या ज अटकी जाय छे अने पछी आपणे बधा लघुओने भेगा करी प्रथमना दलना अत सुधी सळग पाठ करी जोता जणाशे के ए अपरवक्त्रनु चरण छे लललललगा लगालगा ए प्रमाणे वळी अपरवक्त्र अने मजुभापिणी बन्नेनो अत्यसधि एव ज लगालगा छे बीजी रीते कहीए तो उपान्त्य ललललललगानो लांबो सधि काढी नाखीए तो सळग मजुभापिणी बनी रहे छे मजुभाषिणीनो प्रवाह त्रण सधिओ सुधी चाली, पछी अपरवक्त्रमा भळीने बन्ने छन्दो समान अत्य सधि लगालगामा उपसहार पामे छे अने अपरवक्त्रना लांबा लघुबहुल सधिने मजुभाषिणीना पूर्वग सधिनी साथे जोडवाने माटे ए लघुबहुल सधिना पहेला लघुए शब्द पूरो कर्यो, जेथी अर्थ दृष्टिए ए आगळना भाग साथे जोडाई रहे पहेला दलनु पृथक्करण करता सवादने माटे आटली सामग्री मळे छे

पण बीजा दलमा मने आवी सवादनी कोई सामग्री जणाती नथी मूळ उद्गतानु चोथु चरण मजुभापिणीनु छे ए आपणे जोयु पण आगळ मूकेला १४ मात्राना मात्रामेळ साथे जोडाईने ए बेवी रीते सवादी रचना करी शके ते मने समजातु नथी अनेक वार पाठ कर्या छता मने ए वृत्तना उपागोमा कोई स्वाभाविक मेळ देखातो नथी पहेला दलमा पण मजुभापिणी अपरवक्त्र साथे जे रीते जोडाय छे ते रीत मने सवादवाळी जणाती नथी विशेष नहीं तो आपणे आगळ जोईशु तेम, छदो जोडवानी आ रीत माटे बीजा दृष्टान्तो नथी एटले आटला पृथक्करण पछी आ वृत्त मने सुदर जणातु नथी, एटलु ज कहेवानु रहे छे ए वृत्त गुजरातीमा ऊतर्यु पण नथी एटली नोंध लई एने आपणे अहीं ज बध करीए

आ पछी हु हवे अनुष्टुप लउ छु, अने तेनु परपराप्राप्त स्वरूप टूकमा मारी दृष्टिए रजू करु छु तेना उपर प्राचीन सस्कृत पिंगलोए पुष्कळ लखेल छे ते सर्व अही न लेता आ प्रकरणना परिशिष्टमा आपु छु अहीं तो ,मात्र मारी पद्धतिए ए रजू करु छु

दलपतराम अनुष्टुप श्लोकनु स्वरूप नीचे प्रमाणे आपे छे.

"पाचमे लघुता तोळो, गुरु छठ्ठो लक्ष्यो गमे,
बीजे चोथे पदे बोलो, श्लोकमा लघु सातमे "

आनो अर्थ एवो थाय के अनुष्टुपना चारेय चरणोमा पाचमो अक्षर लघु आवे अने छठ्ठो गुरु आवे अने बीजा अने चोथा पादमा सातमो लघु आवे स्फूट[४] कह्यु नथी, पण बीजा चोथा पादमा सातमो लघु कह्यो ए उपरथी पहेला त्रीजा पादमा सातमो गुरु छे एम समजी लेवानु छे दलपतरामे घणाखरा लक्षणो माटे 'श्रुतबोध'नो आधार लीधो छे अने तेमा विषममा सातमो गुरु एम स्पष्ट कहेलु छे अने दलपतरामना दृष्टान्तोमा सर्वत्र एम छे एटले ए प्रमाणे ज समजवु जाईए एम करता विषम अने सम चरणोना आठ आठ अक्षरो पैकी नीचेना नियत थया

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ । १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
ल गा गा ल गा ल

बाकीनां स्थानोमा लघुगुरु गमे तेम मूकी शकाय एवो आनो अर्थ थाय पण 'श्रुतबोध'ना केटलाक लक्षणो अपूर्ण अने स्थूल छे पिंगलना 'छन्द शास्त्र'मा जे अनुष्टुपनु लक्षण आपेलु छे तेमा चरणना प्रारभना पहेला अक्षर पछी कया कया गणो न आवी शके ते जणावेलु छे, ते उपरथी स्पष्ट थाय छे के अनुष्टुपना चरणोमा बीजो अने त्रीजो बन्न अक्षरो लघु न होई शके एने अनुष्टुपनु एक आवश्यक लक्षण गणवु जोईए आ लक्षण ठेठ वेदकाल्थी चालतु आवेलु जणाय छे[५] ए ज रीते पिंगलशास्त्र बीजा पादमा जे गणोनो निषेध कर्यो छे ते उपरथी कही शकाय के बीजा पादमा बीजो अने त्रीजो अक्षर गाल थई न शके गाल थई न शके एनु कारण समजाय एवु छे त्या गाल आवे तो ए चरण कोई वार लगालगा लगालगा बनी जवानो प्रसग

४ जुओ आ प्रकरणने जोडेलु अनुष्टुप उपरनु परिशिष्ट

५ In the opening the first and third syllable are indifferent, while the second and fourth are preferably long When the second is short, the third is almost invariably long —'Macdonell's Vedic Grammar for Students', p 438.

आवे, अने एम थाय तो एमा अनुष्टुपनो सवाद न रहे ए 'छन्द शास्त्र'नो प्रमाणी एटले दल्पतरामनो प्रमाणिका बनी जाय

'श्रुतबोध'ना लक्षणमा आपणे जोयु के विषम पादना ५-६-७ अक्षरो ल्गागा जोईए आ साचु छे एने अनुष्टुपनु एक प्रकृतिभूत लक्षण गणवु जोईए पण महाकविओमा ए ल्गागानी अनेक विकृतिओ मळी आवे छे खरी रीते एक लगाल सिवायना बधा ज गणो त्या आवी शके छे' आ विकृतिओ वैविध्य खातर आवे छे, एम हु मानु छु आ विकृतिओमा लगाल नथी आवी शक्तो तेनु कारण स्पष्ट छे ए स्थाननो लगाल गण सम पादनु विशिष्ट लक्षण छे आ उपरथी एम कही शकाय के अनुष्टुपमा गमे ते छूट लेवाय तो पण तेना विषम पादमा ५-६-७ अक्षरो ल्गाल न ज थई शके, अने बीजा गमे ते फेरफारो करो तो पण सम पादना ५-६-७ अक्षरो लगाल कायम रहेवा जोईए आ ज तेना समविषम पादनु व्यावर्तक लक्षण छे अनुष्टुपमा समपाद ज नियत छे ए दृष्टिए एने अर्धसम कही शकाय

आ आपणे प्राचीन परपराथी नियत थयेलु अनुष्टुपनु स्वरूप जोयु पण तेमा अनुष्टुपनो मेळ छतो थतो नथी प्राचीनो जे अक्षरगणपद्धतिने वळगी रह्या हता ते पद्धति घणी वार साचु स्वरूप समजवामा अतराय रूप बने छे आनु खरु स्वरूप अने एनो मेळ समजवा माटे आपणे अनुष्टुपना लाबा सळग परिच्छेदो जोवा जोईए अने तेमा आवता श्लोकोना सळग न्यासो उपरथी तेना स्वरूपनी चर्चा करवी जोईए ते आपणे हवे आवता प्रकरणोमा करीशु आ अने आगलु प्रकरण तो मात्र परपराप्राप्त स्वरूपनु मारी रीते निरूपण करवा ज छे

परिशिष्ट १

अनुष्टुप

आ परिशिष्टमा अनुष्टुपना स्वरूपनु मोटा प्रमाणभूत पिंगलो केवी रीते निरूपण करे छे ते तथा ते विशे छूटा मतो अही तही मळी आवे छे ते एकत्र करी आपवानो उद्देश छे

प्राचीन अने प्रमाणभूत मोटा पिंगलो अनुष्टुपनु स्वतत्र लक्षण न आपता तेनु वक्त्रना एक प्रकार तरीके निरूपण करे छे एटले ए पद्धतिए पहेला वक्त्रनु लक्षण 'छन्द शास्त्र' प्रमाणे जोईए

"न प्रथमात् स्नौ।" ५-१०

६ जुओ आ प्रकरणनु अनुष्टुप उपरनु परिशिष्ट.

पहेला अक्षर पछी सगण नगण न आवी शके, अर्थात् पहेलो अक्षर लघु के गुरु गमे ते होई शके, अने तेनी पछी ललगा अने ललल ए अक्षरगणो न आवी शके आनो अर्थ ए थयो के बीजो अने त्रीजो अक्षर बन्ने लघु न होई शके. आनो अर्थ ए थयो के बीजो अने त्रीजो अक्षर बंने लघु न होई शके

"द्वितीयचतुर्थयो रश्च ।" ५-११

बीजा अने चोथा पादमा पहेला अक्षर पछी रगण (गालगा) न आवी शके.

"वान्यत् ।" ५-१२

उपरना गणो सिवाय गमे ते गणो आवी शके.

"य चतुर्थात् ।" ५-१३

पादना पहेला चार अक्षरो पछी यगण (लगागा) मूकवो.

आ उपरथी बधा विकल्पो भेगा करता नीचे प्रमाणे वक्त्रनु स्वरूप थाय.

विषम पाद					सम पाद		
	गागाल				गागाल		
	गागागा				गागागा		
गा	लगागा		गा	गा	लगागा		गा
ल	गालगा	लगागा	ल ।	ल	लगाल	लगागा	ल
	लगाल				गालल		
	गालल						

मूळमाथी मात्र एक ज दृष्टान्त आपु छु

नवधारावुससिक्त वसुधागन्धिनि श्वासम् ।
किंचिदुन्नतघोणाग्र मही कामयते वक्त्रम् ॥
लल गागा लगा गाल ललगागा लगागागा ।
गाल गा लल गागागा लगा गाललगा गागा ॥

आ वक्त्रनो पाठ करता जणाशे के आना चारे पादो अनुष्टुपना विषमपादो छे. अहीं ए विषम पादना ज चार आवर्तनो थया छे.

"पथ्या युजो ज् ।" ५-१४

वक्त्रना सम एटले बीजा चोथा पादमा चार अक्षर पछी जगण (लगाल) मूकवाथी पथ्या नामनु वक्त्र बने छे.

भ-विपुला :– इय सखे चन्द्रमुखी स्मितज्योत्स्ना न मानिनी।
भ = गालल इन्दीवराक्षी हृदय दन्दहीति तथापि मे ॥
वटे वटे वैश्रवण चत्वरे चत्वरे शिव ।
पर्वते पर्वते राम सर्वत्र मधुसूदन ॥

र-विपुला – लक्ष्मीपति लोकनाथ रथागधरमच्युतम्।
र = गालगा यज्ञेश्वर शार्गपाणि प्रणमामि त्रयीतनुम्॥
महाकवि कालिदास वन्दे वाग्देवता गुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बवत्॥

न-विपुला .– युयुत्सुनेव कवच विमामुक्तमिद त्वया।
न = ललल तपस्विनो हि वसने केवलाजिनवल्कले॥
किरातार्जुनीय ११-१५
अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्याना पारदृश्वन ।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्व जरसा विना ॥
रघुवंश १-२३
तव मन्त्रकृतो मन्त्रैर्दूरात्सशमितारिभि ।
प्रत्यादिश्यन्त इव मे दृष्टलक्ष्यभिद शरा ॥
एजन १-६१

त-विपुला – वन्दे देव सोमेश्वर जटामुकुटमडितम्।
त = गागाल *खट्वागधर चन्द्रम शिखामणिविभूषितम्॥*
लोकवत्प्रतिपत्तव्यो लौकिकोऽर्थ परीक्षकै ।
लोकव्यवहार प्रति सदृशौ बालपडितौ॥

सूत्रमा च (=अने) छे तेनो घणे भागे वृत्तिकारो 'वगेरे' एवो अर्थ क बीजा एवा विकल्पो उमेरे छे अही हलायुध ए रीते म-विपुला उमेरे

म-विपुला – *सर्वातिरिक्त लावण्य बिभ्रती चारुविभ्रमा।*
म = गागागा स्त्रीलोकसृष्टिस्तन्व्येव नि सामान्यस्य वेधस ॥
मनोभिरामा शृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखै ।
षड्जसवादिनी केका द्विधा भिन्ना शिखण्डिभि ॥
रघुवंश १-३९

कोई स-विपुलानो दाखलो पण मळे छे एम कही हलायुध 'पराशरस्मृति'मा एक श्लोक टाके छे

स-विपुला :– जितो तु लभते लक्ष्मीं मृतेनापि सुराङ्गना ।
स=ललगा क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे ॥
परा. स्मृ. ३–३८

आ बधा प्रकारोना मिश्र दाखला तरीके भारविनु एक दृष्टान्त आपे छे

क्वचिदग्रे प्रसरता क्वचिदापत्य विघ्नता ।
शुनेव सारङ्गकुलं त्वया भिन्नं द्विषां बलम् ॥

आमा पहेलु पाद न-विपुलानु छे, अने बीजु भ-विपुलानु छे

विपुला अनुष्टुपमा पहेला चार अक्षर पछीना त्रण एटले ५–६–७मा स्थानना अक्षरोना विकल्पो कुल सात नीचे प्रमाणे थया तेमांय (लगागा)-ने हु प्रकृतिभूत गणु छु ते सिवायना सूत्रमा नीचेना आवी गया गालल, गालगा, ललल, गागाल, अने वृत्तिकारे तेमां गागागा अने ललगा उमेर्या अर्थात् जगण (लगाल) सिवायना बधा ज गणो आवी गया आ एक गण न आवी शक्यो तेनु कारण स्पष्ट छे के अनुष्टुपमा लगालनु स्थान सम पादोमा नियत छे, फरी शके एवु नथी, अने ते जगणने विषममा मूकता विषम समनो भेद न रहे आ उपरथी एटलु सिद्ध थाय छे के समपादमा जगण ए अनुष्टुपनु अफर लक्षण छे

अही अनुष्टुपनु प्रकरण पूरु थाय छे एना उपरनी वृत्ति पूरी करता हलायुध कहे छे "सर्वासां विपुलानां चतुर्थो वर्णः प्रायेण गुरुर्भवतीत्याम्नायः ।" सर्व विपुलाओनो चोथो वर्ण घणोखरो गुरु होय छे एवो आम्नाय छे

मारी दृष्टिए आ बधानो समन्वय हु आ प्रमाणे करु छु वक्त्रने हु कालग्रस्त छन्द गणु छु पथ्याने हु प्रकृतिभूत अनुष्टुप गणु छु अने तेमा विरल अपवादो जुदी जुदी विपुलाओमा संग्राहाया छे एम हु मानु छु

उपरना बधा दृष्टान्तो में पिंगल सूत्र अने तेना परनी हलायुधनी वृत्तिमाथी लीधा छे 'वृत्तरत्नाकर' अने तेना टीकाकार नारायण तेम ज हेमचन्द्र उपरनाने ज अनुसरे छे पछीना पिंगलो आ क्षीणवटमा ऊतरता नथी 'छन्दोमंजरी'(छ म क)नु वक्त्र प्रकरण नानु ज छे, अने तेमा अनुष्टुपने ते टूकमा पतावे छे

भवत्यर्धसमं वक्त्रं विषमं च कदाचन ।
तयोर्द्वयोरुपान्तेऽत्र च्छन्दस्तदधुनोच्यते ॥ ५–१

मे आगळ कह्युं के अनुष्टुपनुं विषम पाद वक्त्रमां आवे छे, हवे एनुं सम पाद बतावे छे. वक्त्रमां सम पादमां पहेला चार अक्षर पछी लगागा छे तेने बदले पथ्यामां लगाल आवे. आ पथ्या ए ज अनुष्टुप छे. हवे आपणे एकला सूत्र प्रमाणे अनुष्टुपनो न्यास करीए.

	गागाल / गागागा / लगागा / गालगा / लगाल / गालल			।		गागाल / गागागा / लगागा / लगाल / गालल		
गा / ल		लगागा	गा / ल	।	गा / ल		लगाल	गा / ल

गुजरातीमांथी अनेक दृष्टान्तो आपी शकाशे:

व्योममां जलनी धारा जोरमां पडती हती;
डळी पलंगने पाये सुंदरी रडती हती.

'रमा,' पूर्वालाप पृ ८

न्यास गालगा ललगा गागा, गालगा ललगा लगा
लगा लगाल गागागा, गालगा ललगा लगा

नहीं नाथ! नहीं नाथ! न जाणो के सवार छे!
आ वधु घोर अंधारूं हजी तो बहु वार छे.

'वसंतविजय', पूर्वालाप, पृ. २०

न्यास लगा गाल लगा गाल लगागागा लगाल गा
गालगा गाल गागागा लगागा ललगा लगा

बीजा अनेक दाखला आपी शकाय. कयांक गुजराती अनुष्टुपोमां भूल पण जणाशे, पण ए प्रश्न अहीं प्रस्तुत नथी. अहीं तो आपणे पिंगलगत स्वरूपनो ज विचार करीए छीए. आवता प्रकरणमां वृत्तोना संवादनी चर्चा करीशुं त्यार पछी अनुष्टुपना विकारमां विसंवाद क्यारे गणाय तेनो विचार करी शकीशुं. हवे आगळ चालीए.

आ पछी "विपरीतैकीयम्।" ५–१५। एवुं सूत्र छे. तेनो अर्थ ए छे के उपरना लक्षणथी विपरीत एटले ऊलटा क्रमना पादोवाळी होय ते पथ्या कहेवाय एवो एक मत छे. आनी साथे आपणे संबंध नथी. शिष्ट साहित्यमां आ प्रकार आवतो नथी एटले आपणे एने छोडी दईशुं अने पछीनुं सूत्र:

"चपला युजो न्।" ५।१६

विषम एटले पहेला अने त्रीजा पादमां प्रथम चार अक्षरो पछी नगण एटले ललल आवे तो ते चपला अनुष्टुप गणाय. आ ज आगळ आवती न-विपुला छे.

"विपुला युग्मः सप्तमः।" ५–१७

सम चरणनां सातमो अक्षर लघु होय तो तेने विपुला अनुष्टुप जाणवो. खरी रीते पथ्यामां आ प्रमाणे सातमो लघु छे ज एटले दृष्टान्त आपवानी जरूर नथी. सूत्रनी सगवड खातर आ सूत्र मूकेलु छे एम हु अर्थ करुं छुं.

"सर्वतः सैतवस्य।" ५–१८

चारे पादमां सातमो अक्षर लघु जोईए एवो सैतवनो मत छे. दृष्टान्त:

सैतवेन पथार्णवं तीर्णो दशरथात्मजः।
रक्षः क्षयकरी पुनः प्रतिज्ञां स्वेन बाहुना ॥
गालगाल लगालगा गागा ललगा लगा
गागालल लगालगा लगागागा लगालगा

आगळ ५–१३मा सूत्रथी सिद्ध थता वक्त्रना दृष्टान्त संबंधी में कहेलुं के एमां चारेय चरणोमां अनुष्टुपनो विषम पाद चार वार आवे छे अहीं सैतवनी विपुलामां अनुष्टुपना सम चरणो चारेय वार आवे छे विशेष ए पण कहेवु जोईए के आ अनुष्टुप वैदिक अनुष्टुपनी अने गायत्रीना पादोनी वधारे नजीक छे. अने सैतव वधारे प्राचीन पण छे आपणे ए उपयोगी नथी. पण आ पछीना सूत्रो पाछा अनुष्टुपना स्वरूप संबंधी छे.

"भ्रौ न्तौ च।" ५–१९

वक्त्रना अने पथ्याना विषम पादमां एटले पहेला अने त्रीजा पादमां पहेला चार अक्षरो पछी यगण एटले लगागा आवे छे. तेनी जगाए केटलाक बीजा गणो विकल्पे आवी शके छे ते बतावे छे. तेमां भगण (गालल) रगण (गालगा) नगण (ललल) तगण (गागाल) आ सूत्रमां गणावे छे. आ गण प्रमाणे ए अनुष्टुप भ-विपुला र-विपुला न-विपुला त-विपुला गणाय छे. आगळना जे सूत्रमां बीजा त्रीजा चोथा अक्षरोना गणोना विकल्पो गणाव्या तेनी साथे ज आ विकल्पो न गणाव्या तेनो अर्थ हु एवो समजु छु के आ विकल्पोनो उपयोग विरल होय छे. हवे हलायुधे आपेला दृष्टान्तो जोईए. बधा दृष्टान्तोनो आखो न्यास आपवाने बदले प्रस्तुत गणनी नीचे रेखा करी हु ते ते गण बतावीश.

वक्त्र कोई वार अर्धसम अने कोई वार विषम होय छे. ते वक्त्रना उपान्त्य एटले सातमा अक्षरना लघुगुरु नियमथी जे छन्द थाय छे ते हवे कहेवाय छे.

"वक्त्रं युग्म्यां मगौ स्यातामब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम्।" ५-२

वक्त्रमां सम पादोमां मगण (गागागा) अने गुरु आवे. अने वक्त्रमां चार अक्षर पछी यगण (लगागा) आवे. छेल्ला आठमा अक्षर विशे कशुं न कह्युं एनो अर्थ ए के लघु के गुरु गमे ते चाले. दृष्टान्त:

वक्त्रांभोजं सदास्मेरं चक्षुर्नीलोत्पलं फुल्लम्।
वल्लवीना मुरारातेश्चेतोभृंगं जहारोच्चैः॥

न्यास: गागागागा लगागागा गागागागा लगागागा
गालगागा लगागागा गागागागा लगागागा

चार गुरुनो नियम सम पादो माटे ज छे, विषम माटे नथी. चार गुरु अने यगणना नियमोथी सम पादोना सात अक्षरो नियत थई जाय छे. विषम पादोना पहेला चार अनियत रहे छे. छतां दृष्टान्तमा विषम पादमां मुख्यत्वे गुरुओ ज आव्या छे ते ध्यान खेंचे तेवु छे.

"युजोश्चतुर्थतो जेन 'पथ्यावक्त्रं' प्रकीर्तितम्।" ५-३

सम पादमा चार अक्षर पछी जगण (लगाल) लाववाथी पथ्यावक्त्र थाय छे. वक्त्रमां चार अक्षर पछी यगण आवतो हतो, तेमांथी समपादमां यगणने बदले जगण, लगागाने बदले लगाल, एवो अर्थ थयो. विषम पाद विषे कशुं कह्युं नथी एटले विषम पादनो यगण कायम रह्यो. पण ए रीते वक्त्रमा सम पादमा पहेला चार अक्षरो गुरु कह्या हता ते पण आ लक्षण प्रमाणे कायम रहेवा जोईए, पण दृष्टान्त जोतां एवो अभिप्राय जणातो नथी. एने हुं लक्षणनी अपूर्णता अथवा अवैशद्य अथवा तन्त्रयुक्तिनी शिथिलता समजुं छु. दृष्टान्त:

रासकेलिसतृष्णस्य कृष्णस्य मधुवासरे।
आसीद् गोपमृगाक्षीणा पथ्यावक्त्रमधुस्रुतिः॥

न्यास: गालगाल लगागाल गागालल लगालगा
गागागाल लगागागा गागागाल लगालगा

अहीं सम पादमा पहेला चार अक्षरो गुरु नथी. आपणे आगळ चालिए.

पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
गुरु षष्ठं च जानीयात् शेषेष्वनियमो मतः॥ ५-४

सर्वत्र एटले सर्व पादोमा पाचमो लघु, बीजा चोथा पादोमा सातमो लघु, अर्थात् पहेला त्रीजा पादोमा सातमो गुरु, अने छठ्ठो गुरु जाणवो, अर्थात् सर्व पादोमा छठ्ठो गुरु; अने बाकीनामा अनियम एटले लघु के गुरु गमे ते चाले आ उपरथी नियत थयेला अक्षरो हु नीचे नोधु छु:

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ । १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
ल गा गा ल गा ल

आने हूकमा कहेवु होय तो एम कहेवाय के ५–६–७ विषम पादमा लगागा आवे अने सम पादोमा लगाल आवे. अने सम विषम पादनो फरक ए के विषममा सातमो गुरु आवे अने सममा सातमो लघु आवे. पण आम कही रह्या पछी 'छन्दोमजरी' उमेरे छे:

प्रयोगे प्रायिक प्राहु केऽप्ये तद्वक्त्रलक्षणम्।
लोकेऽनुष्टुबिति ख्यात तस्याष्टाक्षरता मता॥

आ वक्त्रलक्षणने केटलाक प्रायिक एटले प्रयोगबहुल कहे छे अर्थात् प्रयोगमा आ लक्षणमा घणो फेरफार करवामा आवे छे लोकमा आने अनुष्टुप कहे छे अने एने आठ अक्षर होय छे छन्दःसूत्रमा हलायुधे केटलीय महेनत करीने जे विकल्पो अने अपवादो बताव्या ते बधानो सार पाछळनाए आ रूपे दह्यो आ ज लक्षण 'श्रुतबोधे' कहेलु छे

श्लोके षष्ठ गुरु ज्ञेय सर्वत्र लघु पचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्व सप्तम दीर्घमन्ययो ॥
श्रुतबोध १०

श्लोकमा चारेय पादमा छठ्ठो गुरु अने पाचमो लघु जाणवो बीजा अने चोथा पादमा सातमो ह्रस्व, अने पहेला त्रीजामा सातमो दीर्घ अनुष्टुपने ज सामान्य रीते श्लोक कहे छे ते अहीं जोई शकाय छे आ वात एटली बधी धोरणरूप थई गई छे के लहियाओ अक्षरगणतरीमा सोळ अक्षरनो श्लोक गणे छे—पछी पुस्तक भले गद्यमा लख्यु होय हवे आ साथे हु मात्र 'वृत्तवार्तिक'नु अनुष्टुपनु लक्षण लईश मने ए लेखक बहु ज विचक्षण अने समबुद्धिनो जणायो छे तेनु लक्षण,

ओजे मो रो गुरुद्वन्द्व युग्मे मो रो लगावपि।
पथ्यावक्त्र त्विद वृत्त भेदो भूयाननुष्टुभि॥
वृत्तवार्तिक ९

विषम पादमां मगण (गागागा) रगण (गालगा) अने बे गुरुओ, अने सम पादमां मगण रगण अने लघुगुरु ते पथ्यावक्त्र. अनुष्टुपना भेदो घणा छे.

अत्यार सुधीनां लक्षणोमां आ एक ज लक्षण आठेय अक्षरोनो नियम आपे छे. तेनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

गागागागा लगागागा गागागागा लगालगा
गागागागा लगागागा गागागागा लगालगा

उपरनो लक्षणश्लोक आ ज न्यासनो छे. छता वृत्तिकारे नीचेनु दृष्टान्त आप्युं छे ते जोईए.

वेदा वाचः प्रसन्नाना दृष्टेर्दानं त्वनुग्रहः।
येषां वासः पदं मुक्तेरीडे तानेव भूसुरान्॥

आ रूप पथ्यामां अशक्य नथी. पण पथ्याए आ उपरांत घणा विकल्पो स्वीकार्या छे त्यारे आणे तेमाना एकने ज प्रकृतिभूत गण्यो छे. अने जेने प्रकृतिभूत गण्यो छे ते आकार पथ्यानो बहुतम गुरुओनो छे. पथ्यामां आथी वधारे गुरुओ मूकी न शकाय अने ओछामां ओछा आटला लघुओ जोईए ज. एटले के विषममां एक लघु अने सममां बे लघु ओछामां ओछा जोईए ज.

अलबत्त आ उपरांत अनुष्टुपना स्वरूप विषे एक छुट्टो विचार नारायणे नोंधेलो छे ते पण अहीं लईए नारायणे व्यंजनान्त स्वरने गुरु गणवा माटे दृष्टान्त ए आपेलु छे के व्यंजनान्तने गुरु न गणीए तो 'तनुवाग्विभवोऽपिसन्।' एमां 'सन्' गुरु न थई शके (वृ. र. १, ९ उपर नारायणनी टीका. जुओ गत पृ. २३). अर्थात् ओछामां ओछु एटलु कही शकाय के नारायण सम पादने अंते तो गुरु आवश्यक गणे छे.

५

वृत्तोनो मेळ : यति, यतिभंग

आ अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो जेने हु वृत्तो' कहु छु, तेना सवाद के मेळनो कोई सिद्धान्त, तेनु कोई धोरण छे खरु ? आवृत्तसधि अक्षरमेळ छन्दो जेम के तोटक तेनो मेळ समजवो सहलो छे तोटकनो न्यास नीचे प्रमाणे छे.

ललगा ललगा ललगा ललगा

आपणे न्यास जोईने तरत कही शकीए के आनो मेळ ललगाना चार आवर्तनोथी सधायो छे आगळ आवता जातिछदोना मेळना सिद्धान्तनो उपयोग अही करीए तो एम पण कही शकीए के आ मेळ लावणी तालनी कालमात्रा साथे छन्दनी अक्षरमाना जोडवाथी निष्पन्न थाय छे पण वृत्तो तो स्वरूपे ज आवर्तन विनाना छे तेमना मेळनु धोरण शु ? तेमा आवर्तन नथी एटले तेने कोई सगीतना ताल साथे स्वभावथी सबध न होई शके त्यारे एना मेळनो शो खुलासो ?

एटलु तो आपणा पठनना सस्कारो उपरथी तरत कही शकीए के वृत्तोनो मेळ पक्तिमा अमुक अमुक नियत स्थाने आवता लघु अने गुरुथी थाय छे ए लघुओ गुरुओ एवी रीते गोठवाया छे के तेना शुद्ध उच्चारणथी ज मेळ सधाई जाय छे एना उच्चारणथी ज पक्तिनो उद्गम विस्तार अने उपसहार बराबर थई जाय छे ए लघुगुरुना निश्चित स्थान उपर आधार राखे छे माटे ज तेमा एक गुरुने बदले बे लघु के बे लघुने बदले एक गुरु के लघुगुरुनी परस्पर परिवृत्ति के फेरफार करी शकातो नथी वृत्तोमा आवता लघुगुरुओने तेना स्थानेथी जरा पण च्युत करवा एनो ए छन्द रहेतो नथी. ए छन्द भाग, छे, अने करेला फेरफार पछी पण जो मेळ अनुभवातो होय तो ए एनो ए मेळ नथी रहेतो, नवो मेळ थाय छे—नवो छद थाय छे इन्द्रवज्राना प्रथम गुरुने स्थाने लघु मूकवाथी छन्द बदलाय छे, ए उपेन्द्रवज्रा बने छे बन्नेनो मेळ सरखा जेवो देखाय छे ए खरु, पण छन्द तो बदलाय ज छे, अने मेळ सरखा जेवो देखाय एवा दाखला विरल छे रथोद्धतानो नवमो दसमो अक्षर लगा छे, तेनो क्रम फेरवीने गाल करता स्वागता थाय छे, अने एनो मेळ बदलायेलो स्पष्ट मालूम पडे छ जोके त्या पण छन्दोना मेळ वच्चे थोडी समानता

रहे छे. एटले एम ज कहेवु प्राप्त थाय छे के वृत्तोनो मेळ पंक्तिमां नियत स्थाने आवता लघुगुरुक्रमथी सधाय छे. आ क्रम कलानी कोई गूढ आवश्यकताथी नियत थाय छे. ए आवश्यकतायी अन्यथा करेला फेरफारोथी छन्दनो मेळ भागे छे. जेम के आगळ आपेलो दाखलो फरी लेतां:

रह्या अमे याजू तरुवर नहीं यांइ वळगा

आ शिखरिणीनी पंक्ति छे. तेमा 'तरुवर'नी जगाए 'वृक्षो' मूकता शिखरिणीनो मेळ रहेतो नथी, अने बीजो कोई मेळ आवतो नथी. अनेक छन्दोना संस्कारथी सिद्ध थयेली आपणी छन्दोबुद्धि अही आपे छे के फेरफार करेली पंक्तिमा कोई जातनो मेळ छे नही, एटले ए लघुगुरुक्रममा य कोई कलानी आवश्यकता रहेली छे. ए आवश्यकतानी आपणे व्याख्या न करी शकीए तो पण एने स्वीकारवी जोईए.

आ आवश्यकताने स्वीकारीने मेळनो प्रश्न छोडी दईए तो तेमा कशी हानि नथी. पण खरी शास्त्रीय पद्धति ए के चर्चाथी ज्या सुधी जई शकाय त्या सुधी जवु जोईए. चर्चा पछी पण छेवटे कोई आवी ज आवश्यकता आवे छे के आववानी छे एम करी शास्त्रीय रीते चर्चा आगळ जती होय तो तेने अटकाववी न जोईए. अने तेथी आ प्रकरणमा हु ए प्रयत्न करवा इच्छु छु.

शास्त्रीय अन्वेषणनु एक महान साधन पृथक्करण छे हु पण वृत्तनो मेळ शोधवा एनो ज उपयोग करीश. खरी रीते ए पृथक्करणनो थोडो उपयोग तो थई गयो छे. प्राचीन परंपरा प्रमाणे छन्दनु एकम श्लोक छे. श्लोकनु पृथक्करण करी आपणे सौथी प्रथम श्लोकार्ध पर आव्या संस्कृत पिंगलो प्रमाणे श्लोकार्ध सबधी एवो नियम करे छे के ए अर्धनी सीमानी पार संधिना नियमो व्यापार करी शकता नथी. श्लोकार्धे शब्द पूरो थवो जोईए, अने संधि पण अटकवी जोईए[१] एथी आगळ जई पृथक्करण करता दरेक श्लोकार्धना बब्बे चरणो आवे छे. दरेक चरणने अंते शब्द पूरो थवो जोईए पण पहेला अने बीजा चरणना शब्दो वच्चे, अने त्रीजा अने चोथा चरणना शब्दो वच्चे संधि अवश्य थवी जोईए एक रीते आ पृथक्करण अही अटके छे, एनाथी जे एक चरण प्राप्त थाय छे, एने ज प्राचीन छन्दशास्त्रीओए मेळनु बीज गण्यु. अने एना चार आवर्तनोथी श्लोक थाय छे एम कही संतोष मान्यो, अने श्लोकने छन्दनु एकम गण्यो. पण अत्यारनी पिंगलनी चर्चामा आथी आगळ पृथक्करण थयेलु छे, अने आपणे ए मार्गे जवानु छे

१. विशेष माटे जुओ प्रकरण ३ उपरनु परिशिष्ट १. पृ. ९५, ९६

अत्यारनी पिंगलचर्चा उपरना सिद्धान्तोमाथी ज जरा आगळ जई नवो सिद्धान्त फलित करे छे श्लोकमा साधारण रीते एक ज चरणना चार आवर्तनो आवे छे आमा आवर्तनक्रिया पोते छन्दना सवादनु तत्त्व न होई शके. गमे ते लघुगुरुक्रमवाळा खडने आवर्तित करवाथी छन्द बनतो नथी ए आवर्तन तो ए चरणना सस्कार दृढ करवा आवे छे, तेम ज श्लोको गवाता हता ते गावानी अनुकूलता माटे, तेना गानना सस्कारो पण दृढ करवा आवे छे एटले अर्वाचीन पिंगल चार पक्तिना श्लोकने श्लोक गणवा उपरात श्लोकनी एक पक्तिने ज सवादनु एकम गणे छे श्लोकनी एक पक्तिमा एवो सवाद रहेलो छे के ते एकली स्वतत्र आवी शके आ मान्यता प्राचीन पिंगलने पण तद्दन नवी नथी वैदिक छदोमा श्लोक उपरात पादनो पण स्वीकार छे एक अष्टाक्षर पाद गायत्र्य पाद कहेवाय छे वेदमा एकपदा तेम ज द्विपदा गायत्री मळी आवे छे (गत पृ. ६२-६३) अत्यारे आपणे पण ए रीते वृत्तना पादनो स्वीकार कर्यो छे आपणा कविओ वृत्तोना मिश्रणोमा एक वृत्तनी एक ज पक्तिनो पण उपयोग करे छे, तेम ज एक ज पादनो पण एक मुक्तक तरीके उपयोग करे छे जेमके

शार्दूलविक्रीडित . सृष्टीनो परिताप ए ज वहशे, पेणे जुवानी वरी
उन्मेष पृ १८३

वसन्ततिलका अक्लान्त जेह सहुपान्थ कलाप्रवासी.
पारका जण्या

शिखरिणी रम्यो हैये मारे सतत तव सौजन्यसुरभि
अर्पणपक्ति, 'आराधना'

शार्दूलविक्रीडित हैयानेय कहु शु? एक रटणा एणे धरी ताहरी
'अभिसार'ना मुखपृष्ठ पर

स्रग्धरा: वेणीमा गूथवाता कुसुम नहि रह्या अर्पवा अजलीथी.
अपण, 'शेषना काव्यो'

वशस्थ: क्या वही जाय शि रीत स्नेहनी?
'धूम्रसेर'नी अर्पणपक्ति

एक पंक्तिने सवादी गणता हवे श्लोक पण चार ज पक्तिनो थवो जोईए एवो मत रह्यो नथी अलबत चार पक्तिना श्लोको लखाय छे अने लखाशे पण ते साथे बे पक्तिना, त्रण पक्तिना, पाच पक्तिना, छ पक्तिना पण लखाय छे अने लखाशे 'प्राचीना'ना मुखपृष्ठ परनो श्लोक तेम ज तेनो

अर्पणश्लोक वच्चे पक्तिओना छे 'आराधना'नु "सजी दईश?" काव्य त्रण पक्तिना एक ज श्लोकनु छे पण एवा छूटा मुक्तको ज थया छे एम नथी, पतीले त्रण त्रण पक्तिना श्लोकोवाळा काव्यो लख्या छे. आ प्रकार ओछो परिचित छे तेथी दृष्टान्तो आपु छु:

(पृथ्वी)

प्रयां जगतकेरी साथ मुजने न संबध हो
म्हने वखत थोभवा जगतमाहि आ केटलो?
पतगवत जिंदगी, निकट मृत्यु दीवो खडो!

हु जाणु नहि हाल काल मुज शा थशे; को कहे,
कदाच सरिता विशाळ मुज आ वहेती रहे,
अने हृदय बध थाय, जडता सदानी ग्रहे!

अने

(हरिणी)

कबुल तु शके म्हारी प्रीति निखालस जो करी
सहन करवा लागो लाखो कलक बिजा फरी
सज समर्जि ले साचे मूने किशोर कृशोदरी!

मुज कबरमा ल्हारा स्वप्नो अहोनिश आपजे
मुज शब परे ल्हारू हैयू अमेय वहावजे
मुज निधनमा हमेशा तू युवापद स्थापजे.

पाच पक्तिना मुक्तको मळे छे 'पारडी'मा 'महाजनोनो मोह' (पारडी पृ. २९) 'ऊजाईनो गर्व' (एजन पृ. ५२) ए बने वसततिलकाना पाच पक्तिना मुक्तको छे, अने 'घणु मोडु' (एजन पृ. ७१) शिखरिणीनो पाच पक्तिनो श्लोक छे श्लोक एकथी सात पक्तिनो थई शके छे. अने आने पिंगलनो नवीन विकास गणवो जोईए कारण के प्राचीन पिंगल प्रमाणे छ चरणनो अनुष्टुप ते अनुष्टुप नही पण गाथा गणाय छे. पिंगलनु 'छन्द शास्त्र' अने तेने अनुसरनारा बधा ज पिंगलो चार चरणोना वृत्तो कही रह्या पछी सूत्रोमां नही आवी गयेल वृत्तोने माटे सूत्र मूके छे. "अत्रानुक्त गाथा।" (छ शा., ८, सू. १) "अही नही कहेलु ते गाथा गणाय." बधा पिंगलो लगभग आ अर्थना सूत्रो आपे छे अने तेना दृष्टान्तमा लगभग दरेक जगाए महाभारतनो नीचेनो श्लोक गाथाना दृष्टान्त तरीके आपे छे.

दश धर्मं न जानन्ति धृतराष्ट्र निबोध तान्।
मत्त प्रमत्त उन्मत्त श्रान्त क्रुद्धो बुभुक्षित ॥
त्वरमाणश्च भीरुश्च लुब्ध कामी च ते दश॥

आ अनुष्टुपना चरणोमा स्वरूपनी दृष्टिए कशु ज नवु नथी, फेर मात्र चारने बदले छ चरणो छे एटलो ज छे पण ए, शास्त्रना नियमोनी बहार जाय छे, शास्त्रमा अनुक्त छे, अने तेथी ए अनुष्टुप नथी खरू तो मैं आगळ कह्यु तेम आख्यानकालमा केटलाक छदोनु तेम ज श्लोकनु स्वरूप नियत थयु नहोतु अने तेथी आवा प्रयोगो मळे छे पछीना सस्कृत कालमा साहित्य चतुष्पाद श्लोकबधमा ज वहे छे अने पिंगल एने ज शास्त्रीय माने छे अर्वाचीन कालमा आपणे एक तरफथी नवा श्लोकबधो रच्या, जेना थोडा दाखला उपर लख्या अने बीजा हवे आवशे, अने बीजी तरफथी श्लोकबध तोडी यथेच्छ अनियत सख्यानी पक्तिओना परिच्छेदोमा काव्यने वहेवडाव्यु एमा कवि केवळ अर्थने अनुसरीने यथेच्छ रीते गमे तेटली पक्तिए, एकी सख्यानी पक्तिए पण, परिच्छेद पाडे छे आने प्रो ठाकोर श्लोकभग कहे छे

आ श्लोकभग मुख्यत्वे शक्य बने छे,——काव्यमाथी गेयतानु विश्लेपण करवाथी आगळ (गत पृ ११९–२०) कही गयो तेम आपणी परपरा बधा ज वृत्तो गावानी छे अनुष्टुप पण गवातो गावाने माटे चार चरणो आवश्यक हता अग्रेजी काव्यना परिचयथी आपणने समजायु के काव्यने गावानी जरूर नथी अग्रेजी काव्यनु गीतरहित पठन[२] थाय छे, तेथी आपणे पण तेवा पठननो उपयोग कर्यो अने सस्कृत वृत्तोमा ए एकदम शक्य बन्यु कारण के सस्कृत वृत्तो, सगीतना ताल साथे सबध धरावता सधिओना आवर्तनोना बनला नथी एटले अगेय काव्यनी भावनाना उदय साथे ज एने माटे उपयोगी वृत्तोना आखो एक भडार कविओने जडी गयो! गुजराती काव्यमा एथी एकदम अगेय काव्यनो फाल आव्यो आ रीते पिंगलमा एक नवी विचारदृष्टि प्रवेश पामी, अने पिंगले नवी दिशाए विकास साधवा माड्यो

काव्यमाथी गेयता नीकळी जाय एटले पछी काव्यो मात्र अर्थने अनुसरीने पठवाना रहे[३] छन्दना विराम उपरात अही अर्थविरामनी दृष्टि सामेल थाय छे ए दृष्टिने लीधे छन्दनी यतिओ विशे पण आपणे फरी

२. recitation

३ आ प्रकारनु पठन सस्कृत नाटकोमा परिचित हतु एनु कईक सूचन मने भरतनाटचशास्त्रमाथी मळे छे भरतनाटचशास्त्र वागभिनयने अगे, छन्दथी स्वतत्र रीते, छन्दना पठनमा अर्थ प्रमाणे पठन करवानु कहे छे भरत-

विचार करवो प्राप्त थाय छे. अने हवे आपणे आपणा पृथक्करणव्यापारमा चरण पछी यति आगळ ज आवीने ऊभा रहीए छीए.

आपणे आगळ जोई गया के वृत्तोना दरेक चरणे यति होय छे (एक उद्‌गता सिवाय). ते उपरांत केटलाक वृत्तोमा एक अने केटलाक वृत्तोमा बे मध्ययति होय छे. आ यतिओमा कई भेद छे के नही ए सबधी प्रास्ताविक श्लोकोमा थोडु चर्चेलु मळी आवे छे,* पण ए सिवाय आ यतिओ सबधी एक बीजी बहु महत्त्वनी वात पिंगलोमाथी ज मळी आवे छे ते ए के श्लोक पूर्ण थया पछी तेम ज श्लोकार्ध पछी सधिव्यापार चालतो नथी पण श्लोकार्धनी

नाटयशास्त्रना सत्तरमा अध्यायमा नीचे प्रमाणे छे:

"अथ विराम. अर्थसमाप्तौ कार्यस्तथाश्च छन्दोवशात्। कस्मात्, दृश्यन्ते ह्येकद्वित्रिचतुराक्षरा विरामा । यथा

कि, गच्छ, मा विश, सुदुर्जन! वारितोऽसि,
कार्यं त्वया न मम, सर्वजनोपभुक्तम्॥"

भ. ना. गा. वॉ २, पृ. ३९९

अही स्पष्ट जणावेलु छे के छन्दने लीधे नही पण अर्थसमाप्तिने लीधे विराम करवानो छे. अने तेनु दृष्टान्त वसन्ततिलकानी बे पक्तिओमा आपेलु छे, तेमा एक, बे, त्रण, चार एम अक्षरोए विरामो आवे छे, ज्या में विरामचिन्ह मूकेला छे तेना उपरनी टीकामा अभिनवगुप्त आज दृष्टिबिन्दु वधारे स्पष्ट करे छे: "तत्रेति विछेच्छेदे, अर्थसमाप्तिनिमित्त विरामो वास्य कार्य । अर्थोऽत्रावान्तरवाक्यार्थ । न छन्दोवशादित्यनेन कविना प्रयोगपरतन्त्रेण तदा स तदवसरोचितविरामवति वृत्ते ग्रहणप्रयत्न कार्य । प्रयोक्त्रापि कविपरतन्त्रेण न भाव्यमित्यत्रापि तेनार्थवशाद्विराम कार्य इत्याख्यातम्।" ए कहे छे के अर्थसमाप्तिने कारणे विराम करवो थर्य एटले वाक्यनो अवान्तर अर्थ (मुख्य अर्थ तो आखा श्लोकमा के काव्यमा पूरो थाय. तेनी अही वात नथी) अभिनवगुप्त एटला माटे आगळ जईने कहे छे के कविए पण अर्थ प्रमाणे विराम मूकी शकाय एवु वृत्त पसद करवानो प्रयत्न करवो अने प्रयोजके (भजवनाराए) पण कविने वश न थती जता वृत्तमा न होय त्या पण अर्थ प्रमाणे विराम करवो

४. निर्णय सागरनी 'छन्द शास्त्र'नी भूमिकामा आवी चर्चा छे. त्या नीचे प्रमाणे श्लोक मळे छे·

श्लोकेऽर्धमात्रा तु यतो विरतौ मात्रयान्तरम्।
विच्छेदे त्वत्र मात्रे द्वे अवराये ततोऽधिकम्॥

छ. शा. भूमिका पृ ६२

अदरनी एकी अने बेकी पक्ति वच्चे सधि आवश्यक छे, जो के त्या शब्द विभक्ति-प्रत्यय साथे पूरो थवो जोईए, (–सधिने लीधे थता थोडा अपवादो बाद करता). मध्य यतिए पण सधि आवश्यक छे पण त्या शब्दोना पण विभाग थई शके छे, मात्र एटलु के एम यतियी थतो कोई पण एक विभाग बे अक्षरथी नानो न होवो जोईए.[५] (जुओ गत पृ ९९)

प्राचीन पिंगलो क्या वधी यतिओनो अर्थ विराम एवो करे छे पण मने ए अर्थ चिन्त्य जणाय छे मध्य यति अने विषम सम पक्तिओ वच्चे जो विराम ज आवश्यक होय तो सधि थई शके? सस्कृत सधिनियमो प्रमाणे वाक्य पछी सधि थती ज नथी. एनु कारण स्पष्ट छे के वाक्य पूरु थये विराम आवे, अने तेथी वाक्यान्ते आवता शब्दनो, पछी आवता वाक्यना आद्य शब्द साथे सपर्क ज अशक्य बने सपर्क विना सधि अशक्य छे सधि-योग्य स्थितिने सहिता–निकटपणु ज कहेल छे तेवी ज रीते वाक्यनी अदरना शब्दोनी सधि बोलनारनी इच्छा उपर आधार राखे छे, तेनु कारण पण ए ज छे के बोलनार पोतानी इच्छा प्रमाणे शब्दो छूटा पाडीने बोले, तो शब्दोनो परस्पर सपर्क न रहे एटले सधिनी जरूरत न रहे काव्यमा तो छन्द प्रमाणे शब्दो भेगा बोलवाना छे ज तेथी पक्तिनी अदर, वाक्य एक होय के अनेक होय तो पण, सधि आवश्यक गणी छे श्लोकार्धे विराम आवे छे माटे सपर्क अशक्य बनता सधि निषिद्ध करी छे एथी ऊलटी रीते दलील करतां, एम ज मानवु पडे, के ज्या ज्या सधि आवश्यक मानी छे त्या त्या वच्चमा विराम न होई शके माटे हु मानु छु के मध्ययति आगळ अने विषम-सम पक्तिओ वच्चे, जे यति छे ते विरामात्मक नथी, पण मात्र विलबनात्मक छे. अत्यारनी परपराप्राप्त श्लोकपठन पद्धतिमा पण श्लोकान्ते अने श्लोकार्धे विराम पहेला विलबन आवे ज छे हु मानु छु के ए सिवायनी विषम-सम चरण वच्चेनी यति अने मध्ययति मात्र विलबनात्मक ज छे मध्ययति आगळ तो शब्द पण तोडी शकाय छे, तो त्या पाठविच्छेदात्मक विराम आवी ज न शके पदमध्ययतिना दृष्टान्त तरीके नीचेनी पक्ति अपाय छे

पर्याप्त तप्तचामी —करवटकतटे श्लिष्टशीतेतराशौ।

अहीं 'चामीकर' (=सोनु) एक शब्द छे तेना उच्चारणमा 'चामी'– पछी अटकी जईने 'कर' एम बोलवानु होई शके ज नहीं एटले हु मानु छु के मध्ययतिमा मात्र विलबन ज इष्ट छे विराम उपरात पाठविच्छेद

५ पिंगलनी चर्चामा आम शब्दभगनो तद्दन निषेध नथी कर्यो पण कोई पण शिष्ट कविना काव्यमा एवो शब्दभग मळतो नथी.

नहीं अने विपमसम गणिनु पण हु एम ज समजु छु सधि थयेला शब्दोनी वच्चे विराम अत्यत कढंगार थाय. जेमो

ताबूलवल्लीपरिणद्धपूगा-
स्वेलालतालिगितचन्दानाम् ॥

रघुवश ६, ६४.

अर्थ समजीने पाठ करनार अहीं 'पूगा' आगळ विराम नही करशे ज नही कारणके तेनो विभक्ति प्रत्यय 'सु', आगळ आवता 'स्वे' मा सधि पामेलो छे एटले हु मानु छु के श्लोकार्ध अने श्लोकात सिवायनी यतिओ मात्र विलंबनात्मक छे एटले विवक्षाए कोई त्या विराम करे तो तेने हु दोप कहेतो नथी पण त्या आवश्यक छे ते मात्र विलबन, विराम नहीं.'

६. विरामनो शब्दार्थ अटकी जवु एवो थाय छे, छता विराम शब्द विलबनना अर्थमा वपरातो हशे एवु सूचन मने भरतनाटचशास्त्रना अमुक श्लोको उपरथी मळे छे

विपादे च वितर्के च प्रश्नेऽस्यामर्ष एव च।
कलाकाल्प्रमाणेन पाठ्य कार्यं प्रयोक्तृभि ॥ १४१
सोपाणार्थप्रयोगेन विरामे विरमेदिह।
एकद्वित्रिचतुष्पचषट्कल च विलबितम् ॥ १४२
विलबिते विरामे हि सदा गुर्वक्षर भवेत्।
षण्णा कलाना परतो विलबो न विधीयते ॥ १४३

एनो अर्थ हु एम समजु छु के विषाद वितर्क वगेरे भावोना नाटचनिरूपणमा प्रयोक्ताए पाठमा विराम करवो आवो विराम एकथी छ मात्रा सुधीनो होई शके विलबित विराममा हमेशा गुरु अक्षर जोईए आना उपरनी टीकामा अभिनवगुप्त कहे छे. "कललक्षणो य काल तत्प्रमाणेन विलबितेन कार्यमिति विच्छेदस्यैव प्रमाण दर्शितम्। अर्थयोगेनेति यथा स्फुटा प्रतीतिर्भवति तथा विच्छेद कार्यो न त्वतिविलबित पठेदित्यर्थ। (भ ना शा वॉ २ पृ ४०२) अही १४२ मा श्लोकमा आवता 'अर्थयोगेन विरमेत्' ए शब्दो उपर टीका करता अर्थप्रतीति अस्फुट थई जाय एटलो वधो विलबित पाठ न करवो एम कहेलु छे एटले विराम, विच्छेद, विलबन ए बधा शब्दो आ सदर्भमा लगभग एक ज अर्थमा वापरेला होय एम जणाय छे छता भरतनाटचशास्त्रनी शुद्ध प्रतो हजी मळती नथी, वधारे टीकाओ मळती नथी, एटले पूरी खातरीथी आ अर्थ उपर हु आधार राखी शकतो नथी

पण आटला विलबनने आवश्यक गणवु ज जोईए एने न स्वीकारीए तो श्लोकमा पछी एक चरणने बीजाथी भिन्न करवा बीजु कशु तत्त्व रहेतु नथी अलबत्त आ बधा ज अक्षरमेळ वृत्तोमा अक्षरनी सख्या नियत छे पण छन्दोबद्ध काव्यना श्रवणमा श्रोता कई अक्षरो गणीने पक्तिनु आकलन करतो नथी श्रवणमा तो पक्तिना उपसहारनो सस्कार चरणने अते आवता विलबन के विलबनपूर्वक थता विरामथी ज थाय छे ए विलबनने माटे ज बधा वृत्तोमा (एक उद्गताना दृष्टान्त सिवाय) चरणने अते गुरु आवे छे सस्कृतमा गुरुने ज लबावी शकाय छे, अने तेथी चरणान्ते हमेशा गुरु आवे छे ए विलबनने लीधे ज चरणान्त लघुने पण पिंगल गुरु गणे छे—गुरु करे छे अलबत आनो अर्थ एवो नथी ज के चरणान्ते गुरु मूकी विलबन करीए एटलाथी ज चरणनो मेळ सधाई जाय छे मेळनी दृष्टिए एम कहेवु जोईए के सस्कृत वृत्तोमा आवता चरणनो मेळ तेमा आवता लघुगुरुना न्यासमा अने अते आवता गुरु अने तेना विलबनमा रहेलो छे वृत्तना चरणमा लघुगुरुन्यास एवी रीते करेलो होय छे के ए चरण पोते ज अते गुरु अने तेनु विलबन मागी ले आ प्रमाणे विलबन ए मेळनो भाग होवाथी सस्कृत वृत्तोमा चरणात बतावबा प्रास के एवी बीजी कशी छन्दोभगीनी जरूर पडती नथी तेथी सस्कृत पिंगले प्रास के यमकने हमेशा आगन्तुक गणेल छे, कदी तेने छदनु आवश्यक अग गणेलु नथी, तेनी कदी चर्चा करी नथी सस्कृत पिंगल हमेशा प्रासथी मुक्त रहेलु छे आ सर्व उपरथी जणाय छे के चरणान्त विलबन के विलबनपूर्वक थता विरामने छन्दनु ज अग गणवु जोईए

आ विरामने बदले विल्बनने आवश्यक गणवाथी अर्थानुसारी गीतरहित पठनने बहु लाभ थई जाय छे अर्थप्रवाह जाळववा माटे बे पक्ति वच्चे आवती यति मात्र टूका विलबनथी ओळगी शकाय छे अने मध्ययति तो ए करता पण टूका विलबनथी ओळगी शकाय श्लोकभग थाय त्या तो श्लोकार्ध के श्लोकान्तनो पण प्रश्न रहे नही एटले अमुक पक्तिए श्लोकार्ध थई त्या विलबनपूर्वक विच्छेद आवश्यक बने नही अर्थात् कवि, अर्थविवक्षाए कोई पण एक चरणनो अत मात्र विल्बनवाळो अथवा विलबन अने विच्छेदवाळो करी शकशे पण साथे साथे हु एम पण मानु छु के, श्लोकमा वधारेमा वधारे बे ज चरणो विच्छद विना विलबनात्मक यतिथी सधाई शकता हता, वधारे नही, ए अही श्लोकभग थया पछी पण याद राखवु जोईए अर्थात् पद्यप्रवाहमा, भले कोई चरणे विच्छेदवाळी अने काई चरणे मात्र विलबनवाळी यति आवे, पण बेथी वधारे पक्तिओ विच्छेद विनाना

खंडमा न आवे ए इष्ट गणवु जोईए अतरे अतरे ए विच्छेद आवे ए वृत्तरचनाना वधारणनु अग छे, अने माटे ते लाबा अतर सुधी लुप्त थवा देवु जोईए नही.

चरणान्त यतिने आपणे छन्दनु आवश्यक अग गणी. आ पछी मारे ए कहेवानु छे के मध्ययति पण छदनु आवश्यक अग छे. अलबत्त वृत्तनें माटे चरण, अने चरणने माटे चरणान्तव्यंजक विलबन आवश्यक छे ए दृष्टि मध्ययतिना अस्तित्वने समर्थित करी शके नही. पण सयतिक छन्दोनो एक साथे अभ्यास करी जोता जणाय छे के ए पण एक छन्दनु ज अग छे.

हवे हु ए विषय लउ छु अने एना प्रारंभमा हु आगळ आवी गयेल बधा सयतिक वृत्तोना लगात्मक न्यास एक साथे मूकु छु जेथी बधा वृत्तो एक नजरे जोई शकाय.

शालिनी गागागागा । गालगा गालगागा
वैश्वदेवी : गागागागागा । गालगा गालगागा
मदाक्रान्ता : गागागागा । ललललल्गा । गालगा गालगागा
स्रग्धरा : गागागागा लगागा । ललललललगा । गालगा गालगागा
मालिनी . लललललगागा । गालगा गालगागा
हरिणी : लललललगा । गागागागा । लगा ल्लगा लगा
सुवदना : गागागागा लगागा । ललललललगा । गागा लललगा
प्रहर्षिणी . गागागा । लललगा लगा लगागा
रुचिरा : लगालगा । ललललगा लगालगा
शिखरिणी : लगा गागागागा । ललललगागा लललगा
शार्दूलविक्रीडित : गागागा ललगा लगा ललल्गा । गागालगा गालगा

हवे आपणे आ सयतिक छदोनो वधारे सूक्ष्मताथी अभ्यास करीए आपणे आ छदोनु पृथक्करण करता जईए अने कई परिस्थिति यतिने आवश्यक बनावे छे ते जोईए

आ छदोनो मोटो भाग एवो छे जेमा पहेलो यतिखड गुरुबहुल छे ए जोता वही शकाय के चार के वधारे गुरुओ भेगा थता ते पछी यति आवश्यक बने छे जाणे एक साथे आवता गुरुओनो आरोह एटलो विकट बने छे के त्या पहोच्या पछी विलबननी स्थिति करवी पडे छे ए आरोह पछी अवरोह आवे छे अने तेनो ढोळाव ओछो विकट होय छे चढाव के ढोळाव गुरुओथी विकट बने छे तो लघुओथी ते वधारे सहेलाईथी बने छे शालिनीनो

पहेलो यतिखड चार गुरुए पूरो थाय छे, पण पछी अवरोहमा लघुओनु मिश्रण थवाथी अवरोह सात अक्षरो सुधी लवाय छे शिखरिणीनो आरोह एक लघु उपरात पाच गुरुओथी थाय छे तो तेनो अवरोह वधारे लघुमिश्रणथी अगियार अक्षर सुधी जाय छे पण ज गुरुओ पछी यति आवती होय एवो एक ज दाखलो प्रहर्षिणीनो छे तेना गुरुओ उच्चारणमा वधारे जोरदार छे तेथी यति शक्य बने छे तेनो अवरोह पण लघुमिश्र होई दस अक्षर सुधी लवाय छे एथी ऊलटो दाखलो शार्दूलविक्रीडितनो छे, जेमा पहेला यतिखड लघुमिश्र होई बार अक्षर सुधी लवाय छे अने बीजो यतिखड गुरुबहुल होई सात अक्षरमा पूरो थाय छे वळी केटलाक आवा दाखलामा एम पण जणाय छे के जाणे गुरुओना भरावानी सामे समतुला जाळववा यति पछी तरत एक लघुबहुल खड आवे छे मदाक्रान्तामा पहेला चार गुरुओना यतिखड पछी पाच लघु अने एक गुरुनो मध्ययतिखड आवे छे शिखरिणीमा पण यति पछी पाच लघु आवे छे स्रग्धराना पहेला यतिखडमा छ गुरुओ आवे छे, तो ते पछीना यतिखडमा छ लघु अने एक गुरुनो यतिखड आवे छे प्रहर्षिणीना पहेला यतिखडमा त्रण गुरु छे तो तेनी पछी चार लघु आवे छे वळी एम पण जणाय छे के चारथी वधारे गुरुओ लघुनी मदद विना भेगा थई शकता नथी शिखरिणीमा पाच गुरु भेगा करवा छे तो आदिमा एक लघु आवे छे स्रग्धरामा छ गुरु भेगा करवा छे, तो वचमा पाचमो लघु आवे छे आ रीते जाणे वृत्तरचना एक साथे आवता बहु गुरुओने सहन करी शकती नथी तेथी यति आवश्यक बने छे

एवी ज रीते अमुकथी वधारे लघुओ भेगा थवाथी यति आवश्यक बने छे पण त्या पण लघुओने अते गुरु आवे ज छे यतिमा विलबन आवश्यक छे अने ते गुरु विना शक्य नथी, तेथी यति पूर्वे हमेशा गुरु आवे छे[७] एटले लघुपरपराने अते पण गुरु आव्या पछी ज यति आवी शके जेम गुरुओ माटे कह्यु छे के चार गुरुओ पछी यति आवश्यक बने छे तेम कही शकीए के पाच के वधारे लघु पछी गुरु आवी यति आवश्यक बने छे आनो प्रसिद्ध दाखलो हरिणी छे तेना पहेला बे यतिखड ते मदाक्रान्ताना उलटावेला पहेला बे यतिखडो बराबर छे, एटले एनो पहेलो यतिखड लघुबहुल छे तेमा पाच लघुओ पछी गुरु आवी यति आवे छे आ साथे स्रग्धराना मध्ययतिखड पण गणावी शकाय कारण के तेमा पण छ लघु पछी गुरु आवी यति आवे छे कदाच सौथी प्रबल दाखलो मालिनीनो छे तेमा छ लघु पछी बे

७ पिंगलना केटलाक वृत्तोमा लघु पछी यति जणाय छे तेनु निराकरण आ प्रकरणने अते आपेल परिशिष्टमा करेलु छे

गुरु आवीने पछी यति आवे छे. शालिनी अने मालिनी बन्नेना उत्तर यति-खंडो एक ज छे. शालिनीमां चार गुरुओथी यतियोग्य आरोह थाय छे. मालिनीमा छ लघु अने बे गुरुओथी यतियोग्य आरोह थाय छे. आ उपरथी जणाशे के यतियोग्य आरोह माटे गुरुओ थोडा जोईए छे, लघुओ वधारे जोईए छे, जो के बने वच्चे कोई जातनु गणितप्रमाण नथी.

आथी ऊलटी रीते जे वृत्तोमा उपर बताव्या प्रमाणे चार के वधारे गुरुओ, के, अने एक के बे गुरुओवाळा पाच के वधारे लघुओ आवता नथी, ते वृत्तो सयतिक नथी. आगळ आवी गयेला कोई पण अयतिक वृत्तमा चार जेटलु गुरुसपतन के पाच जेटलु लघुसपतन थावतु नथी. आ कसोटीथी आपणे कही शकीए के पृथ्वी अयतिक वृत्त छे, पृथ्वीने घणा पिंगलो सयतिक माने छे ('रणपिंगल' पृ० ३६३) अने आपणे जेने नर्दटक कह्यु तेने पण केटलाक पिंगलो सयतिक माने छे (एजन पृ ३६५) पण आमानी एक पण यति आवश्यक नथी. वसन्ततिलकामा पण केटलाक पिंगलो भिन्न भिन्न स्थाने यति माने छे (एजन पृ ३३६) पण एमा यति आवश्यक नथी. आपणे ए त्रणेय वृत्तोनो न्यास फरी जोईए.

वसन्ततिलका : गागालगा ललगा ललगा लगागा
पृथ्वी : लगा ललगा लगा ललगा लगा गालगा
नर्दटक : लललगा लगा ललगा ललगा ललगा

अही कोई पण जगाए वेथी वधारे गुरु भेगा थता नथी, घणी जगाए तो गुरु एकलो ज आवे छे, तेम ज कोई पण जगाए चारथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी, घणीखरी जगाए तो बे के त्रण ज लघुओ भेगा थाय छे एटले आमा यति आवश्यक नथी. केह ध्रुवे आ स्थानोनी यतिने शोभानी कही छे ते यथार्थ छे (सा वि. भा. १, ११५) आ ज रीते आपणे जोयु के शार्दूल-विक्रीडितमा चार जेटला गुरुओ के पाच जेटला लघुओ क्याय सळग आवता नथी तेथी बार अक्षर सुधीना खडमा यति आवती नथी बार अक्षरे यति आवे छे ते पंक्तिना लबाण के विस्तारनी यति छे, जेने आपणे यतिनी आवश्यकतानु गौण कारण मानवु जोईए. आवी लबाणथी आवश्यक थयेली आ एक ज यति छे. पण उपर जणावेला वसततिलका, पृथ्वी, नर्दटकमा जे शोभानी यति आवे छे त्या पण कारण आ लबाणनु छे सामान्य रीते सस्कृतमा टूकामा टूको श्लोक अनुष्टुप छे, एटले कोईने आठ अक्षरे यतिनी अपेक्षा ऊभी थाय. अने उपरना वृत्तोमा वसततिलका अने पृथ्वीमा आठमे ज यति छे ए सूचक छे नर्दटकमां सातमे यति छे, तेनु कारण ए छे के यतिने माटे गुरु

आवश्यक छे, अने आठमा स्थाननी नजीकमा.नजीक गुरु सातमे स्थाने छे पण आ लवाण अनिर्वाह्य नथी एटले त्या यतिने आपणे आवश्यक गणता नथी. अनुष्टुपना श्लोकार्धने एकम लई आपणे सतत पठी शकीए छीए ए जोता मोळ अक्षर सुधी अयतिक छदो जई शके एम कही शकीए, अने आपणे जोईए छीए के अयतिक छदो वधारेमा वधारे सत्तर अक्षरो सुधी जाय छे सावारण पठ्यानी पद्धतिमा आ लवाण क्लेशकर लागतु नथी, सुभग लागे छे, एटले वसततिलका पृथ्वी नर्दटकमा यति नथी ए अभिप्राय ज शास्त्रीय गणवो जोईए

आ उपरथी आपणे कही शकीए के अनावृत्तसधि वृत्तोमा ज्या यति होय छे त्या ते वृत्तना सवादनु अविश्लेष्य अग छे अने तेनु स्थान स्थिर होय छे वृत्तोमा लघुगुरुना जे कनथी अने चरणान्ते आवता गुरु अने पछीनी यतिथी सवाद सिद्ध थाय छे, ते ज लघु के गुरुना अमुक सख्याना सघतनथी ए सवादना एक अग तरीके मध्ययति आवश्यक बने छे ए ज्या होय त्या स्थिर होय छे एटले केटलाक छान्दसिको जे एम माने छे के वृत्तमा जुदे जुदे स्थाने यति मूकवाथी नवा नवा छन्दो थाय छे ते छन्दना सवादना स्वरूप साथे असगत छे आपणे आगळ जोई गया के नर्दटकमा जुदे जुदे स्थाने यतिओ मूकीने पिंगलकारो तेना अवितथ कोकिलक वगेरे नवा छन्दो बनाववानो के निरूपवानो दावो (जुओ छ र पृ ६४) करे छे ते अनाधार छे

आपणे उपर जे चर्चा करी अने यतिने आवश्यक बनावनारी जे परिस्थिति नक्की करी तेमा प्रथम दृष्टिए केटलाक अपवादो जेवु देखाय छे ते हवे जोईए आपणे जोयु के पाच के छ लघु सळग आवता पछी गुरु आवी यति आवश्यक बने छे अहीं अपरवक्त्र वृत्त एक दृष्टिए अपवाद जेवु जणाशे तेनी विषम पक्तिमा एक साथे छ लघु आवे छे, छता एना चरणमा यति आवती नथी पण आ वृत्त अर्धसम वृत्त छे, अने एना मूळ स्वरूपमा तेनो आद्यभाग मात्रामेळी हतो तेमाथी आ परिणाम आव्यु छे एटले आ दृष्टान्त आपणा सिद्धान्तोने हानिकारक नथी आनाथी ऊल्टा प्रकारना अपवाद जेवु रुचिरा वृत्त जणाय छे तेमा प्रथम लगालगा आवे छे, तेमा गुरु तो बे ज छे छता त्या यति आवे छे पण ए यति खरी तो प्रहर्षिणीमाथी ऊतरी आवेली यति छे रुचिरा ए प्रहर्षिणीनी ज विकृति छे

प्रहर्षिणी . गागागा । ललललगा ल्गा लगागा
रुचिरा लगालगा । ललल्लगा लगाल्गा

प्रहर्षिणीमा त्रण गुरुओ हता तेनी मात्रा सचवाई लगाल्गा एवु रूपान्तर थयु छे अने तेथी मूळनी यति पण त्या ऊतरी आवी छे नहितर

रुचिरामा स्वतंत्र रीते मने यतिनी आवश्यकता जणाती नथी रुचिरामा ल्गाल्गायी प्रारभ थाय छे, उपेन्द्रवज्रामा ल्गाल्गागा थी प्रारभ थाय छे अने छता त्या यति नथी तो रुचिरामा पण यति आवश्यक न होई शके पठनमा पण मने एम ज जणायु छे, अने तेना दृष्टान्त माटे हु नीचेनी पंक्तिओ रजू करु छु

> नदी प्रवाह मलिन मेघथी थये,
> विकार वारि महि न थाय सिन्धुना

शिशुपाल वधनो १७ मो सर्ग रुचिरामा छे तेना १८ मा श्लोकनो उत्तरार्ध

> घनाबुभिर्बहुलितनिम्नगाजलै
> र्जलं न हि व्रजति विकारमबुधे ॥[८]
>
> शिशुपालवध १७,१८

प्रमाणे छे तेना अर्थने अवलबीने उपरनी पंक्तिओ लखी छे अही अर्थ-दृष्टिए भाषान्तर करवानो प्रयत्न नथी, पण उपरनी पंक्तिओमा चार अक्षर पछी यति आवती नथी तेने लीधे पठनमा विक्षेप के क्षति जणाय छे के नही ते परीक्षवा आ पंक्तिओ लखी छे पहेली पंक्तिमा यतिस्थानथी प्रवा,ह एवा अने बीजी पंक्तिमा वा,रि एवा विभागो ते ते शब्दना पडे छे मारो नम्र मत छे के यति विना छन्दप्रवाह यथायोग्य चाले छ

रुचिराथी जरा जुदी रीते शिखरिणी पण अपवादनु दृष्टान्त छे आपणे आगळ जोयु के पाच के छ लघुओ पछी गुरु आवे छे त्यारे यति आवश्यक बने छे शिखरिणी तेमा ए रीते अपवाद छे के तेमा मध्य यति पछी पाच लघुओ अने पछी बे गुरुओ आववा छता त्या बीजी मध्य यति आवती नथी

शिखरिणी लगा गागागागा । ललललल्गागा लललगा

अलबत शिखरिणीना पहेला छ अक्षरो पछीना भागमा कोई पिंगल मध्य यति आपतु नथी पण गुजरातमा जे रीते शिखरिणीनु गान साथे पठन थाय छे तेमा यति जवु विलबन स्पष्ट होय छे आ विलबन एक के बे रीते आवे छे केटलाक मध्य यति पछी आवता पाच लघु पछीना बे गुरुओ पछी ए विलबन करे छे केटलाक ए लघुपरपरा पछीना पहेला गुरु पछी करे छे, केटलाक विषम चरणमा पहेला गुरु पछी, अने सम चरणमा बीजा गुरु

८ अर्थ नदीना जलोने काळा कर्या छे एवा मेघना जलो वडे जलधिनु जल विकार पामतु नथी

पछी करे छे, केटलाक दरेक गुरु पछी करे छे. पण आ बेमाथी एक गुरु पछी पठनमा अवश्य यति जेवु विलबन आवे छे एमा शका नथी. अने अमुक अमुक सयतिक वृत्तोना बधारण तरफ नजर करता, पहेला के बीजा गुरु पछी यति आववाने कारण छे एम स्वीकारवु पडे एम छे. मदाक्रान्तामा प्रथम यति पछी पाच लघु अने एक गुरुना मधि पछी यति आवे छे. ए उपमान[१] लईए तो शिखरिणीमा ललललगा पछी यति आवी शके. मालिनीमा लघुपरपरा पछी बे गुरु आवी यति आवे छे, तो ए उपमान उपरथी शिखरिणीमा पाच लघु पछीना बे गुरु पछी एटले के ललललगागा पछी यति आवी शके

हवे आ यति सभवित होय तो शिखरिणीना प्रयोगमा पहेला गुरुए के बीजा गुरुए शब्दात आवे छे के केम ए गवेषणनी एक प्रस्तुत दिशा गणाय. आ दृष्टिए हु कालिदासनु 'विक्रमोर्वशीय' अने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' ए बे नाटको तथा भवभूतिना 'उत्तररामचरित' तथा 'मालतीमाधव', तथा जेमा लाबे प्रवाहे शिखरिणी वहे छे एवा बे स्तोत्रो, जगन्नाथनी 'गगालहरी', तथा 'महिम्न स्तव' जोई गयो. तेम ज बीजा प्रास्ताविक मुक्तकोमा शिखरिणीना प्रयोगो आ दृष्टिबिंदुए जोई गयो. कालिदास शिखरिणी बहु वापरतो नथी 'विक्रमोर्वशीय'मा मात्र बे ज शिखरिणी छे अने 'शाकुन्तल'मा आठ छे शिखरिणी माटे भवभूति प्रसिद्ध छे क्षेमेन्द्र सुवृत्ततिलकमा "भवभूते शिखरिणी निरर्गलतरगिणी" अनर्गल तरगवाळी भवभूतिनी शिखरिणीनो उल्लेख करे छे (सु ति. ३, ३३) अने कालिदासनी मदाक्रान्ता वखाणे छे भवभूति 'मालतीमाधव'मा २२ अने 'उत्तररामचरित'मा २९ शिखरिणी प्रयोजे छे 'मालतीमाधव'मा २२ शिखरिणीओमा थईने कुल १८ चरणो एवा नीकळे छे जेमा बेमाथी एक्केय गुरु पछी शब्दान्त आवतो नथी ३१ चरणोमा पहेला गुरुए शब्दान्त आवे छे, अने ४७ चरणोमा बीजा गुरुए आवे छे एटले के बीजा गुरुए शब्दान्त आववानु वलण प्रबल छे 'उत्तररामचरित'मा २९ श्लोकमाथी १७ चरणोमा बेमाथी एक्केय गुरुए शब्दान्त आवतो नथी, ३६ चरणोमा पहेला गुरुए आवे छे, अने ६४ चरणोमा बीजा गुरुए आवे छे अही बीजा गुरुए शब्दान्त आववानु वलण प्रबलतर छे पण ए करता वधारे महत्त्वनी वस्तु ए छे के 'उत्तररामचरित'मा एवा आखा ने आखा श्लोको छे जेमा सळग चारेय चरणोमा बीजा गुरु पछी शब्दान्त आवे छे ४, १२; ५, १६; ५,२६ ('उत्तररामचरित', निर्णयसागर) ए एवा श्लोको छे, त्यारे बीजी तरफ चारेय चरणोमा पहेला गुरुए शब्दान्त आवतो होय एवा श्लोको

१. Analogy.

नथी वळी जेमा छदोरचना अने अर्थ बन्ने प्रसन्न होय एवा घणांखरा चरणोमा मने बीजा गुरुए शब्दान्त जणायो छे

गुणा पूजास्थान गुणिषु न च लिंग न च वय ।
एजन ४, ११

पुरन्ध्रीणा चित्त कुसुमसुकुमार हि भवति।
एजन ४, १२

विमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरह ।
एजन १, ३८

'शिवमहिम्न स्तोत्र'मा पण

न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।
शिवमहिम्न स्तोत्र ८

एवी पंक्ति मळे छे जेमा बीजा गुरुए शब्द पूरो थाय छे 'गंगालहरी'मा पण पहेला गुरुए अने बीजा गुरुए शब्द पूरो थयाना दाखला छे पण पंडित जगन्नाथनो सुप्रसिद्ध श्लोक

दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगंडा करटिन
करिण्य कारुण्यास्पदमसमशीला खलु मृगा ॥
इदानी लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखाना पुनरय
नखाना पाडित्य प्रकटयतु कस्मिन् मृगपति ॥
भामिनीविलास १

आखोय श्लोक ये गुरुए आवता शब्दान्तनो छे प्रास्ताविक श्लोकोमा



जटा नेय वेणीकृतकचकलापो न गरल
गले कस्तूरीय शिरसि शशिलेखा न कुसुमम् ।
इय भूतिर्नांगे प्रियविरहजन्मा धवलिमा
पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर कि मा प्रहरसि॥

श्लोक पण एवा ज शब्दान्तनो दाखलो छे पण हु वधारे दाखला भेगा करवा इच्छतो नथी गुजरातीमा पण आवा दाखला छे गया प्रकरणमा शिखरिणीना दृष्टान्तनो कलान्त कविनो श्लोक आखो उपरना ज वधारणवाळो छे (गत पृ ९४) प्रो ठाकोर साधारण रीते यतिभगनी छूटना हिमायती छे पण तेमना शिखरिणीओमा पण मने उपरना बन्ने स्थाने शब्दान्त थामतो मळ्यो छे 'अर्घोक्ति' काव्यमा पहेली चार पक्तिओमा बीजा गुरुए शब्द पूरो थाय छे,

अने ते पछीनी चार पंक्तिओमा पहेला गुरुए शब्द पूरो थाय छे आमानी आठमी पंक्तिमा तो पिंगलमान्य छठ्ठा अक्षर पछीनी यति पाळी नथी, पण ललललललगा-ए शब्दान्त आवे छे (भणकार (१९१७) पृ० ९०). श्री उमाशंकरना शिखरिणीओमा पण मने आ ज देखाय छे तेमनी 'गंगोत्री'ना पहेला काव्य 'वांछा'मा प्रथम चार पंक्तिओमा पहेला गुरुए, अने पछीनी चार पंक्तिओमा बीजा गुरुए शब्दान्त आवे छे, जो के एकदरे एमना जे शिखरिणीओ मे जोया तेमा पहेला गुरुए शब्दान्त आववानु वलण मने प्रबलतर जणाय छे

पण आथी वधारे हु दाखला लेवा इच्छतो नथी तेनु एक कारण ए के आ दिशा प्रस्तुत होवा छता गणितथी बहु प्रबळ निगमन नीकळी शके तेम नथी उपरना गणितनी विरुद्ध एक एवी दलील करायके एम तो पंक्तिमा अनेक जगाए शब्दान्त आवे छे तेम अही पण पहेला के बीजा गुरु पछी आवे, तेटला उपरथी यतिने समर्थन मळयु न गणाय आ दलील साची छे अने एने स्वीकारता एनु गणित एटलु बधु अटपटु थई जाय के कोई गणितशास्त्री ज तेने पहोची शके. प्रश्नना महत्त्वना प्रमाणमा ए मेहनत हु वधारे पडती गणु छु पण आटले आव्या पछी आखो प्रश्न विचारी जोता एटले सुधी जवानी मने जरूर पण लागती नथी

आपणो प्रश्न ए छे के अमुक सख्याना गुरुना यूथो यतिने आवश्यक करे छे तेम ज अमुक सख्याना लघुना गुर्वन्त यूथो यतिने आवश्यक करे छे मन्दाक्रान्तामा पहेली मध्य यति पछी आवतु ललललल्गा यूथ पछी यति आवे छे एवु ज गुर्वन्त लघुनु यूथ शिखरिणीमा आवे छे, छता यति केम नथी? आना खुलासामा उपरनी लाबी चर्चा करी छे मारु वक्तव्य ए छे के शिखरिणीना पिंगलमान्य मध्य यति पछी ललललल्गागालल्गा एवडो यतिखड रहे छे आ खडमा जो मदाक्रान्ताना धोरणे चालीए, तो लललललगा पछी यति अपेक्षित थाय, जो मालिनीना धोरणे चालीए तो ललल-ललगागा पछी यति अपेक्षित थाय बन्ने अपेक्षाओ बळवान छे, ए गुजरातीओ जे रीते पठनगान करे छे ते उपरथी स्पष्ट जणाय छे मारो खुलासो ए के यति माटेनी आ बे गुरुओनी स्पर्धामा ठामुकी यति ज आवी न शकी अलबत्त गुजराती कवितामा पण घणी पंक्तिओमा आ बेमाथी एक पण स्थाने शब्दान्त आवतो नथी पण ए प्रस्तुत नथी एक वार शास्त्रीय पद्धतिए यति अशक्य गणाया पछी ए ज परिणाम आवे पण यतिनी अपेक्षा छता यति न आवी शके तेना कारण तरीके, गुजराती पठनगान अने बन्ने गुरु पछी शब्दान्त आववाना सख्याबध दाखलाथी आपणे ए गुरु स्पर्धाने यतिना अभावना खुलासा तरीके

स्वीकारी शकीए के नहीं एटलो ज प्रश्न छे ए दृष्टिए जोता हु मानु छु आ खुलासो पूरो नहीं तो अपूर्ण पण प्रतीतिकर थशे अलबत्त महाराष्ट्रीओ शिखरिणीओनु ए रीते पठन नथी करता, पण खुलासानु सूचन तो ज्या मळे त्याथी लेवु जाईए, ए रीते गुजरातना पठनने यतिना अभावना खुलासा तरीके स्वीकारी शकीओ

एक बीजी बाबत पण यतिना अभावनी विचारणामा प्रस्तुत छे शिखरिणीमा यति पछीनी लघुपरपरा पछी पहेले गुरुए यति मूकीए तो बाकीनो यतिखड पाच अक्षरनो रहे, बीजे गुरुए मूकीए तो चार ज अक्षरनो रहे स्वतत्र यतिखड बनवाने आ बहु टूकी अक्षरावली छे अत्यार सुधी जोयेला सयतिक वृत्तोमा अत्य यतिखड टूकामा टूको सात अक्षरनो छे यति न आववामा आ वात पण कारणभूत होय

आ प्रमाणे यतिने आवश्यक बनावता जे कारणो कह्या तेनु सपूर्ण समर्थन जुदा जुदा वृत्तोना दृष्टान्तोमां मळी रहे छे पण ए कारणोने, क्यां छे तेथी वधारे चोक्स करी शकता नथी दाखला तरीके चार ज गुरुए यति शा माटे आवे छे, अथवा गुर्वन्त पचलघुगुच्छ पछी ज यति शा माटे आवे छे, तेनो खुलासो करी शकता नथी तेम ज गुरु लघु वच्चे कोई गाणितिक प्रमाण आपी शकता नथी तेम ज मदाक्रान्तामा मध्य यतिखडमा पाच लघु पछी एक ज गुरुए यति आवे छे, अने मालिनीमा छ लघु पछी बे गुरुए शा माटे यति आवे छे, तेनो खुलासो करी शकता नथी तेम ज शार्दूल-विक्रीडित ओगणीश अक्षरनो केम छे अने शालिनी अगियार अक्षरनो केम तेनो खुलासो पण करी शकता नथी तेम ज मदाक्रान्ताना यतिखडो ऊलटसूलट थई हरिणी वृत्त बन्यु तेम बीजा कोई वृत्तमा केम न थई शक्यु तेनो पण खुलासो करी शकता नथी टूकमा आपणो खुलासो बहधु छे तेथी जरा पण आगळ जई शकतो नथी ए खुलासानी आगळ जवा जे जे प्रश्नो आपणे करीए तेनो एक ज जवाब छे के, ए छे ते रीते ज सवाद थई शके छे, —अन्यथा नहीं कोई प्रश्न करे, के तो आवा अधूरे अटकी जता खुलासाथी शो लाभ ? तो कहेवानु के चार गुरु अथवा पाच के वधारे लघुनु गुर्वत गुच्छ यतिने आवश्यक करे छे, तेटलाथी पण, यति ए छन्दनु अग छे, अने ते होय त्या स्यामाटे होय अने तेथी यतिखडने वृत्तनु एक उपाग गणवु जोईए एटलु चोक्स थई शके छे, अने उपर गणाव्यां ते अयतिक वृत्तोमा मध्य यति आवश्यक नथी एटलु समजाय छे दरेक शास्त्रमा क्याक पण अटकवु तो पडे ज छे, तेम आ प्रश्नमा मारे अहीं अटकवु पडे छे

અર્વાચીન સમયમા, કાવ્ય, લલકારને અને ગાનને છોડી, અર્થાનુસારી પઠન તરફ વળે છે અને તેથી તેને આ યતિનુ બધન ખૂચે છે ઘણા કવિઓએ આ યતિને અમાન્ય કરી કાવ્યો લખ્યા છે આ નવા પ્રયોગને હુ સ્વચ્છન્દ નથી ગણતો અને તેથી મેં કહેલા યતિના સ્વરૂપની સાથે એ પ્રયોગોને ઘટાવવા રહે છે

અહી સૌથી પ્રથમ એ કહેવાનુ કે ચરણાન્ત યતિ તો પળાય એ જ ઇષ્ટ છે ચરણાન્ત યતિસ્થાન આગળ શબ્દનો કોઈ ભાગ, શબ્દનો પ્રત્યય પણ કપાય એ શોભતુ નથી છતા ચરણાન્ત યતિથી પણ પ્રત્યયો કપાયાના દાખલા છે આપણે એ દાખલા જોઈએ સ્વાભાવિક રીતે જ તેમા સૌથી પ્રથમ યતિભગના પ્રથમ શાસ્ત્રીય હિમાયતી[10] ગણાતા પ્રો ઠાકોરના જ દાખલા આવે

જરઠ શિષ્ટતા હિંદની
ફરી નવજુવાન થાય, મુજ દેશની આર્યતા
તણૂ સ્વપન એ અમોલ

'રાજ્યાભિષેકની રાતનુ રેખાચિત્ર', ભણકાર પૃ ૧૯૭

એ જ કાવ્યમા પૃ ૨૦૩ અને ૨૦૯ ઉપર 'તણી' અને 'તણા' મૂળ શબ્દથી કપાઈ પછીની પક્તિમા પ્રારભમા આવે છ અલબત્ત 'તણુ' 'નેરુ' એ પ્રત્યયો છૂટા શબ્દો જેવા છે, એટલે એ કપાતા અથને એટલો વધો આવાત ન લાગે છતા આને હુ ઇષ્ટ ગણતો નથી 'આર્યતા' આગળ ચરણાન્તે, ગમે તેટલા ટૂકા વિલબનથી પણ, ત્યા શબ્દ પૂરો થવાની પ્રતીતિ થાય છે, અને પછી પ્રત્યય

૧૦ પ્રો ઠાકોર યતિભગના પ્રથમ શાસ્ત્રીય હિમાયતી ગણાય છે, પણ તેમના જ સમકાલીન ભટ્ટ રાજારામ રામશકરે શ્રી હર્ષદેવપ્રણીત 'નાગાનન્દ' નાટકનુ ગુજરાતી ભાષાન્તર કર્યું છે તેમા યતિભગના હક્કનો દાવો નીચેના શબ્દોમા કર્યો છે "પદ્યભાગમા બહુધા અનુપ્રાસનો નિયમ રાખ્યો જ નથી તેમ જ નથી ગણ્યો યતિભગ કે પ્રક્રમભગનો પણ લેશ બાધ અર્થનો અપહાર કરી એવી મિથ્યા વસ્તુનો આગ્રહ ધરવો એ કેવલ વિવેકશૂન્યનુ કામ 'કવિ' અથવા એથી પણ ઉચ્ચ ઉપનામથી સજ્ઞાત પુરુષોએ અનુપ્રાસ અને વીજી એવી જ વ્યર્થ શોભાના લોભથી નવા અર્થશૂન્ય શબ્દો ઉત્પન્ન કરવા — સમસ્ત અર્થને દૂષિત કરવો — એ સઘળુ જોઈને રસિયા ભાષામસ્ત ગુજરાતી ગૃહસ્થ ખિન્ન થયા વિના રહેશે? વળી એક પ્રસિદ્ધ ગ્રથકાર લખે છે કે 'યતિપ્રક્રમભગાશ્ચ કાવ્યે ન ગણયેત્કવિ ।' રાદેર, માઘ શુદ્ધ ૧૫ સવત ૧૯૪૬" (ઉપરના સસ્કૃત શ્લોકનુ મૂળ મને હજી મળ્યુ નથી) પુસ્તક દુર્લભ હોવાથી લાબુ અવતરણ મૂક્યુ છે

आवता अन्वयव्यापार उपर अनपेक्षित ताण आवे छे, छता आ यतिभगने क्षम्य गणी शकाय आवा दाखला स्नेहरश्मिना 'पनघट' सग्रहमा मळे छे ('वरदान,' पनघट पृ. १२३), त्या पण वृत्त पृथ्वी छे अने वपायेलो प्रत्यय 'तणो' छे. 'थैरु' प्रत्यय पृथ्वीमा ए स्थाने आववो शक्य नथी, ते तेमना 'पूर्णिमा' काव्यमा मदाक्रान्तामा आवे छे (एजन पृ ५९) सुन्दरम्‌मा पण आवा प्रयोगो जणाय छे (काव्यमगला पृ २५, २६). पण श्री उमाशकरमा आ प्रकारनो यतिभग मने मळ्यो नथी अने ए पण मारे कहेवु जोईए के आवा यतिभगो वृत्तना प्रवाही प्रयोग करता श्लोकबद्ध रचनामा ओछा क्षम्य थाय

आवा यतिभगोना अनुष्टुपमा थता प्रयोगो विशे मारे एटलु विशेष कहेवानु छे के ए श्लोकार्धनी अदर क्षम्य गणाय पण श्लोकार्ध बहार क्षम्य न गणी शकाय हु आगळ (गत पृ १४२) कही गयो तेम अनुष्टुप विलक्षण होवा छता एक रीते ए अर्धसम वृत्तने खास मळतो छे एनी अर्धनी यति वधारे दृढ छे, अने त्या आ प्रमाणे प्रत्यय कपाय ए निर्वाह्य नथी श्लोकार्धनी अदर थयेला यतिभगनु दृष्टान्त प्रो ठाकोरनु —

> प्रथमे ऋतुवैचित्र्य – तणु विज्ञान छे लुलू,
> 'दुष्काळ', भणकार पृ १३०

एवु ज दृष्टान्त प्रो डोलरराय माकडनु —

> परतु वात ए लीलातणी ना के'वी कोईने
> भगवाननी लीला पृ ११

पण एमनो ज श्लोकार्ध बहार जता प्रत्ययनो दाखलो —

> ससारे नहीं थयाये भगवान तणी लिला
> तणा ज्ञान समु ज्ञान" तो ए लीला हवे लिधी
> जोईने में खरेखरी ?
> एजन पृ ५१

पठनमा 'लिला' अने 'तणी'नु अनुसधान दुष्कर बने छे आथी पण वधारे खराब दृष्टान्त हु प्रो ठाकोरना नीचेना दाखलाने गणु छु

> थाय ते यदि लेजे तू दैव, त्हारी मजा कजा
> —पी अस्पर्श जनेतानी सुधासर्गक्षमा दृग
> 'श्री पूजालालने कविमाताना दृग, भणकार पृ ३१२

आने वधारे खराब गणु छु, कारण के हजीये 'केरुं' 'तणु', प्रत्ययो होवा छता, शब्दथी छूटा रहे छे, हिंदीमां तो छठ्ठीनो प्रत्यय जुदो लखाय पण छे, पण 'थी' जेवो प्रत्यय तो शब्दथी आटलो दूर छूटो न ज पडी शके, एमा जुदा शब्दनो आभास पण नथी, अने वळी अही तो छूटो पडीने जुदा श्लोकार्धमा चाल्यो जाय छे. आने हु अनिर्वाह्य यतिभग गणु छु, जो के उमेरवु जोईए के पठनवेग वधतां, विशेष पठनवेगनी टेव पडता, आवा प्रयोगो पण निर्वाह्य बनता जाय.

हवे हु मध्य यतिना स्थाने थता यतिभगनो विषय लउं छु. यतिनी घणीखरी चर्चा मध्य यति विशेनी ज होय छे आ चर्चाने अंगे अनेक प्रश्नो उपस्थित थाय छे. तेमा प्रथम हु एटलो ज प्रश्न लउ के यतिथी, एटले मध्ययतिथी, शब्दनो प्रत्यय जुदो पडी जाय तो ए दोष गणाय? खरी रीते आ प्रश्ननी लावी चर्चा करवानी जरूर रहेती नथी, कारण के चरणान्त यतिथी छूटा शब्दो जेवा प्रत्ययो कपाय तेने आपणे क्षम्य गण्यु छे, अनुष्टुपना एक ज अर्धमा चरणान्त यतिथी स्वतत्र शब्द न होय एवो प्रत्यय कपाय ते पण हु पोते निर्वाह्य गणवा तैयार छु, तो आ मध्ययति तो चरणान्त करता टूको अने निर्बल छे. अने आनो एक दाखलो दलपतराममाथी मळे छे, जेमणे यतिचर्चा करी नथी, पण जेमनी छन्दशुद्धिनी बुद्धि आपणे सारी गणी शकीए. दृष्टान्त.

तरुण जुवति जोडे, डोशि विस्तारवाळी,
परम हरख पामे, पुत्रपौत्रादि भाळी
तरुण सुनट टोळी — मा मळी एक ठामे
रणविजयि शुरो ते," केम सकोच पामे?
द० का० भा० २, पृ० १३५

अर्वाचीन युगमा आ प्रत्ययविश्लेषनु आटलु जूनु दृष्टान्त मळवाथी आथी वधारे चर्चा करतो नथी अने छता हजो आ नियमने अजमायशी ज गणवो यतिभंगना वधा दाखला जोई गया पछी आपणे छेवटना नियमो करी शकीए.

बीजो प्रश्न ए छे के आ मध्ययतिओना बलमा कई तारतम्य छे के केम? प्रो ठाकोर, यतिओमा केटलीक वधारे दृढ अने केटलीक अछडती ज माने छे. (भणकार आ. १ पृ. २२) अही हु स्वीकारेली यतिओनी ज

११. छदनी दृष्टिए अही एक गुरु खूटतो हतो तेथी पाठमा में 'ते' उमेर्यो छे. छापनी भूल हशे एम मानु छु

वात करु छु केटलाक अही स्वीकारेली यतिओ सिवाय बीजी यतिओ माने छे, जेमानी पृथ्वी, नर्दटक, वसततिलकानी यतिओ विशे हमणा ज हु कही गयो, पटवर्धन इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा बन्नेमा पाचमे अक्षरे यति जेवु माने छे (छ र पृ १११) ए यतिओनी वात अही नथी अही तो सर्वमान्य गणायेली में सयतिक वृत्तोमा गणावेलो यतिओनी ज वात छे आ यतिओमा प्रथम दर्शने एटलु तो लागे छे के केटलीक यतिओमा यतिभग आघातकारक नथी लागतो, निर्वाह्य लागे छे जेम के स्नेहरश्मिए 'पूर्णिमा' काव्यना मदाक्रान्ता वृत्तमा मात्र एक ज जगाए प्रथम यतिनो भग करेलो छे

मदाक्रान्ता आछु के अ–न्तर पट चिरा–ई जता द्वैत येरु
'पूर्णिमा', पनघट पृ ६३

पण ए २२१ पक्तिना काव्यना बीजा यतिस्थाने १८ यतिभगो करेला छे, जेमानो एक उपरनी पक्तिमा पण छे एटले यतिओमा काई तारतम्य तो मानवु पडे एम छे पण आ उपरथी एनो खुलासो शो करवो ? के पहेली करता बीजी यति वधारे निर्बल छे, के गुरु अक्षरो पछीनो यति, लघुअक्षरो पछीनी यति करता वधारे दृढ छे, के कई बीजु ? बे यतिवाळा वृत्तो विशे एम कहो तो पछी एक ज यतिवाळा वृत्तो विशे शु कहेवु ? एटले आ सबधे पण विशेप चर्चानी जरूर छे

हजी एक बीजी दृष्टिए आ प्रश्न विचारवा जेवो छे सस्कृत यतिचर्चामा कहेलु छे के मध्ययति आगळ शब्दने तोडी शकाय पण ते एवी रीते के शब्दनो यतिभगत थयेलो कोई पण टुकडो बे अक्षरथी टूको न होवो जोईए सस्कृत दृष्टान्तमा आ रीते 'चामीकर शब्द वचमाथी तूटतो हतो आ यतिभग अनिर्वाह्य नथी थतो ए साचु पण गुजरातीमा यतिभगथी एक ज अक्षर कपायो होय एवा अनेक दृष्टान्तो छे, अने त्या त्या सर्वत्र यतिभग दोषरूप नथी लागतो एटले यतिभगने निर्दोष करनारा कारणो हजी शोधवा रहे छे तेने माटे यतिभगना विविध दृष्टान्तो भेगा करी तेनो अभ्यास करवो जोईए अने उपरनो चर्चामा यतिभगना जे जे अजमायशी नियमो आपणे जोया अने दृष्टिमा राखीने दृष्टान्तो पसद करवा जोईए आ नीचे हु जेने लाक्षणिक गणी शकाय एवा अनेक दृष्टान्तो भेगा करु छु दाखलामा दरेक स्थळे छदनु नाम आपु छु अभग यति, पूर्ण पेठे दडथी दर्शावु छु अने यतिभग, शब्दमा टूकी आडी लीटीथी बतावु छु

(१) शार्दूल० नादो घोर चडे नभे, गडगडा–टे ,विश्व मूर्छा लहे,
'सत्य शिव सुन्दरम्', काव्यमगला पृ २८

(२) मन्दाक्रान्ता धीमा मीठा । करवी सढ प-पाळनारा समीरे
'हु तो वाद्या, ' आलबेल पृ ९५

(३) स्रग्धरा वीणाना गान थभे । निजनिज व्यवहा-रो तर्जी विश्व देखे
'साफल्यटाणु', काव्यमंगला, पृ० २७

(४) स्रग्धरा कूदी अद्री अहीथी । तहिं जति वणझा-रो दिठी, ने कतारो
'वणझार', निशीथ पृ० १३०

(५) स्रग्धरा आत्माने एक मारा । जिवन भर वफा-दार नित्ये रहीने,
'मागु', अभिसार पृ० ३

(६) स्रग्धरा जाते ओछी ज ? ए तो । प्रतिजा उर अ-कायलू वावलू छे !
'प्राणवता पूर्वजन,' वसुधा पृ० ११०

(७) मदाक्रान्ता हाक्ये राखू । वदन पर ग-भीरता धारी गाणु
'केदी अने कवन', आलबेल पृ० ८३

(८) शार्दूल० पाये छे मदिरा मने कइ अटक्-चाळी भली गोरियो
'सौंदर्य,' क्लान्त कवि पृ० ८२

(९) मदाक्रान्ता आभासोथी । यतु युगल उन् मत्त ए स्नेहवाल
'चक्रवाक मिथुन', पूर्वालाप, पृ० ३३

(१०) मदाक्रान्ता खोवावानू । नव जननि उत्-संगमा वयाय स्थान !
'हु तो बाबा ', आलबेल पृ० ९५

(११) मदाक्रान्ता आदर्शोमा । अपरिचित सौं-दर्यना सर्घसोने
'क्षमायाचना – खमासणु', एजन पृ० ७७

(१२) मदाक्रान्ता क्यार्थ ये को । जिवतर क्टो-री लईने पधारी
'आरजू,' निशीथ पृ० ३६

(१३) शिखरिणी अने आप्यू त्या अ-जलि जलमहीथी न उचकी
'एक तरतु फूल' एजन पृ० १६२

(१४) शिखरिणी क्लेजा भूख्या दा-नवतणि क्षुधाने शमववा
'लढे', वसुधा पृ० ७४

(१५) स्रग्धरा ओ त्या बेठू रुपी च-डुल गुल पर जो । वाणि मीठी लवन्तु ,
'वनमा एक प्रभात, क्' के पृ० २

(१६) मदाक्रान्ता जोता आजे । कइ कइ प्रस-गो फरीने रसाळा

. . . . .

लेदो मोटा । तदपि नव हैं-ये वसे लेश भीती
'प्रीतिना स्वातन्त्र्यहेला ।' भणकार पृ २९९

(१७) स्रग्धरा: गद्यात्मा गुर्जरीनो । प्रथम प्रसर रू–पे ज आविष्कर्यो तें,
'प्राणवता पूर्वजने' वसुधा पृ० ११०

(१८) शार्दूल०: ते श्यामा अलकावली सघन कु–ंजे रम्य गुंजारवे
'सौंदर्य', क्लान्त कवि, पृ० ८१

(१९) मंदाक्रान्ता: त्या सूतेलो । लघु नवल अ–र्धा अनायास छंद
'मणकारा', मणकार (१९१७) पृ० २

(२०) मंदाक्रान्ता: पुष्पे पानें । विमलहिममो–ती सरे तेम छानी
एजन

(२१) स्रग्धरा· आळोटी आयखू आ–खु रुदनपडघा। साभळी म्हालवानु
'जलसी जोया पछी', धरित्री, पृ० ५७

(२२) हरिणी: प्रहर पण आ–जे वीते ते । ज एक ज अतनो
'रतिने प्रार्थना', पूर्वालाप, पृ० ४९

(२३) शिखरिणी. दाको प्होंची क्यारे । य नहि, तम साची जरुर त्या.
'शाने ?' आराघना पृ० ४१

(२४) मंदाक्रान्ता: जे बुद्धीनी । सकळदरशी–तानि राखी खुमारी
'समर्पण' आलबेल पृ० ८५

(२५) मंदाक्रान्ता: व्याधीमा आ–श्रमहरिणि शी । एक त्यारे मळाशे
'एक पळ', आलबेल पृ० ७९

(२६) शालिनी: पी जाणे हा–लाहलो होठथी जे
हैये तेणे। अम्रतो छे पिवाना
उमाशंकर. 'सस्कृति' नवेम्बर १९४८ पृ० ४११

(२७) शालिनी: वाणीना मा–हात्म्यथी ना अजाण
. . . .
ने तो ये हूं–या तणो एक बन्ध
सुदरजी गो. बेटाई 'सस्कृति.' नवेंबर १९४८पृ० ४३२

(२८) हरिणी: शशिमणिशिला । भासे आ,.ते । ज जे पर बेसिने,
मुखधवल नि.–श्वासोथी वा–म हस्त विषे मुकी,
कुपित थइने । रीसावी, में । विलब वर्या थकी,
रडति रिस छा–डीने, में जो–इ स्वप्न विषे प्रिया.
नागानन्द नाटकनु गुजराती भाषातर पृ० २९

(२९) हरिणी: दिनकरकर । स्पर्शे जेनी । द्युती परिपाटला,
दशनकिरणो । शोभे जाणे । सुवासित केशर,
वदन तव भा–से कान्ते,' प–द्म जेवु वर्ध। रिते,
अलि न रत दे–सू एके के–म तद्रसपानमा ?

एजन पृ० ४६

(३०) मदाक्रान्ता: घेर्यु आका–श सकल विमा–नो तणा वृदथी आ,
वर्षाकाले। ज्यम दिन दिसे,। श्याम छे सूर्य तेम.
युद्धार्थे सि–द्ध सकल जुए । वाट आज्ञा तणी आ,
मानो नक्की। क्षय रिपुतणो। क्षेमना स्वीय राज्ये.

एजन पृ० ४७

चर्चा शरू करता पहेला जरा पुनरुक्तिनो दोष वहोरीने पण एटलु कहु के यतिभंग दोष क्यारे न गणाय के ज्यारे यतिभग्न शब्दना टुकडानु समग्रताए आकलन करवामा यति विघ्नरूप न थाय त्यारे बधा यतिभगोमा आपणे ए जोवानु के यति क्यारे विघ्नरूप थाय छे अने क्यारे नथी थती.

प्राचीन छान्दसिको कहे छे के तूटेला शब्दनो दरेक टुकडो बे अक्षरथी नानो न होय त्यारे यतिभग क्लेशकर लागतो नथी, अने ए खरु छे. पण उपरना यतिभगना दृष्टान्तोमा दरेक जगाए यतिभग्न टुकडा बे के वधारे अक्षरना नथी खरी रीते जोता बब्बे के वधारे अक्षरोना टुकडा बहु विरल छे (५) मा 'वफा – दार',(८)मा 'अटक् — चाळी' अने(२४) मा 'सक्ळदरशी – तानि' एटला ज छे बाकी घणा दृष्टान्तोमा चार के वधारे अक्षरोना शब्दो यतिभग्न थया छे त्या पण एक ज अक्षर कपायाना दृष्टान्तो छे (१) मा 'गडगडा – टे', (२) मा 'प – पाळनारा' '(३) मा 'व्यवहा – रो', (४) मा 'वणझा – रो' (६) मा 'अ – कायलू' वगेरे अने आमानु कोई दृष्टान्त दोषवाळु नथी आ उपरथी कदाच एम लागे के यति उपरनो शब्द जेम लाबो तेम यतिभग ओछो क्लेशकर नीवडे, पण एम पण नथी (९) (१२) (१३) (१५) (१६) वगेरेमा यतिभग्न शब्द त्रण अक्षरनो छे, अने (१६) (१७) (१८) (१९) वगेरे दृष्टान्तो तो बे ज अक्षरना शब्दभगना छे, एटले यतिभगना क्लेशकरत्वने यति उपरना शब्दना अक्षरोनी सख्या साथे सबध नथी. त्यारे हवे आपणे क्लेशकर यतिभगनु कोई दृष्टान्त आ दृष्टियी परीक्षा करवा माटे लईए जोईए (२१)मु दृष्टान्त एवु छे

स्रग्धरा: आळोटी आयखू आ–खु रुदन पडघा । साभळी म्हालवानु.

अहीं 'आसु' शब्दनो 'सु' यतिथी कपाई बीजा यतिखंडमां चाल्यो जाय छे अने त्यां 'आसु' शब्दना आकलनमां यति विघ्नरूप थाय छे. आनुं कारण वारंवार पठन करी जोतां जणाशे के यति पछी बाकी रहेलो लघु अक्षर 'सु' बीजा यतिखंडना प्रवाहमां एटला वेगथी तणाई जाय छे के पूर्वना अक्षर साथे तेनुं अनुसंधान नथी थई शकतुं, 'सु रुदन पढमा' एम एक अक्षरपिंड सभळाय छे; अलबत ए अक्षरपिंडमां 'सु रुदन' या कोई शब्द बनतो नथी एटले आपणे पछी 'सु'नुं अनुसंधान आगला अक्षर साथे करी जोई, 'आसु' शब्द घटावी लईए छीए, पण ए व्यापार सरल रहेतो नथी, आकलनव्यापार आगळ जई विघ्न साथे अथडाईने प्रतिघात पामेलो होई क्लेशकर नीवडे छे. आ क्लेश 'आसु' शब्द बे ज अक्षरनो छे माटे थाय छे एम नथी. हुं नीचे एक दृष्टान्त बनावी मूकुं छुं:

मदाक्रान्ता: ऊभो प्राका—र उपर पछी। रावणी शस्त्रहीन

अहीं 'प्राका-र' शब्द त्रण अक्षरनो छे, छतां आगळना दृष्टान्तनी पेठे ज यतिथी कपायेलो लघु अक्षर 'र' छन्दना उत्तरवेगमां तणाई, पूर्वाक्षरो साथे अनुसंधान पामी शकतो नथी. हजु एक वधारे दृष्टान्त वधारे अक्षरोना शब्दनुं लई जोईए:

मदाक्रान्ता: साहित्याका–श महिं न लसे। आवुं नक्षत्र बीजुं.

अहीं पण कपाईने जुदो पडेलो एकलो लघु अक्षर 'श' पूर्वाक्षरो साथे सरल अने अनायास अनुसंधान पामी शकतो नथी.

अहीं एम लागे के मदाक्रान्तामां बीजा यतिखंडना प्रारंभमां लांबी लघुधारा छे तेथी प्रवाहनो वेग वधारे त्वरित होवाथी छूटो पडेलो लघु तेमां तणाई जाय छे. पण एटली लांबी लघुपरम्परा न होय त्यां पण एकलो लघु टकी शकतो नथी. आपणे लीधेला दृष्टान्तोमां (२८) नी बीजी चोथी पंक्ति अहीं लउं छुं:

हरिणी: मुखधवल नि.–श्वासोथी वा–म हस्त विषे मुकी
रडति रिस छा–डोने मे जो–इ स्वप्न विषे प्रिया.

दरेक लीटीमां बन्ने यतिस्थानोमां यतिभंग करेलो छे. तेमां पहेले यतिस्थाने थयेला यतिभंगो सुनिर्वाह्य छे, पण आपणे अहीं तेनी साथे संबंध नथी. पछीना यतिस्थाने यति परना शब्दनो अंत्य लघु यतिथी कपाई छूटो पडयो छे. अने ए पण अनायास अनुसंधान मेळवी शकतो नथी, जो के हरिणीना ए यतिखंडमां लघुपरंपरा नथी. ए यतिखंडनो न्यास छे लगा ललगा लगा. यथाय

लघुनी लांबी परंपरा नथी. एवेक बब्बे अक्षरे गुरु आवे छे, अने छता लघु अक्षर यति पूर्वना अक्षर साथे सहेलाईथी अनुसधान मेळवी शकतो नथी. एटले अही एक ज वात देखाय छे के यतिथी वपायेला लघु अक्षरमा पूर्वाक्षर साथे अनुसधान मेळववानी शक्ति रहेती नथी पण 'चामी–कर' वाळु दृष्टान्त जोता आपणे कहेवु जोईए के जे सामर्थ्य एक लघुमा नथी, ते बेमा छे अने उपर लीधेला दृष्टान्तोमा ज्या ज्या यति पछी लघुनु स्थान आवे छे त्या त्या बे लघुओ ज नजरे पडे छे (१५) स्रग्धरा छे तेमा 'च–ञ्चल' पहेला यतिस्थाने भग्न थाय छे, अने यति पछी शब्दना बे लघुओ आववाथी अक्षरोनु अनुसधान अनायास थाय छे मदाक्रान्ता अने स्रग्धरानी पेठे ज शिखरिणीमा पण यति पछी लघुपरंपरा आवे छे, त्या पण दृष्टान्त (१३) (१४) मा 'अ–ञ्जलि' अने 'दा – नव' बन्नेमा यति पछी बे लघु आववाथी यतिभग निर्वाह्य बने छे अने तेथी ऊलटी रीते दृष्टान्त (२८)ना हरिणीमा अने (३०)ना मदाक्रान्तामा अनेक जगाए यतिथी एकलो एक लघु अक्षर कपाय छे अने त्या यतिभग क्लेशकर बने छे

हवे यतिभगना बीजा स्वरूपनो विचार करीए यति पछी गुरु अक्षरनु स्थान आवतु होय त्या शु ? जवाब सहेलो छे, के यति पछी गुरु आवे तो यतिभग कदी क्लेशकर बनतो नथी मदाक्रान्ता अने स्रग्धरामा त्रीजा यतिखडना आदिमा प्रथम स्थान गुरुनु छे एटले ए स्थाने यतिभग कदी क्लेशकर थतो नथी. आपणे यतिभगनी प्राथमिक चर्चामा जोयु हतु के मदाक्रान्तामा घणे भागे बीजा यतिस्थाने ज यतिभगो थाय छे, (२) (३) (४) (५) (६) (७) ए बधा एना ज दृष्टान्तो छे, अने हवे तेनु कारण आपणे आपी शकीए के ए स्थाने उत्तर यतिखडमा प्रथम गुरु छे एटले यतिभग निर्वाह्य बने छे बे ज अक्षरनो शब्द पण त्या यतिभग्न थता क्लेशकर थतो नथी (१६)मा 'है–ये' (१७)मा 'रू–पे' बब्बे ज अक्षरोना शब्दो छे, प्राचीन पिंगलकारोना बब्बे अक्षरोना टुकडाने आवश्यकताने अही जरा पण समर्थन मळतु नथी अने छता यतिभग क्लेशकर थतो नथी आ रीते आपणे कही शकीए के शालिनी मालिनी अने शार्दूलविक्रीडितमा यतिभग थाय ज नही, कारण के ए छदोनो यति पछी तरत गुरु आवे छे (१८) ए शार्दूलविक्रीडितनु अने (२७) शालिनीनु दृष्टान्त छे आपणे आगळ जोयु बे स्रग्धरा 'आळोटी आयखू आ – खु रुदन पडघा । सामळी म्हालवानु' । आमा 'आ – खु' नो 'खु' लघु कपाता यतिभग सदोष प्रतीत थाय छे, ए ज 'खु'ने गुरु करी यतिभग्न करता यतिभग क्लेशकर जणाशे नही शालिनी. 'सेवामा आ – खू

समर्पूं जं आयू.' अही यतिभंग नमी शके छे आ उपरथी प्राचीन पिंगलकारोना नियममां फेरफार करी आपणे कही शकीए के यति पछी शब्दनी ओछामां ओछी बे मात्रा—बे लघुरूपे के एक गुरुरूपे—आवे तो यतिभंग क्लेशकर थतो नथी

हजी एक प्रश्न रहे छे : प्राचीन पिंगलकारोए कह्यु छे के यतिनी पूर्वनो अने पछीनो एम बन्ने टुकडा ओछामां ओछा बे अक्षरना जोईए आपणे अत्यार सुधी पूर्वना टुकडा विशे कशु कह्यु नथी; अने एने विशे झाझु कहेवानी जरूर पण नथी कारण के एवा अनेक दृष्टान्तो आपणे यतिभंगनिर्वाहना जोया जेमां यति पूर्वे एक ज अक्षर हतो तो बीजो प्रश्न थाय छे: यति पूर्वनो ए एक ज अक्षर गुरु जोईए के लघु चाले? जवाब ए छे के वृत्तोमां एटले अनावृत्त संधिवृत्तोमां यति हमेशा गुरु अक्षर पछी ज आवे छे एटले लघुनो प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी, उपरनो नियम कायम रहे छे यतिभंगनी प्रास्ताविक चर्चामां में एक अजमायशी नियम तरीके कह्यु छे के गुजरातीमां शब्दनो विभक्ति प्रत्यय यतिथी कपाय तो दुष्ट प्रयोग थतो नथी, अने ते माटे दरुपतरामना श्लोकनु दृष्टान्त आप्यु पण आ प्रत्यय संबंधी नियम पण में उपर आप्यो ते बे गाळाना नियमनी मर्यादामां ज साचो छे गुजराती नामने लागता प्रत्यय—ए, ने, थी, नु,[१२] मा बधा ज गुरु छे एटले एना कपावाथी यतिभंग क्लेशकर थाय नही. पण आमांना ज 'नु' 'नी' 'थी' वाक्यनी छूटथी लघु पण थई शके अने त्यारे यतिभंग क्लेशकर थाय ज. एवा दृष्टान्तो मारा ध्यानमां नथी, पण आपणे एवु एक दृष्टान्त रचवा प्रयत्न करीए. कळापीनी एक पंक्ति नीचे प्रमाणे छे:

शिखरिणी · झुलन्ता वृक्षोथी । अगर रसना बिन्दु झरशे

आपणे 'थी'ने यतिनी पेले पार लई जईए.

झुलन्ता आ वृक्षो–थि मधु रसना बिंदु झरशे

यति पार गयेलो लघु प्रत्यय शोभतो नथी कान उपर 'थिमधु' एक पिंड सभळाय छे अने 'थि'नु अनुसंधान निर्विघ्न थतु नथी. एटले प्रत्ययो यति पार जवानो नियम पण जुदो करवानी जरूर रहेतो नथी

संस्कृतमां यति पूर्वे सप्रत्यय शब्द पूरो थवो जोईए एवो नियम हतो, एटले के (गद्यनी अमुक आवश्यकता सिवाय) प्रत्यय कपावाथी पण यतिभंगनो प्रसंग ऊभो थतो हतो, तेनो ज अन्य शब्द साथे नित्य संबंधवाळी

१२. 'नु' लखाय छे ह्रस्व पण उच्चारमां ए गुरु ज छे

जोडायेलो बीजो शब्द पण यतिथी छूटो पाडी शकातो नथी, जेवो के 'य'. (जुओ गत पृ. १०१) गुजरातीमां 'य' ना अर्थनो कोई शब्द एवी रीते बीजा शब्दने वळगेलो होतो नथी पण 'य' अने 'ज' अन्य शब्दने वळगेला होय छे, अने ते लघु होई यतिथी जुदा पडे त्यारे यतिभंग थाय छे. उपरना दृष्टान्तोमां (२३) अने (२२) ए प्रकारना छे.

शिखरिणी . तमो प्होंची पधारे। य नहि, तम साची जरूर त्यां

अर्थ एवो छे के 'तमारी साची जरूर होय त्यां तमे पधारेय पहोंची शकता नथी'. 'पधारे' स्वतन्त्र शब्द छे ए खरु, पण अहीं 'य' तेनी साथे वळगेलो छे. अने 'य' पोताना गरथी शब्द साथे एटलो बधो दृढबद्ध थाय छे के अमुक अमुक प्रसंगे तो शब्दनो प्रत्यय पण आ 'य' पछी लागे छे, जेम के "पधारयने आम लागतु हशे" तेमां 'पधारयने'. दृष्टान्त (२२)मां ए ज रीते 'ज' कपाय छे, अने यतिभंग थाय छे

हरिणी : प्रहर पण आ–जे वीते ते । ज एक ज अतनो

अर्थ एवो छे के 'आजे अतनो प्रहर वीते ते ज वल्लभ्रन्तना जन्मनो पण छे' 'ते ज' मां 'ज' 'ते' साथे अविच्छेद्य संबंध राखनारो छे अने ए 'ज', 'ते'थी कपाता, यतिभंगनो दोष थाय छे—अलबत्त लघु छे माटे आ पंक्ति क्षन्तव्य छे अने कान्तनो छन्दोबुद्धि बहु ज सूक्ष्म अने अवाच्य छे, छता अहीं एमणे आवी क्लिष्ट पंक्ति लखी छे आ पंक्तिमां पहेला यतिस्थाने आवतो 'आ–जे' शब्द पण यतिभग्न छे पण उपर कहेला नियम प्रमाणे, कपायेलो 'जे' गुरु छे एटले ए रीते ए भंग दोषपात्र नथी छता एटलु कहेवु जोईए के अहीं यतिथी छूटा पडता अक्षरो 'आ' अने 'जे' बन्ने स्वतन्त्र शब्दोनी भ्रान्ति करावे छे, अने ए पण यतिभंगना ध्यानमां राखवा जेवु छे आपणे अहीं इच्छीए के शब्द यतिभग्न थता एना टुकडाओथी अन्य शब्द के शब्दोनी भ्रांति न थाय ए इष्ट छे दृष्टान्त (२०)मां "विगत हिममो–तो सरे तेन छाना" ए खंडोमां बीजा यतिखंडमां 'तोसरे' जेवु उच्चारण कानने अथडाय छे अने ए विलक्षण लागे छे स्वर्गस्थ ठाकोरे एमना नवा संस्करणोमां आ पंक्ति बदली छे, जो के उपरना कारणे ज के कोई बीजा, ए हु जाणतो नथी अने आनो ज साथे कहेवा जेवु बीजु ए छे के यतिभंगथी कर्णकठोर उच्चारण न थवु जोईए

दृष्टान्त (३०) 'युद्धार्थे सि–द्ध सकल जुए। वाट आशातणी आ' उपरनी पंक्तिमां 'द्धसकल' साथे बोलाय छे ते कर्णकटु लागे छे एवा

प्रयोगो टाळवा जोईए. 'अने छेवटे ए कहेवु जोईए के यतिभंग गमे तेम तोय निर्वाह्य वस्तु छे, ए हकर्ता नथी, एटले एक ज पंक्तिमा बने त्या सुधी वधारे यतिभंगो न आवे, एक ज श्लोकमा पण घणा यतिभंगो न आवे तो सारु.

ते सिवाय ए पण ध्यानमा राखवा जेवु छे के यतिभंगमा शब्दना पूर्व टुकडाने उत्तर टुकडा साथे यतिना विलबनथी सांधवानो छे. एटले यति पूर्वेनो अक्षर उच्चारणमा गुरु होवा साथे विलंबित होय तो सारु उपर आपेला दृष्टांतमा

यद्धार्थे सि—द्ध सकल जुए

एमा 'सि' प्रकृतिथी गुरु नथी, तेनु गुरुत्व, पछी आवता सयुक्तव्यंजन उपर आधार राखे छे, अने ए सयोग यतिथी दूर पडी गयो छे, एटले ए दूर पडेला सयोगनी अपेक्षाए 'सि'ने लबाववो पडे छे ते उच्चारमा कद्रूप लागे छे. यतिना विलबनने माटे यति पहेलानो अक्षर उच्चारमा विलंबित होय ते इष्ट छे[13] उच्चारणमा जेम वधारे दीर्घ होय तेम सारु. पहेला

---

१३ भरतनाट्यशास्त्रमा विराम आवश्यक होय त्या दीर्घ अक्षरो वापरवा कह्यु छे, ते मारा मतने टेको आपे छे:

वार्यो विराम. पादान्ते तथा प्राणवशेन वा॥ १३९
शेषमर्थवशेनैव विराम सम्प्रयोजयेत्।

अत्र च भावगतानि रसगतानि च कृप्याक्षराणि बोद्धव्यानि, तद्यथा—
आकारैकारमुक्तमेकारौकारसयुतम्।
व्यजन यद्भवेद्दीर्घं कृप्य तत्तु विधीयते॥ १४०
भ ना. गा वॉ. २, १७ पृ० ४०१–२

आनो अर्थ हु एवो समजु छु के पादान्तने लीधे, प्राणने लीधे तथा अर्थने लीधे विराम करवो पडे छे. तेवे स्थाने कृप्य एटले खेंची-लबावी शकाय एवा दीर्घ स्वरो वापरवा जेवा के आ ऐ ए औ वगेरे आना उपरनी टीकामा अभिनवगुप्त कहे छे: "कृप्याक्षराणीति, कृपनोति कृपो विलंबितो लय तत्र साधूनि कृप्याणि, सन्ध्यक्षराणि यथा आ ई ऊ इति दीर्घा।" एथी उपरना ज अर्थने समर्थन मळे छे. उपर श्लोकमा प्राण शब्द आवे छे, तेनो अर्थ श्वास—श्वास लेवानो जरूर, एवो सामान्य रीते जणाय, पण ए अर्थनो निषेध करीने अभिनवगुप्त तेनो अर्थ रसभावादि एवो करे छे. (एजन, पृ० ४०१)

प्रकरणमा (गत पृ. १३) आपणे जोयु के दीर्घ गणाता बधा स्वरो एक सरखा दीर्घ बोलाता नथी. दाखला तरीके 'आ' घणो दीर्घ छे. एवा ज संयुक्त स्वरो 'ऐ' अने 'औ' पण घणा दीर्घ छे. यति पूर्वे 'आ' 'ऐ' 'औ' आवे ते इष्ट छे. तीव्र अनुस्वारनु पण एवु ज छे कारण के अनुस्वार लंबाता तेनो रणको मधुर लागे छे. उपर आपेला दृष्टान्तोमा घणी जगाए यति पूर्वे एवा ज स्वरो आवेला जणाशे. दृष्टान्तो (१) (३) (४) (५) (१४) (२१) (२२) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०)मा यतिभंग पूर्वे 'आ' छे, (२) (६) (७) (१३) (१५) (१६) (१८) मा तीव्र अनुस्वार छे, (११). (१६) (२७) मा आवता 'सौ–न्दर्य' अने 'हैं–या' मा संयुक्त स्वरो छे. 'हैयु' शब्दना भिन्न भिन्न रूपोमा तो मे अनेक जगाए यतिभंग जोयेलो छे. पण हवे वधारे दाखला आपतो नथी.

अने छेवटे तो काव्यमा जे हमेश सामान्य रूपे कहेवानु होय छे के सहृदयने क्लेश न थवो जोईए ए ज यतिभग विशे पण कहेवानु रहे छे.

एवं यथा यथोद्वेगः सुधियां नोपजायते।
तथा तथा मधुरतानिमित्त यतिरिष्यते॥[१४]

सुधीओने उद्वेग न थाय ए रीते मधुरतानिमित्ते यति मूकवी

आ प्रमाणे यतिभंगो मध्ययतिने स्थाने निर्वाह्य बने छे, छता उपर कह्यु तेम मध्ययति वृत्तना बधनो स्वाभाविक अश छे. तेमाथी ए फलित थाय छे के जेम चरण श्लोकोनु अग छे, तेम यतिखड चरणनु उपाग छे. एक उपाग तरीके ए यतिखड व्यापारमय बनतो जोई शकाय छे. खरी रीते व्यापारमयता ए ज कोई पण अगनो एकतानु निर्णायक प्रमाण छे आ व्यापारमयता आपणे नवा छदोनी रचनानी प्रक्रियामा जोई शकीए छीए, पण ते बाबत आ पछीना प्रकरणनो विषय छे पण नवा श्लोकबधनी रचनामा पण ए दृष्टिगोचर थाय छे अने हु हवे ए विषय लईश

नवो श्लोकबध हु कोने कहु छु तेनी चर्चा, दृष्टान्तो आपी वधारे सारी अने टूकी रीते थई शकशे वृत्तचर्चामा ए ज पद्धति वधारे चोकस. अने फलदायी जणाई छे एनु पहेलु दृष्टान्त कान्तमाथी मळे छे, तेमना 'उद्गार' काव्यमाथी

१४. 'छन्दोमजरी' उपरनी श्री रामधन भट्टाचार्यनी सस्कृत टीकामाथी पृ० १७.

खड शिखरिणी

वस्यो हुँये तारे ।
रह्यो ए आधारे ।
प्रिये तेमां मारे । प्रणय दुनियार्थी नव थयो
नवा संबंधोनो । समय रसभीनो पण गयो १
। नहि तदपि उद्वेग मुजने
। नयन निरखे मात्र तुजने
हरे दृष्टि, व्हाली । सदय मृदु तारी ज हजने २
सदा र्‌हेशे एवी ।
सुधावर्षा जेवी ।
कृती मानु, देवी । क्षण सकल्ने जीवन तणी
प्रमत्तावस्थामां । नश्वर पण नाखू जग भणी ३

'उद्‌गार,' पूर्वालाप पृ० ४२

मारु वक्तव्य वधारे सहेलाईथी स्फुट थाय माटे, साधारण रीते छपाय छे ते करता जरा जुदी रीते में अही पक्तिओ मूकी छे अने श्लोकसख्या आपी छे

अही पहली बे पक्तिओ ते शिखरिणीनी आखी पक्तिओ नथी, पण मात्र तेना पहेला यतिखडो छे ते पछी बे शिखरिणीनी अखड पक्तिओ आवे छे पण त्या विशेष एटलु ज छे के पहेला बे स्वतत्र आवता यतिखडोने कविए पछीनी पक्तिना पहेला यतिखड साथे प्रासथी साध्या छे ए बे अखड पक्तिआए एक श्लोक हु पूरो थयो गणु छु पछी जे बीजो श्लोक आवे छे, तेमा उपरनी रचनानु पुनरावर्तन नथी पण यतिखडोनी जरा जुदी ज रचना छे त्या पहेली बे पक्तिओ शिखरिणीना उत्तर यतिखडनी छे अने तेनी पछी वळी शिखरिणीनी एक आखी अखड पक्ति आवी बीजो श्लोक पूरो थाय छे आ त्रणेय पक्तिओमा त्रणेय उत्तरखडो पाछा प्रासथी साधेला छे आ पछी त्रीजा श्लोक आवे छे, जे पहेला श्लोकनी रचनानु पुनरावर्तन छे एवी रीते आ काव्य पूरु थाय छे.

अही एक एक यतिखडनी एक एक स्वतत्र श्लोकपक्ति बने छे हवे, आपणे आगळ श्लोकनी चर्चामा कह्यु हतु के अर्वाचीन कवितामा एक चरण पण वृत्तसवादनो स्वतत्र एकम बन्यु छे तो प्रश्न थाय छे के उपरनी रचनामा मात्र यतिखडनी पक्ति बने छे ते उपरथी यतिखडने पण सवादनो स्वतत्र एकम गणवा? हु मानु छु के उपरनी रचनामा आखी पक्तिमा आवतो एक

ज यतिखंड सवादमा स्वतंत्र एवम वनतो नथी अखंड पंक्तिमा ए यतिखंडनो संवाद सापेक्ष हतो, तेने तेनी पछी आवता यतिखंडनी अपेक्षा हती, ते स्थिति कायम रहे छे बीजा यतिखंडनी अपेक्षा कायम राखीने ज ते अही मेळवाय छे अखंड पंक्तिमा पहेलो यतिखंड जे रीते पठाय छे, ते ज रीते अही पहेली बे पंक्तिओना यतिखंडो पठाय छे आपणे साधारण रीते शिखरिणीना पठनमा धारो के पहेलो यतिखंड पठी, त्या अटकी जईने, पछी ए ज पहेला यतिखंडथी आखी पंक्तिनु सळग पठन करीए, त्या पहेला यतिखंडनु जेवु पठन थाय तेवु ज पठन आ खंडशिखरिणीमा थाय छे आ अने आवी रचनामा शिखरिणीना ज यतिखंडोथी नवी रचना थाय छे दरेक यतिखंडनु पठन मूळ जेवु ज रहे छे, संवाद जरा चित्रमय बनवा छता एनो एज रहे छे, तेथी आने हु नवो छन्द न गणता शिखरिणीनो नवो श्लोकबंध गणु छु आ रचना माटे खंडशिखरिणी नाम चाल्यु आव्यु छे ते भले चाले, पण शास्त्रदृष्टिए खंडशिखरिणी कोई नवो छन्द नथी, छन्दनो विकार नथी, पण शिखरिणीनो नवो श्लोकबंध छे"

आना खंडशिखरिणी नाम सबधी पण थोडी चर्चा थई छे सद्गत नरसिंहराव अभ्यस्त शिखरिणी अने खंडशिखरिणी एवो भेद करवा इच्छे छे. तेमने मते उपरना वाक्यमा जेने हु पहेलो श्लोक कहु छु ते अभ्यस्तशिखरिणी छे, अने जेने हु बीजो श्लोक कहु छु ते खंडशिखरिणी छे (Gujarati Language and Literature Vol. II, pp. 288-9) तेमनो

---

१५ अलबत, अही मारे कहेवु जाईए के जूनी पिंगल प्रणालिका आने नवो छंद गणी छन्दनु नवु नाम आपे शालिनीनी आवी एक चित्र रचनाने हेमचन्द्र चित्रा नाम आपे छे "मियौं चित्रा॥ मिरिनि मगणत्रय यगणद्वय च जैरिति वर्त्तते। यथा —

शत्रौ मित्रे हर्म्येऽरण्ये ममदे वा गदे वा
राज्ये भैक्षे रत्ने लोष्ठे काञ्चने वा तृणे वा।
स्रोतस्विन्या कामिन्या वा निन्दने वा स्तुतौ वा
चित्रा चित्तावस्था हित्वा मश्रयेथा समाधि॥

छन्दोनु० पृ १०ब

उपर टीकामा जे वर्णने आठमे यति कहेली छे पण उपरनो लक्षणश्लोक जोता जणाशे के शालिनीना खडे खडे यति छे, पहेला चारे पछी फरी बीजा चारे एटले आ बधी रीते अभ्यस्त शालिनी ज छे अने ए नवो ज छन्द होय एम एने नवु नाम आपेलु छे

गडशिखरिणीनो दाखलो नानालालना 'मणिमय मैत्री' काव्यनो नीचेनो श्लोक छे.'

जग गगाजे घोर गिरा,
घटि नावजे गान चितडा,
गभेरी छायानो त्रिपट सुज घेरो पट थशे
चळाती ज्योत्स्नानो मणिमय प्रिती पथ दिपशे
'मणिमय मैत्री', केटलाक काव्यो भा १, पृ ६२-३

दृष्टान्तो उपरथी स्पष्ट थाय छे के जेमा शिखरिणीनो पूर्वखड बेवडायो होय तेने तेओ अभ्यस्त कहेवा इच्छे छे 'अभ्यस्त'ना अही प्रस्तुत अर्थ आप्टे reduplicated आपे छे ते छे व्याकरणमा धातुना केटलाक रूपोमा धातु द्वित्व थाय छे, तेमा धातुनो आगलो अक्षर बेवडाय छे, जेम के 'नम् नु रूप 'ननाम' थाय छे ए धोरणे अही पण पक्तिनो आद्य भाग बेवडाय छे तेने अभ्यस्त कहेल छे प्रो ठाकोरे पण आ अभ्यस्त शब्द पोतानी रचनामा स्वीकार्यो छे (भणकार पृ ६४) पण आवी रीते वृत्तनो पूर्व खड बेवडाय, के उत्तर खड बेवडाय एमा नामनो भेद करवा जेवु वधु महत्त्व मने नथी लागतु बन्ने खडो छे, बन्ने शोभीजाना सापेक्ष छे ए दृष्टिए अभ्यस्त-शिखरिणी पण गडशिखरिणीनो एक प्रकार ज छे जेने भिन्न करवानी जरूर नथी खडशिखरिणी एटले जेमा अलक चरणने बदले तेनो यतिखड ज एक के वधारे पक्तिमा आवतो होय एवो छद नरसिहरावनो भेद तेमनी पछी कोई कविए के विवेचके स्वीकार्यो जणातो नथी, एटले आनो हु विशेष चर्चा करतो नथी मारु वक्तव्य ए छे के आ रचनाने नवो श्लोकबध गणवो जोईए. एक ने एक वृत्तना आवा नवा श्लोकबधो अनेक थई शके जेम के सुदरमनो

खड शिखरिणी

अहा! मारी आशा,
हवे छेल्ली आशा
क्षुधित जननिद्रा शु सरशे?
डुबेला व्हाजो पे जळक्षम निराशा शु तरशे?
उदधि अळसायो गरजशे?
भरीने गोझारू धनिक जन शू पेट हसशे?
'छल्ली आशा', काव्यमगला पृ १०

आ पछीना काव्यमां ज (एजन, पृ १२) सुन्दरमे यतिखडोनी रचनामा थोडो फेरफार करी वळी एक नवो श्लोकबन्ध आपेलो छे आवा श्लोकबधो अनेक

वृत्तोमा थई शके, अलबत, सयतिक वृत्तोमा नागलाले मदाक्रान्तानो एक नवो श्लोकवध आपेलो छे

धीरा धीरा, ऊडा घेरा,
सुख सुहवता पर्यंता दुःख वीत्या
ना को आव्यू, ना के वहाव्यू
गतप्रियजने, आर्द्रता शू नथी त्या ?
वेदनाक काव्यो भा १, पृ ११

प्रो ठाकोरनो अभ्यस्त मन्दाक्रान्ता आवो ज छे.

झूली पोपट्, झूरे सृष्टी
जननि झुलवे चद्रिकापारणामा, वगेरे
'पोढो पोपट', भणकार पृ ६४

हमणा 'सस्कृति'मा श्री उमाशकरे एक नवी ज रचना आ ज वृत्तनी आपी छे.

लाठी स्टेशन पर

दैवे शापी
तें आलापी

द्वय हृदयनी स्नेहगीता, ल्लापी !

दूरेऽदूरे
हंमा झूरे

क्षितिज हसती नव्य को आत्मनूरे

ते आ भूमि
स्नेहे झूमी

सदय दृगथी आज म धन्य चूमी
'सस्कृति' नवेम्बर, '४८, पृ ४३१

ध्यानमा आव्यु हशे के आवा श्लोकवधोमा कवि अनेक रीते पक्तिओने प्रासथी साधे छे—अने शणगारे छे

आ श्लोकभगी जुदी जुदी रीते वापरी शकाय जेम के
पादपूर्तिने बहाने एक प्रशस्ति
जीत्यो स्मट्स धूजावियो मकदुनाल्दा'घो ज ज्यू ठेलियो,
नाझीनेय अहिंसको बनववा हामी भणी विश्वने,

ह्या न्हेरुद्वय दास वल्लभ कर्या चेलाय राजाजि था,
असारी, द्वय अल्लि, खा, वश कर्या, तामील म्हारो'दर्या,
जीत्यु केळव्यु फॅवि शासन दिपू, ए सर्वने झाखवे
बाकी शु एवू हवे?
भणकार पृ २८१

'बाकी शु एवू हवे?' एवी पादपूर्तिने निमित्ते उपरनो श्लोक रचेलो छे सामान्य रीते पादपूर्तिमा आपेली पंक्ति के खड अंत्य पंक्तिमा वणी लेवानी होय छे, तेने बदले अही एक आखो श्लोक स्वतत्र रच्यो छे, पादपूर्तिनो उत्तरयतिखड अते लटकतो मूक्यो छे आ पण एक नवो श्लोकबंध ज थयो आवी ज रीते अनुष्टुपमा एकाद चरण वधारानु मूकी देवाय छे

इक्ष्वाकुकुलसभूत मदव्यापित सत्त्ववान्
तु तो छो, तेथि हे वत्स, आटली सूचना तने
मेधावीने घणी थाशे

साम्राज्यसर्जनो, तात, सयमे सिद्ध थाय ने
विलासोथी हणाय छे
सतापे सयमे धर्मे रहीने रत सर्वदा
पामजे पद शाश्वत
भगवाननी लीला पृ ४०

अही चालु अनुष्टुपना प्रवाहमा 'मेधावीने घणी थाशे', 'विलासोथी हणाय छे' अने 'पामजे पद शाश्वत' एवा त्रण पादो उमेरी दीधा छे आमाना छेल्ला बे पादो उत्तर पादो छे, अने पहेलु पूर्व पाद छे अनुष्टुपना समविषम पादोने पण यतिखडो जेवी परस्पर अपेक्षा होय छे एटले आ पण सयतिक वृत्तना नवा श्लोकबध जेवा ज दाखला थाय छे

आवी वैचित्र्यमय श्लोकरचना में आगळ कह्यु तेम सयतिक वृत्तोमा ज शक्य छे पण हु आ प्रकरणमा आगळ कही गयो तेम केटलाक वृत्तोमा यतिना जेवु विलबन वचमा आवे छे, जेने केटलाक पिंगलकारोए यति तरीके स्वीकारी पण छे, एवा स्थाने थता खडो पण यतिखडो होय ए रीते तेनी नवी रचनाओ थई छ दाखला तरीके पृथ्वीमा मध्ययति नथी एम माननार प्रो ठाकोरे ज, ए मध्ययति होय ए रीते एना खडोनी रचना करी छे

अभ्यस्त पृथ्वी

पडघू श्रवण नाम, गर्व भरि डोक ऊची करे,
त्यहा झट थई सवार हसि फेरवी घोडली
करी तिलक भाल, वर माल कठ आरोपि ते,
स्विकारि जरि नाचती,
सखीनयन राचती,
वियोग न कळावती थइ अलोप ए घोडली
'एक तोडेली टाळ', भणकार पृ. ११६

अही चोथी पाचमी पक्तिओ मात्र पृथ्वीना पूर्व यतिखडो ज छे आवो ज प्रयोग उपजातिमा थाय छे ज्या हु आगळ कही गयो तेम पहेला पाच अक्षर पछी हळवी यति जेवु छे

पहेला लिधेली
ते, में दिधेली
चन्ने डवीना नथी दाम आपवा,
नवी डवीना वळी कोड राखवा
'मोची', गगोत्री पृ १३९

में आगळ कह्यु के आपणे समवृत्तना एक चरणने सवादनु एकम स्वीकार्यु छे अने तेथी एक ज पक्तिनु मुक्तक पण थाय छे अने तेना दृष्टान्तो पण आ प्रकरणमा आवी गया हवे विशेष ए कहेवानु के यतिखड पण सवादनी सापेक्षता कायम राखीने स्वतत्र पक्ति बनी, अखड पक्तिओ जोडे आवे छे त्यारे, कोई पण वृत्तना एक चरणने बदले चरण उपरात एक वधाराना यतिखड साथेना मुक्तको पण बने छे जेम के

तने में झखी छे
युगोथी धीरोत्त प्रसार सहरानी तरसथी
वसुधा पृ ५६

आवा श्लोकबधोमा ज्या यतिखडोनी स्वतत्र पक्तिओ थाय त्या ए नोधवा जेवु छे के पूर्व यतिखडो स्वतत्र अध्धर रही शकता नथी, तेमनी पाछळ उत्तर यतिखडो आवे ज छे कारण के पूर्व यतिखडमा उपसहारनु सामर्थ्य नथी, तेथी ऊलटु उत्तर यतिखड स्वतत्र पक्ति तरीके ऊभो रहेवा समर्थ छे आगळ जे प्रो ठाकोरनी पादपूर्ति उतारी छे तेमा शार्दूलविक्रीडितनो उत्तरखड स्वतत्र रीते त्या ऊभेलो छे तेने आखी पक्तिनी के पूर्वखडनी

अपेक्षा रही नथी एथी ऊलटी रीते श्लोकने अंते पूर्वखंड एम अध्धर रही शके नहीं छेवटे, मे अनेक दृष्टान्तोमा एवु क्याई जोयु नथी

आ प्रमाणे प्राचीन पिंगलकारोए श्लोकने सवादनु एकम मानेलो तेथी आगळ जई आपणे जोयु के श्लोकनु एक चरण पण स्वतंत्र एकम थई शके छे, वळी जोयु के यति ए श्लोकना बंधनो स्वाभाविक भाग छे, वळी ए पण जोयु के मध्य यति पण चरणनु अग छे, एनु स्थान ए पण श्लोकना बंधनो अश छे, अने तेनाथी थता यतिखडो पण चरणना उपांगो छे तेमने सापेक्ष पण एक प्रकारनी समग्रता छे, अने ए एक आखा उपांग तरीके व्यापारमय थई अनेक प्रकारना श्लोकबंधो रची शके छे यतिखडोनी व्यापारमयता आपणे हजी नवा छदोना प्रकरणमा आगळ जोईशु

परिशिष्ट १

यतिपूर्व अक्षरनु गुरुत्व

वृत्तोमा यति पूर्वनो अक्षर हमेशा गुरु होय छे, अने तेनु कारण ए के यतिना उच्चारणमा आगला स्वरनु विलंबन थाय छे अने सस्कृतमा विलबन हमेशा गुरुन् ज थई शके छे एम मे आ प्रकरणमा कह्यु पण पिंगलोमा आवता केटलाक वृत्तोमा यतिपूर्वनो अक्षर लघु होय छे तेनो खुलासो करवानु रहे छे ते अही करु छु

हु पिंगलना 'छन्दशास्त्र'मा ज्याज्या लघु पछी यतिनो उल्लेख छे ते दरेक छदने अही एना ज क्रममा लईश न्यास मारी रीते आपीश

कुमारललिता लगाल ललगा गा छ शा ६-३

सूत्रमा यति कही नथी हलायुध प्रथम त्रणे अने पछी चारे एम यति बतावे छे पण आगळ जता कहे छे के कोई बेअे अने पाचे यति बतावे छे आ विकल्प ज आपणे आगळ जोयु तेम यतिनी अनावश्यकतानु चिह्न छे अने छन्द अनावृत्तसधिनो नथी पण चतुष्कल आवृत्त सधिनो छे अर्थात् खरा अर्थमा ए वृत्त नथी

पणव गागा गालल ललगा गागा ६-१०

सूत्रमा यति कही नथी पण हलायुध पाचमे पाचमे यति होवानो आम्नाय कहे छे छद स्पष्ट रीते चतुष्कल सधिना आवर्तनोवाळो मात्रामेळ छे

वृत्ता : ललल ललल गागा गा ६–२३

सूत्रमा यतिनो उल्लेख नथी, पण हलायुध आगळना १९-२० सूत्रोना शब्दोने मडूकप्लुतिन्यायथी अही लगाडी चारे अने साते यति कहे छे. पण छन्द स्पष्ट रीते चतुष्कलना आवर्तनोनो छे.

नवमालिनी : ललल गालगालल गागा ६–४३

सूत्रमा यतिनो निर्देश नथी. हलायुध आम्नायथी आठमे अने चोथे यति कहे छे पण छद चतुष्कल सधिना आवर्तनोवाळो छे. पहेलो अने छेल्लो संधि चतुष्कल छे ज, अने वचमा बे चतुष्कल सधिओना पर्याय दालगालदानु लगात्मक रूप छे.

चन्द्रावर्ता : ललल ललल ललल ललगा ७–११

सूत्रमा यतिनो उल्लेख नथी. हलायुध सातमे अने आठमे यति कहे छे. अने ते पछीना सूत्रमा उपरना ज न्यासमा छठ्ठे अने नवमे यति आवे तो वृत्तनु नाम माला कहे छे. अने तेनी पछीना सूत्रमा आठमे अने सातमे यति होय तो नाम मणिगुणनिकर कहे छे. आ यतिनु फरवु ए ज ए यति आवश्यक नथी एम बतावे छे. खरी रीते आ चतुष्कल सधिना आवर्तनोवाळो मात्रामेळ छन्द छे

ऋषभगजविलसित गालल गालगालल ललल ललगा ७–१५

आमा सूत्रमा ज सातमे अने नवमे यति कहेली छे. पण उपर आवी गयेल नवमालिनीनी पेठे आमा चतुष्कल सधिना आवर्तनो छे

क्रौंचपदा। गालल गागा गालल गागा ललल ललल ललल ललगा ७–२९

आमा सूत्रमा पाच पछी पाच पछी आठ पछी सात एम यति कही छे. पहेली बे यतिओ गुरु पछी आवे छे ते पछी आठ अक्षरे आवती यति लघु पछी आवे छे पण आ छद स्पष्ट रीते चतुष्कलना आवर्तनोनो छे— मात्रामेळ छे.

अपवाहक : गागा गालल ललल ललल ललल ललल ललगा गागा ७–३१

आमा नवमे पछी छठ्ठे पछी छठ्ठे पछी पाचमे एम चार यति कही छे. पहेली त्रणेय लघु पछी आवे छे छद चतुष्कल मात्रामेळी छे.

वरतनु : ललल गालल गालगालगा ८–३

आमा छठ्ठे छठ्ठे अक्षरे यति कही छे तेमांनी पहेली यति लघु पछी आवे छे. पण दृष्टान्तना चोथा चरणमा ज ए यति पळाई नथी. चोथुं चरण:—

अरुणकरोद्गम एष वर्तते

अही 'द्ग' ए छठ्ठो अक्षर छे, अने त्यां 'उद्गम' शब्द पूरो थतो नथी. ए ज बतावे छे के आ यति आवश्यक नथी. पण एथी विशेष महेवानुं तो ए छे के आ छन्द अपरवक्त्रना बीजा पादनो बनावेलो छे

अपरवक्त्र: लललललगा लगालगा
ललललगा ललगा लगालगा

अपरवक्त्रना बीजा पादमा जो यति नथी, तो अही मूकेली यति आगन्तुक छे, वृत्तना घडनी नथी.

कुटिला : गागा गागा लललल ललगा गागा गा ८–१०

आना सूत्रमा ज चोथे छठ्ठे अने पछी चोथे यति कही छे. वचली यति लघु पछी आवे पण आ चतुष्कल संधिना आवर्तनोनो बनेल मात्रामेळ छे.

शैलशिखा . गाललगा लगा ललल्गा ललगा ललगा ८–११

आमा सूत्रमा पांचमे छठ्ठे अने पांचमे यति कही छे. पण आ नर्दटकनो ज विस्तार छे (जुओ गत पृ. १३४). सरखावो :

नर्दटक : लललल्गा लगा लललगा ललगा ललगा
शैलशिखा : गाललगा लगा लललगा ललगा ललगा

नर्दटकमा यति नथी (जुओ गत पृ १६३) तो आमा पण ते आवश्यक नथी कोकिलक (सूत्र ८–१५) ए तो नर्दटकमा ज आठमे पांचमे अने चोथे यति मूकवाथी थयो छे एटले एनी यति आवश्यक होई शके नही.

एटले पिंगलना सूत्रोमा जे जे वृत्तमा लघु पछी यति कहेली छे, ते बधा वृत्तो घणेभागे कोई कोई मात्रामेळी छंदोना लगात्मक रूपो छे, अने परन्तु शैलशिखा कोकिलक जेवा दाखलामा ए यति आवश्यक नथी.

बीजा पिंगलोमा आ सिद्धान्तना लघु पछी यतिवाळा दाखला जोवानी हु जरूर जोतो नथी. हु आगी 'छन्दोरत्ना' जोई गयो छु अने तेमा क्याई अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तमा यति पूर्वे लघु आवतो मे जोयो नथी.

आ बधामा एक अपवाद छे,, अने ते तरफ अही सुधी प्रसगे प्रसगे हुं ध्यान दोरतो आव्यो छु. उद्गता विषम वृत्त छे, अने तेना पहेला चरणने अंते लघु आवे छे.

उद्गता : ललगा लगा लललगा ल
ललललललगा लगालगा
गालल ललल गालग गा
ललगा लगा लललगा लगालगा

पण आ दृष्टान्त तो ऊलटु मारा अभिप्रायने समर्थित करे छे. आगळ (गत पृ. १३८) जोई गया तेम दरेक पिंगलकार पहेला चरणने बीजानी साथे पठवानु कहे छे. एटले आ तो मारा मतनो व्यतिरेकी दाखलो थयो. अनावृतसंधि अक्षरमेळमां चरणान्त यति तेम ज मध्य यति गुरु पछी ज आवे छे, पण जे एक ज दाखलामां चरणान्ते लघु आवे छे त्यां पठनमां यति आवती ज नथी. एटले आ प्रकरणमां में जे एक वस्तुने मूलभूत मानी छे, के यति गुरु पछी ज आवे छे, तेने वृत्तोनुं प्रकृतिभूत तत्त्व गणवु जोईए.

परिशिष्ट २

यति संबंधी अर्वाचीन विवेचकोनी चर्चा

हजी सुधी अर्वाचीन युगमां यतिस्वरूपनी कईक पण शास्त्रीय चर्चा बे ज विद्वानोए करी छे. पहेली सद्‌गत केशव हर्षद ध्रुवे, एमनो 'पद्य-रचनाना प्रकार' नामना लेखमां. आ लेख एमणे १९०८ मां साहित्य परिषद माटे लखेलो, अने अत्यारे 'साहित्य अने विवेचन' भा. २ पृ. २६२–३०८ मां ते फरी छपायेलो मळी आवे छे. अने बीजी प्रो. ब. क. ठाकोरनी, तेमना 'शुद्ध (अगेय) पद्य'ना निबन्धमां, जे निबन्ध तेमणे 'भणकार'नी पहेली आवृत्ति (सने १९१७)मां, पोताना धाव्यसंग्रहमां छन्दना पोते जे नवा प्रयोगो कर्या हता तेना समर्थन तरीके लख्यो हतो

के. ह. ध्रुवनो लेख यतिना व्यापक विषयने ध्यानमां राखी लखायो छे एम नहीं कहाय, पण तेमां मुश्केली ए छे के ए पछी एमणे 'पद्य-रचनानी ऐतिहासिक आलोचना'ना व्याख्यानो (प्रसिद्ध १९३२) आप्या, एमां फरी व्यापक रूपे ते चर्चायो नथी. एथी १९०८ मां निरूपेला बधा सिद्धान्तो अने अभिप्रायो तेमने १९३२मां मान्य रह्या छे के केम एवो संशय ऊठे छे. 'आलोचना'मां तेमणे पोताना आगला विचारो घणी जगाए जूना लेखनो उल्लेख कर्या विना फेरव्या छे. पण आ विषयमां — एटले के यतिनी चर्चामां तेमणे एवो फेरफार कर्यो होय एवु जणातु नथी. मात्र एटलु

के पहेलाना लेखना बधा अभिप्रायो बीजा लेखमा उतार्या जणाता नथी पण ए गमे तेम होय स्थलसंकोचने लीधे, तेमणे एम कर्युं होय, के जूना अभिप्रायो तेमने पाताने चिन्त्य जणायाथी एम कर्युं होय, पण हु बनेना अभिप्रायोनी चर्चा आमा करीश, अने तेथी तेमना अगत अभिप्रायनो फरक कई होय तो पण मारा निरूपणने असर थरशे नही

'पद्यरचनाना प्रकारो'मा अर्थातिक के अखड वृत्तोनु निरूपण पूरु करी तेओ सयतिक वृत्तो हाथमा लेता• प्रथम यतिने आवश्यक बनावनारा कारणो आपे छे हु आखो फकरा नीचे शब्दश उतारु छु, मात्र तेमा गणावेला कारणो आगळ, मारी चर्चानी सरलता खातर सख्याक उमेरु छु —

"अखड रूपबध मूकी हवे खड रूपबध तरफ वळिये आ पद्यरचनामा चरणना बे के त्रण खड पडेला जोवामा आवे छे ज्या एक खड पूरो थई बीजो शरु थाय छे, त्या यति मूकाय छे चरणने अते तो यति सर्व प्रकारमा छदमा होय ज, तेने अहि लेखामा नथी लीधी आ यति मूकवी अनेक कारणथी आवश्यक बने छे (१) कोई वखत खड लाबो थई जवाथी यतिनी जरूर पडे छे (२) कोई प्रसगे समान सधिने नोखा पाडवा यति इष्ट छे (३) कोई समये भिन्न रचनाना खडोने जोडवाने यतिनी अपेक्षा रहे छे (४) क्यारेक उत्तर खड पूर्व खड साथे साळग वाचता पाठ विसवादी थाय छे, त्या सवाद जाळववाने यति प्राप्त थाय छे छदोना उदाहरणो उपरथी यतिना स्थान स्पष्ट समजाशे" (सा वि २, पृ २७९)

अन्यत्र आ सिद्धान्तोना दाखला जोवाथी एनु स्वरूप वधारे स्पष्ट थाय पण केटलीक चर्चा तो आ सिद्धान्तो जाता प्राथमिक दृष्टिए ज उपस्थित थाय छे तेओ कहे छे "ज्या एक खड पूरा थई बीजो शरु थाय छे, त्या यति मूकाय छे" हु पूछु छु खडने लीधे यति आवी, के यतिने लीधे खडो पड्या? यतिनी आवश्यकता जो खडथी थती होय तो खडने घन्नार तत्त्व कयु? साळग चरणमा अमुक जगाए खड शाथी पडयो? अने ज्या खडो पड्या नथी त्या केम नथी पड्या? आना जवाब आप्या विना खडोने स्वीकारी लई खडो जुदा पाडवा यति आवे छे एम कहेवु, ए तो यति अने खडने बन्नेने स्वीकारी लेवा बराबर छ एथी बेमाथी एकेयना खुलासो मळतो नथी वळी समान खडाने जुदा करवा पण यति आवश्यक बने, अने असमान खडोने जुदा करवा पण यति आवश्यक बने ए सिवाय तो कशु ज नथु कहयु नथी यतिथी जे खडो जुदा पडे ते के तो समान होय के तो असमान होय एटले एमा कशो माहिती मळती नथी जो समान तेम ज

असमान बन्ने प्रकारना खडोने यतिथी जुदा पाड्वा पडता होय, तो यतिनी आवश्यकतानु तत्त्व ययाक बीजे ज रहयु छे एम समजवु जोईए. वळी ज्या ज्या समान खडो होय त्या सर्वत्र यति जणाती नथी. आपणे पूछी शकीए के पृथ्वीमा, तेमना ज कहेवा प्रमाणे (सा. वि. २, २७८) लगा ललगा एवा बे खडो करी शकाय छे, छता त्या यति केम नथी? द्रुतविलबितमा ललगा ललगा ललगा लगा मा बे ललगा छे, तेनी वच्चे यति केम नथी? अने भिन्न खडो तो वृत्तोमा पार विनाना मळे छे, डगले ने पगले मळे छे त्या सर्वत्र यति केम नथी? एटले आ खुलासो प्रथम दृष्टिए मने अग्राह्य जणाय छे. चोथा कारण तरीके एमणे जणाव्यु छे के क्यारेक उत्तरखड पूर्वखड साथे सळग वाचता पाठ विसवादी थाय छे, त्या सवाद जाळववाने यति प्राप्त थाय छे. आ तो यतिना स्वरूपनु मात्र व्यतिरेकी कथन छे! खरु तो एम कहेवु जोईए के चरणमा ज्या यति होय छे त्या ते चरणना सवादमा आवश्यक होय छे. तेमणे चरणान्त यति माटे कह्यु छे के "चरणने अते तो यति सर्व प्रकारना छदमा होय ज". मारु कहेवु के जेम चरणान्त यति ए चरणना सवादनो अविश्लेष्य अश छे तेम मध्य यति पण जे जे वृत्तना चरणमा छे ते ते वृत्तना चरणना सवादनो अविश्लेष्य अश छे. ए यतिने लीधे चरणना खडो पडे छे एम कहेवु जोईए.

सयतिक वृत्तोमा के ह ध्रुव सौथी प्रथम शालिनी आपे छे. अने यतिनु कारण एवु बतावे छे के "पूर्वखड अने उत्तरखड सळग वाची शकाता नथी, माटे वच्चे यतिनो गाळो मेलवो पडयो छे" आगळ कह्यु तेम आनो एटलो ज अर्थ के यति ए चरणना मेळनो आवश्यक अश छे. मूळ प्रकरणमा में कह्यु तेम मारो अभिप्राय ए छे के ए चार गुरुओथी आवश्यक बनी छे.

बीजो छद तेमणे जलोद्धतगति लीधो छे तेना चरणनो न्यास :—

जलोद्धतगति : लगाल ललगा । लगाल ललगा

अही बन्ने खडो समान होवाथी वच्चे यति आवश्यक बनी छे एम एमनु कहेवु छे मारी दृष्टिए आ रचना आवृत्तसधिनी अने मात्रामेळी छे. तेमा चतुष्कल सधिना चार आवर्तनो छे हु आगळ कहीश तेम वृत्तोनी यति अने मात्रामेळी जातिनी यति ए बे, स्वरूपथी तद्दन भिन्न छे, अने तेथी वृत्तोनी यतिनी चर्चामा आने स्थान ज न होवु जोईए. में आगळ कह्यु तेम (गत पृ. ६८, ६९) ध्रुव, एक ज मात्रामेळी सधिना जुदा जुदा पर्यायोना आवर्तनोथी थयेला छदोने आवृत्तसधि गणता नथी, तेथी आने अनावृत्तसधि

वृत्त गणवु पडघु छे, अने तेनी यति सवघी आवो खुलासो योजवो पडघो छे, पण आ रचनाने अही स्थान नथी

आ पछी ध्रुवे क्षमानु दृष्टान्त आपेलु छे

क्षमा · लललल ललगा । गालगा गालगा

अलवत, आ छन्द किरातार्जुनीय (५–१८)मा मळे छे, पण ते मात्र कोई नवो छन्द करवाना कौतुकथी ज रचायो जणाय छे ए आखो पाचमो सर्ग नवा नवा छन्दोना प्रयोगोनो बनेलो छे मने आ रचना सवादी जणाती नथी आ छन्द कविओए अपनावी तेनो वहोळो प्रयोग कर्यो होय एवु जणातु नथी——न्यास जोता ए स्रग्धराना छेल्ला बे यतिखडोने बहु ज मळतो आवे छे छेवटनो गुरु एक काढी नाख्यो छे एटलो ज फरक छे आ दृष्टान्तने स्रग्धरा के मालिनीथी भिन्न गणवु न जोईए

आ पछी प्रहर्षिणी लीधु छे

प्रहर्षिणी गागागा । ललललगा लगा लगागा

आमा यतिनु कारण एवु बताव्यु छे के प्रथम खडने छेडे अने बीजा खडने आरभे पण जोरदार रूप छे जोरदार रूप मळग बोलवानी अगवड दूर करवाने यति विवक्षित छे आमा जोरनु नवु तत्त्व प्रवेश पामे छे जेनी चर्चा हु आगळ करवानो छु पण ए भारवाळा रूपो शा माटे भेगा न बोलाय ए ज प्रश्न छे अर्थात् खुलासो कल्पित छे

आ पछी मध्यक्षामा आवे छे एमना प्रमाणे

मध्यक्षामा गागा गागा । लललललल गागा गागा

अही यतिनु कारण ए जणाव्यु छे के केवळ गुरुथी बनेला पूर्वखडने पछीना केवळ लघुमय सधिथी नोखो पाडवानी जरूर छे मारी दृष्टिए, आ छद पण आगळ आवी गयेल जलोद्धतगतिनी पेठे चतुष्कल सधिना आवर्तनोनो बनेलो मात्रामेळ छन्द छे एटले वृत्तनी यतिचर्चामा तेने स्थान नथी मारी दृष्टिए तेनो चतुष्कल न्यास नीचे प्रमाणे थाय

गागा गागा लललल ललगा गागा गा

दरेक सधि चतुष्कल छे

आ पछी मदाक्रान्ता शिखरिणी अने हरिणी आवे छे अलबत एमां भिन्न प्रकारना यति खडो छे, पण यतिना ए खुलासो मनतो नथी मे चर्चानी

प्रस्तावनामा सामान्य रूपे बहुधु तेम यति मेळनो अंश छे तो तेनो खुलासो मेळनिष्पादक न्यासथी करवो जोईए आगळ सुवदना अने स्रग्धरा (एजन पृ. २८४–८५) आवे छे ते दृष्टान्त पण उपरना जेवा ज छे मात्र शार्दूलविक्रीडितमा प्रथम खड मोटा थई गयो छे तेथी यति अपेक्षित थाय छे एम बहधु छे ए खरो खुलासो छे आ उपरात एक धृतश्री के पचकावली के सरखी लीधो छे ते जोवो रहे छे

धृतश्री लललल गाल गाल ललगा । ललगा ललगा लगा लगा

अही अगियारमे अक्षरे जे यति छे, ते, तेओ कहे छे, के आवृत्त थता सधिओने छूटा पाडवा आवे छे आ सधिओने छूटा पाडवानी जरूर केम ऊभी थाय छे तेनु कारण ध्रुवनी आवृत्तसधि अक्षरमेळनी तेमणे आपेली व्याख्या छे तेओ "जे सधि चरणमा लागलागट यतिकृत विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय", तेने आवृत्त कहे छे एवा सधिवाळा वृत्तने आवृत्तसधि कहे छे (प अँ आ पृ २०) तेमणे बतावेला सधिओ प्रमाणे उपरना वृत्तमा जो यति न आवे तो त्रण ललगा सधिओ एकठा थई जाय, अने वृत्त आवृत्तसधि बनी जाय में आगळ कहधु तेम मारे मते जेमा मात्रामेळी सधिना सळग आवर्तनो होय ते ज आवृत्तसधि छे उपरना वृत्तमा एवु नथी एटले त्रण आवर्तन मानवथी ते आवृत्तसधि बनी न जाय मारे मते तो आ वृत्त ज सुन्दर सवादवाळु नथी नवा नवा छन्दोना प्रयोगो करवाना शोखीन माघे 'शिशुपालवध'ना त्रीजा सर्गना अत्य श्लोकमा तेने प्रयोज्यो छे, अने तेमा आवता धृतश्री शब्द उपरथी ज तेनु ए नाम पड्यु छे आ वृत्तना सधिओ मारी दृष्टिए जुदी रीते पडे छे

धृतश्री लललगा लगा ललगा ललगा ललगा लगालगा

आ रीते त्रण ललगा एकठा थवानो प्रसग ज अही नथी अलबत उपरना सधिविन्यासनु प्रामाण्य हु आगळ जता मेळना छेल्ला (छट्ठा) प्रकरणमा बतावीश अही तो एटलु ज कही राकीश के अही यति शार्दूलविक्रीडितनी पेठे लक्षणने लीधे आवश्यक बनी छे शार्दूलविक्रीडित ओगणीस अक्षरनो छे अने तेमा बारमे यति छे, आ एकवीस अक्षरनो छे, अने तेमा अगियारमे यति छे

आ रीते के० ह० ध्रुवनी यतिचर्चा बे कारणोथी दूषित थई छे पहेलु मे कहधु तेम खरा आवृत्तसधि वृत्तोने तेमणे मेळनी दृष्टिए मात्रामेळी गण्या नथी, तेथी केटलाक मात्रामेळी छदो, अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो साथे सेळभेळ थई गया अने तेथी मात्रामेळी वृत्तोनी यतिओने तेमणे वृत्तोनी

यति जेवी गणी काढी आयी सधिना वे के त्रण आवर्तनो अशास्त्रीय महत्त्व पाम्या आनु एक बीजु परिणाम ए आव्यु के अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तोमा यति पहेला हमेशा गुरु आवे छे ते तरफ तेमनु ध्यान ज न गयु अने यति पूर्वे लघु आवे एवी यतिओने तेमणे शुद्ध वृत्तोमा स्थान आप्यु आ नियमोनो अतिदेश वळी मात्रामेळी रचनामा तेमणे कर्यो त्यारे मात्रामेळी रचनानी यति पण विशेष भ्रान्तिकारक थई ए खास करीने काव्य के रोळा अने प्लवगमनी चर्चामा देखाय छे तेओ आ बने छन्दोने मात्रामेळी रचना तरीके स्वीकारे छे पण ते बनेमा अगियारमी मात्राए यति आवे त्यारे तेने तेओ भिन्न प्रकारना छदो गणे छे, अने भेद देखाडवा तेमने उपकाव्य उपप्लवगम कही तेमनी 'यतिनी चर्चा करे छे अने वृत्तोनी यतिनी पेठे यतिनी उपपत्ति भिन्न सधिओथी बतावे छे.—

उपप्लवगम बावा बावा वाह । हवावा वाहगा
उपकाव्य : " " " " वावा वागा

तेओ कहे छे "पहेला छदमा पाच अने बीजामा छ मात्रासधि छे ते पैकी चोथो जे हवावा सधि, तेमा बीजी मात्रा उपर भार पडे छे, अने बीजा बधामा पहेली मात्रा भारयुक्त छे एमा पूर्वापर वाह अने हवावानू स्वतत्र व्यक्तित्व टकावी राखवाने माटे मध्य यति ऐकान्तिक उपपत्ति धरावे छे, अर्थात् ते आवश्यक छे मध्य यति दूर थता सधिनू अनावृत्तत्व नाश पामी गूजराती भाषाना उपप्लवगम तथा उपकाव्य अपभ्रशना अनुक्रमे प्लवगम अने काव्य बनी जाय छे" (एजन पृ ३७)

अही करेलु दरेक विधान मारी दृष्टिए चिन्त्य छे आ मात्रामेळ रचनानी यतिने अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तनी यति साथे सरखावीने उपपत्ति करी छे एने ज हु अशास्त्रीय गणु छु पण आनी चर्चा हु मात्रामेळना प्रकरणमा ज करी शकु हाल तो मतभेदनी मारी आटली नोध बस थशे

प्रो ठाकोरनी यति विशेनी चर्चा कईक आनुषगिक छे, अने ते साथे बहु मर्यादित छे तेमनो विषय 'शुद्ध (अगेय) पद्य' छे तेमना वक्तव्यना मुद्दाओ टूकमा आम मुकाय काव्यने माटे सगीत आवश्यक नथी पण पद्य आवश्यक छे गान माटे ताल, ताल माटे पुनरावर्तन आवश्यक छे माटे अगेय रचना माटे पुनरावर्तनी रचना काम न आवे पुनरावर्तन विनानी रचनाओ ते अक्षरमेळ रचनाओ छे पण एमानी पण केटलीकने तेओ शुद्ध पद्य माटे नालायक गणे छे तेओ कहे छे

"त्यारे रही मात्र अक्षरमेळ रचनाओ आ रचनाओमानी हाल आपणामा वधारे वपराय छे ते पैकी पण केटलीकनु वधारण एवु छे के तेमने गेय रचनाओ ज गणवी पडे शालिनी, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शिखरिणी अने स्रग्धराना रूप (वधारण) विचारो एवा वृत्तोमा गुरु स्वरो के लघु स्वरो के वने, एटली सख्यामा साथे साथे खडकायेला छे, के तेमनामा यतिओ (विरामो)ना स्थानो निश्चित होवा लगभग आवश्यक बने छे, अने निश्चित लघुगुरु अनुक्रम अने निश्चित यतिस्थानो साथे मळता, ए वृत्तो तालवध-पण कुदरती रीते बनी जाय छे आवा वृत्तो गेय तो शु पण सुगेय छे, एटले ए पण 'पदो' ज छे सगीतमाधुर्यथी भिन्न एवा पदलालित्य के स्वरमाधुर्यनी लालसावाळो कोई एवा वृत्तने अगेय रीते वाचवा जशे तो ते पण वारवार गेयतामा लपसी पडशे

"हवे पृथ्वी वृत्तनु माप तपासो ए पक्ति सुगेय नथी, गेय छे, तथापि अवश्यमेव गावी पडे एवी नथी, सगीतमा चालता तालो जोता, कहे छे के,[1] एने कोई पण जाणीतो तालवध गणी शकाय एवी ए नथी एमा गुरु स्वरो लघु स्वरोना सायेलागा खडक्ला नथी आथी एमा आवश्यक गणवु पडे एवु यतिस्थान पण नथी वेशक सत्तर श्रुति के रूप के उच्चारणना एकम (syllable)नी वनेली पक्तिनु उच्चारण दृढ के शिथिल विराम वगर सरल नथी, अने एना लक्षणमा आठमी श्रुतिए यतिस्थान कह्यु छे —

जसौ जसयला वसु । ग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरु "
भणकार (आवृत्ति १ली) पृ० १२–१४

---

१ जुओ रा रा गणपतराव गोपाळराव वर्वे कृत गायन वादन पाठमाळा — छदोगीत विनोद विभाग पृ ३४–"आ (पृथ्वी) वृत्त पण गायनने वरावर अनुकूल नथी आखा वृत्तमा ८–८ मात्राना ३ विभाग पडे छे, परतु ते ३+५ मळीने पडे छे दीपचदी चालमा ७ मात्रानो दरेक खडक होय छे, ते ३+४ ना होय छे, अने झपतालमा ५ मात्रानो दरेक विभाग होय छे, ते २+३ नो होय छे, तेम पृथ्वी वृत्तमा नियमित विभाग जोता ए एक नवीन ताल गणीने तेनो व्यवहारमा योग्य उपयोग करी शकाय तेवो छे" आ वात खरी होय तो तेथी म्हारी दलीलने सारा टेको मळे छे, पण म्हारी दलील आ एक ज वात पर अवलवित नथी

पृथ्वीमा दृढ यति नथी ए वात रा रा केशवलाल हर्षदराय ध्रुव ए वृत्तने अखड रूपबन्धगा गणीने स्वीकारे छे

अही एमणे शालिनी वगेरे वृत्तोमा गुरु अने लघुना सडकलाने लीधे यति आवश्यक बने छे एम कह्यु, ते मारा सिद्धान्तने मळतु छे पण ते पछी ए "निश्चित लघुगुरु अनुक्रम अने निश्चित यतिस्थानो साथे मळता, ए वृत्तो तालबन्ध पण कुदरती रीते बनी जाय छे" एम कह्यु ते अप्रामाणिक छे उपर एमणे पृथ्वी विशेनी पादटीपमा सद्गत वर्वेनो मत दर्शाव्यो के पृथ्वीमा आठ आठ मात्राना त्रण खडको पडे छे, पण ते एकसरखा न होवाथी आ वृत्त "गायनने बराबर अनुकूळ नथी' पण शालिनी मालिनी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शिखरिणी अने स्रग्धरामां तो एवा एकसरखी सख्यानी मात्राना खडको पण नथी एटले ए वृत्तोने तालबधमा पडता गणाव्या छे ते अशास्त्रीय छे अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्त पण गवाता ए साचु पण ए तालबध गवाता नही, अत्यारे पण गवाय छे त्यारे तालबध गवाता नथी, अने स्वच्छन्दे मात्राओ उमेर्या विना तालबन्ध गाई शकाय पण नहीं आवृत्तसन्धि अक्षरमेळ के मात्रामेळ अने अनावृत्तसधि अक्षरमेळनु ए एक महत्त्वनु व्यावर्तक लक्षण छे, ते हु आगळ कही गयो छु (जुओ गत पृ १५१) एटले सयतिक छन्दोमा यति आवश्यक छे ए साचु, हु आ प्रकरणमा कही गयो तेम ते एक साथे आवता गुरु अने लघुथी आवश्यक बने छे ए साचु, पण ए आवश्यकताने सगीत साथे कशो सबध नथी

आ आखो निबध -मुख्य एक ज वात कहे छे के पृथ्वीमा मध्य यति आवश्यक नथी ए वखते ए वस्तु विस्तारथी समजाववानी जरूर हती एटले विस्तार कर्यो छे ते भले, पण एम करता बीजा, आवश्यक यतिवाळा जे वृत्तो बताव्या तेनी चर्चाने स्थान ज मळ्यु नथी प्रश्न ए थाय छे के ए वृत्तोमा जो यति आवश्यक छे तो तेमणे पोते ए वृत्तोमा यतिभग क्या सिद्धान्तथी कर्यो के कई दृष्टिए कर्यो ? ए वृत्तो सळग काव्यने माटे तेओ नालायक गणे छे छता तेमनु एक 'तोडेली डाळ' शिखरिणीमा चाले छे, अने शिखरिणीनी आशरे ४० पक्तिओमा चार जगाए यतिभग छे आ ज यतिभगो खरो सुलासो मागे छे, अने ते एमना लेखमा मळतो नथी एमणे यतिभगवाळा काव्यो रच्या ए आनुषगिक रीते पिंगलने नवी दिशामा विस्तारनार छे, पण तेमनो पोतानो पिंगळ विषयनो ए लेख यतिभग उपर पूरतो प्रकाश नाखतो नथी

वृत्तोनो मेळ: संधि

गया प्रकरणमां वृत्तनुं पृथक्करण करता करता यतिखंड सुधी आव्या. ए यतिखंडोनुं कंई आगळ पृथक्करण करी शकाय छे खरुं? वळी यतिखंडो तो सयतिक वृत्तोमां ज होय, तो अयतिक वृत्तोनुं पृथक्करण थाय छे के नहीं? आनो जवाब ए छे के अर्वाचीन पिंगल चर्चाए आ पृथक्करणना अखतरा कर्या छे, अने तेमांथी निष्पन्न थता विभागोनुं संधि नाम आप्युं छे.

आ संधि संबंधी पहेलो उल्लेख करनार, स्द्गत के. ह. ध्रुव छे. १९०८ मां प्रसिद्ध थयेला 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमां वृत्तोना सखंड एटले सयतिक अने अखंड एटले अयतिक एवा बे विभागो करीने तेओ अयतिक वृत्तो आपवा शरू करे छे त्यां सौथी प्रथम उपेन्द्रवज्राना स्वरूपनी चर्चामां तेओ ए वृत्तना संधिओ पाडे छे, अने पछी जे बीजा वृत्तोना स्वरूपनी चर्चा करे छे त्यां घणीखरी जगाए तेओ वृत्तनो न्यास संधिओमां आपे छे. (सा. वि. २, २६२ – ३०८) ते पछी तेमना १९१९ ना 'सत्यवाद अने पक्षवाद'-ना निबंधमां आवती चर्चामां पण तेओ संधिनुं अवलंबन ले छे. (सा. वि. १, ११३ – १२१) छेवट १९३२ मां आपेला युनिवर्सिटी व्याख्यानो ('पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना') मां तेओ संधिनो उल्लेख पण करे छे अने तेना स्वरूपनी चर्चा पण करे छे.

तेमनी आ संधिनी पद्धतिने स्द्गत नरसिंहरावे आवकारी छे तेओ कहे छे के छन्दोना मकारादि गणोथी माप आपवानी पद्धति सगवडवाळी होवा छतां, ते ते छन्दना मेळनुं निरूपण करती नथी, जे मेळनो आधार तेना घटको उपर रह्यो छे आ घटकोने के. ह. ध्रुवे संधि कह्या छे ते बरावर छे. आ वात तेओ दाखलाथी दर्शावे छे:

रत्वा कामिनो मदनदूतिमुदाहरन्ति।

आ वसन्ततिलकानी पंक्तिने मकारादि गणोमां बतावવા तेना नीचे प्रमाणे विभागो करवा पडे छे:

रत्वा कामि । नोमद । नदूति । मुदाह् । र । न्ति।
त भ ज ज ग ग

अने एम करीने तेना स्वरूपना गणो उपरनी रीते बतावी शकाय. पण तेना मेळनी दृष्टिए तेना नीचे प्रमाणेना सधिओ बतावबा जोईए

त्वा कामिनी । मदनदू । तिमुदा । हरन्ति।[1]

पण आ सधिओ विशे तेमणे क्याई विशेष चर्चा करी नथी

आ ज रीते श्री चूनीलाल वर्धमान शाहे आ पद्धति स्वीकारी छे तेओ पिंगळनी चर्चामा सधिओनो उल्लेख करे छे पण तेमणे पण सधिना स्वरूप विशे शास्त्रीय चर्चा करी नथी आ सिवाय सद्गत बर्वेए पोतानी 'गायन वादन पाठमाळा'मा घणी जगाए सधिओनो उल्लेख करेलो छे तेओ घणी जगाए के ह ध्रुवना मतोने ज अनुसर्या छे ए सघळु जोता के ह ध्रुवना निरूपणने ज पीठिका तरीके लई चर्चा करवी ए योग्य तेम ज फळदायी जणाय छे

'पद्यरचनाना प्रकारो'नो लेखमा तेम ज 'सत्यवाद अने पक्षवाद'ना लेखमा के ह ध्रुवे सधिनी चर्चा करी छे पण तेनी व्याख्या करी नथी तेनी व्याख्या पहेलवहेली तेमना युनिवर्सिटी व्याख्यानोमा मळे छे तेमाथी प्रस्तुत फकरा हु नीचे उतारु छु रूपवध छदोना सम, अर्धसम अने विषम एवा विभागो करी तेओ कहे छे

"प्रत्येक चरणनी समाप्ति यतिवृत्त विरामथी जणावाय छे चरणनी अदर यति आवीने तेना जे भाग पडे छे, तेने में खड नाम आप्यू छे सखड तेम ज अखड चरणनो घटकावयव सधि छे सधिमा एकथी वधारे अभिन्न के भिन्न रूप आवे छे आ रीते आखो ए छद मेळवई रूपोनो बने छे ते कारणथी में तेनू रूपबध नाम कल्प्यु छे चरणनी घटनामा आवता सधिना त्रण प्रकार छे एकल अभ्यस्त अने आवृत्त जे सधि चरणमा लागलागट यतिवृत्त विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय, ते आवृत्त, लागट बे वार वपरायो होय, ते अभ्यस्त; अने अणलागट वपरायो होय, ते एकल छेल्ला बे सधिनो अनावृत्त सज्ञामा अतर्भाव थाय छे खड यतिकृत विराम मागी ले छे, ज्यारे सधिने तेवा विरामनी जरूर नथी रहेती" (गु ऐ आ पृ २०)

1 This system being only one of convenience is not true to rhythmic formation of metres concerned, which depends on the components happily termed sandhis by Keshavlal H. Dhruva thus -etc

— Gujarati Language and Literature vol. II p 284

आ पछी तेओ एक मदाक्रान्ता वृत्तनो दाखलो आपे छे अने तेना खडो अने सधिओ दर्शावे छे सरळता खातर, पहेली पक्तिमा यतिने मारी रीते दडथी दर्शावी, अने दरेक सधि अल्पविरामथी दर्शावी छु तेने नीचे उतारु छु:

ज्या जो,उ त्या, । दिश वि,दिशमां, । व्योम,मा भोम,मा ते,
ज्या होउ त्या पर नगरमा वाटमा घाटमा ते
मीचू नेनो पलक भर मे आ रही भीतरे ते
ते ते ते,ते भवण प्रगटघू आज अद्वैत ए ते

वधारे स्पष्टतानी खातर नीचे तेनो लगात्मक न्यास आपी तेमा यति अने सधि उपरनी ज रीते फरी बतावु छु:

मदाक्रान्ता गागा, गागा, । ललल, ललगा । गाल, गागाल, गागा

वधारे स्पष्टता खातर तेमनु ज कथन उतारु छु-

"पहेला खडमा वे बे रूपना, बीजामा त्रण त्रणना अने त्रीजामा बे त्रण तथा बे रूपना सधि छे, ते पैकी पहेला खडना सधि अभ्यस्त अने बीजा त्रीजामा एकल छे अर्थात् ए दृष्टान्त अनावृत्त सधिनो छे"

(एजन पृ. २०-२१)

ते पछी आवृत्त सधिना दृष्टान्त तरीके तेओ एक तोटक उतारे छे

आगळ जता तेओ कहे छे के आ सधिओमा अमुक अक्षर उपर भार होय छे काव्यवाचना व्याख्यानमा फरी वार रूपवधो विशे बोलवानो प्रसग आवता तेओ उपरना ज मतो फरी उच्चारी सधिमा आवता भारनो उल्लेख करे छे तेओ कहे छे

"चरण अखड होय तो चरणना अने सखड होय तो खडना घटकावयव ते सधि कहेवाय छे सधि बे करता वधारे वार लागलागट वपरायो होय, तो ते आवृत्त लेखाय, बाकी अनावृत्त प्रत्येक सधिना अक्षरोमा अमुक एक ज अक्षर भारयुक्त अने बीजा बधा भारमुक्त होय छे"

(एजन पृ. २०४)

अने आ पद्यभार ते गद्यमा आवता भारथी भिन्न छे

"गद्यात्मक रचनामा अन्वयने अनुसरीने वाक्यना विविध भाग पडे छे. प्रत्येक भागमा आद्य अक्षर भार मूकीने बोलाय छे ए भारने आपणे गद्यभार सज्ञा आपीशू एने लीधे वाक्यना भाग जुदा जुदा परखाय छे आ

गद्यभारवाळा भाग बहुधा वर्ण, रूप, मात्रा के लयनी चोक्स व्यवस्था वगरना होय छे पद्यात्मक रचनामा चोक्स उच्चारणना जूथनो एक एक भाग बने छे तेनी घटना वर्ण रूप मात्रा के लयनी चोक्स व्यवस्थासर होय छे, अने घणू करीने तेना आद्य अक्षर उपर भार पडे छे, जेने पद्य-भार नामथी ओळखावीशू " (एजन पृ ७)

ज्या एक ज पक्ति बे छदोमा बेसी शकती होय त्या ए बन्ने छदोने भिन्न करी आपनार पण पद्यभार ज छे तेना दृष्टान्त तरीके तेओ नीचेनी पंक्ति उतारे छे:

जे निराश न थई मच्यो रहे
ते ज इष्ट मुरानी घडी जुए

आ पक्ति रथोद्धतामा बेसे छे, पण ते साथे ते अगियार अक्षरना कवितमा पण गोठवी शकाय छे पण ए बन्ने छदो भारने लीधे भिन्न पडी रहे छे "रूपबंध तरीके पद्यभार पहेला पाचमा तथा आठमा अक्षर उपर अने वर्णबंध तरीके पहेला, पाचमा तथा नवमा उपर पडे छे " एमनो मत वधारे स्पष्ट करवा हु बन्नेना भिन्न न्यासो, पद्यभार बताववा अक्षर पर ऊभी लीटी करी बतावु छु

रथोद्धता जे निराश न थई मच्यो रहे
कवित जे निराश न थई मच्यो रहे

"ए रीते पद्यभारनी व्हेंचणी भिन्न होवाथी, स्थूल दृष्टिए एक जेवा जणाता पद्यबंध सूक्ष्म दृष्टिए भिन्न ठरे छे " एथी ऊलटी रीते बे जुदा नामना छदोमा पण पद्यभार एक ज होय तो ते छदोने स्वरूपत एक ज गणवा जोईए (एजन पृ ५२)

आ प्रमाणे सधिना स्वरूपनी चर्चा सामान्य रूपे पूरेपूरी करेली होवा छता, व्याख्याताए, पिंगलना बधा छदोना सधिओ अने पद्यभारो दर्शाव्या नथी अलबत मात्रावृत्तो विशे बोलता तेओ मात्रामेळ छदोना बधा सधिओनो निर्देश करे छे, अने ते ते सधिना आवर्तनो उपरथी कया कया मात्रामेळ छदो थया ते बतावे छे, एटले तेमना मत प्रमाणे मात्रामेळ छदोना सधिओ कया कया ते तरत मळी आवे छे (एजन पृ २९-३०) पण मात्रामेळ छदनो सधि तेना आवर्तनोमाथी शोधी काढवो हमेशा सहेलो छे फारसी गजलोनु पिंगल आ सधिओना आवर्तनोथी बतावाय छे, अने ते

प्रमाणे गुजराती मात्रामेळ संधिओ पण सहेलाईथी बतावी शकाय. तरी मुद्रेतोनी अनावृत्तमणि अक्षरमेळनी ज छे. तेना संधिओ, आगळ जोयु तेम, अक्षरसंख्यामा के अक्षरना लघुगुरु स्वरूपमा एक सरखा नथी, तेम ज एक परिमा केटला संधिओ छे एनो पण नियम नथी. तरी रीते के. ह. ध्रुवनी नवीनता आ वृत्तोने अंगे संधिओ दर्शाववामा ज रहेली छे. अने ते तेमणे आ व्याख्यानोमा सळंग के आटुसरळु पण कर्यु नथी अलबत १९०८ ना 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना निबंधमा तेमणे केटलाक मुख्य वृत्तोना न्यासो आप्या छे, पण ते विषेनो मत तेमणे बदलाव्यो छे के नहीं ते जाणवानु कशुं साधन नथी. एकाद जगाए ज्या कंई फेरफार कर्यो छे त्या पण ते तरफ ध्यान दोर्यु कर्यो नथी पण वाचके मुद्रन रीते बन्ने व्याख्यानोने सरखावीने शोधी काढवानो रहे छे. दाखला तरीके आगला पद्यरचनाना लेखमा स्वागता रथोद्धताना निरूपणमा तेओ प्रथम स्वागतानु दृष्टान्त आपे छे, अने पछी बन्नेना फरकनी चर्चा करे छे चर्चा समजवी सहेली पडे माटे हु प्रथम बन्नेना न्यासो आपु छु अलबत अही संधिओ मारी रीते पाडीने आपु छु. कारण के ए निबंधमा संधिओ दर्शाव्या नथी.

स्वागता : गालगा लललगा ललगागा
रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

तेओ कहे छे · "बन्नेमा पहेला आठ रूप अने अगियारमु एक ज छे[1] मात्र नवमू अने दशमू रूप एकमा लगा छे ते बीजामा गाल छे".[1] मुद्रणमा लगा उपरनु भारचिह्न बन्ने अक्षरो वच्चे छपायेलु छे पण हु मानु छु के ते गा उपर ज हशे ए रामे ते होय गाल उपरनु भारचिन्ह बराबर गा उपर ज छे अने ते ज मारे प्रस्तुत छे,—महत्त्वनु छे ए रीते रथोद्धताना नवमा अक्षर उपर भार आव्यो त्यारे आपणे हमणा ज जोई गया के 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'ना व्याख्यानमा तेमणे रथोद्धताना आठमा अक्षर उपर भार दर्शाव्यो अने ए भारने ज कवितना पद्यभारनु भेदक लक्षण गण्यु

२-२ मूळना वाक्यमा फेरफार करीने आ वाक्य में लख्यु छे मूळमा "मात्र नवमू रूप एकमा लगा गाल छे " आ प्रमाणे छे. त्या विवक्षितार्थ मारा वाक्य प्रमाणेनो ज होई शके एमा शका नथी, अने ए अर्थ तेओ आवा अधूरा अने संदिग्धार्थ वाक्यथी न दर्शावे हु मानु छु के अही कंईक छापवानी भूल छे, अथवा नकलमा स्खलन छे.

बीजी मुश्केली ए छे के संधि अने पद्यभारनो संबंध तेमणे स्पष्ट कर्यो नथी आपणे आगळ जोयु के तेमना मत प्रमाणे बधा प्रकारोमा संधिओ होय छे, पण तेमा भार कई जगाए होय छे ते संबंधी तेमा कशु ज कहेता नथी "पद्यात्मक रचनामा चोकस उच्चारणना जूथनो एक एक भाग बने छे तेनी घटना वर्ण रूप मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्थासर होय छे, अने घणु करीने तेमा आद्य अक्षर पर भार पडे छे, जेने पद्यभार नामथी, ओळखीशु " (एजन पृ ७) अहीं कदाच कोईने एम लागे के दादाल्दा जेवा मात्रामेळ संधिओमा पद्यभार प्रथम अक्षर के मात्रा उपर आवतो नथी तेनो अपवाद करवा 'घणु करीने आद्य अक्षर उपर भार पडे छे' एम कह्यु छे पण एमणे पोते आ ज विधान पाछु मात्र अनावृत्त संधिओना विवेचनमा पण कर्युं छे "चरण अखंड होय तो चरणना अने सखंड होय तो खंडना घटकावयव ते संधि कहेवाय छे संधि एक करता वधारे वार लागलागट वपराया होय, तो ते आवृत्त लेखाय, बाकी अनावृत्त प्रत्येक संधिना अक्षरोमा अमुक एक ज अक्षर भारयुक्त अने बीजा बधा भारमुक्त होय छे " (एजन पृ २०४) अहीं तो अक्षरमेळनी ज वात करे छे अने छता 'संधिना अक्षरोमा अमुक एक अक्षर भारयुक्त' होवानु कहे छे—नहीं के संधिनो पहेलो अक्षर ज अने 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमा आपेला न्यासोमा एवा संधिओ छे जेमा आद्य अक्षर उपर नहीं पण अनादि अक्षर उपर भार दर्शाव्यो छे जेमके

जलोद्धतगति लगाल ललगा लगाल ललगा

क्षमा लल्लल ललगा गालगा गालगा

(सा वि २, पृ २८०)

अने आम करवाथी मुश्केली ए ऊभी थाय छे के जो संधिना पहेला अक्षर उपर ज के अमुक स्थानना अक्षर उपर ज पद्यभार आवे एवी व्यवस्था न होय, तो पछी एक संधिने बीजाथी जुदो पाडनार तत्त्व कयु ? अलबत मात्रामेळ छंदोना केटलाक संधिओमा पहेली मात्रा उपर भार आवतो नथी पण त्यां तो संधिना आवर्तनो होय छे अने आवर्तनोमाथी संधि तरत शोधी शकाय छे पण ज्या आवर्तनो नथी ज, त्या जो भारथी संधिओ छूटा न पाडया होय तो बीजा कोनाथी पाडवा ते दर्शाववु जोईए ए न दर्शावीए तो संधिओ पाडवामा केवळ मनस्विता ज प्रवर्ते

में उपर जणाव्यु के शब्दगत बर्वेए पण संधिओनो उल्लेख कर्यो छे अलबत तेओ मुख्यत्वे के ह ध्रुवने अनुसर्या छे, पण संधिओनी आवर्तना

तेओ कहे छे के दरेक संधि आ भारथी नक्की थाय छे बर्वे, अनावृत्तसंधि वृत्तोमां वपराता भिन्न भिन्न स्वरूपना अने अक्षरसंख्याना संधिओ अने तेनी टूंकी संज्ञानी रीत आपी पछी कहे छे

"आवां लक्षणोमां जे जे संधि आवे ते संधिना आरंभे जे लघु के गुरु होय तेना उपर ज ताल³ आववो जोईए एटले के, आ रूपसंधिओ ते, वृत्तोना वर्ण बोलती वखते तेना पडता स्वाभाविक जयां सूचवे छे, तालनी जगाओ सूचवे छे, अने ते प्रमाणे वृत्तनी बोलवानी चाल (राह) केवी होय छे ते पण सूचवे छे" ('गायन वादन पाठमाळा' पुस्तक १लु, विभाग ३ जो, पृ १०९)

अने दरेक संधि भारथी शरू थाय छे एम कहेवाथी एक प्रकारनी उपपत्ति तो आवे छे शास्त्रनो ए विभाग सुसंगत बने छे अने जाणे आ शास्त्रीय आवश्यकता ध्रुवना मन पर अज्ञात असर करती होय तेम

³ बर्वे अहीं ताल शब्द वापरे छे पण ते उपरथी पद्यभार समजवानो छे बर्वे संगीतनो ताल, मात्रामेळ आवृत्तसंधि छन्दोनो पिंगलगत ताल, अने अनावृत्तसंधि वृत्तोमां के ह ध्रुव जेने पद्यभार कहे छे तेनो भेद समजे छे तेणे पोते उपरना ज संदर्भमां आगळ जतां कह्यु छे

"आ संधिओ जणाव्या, तेमांथी कोई पण एक ज संधिनो बे अथवा ते करतां घणी आवृत्तिओथी जो वृत्त बनाववामां आवे तो ते वृत्त गेय एटले गायनने अनुकूळ थशे पण जो जुदा जुदा अनुवादी संधिओ लई तेनु वृत्त बनावीए तो ते पाठ्य, एटले के श्लोकनी माफक बोलातु वृत्त थशे, केमके एक ज संधि पुनः पुनः अनेक वार आवे तो गायन पक्षे तालना सरखी मात्राना समूहो थतां होवाथी कोई पण चोक्कस तालमां गाई शकवानी अनुकूळता थशे परंतु पाठ्य वृत्तमां एक ज संधि, बे करतां वधारे वार आवर्तन पामतो नहीं होवाथी गायन पक्षे कोई एक मुकरर ताल थतो न होवाथी पाठ्य वृत्त ते मात्र पाठ(पठन) करवानी रीत प्रमाणे बोलाशे" वगेरे (एजन पृ ११०)

(अहीं अनुवाद शब्द संवादना अर्थमां वापर्यो जणाय छे)

जरूर तो के ह ध्रुवे 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां ज सौथी पहेलो पद्यभार शब्द वापर्यो अने बर्वेनु पुस्तक ते पहेलां बहार पडेलु छे बर्वे के ह ध्रुवना 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखने अनुसर्या छे, अने तेमां पद्यभार माटे कोई खास पारिभाषिक शब्द वपरायो नथी, एटले बर्वेए एने माटे ताल शब्द वापर्यो छे

तेओ एक जगाए बर्वेनो ज मत उच्चारे छे आख्यानवाला वृत्तो उपरना व्याख्यानमा उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रानी चर्चा करता वतेंना संधिओ जणावी तेओ कहे छे "चरणना आ नाना मोटा जूथने हु संधि सज्ञाथी ओळखावू छू प्रत्येक संधिनो आद्य अक्षर भारयुक्त होय छे अने ते पछीना अक्षर भारमुक्त रहे छे" (प ऐ आ पृ १२०–२१) अलवत आगळनो उल्लेख उपेन्द्रवज्रानो छे पण एना उपरथी सर्वसग्राहक निरपवाद व्याप्ति आपवानो ज अही स्पष्ट अभिप्राय छे

आम ज्यारे संधि विशे प्रथम उल्लेख करनारना ते विशेना वचनोमा एकरूपता नथी, अने तेमने ज अनुसरीने पिंगल लखनार बर्वेनु कथन बीजु कई नही तो सुसगत तो लागे छे, अने तेने पण के ह ध्रुवना एक वचननो टेको तो छे, त्यारे संधिना स्वरूपनु ए ज लक्षण, एटले के दरेक रूपसंधिना आद्य अक्षर उपर ताल के पद्यभार होय छे, स्वीकारी लईए तो शु खोटु? पण एम करता जता बीजी मुश्केली ऊभी थाय छे अने ए मुश्केली संधिना स्वरूपने लगती ज छे ए मुश्केली ए छे के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमा पद्यभार क्या क्या छे ए सबधी तेना लेखकोमा ज मतभेद छे

पद्यभारना सबधमा त्रण भिन्नभिन्न छन्दशास्त्रीओना मतो सरखाववा जोईए तेमाना बेनो उपर निर्देश कर्यो छे—के ह ध्रुव अने बर्वेनो बर्वे तो के ह ध्रुवना अनुयायी छे छता बन्नेमा भेद छे त्रीजा पिंगलशास्त्री ते आपणा आद्य पिंगलकार दलपतराम छे मात्रामेळ छदोमा ताल होय छे एम कहनार ए आद्य पिंगलकार छे तेमणे तेमना पिंगलमा बधा अक्षरमेळ छन्दोमा अमुक अमुक अक्षर उपर तालचिह्न मूकेलु• छे आ तालचिह्न सौथी पहेलु चोथी आवृत्तिमा देखा दे छे अने त्या प्रकरण ३ जु अक्षरमेळ छन्दो उपर एकडो करी नीचे टीप छे के 'अक्षरमेळ छदोमा पहेला चरणमा ताल बतावकवाने आवी निशानी मूकी छे ते प्रमाणे बीजा चरणामा समजवु" जो बर्वेना तालने आपणे ध्यानमा लईए तो आने पण ध्यानमा लेवो जोईए

आ त्रण पिंगलकारोनी पद्यभारयोजनानी हु सरखामणी करु ते पहेला मारे ए कहेवानु छे के आमाना दरेकमा पोताना लेखमा ज पद्यभारमा विसवाद आवे छे अने ते हु पहेला दर्शाववा इच्छु छु आ ज प्रकरणमा रचोद्धताना न्यासमा के० ह० ध्रुवे 'पद्यरचनाना प्रकारो'मा अने ते पछी प्रसिद्ध थयेल 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मा भिन्नभिन्न जगाए पद्यभार मूक्यो छे ते हु कही गयो ए विसवाद माटे तो एम कही शकाय के एमणे विशेष विचार पछी आगलो अभिप्राय सुधार्यो पण तेमना 'पद्यरच-

नाना प्रकारो'ना लेखमा पण एक ज छंदमा भिन्न भिन्न पद्यभारो जोवामा आवे छे. त्या एवो खुलासो शक्य नथी. ए निबंधमा वैतालीयनु लक्षण तेमणे नीचे प्रमाणे आपेलु छे.

ददगा पछि गालगा लगा
दददागा पछि गाल गालगा
सा. वि. २. पृ. २८८

आ मात्रागर्भ वैतालीयनु सामान्य लक्षण छे. अने ए लक्षण तेमणे वियोगिनी अथवा सुन्दरी छन्दमा आपेलु छे. ए रीते वियोगिनी के सुन्दरी छंदनो पद्यभार नीचे प्रमाणे थयो:

ललगा लल गालगा लगा
ललगागा लल गाल गालगा

आगळ जता वैतालीय अने तेने अंते एक गुरु वधारवाथी थनता औपच्छन्दसिकमा सळंग लगात्मक रूपो विशे लखता कहे छे: "वळी एना ए बे छदोना मात्रात्मक भागमा विषम चरणमा ललगा लल ने सममां ललगागा लल एवो चित्रबंध योजवाथी अनुक्रमे सुन्दरी ने माल्यभारा सिद्ध थाय छे." आ रीते, सुन्दरीना मात्रागर्भ भागो विषम सम पक्तिओमा, नीचे प्रमाणे पद्यभारवाळा थाय.

ललगा लल
ललगागा लल

सम पक्तिमा ललगागामा पद्यभारनी ऊभी लीटी बन्ने गा वच्चे वचाय छे. तेने उपरना न्यासनी साथे संवादमा लाववा ललगागा वाचीए, पण उपरना न्यासमा सम पक्तिमा लल तद्दन भार विनानो सधि छे, अने नीचे ललमा भार आवे छे तेनो शो खुलासो? अर्जीना मोकळा मनमा सदेह छे, के नकलनी भूल छे के छापनी भूल छे, शु समजवु?

वर्बेना पुस्तकमा तालचिह्नो खसी गयानो अने तूटी गयानो सदेह आवे छे. एटले एवा विसवादो ध्यानमा न लईए. पण तेमनामा पण एक जगाए स्पष्ट विसवाद देखाय छे. अक्षरछदमान विभागमा तेमणे शिखरिणीना पद्य-

भारो नीचे प्रमाणे आप्या छे. (तेमणे अक्षर नीचे आडी लीटी करी बताव्या छे, हु अहीं स्वीकारेली ऊभी लीटीथी बतावीश.)

छ ए रुद्रे छेदो । यमनसभलागे शिखरिणी

(गायन वादन पाठमाळा पु. १ वि. ३. प्र. २. पृ. ३७)

पण आगळ जता रूपसधि समजावता तेओ तेना सधिओ नीचे प्रमाणे आपे छे:

२. शिखरिणीनु चरण — कुपुत्रो तो थाशे तदपि न कुमाता कदि थशे

(अ) गणमेळथी वर्ण विभाग: कुपुत्रो, तो थाशे, तदपि, न कुमा, ता कदि, थशे.

(ब) बोलवामा पडता स्वाभाविक विभाग { कुपु, त्रो तो थाशे, तदपि न कुमा, ता, कदि थशे

(एजन. प्र. ३. पृ. १०८)

बन्नेनी सरखामणी सहेली थाय माटे बन्नेने लगात्मक रूपमा एमना ज सधिओमा मूकी बतावु छु:

पहेलो न्यास : लगा, गागा, गागा। लललल गागा, ललगा

बीजो न्यास : लगा, गागागागा । ललललगा, गा, ललगा

बर्वे दरेक सधिना आद्याक्षर पर ताल गणे छे ते प्रमाणे बीजा न्यासना सधिमा पण में ताल बताविल छे. फरक तरत नजरे चडशे.

आवो ज फरक ए ज स्थाने आपेला वसन्ततिलकाना निरूपणमा पण मळी आवे छे. पृ. २७ उपर बर्वे वसन्ततिलकामा नीचे प्रमाणे तालस्थानो दर्शावे छे.

गागालगा ललुलगा ललगा लगागा

पण पृ. १०७ उपर ए छन्दना बोलती वखते पडता स्वाभाविक वर्णविभाग नीचे प्रमाणे आपे छे.

सगीतनो, परमअद्, भुत् शो प्र, ताप

दरेक सधि अल्पविरामथी दर्शाव्यो छे, अने सधिना आद्याक्षर उपर ताल मूकता तेनो लगात्मक तालन्यास नीचे प्रमाणे थाय.

गागालगा ललल्गा, ललगाल गागा

आ संदर्भमा जे ताल आपेला छे तेने हु आगळ सरखामणी माटे मूकेला न्यासोमा य सज्ञायी जणावीश.

दलपतरामना पिंगळमा एव बीजी ज जातनो विसवाद जणाय छे एमना पिंगळनी घणी आवृत्तिओ थई छे तेमा बीजी आवृत्ति सुधी अक्षरमेळ वृत्तोमा तालचिह्न नथी चोथीमा सौथी प्रथम तालचिह्न छे ते हु आगळ कही गयो तेनी छ आवृत्तिओमा प्रस्तावना नथी सातमी आवृत्तिनी जे नकल हु वापरु छु तेमा मुखपृष्ठ नथी पण प्रस्तावना उपर पेनसिलथी १८९० लखेल छे ते हु प्रकाशन साल मानु छु तेमा दलपतराम पोते जणावे छे के आज सुधी तेमणे जे लक्षणो आपला तेमा गणो तोडी नाखेला हता "परतु अभ्यासीने अडचण पडवाथी रा रा केशवलाल हर्षदराय ध्रुव, बी ए नी सलाहथी आ आवृत्तिमा केटलोक फेरफार कर्यो छे . " आ आवृत्तिने पुनःशोधित आवृत्ति गणवी जोईए आमा उपर कह्या प्रमाणे मात्र गणोमा ज सुधारो कर्यो एम नथी पण अक्षरमेळना लक्षणोमा तालस्थानोमा पण फेरफार थया छे आ फेरफारो पण के ह ध्रुवनी सूचना के संमतिथी थया के केम ते जाणवा साधन नथी पण तालचिह्नो बदलाया छे ए आपणा पर्येषण माटे प्रस्तुत छे आ पछी हु १२मी आवृत्तिने महत्त्व आपु छु ए सुधारायेली आवृत्ति नथी पण दलपतरामना जीवन दरमियाननी ए छेल्ली आवृत्ति गणाय ए तरीके ए जोवा जेवी गणाय ते पछी पिंगळनी शोधित आवृत्ति २२मी छे त्या तो स्पष्टपणे सुधारा के ह ध्रुवे ज करेलो छे तेनी प्रस्तावनामा गु व सोसायटी (हाल गुजरात विद्यासभा)ना आसि सेक्रेटरी लखे छे "चालु सालमा पिंगळनी नवी आवृत्ति छपावती वखते समयानुसार योग्य फेरफार करवानु वास्तविक जणायाथी रा व केशवलाल ध्रुवने विनति करता तेओए आखु पिंगळ नवेसरथी तपासी जई घटता फरफार अने सुधारा करी आप्या छे " आना उपरनी पादटीपमा लखेलु छे के "एमणे खास करीने प्रकरण ३ मा प्रभावती तथा पृथ्वी छद उपर पृ ५० ने पृ ५६ मा उपयोगी टिप्पणी उमेरी छे " आ आवृत्तिथी पुस्तकनु नाम 'गुजराती पिंगळ ने बदले 'दलपत पिंगळ' राखवामा आव्यु जे अत्यारे चालु छे अत्यारे आनी ३०मी आवृत्ति वेचाय छे ते उपर जणावी ते २२मीनु पुनर्मुद्रण छे आ २२मी आवृत्तिमा पण अक्षरमेळ छदोना तालोना स्थानोमा थोडा फरफारो थया छ आ फेरफारनु कर्तृत्व के ह ध्रुवनु गणवु के नही ते पण निर्णयपूर्वक कही शकातु नथी ए बनवा जोग छे के एमणे फेरफारो कर्या होय अने ए बाबत गौण गणावाथी प्रस्तावनामा न नोधाई होय खरु तो अक्षरमेळ वृत्तोना तालो पर कदी कोईनु ध्यान ज गयु नथी.

वंशस्थमा पण उपर प्रमाणे ज भारस्थानो आवे छे. पछी उपजाति विशे कंई कहेवानु रहेतु नथी.

आ पछी वसततिलका लईए :

								ग				ग	
								व				व	
ग			के					के				के	
व			२२		व			२२				२२	
१२			१२		के			१२				१२	
७	के		७		२२			७				७	
४	२२	व	४	ग	४			४				४	४
गा	गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा	ल	गा	गा

चपळा :

	२२		२२				२२			
	७		७				७			२२
	४		४				४		७	४
गा	गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा

१२मी आवृत्तिमा दलपतरामना ताल ७मी प्रमाणे छे. के. अने ब.ओ आ वृत्त आपेलु नथी.

रथोद्धता :

आ										
२२		२२		आ						२२
१२		१२		१२			आ	के		१२
७		७		७			२२	१२		७
४		४		४			७	४		४
गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा

आ. अने के ना तफावत विशे आ प्रकरणमा हु आगळ कही गयो छु बंर्वे आ वृत्त आपता नथी

स्वागता :

२२		२२				२२			२२	
७		१२				१२			७	
४		४		४		७			४	४
गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा	गा

केनो मत निश्चित थई शकतो नथी. व.मा आ वृत्त आपेलुं नथी.

मंजुभाषिणी :

```
      के        के                       के   के
      २२        २२               के      २२   २२
      ७         ७           ७    २२      ७    ७
   ल ल गा     ल गा      ल ल ल गा     ल गा ल गा
```

१२, ७ प्रमाणे छे. ४ मां आपेलुं नथी.

कलहंस :

```
      के       के        के
      द        द         द         द
   ललगा      लगा      लललगा     ललगागा
```

बर्वे आ छंद आपता नथी.

प्रमिताक्षरा :

```
      के       के        के        के
      द        द         द         द
   ललगा      लगा      लललगा     ललगा
```

बर्वे आ वृत्त आपता नथी.

चन्द्रवर्त्म :

```
   द द          द          द
   गालगा      लललगा     ललललगा
```

के. अने व.ए आ वृत्त आप्युं नथी. एटले के आमां सरखामणी शक्य नथी.

प्रियंवदा :

```
   व                        व
   २२                       २२              २२
   ४     ४ २२     ४ २२      ४           ४   ४
   ल ल ल गा      ल ल ल गा      ल गा ल गा
```

७ अने १२माना तालस्थानो छापवामा ऊडी गया जणाय छे जे थोडा छे ते उपर प्रमाणे छे. २२मी मा पुष्कळ फरक छे के मा आ वृत्त आपेलु नथी व मा ये ज तालस्थानो छपाया छे पण वधारे हशे ने ऊडी गया हशे एम लागे छे.

द्रुतविलंबित :

के		व				के
२२		के				२२
१२	१२	२२			ब	१२
७	७	७		के	७	७
४	४	४	१२	२२	४	४
ल ल ल गा		ल ल गा		ल ल गा		ल गा

ब मा वे ज तालस्थानो वचाय छे वधारे हशे ने ऊडी गया हशे एम लागे छे.

वियोगिनी के सुन्दरी: सगवड खातर पहेला बे चरणोनो न्यास एक सळंग पंक्तिमा लखु छु

के	के		के	के	के		के	के	
२२	२२	के	२२	२२	२२		२२	२२	२२
४	४	२२४	४	४	४	ध्रु	४	४	४
ललगा	ललगा	लगालगा ।		ललगागा			ललगा	लगालगा	

४, ७, १२ सरखा ज छे २२मा थोडो फेर छे के मा थोडो फेर छे बर्वेए आ वृत्त आप्यु छे पण तेमा ताल दर्शाव्या नथी ध्रु विशे आगळ कही गयो छु

पुष्पिताग्रा :

२२	२२				२२			२२	२२	२२	२२
१२	१२			१२	१२	१२		१२	१२	१२	१२
७	७			७	७	७	२२	७	७	७	७
४	४	४	२२	४	४	४	४७	४	४	४	४४
लललललगा			ल गा		लगा	गा ।	ल ललगा		ललगा	लगा	लगागा

के ए भारस्थानो दर्शाव्या नथी ब ए आ वृत्त आपेलु नथी पृथ्वी हु लेतो नथी कारण के द मा तेनु स्वरूप दोषवाळु छे, अने के ए तेमा भार-

स्थानो आप्या नथी. एटले सरखामणी माटे अवकाश नथी. नर्दटक पण कोईए आपेलु नथी.

शालिनी :

```
२२   २२          २२   २२
७    ७           ७    ७       ७     ७
४    ४           ४    ४       ४     ४ ४
गा गा गा गा ।     गा ल गा       गा ल गा गा
```

७ प्रमाणे १२ छे २२मीमा छेवटना तालो छपाया नथी एम लागे छे केए आ छदनु निरूपण करेलु छे पण भारस्थान बताव्या नथी. बए छद लीधो नथी

वैश्वदेवीमा दलपतरामना भारस्थानो चारेय आवृत्तिमा एक ज छे, पण केमा तेना भारस्थान दर्शाव्या नथी, अने बए ए आपेल नथी एटले एने अही स्थान आपतो नथी

मदाक्रान्ता :

```
 ब             ब                       ब
 २२   २२       २२    २२                 २२   २२           २२
 ४    ४        ४     ४                  ४    ४            ४  ४
 गा गा गा गा ।  ल ल ल ल ल गा ।           गा ल गा   गा ल गा गा
```

७ अने १२, ४ प्रमाणे छे २२मा थोडो फेर छे बे छन्दनु स्वरूप आपे छे पण केमा के आमा भारस्थान दर्शाव्या नथी बना केटलाक ताल-स्थानो ऊडी गया होवानो संभव छे

स्रग्धरा :

```
ब    ब                  ब                                    ब
२२   २२     २२          २२                  २२ २२             २२
७    ७      ७ ७         ७       ७     २२     ७  ७              ७
४    ४      ४ ४         ४       ४     ७      ४  ४     ब        ४ ४
गा गा गा गा  ल गा गा ।   ल ल ल ल ल ल गा ।      गा ल गा   गा ल गा गा
```

१२ना स्थानो ७ प्रमाणे छे केमा भारस्थानो बताव्या नथी बना कोई स्थानो ऊडी गया हशे एम स्वीकारीए तो पण स्थानोमा फरक स्पष्ट छे

मालिनी :

		व				व			व				व	
१२		१२				१२			१२		१२		१२	
४		४			४	४			४		४	व	४	४
ल ल	ल ल	ल ल	गा	गा ।					गा	ल	गा	गा	ल गा	गा

७ना स्थानो मात्र एक ज जगाए १२थी जुदा पडे छे, तेने छापनी भूल हु गणु छु २२, १२ प्रमाणे ज छे केमा भारस्थानो दर्शाव्या नथी.

हरिणी :

	व		व			व						
व	२२	१२	२२			२२						२२
२२	७	७	७	व		७		व	२२	७	व	७
ल ल ल ल ल गा ।	गा	गा	गा	गा ।		ल गा		ल	ल गा		ल	गा

७ प्रमाणे १२ना भारस्थानो छे २२ना जरा जुदा छे केमा भारस्थान आपेला नथी

सुवदना दलपतरामे अने वर्वेए आपेलु नथी एटले लेतो नथी तेम ज प्रहर्षिणी पण दलपरामे अने वर्वेए आपेलु नथी एटले लेतो नथी प्रभावती दलपतरामे आपेलु छे पण तेनु स्वरूप प्रचलित प्रभावती के रुचिराथी भिन्न छे, तेम ए वर्वेए लीधेलु नथी माटे अही लेतो नथी

शिखरिणी

	ग				ग				ग		
ग	व	व			व			व	व		
व	२२	२२			२२			२२	२२		२२
२२	४	४	४	४	४	२२		४	ग	४	४
ल	गा	गा गा	गा	गा ।	ल ल ल ल ल गा गा			ल ल ल गा			

७ अने १२ना भारस्थानो ४ प्रमाणे छे २२ना भिन्न छे ते आप्या छे. उपर बतावेला वना स्थानो अक्षरछदगान पृ ३७मेथी लीधेला छे पृ १०८ उपर ए भिन्न स्थानो बताव्ये छे ते आगळ वही गयो छु ग मझायी ए स्थानो अही फरी बतावु छु बीजा यतिखडनो सातमो गुरु वर्वेए ए स्वतत्र सधि होय तेम छूटो लखेलो छे ते सताल छे के नही एवो प्रश्न थाय पण बर्वे एकला गुरुने पण सधि गणे छे अने दरेक सधिना

आद्याक्षर पर ताल गणे छे -ए दृष्टिए त्या ताल गणवो जोईए केमा स्थानो आप्या नथी

शार्दूलविक्रीडित.

व	व	व	व	व	व		व
७	७	७	७	७	७	७	७
४	४	४	४	४	४	४	४

गागागा ल्लगा ल्गा ललगा । गागागालगा गालगा

१२ अने २२ना भारस्थानो ७ प्रमाणे ज छे केमा स्थानो दर्शाव्या नथी

आटला वृत्तोनी सरखामणी माटे त्रणेय लेखकोना पुस्तकोमाथी सामग्री मळी शके छे के ह घ्रुवमाथी मळती सामग्री जोता एक प्रकारनो असतोष रहे छे सधिना अस्तित्व विशे बोलनार ए ज पहेला छे तेमणे 'पद्यरचनाना प्रकारो'नो लाबो निबध लख्यो छे अने 'ऐतिहासिक आलोचना'नु मोटु पुस्तक लख्यु छे छता तेमणे बधा वृत्तोना सधिओ आप्या नथी 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेख पछी तेमणे क्याई अभिप्राय बदलाव्यो के नही ते स्पष्ट कर्यु नथी रथोद्धताना न्यासमा पूर्व अने अपर वचनमा फेर पडे छे ते में क्याथी बताव्यु छे ते उपरात ए के तेमणे जेटला छदो विशे लख्यु छे ते बधाना सधिओ अने पद्यभार पण तेमणे बताव्या नथी 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमा क्याक सधि अने भार आपे छे क्याक नथी आपता क्याक आपशे एवी अपेक्षा ऊभी करी पाछा नथी आपता। जेम के उपेन्द्रवज्रानु अने इन्द्रवज्रानु दृष्टान्त आपी पछी लखे छे "उपेन्द्रवज्रामा पहेला ने छेल्ला पाच रूप एना ए छे ए बे सधि एक लघुथी मध्यमा जोडाय छे सधि आकारमा मळता छे, पण उच्चारणमा भिन्न छे पूर्वसधिमा पहेलु अने चोथु रूप जोरदार छे" (सा वि २, पृ २७२) अही पहेला पाच रूपोमा पद्यभार दर्शाव्यो नथी साथे साथे कहयु छे के छेल्ला पाच रूप एना ए होवा छता, तेनु उच्चारण जुदु छे, अर्थात् एमा पद्यभार जुदो थाय एवु सूचन कर्यु पण ए उच्चारण कई रीते जुदु छे, अने एमा पद्यभार क्या आवे ए कशु कह्यु नही सत्तर छदोमा प्रसिद्ध शालिनी, प्रहर्षिणी, मालिनी, मदाक्रान्ता, शिखरिणी, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, सुवदना, स्रग्धरा एमा क्याई सधि न बताव्या तेम पद्यभार न दर्शाव्यो अने तेथी घणा ओछा प्रसिद्ध पथ्या, प्रमदा, रमणीयक, जलोद्धतगति, क्षमा, मध्यक्षामामा बन्ने बताव्या त्यारे प्रसिद्ध वृत्तो विशे एमना मनमा सधिना स्वरूप विशे सदेह छे एम ।।५? सरु ता एमा ज सधि-पद्यभारो आपवा जोईए कारण के प्रसिद्ध

अने परिचित होवाथी वाचनार ए तरत समजी शके अने चकासी जुए प्रहर्षिणीनु दृष्टान्त आपी लखे छे "आमा प्रथम खडने छेडे ने बीजा खडने आरभे पण जोरदार रूप छे जोरदार रूप सळग बोलवानी अगवड दूर करवाने यति विवक्षित छे" पण यतिनी बन्ने बाजुना ए बे स्थानो उपरात पद्यभार बीजे क्या छे ते न कह्यु

अने के ह ध्रुवे जलोद्धतगति अने मन्दाक्रान्ता जेवा छदोने अनावृत्तसधि गणी तेमना सधिओनी अने अतर्गत पद्यभारनी चर्चा करी छे, त्या मारे तेमनी साथे सिद्धान्तनो भेद छे, एम अही टूकामा पण नोधवु आवश्यक छे ए छदोनो मेळ मात्रासधिओना छे अने तेमा अनावृत्तसधि धारवा ए भ्रामक छे अन्यत्र आ सबधी म पहेलु छे एटले अही विशेष कहेतो नथी (गत पृ १९३–९४)

अने सामग्री जेवी मळी छे तेवी उपरथी पण एटलु समजाशे के वृत्तोमा पद्यभार के ताल आवे छे एम माननारा आ त्रणेय छदोविदोना पद्यभार बहु थोडा वृत्तोमा सरखा ऊतरे छे इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा इन्द्रवशा वशस्थमा मानी लईए के त्रणेयमा एकवाक्यता छे पण प्रसिद्ध वसततिलकामा दलपत पिंगलनी जुदी जुदी आवृत्तिओमा फरक छे अने ध्रुव अने बर्वेना स्थानोमा पण फरक छे वृत्तोमा बे त्रण स्थान उपर त्रणेयना ताल एक ज स्थाने आवता होय तेथी आ ताल के पद्यभारना मतने समर्थन मळी जतु नथी, कारण के पक्तिमा एक के बे जगाए जरा पण भेद होय तो आखी पक्तिना सधिओमा मळतापणु न आवी शके अर्थात् ए स्थानो सधि ओळखवाने उपयोगी न बनी शके दाखला तरीके, पद्यभारथी सधिओ छूटा पडे छे एम मानी आपणे वसततिलकाना पहेला आठ अक्षरोना ज सधि पाडवा जईए तो

दलपतराम प्रमाणे गागाल गाल ललगा
बर्वे प्रमाणे गागा लगाल ललगा
ग प्रमाणे गागालगा ललगा
के ह ध्रुव प्रमाणे गा गाल गाल ललगा

एम भिन्न भिन्न पडे आ रीते जोता जणाशे के एकवाक्यतानी मडनशक्ति करता भेदनी खडनशक्ति घणी वधारे छे अने अही तो वृत्तोमा एकवाक्यता करता भेदना ज दाखला वधारे छे एटले स्पष्ट थशे के पद्यभार के तालथी सधिओ जुदा पडे छे एवा तर्क पर सधिओ रची शकाय एम नथी अने के ह ध्रुवे सधिओमा ताल प्रथमाक्षर पर आवे के गमे ते अक्षर पर

आवे ए सबंधी संदिग्ध विधानो करेला होवाथी संधिनो पद्यभार साथे कोई प्रकारनो संबंध निश्चित करी शकातो नथी, अने पछी संधिना स्वरूपनिर्णय माटे बीजु कोई अवलंबन तेमना तरफथी मळतु नथी

एटले भारतत्त्वना अवलंबन विना संधिओ निर्णीत करवाने कोई पद्धति छे के नही ते जोवु रह्यु अने एवु कोई तत्त्व मळी आवे तो तेनो प्रयोग भारतत्त्व तरफ दृष्टि राख्या विना करवो जोईए ए देखीतु छे

आवु तत्त्व छे एम हु मानु छु आपणे जोयु के संस्कृत साहित्यमां पद्यरचनानो एकम श्लोक छे श्लोकने अंते लांबो विलंबनात्मक तेम ज विरामात्मक यति छे श्लोकार्धनो अंत पण एवो ज छे, जो के त्यां विलंबन तथा विराम श्लोकान्त करता जरा टूंको होय एकी चरणने अंते विराम नथी मात्र विलंबन छे एम हु मानु छु अने मध्ययतिने स्थाने तेथी पण टूकु विलंबन छे एम हु मानु छु ते हु आगळ कही गयो आ रीते अही सुधी श्लोकना पृथक्करणनु तत्त्व पठनमा भिन्नभिन्न स्थाने आवतु विलंबन ठरे छे तो एथी आगळ पृथक्करण करवामा पण ए ज तत्त्वनु अवलंबन करी शकाय अर्थात् पठनमा स्वाभाविक रीते विलंबन आववाथी जे अक्षर-जूथो छूटा पडे छे ते ज संधिओ हवे आ विलंबन गुरुना उच्चारणथी ज शक्य बने छे अत्यार सुधीना श्लोकना पृथक्करणमा दरेक अंग के उपांगने अंते आपणे गुरु ज आवतो जोयो छे तो आ संधिओमा पण अंते गुरु आवे एम स्वाभाविक रीते ज निष्पन्न थाय छे अर्थात् संधिने अंते गुरु ज होय पठनमा अक्षरजूथो स्वाभाविक रीते थोडा विलंबनथी जुदा पडे छे अने तेने अंते गुरु होय एटला ओळखाणथी आपणे हवे संधिओना स्वरूप निर्णयनो प्रयत्न करी जोईए एम करवाथी मळी आवता संधिओथी वृत्तोना मेळ उपर कईक पण प्रकाश पडे तो आ संधिओने वृत्तोना साचा अवयवो गणवा जोईए

उपरना नियमथी आपणे संधिओनु अन्वेषण शरू करीए आ नियम प्रमाणे केवळ लघुनो कोई संधि होई शके नही, अने दरेक संधिने अंते गुरु होय ज आटलाथी ज केटलाक वृत्तोना संधिओ बहु सहेलाईथी पडी शकशे समजवानी खातर हु सौथी पहेलो द्रुतविलंबित लईश तेना न्यासमाथी संधिओ छूटा पाडवा सहेला छे आपणा नियमने अनुसरता तेमा ल्गा लल्गा ल्लल्गा एवा त्रण संधिओ तरत जणाय छे प्रमिताक्षरामा ए ज संधिओ जरा जुदे क्रमे जणाशे, अर्थात् संधिओ ए ज छे आ उपरथी संधिओमाथी वृत्तो केम रचाय छे तेनो कईक ख्याल आवशे आगी पाछो

हरिणीनो उत्तर खड मूकी जोईशु तो जणाशे, के ते उपरना ज सधिओमाथी बनेलो छे: लगा ललगा लगा आ सधिओ साथे नर्दटकनो न्यास सरखावी जोईशु तो जणाशे के प्रथम सधि ललललगा सिवाय तेमा उपरना ज सघिओ आवे छे ए ज सधि चन्द्रवर्त्ममा अते आवे छे, जो के ए वृत्तनो मेळ हु सुदर नथी गणतो आगळ जई जोईशु तो प्रहर्षिणीना उत्तर खडमा पण ए छे ललललगा लगा लगागा अही उपसहार लगा लगागाथी थाय छे. उपर आवी गयेल लगा क्वचित ज अते वपराय छे—मान द्रुतविलवित हरिणी ए बेमा ज वपरायो छे वाकी तो ए घणी जगाए मध्यमा के आदिमा आवे छे अने विशेष ए के ते घणी जगाए पाच के वधारे मात्रा-वाळा सधिनो अग्रसर बने छे हरिणीमा लगा पछी ललगा चार मात्रानो आवे छे पण मजुभाषिणी कलहस, प्रमिताक्षरा शार्दूलविक्रीडित पृथ्वी नर्दटक बधामा ते ललगानो अग्रसर बने छे अने माल्यभारा पुष्पिताग्रा औपच्छन्दसिक प्रहर्षिणी एमा ए लगागानो अग्रसर बने छे. लगा आगळ कह्यु तेम उपसहारमा ओछो ज वपराय छे पण तेनु अभ्यस्त रूप लगालगा उपसहारमा सारी रीते आवे छे इन्द्रवशा, वशस्थ, रथोद्धता, प्रियवदा, वियोगिनी, अपरवक्त्र, रुचिरा अने गणीए तो अनष्टुभनो समपाद एमा लगालगा अते आवे छे लगानी पेठे ज ललगा पण अते ओछु ज वपराय छे चपलामा ते अते आवे छे पण चपलानो मेळ सुन्दर जणातो नथी, तेने वसततिलकानो अत्य सधि लगागा कापीने बनाव्यो लागे छे, अने एने जाणे सारा उपसहारनी खामी रही जाय छे ते सिवाय ते प्रमिता-क्षरामा अने नर्दटकमा आवे छे पण नर्दटकमा ललगानु अभ्यस्त रूप आवे छे एम कही शकाय त्या ललगा बे वार आवे छे उपर आवी गयो ते लगागा सधि उपसहारमा सारो वपराय छे इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसततिलका, माल्य-भारा, पुष्पिताग्रा, औपच्छन्दसिक, प्रहर्षिणी ए बधामा अते लगागा छे आ पछी रथोद्धता लईए तेमा आगळ आवी गयेला ललगा अने लगालगा आवे छे ते बाद करता बाकी रहेतो गालगा स्वीकारवानो रहे छे हवे पृथ्वी लईए तेमा लगा ललगा लगा ललगा आटला सधिओ पडता मुश्की रही मुश्केली पडती नथी पछी लगागालगा आवे छे तेमा सधि कई रीते पाडवा? लगा गालगा एम के लगागा लगा एम? एक साथे बे गुरु आववाथी आ मुश्केली ऊभी थई हु पठन उपरथी तेम ज अत्यार सुधीना सधिओना व्यापारो जोई लगा गालगा एम सधि छूटा पाडु लगागा लगा एम करवा जता पडतो लगागा पण अलबत स्वीकारेलो सधि छे पण पछी रहेतो लगा उपसहारार्थे बहु वपरातो नथी अने लगा गालगा एम व्यवस्था

करता लगा एम पंचमात्र संधिनो प्रसार बने छे अने गालगा स्थाने आपणे एक जगाए जोयु छे अने अन्यत्र पण जोईशु अने ते अहीं पण जणाय छे. वळी पृथ्वीनी समग्र रचना जोतां तेमां ३+५ मात्राना संधिओना आवर्तनो देखाय छे: लगा ललगा लगा ललगा; तो आ पण जरा जुदा स्वरूपनु ३+५ मात्रानु एक आवर्तन थई रहे छे:—लगा गालगा एटले पृथ्वीना संधिओ ए प्रमाणे ज समग्र योजनामां बेसता जणाय छे. वळी गालगा अन्यत्र पण एक जगाए आवे नजरायो छे,—क्षमामां—जोके ए बहु वपरायेलु वृत्त नथी. (जुओ पृ. १९४) त्यां पण उत्तर खंडमां गागागागालगा एम छे. आने जो गालगानु अभ्यस्त रूप न गणीए तो गालगागा लगा एम संधिओ करवा पडे छे, अने लगा उपसंहारक्षम संधि नथी. एक बीजी रीते पण गालगा स्वीकारवानी आवश्यकता छे भरतनाट्यशास्त्रमां पुट अने शरभा नामना बे वृत्तो छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे छे:

पुट : ललललललगागा । गालगागा
शरभा : गागागागा । ललललगा । गालगागा[४]
भ ना. शा चो २, १५, ७८-७९ तथा ९१-९२.

आ बन्ने वृत्तोमां अंत्यखंडमां मात्र गालगागा आवे छे एटले एने ज संधि तरीके स्वीकारी लेवो रहे छे एमांना गालगाने संधि गणी ते पछी गाने छूटो राखवो अथवा ते एक ज अक्षरनो संधि गणवो ए उपपन्न नथी. कारण के जो एक ज अक्षरनो संधि गणवा आपणे तैयार होईए तो पछी ल अने गा ए बेने ज संधि गणी लई पछी कशु करवानु रहेतु नथी अर्थात् संधिओ ठीक ठीक मोटा होय तो ज तेने स्वीकारवानो अर्थ छे नहितर त्र्यक्षर गण तो पिंगलना समयथी मोजूद हतो ज! अने वळी बीजा संधिओ साथे एक ज अक्षरनो संधि गणवानी अनिवार्य आवश्यकता मने क्यांई जणाती नथी एटले हु गालगागाने अहीं संधि गणु छु अने एक वार ए स्वीकृत संधि बनतां शालिनीगोत्रमां अंत्यखंडमां आ गालगागानो पुरोगामी गालगा स्वीकारवो ज पडे छे ए रीते गालगानी अनेक रीते उपपत्ति थई शके छे एटले पृथ्वीमां लगा ललगा लगा ललगा लगा गालगा एम संधिओ पडतां गालगा पृथ्वीमां अंते आवे छे तेम शार्दूलविक्रीडितमां

४. आ छन्दनो प्रयोग 'सौन्दरनंद'मां छे ते नोंधीने तेनु नाम पिंगळोमां उपलभ्य नथी एम कही के ह ध्रुव ए श्लोकमांनो 'अप्रमत्त' शब्द पकडी छन्दनु नाम 'अप्रमत्ता' पाडे छे (जुओ प. अ. आ. पृ २११) भरतनाट्यशास्त्रमां ते शरभा नामथी छे ते तरफ तेमनु ध्यान नहीं गयु होय एम जणाय छे

पण अते आवे छे. तेनो उत्तरखड गागालगागालगा छे अने उपर बताव्या प्रमाणे न वछोडीए तो गागा लगागा लगा एम सधिओ वरवा पडे छे अने लगा अतने माटे योग्य नथी एटले गागालगा गालगा एम स्वीकारवु योग्य छे अने वोलवामा पण ए ज सधिओ वरताय छे अही जेम गागालगा उत्तरखडनो आद्य सधि छे तेम ज ते वसततिलकामा पण आद्य सधि छे गालगाने पृथ्वीमा आपणे चरणान्ते आवनो जोयो, तेम तेने मध्यमा आवतो पण जोयो, शालिनीगोत्रना उत्तरखडमा, तेम ज तेने आदिमा आवतो पण जोयो, रथोद्धता-स्वागतानी जोडीमा आ जोडकामा गालगा लललगा ए बे सधिओ समान छे पहेलामा अत्यसधि लगालगा आपणे जोई गया छीअे, तेनी जगाए बीजामा आवतो ललगागा स्वीकारवो बाकी रहे छे कलहसमा पण ते अत्यसधि बने छे वियोगिनी माल्याभारा अने औपच्छन्दसिकनी सम पक्तिमा पण ते आवे छे—जो के मात्राविभागमा. हवे अयतिक वृत्तोमा मात्र इन्द्रवज्रा कुटुब जोवु रहचु इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्राना अत्य बे सधिओ लगा लगागा तो तरत परखाई आवे छे. वसततिलकामा पण अते ए बे सधिओ ज आवे छे तेम ज इन्द्रवशा वशस्थमा अते ललगा लगालगा आवे छे प्रश्न आ पहेलाना सधिओनो रहचो तेमा इन्द्रवज्रा अने इन्द्रवशाना आदिना गागालगागाने केम छोडवो ए ज प्रश्न छे अलबत गागा अने लगागा करी शकाय एम छे पण हु गागालगागाने एक ज सधि गणवो वधारे अनुकूल गणु छु एव तो हु एने ज प्राचीन, पचाक्षरे यतिवाळा, त्रैष्टुभनु बीज गणु छु (गत पृ ६०) पण बीजी रीते जोता आ सधिमाथी अन्त्याक्षर खडित थता तेने वसततिलकानो आद्य सधि गागालगा बतावी शकाय अने ए गागालगानो आद्य अक्षर खडित थता निष्पन्न थता गालगाने रथोद्धता-स्वागतानो आद्य सधि बतावी शकाय, माटे हु एने ए ज रूपमा राखवा इच्छु छु गागालगागा स्वीकार्या पछी उपेन्द्रवज्रा अने वशस्थना सधिओ लगा लगागा थशे, ज्या वळी लगा'-पचमात्रक सधिनो अग्रसर बने छे वसततिलकाना सधिओ आने परिणामे गागालगा ललगा ललगा लगागा थशे

हवे सयतिक वृत्तो जोई जईए तेमा आपणे जोयु के शालिनी कुटुबनो अत्य यतिखड गालगा गालगागानो बनेलो छे शालिनीना पूर्वखड गागागागाने एक सधि गणवो के गागा गागा एम बे गणवा? अलबत बे गणवा होय तो गणी शकाय, दलपतराम अने बर्वे तेने बे गणता जणाय छे, पण गागाने ए रीते स्वतत्र गणता छता, हु तेना अभ्यस्त रूप गागागागाने एक सधि तरीके स्वीकारु—लगालगानी पेठे एम करवानु कारण ए के ते आखा शालिनी

गोत्रमा आदिमा ए ज रूपे आवे छे. स्रग्धरामा पहेला सात अक्षर पछी यति आवे छे त्या स्पष्ट रूपे गागागागा अने लगागा बे संधिओ भेगा थया देखाय छे. शिखरिणीमा पण पूर्वखडमा लगा अने गागागागा एम सधिओ करवा हु योग्य गणु छु. लगा एवी रीते मोटा सधिनो अग्रसर बनवा योग्य छे. ए पछी गुरुओमा आपणे क्याई चार गुरुथी मोटो सधि गणवानी जरूर पडती नथी. लघुओमा अयतिक छदोमा आपणे हजी सुधी सौथी लाबो लललगा नर्दटकमा जोयो. एथी वधारे लघुवाळा अयतिकमा आवता नथी, जो के आ सयतिक प्रहर्षिणीमा पण आवे छे आथी वधारे लघुनी संख्याना सयतिकमा ज आवे छे,—मदाक्रान्ता अने हरिणीमा ललललललगा, स्रग्धरामा लललललललगा, मालिनीमा लललललललगागा शिखरिणीमा यति पछीना खंडना सधिओ हु लललललगागा अने लललगा एम करु. हु आगळ[५] कही गयो तेम पठनमा जेम उपर प्रमाणे अल्प विलंबन बे गुरु पछी थाय छे तेम पहेला गुरु पछी पण कोई करे छे, ए पठनने अनुसरता सधिओ ललललललगा गालललगा करवा पडे पण गालललगा बीजे क्याई वपरायेल नथी, त्यारे लललगा आपणने अनेक जगाए मळे छे. खरु तो गालगामा बे गुरु वच्चे एक लघु आवे छे, ते करता वधारे लघुओ वचमा आवी कोई लघुगुरुनो सधि बनतो नथी गाललगा क्याई वपरातो नथी,—हा, वंशपत्रपतितमा छे, पण एने हु सुन्दर छद नथी गणतो, एने हु नर्दटकनी ओछी सुन्दर विकृति गणु छु अने ए गोत्रना छदोनी आद्य चार मात्राने हु मात्रागर्भ गणु छु एटले गाललगा स्वीकारतो नथी आ ज रीते गाललगा वैतालीयना मात्राविभागमा पण आवे छे (जुओ गत पृ. १२९–३०). चार गुरुथी टूको संधि त्रण गुरुनो, ते प्रहर्षिणीना पूर्वखडमा यति पूर्वे एकलो ज आवे छे, अने शार्दूलविक्रीडितना आदिमा पण आवे छे, जोके त्या तेनी पछी यति नथी पडती. आ पछी हु सुवदना लउ : तेना पहेला बे यति-

५. आने नरसिंहरावनु समर्थन छे. शिखरिणीना उत्तरखडमा तेओ नीचे प्रमाणे ताल नाखी बतावे छे ('नूपुरझंकार', आ. २, पृ. १६३ धुवड काव्य उपरनी टीकामा)

घनतिमिरमा तारक तरे

अर्थात् लललललगागा लललगा

अही स्पष्ट रीते तालथी सधिओ छूटा थया छे.—बर्वेनी पेठे. बर्वे पण अही छेल्लो सधि लललगा गणे छे.

खडो स्रग्धराना ज छे अत्य खडमा गागालललगा आवे छे आने गागा लललगा एम हु विभजवानु पसद करु, वच्चे आपणने परिचित छे छए अक्षरनो एक सधि न स्वीकारु कारण के ते बीजे क्याई देखातो नथी एने स्वीकारवो, ए तर्कनी परिभाषामा कहु तो, गौरवदोष छे . बाकीमा वैश्वदेवी रह्यो जेनो उत्तरखड शालिनीनो छे, अने पूर्वखडमा पाच गुरुओ छे ते शालिनी जेवो सवादी नथी, छता वपराय छे, अने तेना सधिओ गागागा गागा एम करवा योग्य जणाय छे जोके एक ज वृत्त आवु होवाथी बीजा वृत्तोनी सरखामणी करी सधि नक्की करी शकाय एम नथी, गागा गागागा एम पण करी शकाय

आ रीते निश्चत थयेला सधिओने एकत्र करी जोता अयतिक वृत्तोमा नीचेना सधिओ मळे छे लगा, (द्विर्भावथी) लगाल्गा, ललगा, लल्ल्गा, लललगा, लगागा, गाल्गा, ललगागा, गागा, गागालगागा, गागाल्गा आमाना घणा सयतिकमा पण वपराय छे पण आ सिवायना नीचे दर्शावेला मात्र सयतिकमा ज वपराय छे गागागा, गागागागा, लल-लल्गा, ल्लल्लल्गा, लललललगागा, लल्ल्ल्ल्गागा एटले सयतिक छदोनो बध सधिनी दृष्टिए पण अयतिकथी जुदो पडे छे

आ सधिओ छदना घटक होवाथी सामान्य रीते एम कही शकाय के जो वृत्तनी पक्ति अधूरी मूकवी होय, तो ते कोई पण एक सधि पूरो थये ज शोभे तेवी रीते अधूरी मूकवी जोईए घणा दाखलामा मे एम ज थयेलु जोयु छे

आ प्रमाणे स्वाभाविक पठनमा आवता विलबथी तत्रशुद्ध सधिओ पाडी शकीए छीए ए सधिओ अनेक वृत्तोमा वपरायेला मळी आवे छे अने तेथी वृत्तोना बधारणमा रहेला समान असमान अशो वधारे स्फुट थाय छे हजी आ सधिओनी विशेष उपपत्ति आपणे आ पछी आवता नवा छन्दोना प्रकरणमा जोईशु

हवे हु अर्वाचीन छन्दशास्त्रीओए चर्चेल पद्यभार के तालनो प्रश्न हाथमा लउ छु आ सबधी मारे प्रथम ए कहेवानु के उपरना सधिओ स्वी-कारी लीधा पछी तालना कोई विशेष तत्त्वने स्वीकारवानी जरूर रहेती नथी अमुक जातनो भार के जोर आ सधिओने एकबीजाथी भिन्न करी बोलवामा आवश्यक बने छ दाखला तरीके एक सधि पछी बीजो सधि शरू थाय त्यारे ए नवो सधि शरू करवाने माटे वागयन्त्रने नवा प्रयत्न करवो पडे छे अने ते ज पद्यभार के ताल जेवो समजाय छे तेम ज सधिने अते जे विलबन आवे छे ए विलबननो प्रयत्न कदाचित् ताल के पद्यभार-

रूपे प्रतीत थाय छे. वळी वहे छे के दरेक सधिना आदिमा ताल आवे छे, ते मैं उपर कह्यु तेम नवा सधिना उच्चारणना प्रारभनो विशिष्ट प्रयत्न छे नरसिंहरावे पण खडशिखरिणीनी चर्चामा जे ताल के भार मूकी बताव्यो छे ते सधिना प्रारभना उच्चारणनो ज प्रयत्न छे वर्वेए जे पृथ्वीना सधिओ उपर ताल मूकी बताव्या छे ते बधा मैं बतावेला सधिओना आद्याक्षर उपर ज पडे छे:

दिशा नवपरे जसा । जसयला ग पृथ्वी धरो

तेथी ऊलटी रीते मजुभाषिणी अने प्रमिताक्षरामा दलपतरामे अने के ह. ध्रुवे जे ताल के थडभार बताव्यो छे ते दरेक सधिने अते आवता गुरुना विलबनना उच्चारणना प्रयत्ननो छे ए बन्ने पिंगलकारोए द्रुतविलबितमा जे तालो बताव्या छे ते उपरनी बन्ने पद्धतिना मिश्रणना छे. पण आ उपरात *तालस्थान घणी वार गावानी पद्धतिना आकस्मा भारथी आभासित थाय छे.* वसततिलकामा आ ज बे पिंगलकारोए आपेला तालो गावानी पद्धतिने आभारी छे मे पण पुराणीओने आ रीते भार मूकी वसततिलका गाता साभळ्या छे हजी चडीपाठ ए ज रीते गवाय छे पण आ परपराथी चाली आवती गावानी पद्धति में आगळ कह्यु तेम शास्त्रीय गणी शकाय एवी नथी (गत पृ ११८–१९) घणा तालस्थानो, भिन्नभिन्न गावानी पद्धतिने ज आभारी छे एवी जगाए केवळ लयात्मक पठन, वृत्तोनी सरखामणी, नवा वृत्तोना बधो ए बधा उपरथी ज सधिओ नक्की करवा वधारे उचित छे. वळी क्याक सधि लाबो होय तो बोलवानी सगवड खातर अमुक अमुक सख्याना अक्षरोए नवा नवा प्रयत्नथी बोलवाथी पण थडभार जणाय जेम के हरिणीमा अने मदाक्रान्तामा बन्नेमा लघुबहुल सधि त्रण त्रण अक्षरने डगले बोलाय छे, अने तेथी त्या त्या भार जणाय छे ललल ललगा आवी रीते. स्रग्धरामा एवो ज लघुबहुल सधि लल लल ललगा एम बोलाय छे. शिखरिणीनो यति पछीनो लघुबहुल सधि लल ललल गागा एम बोलाय छे. पण आमा अगत टेव काम करती होय छे स्रग्धरानो ए सधि कोई ललल ललगा एम पण बोले वळी क्याक हु मानु छु के अमुक छन्दना नमूना तरीके अमुक श्लोकना सस्कारो मनमा कोतराई गया होय तो ए श्लोकना शब्दो अने अर्थभारो बन्ने, छन्दना सधिओनु स्वरूप अने थडभारो घडी काढे अने पछी ए ज ए व्यक्ति माटे छन्दनु स्वरूप बनी रहे अलबत आ साबीत

करवु मुश्केल छे पण आवा अनेक कारणो पद्यभार घडवामा प्रवृत्त थतां होवानो सभव छे, अने तेथी अगत कारणो के अमुक श्लोकना सस्कारोथी अलग थई आ सधिओना स्वरूपनो विचार करवो जोईए.

अही सधिओथी आपणे जेने मुख्य वृत्तो तरीके स्वीकार्यां छे तेना स्वरूप उपर प्रकाश पडे छे ए स्वरूपो ए सधिनी दृष्टिए जोता वधारे स्फुट थाय छे, वधारे चोकसाईथी कहीए तो सधिओथी वृत्तोनु स्वरूप अने सधिओ एक साथे स्फुट थाय छे. पण एथी पण वधारे स्फुटता नवा छन्द केम घडाय छे ए जोता प्रगट थशे अने आपणे आ पछीना प्रकरणमा ए ज विषय लईए छीए.

परिशिष्ट १

वृत्तोना स्वरूपनिरूपणनी केटलीक रीतिओ

'छन्द सारसग्रह'मा पिंगलनी परपरा प्रमाणे प्रथम छन्दोना स्वरूपो समजाव्या छे ए पूरु थता 'चतुर्थोऽश.' शरू थाय छे तेमा कर्ता चन्द्रमोहन घोष जुदी रीते छन्दोना स्वरूपो दर्शावे छे (अथ तावच्छन्दासि पुनरन्यथा श्रेणीविभागेन समासतो व्याख्यायन्ते।). आमा, हु जेने आवृत्तसधि अक्षरमेळ रचनाओ कहु छु तेनु निरूपण शास्त्रीय थयु छे पण कर्ता ज्या अनावृत्तसधि अक्षरमेळने स्पर्शे छे त्या घणी वार अशास्त्रीय युक्तिओमा सरी पड छे जेम के "स्वागतैकादशाक्षरा, दोधकस्य तृतीयचतुर्थवर्णयोरन्योन्यविनिमयेन यथा"— अर्थात् दोधकना त्रीजा चोथा वर्णोनो विनिमय करवाथी स्वागता थाय हु न्यासथी बतावु —

दोधक · गालल गालल गालल गागा
(३ ४)

स्वागता गालगा ललगा लल गागा
(३ ४)

आ हकीकत तरीके साचु छे, कदाच शीखववानी युक्ति तरीके थोडे सुधी सफळ थाय, पण मेळनी दृष्टिए आ युक्ति भ्रम करनारी छे दोधक अने स्वागता वच्चे कशो ज सबध नथी ते ज प्रमाणे ए लेखक स्वागता अने रथोद्धतानो भेद नवमा दसमा वर्णना विनियमथी बतावे छे त्या ए पद्धति ओछी भ्रामक छे जोके खरी रीते तो एम ज कहेवु जोईए के बन्नेना पहेला बे सधिओ एक ज छे छेल्ला सधिओमा स्वागतानो ललगागा छे, रथोद्धतानो लगालगा छे. (छ. सा. स. पृ ११७)

बृ. १५

तेवी ज रीते मोटकना आठमा अने नवमा वर्णना विनिमयथी द्रुतविलंबित थाय छे एम कहे छे (एजन).

मोटक : गालल गालल गालल गालगा   ब. प. प. २,९३

द्रुतविलंबित : ललगाल गलगा ललगा लगा

अहीं पण बन्ने छन्दोना मेळ वच्चे कशो संबंध नथी, जोके एक कृत्री तरीके के कौतुक तरीके थाय मानी छे. एवी ज रीते आगळ कहे छे के तोटकना पांचमा छठ्ठा वर्णना विनिमयथी प्रमिताक्षरा बने (एजन पृ. १२०).

५ ६
तोटक : ललगा ललगा ललगा ललगा

५ ६
प्रमिताक्षर : ललगा लगा ललगा ललगा

अहीं पण उपरनो ज वांधो छे. बन्ने वच्चे संबंध नथी. ते पछी मात्रा सम-मेळोमां ते बे लघु स्थाने गुरु अने एवी उलटी परिवृत्ति बतावे छे ते बराबर छे, कारण के ते मात्रामेळ वृत्तो छे. आ मात्रामेळनी बहार आ पद्धति अशास्त्रीय छे.

रुचिरा विशे कहे छे के चार अक्षरना पंचचामरना छठ्ठा स्थानना गुरुने बदले बे लघु मूकवाथी रुचिरा बने छे (एजन पृ १२१).

६
पंचचामर : लगा लगा लगा लगा लगा लगा

रुचिरा : लगालगा ललललगा लगालगा

ते ज प्रमाणे रुचिराना बीजा साथे त्रीजानी अने चोथा साथे पांचमानी अदलाबदलीथी मंजुभाषिणी (एजन पृ. १२२).

१ ३४ ५
रुचिरा : लगालगा ललललगा लगालगा

१ ३ ४ ५
मंजुभाषिणी : ललगा लगा ललगा लगालगा

अहीं पण मेळनी दृष्टिए बन्ने भिन्न छे. बन्नेना यतिओ पण छेल्ला सिवाय भिन्न छे. एटले सरखामणी मात्र आंकिक छे, मुद्दा विनानी छे.

सद्‌गत के. ह. ध्रुवे पण कंईक आवी मेळनी पद्धति अख्त्यार करी छे. 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमां तेओ प्रथम अगियार अक्षरना छंदो ले छे. "अगियार रूपना छंदोमां प्रसिद्ध जोडकुं इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रानुं छे रचना उपर दृष्टि राखतां उपेन्द्रवज्रा तेनी प्रकृति छे. उदाहरण बन्नेना नीचे आपिये छीए. (आ पछी बन्नेना उदाहरणो आपे छे. पछी लखे छे:) उपेन्द्रवज्रामां पहेला अने छेल्ला पांच रूप एना ए छे ए बे सधि एक लघुथी जोडाय छे.

सधि आकारमा मळता छे, पण उच्चारणमा भिन्न छे पूर्वसधिमा पहेलु अने चोथु रूप जोरदार छे" (सा वि २ पृ २७१–२) हवे उपेन्द्रवज्रा विशे तेमणे कह्यु ते साचु छे हु न्यासथी दर्शावु

उपेन्द्रवज्रा ल्गाल्गागा ल ल्गालगागा ।

अही पहेला पाच रूपो, पछी एक लघु आवी, एना ए क्रमे फरी आवे छे ए साचु छे पण एने मेळ साथे कशो सबध नथी प्रथम तो खरी रीते जोता इन्द्रवज्रा ए प्रकृति छे अने उपेन्द्रवज्रा ए एनी विकृति छे नाम पण ए ज सूचवे छे पछीथी एमणे ए वात एमना व्याख्यानोमा सुधारी पण छे तेओ कहे छे "त्रिष्टुभ शाखामा पहेलो प्रकटे इन्द्रवज्रा, पछी उपेन्द्रवज्रा अने ते पछी तेमना चरणोना मिश्रणथी बनेला उपजाति छद" (प ऐ आ पृ १३१) एटले प्रकृति इन्द्रवज्रा ठरी अने एने प्रकृति लईए तो पछी पहेला पाच रूपो अने छेल्ला पाच रूपो सरखा छे ए दृष्टि ज असभव बने छे पण एथी पण आगळ जई मारे ए कहेवानु के आ रीते सरखापणु शोधवु ए छन्दोनो मेळ शोधवानी साची दिशा नथी एम कहीने पण एमने छेवटे तो एम ज कहेवु पडचु छे के 'सधि आकारमा सरखा छे पण उच्चारणमा भिन्न छे' जो उच्चारणमा भिन्न होय तो पछी ए आकारमा सरखा जणाता जूथने सरखा सधि शा माटे मानवा? एटलु ज नही, ए केवळ बाह्य आकार-नु सरखापणु नोधवु ए पण अप्रस्तुत नथी? आ पद्धति तेमना निरूपणमा कोई अकस्मात नथी वसन्ततिलकाना निरूपणमा पाछी ए ज पद्धति आवे छे एनु दृष्टात आपी तेओ कहे छे 'एनी विलक्षणता एनी रचनामा रहेली छे आरभमा जे छ रूप छ ते ज ऊलटा क्रमे अतमा छे आरभना समूहमा बीजु अने चोथु न छठ्ठु रूप जोरदार छ अतना समूहमा छेडेथी विलोम गणता बीजु ने छठ्ठु रूप जोरदार छ" (एजन पृ ७७) हु एमनु वक्तव्य समजाय ए रीते नीचे न्यास आपु

गा गा ल गा ल ल्‌ ल्गा ल्‌ ल गा ल गा गा

हवे आ वात साची छे एथी काईन काव्यमा यमकोनी के लाम विलोम काव्यनी रमतो रमवी होय तो रमी शकाय पण ते तो मात्र अकस्मात छे काव्यना मेळनी साथे ए वातने सबध नथी आ तो १७ अने ७१ना फरक आवडाना व्यत्ययासथी समजाववा बराबर थयु आम कहेवाथी सधि कया कया छे, तेमा कया कया पद्यभार आव्यो अने सधिओने पद्यभार साथे कई सबध छे के नही ए वात ऊल्टी ढकाई जाय छे

पटवर्धन छन्दोनु स्वरूप आपता आवर्तनीने भिन्न गणे छे त्या, में कहेल आवृत्तसंधि ज तेने अभिप्रेत छे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळने ते अनावर्तनी कहे छे "ज्या वृत्तातील आन्दोलन अक्षररचने वरून सहज प्रतीत होत नाही, ज्याना तालात बसवायला थोडे फार परिश्रम पडतात, परतु ज्यापैकी अनेक वृत्ताच्या चाली परम्परया चालत आल्याकारणाने सुकर वाटतात अशा वृत्ताना अनावर्तनी म्हटले आहे" अर्थात् जे वृत्तोमा आदोलन अक्षररचनामाथी राहेलाईथी प्रतीत थतु नथी, जेने तालमा बेसाडवामा थोडो घणो परिश्रम पडे छे, परतु जेमाना अनेक वृत्तोनी चाल परपराथी आवती होवाने कारणे सुकर जणाय छे ते वृत्तोने अनावर्तनी कह्या छे पण आ पछी ते कहे छे: "कित्येक वृत्तें अशी आहेत की ती सहज (क्वचित् एखादें दुसरे अक्षर प्लुत उच्चारुन) आवर्तनी होऊ शकतात; परतु त्याचा परपराप्राप्त चाली पहाता ती अनावर्तनी वाटतात त्याचें विवेचन आधी अनावर्तनी वृत्ताच्या वर्गात केलें असून पुढे आवर्तनी वृत्ताच्या वर्गात त्याचा पुन्हा उल्लेख केला आहे उदाहरणार्थ, रथोद्धता नि स्वागता याची रूढ मोडणी अनुक्रमें (–⏑–⏑⏑⏑–।⏑–⏑–) आणि (–⏑–⏑⏑⏑–।⏑⏑––) अशी आहे, म्हणून त्याचें विवेचन अनावर्तनी वृत्तात केले आहे परतु त्याची मोडणी अनुक्रमें (–⏑–⏑⏑⏑। –⏑–⏑–) आणि (–⏑–⏑⏑⏑।–⏑⏑––) अशी घेतल्यास ती पद्यावर्तनी होतात म्हणून त्याचा उल्लेख विद्युन्माला वर्गातहि पुन्हा केला आहे" अर्थात् केटलाक वृत्तो एवा छे के ते सहेजे (क्यारेक एक के बीजो अक्षर प्लुत उच्चारवाथी) आवर्तनी थई शके छे, परतु तेनी परपराप्राप्त चाल जोता ते अनावर्तनी जणाय छे तेनु विवेचन आगळ अनावर्तनी वृत्तोमा करेलु होई पछी आवर्तनी वृत्तोना वर्गमा तेनो फरी उल्लेख करेलो छे उदाहरणार्थ, रथोद्धता अने स्वागता जेनी रूढ मोडणी के न्यास [गालगा ललल्गा । लगालगा] अने [गालगालल्लगा । ललगागा] एम छे एटले तेनु विवेचन अनावर्तनी वृत्तमा कर्यु छे परतु तेनी मोडणी अनुक्रमे [गालगालल्ल। गालगाल्गा] अने [गाल्गाल्लल । गाल्ल गागा] एवी लेता ते पद्यावर्तनी (=अष्टमात्रक) थाय छे तेथी तेनो उल्लेख विद्युन्माला वर्गमा फरी कर्यो छे ('छन्दोरचना' पृ ९५–९६). अलबत्त तेओ अही ज आगळ जता स्वीकारे छे के मोडणी भिन्न थई एटले छन्द भिन्न थयो समजो लेवो जोईए अने तेथी एवी रीते अनावर्तनी वृत्तने आवर्तनीमा गणता तेमणे मळी आव्यु त्या बीजु नाम आपेलु छे जेम के अनावर्तनी पृथ्वीने तेमणे आवर्तनी विलबितगति कहेलो छे (एजन) आम करती वखते तेमणे आवर्तनी वृत्तमा ताल मळवो जोईतो हतो एम हु मानु छु पण तेनो आग्रह हु न करी शकु, कारण के तेमणे जाति

छदोमा ताल क्याय दर्शाव्यो नथी पण आम करवा पहेला एक प्रश्न विचारी लेवो जोईए के ए वृत्तनी आवर्तनी अने अनावर्तनी मोडणीमाथी कई वधारे सुन्दर छे, अने जो अनावर्तनी वधारे सुन्दर होय तो पछी तेनु आवर्तनी रूप आपी निरर्थक द्विधा न करवी जोईए. रथोद्धताना अनावर्तनी उच्चारण के पठन करता तेनु आवर्तनी उच्चारण (गालगालगल गालगालगा) कोई कहेशे नहीं के वधारे सुन्दर छे. पृथ्वीनु पण तेम ज छे आ तो ठीक पण क्याक क्याक तो अनावर्तनी वृत्तमा प्लुतिनी मात्रा उमेरीने तेने हठथी आवर्तनी करेलु छे. आनो प्रसिद्ध दाखलो अवितथ छे आ वृत्तने तेमणे वृत्तविस्तारमा ५०२ मस्थामा लीधु छे (छ र. पृ. १६०). तेनी मोडणी ५०२ अवितथ [ᴗᴗᴗᴗ–ऽऽ।ᴗ–ᴗᴗᴗ–।ᴗᴗ–ᴗᴗ–] ए प्रमाणे आपी छे. एने मारी सज्ञामा मूक्ता ललललगा ᴗᴗ। लगा ललगा। ललगा ललगा एम थाय. प्रथम सधि पछी ऽ आ चिह्न आवे छे ते प्लुतिनी एक मात्रानु छे. अर्थात् पहेला सधिना गुरुने तेओ चार मात्रानो प्लुत करे छे. शा माटे? एम करवाथी एमणे आपेल दरेक खड आठ आठ मात्रानो थई रहे छे, —आवर्तनी बने छे, माटे! पण अवितथना पठनमा त्या गुरु चार मात्रानो उच्चाराय छे खरो? पृष्ठ २७० उपर तेओ बतावे छे के अवितथ भागवत दशम स्कधमा वपरायो छे त्याथी एक श्लोक लई तेमणे दाखलो पण आप्यो छे जेमा अवितथ शब्द आवे छे, जेनाथी आ वृत्तनु नामकरण थयु छे में भागवतनो आ भाग जे वेदस्तुति कहेवाय छे ते अनेक वार साभळ्यो छे. परपरा प्रमाणे गवातो साभळ्यो छे त्या क्दी पण ए गुरु प्लुत उच्चारातो नथी तो पछी तेने मात्र आवर्तनी करवा खातर ज तेमा प्लुत मात्राओ शा माटे उमेरवी? अने उमेरी ते तो ठीक, पण तेनु अनावर्तनी रूप आप्यु ज नही! आ तो मूळ स्वरूपने विकृत करी मूकवा बराबर छे पटवर्धनना समर्थ निरूपणमा आ खरेखर एक मोटी खामी छे वृत्तने अनावर्तनी जाण्या पछी तेने शा माटे आवर्तनमा नाखवु ए हु तो समजी ज शक्तो नथी! अने आम मात्रा वधारीने तो गमे तेवा अनावर्तनी वृत्तने आवर्तनी बनावी शकाय पटवर्धने बीजा वृत्तोमा पण आ रीते मात्राओ वधारी छे पण तेमानु कोई वृत्त प्रसिद्ध अने सुन्दर नथी एटले ए विशे वधु कहेतो नथी.

७

वृत्तोनो मेळ : नवां वृत्तो

हवे, अत्यार सुधी वृत्तोना भेळ विशे में जे कांई कह्युं, वृत्तोनो मेळ साधनारा जे जे घटक अगो उपांगो अवयवो दर्शाव्यां, ते नवा वृत्तो रचवामां केवी रीते प्रयुक्त थाय छे अथवा व्यापारमय बने छे ते जोईए. खरी रीते कोई पण वस्तुना अस्तित्वनो पुरावो तेनो व्यापार छे. अने कोई पण वस्तु समग्ररूपे एक छे तेनो पुरावो तेनो समग्ररूपे थतो व्यापार छे.

नवा छन्दोना निरूपणमां पण अहीं सुधीना जे पृथक्करणक्रम आवी गयो ते क्रमे ज हुं चालीश. श्लोकना मुख्य अगोपांगो ते श्लोकार्ध अने चरण छे. में आगळ कह्युं के नवु पिंगल आखा श्लोकमां तेम ज तेना एक चरणमां पण मेळनुं समग्रपणुं स्वीकारे छे. ए चरणनुं पृथक्करण करतां सयतिक वृत्तोमां प्रथम यतिखंडो मळे छे, अने ए यतिखंडोनुं तेम ज अयति वृत्तोनुं पृथक्करण करतां संधिओ मळे छे जेने वृत्तना अवयवो कही शकाय.

आ क्रमने अनुसरतां मारे प्रथम ए दर्शाववानुं के नवां वृत्तो, भिन्न वृत्तोना चरणोना विन्यासथी थाय छे. बीजी रीते कहीए तो वृत्तोना मिश्रणोथी थाय छे. आ मिश्रणप्रयोग ठेठ वेदकालथी कविओने सुविदित हतो. अनुष्टुप त्रिष्टुभ वगेरे छन्दोना पादोना मिश्रणोथी नवा छन्दो बनता तथा प्रगाथ बनता (जुओ पृ. ६१-२). आपणे आवा मिश्रछन्दोनो पिंगले स्वीकारेली उपजाति जोई,—इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्राना मिश्रणथी थती. आ युग्मना छन्दो एकबीजा साथे बहु ज मळता छे, मात्र एकमां पहेलो अक्षर गुरु छे ते स्थाने बीजामां लघु छे एटलो ज फेर छे. आ उपजाति उपर टीका करतां प्रसिद्ध टीकाकार हलायुध आ मिश्रणव्यापारने विस्तारवा प्रयत्न करे छे. ते ज तेने इन्द्रवंशा अने वंशस्थना मिश्रणने पण लागु पाडे छे. तेम ज शालिनी अने वातोर्मी जेवा स्वल्पभेदवाळा वृत्तोना उपजातिओ थई शके एम कहे छे वातोर्मी में मारा निरूपणमां लीधो नथी कारण के बहु वपरातो नथी. ते शालिनीने मळतो छे.

वातोर्मी : गागागागा । ललगा गालगागा छ शा ६, २०

यति पछीनो संधि शालिनीना गालगाने बदले अहीं ललगा छे, एटलो ज भेद छे एटले सरखी संख्याना अक्षरोवाळा वृत्तोनुं मिश्रण अहीं स्वीकारायुं

छे पण आना उपर संपादक पादटीपमा बीजा कोई पुस्तकना पाठांतरमा मळी आवता बीजा वृत्तोना मिश्रणोना उदाहरणो बतावे छे.

राम लक्ष्मणपूर्वज रघुवर सीतापति सुन्दरम्
काकुत्स्थ करुणामय गुणनिधि विप्रप्रिय धार्मिकम्।
राजेन्द्र सत्यसन्ध दशरथतनय श्यामल शान्तमूर्ति
वन्दे लोकाभिराम रघुकुलतिलक राघव रावणारिम्॥

अही पहेली बे पङ्क्तिओ शार्दूलविक्रीडितनी छे अने बीजी बे स्रग्धरानी छे. बीजु उदाहरण

यो विश्वात्मा विधिजविषयान् प्राश्य भोगान् स्थविष्टान्
पश्चाच्चान्यान् स्वमिति विभवाञ्ज्योतिषा स्वेन सूक्ष्मान्।
सर्वानेतान् पुनरपि शनैः स्वात्मनि स्थापयित्वा
हित्वा सर्वान् विशेषान् विगतगुणगण पात्वसौ नस्तुरीय ॥

अही प्रथमनी त्रण पक्तिओ मदाक्रान्तानी छे, अने छेल्ली स्रग्धरानी छे —संपादक कहे छे के नव्यो आ उपजातिओने पण स्वीकारे छे (छ शा ३जी आवृत्ति अ ६ सू १७नी हलायुधनी टीका उपरनी पादटीप) पछी ए आगळ कहे छे के सरखी सख्याना वृत्तोना ज मिश्रणो थई शके एवो आम्नाय छे अने तेथी आ मिश्रणोने 'अत्रानुक्त गाथा' (छ शा अ ८ सू १)[1] ए सूत्र प्रमाणे गाथा गणवी अने पिंगलना तत्र प्रमाणे तेने गाथा ज गणवी पडे आ शास्त्रनिरूपणनी पद्धतिथी ए आवश्यक बने छे कारण के छदोनी जातिओ चरणनी अक्षरसख्या उपरथी थई, पछी जो भिन्नभिन्न सख्याना अक्षरोना चरणोना सकरने स्वीकारे तो तेनो कई जातिमा समावेश कराय? तेने अर्ध-सममा पण न नाखी शकाय कारणके ते तो नियमित थई गया छे अने उपजातिमा एको पदो सरखा होता पण नथी आ पद्धतिमा विषमनी आ रीते ज व्यवस्था करी शकाय तेथी हलायुधने अनुसरनार केदार भट्ट अने तेनो विद्वान टीकाकार नारायण भट्ट पण आ जातनी ज उपजातिओ स्वीकारे छे हेमचन्द्रना आ सबधी उल्लेखो वईक वधारे उदार जणाय छे ए, "एतयो, परयोश्च सकर उपजाति" एम सूत्रमा ज कहे छे अर्थात् "आ (एटले इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा)नो तेम ज बीजा छदोनो सकर ते उपजाति" एम कही बीजा छदोना सकरने आ वर्गमा अवकाश आपे छे पछी सूत्र मूके छे "सर्वजातीनामपीति वृद्धा।" अर्थात्, सर्व-जातिना सकरने उपजाति कही शकाय एवो वृद्धोनो मत छे पछी एना उपर पोतानी

१ अर्थ अही नही कहेवायेला छदोने गाथा कहेवा।

टीका आपे छे: "सर्वजातीनामुक्तादीना, प्रायो गायत्र्यादीनाम्, इत परासा जगत्यादीना वृत्तनामाद्दतनामविसदृशप्रस्ताररूपस्वरवपादाना स्वल्पभेदाना सकर उपजातिरिति बहुश्रुता प्राहु।" अर्थात् जुदी जुदी सख्याना अक्षरोथी थता छन्दोनी उक्ता वगेरे जे जातिओ थाय तेमनो सकर, खास करीने गायत्रीनो सकर अने तेथी आगळ जता जगती वगेरे बीजी जातिओनो सकर, उपजाति कहेवाय आनो अर्थ भिन्न जातिना एटले भिन्न सख्याना अक्षरोना छदोनु मिश्रण एवो थई शके पण आगळ जता स्वल्प भेदवाळा छदोनो सकर एम कह्यु छे एटले अक्षरसख्यामा बहु फरकवाळानो सकर न थई शके एवा अर्थ समजवानो छे पण अही विशेषता ए छे के नामवाळा प्रसिद्ध छदो साथे नाम विनाना भिन्नभिन्न प्रस्तारथी थता छदोने पण ए सकरमा स्थान आपे छे; त्रिष्टुभना भिन्नभिन्न प्रस्तारथी थयेला नाम विनाना छदोना मिश्रणना दृष्टान्तो आपे छे "यथा त्रैष्टुभ स्वप्रस्तारेण।" जेम के त्रिष्टुभना पोताना प्रस्तारथी थता छदोनु मिश्रण.

वामे कमाहि वमिय खु दुक्ख
छिंदाहि दोस विणएज्ज राग। १

आमा बीजी पक्ति इन्द्रवज्रानी छे, प्रथम पक्तिमा एटली विकृति छे के पाचमा गुरुने बदले लघु छे,

गागालगाल ल्लगा लगागा

एम छे जो के हु मानु छु के प्राकृत भाषा छे एटले ए पाचमो 'हि' त्या गुरु ज बोलातो हशे पण हेमचन्द्र एने लघु गणी एने नाम विनानो छद गणेलो छे बीजु दृष्टान्त

सक्कारए सिरसा पजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य निच्च। २

बीजी पक्ति इन्द्रवज्रानी छे, पण पहेली कोई पिंगलमान्य वृत्तमा बेसती नथी ए नाम विनानो छद छे

गागाल्गा ललगा गालगागा

पछी 'परजाति प्रस्तारेण' अर्थात् बीजी जातिना प्रस्तारथी थता छदनो सकर

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुम १२
स्कधोऽर्जुनो भीमसनोऽस्य शाखा। ११
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे ११
मूल कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥ ११

अही १२ अक्षरना जगती साथे ११ अक्षरोना त्रैष्टुभोना सकर छे जगती ते

वशस्थ छे पण अष्टुभोमा अणेयमा वृत्तो जुदा जुदा छे त्रीजी पक्ति इन्द्रवज्रानी छे, चोथी शालिनीनी छे, पण बीजी ग्राही के विध्वकमालानी छे

ग्राही के विध्वकमाला गागाल गागाल गागाल गागा ११

अही श्लोकोमा जणाती अनियमितता वाळी पक्तिओने हेमचद्र ए ज जातिना भिन्न प्रस्तारनी कहे छे पिंगलनी परिभाषामा ए एम ज कही शके पण आ श्लोकोनी अनियमितता गाणितिक प्रस्तारप्रयोगमाथी उद्भवती नथी आ श्लोको आर्ष छे, आख्यानकालना छे, जे कालमा हजी छदोने अत्यारना पिंगलोमा मळे छे तेवा नियत स्वरूपो मळ्या नहोता अने तेथी तेमा अनियमितता छे छता ए आख्यानोना वस्तुनी उदात्तताने लीधे, तेम ज ए श्लोकोना भावपूर्वक थता प्रलबित पठनमाथी निष्पन्न थता एक प्रकारना घोषने लीधे, ए छदोनी साथे एक भव्यतानो भाव साहचर्य पाम्यो छे अने तेथी ए भावना अत्यारना आपणा काव्यो पण छदामा ए अनियमितता कौशल्यथी आणे छे, ए आपणे आगळ जोईशु अही तो उपजातिना पारिभाषिक नाम नीचे भिन्नभिन्न पिंगलो केटले सुधी मिश्रणो स्वीकारवा तैयार हता, एटलु ज जोवु प्रस्तुत छे

सूत्रपद्धति प्रमाणे विशेष भेदवाळा सकरो गाथा ज गणाय पण पिंगले जा मेळना सिद्धान्तोनी चर्चा करवी होय तो आ मिश्रणने एक मेळनो व्यापार गणवो जोईए

आवा मिश्रणो सस्कृत साहित्यमा पण थया छे ते सुविदित नहोतु त्यारे नरसिंहरावे सौथी प्रथम उपजाति अने वसन्ततिलकानु मिश्रण पोताना एक काव्यमा कर्यु —

> प्रचड ए ज्योति अखड व्हेतो
> विशाळ आ विश्व विलोपि देतो,
> ना ज्योतिथी भिन्न दिसे ज काई
> आ पेर जो ! प्रकृति डूबि पुरूषमाही

'दिव्य गायकगण,' हृदयवीणा, पृ १०९

आ मिश्रण विशे नरसिंहराव लखे छ

The author of this work believed he had created this original combination, till years afterwards he heard the following lines quoted from the *Bhagavata* ·

> त सववादप्रतिरूपशीत्र
> वन्दे महापुरुषमात्मनिगढबोधम ।।

(Probably from the XIIth Skandha)

Gujarati Language and Literature Vol II p. 288

નરસિંહરાવ કહે છે કે આ મિશ્રણ મેં નવીન જ કર્યું છે એમ માનતો હતો પણ મેં નીચેની ભાગવતની પંક્તિઓ કેટલાક વરસો પછી સામળી જેમાં એ જ મિશ્રણ નજરે પડે છે. નરસિંહરાવ કહે છે કે આ પંક્તિઓ ઘણે ભાગે વારંવાર સ્વપ્નમાં આવે છે. અલબત્ત નરસિંહરાવે ભાગવતમાં આ પંક્તિઓ શાર્દૂલે મેળવી જોયું નથી પણ એની શોધ કરતાં એ પંક્તિ પણ વસંતતિલકાની જ નીકળે છે. એ આખો શ્લોક નીચે પ્રમાણે છે:

યદ્દર્શનં નિગમ આત્મરહઃપ્રકાશં
મુહ્યન્તિ યત્ર કવયોઽજપરા યતન્તઃ ।
તં સર્વવાદવિષયપ્રતિરૂપશીલં
વન્દે મહાપુરુષમાત્મનિગૂઢબોધમ્ ॥

ભાગવત, ૧૨, ૮, ૪૯

એટલે ઉપજાતિ-વસંતતિલકાનું મિશ્રણ નરસિંહરાવનું જ નવીન રહે છે પણ એ સાચું છે કે ભાગવતમાં છંદોના ઘણા નવા પ્રયોગો થયા છે, અને છંદોના પિંગલનિયત સ્વરૂપમાં ઘણી છૂટ પણ લેવાઈ છે.

આ મિશ્રણના છંદો ઉપજાતિ અને વસન્તતિલકા વૃત્તોની સંખ્યા ભિન્ન-ભિન્ન છે, એકની અગિયાર અને બીજાની ચૌદ, અને તેથી પિંગલની પરંપરામાં બન્ને ભિન્નભિન્ન વર્ગના ગણાય, પણ મેળની દૃષ્ટિએ બન્ને એક જ વર્ગના છંદો છે એ પઠન કરતાં જણાઈ આવે છે, જેને પૃથક્કરણ કરી આપણે આગળ જોઈશું. સાહિત્યમાં કાંઈ એવું નવું પગલું એક વાર ભરાય પછી એ દિશામાં પ્રગતિ થતાં વાર લાગતી નથી. ઉપજાતિ-વસંતતિલકાની પેઠે જ શાલિની મંદાક્રાન્તા વગેરે છંદોની પંક્તિઓના પણ મિશ્રણો થાય છે. નીચે નાનાલાલનું એક ઉદાહરણ ઉતારું છું:

આછા પેલા શ્યામ અબ્ધી તરંગે
વ્હાલી ! મ્હારી મૂર્તિ જો ! મેઘરંગે,
વિશ્વાન્તર્માં, ગીત શા ઘોર ગાજે !
વ્હાલી મ્હાયે પ્રણયરસિલું આત્મબિન્દુ વિરાજે

'મણિમય સેંથો'—કે૦ કા૦ ભા૦ ૧

અહીં શાલિની અને મંદાક્રાન્તાનું મિશ્રણ છે. નીચેનું દૃષ્ટાન્ત શાલિની-સ્રગ્ધરાના મિશ્રણનું છે:

નિ:શ્રેયોમાં જો મહાસત્ય એક !
સત્કર્મોમાં જે સરે છે સદાય—
ધારી સત્તા માનુષોથી વિશેક,
રેવા ! ગીતો શાં તું હમેશ ગાય

जेना साचा रहस्यो यठण समजवा लोकने सर्वथाय

'रेवा,' पतील

शालिनी कुटुबना वधारे लाया वृत्तोना मिश्रणनु एक दृष्टान्त नीचे उतारु छु

आव्या वेगे वरस धसता साहसोत्साह केरा,
हैयू झखे अमित अतळा ऊडवा बूडवा ज्या
वर्षाभीनी धसति चडती जेम रेवा तु रेले,
काठा भेदे, उपवनवनो खेतरो गाम वेडे,
तोये देती रसवस नवा जीवनो हाय व्होळे —
छे ना सृष्टी विशे कै क्षणिक तदपि ताजी जुवानीनि तोले.

'रेवा' भणकार, पृ ४५

अही मदाक्रान्तानी पाच पक्ति पछी स्रग्धराथी उपसहार थई एक श्लोक बने छे एथी पण ए ज कुटुबना वधारे छदोनु मिश्रण

व्हाली विश्व कोड शा जीववाना ?
जिवतर कल्होना कटकोने बिछाने ?
अगे अगे रुधिरझरती मानवीजात यच्चे ?
अश्रू छाना अछाना अविरत डुसकानी कलकावली ज्या ?

'सान्त्वना', निशीथ, पृ ३३

आ बधा दृष्टान्तोमा वधारे लाबी पक्ति श्लोकने अते आवे छे ते अग्रेजी स्पेन्सेरियन स्टान्झाना अनुकरणमा होवाना सभव छे तेमा पक्तिओ इयँबिक पेन्टामीटरमा आवी अते लाबी एलेक्झान्ड्राइन पक्ति आवे छे, ते उपसहारमा सुदर देखाय छे तेम अही पण थयु छे ए ज प्रमाणे सानेटमा पण उपसहार माटे अतनी एक के बे पक्ति वधारे लावा वृत्तनी वपराय छे

एथी ऊल्टी रीते लाबी पक्ति पहेला आवे अने टूकी पछी आवे एम पण बने छे अने ए पण सुन्दर होई शके छे जेम के

आज मारु जिवनसहरा आगणा फाग खेले
छो ने खेले —

का के वर्षा ग्रीष्म पूठ रुपाती
आवे जाणे सासु पूठे नवोढा !

'अमर आशा', चक्रनाक, पृ ९४

आ वक्तव्य एवु छे के आ प्रमाणे गोठवाता बराबर यथोचित वेसी जाय छे.

आ मिश्रणोमा छंदो एक ज कुटुंबना अने मेळना छे पण भिन्न मेळना छंदोना पण मिश्रण थाय छे:

झूकयो अधीर विधु मुग्ध वसुन्धरा पे,
जेवो लळे रसिक को निरखी प्रियाने;
ने गौर ते प्रियतमा मुखने सुहावी,
झूली लटो अलकनी ज्यम रम्य रे'ती,
छायाओ शी स्यम रहि लखी पृथ्वि–भाले–कपोले
'चंद्र अने ओळा', पनघट पृ. ६७

अही वसंततिलका अने मंदाक्रान्तानु मिश्रण छे तेवु ज वसंततिलका साथे स्रग्धराना मिश्रणनु नीचे उदाहरण आपु छु:

"हे कोकिला! उभयनो तन रंग एक,
ने चाच पिच्छ पण आम समान छेक;
छीए सगा, पण जरा स्वर भेद"; काग
बोले एवु, कहे त्या झट परभृतिका. "ए जरी भेद भांग."
'जरी भेद', पाखडी, पृ. १०६

आ बधा करता वृत्तोनु अनुष्टुप साथेनु मिश्रण कंईक जुदा प्रकारनु गणवु जोईए. कारण के आपणे जे वृत्तो जोया ते करता अनुष्टुप विलक्षण छे. कवि नानालालनां आना उदाहरणो जोईए.

ऊंचेथी जेटले आवे
पाणी प्रजाभक्ति तणा नृपालना
फुवारा तेटला ऊचा
उडे प्रजानी नृपराज भक्तिना.

अने दहाडे दहाडे सूर्य जो तेज ढोळे,
रात्रे रात्रे चंद्रिका चन्द्र चोळे,
अनन्ता युगना आवे अनन्ता तेज छाय जे,
ए ज संस्कार सर्वस्व प्रजानी संस्कृति हले.

पहेला उदाहरणमा पहेली अने त्रीजी पंक्ति अनुष्टुपना विषम चरणनी छे, अने बीजी तथा चोथी इन्द्रवंशा तथा वंशस्थनी छे बीजा उदाहरणमा पहेली बे पंक्ति शालिनीनो छे, अने तेने अनुष्टुपना श्लोक साथे जोडी एक श्लोक करेलो छे. उमाशंकरनो आने मळतो दाखलो:

'फरी कदी ले नहि हाथ टाचणु
प्रतिज्ञा एवि जो करे,

आपु तने भेट खरा सुवर्णनु,
सघरा जेसग उच्चरे

'कलानो शहीद', गगोत्री, पृ ७४

नानालालना दृष्टान्तमा पहेली पक्ति अनुष्टुपनी हती, तो त्या ए अनुष्टुपनु विषम एटले प्रारभक चरण हतु, उमाशकरमा बीजी अनुष्टुपनी छे, एटले ए अनुष्टुपनी सम एटले उपसहारक पक्ति छे ए रीते झीणी विगतोमा पण मेळ सचवाय छे आ अनुष्टुप के गायत्रीना पादो साथे अन्य वृत्तोना मिश्रणो ठेठ वेदकालथी मळी आवे छे (जुओ गत पृ ६१–२)

अही सुधी आपणे एक ज श्लोकमा भिन्नभिन्न वृत्तो एटले अनावृत्तसधि अक्षरमेळ छदोना चरणोनु मिश्रण जोयु पण त्रैष्टुभ कुटुबनी उपजातिओमा अने विशेष करीने सो एना छन्द प्रवाहमा प्रवाह साथे भळी शके एवा आवृत्तसधि अक्षरमेळ छदनी पक्तिओ पण आवे छे आनु एक सुन्दर श्लोकबद्ध दृष्टान्त प्रो ठाकोरनु मळे छे ते जोईए

कोनू आखू कोनु हैयू गळेलु,
कोनी साची कोनि खोटी परीक्षा,
ए प्रश्नोने तें ज जाणे उकेली
ऊकेलतो सार नि सारनो जे,
नि सार गाळि शकतो वळि सारमाथी

'पूछ मने क्टेव , भणकार, पृ ३२८

पाच पक्तिनो आ आखो एक श्लोक छे तेमा पहेली त्रण पक्तिओ सयतिक शालिनीनी छ छेल्ली पाचमी वसततिलकानी छे चोथी ग्राही के विष्वकमालानी छे

ग्राही गागाल गागाल गागाल गागा

आ पचमात्रक गागालना आवर्तनो छे छे लु आवर्तन खडित छे ए रीते पक्ति आवृत्तसधि होवा छता ते इन्द्रवज्रानी बहु नजीकनी छे सधिओने बाजुए राखी कहवु होय तो एम कहेवाय के ग्राहीना सातमा गुरुनी जगाए लघु मूको एटले इन्द्रवज्रा थई जाय छे पण जरा जुदी रीते जोता ए शालिनीने पण बहु ज मळती छे ग्राहीना त्रीजा लघुने स्थाने गुरु मूका एटले शालिनीनी पक्ति थाय —अलबत तेमा यति आवे पण आथी पण वधारे विलक्षण छदनी पक्तिओ छन्द प्रवाहमा आवे छे, ते आपणे छन्द प्रवाह विश विचार करता जोईशु

आ पछी आपणा पृथक्करणने क्रमे भिन्न वृत्तोना यतिखडोना मिश्रणथी थता छदो आवे आवा प्रयोगो गुजरातीमा बहु थया नथी, अने सस्कृत पिंगलोमा

आवा प्रयोगोना छंदो छे ते पण कविप्रिय थया जणाता नथी जाणे कईक कौतुक खातर करेला जणाय छे आना गुजरातीमा मळी आवता दाखला पहेला आपु

वर्षे वर्षे, कइक युगथी, आम तू तो पधारे,
तोये शाने पुनरपि धरान्धार घेराय हैये?
तू हो त्यारे सरल तरतू तेजना सागरोमा
ते विश्वे वा पुनरपि रहे घोर बाधी तमिस्रा?
मने प्रश्नो एवा यदि नहि स्फुरता,, धन्य का ये गणू हू
अमासे अधारी, क्षणिक तदपि ए दर्श तारी प्रभातु
'दर्श तारी प्रभातु —', अभिसार, पृ ९९

आ काव्य सॉनेट छे तेमा मुख्य प्रवाह मदाक्रान्तानो छे अने तेमा अते उपसहारार्थे लाबी बे पक्तिओ मूकी छे ते शिखरिणी अने स्रग्धरांना यतिखडोनु मिश्रण छे पहेला छ अक्षराथी शिखरिणीनो आद्य यतिखड थाय छे, अने तेनी पछी स्रग्धराना मध्य अने अत्य यतिखडो आवे छे मिश्रणनो आ सुभग दाखलो छे हेमचन्द्रे आने शोभा कहेल छे.

शोभा लगा गागागागा । ललललललगा । गालगा, गालगागा
छदोनु० पृ १५अ

आनी नजीकनो एक दाखलो मळे छे ते ल्उ

प्रिये, ले रीसाई पथ मनगम्यो, जा ज्यही चाल्यु काव्यु,
न आक्रदे अश्रू नयन वहशे, दीनता ना, न हैयु
तमारा पथे थै विवश पद शाळोटशे, ए अछानु
सदा तारे पथे सुरधनुसमू पाथरी रहे बिछानु
'प्रिये जा ना आवे', उर्वशी अने यात्री, पृ ७२

अही पहेलो यतिखड शिखरिणीनो छ अक्षरनो छे, अने ते पछीना बने खडो मदाक्रान्ताना छे आ पण संस्कृत पिंगलाए नोधेलो छद छे हेमचन्द्र तेने विस्मिता अथवा मेघविस्फूर्जिता कहे छे

विस्मिता
अथवा लगा गागागागा । लललललगा । गालगा गालगागा
मेघविस्फूर्जिता छदोनु० पृ १४अ

शोभामा अने आमा फेर एटला ज छे के शोभाना मध्यखड करता आना मध्यखडमा एक लघु ओछो छे

अही आपणे शिखरिणीना पहेला यतिखड साथे स्रग्धराना अने मदाक्रान्ताना उत्तरखडोनु मिश्रण जोयु एथी उलटो दाखलो एक आवी गयो छे

તે જોઈએ આપણે છંદોમાં સુવદના જોઈ ગયા (ગત પૃ ૧૨) સગવડ ખાતર તેનો ન્યાસ ફરી મૂકુ

સુવદના ગાગાગાગા લગાગા । લલલલલલગા । ગાગા લલગા

અહીં પહેલા બે યતિખંડો સ્રગ્ધરાના છે હવે શિખરિણીનો આખો અગિયાર અક્ષરોનો ઉત્તરખંડ અહીં લાવો પડે, એનો પહેલો સંધિ લલલલલગાગા યાદ કરતા રહેનો લલગા સંધિ એવલા અત્યખંડમાં ટૂંકો પડે એટલે આગલા સંધિમાથી બે ગુરુ પણ ઉતારી લીધા આ પ્રમાણે ખંડોનું સમતોલપણું જાળવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છતા મને અહીં અંતિમ ખંડ આગલા ખંડ સાથે સફાઈથી રહેણાઈને સધાઈ જતો લાગતો નથી જરાક એ બે સંધિઓની વચ્ચે વળગાપણું લાગે છે, જાણે બોલ્તા ખાચો પડે છે

હવે જુદી જાતના મિશ્રણનો દાખલો લઈએ, સ્રગ્ધરા અને મંદાક્રાન્તાના યતિખંડોના મિશ્રણોની સૂચવણ ન થાય માટે યતિ બતાવવા એકવડુ અવતરણ ચિહ્ન કરું છું:

> પૃથ્વીની આંખણીમાં' ઝિણિ ઝિણિ પડિ ગૈં' ભાત સૂવર્ણરંગી
> તારા નીચે'સરીને' કુસુમ બનિ'ગયા' છોડવે છોડવે જૈં
> મુદ્રાઓ, અગમગે' ગહિ અજય જાદૂ ભર્યા જિંદગીના
> એને રંગો તણી કે કિરણગૂથણીની ન'તી ખેવના કૈં
> સકારે દિલ્ નુપૂર્ના', ચરણપડછંદે મૃદગે ચઢીને
> એ પેલા પક્ષીઓ' હૃદય તણી કે'તી ક્યા કાન છાની
> પાછૂ જોતી હસીને' ઠગક ઠમકતી' પાનિઓ રંગભીની
> નાચી રૈંતી જવાની જ્વિનભમકથી — ગર્વઘેલી ચલાયી
> ચારે કોરે વસતા' કુસુમચપકનો, કેફ રંગી ચમાનો
> પૃથ્વીના અગમાથો' પિ રહિ હતિ એ' પ્રકૃતીની ખુમારી
> 'ઉપાનુ નૃત્ય', ગોરસી, પૃ ૩૫

આ ચૌદ પંક્તિનો સૉનેટ છે આની પહેલી છ પંક્તિઓ શુદ્ધ સ્રગ્ધરાની છે, જેમાની ૫–૬ પંક્તિઓ મેં ઉપર ચાપી છે તે પછી આવતા પટકમા પણ ૧૧-૧૨–૧૩ પંક્તિઓ શુદ્ધ સ્રગ્ધરાની છે બાકીની એટલે ૭–૮–૯–૧૦ અને ૧૪ એટલી પાંચ પંક્તિઓમાં પહેલો ખંડ સ્રગ્ધરાનો છે, અને બીજો મંદાક્રાન્તાનો છે આ મિશ્ર યતિખંડો મારી દૃષ્ટિએ મેળ ખાતા નથી સ્રગ્ધરાના લાંબા પ્રથમ યતિખંડની સાથે સમતોલ થવાને સ્રગ્ધરાનો જ લાંબો યતિખંડ જોઈએ છ, મંદાક્રાન્તાનો તે ટૂંકો પડે પણ અહીં તો શુદ્ધ અને મિશ્ર પંક્તિઓ સેળભેળ થવાથી પઠન વધારે વિઘ્નવાળું બને છે એ પણ કહેવાનું છે આ

पंक्तिओ छापेली छे ते उपरथी पण छन्दफेर थवानी कशी सूचना मळती नथी ए पण मुश्केलीनुं एक बीजुं कारण छे. आ मिश्र छन्द पण पिंगळमां मळे छे:—

चित्रमाला : गागागागा लगागा। ललललगा। गालगा गालगागा

छन्दोनु० पृ. १५अ

परंपराप्राप्त पिंगळोमां थाय यतिखंडोना मिश्रणोथी थता छंदो आप्या छे ते जोई जईए.

कुसुमितलतावेल्लिता : गागा गागागा। लललललगा। गालगा गालगागा

छ. मा ७–२०

अहीं वैश्वदेवीना पहेला यतिखंडने मंदाक्रान्तानो बीजो अने त्रीजो खंड लगाडेलो छे. वैश्वदेवी पोते बहु सुन्दर छंद नथी, अने आ प्रयोगथी पण ते काई सुधरतो नथी.

पद्म : लललललगा । गागागागा। गालगा गालगागा

छंदोनु० पृ १२ब

अही मंदाक्रान्ताना पहेला बे यतिखंडो हरिणीनी पेठे उलटावेला छे, अने अन्त्य यतिखंड मंदाक्रान्तानो ज कायम राख्यो छे रचना हरिणी जेटली सुन्दर लागती नथी.

भाराक्रान्ता : गागागागा । लललललगा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ. १२ब

अही पहेला बे यतिखंडो मंदाक्रान्ताना छे, अने अन्त्य खंड हरिणीनो अन्त्य खंड छे प्रयोग करी जोवा जेवो छे.

चल : गागागागा । ललललललगा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ. १३अ

पहेलो यतिखंड ते मंदाक्रान्तानो पहेलो यतिखंड, बीजो ते स्रग्धरानो बीजो यतिखंड अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो

मकरन्दिका : लगा गागागागा। लललललगा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु० पृ १४अ

पहेलो यतिखंड ते शिखरिणीनो पूर्व यतिखंड, बीजो ते मंदाक्रान्तानो बीजो, अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो

उपमालिनी : लललललललगागा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु० पृ. १०ब

पहेलो खड ते मालिनीनो पहेलो, अने बीजो ते हरिणीनो छेल्लो

चन्द्रोद्योत ललललललगागा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० १०ब

अही मालिनीना पहेला खड साथे शार्दूलविक्रीडितनो छेल्लो खड जोडेलो छे

ललित ललललललगा। गागागागा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ १३ब

पहेलो यतिखड ते स्रग्धरानो बीजो, बीजो ते मदाक्रान्तानो पहेलो, अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो अर्थात् छेल्ला बन्ने हरिणीना

हारिणी गागागागा। लललललगा । गागालगा गालगा

एजन, पृ १२ब

पहेला बे खडो ते मदाक्रान्ताना पहेला बे, अने अत्य ते शार्दूलविक्रीडितनो अत्य खड

छाया लगा गागागागा । लललललगा । गागालगा गालगा

एजन, पृ १४अ

पहेलो खड ते शिखरिणीनो पहेलो, बीजो ते मदाक्रान्तानो बीजो अने छेल्लो ते शार्दूलविक्रीडितनो छेल्लो

मेघविस्फूर्जिता लगा गागागागा । लललललगा । गालगा गालगागा

एजन, पृ १४ब

पहेलो शिखरिणीनो पहेलो यतिखड अने पछीना बन्ने मदाक्रान्ताना छेल्ला बे.

केसर गागागागा । ललललललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ १३अ

पहेलो खड ते मदाक्रान्तानो पहेलो, मध्यम ते स्रग्धरानो मध्यम, अने अत्य ते शार्दूलविक्रीडितना अत्य

रोहिणी लललललगा । गागागागा। गागालगा गालगा

एजन, पृ १२ब

पहेला बे यतिखडो हरिणीना अने अत्य ते शार्दूलविक्रीडितनो अत्य

मदनललिता गागागागा। लललललगा । गागा ललगा

एजन, पृ १२अ

पहेला बे यतिखंडो ते मंदाक्रान्ताना अने अंत्य ते सुवदनाना अंत्य

क्रीडा: लगा गागागागा। ललललल्गा । गागा ललगा

एजन, पृ १४अ

पहेलो खंड शिखरिणीनो पहेलो, मध्य खंड ते मंदाक्रान्तानो मध्य खंड, अने अंत्य खंड ते सुवदनानो अंत्य खंड

शार्दूलललित : गागागा ललगा लगा ललगा। गागा ललगा

एजन, पृ. १३ब

प्रथम यतिखंड ते शार्दूलविक्रीडितनो प्रथम यतिखंड, अने अंत्य यतिखंड ते सुवदनानो अंत्य यतिखंड

छन्दोना यतिखंडोमाथी नवा छन्दो बनाववानी एक बीजी पद्धति ते यतिखंडोमाथी एकनो लोप करीने छंद टूंको करवानी आना बेक दृष्टान्तो गुजराती काव्योमाथी मळे छे ते प्रथम लईए, जो के बधे संस्कृत पिंगलशास्त्रोनी गणनामा आवी गया छे

आस्मानी यज्ञवेदी, इन्धणा ऊर्मिओना
प्रारब्धाग्नीशिखाओ, काळवायू निसासा,
हैयानी आहुति ने, अश्रुना आज्य माथा,
आजे सहारसने नवजिवनतणी पामु दौर्भाग्यदीक्षा! -

'पधारो प्रलयानल', आलबेल, पृ ३१

अही छेल्ली पंक्ति स्रग्धरानी छे अने तेनी उपरनी त्रणमा स्रग्धरानो पहेलो अने छेल्लो यतिखंड छे, वचलो लुप्त करी पंक्तिओ टूंकी करेली छे आगळ खंडशिखरिणीने नवो श्लोकबंध कह्यो तेम-आ आखा श्लोकने स्रग्धरानो नवो श्लोकबंध कहवो होय तो कहेवाय पण आपणे एक एक पंक्तिमा पण समग्र मेळ गणीए छीए एटले कहवानु ए के एक यतिखंड लोपीने नवो छंद करवानी आ पद्धति छे ते पण साथे साथे ध्यान राखवु जोईए आ छंदने पिंगलमा लक्ष्मी कहेली छे

लक्ष्मी. गागागागा लगागा। गाल्गा गालगागा

छंदोनु० पृ ९ब

आवी ज रीते स्रग्धराना छेल्ला बे खंडोनी एक पंक्ति गुजरातीमा मळे छे:

प्रियजन सहजो अर्चना आटली दो!

अपण, 'श्रावणी मेळो'

आने हेमचन्द्र वसन्त कहे छे तेनु बीजु नाम नन्दीमुखी छे

वसन्त के नन्दीमुखी ललललललगा । गालगा गालगागा

छन्दोनु० पृ ९ब

आवी रीते एकाद खड ओछो राखी टूकी पक्तिनो नवो छन्द कर्याना बीजा दाखला जोईए

अपराजिता ललललललगा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु० पृ ९ब

अही पहेलो यतिखड ते स्रग्धरानो मध्य यतिखड छे, अने अत्य यतिखड ते हरिणीनो अत्य यतिखड छे

करिमकरभुजा ललललललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ ९ब

अही पण पहेलो यतिखड ते स्रग्धरानो मध्य यतिखड छे अने अत्य यतिखड शार्दूलविक्रीडितनो अत्य यतिखड छे

आ बधा दृष्टान्तो उपरथी जणाशे के नवा छन्दना प्रयोगोमा अत्य खडने स्थाने कोई पण छदनो अत्यखड ज आवे छे ज्या कोई यतिखडनो लोप थयो होय त्या पण अत्यखडने स्थाने कोई पण छदनो अत्यखड ज आवे छे अने ए स्वाभाविक छे कारण के नवा छन्दमा पण मेळनो उपसहार तो जोईए ज, अने ए उपसहार करवानु सामर्थ्य अत्य खडमा ज छे एथी विरुद्ध रीते ज्या ज्या नवा छन्दना प्रयागमा अत अत्य यतिखड नथी त्या त्या मेळ स्पष्ट रीते अधरो जणाय छे नवा छन्दनी लतवाळा पिंगलकारोए एवा प्रयोगो पण कर्या छे जेम के

शिखडिनी लगा गागागागा

छन्दोनु० पृ ४अ

हसी गागागागा । ललललगा

छ म क २, ८०

आमा पहेलो छद ते शिखरिणीनो प्रथम यतिखड मात्र छे बीजामा मदाक्रान्ताना प्रथम बे यतिखडो छे, अर्थात् मदाक्रान्तानो मध्य यतिखड अही पक्तिने अते आवे छे बन्नेमा उपसहारनी अपेक्षा रही जाय छे — जाणे पक्तिनो मेळ बुठ्ठो रही जाय छे.

आना ज अनुसधानमा अर्धसम वृत्तोनी एक पक्तिना आवर्तनोथी बनता नवा छन्दो जोईए जेम समवृत्तमा एक पक्तिमा एक अखड मेळ छे, अने

तेना पूर्व यतिखंडोनो मेळ सापेक्ष छे, तेम ज अर्धसम वृत्तमां पण बे पंक्तिओ मळीने एक अखंड मेळ थाय छे, तेनी हरकोई प्रथम पंक्तिनो मेळ, पूर्व यतिखंडनी पेठे ज सापेक्ष छे. अर्धसमनी एक पंक्तिनो व्यापार ते सयतिक वृत्तनी पंक्तिना यतिखंडोना अलग व्यापार जेवो छे. आपणे गुजरातीमां मळी आवतां दृष्टान्तोथी शरू करीए:

- १ - (सम–पुष्पिताग्रा)

रुधिरमयी मुख भासतां दिशाना,
विकृत, भयप्रद राक्षसी मुखो शा;
अवनि ऊमी उर हेबताइने शुं!
गगन तणां उडुनेत्र शूं मिचातां!

'शस्त्रसंन्यास', ज्योतिरेखा, पृ. २९

कर्ताए पोते कह्युं छे तेम आ श्लोकनी चारेय पंक्तिओ पुष्पिताग्राना समपादनी छे. हेमचन्द्रे आने सुवक्त्रा अथवा अचला कहेल छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

सुवक्त्रा के अचला : ललललगा ललगा लगा लगागा

छन्दोनु० पृ. ८द

आवी ज रीते संस्कृत पिंगलमां वरतनु छन्द आवे छे ते अपरवक्त्रना बीजा चरणनो बनेलो छे.

वरतनु : ललललगा ललगा लगालगा

छ शा. नि. ८, ३

आना लक्षणसूत्रमां पिंगले छठ्ठे अक्षरे यति कही छे पण ते शोभानी छे. अने तेना दृष्टान्तमां ज एक जगाए यतिभंग थाय छे ए हुं आगळ बतावी गयो छुं (जुओ गत पृ. १८९–९०)

एक बीजो श्लोक श्री उमाशंकरनो लईए.

आवो बाल! रसपि सौम्य द्रष्टा,
स्नेहालाप सुहृति सृष्टि स्रष्टा,
स्वर्गंगा शुभ माळ कंठमां छे,
मारो आ मननी मढूलिमा के?

'स्वागत', बलान्त कवि.

वधिए पोते रणपिंगलमाथी शोधी आनु नाम 'विश्वविराट' कहेलु छे पण चालु संदर्भमा मारे ए कहेवानु के मे आगळ अर्धसमना विवरणमा अर्धसमनो एक प्रकार जे भद्रविराट कह्या (जुओ गत पृ. १३२) तेना सम चरणना आवर्तनथी आ छंद बनेलो छे. विश्वविराट नाम पण भद्रविराटने मळतु छे, ए एमना संबध बतावे छे त्या ज आगळ आपेल वैसारीना समचरणना आवर्तनोथी थता छंदनु नाम विराट के शुद्धविराट छे, ए पण आना अर्धसम साथेना संबधने विशेष समर्थित करे छे हेमचद्र विश्वविराटने एकरूप कहे छे

एकरूप के विश्वविराट: गागागा ललगा लगा लगागा

छन्दोनु० पृ. ६ब

अने

विराट के शुद्धविराट: गागागा ललगा लगालगा

रणपिंगल, पृ २७३

हजी सुधी जोयेला सुवक्त्रा, वरतनु, विश्वविराट अने शुद्धविराट वर्णयमा आवर्तनो ते ते. अर्धसमना समपादना थया छे ए ज स्वाभाविक छे कारण के सममा ज मेळ उपसहार पामे छे तेम छता विषम पक्तिना आवर्तनोथी थतो एक छंद नोधु छु. भद्रिका

भद्रिका ललललललगा लगा लगा

छन्दोनु० पृ ६ब

गुजरातीमा दृष्टान्त न होवाथी हेमचद्रनु ज उतारु छु

परिहर नितरा परापद[२]
कुरु जिनवचनेनुरागिताम्।
इति तव चरत परे भवे
भवतु सपदि भद्रिकागति ।।

आ स्पष्ट रीते पुष्पिताग्राना विषम चरणना आवर्तनो छे आनु बीजु नाम हेमचन्द्र अपरवक्त्र नोधे छे ए पण एनो अर्धसमो साथेनो सबध जणावे छे आ विषम चरणना आवर्तनो समचरणना जेटला मेळवाळा जणाता नथी, सुन्दर लागता नथी, ए पठन उपरथी तरत जणाई आवशे तेनु कारण प्रथम चरणनो

२ मूळमा 'परापवाद' एम छे पण एम करता बार अक्षरो थई जाय छे जे दोष छे एटले में उपर प्रमाणे पाठ सुधार्यो छे

मेळ अधूरो छे, ए छे आना जेवु वियोगिनी के सुन्दरीना विषम चरणना आवर्तनोनु वृत्त सहजा मात्र रणपिंगल नोंधे छे.

सहजा : ललगा ललगा लगालगा

रणपिंगल, पृ. २७४

भद्रिका अने सहजा वगेरे विषम चरणना होवाथी मेळ सापेक्ष — जरा अद्धर रही जाय छे तेम छता काईक पण उपसंहारनो संस्कार आ वृत्तो आपी शके छे, तेनु कारण ए छे के पंक्तिने अंते लगालगा आवे छे, जेमा उपसंहारनु सामर्थ्य छे.

आम नवा छन्दो थता पण उपसंहारनी जगाए उपसंहारक्षम यतिखंड के चरण आवे छे.

अही एक प्रश्न थशे. अही नवा छंदो तरीके अमुक अमुक छन्दोने नवा कह्या, अने ते अमुक अमुक भिन्नभिन्न छन्दोना यतिखंडोना नवीन विन्यासोथी थया छे एम कह्यु. तेवी ज रीते में अमुक अमुक अर्धसम वृत्तोना अगत्य समविषम चरणोना अलग व्यापारथी नवा छंदो थाय छे एम कह्यु. एमा प्रश्न ए थाय के अही नवा कहेला छन्दोने ज नवा शा माटे मानवा? दाखला तरीके शिखरिणी अने मंदाक्रान्ताना यतिखंडोथी मेघविस्फूर्जिता थाय छे एम कह्यु तेने बदले मेघविस्फूर्जिता अने कोई एवा बीजा छन्दना यतिखंडोथी शिखरिणी अने मंदाक्रान्ता बन्या एम केम न मानवु?

आनो जवाब आखा पद्यसाहित्यमा प्रयोजेला छंदोनु पौर्वापर्य निर्णीत करीने आपी शकाय. आपणे बताबी शकीए के अमुक अमुक छंदो अमुक वखिए ज सौथी प्रथम वापर्या. अथवा उपलब्ध पिंगलोना ऐतिहासिक अभ्यासथी पण केटलाक वृत्तो विशे निर्णय करी शकाय. जेमके उपर आपेल मेघविस्फूर्जिता विशे कही शकाय के पिंगलना प्राचीन छन्दःसूत्रोमा ए छंद नथी, पण 'अत्रानुक्तं गाथा' सूत्र नीचे हलायुधे ते विस्मिताना नामे आपेल छे तेथी प्रस्तुत छंद पूरतु शिखरिणी अने मंदाक्रान्तानी प्राचीनतानु विधान साचु ठरे छे पण अही मारा वक्तव्यने माटे एटलु बधु निर्णीत करवानी जरूर नथी. मारा विषयनिरूपणमा छन्दनो मेळ ए मुख्य प्रश्न छे. सुन्दर मेळवाळा ज छन्दो वधारे व्यापक रीते वपरायेला होय, अने तेथी मारे बहु वपरायेला छन्दो उपर ज ध्यान केन्द्रित करवु जोईए एम करता पंक्तिना अमुक अमुक उपांगो, यतिखंडो जणाया हवे आ ज यतिखंडो भिन्नभिन्न छंदो उत्पन्न करवामा व्यापारमय बनता होय तो ते ए यतिखंडोनी समग्रता विशे अने घटकत्व विशे बहु प्रबल पुरावो छे; एटले मारे जे दर्शाववानु छे

ते मात्र यतिखंडोनी व्यापारमयता छे. एने माटे जरूरनी छे ते वृत्तोनी सरखामणी छे, पूर्वापरता नथी. सरखामणीथी आपणे जोई शकीए के भिन्न कविओए, अथवा अहीं तो विशेषत पिंगलकारोए, नवा नवा छदो रचवा ए यतिखंडोनो भिन्नभिन्न रीते विन्यास करेलो छे अने एटलु आपणे जोई शक्या छीए तेम छता सस्कृत पद्यसाहित्यनो मारो जे काई परिचय छे ते उपरथी हु एटलु कही शकु के अहीं मूळ तरीके गणावेला छदो, लगभग बधाये, ऐतिहासिक दृष्टिए पण में जणावेला नवा छदोनी अपेक्षाए प्राचीनतर छे.

यतिखडो पछी तेनाथी नाना घटक ते सधि छे सयतिक वृत्तोना यतिखडो, तेम ज अयतिक वृत्तोना अखड चरणो पण सधिओना बनेला छे. नवा छदो बनवामा आ सधिओ केवी रीते निमित्तभूत के साधनभूत थाय छे ते हवे आपणे जोईए

अहीं सौथी महत्त्वनी पद्धतिने हु सगम एवु पारिभाषिक नाम आपीश. एक छन्द पोताने रूप वहेतो वहेता एवा सधिए आवे के ए सधि कोई बीजा छन्दमा पण क्याक आवतो होय, अने पछी ए सधिमा जाणे तेनी साथे सगम पामी ए नवा छन्दमा ज ए वहे ए पद्धतिने हु सगम नाम आपवा इच्छु छु. दृष्टान्तथी आ तरत स्फुट थशे के हु ध्रुव 'शिशुपालवध'मा नवा प्रयोजेला वृत्तोनो उल्लेख करे छे त्या चोथी पहेलु तेओ पथ्या अथवा मजरी नोधे छे ए ए काव्यना ४था सर्गनो २४मो श्लोक छे

स्यगयन्त्यमू प्रमितचातवार्त्तस्वरा
जलदास्तडित्तुलितया तकार्त्तस्वरा ।
जगतीरिह स्फुरितचारुचामीकरा
सवितु क्वचित् कपिशयन्ति चामी करा ॥

शिशुपालवध ४, २४

आनो न्यास के हु ध्रुव नीचे प्रमाणे आपे छे

ललगा लगाल ललगा लगागा लगा

सा वि २, पृ २७७

आनो हु नीचे प्रमाणे न्यास करु

पथ्या के मजरी ललगा लगा ललगा लगा गालगा

आनो उद्भव प्रमिताक्षरा अने पृथ्वीना सगमथी थयो छे एवो मारो अभिप्राय छे एनो प्रारभ प्रमिताक्षराथी थाय छे अने थोडे जता ज्या प्रमिता-

द्रुता अने पृथ्वीना समान संधिओ आवे छे त्यांथी ए वृत्त पृथ्वीमां सरी जई छे. रसोना त्यांना नर्तन नवीन भावथी आ सरल प्रकट थशे.

प्रमिताक्षरा : ललगा लगा ललललगा ललगा

पृथ्वी : लगा ललल्गा लगा ललल्गा लगा गालगा

प्रमिताक्षरानो बीजो अने त्रीजो गण अने पृथ्वीनो त्रीजो अने चोथो संधि एक ज छे, बन्ने ल्गा लल्ल्गा छे अने त्यांथी ए वृत्तप्रवाह पृथ्वीमां सरी गयो रचना प्रमिताक्षराथी उद्‌गम पामी, ल्गा लल्ल्गाना समान संधिए पृथ्वी साथे संगम पामी अने पछी पृथ्वीमां ज वही तेना ज उपसंहारे पूर्ण थई.

आवो एक बीजो छन्द पण रमणीयत्व बतावे छे ते 'शिशुपालवध'ना १३मा सर्गनो ६९मा श्लोक छे एने ज तेथी प. ऐ. आ. (पृ. २२२) मां नूतन कहे छे:

ना मळे अवनिमां रसदार पुरा भले
स्नेहमां अनुपदे नवधा नव नूतने
वातमां अमृत भोजन-तृप्ति थती भले
श्रीपती अवनिनाथ परस्पर बेउने.

मूळ नीचे प्रमाणे छे

मर्त्यलोकदुरवापमवाप्तरसोदयं
नूतनत्वमतिरिक्ततयानुपदं दधत् ।
श्रीपतिः पतिरसाववनेश्च परस्परं
सङ्कथामृतमनेकमसिस्वदतामुभौ ॥

शिशुपालवध, १३, ६९

उपरनो अनुवाद में श्री अंबालाल पटेलना अप्रसिद्ध भाषांतरमांथी लीधो छे.

ध्रुव एनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे

रे नभे भर वडे रमणीयत्व थाय छे

मा वि २ पृ २७७

आना संधिओ एमणे गमे तेम कल्प्या होय पण हुं नीचे प्रमाणे गणुं छुं

रमणीयत्व वे नूतन गालगा ललललगा ललगा ललगा लगा

आने हुं उपरनी ज पेठे रथोद्धता अने द्रुतविलंबितना संगमथी थयो मानुं छुं

रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

द्रुतविलंबित : ललगा ललगा ललगा लगा

रथोद्धतानो बीजो संधि ललगा छे अने ए ज द्रुतविलंबितनो पहेलो संधि छे. ए समान संधिथी पद्यरचना द्रुतविलंबितमां ज वही, अने आखी द्रुतविलंबितनी पंक्ति एनो भाग बनी गई. आने एम कहेवु होय तो कहेवाय के द्रुतविलंबितना प्रारंभमां गालगा मूकवाथी आ वृत्त थयु छे. पण अहीं व्यापार उमेरणनो नथी, पण समान संधिथी बीजा वृत्तमां सरी पडवानो छे. अने ए महत्त्वनु छे.

आ पछी ध्रुव वाणिनी गणावे छे. एने विशे तेओ कहे छे: "गोळ रूपनो वाणिनी छंद छे. एनो मध्य पिंड रथोद्धताना चरण जेवो ज छे. तेना आरंभमां चार लघुनो अने अंते एक गुरुनो वधारो जोवामां आवे छे. आरंभना चार लघु रूपना संधिने लीधे रथोद्धताथी वाणिनीनी चाल नोखी पडे छे." हवे हुं वाणिनीनु लक्षण हेमचंद्रमांथी नीचे उतारुं छु. सगवडनी खातर सूत्रने बदले वृत्तिमांथी ज लक्षण लउ छु: "नजभजजेभ्य: परौ गौ चेद्वाणिनीसंज्ञं।" (छन्दोनु० पृ. १२४) उदाहरण माटे श्लोक हेमचन्द्रनो ज लउ छु:

परभृतकूजितानि जरठेक्षुरसो नवेदु-
र्मलयसमीरणो मलयज मधुसंगमश्च।
अपि न तथा हरन्ति मिलितानि मनो यथेद
मदमरलभाषितमहो खलु वाणिनीनाम्॥

एजन

के. ह. ध्रुवे न्यास आप्यो नथी एटले हु मारी रीते आपु छु:

वाणिनी : लललगा लगा ललगा ललगा लगागा

आनो मध्यपिंड मने कोई रीते रथोद्धता जेवो जणातो नथी. के. ह. ध्रुव तेना आरंभमां चार लघु जणावे छे, ते चार लघु छोडीने न्यास जोईए तो

गालगा ललगा ललगा लगागा

थाय. अंत्यनो एक गुरु वधारानो गणीने काढी नाखीए तो पण आ मध्यपिंड रथोद्धता प्रमाणे थई रहेतो नथी त्यां एक लघु वधारे छे जे उपरना न्यासमां आठमो आवे छे. खरी रीते आटला फेरफार पछी, अने आखी चाल रथोद्धतानी नथी एम कह्या पछी तेने 'रथोद्धता जेवो ज' कहेवानो खरो अर्थ रहेतो नथी मारी दृष्टिए ए नर्दटक अने वसंततिलकानु मिश्रण छे, अने मिश्रण बन्नेना समान संधिओथी शरू थाय छे.

नर्दटकः ललललगा लगा लललगा ललगा ललगा

वसंततिलकाः गागालगा लललगा ललगा लगागा

नर्दटकना त्रीजा अने चोथा संधि लललगा ललगा ए वसंततिलकाना बीजा अने त्रीजा संधि साथे अभिन्न छे, अने नर्दटकथी शरू थयेली रचना ए समान संधि सुधी आवी पछी वसंततिलकामां सरी जाय छे. वसंततिलकानो प्रथम संधि गागालगा छे तेमांनो लगा पण नर्दटकनो बीजो संधि छे; ए रीते समान संधि लगा लललगा ललगा एटला बधा गणी शकाय. धृतश्रीनुं बंधारण हुं ए रीते निष्पन्न थयुं गणुं छुं.

ते पछी हुं धृतश्री लउं छुं. माघे आ नवुं प्रयोजेलुं वृत्त छे एम के. ह. ध्रुव नोंधे छे (प. ऐ. आ. पृ. २२२). 'शिशुपालवध'ना त्रीजा सर्गनो ए छेल्लो ८२मो श्लोक छे.

तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरगजन्मनः
प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता ।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरविगतश्रियो जलनिधेश्च तदाभवदन्तरं महत् ॥

शिशुपालवध, ३, ८२

आनो न्यास के. ह. ध्रुव आ प्रमाणे आपे छे:

लललल गाल गाल ललगा ललगा ललगा लगा लगा

सा. वि. २, पृ. २८४

अने उमेरे छे के तेमां "अगियारमा रूप पछी यति छे ते आवृत्त थता संधिने नोखा पाडवा माटे मूकवी पडी छे." (सा. वि. २, २८५)

हुं धृतश्रीनो पिंड नर्दटक अने वियोगिनीना विषम पादथी बंधायेलो मानुं छुं. मारा प्रमाणे ए न्यास आम थाय:

धृतश्री: ललललगा लगा लललगा । ललगा ललगा लगालगा

अहीं नर्दटकना पांचेय संधि प्रारंभथी शरू थई उपान्त्य ललगा सुधीमां आवी जाय छे. *नर्दटकना अंत्य बे संधिओ ललगा ललगा ए वियोगिनीना विषम* पादना प्रथम बे संधिओ साथे अभिन्न छे, त्याथी पछी रचना वियोगिनीमां ज आगळ चाली तेना अंत्य लगालगा संधिए उपसंहार पामे छे. बीजी रीते कहीए तो प्रारंभथी वाचतां उपान्त्य ललगा सुधीमां नर्दटक आवी जाय छे, अने अंतना त्रण संधिओ पठतां बराबर वियोगिनीनुं विषम पाद थई

रहे छे अगियारमे अक्षरे ज्यां यति नही छे त्यांथी बराबर वियोगिनीनु पाद शरू थाय छे एटले आ यति मने नवा छन्दना मिलनस्थाननी यति जणाय छे. नहितर पण आटला लाबा एकवीश अक्षरना चरणमा यति क्याक मध्यमा आवे ज, अने मध्यने नजीकमा नजीकनो गुरु ते अगियारमो गुरु छे एटले त्या ज यति निर्णीत थाय.

आवो ज दाखलो प्रभद्रकनो मळे छे.

प्रभद्रक : ललललगा लगा ललगा लगालगा

छन्दोनु० पृ. ११७

दृष्टान्त हेमचन्द्रनु ज टाकु छु :

जयति जगत्त्रयोपकृतिकारणोदयो
जिनपतिभानुमान्परमधाम तेजसा ।
भविकसरोरुहा गलितमोहनिद्रक
भवति यदीयपादलुठनात् प्रभद्रक ॥

एजन

अही छन्द नर्दटकमा शरू थई, ललगा सधिए आवी रथोद्धतामा सरी पडे छे.

नर्दटक : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा

रथोद्धता गालगा ललगा लगालगा

नर्दटकनो बीजो सधि ते रथोद्धताना बीजा साथे अभिन्न छे अने ए सगम छन्दःस्रोतने रथोद्धतामा वहेवानु निमित्त बने छे

नवा छन्दोनी रचनामा आ पद्धतिने घणी चातुर्यवाळी अने छन्दना बधारणना ऊडा विशाल पाया पर प्रतिष्ठित थयेली समजु छु तेना परिणामो सुदर गणाय एवा मने जणाया छे आ पद्धतिथी आपणे सधिनु अस्तित्व मात्र नही, तेनो व्यापार पण जोई शकीए छीए अलबत एटलु उमेरवु जोईए के आ पद्धतिना प्रयोग करवामा पण मेळनी सूक्ष्म कलात्मक बुद्धि तो जरूरनी छे ज आ पद्धतिनो गमे तेम उपयोग करीए तो पण तेनु परिणाम सारु ज आवे एम न कही शकाय अने तेथी एमनी सुन्दरतानो अतिम प्रश्न तो हजी पहेला जेटलो ज गूढ रहे छे मात्र एटलु ज के सधि सुधीनु आपणु पृथक्करण काल्पनिक नही, पण वृत्तोना बधोना साचा ख्याल उपर मडायेलु छे एटलु प्रतीत थाय छे

आगळ (प्रकरण ४, पृ. १४०) मा उद्गताना मेळनी चर्चा करता उद्गताने में द्विदल छंद तरीके न्यासी बताव्यो हतो अने त्या बहुधु हतु के तेना प्रथमार्धमा मजुभाषिणी अने अपरवक्त्रना विषम पादनो एक प्रकारनो सयोग छे ते हवे अही जोईए हु फरीथी ए प्रथमार्धनो न्यास अही बतावु छु

उद्गता प्रथमार्ध } ल्लगा लगा ललल्गा ल'ल्ललललगा ल्गालगा

अही पहेला त्रण सधि अने छेल्ला सधिथी मजुभाषिणी बने छे, अने छेल्ला बे सधियी अपरवक्त्रनु विषम पाद बने छे बन्नेमा अत्यसधि समान छे अने आवी पक्तिमा ए एक ज सधिमा बन्ने वृत्तोनो अभिन्न सधि सिद्ध थाय छे एटले अही ए सगम पद्धतिने मळनु आवे छे पण सगममा समान सधियी एक वृत्त बीजामा मळी, पछी ए बीजाना न्यासे आगळ चाले छे अही एम बनतु नथी समान सधि बन्नेमा अत्य छे एटले एम बनवु पण अशक्य छे अही सगमथी तद्दन नोखो ज व्यापार ए थाय छे के एक वृत्त बीजा वृत्तनो असमान सधि पोतामा लई लईने अतना समान सधिए विराम पामे छे आ व्यापार विलक्षण छे आवो व्यापार बीजा कोई दृष्टान्तमा में जोयो नथी मने आ सुमेळ करनारो व्यापार जणायो नथी आखा उद्गता वृत्त माटे में विशेष त्याना प्रकरणमा ज कहेलु छे एटले अही आटलु बस थशे

हवे हु एवा नवा वृत्तोना दाखला लउ छु, जेमा सयोग पामेला बन्ने वृत्तोमा समान एक के बे सधिओ होय छे, पण ए समान सधिए पहेलु वृत्त बीजा साथे सगम पामतु नथी पण समान सधिओ भिन्न रही एक पछी बीजा आवी सबळाय छे आने शृखला पद्धति कही शकाय आनु पहेलु दृष्टान्त अश्वललित छे भट्टिए तेनो प्रयोग कर्यो छे

विलुलितपुष्परेणुकपिश प्रशान्तकलिकापलाशकुसुम
कुसुमनिपातचित्रवसुध सशब्दनिपतद्द्रुमोत्करकुनम् ।
शकुननिनादनादितककुब्विलोलविपलायमानहरिण
हरिणविलोचनाधिवसति बभज पवनाऽत्मजो रिपुवनम् ॥[१]

भट्टिकाव्य ८, १३१

आमा नर्दटक अने जलोद्धतगतिनु मिश्रण छे पण मिश्रणनो प्रकार उपरना मिश्रणा करता भिन्न छे, अने परिणाम सुमेळवाळु आव्यु नथी जलोद्धतगतिने में मुख्य वृत्तोमा स्थान आप्यु नथी, कारण के मारी दृष्टिए ए सुदर नथी, अने कविओए बहु वापरेलु पण नथी ते विशे के ह ध्रुव कहे छे.

१ छदादोष परिहरवा बीजी अने त्रीजी पक्तिनो पाठ में सुधार्यो छे

"चार रूपनो एक अखड छद जलोद्धतगति छे भारवि ने माघे ए छद वापर्यो छे एना चरणनो न्यास.—

लगाल लल्गा । लगाल ललगा

एवो छे "एमा छट्ठा रूप पछी यति छे बे खड समान होवाथी यतिथी नोखा पाड्या जणाय छे." (सा वि'भा २, पृ २८०)

उपर बतावेल पद्यभारचिह्नो कदाच अभिप्रेत स्थानोथी खसी गया हशे कदाच पहेला यतिखडमा नथी जणाता त्या वर्ताए मूक्या हशे, पण मारे एनी साथे सबध नथी मे ह ध्रुवे जे रीते सधिओ छूटा पाड्या छे ए रीते पठता रचना शुद्ध वृत्तनी रहेती नथी ए आवृत्तसधि चतुष्कल रचना बनी जाय छे अने ए रीते ए नर्दटक जेवा शुद्ध वृत्त साथे जोडाई न शके पण तेनु बीजी रीते पठन थई शके एम छे एने पृथ्वीना सधिओ गणी शकाय

पृथ्वी लगा ललल्गा ल्गा लल्ल्गा लगा गालगा
आमाथी छेल्ला बे सधिओ कापी नाखीए तो बाकी उपर आपेल जलोद्धतगति थई रहे पण ए पृथ्वीनु अपग स्वरूप छे एने कोई योग्य उपसहार मळतो नथी अने नर्दटक साथे जोडाता पण एनी पगुता कायम रहे छे

हवे हु अश्वललितनो न्यास रजू करु छु

अश्वललित ललललगा लगा ललगा । लगा ललल्गा लगा ललल्गा

पहेला त्रण सधि सुधी नर्दटक चाले छे धृतश्रीनी पेठे ए त्रण सधिओ पछी एटले अगियारमे अक्षरे यति आवे छे नर्दटकनो बीजो त्रीजो ए बे सधिओ

४ दृष्टान्त अतीव सुखिया शिरे निवसता
समीर लहरे लहे शितलता
विना पय पयोधरेय धवला
धरे जवनिका मने मनवता
श्री अबालाल पटेलना अनुवादमाथी

मूळ

समीरशिशिरः शिरसु वसता
सता जवनिकानिकामसुखिनाम्।
बिर्भात जनयनय मुदमपा–
मपायधवला बलाहकतती ॥

शिशुपालवध ४, ५४

લગા લલલગા થતાં, જાણે સમાન સંધિઓના સબધે જલોદ્ધતગતિ ત્યાં જોડાઈ જાય છે. એથી લગા લલલગાના ત્રણ આવર્તનો થાય છે, તે કાંઈ ગુરૂપ દેખાતો નથી. અને વૃત્તને લાયક ઉપસંહાર એને મળતો નથી. વૃત્ત જાણે લગા લલલગાનાં આવર્તનોમા ચડી જઈ એનુ અનાવૃત્તસંધિ સૌંદર્ય ખોઈ બેસે છે. અહીં સમાન સંધિઓ આવે છે પણ સમાન સંધિએ વૃત્તો સંગમ પામતા નથી પણ વૃત્તોના સમાન સંધિઓ એક પછી એક આવી જોડાઈ જાય છે, સાંકળની પેઠે.

આના જેવુ જ મુદ્રક છે:

મુદ્રક: ગાલલગા લગા લલલગા । લગા લલલગા લગા લલલગા

છ શા. ૭, ૨૫

અહીં યતિ સુધીનો ભાગ નર્દટકને બદલે વંશપત્રપતિતનો છે, એટલો ફેર છે. વંશપત્રપતિત નર્દટકની એક વિકૃતિ છે એ હુ આગળ કહી ગયો છુ (ગત પૃ. ૧૩૪) અને આ રચના અશ્વલલિતથી કોઈ રીતે વધારે સારી નથી.

આને કાંઈક મળતું મિશ્રણ, હેમચન્દ્ર દીર્ઘાર્ચિ નામનુ બાવીસ અક્ષરનુ વૃત્ત આપે છે, તેમાં મળી આવે છે. તેનો ન્યાસ નીચે પ્રમાણે છે:

દીર્ઘાર્ચિ: ગાગાગા લલગા લગા લલલગા । લગા લલલગા લગાલગા

છન્દોનુ૦ પૃ. ૧૬ઞ

આનો પહેલો લાંબો યતિખડ તે શાર્દૂલવિક્રીડિતનો છે. તે પછીનો ખંડ તે મંજુભાષિણીના છેલ્લા ત્રણ સંધિઓ છે. બન્ને પાસે પાસે મૂકવાથી મિશ્રણ કઈ રીતે થયુ છે તે સમજાશે

શાર્દૂલવિક્રીડિત: ગાગાગા લલગા લગા લલલગા। ગાગાલગા ગાલગા

મંજુભાષિણી લલગા લગા લલલગા લગાલગા

હવે અહીં મંજુભાષિણીના પહેલા ત્રણ સંધિઓ તે શાર્દૂલના બીજો ત્રીજો ચોથો સંધિ છે. જેને હુ સંગમ પદ્ધતિ કહુ છુ તે પ્રમાણે તો મંજુભાષિણીનો છેલ્લો લગાલગા માત્ર બાકી લગાડવાનો રહે. અહીં એમ કર્યું નથી. પણ શાર્દૂલના લગા લલલગા પછી મંજુભાષિણીના લગા લલલગા ફરી મૂકીને પછી મંજુભાષિણીને અંત સુધી ચલાવેલો છે અશ્વલલિતમા બે જોડાતા છન્દોમા સંગમ જેવો કોઈ સામાન્ય સંધિ નથી. અહીં લલગાને સામાન્ય સંધિ ગણી શકાય, છતા લલગા સંધિમા બન્ને છન્દોનો સંગમ થતો નથી, પણ અશ્વલલિતની પેઠે જ બન્નેના સામાન્ય સંધિઓ એક પછી એક આવે છે અકસ્માત્, આ પાસે પાસે આવતા સંધિઓ પણ અશ્વલલિતના જ છે,—લગા લલલગા, પણ એની પછી મંજુભાષિણીના લગાલગાથી અહીં ઉપસંહાર થાય છે એટલુ વિશેષ છે

हवे हुं नवा छंदो बनाववानी एक बीजी पद्धतिनुं विवरण करीश. आ पद्धति ते अमुक वृत्तमां एक के बे संधिओ उमेरवानी. आना प्रथम दृष्टान्त तरीके हुं अतिशायिनी लउं छुं. तेनो उल्लेख के. ह. ध्रुवे करेलो छे (प. ऐ. आ. पृ. २२२). ए पण माघे ज 'शिशुपालवध'मां प्रयोजेलो छे:

इति धौतपुरन्ध्रिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनीमपमलाङ्गभासः।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्यपान्ततिपुं मंक्तुमीषे॥

शिशुपालवध, ८, ७१

आ श्लोकमां आवता अतिशायिनी शब्द उपरथी ज वृत्तनुं ए नाम पडेलुं छे. तेनो न्यास:

अतिशायिनी: ललगा ललगा लगालगा । लललगा लगागा

आ वृत्तना प्रथम त्रण संधिओ स्पष्ट रीते वियोगिनीना विषमपाद साथे समान छे. अने ए पाद पूरु थतां त्यां यति आवे छे ए पण ए पादनुं समग्रत्व बतावे छे. ते पछी आवता बे संधिमानो एक्केय वियोगिनीमां आवतो नथी. वियोगिनीना संधिओ साथे कशा पण संबंध विना वियोगिनीनी पंक्ति साथे तेमने जोडी दीधा छे. अलबत्त तेमानो छेल्लो लगागा छे ते, आपणे आगळ जोई गया तेम, घणा वृत्तोमां उपसंहारार्थे आवे छे, तेनी पहेलानो ललगा पण घणा वृत्तोमां आपणे जोयो छे, पण ते कोई रीते वृत्तना आगळा भाग साथे संधातो नथी. कोई ज छन्दमां अंते ललगा लगागा आवतुं नथी. आ नवो संयोग सुभग जणातो नथी अहीं उमेरण एक वृत्तनी पंक्तिने अंते वळगाडेलुं छे, पण कोई वृत्तमां ते वचमां पण आवे छे. एवुं एक दृष्टान्त सद्गत नानालाल कविमांथी मळे छे·

वीत्या कईक दिवसो प्रभु! त्हारि कुंजे,
वीती अनेक घडि त्हारि स्मृती विहोणी,
त्हारे पदे रविनी मंडलि रास खेले
ते जन्मयोग गित गुंजति आज स्मृती जगावे.

प्रथम त्रण पंक्तिओ वसंततिलकानी छे. अने छेल्ली पंक्तिमां ए ज छंदने एक ललगा संधि उमेरीने विस्तारेलो छे छेल्ली पंक्तिनो न्यास जोवाथी· आ समजाशे.

गागालगा ल्ललगा लल्गा ललगा लगागा

वसततिलकामा एक लल्गा सधि हता ज त्या बीजो मवारीने मूक्यो छे आ नवो प्रयोग कई सुदर नथी लागतो, अने एनु बहु अनुकरण पण नथी थयु नवा सधि उमेरवाना सौथी उत्तम दाखला शालिनीमा मध्यखड उमेराईने मदाक्रान्ता बन्यो ए अने शालिनीना पहेला यति खडमा लगागा उमेराई स्त्रग्धरानो प्रथम यतिखड बन्यो ए छे आ सिवाय आना महत्त्वना दाखला नथी एटले वधारे शोधीने मूकतो नथी

आधुनिक कविनो एक बीजो प्रयोग नोधु प्रथम एनु अवतरण ज लउ छु

म्होटा म्होटा पत्थरोना कठण तलनी हार सूती किनारे
घू घू घू घ् घोर गाजी प्रबल विचिओ वारिधी ज्या विसारे,
लावा सीधा सप्तवर्णी किरण सरता सूर्यना वीचि सगे
जाणे गूथे पृथ्विकाजे विविध वरणु वस्त्र मार्तंड रगे!
'महालक्ष्मीना समुद्र किनारे', नलिनीपराग, पृ ४०

आ सग्रहमा आ न्यासना बीजा पण काव्यो छे ते सर्वना पठन उपरथी न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे

गागागागा । गालगागा । ल्ललललगा । गालगा गाल्गागा

पहेलो, त्रीजो अने चोथो ए यतिखडो मळी मदाक्रान्तानु चरण थाय छ वचमा गालगागानो एक यतिखड उमेर्यो छे एटलो फेर छे ए उमेरेला यतिखडमा सर्व गुरु नथी, एटलो ए खड स्वतत्र यतिखड थवाने माटे जरा हळवो पडे छे बीजी बाजु त्या प्रथम खडने ज बेवडीने फरी मूक्यो होत तो एकविधताने लीधे ए शोभत नही वळी आना विरुद्ध ए पण कहेवानु छे के कविओए पुष्कळ वापरेला छदोमा क्याई चार यतिओ एटले के चार यतिखडो होता नथी एटला माटे पहेली यति लुप्त करवी होय तो ते शक्य छे, अने एम करवु होय तो, स्त्रग्धरामा चार गुरुओने लगागा लगाडेलु छे तेने बदले अही पाच गुरुओने लगागा लगाडयु एम कही शकाय पण तो पाच गुरु टूका वैश्वदेवीमा पण रचनाने भारे अने शिथिल करे छे, तो अही तो एम विशेष थाय, अने एम करता पण, वचलो यतिखड जे अही मदाक्रान्तानो छे ते मेळमा टको पडे

आम आ नवा उमेदवारना जमा पासा करता उधारपासु मोटु छे एम प्रथम दृष्टिए तो जणाय छे —वधारे प्रयोगो पछी कई जुदु जणाय तो कोण जाणे?

आ पछी नवा छन्दो बनाववानी एक प्रक्रिया छुं ए गणावीश जेमां एक वृत्तमांथी एक के बे संधि काढी तेनी जगाए एक के वधारे संधिओ मुकाय छे. आनो सरल अने सुंदर दाखलो शालिनी अने वातोर्मिनो छे;

शालिनी : गागागागा । गालगा गालगागा

वातोर्मि : गागागागा । ललगा गालगागा

एक आवुं बीजुं दृष्टान्त पद्यरचनामां नवुं करवाना शोखीन राजाराम रामशंकर भट्टना 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमांथी मळे छे. ए छन्दनुं नाम बर्ताए अहिमणि आपेलुं छे. ए नाम माटे मने कोई प्रमाण मळ्युं नथी. आने हेमचन्द्र मृदंग कहे छे (छन्दोनु० पृ. ११अ). 'रणपिंगल'मां पण ए ज नाम छे, बीजुं कोई नथी :

अहिमणि

हुं एकलो ज अति सत्वर दोडतो जई,
बाडी कृपाण अरिमस्तक घातकी थई,
शत्रे पडी द्विरदने ज्यम केसरी हणे,
युद्धे मतंग-रिपुने क्षणमां हणुं त्यम.
नागानन्दनुं भाषान्तर पृ. ४७

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

मृदंग अथवा अहिमणि : गागालगा लललगा ललगा लगालगा

वसन्ततिलकानो अन्त्यसंधि लगागा हतो तेनी जगाए अहीं लगालगा मूकी दीधो छे आ फेरफारनुं वर्णन कोई एवी रीते करे के अहीं वसन्ततिलकामां उपान्त्य स्थाने एक लघु उमेरी दीधो छे पण आपणे जो समजीए के वृत्तोनुं बंधारण संधिनी गोठवणीथी थयुं छे तो अहीं आपणे एक संधिनी जगाए बीजो संधि मुकायो छे एम'ज कहेवुं जोईए. एनुं आकलन एक आखा संधि तरीके ज थवानुं छे. ए नवो आवेलो संधि ए स्थान उपर आववाने योग्य होवो जोईए, जेमके अहीं लगालगा उपसंहारने माटे समर्थ छे. इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रानो छेल्लो संधि ए ज लगागा छे ते इद्रवंशा वंशस्थमां लगालगा बने छे. अदलोअदल तेवो ज आ प्रयोग छे.

प्रो. ठाकोरे आ मृदंगने छन्दनी चर्चा कर्या विना काव्योमां वर्णेलो छे. जेमके :

मृत्यू माटे क्याय को ठाम छे ना,
तणूंये ना नैव एणे हणाय;
तू प्राण, तूं अमरजीवन, तूं हि छो गति,
तू तत्त्व, तू सत, विकारतणी तु विकृति !
'ऍमिलि ब्रॉन्टीनी अद्वैत भावना,' भणकार, पृ. १६७

पहेली बे पंक्ति शालिनीनी छे, अने तेनी साथे मृदंगनी बे पंक्ति मूकी श्लोक रचेलो छे. आखु काव्य आ श्लोकबंधनु छे.

आवी ज रीते श्री उमाशंकरे रथोद्धताने अंते एक गुरु उमेरी श्लोको लख्या छे त्यां पण मूळ एक संधिनी जगाए नवा बे संधिओ आवे छे:—

थै गदाभिमुख, नाथ हे सुतेला,
भगिनी विसरि के शु युद्धघेला ?
नित्य हु परिघबाहुमा समाती,
अन्य त्यां दयित आज रंगराती.
'गांधारी,' प्राचीना, पृ. ३३

आनो न्यास: गालगा ललगा लगा लगागा

रथोद्धतानो अंत्य त्रीजो संधि लगालगा हतो ते एकने बदले हवे लगा लगागा एम बे संधि थया.

आ ज विलापमा आगळ एक श्लोक आवे छे ते जोईए:

द्यूतने दिन मळेलु द्रौपदीने
दास्य, आज भुजनेय युद्धद्यूते.
धर्म, तेंय अमने दिसे विसार्यां !
ऊरुघात दइ युद्धनिषिद्ध ! हार्यां !
एजन, पृ. ३४

पहेली त्रण पंक्तिओ आगळ जोयेली अंतगुरुलग्न रथोद्धतानी छे पण चोथी नीचे प्रमाणे छे:

गालगा लललगा ललगा लगागा

आने उपरनी पंक्तिओ साथे सरखावता एम कहीशु के उपान्त्य लगाने बदले अही ललगा छे. अने ए रीते रथोद्धतामा फरी वधारो थयो छे. पण बीजी रीते एम पण कहेवाय के आ वसंततिलकानो आद्य गुरु तोडीने अर्थात् पहेलो संधि गागालगानी जगाए गालगा मूकीने करेली पंक्ति छे आ पंक्ति आवी रीते

बन्ने वृत्तो साथे संबंध धरावतो देखाय छे तेनु कारण ए छे के रथोद्धता ए, आगळ जोईनु तेम, वसततिलकामांथी ज ऊतर्यो छे. एक बीजो पण जरा जुदा प्रकारनो प्रयोग छे ज्यां वर्धित स्वागता वसंततिलकानी पासे जाय छे.

छे आसु जीवन नरी ठगबाजी
छे धूर्त तार खिचतों जम पाजी!
शूं ना लह्यो ? मति अरे तम लाजे;
शोधो गुरु मृगविहंग समाजे!
'ज. पि. त्रि. नु अवसान', भणकार, पृ. ११०

आनो न्यास : गागालगा लललगा ललगागा

पहेला बन्ने वसततिलकाना अखंड सधिओ छे. छेल्लो सधि स्वागतानो छेल्लो छे. आने 'रणपिंगल'मां नीरातिक कहेलो छे.

नीरातिक : गागालगा ललगा ललगागा
र. पि. ३०४

आनी जोडीनो विर्धित रथोद्धता छन्द 'भरतनाटयशास्त्र'मां एक जगाएथी जडी आवे छे:

आद्ये चतुर्थदशमाष्टमान्तगा
यस्या गुरूणि च भवन्ति पादत ।
ज्ञेया ततोऽनुकरणोद्भवा हि सा
विद्लोकजाति जगती समाश्रिता ।।
भ ना शा ३२, १४८, पृ. ३९६

न्यास : गागालगा ललगा लगालगा

'भरतनाटयशास्त्र'मा आ जगतीवृत्तने ललिता कहेल छे एम हु मानु छु[३] 'रणपिंगल'मा आने ललिता अथवा सुललित कह्यो छे. (पृ. ३१०). हेमचन्द्र पण आने ललिता नाम आपे छे (छन्दोनु पृ ८अ).

---

३ उपर आपेला न्यासवाळो श्लोक ते लक्षणछद छे. अने तेमा आपेला लक्षण प्रमाणे ए छद बेसी रहे छे एटले ए छद साचो छे एटलु नक्की थाय छे. आमा एनु नाम आपेलु नथी. हु मानु छु एनु नाम एनी पछी आवता १४९मा श्लोकमा छे. ए श्लोक नीचे प्रमाणे छे.

आद्ये चतुर्थनियमे नैधने ह्यष्टमे तथा।
यत्र दीर्घाणि पादे स्युर्जगती ललिता तथा। एजन, श्लो. १४९

आ ज संदर्भमा एक बीजु दृष्टान्त पण उमाशंकरनु ज लईए:

चरणरेणु उरआंगणे प्रियानी
नयनअंजन समान ते प्रमाणी,
अलकनी लट सुगंध फोरती जे,
सव सुकाव्य विण क्यां मळे ज बीजे ?

'स्वागत काव्य', वसन्त कवि

आनो न्यास: लललगा ललगा लगा लगागा

अही पण आगळ आवी गयेल प्रियंवदाने अंते एक गुरु मूक्यो छे. मूळ प्रियंवदा. ललगा ललगा लगालगा छे तेनो त्रीजो छेल्लो संधि लगालगा छे तेमां अंते गुरु भळवाथी संधिओ लगा लगागा थई गया — पहेला श्री उमाशंकरना वर्धित रथोद्धतानी पेठे ज

पण आमां ए याद राखवु जोईए के जे कंई भळे तेथी त्यां संधि बनवो जोईए अने ए संधि समग्र पंक्तिना मेळमां बेसवो जोईए मात्र प्रक्षेप बस नथी, ऊलटो ए मेळमां विक्षेपरूप थाय. आनो एक दाखलो मने भट्टिना 'रावणवध'मां मळे छे ए काव्यने अंते ए आवे छे:

आनी पछी एनु दृष्टान्त आवे छे:

एसो वनसमहुआसिआअणो
सेलो व्व पुव्वपणवस्य छालिओ।

. . . .

. . . . एजन, श्लो १५०

आनी वाकीनी बे पंक्तिओ उपरना न्यासथी भिन्न न्यासवाळी छे एटले एने भ्रष्ट गणी उतारतो नथी. आ बे पंक्तिओ १४८मा श्लोकमां आपेला लक्षण प्रमाणे मळी रहे छे एटले वचमां जे १४९मा श्लोकमां ललिता नाम आप्यु ते आनु ज. पण आ श्लोकमां आपेलु लक्षण १४८ अथवा तेना दृष्टान्तरूप १५०मा श्लोकना न्यासने मळतु नथी तेम ज तेमां नियम शब्दनो अर्थ बेसतो नथी. पण आ लक्षणनो शुद्ध पाठ मने निर्णयसागरनी आवृत्तिमांथी मळे छे:

आद्ये चतुर्थं दशमं नैधन ह्यष्टमं तथा।
यत्र दीर्घाणि पादे स्युस्तद्वृत्तं ललितं स्मृतम्॥

भ ना नि. ३२, १५१ पृ. ५५३

यत्रे अनुष्टुपो सरस्वावता निर्णयसागरनो पाठ साचो लागे छे. पण आ ज आवृत्तिना आ अनुष्टुप उपर आवता यत्रे श्लोको भ्रष्ट छे ते घोलवा साचे सरखावतां तरत जणाई आवशे मने ए आपवानी जरूर लागती नथी.

काव्यमिद विहित मयावलम्या
श्रीधरसेन नरेन्द्र पालितायाम्।
कीर्तिरतो भवतान् नृपस्य तस्य
प्रेमकर. क्षितिपो यत प्रजानाम्॥

भट्टिकाव्य, (निर्णयसागर प्रेस) २२, ३५

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

गा ललगा ललगा लगा लगागा

आ नवी रचना ते माल्यभारिणीनी विषम पक्तिमा प्रथम गुरु मूकवाथी थयेली छे

माल्यभारिणी ललगा ललगा लगा लगागा
लगागा ललगा लगा लगागा

भट्टिनु नवु वृत्त समवृत्त छे तेना पठनमा जोईए तो प्रक्षिप्त थयेलो गुरु अलग ज रहे छे तेनो कोई नवो सधि बनतो नथी. तेनी निर्वाहता एक ज रीते गणी शकाय के ते मात्रागर्भ अर्धसमवृत्तना मात्राविभागमा आवे छे. आ विभागमा आपणे गालगा सधि अर्धसमवृत्तमा तेम ज एनी साथे सरखावी शकाय तेवा वशस्थपक्तिमा पण जोयो छे

आ वृत्तने कोई पिंगळे मान्य कर्यु जणातु नथी भट्टिए नवा वापरेला अश्वललित जेवा छदो पिंगळमा मळे छे, तेम आ मळतो नथी. भट्टि काव्यनी जयमगल टीकामा आ श्लोकना वृत्त विशे कई लख्यु नथी भट्टि उपर मल्लिनाथनी टीका छे, अने मल्लिनाथ हमेशा श्लोकनु वृत्त पण कहे छे, पण आ श्लोक एणे टीका करेल भट्टिकाव्यमा मळतो नथी तेथी आ श्लोकने प्रक्षिप्त मानवो के नही ए प्रश्नने हु स्पर्शवा मागतो नथी पण आ उपरथी एटलु तो कही शकाय के आ श्लोकना वृत्तने पिंगळमा स्थान मळ्यु नथी. अने मारी दृष्टिए ए कोई सारा मेळवाळु वृत्त नथी भट्टि मोटो समर्थ विद्वान हतो ए खरु पण तेना छन्दोना प्रयोगोमा मने घणी जगाए क्षतिओ जणाई छे

आ पछी आपणे एक नवो छद पृथ्वीतिलक जे श्री ठाकोरे रचेलो छे ते जोईए आ छन्द विशेष करीने तेमणे पोताना सोनेटोमा वापर्यो छे अने त्या पण कोई आखु सोनेट ए वृत्तमा लख्यु नथी एनी पक्तिओ पृथ्वी छदना सोनेटमा विखरायेली मळी आवे छे साधारण रीते त्रण चार सळग पक्तिओ पण मळती नथी मात्र एक ज सोनेटमा एक साथे आठ पक्तिओ ए छदमा छे ए सोनेट हु दृष्टान्त तरीके उतारु छु.

એક હાય

ગયૂ તુજ જુવાનિ જોમ, પ્રિય હૃદય ગાદલીયે ગઈ,
ગયા પ્રિય સુતાસુતો, તડ તડ તુટિ ગૈ ઉમેદો વધી
પ્રભા ન, ન હિ મિષ્ટતા, સુખસમય સૌ તણા ન તે સાથિઓ,
ન તે ગરવુ કામકાજ, મહિં ભળત તે વિનોદોય ના;
રહ્યૂ ફકત આયખૂ, રતિગતિસુરહીન નૈરાશ્યનૂં,
રહી ફકત ડાકણી હરતિ રુધિરધાતુઓને જરા,
રહી દિનદિને સુતીક્ષ્ણ કરકસરની ભુંડી કાતરે,
અને અવયવો વિહીન પણ રહ્યુ સ્વમાન તો આગલૂ.

અરે અરર ભાઇ રે ! તુજ દશા ન જોઈ જતી !
કચૂમર કરી જમાડુ મુજ ઉર રહને, રહને એમ જો,
લગીર પણ થાય નિર્વૃતિ,—અરે વકૂ હૂય શૂ !

પ્રભો ! યમ ! કરાલકર્મ પણ સદયચિત્ત જે કો મહા
વસે વલ કિહાક વિશ્વમહિં !—હાય મ્હારી શ્રુણો !
લિયો ઉચકિ સદ્ય દુ:ખદરિયાથિ આ બન્ધુને !

મ્હારા સોનેટ, પૃ. ૩૩

આ સોનેટના આઠ, ત્રણ, ત્રણ, પંક્તિના એમ ત્રણ વિભાગો પડે છે તેમાનો આઠ પંક્તિનો પહેલો આખો વિભાગ પૃથ્વીતિલકનો છે. પછીની ત્રણ પંક્તિઓમા પહેલી ત્રીજી પૃથ્વીની છે, વચલી પૃથ્વીતિલકની છે, અને છેલ્લી ત્રણમા પહેલી પૃથ્વીતિલકની છે, છેલ્લી બે પૃથ્વીની છે

આ નવા પ્રયોગની પંક્તિ આ સંગ્રહમા સૌથી પ્રથમ ૪ થા કાવ્યમા આવે છે, અને ત્યા સ્વોપજ્ઞ વિવરણમા પ્રો ઠાકોર એ વિશે કહે છે. "પંક્તિ વચ્ચેના ત્રણ લઘુના ઠેકાણે છ એ રૂપનો; પણ—અર્થ મવાદી લય જાળવીને—પૃથ્વીની પંક્તિમા ગમે ત્યા ત્રણ માત્રા ઉમેરવામા આવે (।।। લલલ, ઽ। ગાલ, ।ઽ લગા, એમ ગમે તે રૂપની) અને એમ જે જે અતિપૃથ્વી પંક્તિ થાય તે તે સર્વને પૃથ્વીતિલક નામ આપુ છુ" ('મ્હારા સોનેટ' પૃ ૫૬) પૃથ્વીનુ માપ નજર સામે રાખવા નીચે ઉતારુ છુ

પૃથ્વી : લગા લલલગા લગા લલલગા લગા ગાલગા

આમા વચ્ચેના ત્રણ લઘુ એટલે ઉપર દર્શાવેલ સંધિઓમાં ચોથો સંધિ લલલગા. એમા ત્રણ માત્રાઓ લલલ, લગા કે ગાલ એમ ત્રણેય રીતે ઉમેરવાનુ ઉપર કથન છે. બીજી રીતે કહીએ તો પૃથ્વીમા પ્રાચીન પરંપરા પ્રમાણે આઠમે આવતી

यति पछी त्रण मात्रा उमेरवानी. हवे उपरनी पृथ्वीतिलकनी एक पंक्तिनो न्यास नीचे उतारुं छुः

पृथ्वीतिलक: लगा ललगा लगा ललल ललगा लगा गालगा

उच्चारणमां आ प्रत्यक्ष करवा खातर एम कहुं के पहेली अने त्रीजी पंक्तिमां 'हृदय' अने 'समय' पृथ्वीतिलकना उमेरणनी त्रण मात्राओ छे. अर्थात् अही ललगा संधिने बदले लललललगा संधि मुकाय छे.

आ प्रकारनी बधी पंक्तिओमां वधारानी मात्राओ तेमणे पहेला नियम प्रमाणे ए ज स्थाने उमेराई छे. पण आखा संग्रहनी पंक्तिओ जोतां मने कोई जगाए लगा के गाल रूपे ए मात्राओ उमेरायेली मळनी नथी. ए रूपना लगात्मक न्यासो नीचे प्रमाणे थायः

लगा ललगा लगा गाल ललगा लगा गालगा
लगा ललगा लगा लगा ललगा लगा गालगा

आ वधाराना गाल के लगा, ललगामां वच्चे पण गमे त्यां आवी शके के नहीं ए प्रश्न हजी रही जाय छे. पण कविए पोते एक्केयनो प्रयोग कर्यो नथी एटले ए प्रश्नगा हु ऊतरतो नथी. त्रणेय लघु उमेराय छे ए स्थाने (अने दाखला तो बधा एना ज छे) ए छ जेटला लघुओनी वतार शैथिल्य आणे छे, अने पठनमा क्यांक गोटाळो पण थाय छे. पृथ्वी छंदनी नवी कविता माटेनी खास लायकात के 'एमां गुरु स्वरो लघु स्वरोना खडकला नथी'[४] ए एमने हाथे ज खंडित थाय छे अयतिक रामवृत्तोमां बनाय छ लघु एक साथे मळता नथी. एवा संधि पछी तो यति आवश्यक बने छे. गाल रूपे ए त्रण मात्राओनु उच्चारण पण मेळबद्ध थतु नथी आगला लगानी साथे ते बराबर संधातु नथी. अने लगा रूपना उच्चारणमा बे लगा पासे पासे आवे छे ते कर्णकटु लागे छे. वळी कोई अयतिक वृत्त सत्तर अक्षरोथी वधारे सख्यानु हजी आपणे जोयु नथी. यति विना आटलु बीस अक्षर जेटलु लवाण पंक्ति खमी शके के केम ते जोवानु रहे छे आ रीते मने आमा सुमेळ जणातो नथी. एटलु उमेरीश के आटला लघुओ एक साथे आवता आर्यानी पेठे जो पहेला लघु पछी शब्दान्त आवे तो कदाच आनों दुर्मेळ हळवो थाय उपरना दृष्टान्तोमा एवी थोडी पंक्तिओ छे, ते बीजी साथे सरखावता आ स्पष्ट थशे. आ विकृतिनु अनुकरण थयु नथी अनेकने हाथे प्रयोगो थता कईक नवो मेळ देखाय तो कही शकाय नही. पण ए सघळु छता, उद्वेगनी उत्कटता दर्शावता आवी पंक्तिओ क्याक क्याक आवे तो ते दोषरूप न थाय, क्याक भूषणरूप पण थाय.

---

४. 'भणकार', १ली आवृत्ति, पृ. (१४)

जेम एकाद अक्षर वधवाथी संधिफेर थई एकनी जगाए बीजो संधि के संधिओ आवे छे तेम एकाद अक्षर वधवाथी पण नवो संधि बनी नवो छन्द बने छे. तेनो प्रसिद्ध दाखलो प्रहर्षिणी-रुचिरानो छे.

प्रहर्षिणी: गागागा । ललललगा लगा लगागा

रुचिरा: लगालगा । ललललगा लगालगा

अहीं प्रहर्षिणीना अरयसंधिनो गुरु जता, तेना छेल्ला बे संधिनी जगाए रुचिरानो लगालगा एक संधि आवे छे. आ फेरफार आपणे आगळ रथोद्धतामां गुरु भळता जे फेरफार जोयो तेथी ऊलटा प्रकारनो थयो बीजो अर्वाचीन साहित्यमाथी आपु छु, ते के. ह. ध्रुवनो छे:

> शुद्ध शुद्धतर शुद्धतमे
> बुद्धि लुब्ध गम मुग्ध भमे !
> रम्य रम्यतर रम्यतमे
> कल्पना रमतियाळ रमे.

सा. वि २ पृ. ३२५

आमा स्वागताना छेल्ला ललगागा संधिनी जगाए तेना छेल्ला गुरुना खंडनथी थतो ललगा संधि आवे छे. ललगा जोके बहु थोडी जगाए उपसंहारमा आवे छे पण अहीं शोभे छे.

आनो विशेष दाखलो प्रो. ठाकोरे जेने गज छंद कह्यो छे ते छे. 'आपणी कवितासमृद्धि'मा सद्गत गजेन्द्र बूचना 'गिरनारनी यात्रा'ना काव्यमा एक नवा छंदनी पंक्ति जोता तेनु तेमणे 'गजछन्द' एवु नाम आप्यु छे तेमणे अवतारेल भागमाथी ज हु ए दृष्टान्त टाकु छु

> अधवचे शिर ऊपर आ उभो
> सडक भैरवनो भय प्रेरतो;
> तहिं चडी पडनू मुकता मळे
> नृपतिनूं पद भावना फळे १४

आपणी कवितासमृद्धि (आ १ली) पृ १३

काव्यमा द्रुतविलंबित विस्तारथी वपरायेलो छे, अने तेमा क्याक क्याक गजछन्दनी पंक्तिओ वेरायेली मळी आवे छे उपरना श्लोकमा पहेली त्रण पंक्तिओ द्रुतविलंबितनी ज छे, अने चोथी आ नवा गजछन्दनी छे

गजछन्द . ललगा ललगा लगालगा

अही स्पष्ट रीते द्रुतविलंबितना छेल्ला बे सांधिओ एटले त्रीजा अने चोथा ललगा लगा हता तेमांना ललगानो पहेलो ल चपाई जाय छे एटलु ज बने छे. ए चपाता पाछळ लगालगा एवो संधि रहे छे जेमा उपसंहारनुं सामर्थ्य छे. इन्द्रवंशा वगरेमां ए उपसंहारमां आवे छे, अने वियोगिनीमां तो त्रण बे सांधिओ ललगा लगालगा ए प्रमाणे-ज छे. एटले पंक्ति शोभे छे।'

५. आ संबंधी प्रो. ठाकोर पाम्यना टिप्पणमां नोंध करे छे · "वळी त्रिष्टुपजातिनो नभरलग मापनो एक छंद अही देखाय छे. . . जे 'रणपिंगळ' जेवा मोटा ग्रंथमा पण नोंधायो नथी, एटले एने माटे कविना नाम उपरथी गजछन्द नाम सूचवु छु अने द्रुतविलंबित अने गजछन्दना मिश्रणथी थता उपजातिनी अही चार कडी छे." (एजन पृ १०३) पछी द्रुतविलंबित अने आ गजछन्द बन्नेनुं लक्षण आपे छे·

"(१) द्रुतविलंबित १२ वर्णी जगती जातिना आ छन्दनी पंक्तिमां न भ भ र गण: एनी व्याख्या — न(सल) भा(नम) भा(नस) रा(जभा)

(२) ११ वर्णी त्रिष्टुभ जातिनो नभरलग मापनो छन्द 'गिरनारनी यात्रा'मां आवे छे ए जातिमां २०४८ छन्द थाय एमाथी १२९ रणछोडभाईए नोंध्या छे, दरेकना नाम आप्या छे, केटलाकना अनेक तेमां आ छन्द न होवाथी एने एना कर्ता उपरथी गजछन्द नाम आपीशुं, अने एनी व्याख्या— न(सल)भा(नस)रा(जभा)लगा ललितछन्द (चरण राज तू चयाह रे गयो) मां छठ्ठो वर्ण गुरु ते आमां लघु, एटलो ज बे वच्चे फेर आटला ज फेरथी बे बन्नेना ढाळमां केटलो तो फेर पडी जाय छे ते अभ्यासीए ध्यानमां लेवु अने 'गिरनारनी यात्रा'मां आ गजछन्द अने द्रुतविलंबितना मिश्रणवाळो नवो उपजाति पण आवे छे (कडी १०, १४, १७ अने ३०)" (एजन, पृ ११२)

अही प्रो ठाकोरे गजछन्दने ललितछन्द साथे सरखाव्यो छे, ते छन्दोना मुख्य प्रकारो अने तेना भेदक तत्त्वो नहीं समजवानुं परिणाम छे द्रुतविलंबित ए अनावृत्त अक्षरसंधिमेळ वृत्त एटले शुद्ध वृत्त छे अने ललितछंद ए तो आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्त छे एनो मेळ ए मात्रामेळनो तालबद्ध मेळ छे अने ए बाबत प्रो ठाकोरे, एमना समयमां तो अत्यंत प्रचलित आ ललितछंदना गान उपरथी न जाण्यु होय तो, तेमना प्रिय पुस्तक वर्णेमांथी तेओ जाणी शक्या होत ते स्पष्ट कहे छे "आमां वृत्तनी सोळ मात्रा थाय छे खरी, पण तेना चार चार मात्राना पृथक् पृथक् खडको नहीं पडवाथी छठ्ठो अने ११मो अक्षर त्रण मात्रा सुधी लबावी त्रण त्रण मात्राना छुटा छुटा खडको पाडी जलद दादरा तालमां गाई शकाय अथवा तो (विलंब) दादरामां गाई शकाय

आवा फेरफारो जो के छन्दना आद्य के अंत्य सधि पूरता थयेला अही आपणे जोया, पण ए बाबत भुलावी न जोईए के ए फेरफार पछी पण मेळ तो आखी पक्तिनो ज समग्र अने सुरेख बनवो जोईए. आपणे कही शकीए के शालिनीना प्रथम खड गागागागानी जगाए ललललललगागानो खड मूकवाथी मालिनी थाय छे पण त्या मालिनीनी आखी पक्ति पाछी सुमेळ बनवी जोईए. आ फेरफारोनो सौथी सारो दाखलो इन्द्रवज्रा गोत्रमाथी मळे छे अने हवे एक गोत्र तरीके आपणे एने जोईए इन्द्रवज्रानो पहेलो सधि गागालगागा हतो, तेना पहेला गुरुनी जगाए लघु मूकवाथी उपेन्द्रवज्रा बने छे. बन्नेमा मेळ बहु नजीकनो छे, छता त्या एक सधिने बदले बे सधिओ थाय छे लगा लगागा ए भूलवु न जोईए. पछी आ बन्ने वृत्तोना अंते उपान्त्य स्थाने एक लघु उमेरवाथी इद्रवशा अने वशस्थ बने छे पण त्या पण पछी अत्यसधि लगागाने बदले लगालगा एवो नवो अभ्यस्त सधि आवे छे. आवी ज क्रिया वसततिलका अने अहिमणि के मृदगमा थती आपणे हमणा जोई. आ मूळ इन्द्रवज्रानो सुन्दर विस्तार वसततिलकामा आपणे जोईए छीए. बन्नेने पासे पासे मूकी जोईए:

इन्द्रवज्रा. गागालगागा ललगा लगागा

वसततिलका: गागालगा ललगा ललगा लगागा

बन्नेनी समानता बतावता नरसिंहरावे कह्यु के बन्ने वच्चे बहु ओछो फरक छे. इन्द्रवज्राना चोथा अक्षर पछी ललल उमेराय छे[१] उपलक दृष्टिए आ खरु छे, पण जे बने छे ते एवी मोटा पाया पर बने छे गागालगागा ए लाबो सधि

ते माटे छठ्ठो अने ११मो अक्षर छ मात्रा सुधी लबावी गावामा आवे छे" (गायन वादन पाठमाळा पु १ वि ३ छदोगीतविनोद प्रकरण १, पृ १३) अने ललितछद अने आ गजछदनी वच्चे जे पठनफेर प्रो. ठाकोर नोंधे छे ते गुरुलघुना फेरफारनो नथी, पण ललितछद अने द्रुतविलबितनी मूलगत भिन्न प्रकृतिनो छे. अलबत्त ललितछदनी पक्ति साथे गजपक्तिनी बादबाकी करता तेओ बतावे छे एवो भेद नीकळे, पण ए पद्धति तो प्रो ठाकोर पोतानी लाक्षणिक शैलीमा धिक्कारे छे ते गणितिकनी थई, छन्दोविदनी न थई. एमने ए मूलगत छदोभेदनो विचार न आव्यो तो भले, पण तेमने एटलो पण विचार न आव्यो के द्रुतविलबित साथे गजनी उपजाति छे, तो पहेला तो द्रुतविलबित साथे एने सरखावी जोईए ! उपजातिओमा कईक समान होय छे ए तो एमणे अनेक वार कह्यु छे

१. Gujarati Language and Literature Vol. 2. p. 291.

सहित थई नवु गागालगा रूप ले छे, अने ए पटनने लीधे ललगा एवा एव आना नवा सधिने त्या स्थान मळे छे बधा वृत्तोमा आ कुटुब सौथी वधारे विस्तरेलु छे ए वसततिलका पाछो नवा छदो यनवानी भूमिका बने छे. तेमाथी ज रथोद्धता बने छे

वसततिलका : गागालगा ललगा ललगा लगागा

रथोद्धता : गालगा ललगा लगालगा

गागालगानो आद्य गुरु छेदाई गालगानो नवो सधि बन्यो ललगानु स्थान कायम रह्यु अने पछी त्या ज उपसहार लगालगाथी करी नाख्यो आ अभ्यस्त सधि इद्रवशा-वशस्थमा मोजूद हतो. रथोद्धताना छेल्ला सधिने बदले ललगागा आवता स्वागता थयो अने पछी पाछु आ रथोद्धता वृत्त बीजा छदोनी भूमिकारूप बन्यु रथोद्धताना प्रारभना गुरुने तोडी बे लघु करता गालगाने बदले ललगा सधि मळे ए सधि त्या मूकता आपणे जोई गयेल प्रियवदा थाय.

रथोद्धता : गालगा ललगा लगालगा

प्रियवदा : ललगा ललगा लगालगा

अने रथोद्धताना छेल्ला सधिनो पहेलो गुरु ए रीते ज तोडता चन्द्रवर्त्म थाय.

चन्द्रवर्त्म : गालगा ललगा लललगा

अलबत्त आ बसे रचनाओ मळ रथोद्धता जेटली सुन्दर नथी आपणे फरी वसततिलका पासे जईए तेना न्यासमाथी अत्य लगागा कापी नाखता चपला थाय छे

चपला गागालगा ललगा ललगा

चपला पोते सुन्दर नथी पण ते उपरथी बीजा सुन्दर छदो बने छे प्रमिताक्षरा प्रथमसधिना गुरुना बे लघु करी नवो ललगा सधि आवता बने छे.

प्रमिताक्षरा ललगा लगा ललगा ललगा

आना ज अत्य ललगाने बदले रथोद्धताना अत्य लगालगा मूकता मजुभाषिणी थाय छे

मजुभाषिणी ललगा लगा ललगा लगालगा

अने मजुभाषिणीना अत्य लगालगानी जगाए रथोद्धता-स्वागतानी पेठे ललगागा मूकता कलहस थाय

कलहस ललगा लगा ललगा ललगागा

रथोद्धता-स्वागता जेवी कलहस–मजुभाषिणीनी उपजाति करी शकाय

मजुभाषिणी ललगा लगा लललगा लगालगा

कलहस ललगा लगा लललगा ललगागा

आ कुटुब विशे छेल्लु ए कहेवु जोईए के द्रुतविलवित जो के आ वर्गमा मुकाय छे छता ते बीजा वृत्तोनी पेठे बराबर कोई एक वृत्तमाथी निष्पन्न करी शकातो नथी एना सधिओ ए वर्गना सधिओ ज छे अने एनु पठन प्रमिताक्षरा वगेरे जेवा सस्कारो उत्पन्न करे छे एटलु ज एने विशे कही शकाय

अर्धसम वृत्तोमा बहु नवा प्रयोगो थया नथी 'रणपिंगल' जोतां तेमा अनेक अर्धसमवृत्तो मळी आवे छे, पण घणाखरा बनावटी लागे छे वैतालीय वर्ग जेवा कोई सुन्दर नथी, अने कविओए एने अपनाव्या नथी अर्वाचीन कालमा तेनो एक ज नवो प्रयोग जणाय छे अने ते श्री उमाशकरनो छे हु प्रथम ए छे ए प्रमाणे ज उतारु छु

कविकुलोनी असीम कल्पना,
प्रणयीनी पण एवि जल्पना
' कइ कसूर न जोउ कोइनी,
सहुथी मोटि कसूर प्रीतडी

'हृदयनी रखवाळण , निशीथ पृ ४४

गुजरातीमा ह्रस्वदीर्घनी छूट लेवाय छे ए पक्तिओनु अभिप्रेत माप शोधता घणी वार अडचणरूप थाय छे एटला माटे प्रथम आखु काव्य वाची जोईए घणी वार कवि छदमा फेर करे तो पण तेना मुख्य छद जडु साथे ते मेळ खाय एवो ज करे छे ए दृष्टिए जोता तरत जणाशे के काव्यना केटलाक श्लोको वियोगिनीमा छे, केटलाक द्रुतविलवितमा छे, अने वचमा उपरनो श्लोक आवे छे हवे आपणे आ श्लोक तपासी जोईए आनी समपक्ति तो वियोगिनीनी ज समपक्ति छे काई विचारवानु रहे छे ते विषम विशे रहे छे तेमा पहेली' कविकुलोनी' ए पक्तिने वियोगिनीनी सम पक्ति तरीके पठी शकाय छे 'कविकूलोनि असीम कल्पना'. जो के एम करता 'कुल' ने 'कूल' बोलवो पडे छे ते अत्यत कर्णकटु लागे छे तो हाल एने त्या छोडी बीजी जोईए एने वियोगिनीनी समपक्ति तरीके वाची शकाय एम नथी पठन करता तेनो न्यास आ प्रमाणे थशे

लललगा ल्लगा लगालगा

अने हवे प्रथम पंक्ति पण ए प्रमाणे बेनी रहे छे: 'पविपुलानि असीम मलाना',—उच्चारणना वगर पण अत्याचार विना. एटले विषमनुं माप तो आ ज थयुं. अने ए जोतां याद आवशे के आ, आगळ आवी गयेल गजछन्दनी पंक्ति छे पण अत्यारना अन्वेषण माटे एटलुं बस नथी. प्रश्न ए छे के ए वियोगिनीनी सम साथे शी रीते आवी शकी? सरल जवाब मळशे के वियोगिनीनी विषम पंक्तिमां पहेलो ललगा आवे छे तेनी आगळ अहीं एक वधारे लघु आवे छे एटलो ज फेर छे. आथी चारेय पंक्तिओ अगियार अक्षरनी थई रहे छे, अने छतां तेमां अर्धसम जेवो विषमसमनो भेद छे:

ललगा ललगा लगालगा
ललगागा ललगा लगालगा

आ प्रमाणे वियोगिनीनी समपंक्ति कायम रहेवाथी तेमां त्रीजो गुरु एने ए स्थाने ज रहे छे, अने विषम पंक्तिना ते स्थानना लघुनी पछी, लगभग पूर्व पेठे असरकारक पण रहे छे, अने तेथी नवा प्रकारनुं एक अर्धसम वृत्त बनी रहे छे अने आगळ काव्यमां वियोगिनी अने द्रुतविलंबितना श्लोको आवे छे, ते भूमिकामां आ वियोगिनी अने खंडित द्रुतविलंबितनो नवो अर्धसम-श्लोक पण भळी जाय छे ते साथे ए व्यक्त थाय छे के द्रुतविलंबितने वियोगिनी साथे आटलो बधो निकटनो संबंध छे आ संबंध प्राचीनोने पण कदाच अजाण्यो नहोतो अर्धसमवृत्तोमां एक हरिणीप्लुता आवे छे. तेनुं समपाद द्रुतविलंबितनुं ज होय छे अने पहेलुं पाद, द्रुतविलंबितनो आद्य लघु खंडित करीने निपजावेलुं होय छे.

अयुजि प्रथमेन निवर्जित[७]
द्रुतविलम्बितक हरिणीप्लुता।

छन्दोम० ३, ३

हरिणीप्लुता ललगा ललगा ललगा लगा ११
ललगा ललगा ललगा लगा १२

अहीं सुधी आपणे श्लोकबद्ध छंदोमां भिन्नभिन्न छन्दोना चरणोना मिश्रणोथी थता नवा छंदो, भिन्नभिन्न छंदोना संधिओना संगमथी थता नवा छंदो तेम ज संधिओमां उमेरण के छेदनथी थता नवा संधिओना नवा छंदोना श्लोको

७ विषमे प्रथमाक्षर वर्जिता
द्रुतविलंबितनी हरिणीप्लुता

जोया. पण वर्तमान साहित्य श्लोकबद्ध प्रवर्ते छे तेम छन्दप्रवाहमा पण वहे छे अने छदप्रवाह जुदो जोवानी जरूर एटला माटे रहे छे के सामान्य रीते श्लोकबद्ध साहित्यमा शुद्धवृत्त साथे आवृत्तसधि अक्षरमेळ छन्दोनु मिश्रण थतु नथी, पण छन्दप्रवाहमा एम थाय छे, एटलु ज नही, तेमा केटलाक चरणो एवा आवे छे जेने कोई पिंगळे विशेप नाम आपेलु होतु नथी, अने केटलाक एवा आवे छे जेने ए ज कवि स्वतत्र रीते एक श्लोक जेटले पण सळग वापरतो होतो नथी आ बाबत बीजा कोई छदना प्रवाह करता त्रैष्टुभ जागतना मुख्य प्रवाहमा विशेप बने छे एटले अही हु प्रवाहमा मळी आवता नवा छदो जुदा विचारी जोईश आमानो एक ग्राही के विध्वकमाला आपणे एक जगाए जोयो (गत पृ २३७) ते त्रैष्टुभ-जागत प्रवाहमा ज विशेप वपराय छे. ८६ पक्तिना 'निशीथ' (निशीथ पृ १) काव्यमा ८३ मी ग्राहीनी छे

ने मानवोनी मनोमृत्तिकामा

तेवी ज रीते 'वसुधा' (पृ ७८)मा 'जेल्ना फूलो'ना काव्यमा

तेने फरी धूळभेळू करीने प ३७

वृत्तोना न्यासोनी जे निवटता उपर बतावी ते काव्यपक्तिथी बतावबा ए बे दृष्टान्तो आपु

वर्षावी शस्त्रास्त्रघातोनी धारा प ५०

'१९ मा दिवसनु प्रभात', प्राचीना, पृ १८

आने वर्षावीँ शस्त्रास्त्रघातोनीँ धारा

एम पठीए तो ते ग्राही थाय पण 'वी'ने दीर्घ ज राखीए तो

वर्षावी शस्त्रास्त्रघातोनीँ धारा

यतिभग्न शालिनी थाय तेवी ज रीते

छेदे महावृक्षनी डाळडाळ, प ७५

एजन, पृ १९

एने 'छेदे महावृक्षनीँ डाळडाळ'

एम बोलीए तो ते इन्द्रवज्रा थाय, 'नी'दीर्घ ज राखीए तो ग्राही थाय आम आ छदोमा जराक ज उच्चारभगीनो भेद छे

तेवी ज रीते क्वचित् भुजगीनी पक्ति पण आवे छे जेम के 'पनघट'मा (पृ २०) 'जनता' ना लाबा काव्यमा वच्चे वच्चे उपजाति आवे छे त्या

वदो राष्ट्र नामे, वदो धर्म नामे प ६१

ए भुजगी छे. ए पण आवृत्तमधि अक्षरमेळ छे पण ते उपेन्द्रवज्रानी बहु नजीकनो छे

भुजगी: लगागा लगागा लगागा लगागा

भुजगीनो त्रीजो गुरु काढी नाखीए अने आठमा गुरुने स्थाने लघु मूकीए तो उपेन्द्रवज्रा थई रहे छे. शाही तथा भुजगी बन्नेनी पंक्तिओनो उपाड अनुक्रमे गागाल अने लगा, अने बन्नेनो अंत लगागा, ए इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्राने बहु ज मळता छे. एटले आ आवृत्तमधि अक्षरमेळ छन्दो पण वृत्तो सामे भळी रहे छे. आ ज रीते प्रहर्षिणी अने रुचिरा पण भळी शके, जो के तेना दाखला बहु मळथा नथी. प्रहर्षिणीमां आद्य गागागा ए शालिनी साथे भळी शके अने अंत्य लगागा पण भळे. रुचिरामा पण आदिमां लगालगा आवे छे ते उपेन्द्रवज्रानी साथे भळी जाय छे अने अंते लगालगा आवे छे ते इन्द्रवंशा-वंशस्थ साथे भळी रहे छे. पण आपणे हजी मुख्य छदना नियत रूपथी बाधी पाछी जती नवी नवी रचनाओ जोईए. 'प्राचीना'ना लाबा काव्यो घणाखरा त्रैष्टुभ-जागत उपजातिमा छे अने वस्तु महाभारतनु होवाथी तेमा अनियमित आर्ष छन्दोनु अनुकरण करवामा औचित्य रहेलु छे, तेमाथी आपणे दाखला लईए.

अधन्य एवा पद्म-ने-पोषणारा प. ४

'कर्णकृष्ण', प्राचीना

न्यास : लगालगागा गालगा गालगागा

पहेला पाच अक्षरो सुधी उपेन्द्रवज्रा छे ते पछी तेनी साथे शालिनीनो उत्तर यतिखड जोडेलो छे एवी ज बीजी पंक्ति

मह्यो न जाता स्नेह ऑथार माता प. ९९

नवी पंक्ति धर्मध्वजाळा शिबिरे पाडवोना प २२

गागालगागा ललगा गालगागा

अही इन्द्रवज्राना पाच अक्षरो पछी वातोर्मिनो अंत्य यतिखड आवे छे एवी ज

जेवो अरण्ये कठियारो कराळ

'आगगीसमा दिवसनु प्रभात' प. ७४ एजन

मूके घडी गणिनी तेनि साठ प. ४३ एजन

गागालगा ललगा गालगागा

अही वसततिलकानो प्रथम खंड आवे छे, पछी तरत वातोर्मिनो ज यतिखड आवे छे.

आगळ में भुजंगीनी एक पंक्ति मूकेली :

कदी राष्ट्र नामे, कदी धर्म नामे

आमा वन्ने जगाए 'कदी' नो 'दि' ह्रस्व बोलीए, अने ए पठननो पूरो संभव छे, तो न्यास नीचे प्रमाणे थाय हेमचन्द्र एने केकीरव कहे छे : (छन्दोनु० पृ. ८ब)

केकीरव : ललगा लगागा ललगा लगागा

अर्थात् इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्राना छेल्ला बे सधिओ बेवडाईने आखी पंक्ति बने छे. कोई कवि आयी तद्दन नवा प्रकारनी पंक्तिओ उपजाति-जागत प्रवाहमां भेळवे ए तद्दन संभवित छे. आगळ नवी रचनानी पंक्तिओ नोंधीए :

ऊभा अहीं ते कृतवर्मा अने कृप २८. प्राचीना पृ. १७

गागालगागा ललगागा लगालगा

आखी पंक्ति लगभग इद्रवंशा जेवी देखाय छे, मात्र त्रीजा संधिमां एक गुरु वधारे छे. पण एटलो फेरफार थतां मने शंका छे के एटलो भाग पछी इद्रवंशाना मेळमा रही शकतो नथी. आवा बीजा दाखला हजी उतारु.

के वर्षोथी शौर्यउन्मादव्याकुळा १२
संग्रामार्थे जे भुजा खजवाळता १२

पहेला चार अक्षरोथी शालिनीनो पूर्व यतिखंड बने छे. आखी पंक्तिओनो न्यास :

गागागागा । गालगागा लगालगा
गागागागा । गालगागा लगालगा

वळी एवी ज पंक्तिओ :

जाओ लावो । कृष्ण, श्वेताश्वशोभिते १८२
प्राचीना, पृ ९

पांचोलाना । स्वामी आ धृष्टद्युम्न ते ४५
प्राचीना, पृ. १७

तेने अंते । खोटा से शस्त्रघातनी ५३
प्राचीना, पृ १८

ये वर्चस्वी । वीसर्यो ते घटोत्कच ? २६३
प्राचीना, पृ. २७

आ वधीयमा प्रारभमा शालिनीनो पूर्व यतिखड छे ते पछीना चार अक्षरो गागागागा अथवा गालगागा आवे छे ' पण अते सर्वत्र लगालगा आवे छे जे अनुष्टुपनी समपक्तिनो अत्य चतुरक्षर सधि छे एटले आ अष्टाक्षरखडो शालिनीने गमे तेटला मळता होव छना सधिओ वारवार अक्षरोना पडी अनुष्टुपनो सवाद उत्पन्न करे छे, खास करीने तेनो अत्य चतुरक्षर सधि. अने आ परिणाम पण कई कमेळवाळु बनतु नथी शालिनी गुरुप्रधान छे, तेनो पहेलो यतिखड चतुरक्षर छे, अने था बीजा बे चतुरक्षर सधिओ तेनी साथे भळी रहे छे एटले एनो मेळ हु आ ज गणु छु

' आ प्रमाणे अनुष्टुपनु चरण बीजा छद साथे जोडाई गयानु एक बीजु दृष्टान्त मळे छे

सान्निध्य तारे सखि, आ धरित्री
उगे उगे रूप वसन्तनू धरे,
सुहाग तारो मृदु सौम्य नोतरे,

ने आ कगाळ हैये, विपुल मुदतणा, वैभवोने भरे भरे २०
'सान्निध्य तारे', वसुधा, पृ २१

'सुहाग०' पक्ति सुधीनु काव्य त्रैष्टुभ,अने जागत उपजातिनु छे अने ते पछी उपसहार करवा कवि लाबो छद वापरे छे ए लाबा छद स्रग्धराना बे यतिखड सुधी जाय छे, अने उपसहार गालगागा लगालगा एवा अनुष्टुपना समपादथी थाय छे आ समपाद, उपर आवता स्रग्धराना अत्यखडने बहु ज मळतो छे

स्रग्धरा अत्यखड गालगा गालगागा

उपरनु अनुष्टुप पाद गालगागा लगालगा

एटले अनुष्टुप त्या स्रग्धराना उपसहार तरीके सारी रीते काम आपे छे.

आ जातना हजी बीजा प्रयोगो कदाच मळे पण आटलाथी वस्तुनु स्वरूप समजाई जशे

आ जगाए एक प्रश्न पुछाय छे कवि आवा मिश्रणो शा माटे करे छे? एक जवाब ए छे के आवा प्रयोगो कवि कोई वार मात्र वैविध्य खातर करे, पण घणी वार तो भाव अने अर्थने माटे नवीन छदोभगीनो जरूर लागवाथी करे छे. कान्ते खड काव्योमा छदोवैविध्यनो उपयोग कर्यो, तेने सद्गत रमणभाईए भाव प्रमाणे छद बदलाववानी रीति कही. (कविता अने साहित्य.

वॉ १. पृ ९१) आ संबधी एवो प्रश्न पुछायो छे के एव के बे श्लोरी जेटलु काव्य आगळ चाल्यु एटलामा कांव्यनो भाव एवो ते शो बदलाई गयो? आनो एन जवाब ए छे के भाव काव्यशास्त्रमा गणावेला छे एटला ज नथी, पण मानवजातिनी मनोवृत्ति जेटला असख्य छे पण बीजी रीते एने माटे हु एम कहु के कवि वाक्यभगीनी खातर पण छद बदलाये ए वाक्यभगी पण भावनु ज परिणाम छे, पण एने भाव न गणवा हाय तो, वाक्यभगी ए पण छदनी पसंदगी माटे निर्णायक बनवा पूरती महत्त्वनी अने बळवान छे जेमके

गाधारी रे आयुष्मन्! ऊठ सभाळ भार,
रहधू सहधू धर्म वडे उगार

प्राचीना, पृ २७

अही एक ज उक्तिमा छद बदलाव्यो छे सबोधनने तीव्र करवा माट शालिनीनो यति खड एने आप्यो अने पछी लघुगुरुना अत्यत लीसा छदवळावमा भावनु गौरव सूचवाय ए रीते बाकीनु वाक्य शालिनीना उत्तरखडमा अन तेनी पछीना उपेन्द्रवज्राना चरणमा पूरु थयु नवा छद जेम लागणीयी थती छदोभगीने झीलवा आवे, तेम विचारना बळाकने झीलवा पण आवे आगळ आपेलु प्रो ठाकोरनु दृष्टान्त फरी मूकु

कोनू आखू, कोनु हैयू गळळू
कोनी साची कानि खोटी परीक्षा,
ए प्रश्नोने ते ज जाण उकेली
ऊकेलतो सार नि सारनो जे
नि सार गाळि शवतो वळि सारमाथी

भणकार, पृ ३२८

अही कविने अमुक प्रश्नो विशे अमुक कहेवानु छे ए प्रश्नो एमणे सीधी सादी शालिनीमा मूक्या, प्रश्ने प्रश्ने यति आवे एवी रीते ए प्रश्नो कर्या, अने ए प्रश्नो विशे जे कहेवानु छे तेने माटे छन्दफेर कर्यो, अने आत्मश्रद्धाना बळथी जाणे एक ज श्वासथी बोल्ता होय तेम एकएकथी लाबी पक्तिमा पण एक ज गोत्रना छदमा ए कही नाख्यु अही अलबत्त विचार प्रधान छे पण अही पण भाव नथी, भावनी तीव्रता के वेग अने बळ नथी एम नही कही शकाय पण आ बन्ने दृष्टान्तोथी एटलु जणाशे के छन्द वक्तव्यनी भगीने झीलवा बदलाय छे जेम नृत्यनृत्तमा तबलाना बोल नर्तकना अगविन्यासथी व्यक्त थाय छे, नृत्यमा जेम गीतना भावो तेना तालबद्ध अभिनयथी व्यक्त थाय

छे, तेम भावना भाववतो भाव, कविनो वाक्यभंगी अने छंदोभंगीथी व्यक्त थाय छे छन्द अने छन्दोभंगी ए काव्यभावना शब्दशरीरनु नर्तन छे एटले साचा कविने हाथे यती आ छंदोभंगी ए स्वच्छन्द नथी पण व्यंजनानी सूक्ष्म रीति छे.

आपणे उपरना निरूपणमा एक छन्दप्रवाहमा अनेक छन्दोनु मिश्रण—भिन्नभिन्न छन्दोनी पंक्तिओनु, तेम ज भिन्न छन्दोना खंडिओनु—जोयु पण ते साथे ए पण स्वीकारवु जोईए के छन्दप्रवाहमा एवी पण पंक्तिओ आवे जेने कोई पण एक छन्दना नियत रूपमा बेसाडी न शकाय ए रचना मात्र छन्दनी एक अनियमितता ज होय आपणे छन्दशास्त्रमा ए स्वीकारवु जाईए के कविने ए प्रमाणे कोईक ज वार, क्वचित ज, नियत स्वरूपनी बहार जवानी पण छूट रहेली छे कविने व्याकरण बहारना प्रयोग करवानी छूट होय छे तेवी ज आ छूट छे के भाठामा वहेती नदी पण पूरमा जेम पाठाने भेदे छे, तेम कोई पण भावनो उद्रेक थता छदनु नियत स्वरूप त्या भेदाय छे पण आ छूट ते अपवाद छे, अने कुशल कवि ज आ छूटनो सुन्दर उपयोग करी शके छे जेने छदनु पूरु स्वाभाविक प्रभुत्व छे, अने जे भाव भाषा अने छन्दनो मार्मिक सबंध जाणे छे ते ज आ छूट लई शके छूटना दृष्टान्त तरीके, एक पंक्ति 'चुंतिवणी'माथी उतारु छु आखु काव्य पृथ्वीमा छे सॉनेटनी १३ पंक्तिओ सादा पृथ्वीमा छे अने छेल्ली पंक्ति

वनो विमल विमल विमल नयन श्रोत्र उर पड आ
भणकार (१९३७), पृ १००

पृथ्वीना पहेला खंडि लगा पछी ललल्गा लगा आवे छे तेनी जगाए अहीं एक सामटा नव लघु छे, अने ते पण एक 'विमल' शब्दना त्रण आवर्तनथी थया छे आ आवर्तनो अदम्य मनोवेग दर्शावे छे, अने ए वेग अहीं पृथ्वीना बे खंडिओने भेदे छे आ प्रक्रियाने आपणे स्वीकारवी जोईए ए पंक्ति अनियमित ज छे, अने भावनी आवश्यकताथी ए रूपे पृथ्वीमा आवे छे छता ए पृथ्वीना प्रवाहनी छे, अने एने अछान्दस गणवी न जोईए अलबत्त आनो अर्थ एवो नथी ज के नियमित छन्दमा भावनो उद्रेक न ज आवी शके तेम एवो पण नथी ज के छन्दने भेद्यो एटले भावनो उद्रेक सधाई गयो ए तो ज्यारे साचा काव्यमा आ प्रमाणे बने त्यारे ज त्या छन्दोभंगने निर्दोष गणी स्वीकारवो जोईए एटलु ज वक्तव्य छे

आपणा परपरागत पिंगलो, निरूपणमाथी रही गयेला छन्दोने माटे गाथा शब्द योजे छे, पण आ व्यवस्था शास्त्रीय नथी ए रही गयेला छन्दोने पैकीए

गोठोए योग्य जगाए स्थान आपवु जोईए, अने उपर आवी एवी जे अनियमित पंक्तिओ होय, तेने माटे ज अपवादसूत्र के अपवादविभाग राखवो जोईए एम हु मानु छु अने त्या पण उपरनी पंक्तिने पृथ्वीगाथा कहीए तो सारु.

अत्यार सुधी नही स्पर्शेली एवी एक छन्दोविकृतिनी पद्धति हवे लउ छु आने हु विकृति ज गणु छु, नवछन्दोविधान गणतो नथी, छता तेने चर्चवानु आ ज योग्य स्थान छे 'छन्द सारसग्रह'ना कर्ता चन्द्रमोहन घोष तेने समयमात्रकादेश कहे छे घोष तेनु स्वरूप नीचेना शब्दोमा दर्शावे छे "अथ कोऽत्र सममात्रकादेश इत्यत्रोच्यते --गुरोरेकस्य स्थाने लघुद्वयस्य, लघुद्वयस्य स्थाने गुरोरेकस्य वा, एकचतुष्कलगणस्य स्थानेऽपरचतुष्कलगणस्य च सन्निवेश सममात्रकादेश। (छन्दसारसग्रह पृ ११४) अर्थात् एक गुरुनी जगाए बे लघु अथवा बे लघुनी जगाए एक गुरु, अथवा एक चतुष्कल गणनी जगाए कोई बीजो चतुष्कलगण मूकवो तेने सममानकादेश कहे छे घोष आ प्रक्रियायी नवा छन्दो बने छे एम कहे छे नरसिंहराव पण आ शब्दनो अर्थ आ ज करे छे, पण ए व्यापारनु स्थान प्राकृत पिंगलमा छे, वृत्तोमा नथी एम कहे छे[८] पहेला आपणे आनु स्वरूप समजवा घोषे आपेलु दृष्टान्त जोईए घोष अही 'भागवत' दशम स्कधना ३५ मा अध्यायमाथी केटलाक श्लोको उतारे छे आ श्लोकोनो मुख्य प्रवाह स्वागतानो छे, अने तेमा वच्चे वच्चे सममात्रकादेशनी विकृतिओ थाय छे बधा श्लोको न उतारता हु बेत्रण ज उतारीश

हन्त चित्रमबला शृणुतेद
हारहास उरसि स्थिरविद्युत्।
नन्दसूनुरयमार्तजनाना
नर्मदो यहि कूजितवेणु ॥

भागवत १०-३५-४

अही पहेली त्रण पंक्तिओ शुद्ध स्वागतानी छे चोथीनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय

गालगा गालगा ललगागा

बीजो सधि ललगा ने बदले गालगा थाय छे अर्थात् सधिना पहेला बे लघुनी जगाए एक गुरु आवे छे ए प्रमाणे अही सममात्रकादेश थाय छे ए खरु पण साथे साथे प्रश्न थाय छे के अही 'यहि'नो उच्चार 'यरहि' जेवो

८. Gujarati Language and Literature vol II, p. 292.

नहीं पत्तो होय? आ जातनो विचार ए अध्यायमा आगळ १०मा अने १२मा श्लोकमा थाय छे त्या पण विकारनो शब्द आ ज 'र्यहि' छे आगळ २१मामां थाय छे त्या चरण आ प्रमाणे छे: "मानयन् मलयजस्पर्शन।" अहीं अत्य सधि ललगागाने स्थाने गागागा थाय छे पण अही पण 'स्परशेन' एवो उच्चार करवाथी छद बेसी रहे छे प्राकृत भाषाओमा तो आवा र् सयोगमा स्वरभक्ति थई 'र' आखो बने छे जेम के 'धर्म'नु 'धरम' एटले आने छन्दनी विकृति कहेवी के भाषानु प्राकृतीकरण करेवु ए प्रश्न हमेशा रहेशे. अत्यारतो आपणो गुजराती कविता आ जगाए स्पष्ट रीते 'धर्म'नु 'धरम' ज करे पण आपणे आगळ चालीए. समभारकादेशना बीजा ऊलटा प्रकारना दृष्टान्तो पण ए ज अध्यायमाथी मळी रहे छे हु एक उतारु छु'

तर्हि भग्नगर्तय. सरितो वै
ततादाम्भुजरजोऽनिलनीतम्।
स्पृहयनीर्वयमिवावहुपुण्या
प्रेमवेपितभुजा स्तिमिताप.॥

एजन, श्लो ७

अही १, २, ४ पक्तिओ शुद्ध स्वागतानी छे, त्रीजी पक्तिना पहेला सधि गालगानी जगाए अही लललगा थाय छे एटलो भेद छे आने हेमचन्द्र पोताना पिंगलमा कलहंसा अथवा द्रुतपदा कहे छे (छदोनु० पृ ७ब) अने वृत्तोमा तो लघुगुरुना जरा पण फेरथी वृत्त बदलाय ज ए ज खरो सिद्धान्त छे पण कविनो अभिप्राय अने उद्देश अही जोईए तो जणाशे के पोते तो आने स्वागतानो श्लोकप्रवाह ज माने छे अलबत भागवतकारना आवो अभिप्राय ए मारु अनेक छदोना अनुभव उपरथी तारवेलु अनुमान छे पण आधुनिक गुजरातीमा तो ए अनुमाननो विषय रहेतो नथी मद्गत न्हानालाल अने प्रो ठाकोर बन्ने आ प्रकारना विकारने छन्दोना स्वरूपन अनुकूळ माने छे एटले आ प्रश्ननु महत्त्व वधे छे, अने तेने छन्दना स्वरूपना सिद्धान्तनी कसोटीए कसी जोवो जोईए वस्तुनी चर्चा वधारे स्पष्ट थाय माटे केटलाक दृष्टान्तो प्रथम लउ:

प्रथम कवि न्हानालालना 'मेघदूत'ना भाषान्तरमाथी बन्ने पक्तिओ लउ छु

' ने पृथ्वीने । फलवति करे छत्रि पुष्पो खिली, ते
कानें गमतु । गरजन सुणी त्हारु, माने उडन्ता ११

*

लावा विरहे। जनमि उरनी कुहाडि ऊन्ही वराळो
ऋतु ऋतुए जे। प्रित प्रगटतो तुज संयोग पाम्ये. १२

आमा प्रथम पंक्तिमा ज मात्र पहेलो यतिखंड पिंगळ प्रमाणे चार गुरुनो बनेलो छे. 'ने पृथ्वी ने'. ए ज. एनी पछीनी बे पंक्तिमा सामान्य रीते लघु गुरु गणीए तो गागाललगा थाय छता एम कही शकाय के आ यतिखंडना कशु नियम बहार नथी थयु, कारणके 'गमतु'नो उच्चार 'गम्तु' जेवो थाय छे अने 'विरहे'नो उच्चार 'विर्हे' जेवो थाय छे, अने ए प्रमाणे उच्चारण करीए तो यतिखंड गागागागा थई रहे. प्रो. ठाकोर 'भणकार'नी जूनी आवृत्तिना पद्यरचनाना नियममा श्रुतिभंग उपर लखे छे. "'क्वचित्' शब्दनु माप एक लघु अने एक गुरुनु गणाय. पण 'केवळ' शब्दनु माप एक गुरु अने बे लघुनु गणाय अथवा बे गुरुनु पण गणाय. 'पण' शब्दनु माप एक लघुनु के एक गुरुनु ज्या जेवु गणवु होय तेवु गणाय. आपणु गुजराती भाषानु उच्चारण ज एवु छे. . . . संस्कृत भाषा अने तेना नियमोनी दृष्टिए बेशक आम न कराय; पण आपणे तो गुजराती भाषानी वात छे. . . . भाषानी विलक्षणतानु प्रतिबिंब पद्यना उच्चारणमा पडे ए कुदरती छे" (सळंग (अगेय) पद्य. पृ. २५–२६. भणकार १ ली आवृत्ति) भाषाना उच्चारणनी दृष्टिए शब्दनो अंत्य अ अछडतो—द्रुत बोलाय छे ए खरु, पण ए बाबतमा हु नरसिंहरावनो मत साचो मानु छु के ए मात्र द्रुत ज बोलाय छे, त्या 'अ' लुप्त थतो नथी, 'केवळ'ना गुजराती उच्चारणमा 'ळ' ए 'ळ्' खोडो बोलातो नथी तेने साम्य होय तो सस्वर ळ साथे वधारे साम्य छे, अने कवितामा उच्चारण गद्यना करता वधारे धीमु होय छे ए जोता त्या सस्वर व्यजन वधारे साचो गणाय छता प्रो ठाकोर एने छूट गणे छे ते छूट तरीके एने स्थान छे, एम हु स्वीकारु छु तेओ पोते आना अनुसंधानमा कहे छे "छूटनो अतियोग के दुरुपयोग इष्ट नथी ए सौ स्वीकारे छे ज" (एजन पृ २७) अने एटलु हु अही उमेरीश के प्रो ठाकोरना कहेवानो मारी दृष्टिए ए फलितार्थ छे के आ छूट संस्कृत तत्सम शब्दोमा भाग्ये ज क्षम्य गणाय, जो के तेमणे एवी छूट पुष्कळ लीधी छे जेम के (हु नरसिंहरावना ज दृष्टान्त लउ छु)

अरे शीळी सुन्दर सुखद दयिता, आव निकट
एजन, पृ. ६५

अरे ह्वारा शीतल कमल युगले भीड मुजने
एजन, पृ. ६५

आ बन्ने दृष्टान्तोमा 'सुन्दर्' 'शीतल्' एम उच्चार करवो पडे छे ते तेना शुद्ध उच्चारणनी विकृति छे

आपणे चर्चाना मूळ विषय उपर आवीए कवि न्हानालालना दृष्टान्तोमा आवता 'गमतु' अने 'विरहे' शब्दने आपणे उपरनी चर्चानी दृष्टिए बच्चे गुरुना गणीने चलावी लईए तो त्या पछी छन्दोदोष रहेतो नथी. पण एवो एक पण बचाव छेल्ली पक्ति माटे थई शके तेम नथी 'ऋतु-ऋतुए जे' ए तो स्पष्ट ललल्गागा छे, अने मदाक्रान्ताना पहेला यति खडमा एने स्थान आपी शकाय नहीं ए स्पष्ट छन्दोभग छे ए कोई रीते क्षम्य नथी.

प्रो ठाकोरे छन्दोमा भाषाना उच्चारणने कारणे जे छूट लीधी छे ते सबधी हवे कशु कहेवानु रहेतु नथी. ए छूट छन्दना बधनो नथी, पण भाषाना अमुक उच्चारणने बे लघुने बदले एक गुरु गणवाना रूपनी छे. पण छदोमा तेमणे जे छूटो लीधी छे, ते बधीनो आमा समावेश थई जतो नथी ए छूटो आपणे अहीं जे सममात्रवादेश कह्यो ते प्रकारनी छे नर्मिहराव ए छूटाो निषेध करता जे दृष्टान्तो आपे छे, तेमाना बे में उपर उतार्या, बीजा बे हवे नीचे उतारु छु

तजी फलक वर्तमान, प्राचीनथी पोषिने

भणकार, आवृत्ति १ली, पृ ५१

स्फटि गतनेथि क्षीण, लोभावती लोचन

एजन, पृ ५२

बन्नेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय

लगा ललल्गा लगा लगागा लगा गालगा

उपरना न्यासो जोता जणाशे के पहेला त्रण तथा अत्य बे सधिओ पृथ्वीना ज शुद्ध रूपमा छे वचमा ललल्गाने बदले ल्गागा आवे छे अर्थात् सधिना वचला बे लघुआनी जगाए एक गुरु आवे छे बीजी रीते कहीए तो ललल्गा एवा पचमात्रक सधिनी जगाए लगागा एवो बीजो पचमात्रक सधि अही आव्यो छे आ सममात्रवादेशनो ज विकार थयो आने भाषाना कोई उच्चारणने कारणे समर्थित करी शकाय एम नथी आपणी पासे शुद्ध रूपे प्रश्न आवीने ऊभो रहे छे के आ व्यापार शुद्धवृत्तोमा आवी शके ?

आनी चर्चा आगळ चलावीए ते पहेला हजी आ ज व्यापारना बीजा केटलाक दृष्टान्तो प्रो ठाकोरना सॉनेटोमाथी मळे छे ते लईए

प्रकाश न न अन्धकार ; नहि अभ्र, अनिले नहीं;
'नारा दर्शन', म्हारां सॉनेट, पृ. ५

निहाळु वळि मित्रनी मदभरी स्मरप्रहरणी
'सुन्दरीओ', म्हारा सॉनेट, पृ. ८

बन्नेना क्रमवार न्यासो :

लगा लललगा लगा ललगा ललगा लगा
लगा ललगा लगा ललगा लगा ललगा

यथा ज दाखलाओ आ बे प्रकारोमा आवी जाय छे. अहीं पहेला चार संधिओ सुधी नियमित पृथ्वी चाले छे. ते पछी लगा गालगा ए बे सधिओने बदले एकमा ललगा लगा एवा संधिओ आवे छे, अने बीजामा अन्त्य गालगाने बदले ललगा एवो संधि आवे छे. बन्नेमा व्यापार सममात्रवादेशनो छे. प्रो. ठाकोरे पृथ्वी विशे जे काई लख्यु छे, पद्यरचनामां जे काई छूटो विशे लख्यु छे तेमा आ प्रसगोनो समावेश थई शकतो नथी¹. आपणे आ स्वतंत्र रीते जोवाना रहे छे.

---

१. प्रो. ठाकोरे, एमणे पृथ्वीना प्रयोगोमा करेला फेरफारो सबधी यथार्थ आगळी चोथीने बदु कहेलु नथी. दूर दूरनी सूचनाथी कंई बहुमु होय ते उपर आपी ते चर्चामा आगळ जता कहे छे ते ज. गुजराती भाषाना उच्चारणनी विलक्षणता विशे आगळ अवतरण आपेल छे (पृ. २७८) ते पछी तेओ कहे छे : "वळी आवा प्रयोगोना लाभमा उमेरवु जोईए के एथी वाणीप्रवाहनी भारव्यवस्था अथवा तो स्वरव्यजननी सुरावट के शब्दार्थनु औचित्य कांई कोई वार सुधरी आवे छे. छेवटे, गेय रचनाने तालबन्धनी सफाई आवश्यक छे, तेमा ताळी (आघात के सम)ना जे जे स्थान तेमा एक मात्रानो के लेश पण आम के आम फेर पडवो न जोईए. पण संगीतथी स्वतंत्र कवितामाधुर्य जेनु लक्ष्य, ते रचनामा आ प्रकारनी छूट शा माटे नही? छूटनो अतियोग के दुरुपयोग इष्ट नथी ए सौ स्वीकारे छे ज; आ सग्रहमा जे कोई अति छूटना दाखला हशे तेनो बचाव करवा आग्रह पण नथी. वाचनार आ नवी स्वतंत्र प्रतिवाळी पद्यरचनानु रूप समग्र रीते जाणवा आवश्यक तोये घणु छे." (भणकार १ली आवृत्ति, पृ. २६–२७) वक्तव्य एवु जणाय छे के 'मात्रामेळी रचनाओमा तालनी मात्राना स्थानो नियत छे, त्या बे ताल वच्चेनी मात्रासख्यामा वधारो घटाडो थई शके नहीं; पण आ वृत्तरचनाओ तो संगीतथी विश्लिष्ट थई छे तो तेमा शा माटे फेरफार न थाय?'

सिद्धान्तनी दृष्टिए आवा एक पण फेरफारथी मूळ छंद एनो ए रहेतो नथी ए ज साचुं छे. अने जूनो छंद जतां नवो छंद सुमेळवाळो छे के नहीं ए प्रश्न ज रहे छे. ए रीते कहेवुं होय तो कही शकाय के आ नवा प्रयोगो वाळी पंक्तिओ पृथ्वीनी नथी, अने नवो छंद पृथ्वी जेटलो सुन्दर नथी. पण छन्दनी दृष्टिए आपणी पासे एटलो ज प्रश्न नथी. प्रश्न ए छे के पृथ्वीना प्रवाहमां आ पंक्तिओ आवी शके के नहीं? तो ए बाबती मारो अभिप्राय ए छे

हवे मात्रामेळ रचनाओमां बे ताल वच्चेनुं अंतर नियत छे ए खरुं पण ए अंतर मापवानानुं छे, तेमां आवती अक्षरमात्राओ सामान्य गणतरी रीते वधती के घटती होय तो ते लांबी टूंकी करी मनपमात्रा साथे बंध बेसाडी शकाय छे, ए तो प्रसिद्ध छे. एटले ए एटलुं विधान मात्रामेळना मोटा ख्याल उपर बंधायेलुं छे अने तेथी विरुद्ध पक्ष तरीके ना पछीना विधानने नो टेको मळी शकतो नथी. पण खरी रीते तो शुद्ध वृत्तनो प्रश्न स्वतंत्र रीते ज चर्चवो जोईए. प्रश्न ए छे के जो शुद्ध वृत्तो, एटले अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो संगीतथी स्वतंत्र होय, तो एनो मेळ बंधाय छे शाथी? अलबत लघुगुरुनी अमुक क्रमनी रचनाथी अने एम होय तो ऊलटुं ए लघुगुरुनो क्रम न बदलाथी शकाय एवी स्थिति ज एमांथी प्राप्त थाय छे. अने आखा कथनने अंते एमणे जे यतिस्वातंत्र्यनो उल्लेख कर्यो छे एने आ समग्र वादना साथे शो संबंध छे ए जरा पण स्पष्ट थतुं नथी. अर्थात् प्रो. ठाकोर पोते पृथ्वी छंदमां करेला फेरफारोने स्पर्शे छे पण ते विशे वधु कही शकता नथी.

आ कथनमां प्रो. ठाकोर एक साथे घणा प्रश्नोने स्पर्शे छे अने छतां तेना अंदरना मुद्दाने स्पष्ट करी शकता नथी. जेम के गुजराती भाषाना विलक्षण उच्चारणथी शब्दार्थनुं औचित्य कोई वार सुधरे एम कह्युं छे ते खरुं छे, एथी स्वरव्यंजननी सुरावट कोई वार सुधरे एम कह्युं छे ए पण समजाय एवुं छे जो के एना समर्थनमां दृष्टान्त आप्युं होय तो वधारे सारुं. पण एथी वाणीप्रवाहनी भारव्यवस्था सुधरे एम कह्युं छे एनो अर्थ शो? आ भारव्यवस्था ते अर्थनिष्पाद्य भारव्यवस्था के पद्यनिष्पाद्य भारव्यवस्था? अर्थनिष्पाद्य भारव्यवस्था एवो अर्थ होय तो ते केवी रीते गुजराती उच्चारणथी सुधरे ए समजातुं नथी. ए तो जे शब्द मूकीए तेना अर्थथी नियत थवानी छे, तेमां सुधरवा-बगडवापणुं रहेतुं नथी. पद्यभारव्यवस्था अभिप्रेत होय, तो प्रश्न थाय छे के तेओ पद्यभार स्वीकारे छे? पद्यभारव्यवस्था तो पद्यरचनाथी नियत थाय छे, ते अमुक उच्चारणथी शी रीते सुधरी शके?

वे जेम त्रैष्टुभ जागत छंद प्रवाहमां अनेक प्रकारना छंदोनी पंक्ति आवी शकती हती — आवृत्त अक्षरमेळ छन्दनी पण आवी शकती हती, तेम आ पण आवी शके एनाथी पृथ्वीनो आखो प्रवाह बगडी जतो नथी कारण के तेथी पृथ्वीना संधिओ बहु बदलाता नथी 'तजी०' पंक्तिमां चोथा संधि लग्लगानी जगाए लगागा थाय छे त्यां ए एक ज संधि बदलाय छे, बाकीना बधा एम ने एम रहे छे 'प्रकाश०'वाळी पंक्तिमां मात्र छेल्ला बे टूका संधिओ ल्गा गाल्गा बदलाय छे, अने 'निहाळु०' पंक्तिमां मात्र छेल्ला संधि जरा बदलाय छे पण एथी पठनमां बहु मोटो फरक पडतो नथी अने तेथी पृथ्वीना प्रवाहमां आवी पंक्तिओनो निषेध करवानी जरूर नथी क्याक एनाथी वैविध्य पोषाईने समग्र छन्द प्रवाहने लाभ पण थाय एथी ऊलटी रीते 'ऋतु ऋतुए जे०' पंक्तिने में निषिद्ध गणी तेनु कारण ए छे के संयतिक वृत्तोना धारणमां में आगळ कह्यु तेम यतिने माटे तेना पूर्वे आवता खंडमां चार गुरु आवश्यक छे, ए गुरुनी जगाए लघु मूकी शकाता नथी एटले त्यां सममात्रआदेशथी मंदाक्रान्तानु आखु स्वरूप भागी जाय छे उपरना पृथ्वीना दाखलामां आखु स्वरूप भांगी जतु नथी, थोडो फेरफार थाय छे ज्यां यतिनी आवी आवश्यकता नथी त्यां एकाद गुरुनो सममात्रआदेश वृत्तना मेळने बहु नुकसान करतो नथी — खास करीने लांबा वृत्तमां आ बाबतने आवा फेरफारवाळा बीजा वृत्तो जोवाथी टेको मळे छे 'भागवत'माथी ज एक दृष्टान्त लउ 'भागवत'ना ९मा स्कधना २४मा अध्यायमां ब्यापद तरीके अनुष्टुप आवे छे अने अंतना बे श्लोको वसंततिलकामा छे तेमानो छल्लो नीचे मुजब छे

पृथ्व्या स वै गुरुभर क्षतयन् कुरूणा
मन्त समुत्थकलिना युधि भूपचम्व ।
दृष्ट्या विधूय विजये जयमुद्विघोष्य
प्रोच्योद्धवाय च पर समगात्स्वधाम ॥

भागवत, (निर्णयसागर, आवृत्ति ८मी) ९ २४,६७

आवी ज विकृतिवाळो एक श्लोक 'ललितविस्तर'माथी मळे छे

प्रत्येक बुद्धभि च अर्हभि पूर्णलोको
निर्वार्यमाणु न बल मम दुर्बल स्यात्।
सो भूपु एकु जिनु भेष्यति धर्मराया
गणनातिवृत्तु जिनवरु न जातु छियत्॥

ललितविस्तर, पृ० ३०३

यने श्लोकमा पण पक्तिओ वसततिलकानी छे. 'भागवत'ना श्लोकमा पहेली पक्तिनो अने 'ललितविस्तर'ना श्लोकमा छेल्ली पक्तिनो प्रथम गुरु चिराईने बे लघु बन्या छे. ('भागवत'मा 'पृथ्व्या.' शब्दमा व्या सयोग निर्बल गणवो जोईए.) छता पठनमा नही जेवो फेर पडे छे. आ लघुद्वयना प्रारभवाळु वृत्त पिंगलमा स्वीकारायु पण छे तेनु नाम हेमचन्द्र ऋषभ आपे छे.

ऋषभ: ललगालगा ललगा ललगा लगागा

छन्दोनु० पृ. १०ब

शार्दूलविक्रीडितना पण पहेला गुरुने स्थाने बे लघु आवता तेनो मत्तेभविक्रीडित थाय छे.

मत्तेभविक्रीडित: ललगागा ललगा लगा ललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ. १५अ

अने 'प्राकृत पैंगल' शार्दूलनी साथे आ मत्तेभनी पक्तिओ, ए शार्दूल होय ए प्रमाणे मिश्र करे छे (प्रा. पैं. पृ. ५३३).

आवु ज हेमचद्र महास्रग्धरा पण आपे छे, जो के यतिने लीधे अेने हुं ओछु निर्वाह्य गणु छु

महास्रग्धरा ललगागागा लगागा । ललललललगा । गालगा गालगागा

छन्दोनु० पृ. १६अ

आ बधा दृष्टान्तो जोता एम जणाय छे के आ प्रकारना फेरफारोमा जो गुरुने बदले बे लघु मूकवा होय तो बे गुरु भेगा आवता होय तेमाथी एक लई ए फेरफार करवाथी चरणना मेळमा ओछामा ओछो विक्षेप थाय छे प्रो ठाकोरे 'म्हारा सॉनेट'ना पृथ्वीमा करेला सर्व गुरुपाटनो[10] आ ज स्थानना एटले लगा गालगामा ज्या बे गुरुओ भेगा थाय छे ते स्थानना ज छे आनु कारण स्पष्ट छे बे गुरुमाथी पहेलो भागता त्या तरत बीजो गुरु ए भागेला सधिने बाधी लेवाने हाजर होय छे अलबत्त बीजो गुरु आ प्रमाणे आगला सधिमा चाल्यो जाय छे, पण तेथी पछीनो सधि आधारहीन नथी थई जतो, तेनो अत्य गुरु तो स्थिर ज छे पाटन दुष्ट त्या गणाय ज्या गुरुना तूटवाथी तेनी आगळना लघुओ निराधार थाय अने तेमने पछीना लघुओ साथे भळी जवु पडे आथी लघुओनी सख्या एकदम घणी वधी जाय अने रचना

१०. गुरुपाटन, एटले गुरुने चीरीने तेना बे लघु करवा ते.

शिथिल थई जाय अने बीजु ए के आवो फेरफार लाबा वृत्तना मेळने विक्षिप्त करे ते करता टूकाने वधारे विक्षिप्त करे दाखला तरीके वसततिलकाना आद्य वे गुरुमाथी पहेलो तूटता मेळने बहु विक्षेप थतो नथी पण ए वसततिलकामा ए ज जातना फेरफारथी शरू थई प्रमिताक्षरा बने छे त्या मेळ तद्दन बदलाई जाय छे अने ते साथे ए पण स्मरणमा राखवु जोईए के ज्या गुरुसततिथी यति आवश्यक बनती होय त्या कोई पण गुरुनु पाटन मेळने मोटी हानिरूप छे, जेनु दृष्टान्त आपणे 'ऋतु ऋतुए जे०' पक्तिमा जोयु अने आ पाटनमा पण, वसततिलका अने शार्दूलविक्रीडित बन्नेमा, आद्य गुरुनु ज पाटन थाय छे वळी आ ज दृष्टान्तो उपरथी कही शकीए के एक गुरुनु पाटन कदाच नभे पण एक ज पक्तिमा बे गुरुना पाटन कदी नभे नही

सामान्य रीते सममात्रवादेशमा गुरुना पाटनमा ज वधारे प्रसगो होय छे बे रघुना गुरु बनवाना प्रसगो ओछा ज होय छे आ विकृतिथी कदी आसपासना सधिओ बदलावानो सभव नथी ए विकृति ए सधिमा ज उत्पन्न थई एमा ज समाय छे छता अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तमा गुरुनु एवु मोटु महत्त्व छे, के ए क्याक पण अस्थाने आवो पडता तेनाथी मेळनु सम-तोलपणु तरत विक्षिप्त थाय अने ए जातनो फेरफार पण लाबा करता टूका वृत्तना मेळने वधारे विक्षिप्त करे अने ए वधु कही रह्या पछी ए तो कहेवानु रहे छे ज के आवा फेरफारो पारखवाने छदसौष्ठवनी दृष्टि तो जोईए ज जेने माटे कोई नियमो आपी शकाता नथी

आ सममात्रवादेशथी थती विकृतिओ एक ज छदने लक्ष करी जोईए श्री साडेसराए शालिसूरिना विराटपर्वमाथी लाबा उतारा आप्या छे तेमा घणा श्लोको रथोद्धता स्वागतामा छे तेमा घणी जगाए आ जातनी विकृति थई छे तत्कालीन भाषानी खासियतोने लीधे देखाती विकृतिओ बाद करीन शुद्ध सममात्रवादेशनी विकृतिओ ज जोईए

देवि जा परभवी दुरिताथि,
१ द्रूपदी सा गई प्रिय साथि,

* * *

पाच पाडव रह्या हिव नारी,
२ द्रूपदी रही थाइय दासी,

* * *

डूंबनइ घरि जल वहिउं हरिचंदइ,
३ भाल्डी मरण साघु मुकुन्दइ;

* * *

पुत्र गागलि महारिषि फेरा,
४ दैव वायर जछइ बहु तेरा.

वृत्तरत्ना पृ. १४–१५

अही दरेक कडीना अंकि पंक्ति शुद्ध छे. १–२–४ कडीनी पहेली पंक्ति शुद्ध स्वागतानी छे, ते दरेकनी बीजी पंक्ति विकृतिवाळी छे. त्रीजी कडीमा १ली विकृतिवाळी छे, बीजी शुद्ध छे, अने तेने ज हु सौथी पहेला लउं छु: त्रीजी कडीमा ए छे ते प्रमाणे वाचीए तो पठन अने न्यास नीचे प्रमाणे थाय

डुंबनि घरि जल वहिउ हरिचंद्रइ
ललल लल लल ललल लल गालल

उपान्त्य स्याननो मात्र एक ज गुरु अहीं टकी रहे छे. सममात्रकादेशथी लघूकरण व्यापार आगळ लई जईए तो मेळ केवी रीते नाश पामे ते बतावयानो आ सुन्दर दाखलो छे. पण शब्द 'दइ' ते 'दे' जेवु ज उच्चारातु हशे, एमा शका रहेती नथी. एवो उच्चार करीए तो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

ललल लल लल ललल ललगागा

संधिना स्वरूपने स्थिर राखवानु काम गुरु ज करे छे ते आथी ध्यानमा आवशे. आखो प्रवाह स्वागतानो छे, एटले कोई कुशल छदोविद आने स्वागतामा पठी शके, नहितर आ एकली पंक्तिने स्वागतामा पठवी ए लगभग असाध्य छे. एक साथे आवता लघुओ बोलवामा पण फावता नथी. "जल वहपू".. एम उच्चारीए तो मेळनो कईक उद्धार थाय छे. पण ए मेळ सुन्दर तो बनतो ज नथी. अही गुरु मूकता पण तेनी आगळ आठ जेटला लघुओ आवे छे, जे वृत्तोमा क्याई आवता नथी. एटले लघूकरणव्यापार विशे, आपणे कही शकीए के तेथी एक साथे बे संधिओना बधा लघुओ भेळा थई जवा जोईए नही. ४थी कडीनी पंक्तिमा पण लघूकरणव्यापार ज छे तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे.

गालगा ललल लल ललगागा

अही पण बीजा संधिने वाधनारो गुरु तूटता बीजा अने त्रीजा संधिना लघुओ भेगा थई जाय छे. छता पाठ, उपरनी पंक्ति जेटलो विनष्ट न लागतो होय तो कारण एटलु ज छे के आद्य गालगाथी स्वागतानो प्रारंभ

थई जाय छे एटले पठन, उपर जेटलुं मुद्रित नथी थातुं, यावी सममात्रादेशना आ दाखला तो निषिद्ध ज गणवा जोईए हवे बाकीना बे दाखला लईए अने गुरूकरणना दाखला छे

१ गालगा गालगा ल्लगागा
२ गाल्गा ल्गागा लल्गागा

बन्नेमा बीजा सधिना बे लघुओनी जगाए गुरु आवे छे पहेलामा आटली टूकी पक्तिमा गालगानी द्विरुक्ति उद्वेगकर जणाय छे साथे साथे ए पण कही शकीए के आ फेरफार रथोद्धतामा पण नही शोभे कदाच वधारे खराब देखाशे रथोद्धतानी पक्ति आ फेरफारथी गालगा गाल्गा लगाल्गा थता गाल्गानी वीप्सा उपरात ल्गाना अनेक आवर्तनो, तेमा भाने अयवाय छे, जे असुन्दर देखाय छे तेना करता बीजी पक्ति सारी छे बीजीनो फेरफार पण रथोद्धतामा खराब ज देखाशे गालगा ल्गागा लगाल्गा करता पण ल्गा एटलो ज प्रधान रहे छे आ फेरफार स्वागतामा एटलो खराब लागतो नथी आपणे कही शकीए के स्वागताना प्रवाहमा आ पक्ति चाली शके कारण के तेमा सधिओ विविध जणाय छे अने मात्रानी पुनरावृत्ति थती जणाती नथी गुरुना लघूकरणव्यापार सबधी मे कह्यु के बे सधिओना लघुओ भेगा थई जाय ए रीते ए लघूकरणव्यापार न थवो जोईए, कारण के एम थवाथी मेळना घटकरूप सधिओ नाश पामे छे, अने घणा लघुओनु उच्चारण हमेशा क्लेशकर बने छे गुरूकरण विशे एवु कही शकाय तेम नथी गुरूकरणव्यापार सधि बहार जई ज शके नही, एटले एमा सधि तद्दन लुप्त थवाना प्रश्न उपस्थित थतो नथी तेम तेमा उच्चार वधारे मुश्केल बनतो नथी पण आ व्यापार पण मेळने तो विक्षेपकारक थाय छे ज वृत्तोमा गुरु एटलो वधो भारे अने उत्कट छे के, तेथी तरत मेळनु समतोलपणु विक्षिप्त थाय छे, तेनी स्निग्धता एकदम बगडे छे, अने छन्द बेडोळ लागे छे एटले आ व्यापारने पण घणो ओछो अवकाश छे, बहु ज विरल प्रसग छे आवा दरेक प्रसगे कविए समजवु जोईए के ते मेळ बहार जाय छे, अने एम जवाने माटे काव्यमा कोई खास हेतु होय तो ज ते न्याय्य अथवा क्षम्य गणाय

प्राचीन पिंगलोए आवी विकृतिओने भिन्न छन्दनु नाम आप्यु छे तेने हु अशास्त्रीय गणु छु दाखला तरीके हेमचन्द्रे अने विरहाके बन्नेए रथोद्धतानी विकृतिओने भिन्नभिन्न नामो आपेला छे हेमचन्द्र तेने भूषणा नामनु गलितक कहे छे, विरहाक विलासिनी कहे छे अने एनो न्यास मात्रा

छन्दो तरीके आपे छे, जे अशास्त्रीय छे, अने समजवामां मुश्केली ऊभी करे छे." न्यास आप्या पछी पण छंदनुं स्वरूप तो पठनथी ज समजवानुं रहे छे एटले हुं वर्णनां लक्षणदृष्टान्तो नीचे आपुं छुं:—

पिच्छ पीवरमहापओहरा
यस्स यस्स न ययंस मणहरा।
विप्फुरन्तसुरचावकण्ठिआ
भूसणा नहसिरी उवट्ठिआ॥

छन्दोनु० पृ. ३१अ

अही पहेली त्रीजी अने चोथी पंक्ति शुद्ध रथोद्धतानी छे. बीजीमां विकृति एटली छे के तेना अंत्य संधि रगालगाने बदले अहीं ललललगा छे, अर्थात्

११. भूषणानुं लक्षण हेमचन्द्र "पी ती भूषणा।" एम आपे छे. तेना उपर टीका: "द्वौ पंचमात्रौ द्वौ त्रिमात्रौ यमितेंऽघ्रौ भूषणा नाम गलितकम्।" बे पंचमात्रको बे त्रिमात्रको, चरणोमा यमक, ए भूषणा नामनुं गलितक. (छंदोनु० पृ. ३१अ) आ रीते एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

भूषणा : ५ + ५ + ३ + ३

आ पद्धतिने हु अशास्त्रीय एटला माटे कहु छु के आ छन्द वस्तुताए रथोद्धतानी विकृति छे, पण एनु माप एवी रीते आप्यु छे के तेथी रथोद्धतानु स्वरूप सचवाई शके नही उपरना मापमा जे मात्रा सख्या मूकी छे ते रथोद्धताना संधिओनी छे ए रीते मारी संधिपद्धतिने आ उत्थापनिकानु हु समर्थन पण गणु:—

रथोद्धता. गालगा ललगा लगा लगा

पण बे पचमात्रक कहेवाथी तो लगागा गागाल गाललल एम अनेक रूपोने पहेला बे स्थाने प्रसग मळे, अने ए संधिओथी रथोद्धताना मेळने जरा पण अवकाश मळतो नथी दाखला तरीके

लगागा गागाल गाल लगा

करीए तो रथोद्धतानो तो शु पण कोई पण जातनो मेळ रहेतो नथी. आ करता विरहाके आपेलु लक्षण रथोद्धताना मेळने वधारे मळतुं छे.

बे गुर्वन्त पचमात्रको + लगाल + गा

पचमात्रकोने गुर्वन्त कह्या अने अंत्य चार अक्षरोनुं लगालगा रूप आप्यु एटले रथोद्धताना संधिओ बधाई गया. ए एम पण बतावे छे के गुरुओ ज संधिओनु रूप बाधनारा छे. पण एकदर आ मात्रासंख्या आपवानी पद्धति वृत्तो माटे अपर्याप्त तेम ज भ्रामक छे

बीजा स्थानना गुरुनी जगाए बे लघु मूक्या छे एम करवाथी रथोद्धतानो मेळ शिथिल थाय छे एटलुं ज नहीं, पण ध्यानमां आव्युं हशे के ए विकृत संधिनुं स्वरूप एवुं छे के एने स्वागतानो पण कही शकाय. वळी ए पंक्ति रथोद्धतामां आवे छे एटले एने आपणे रथोद्धतानी विकृति गणीए, पण जो ए स्वागतामां आवी होत तो एने स्वागतानी विकृति गणत. आ उपरथी स्पष्ट थशे के छंदोनुं स्वरूप तेना संधिओ उपर आधार राखे छे अने लघूकरणव्यापार संधिओनी विशिष्टतानो नाश करे छे. अलबत्त गुरूकरणव्यापार पण मेळमां विक्षेप आणे छे पण एनी प्रक्रिया संधिओ सोंसरी चाली शकती नथी, एनो व्यापार संधिओनी अंदर ज पुराई रहे छे, पण लघूकरणव्यापार अनेक संधिओ सोंसरो जई आखा छंदना मेळनो नाश करे छे. वृत्तविकासमां आपणे घणी जगाए लघूकरणने ज प्रवृत्त थतो जोयो पण ए ज व्यापार अंते वृत्तना बंधनो नाश करे छे. हवे विरहांकना विलासिनी छंदनो दाखलो लईए

मणिविरामगणाण मज्झओ
घित्तुआण दो दे शिलीमुखे ।
पत्थिव च तइअ विलासिणी–
पाअम्मि फुडणेउरिल्लिए ॥

वृत्तजातिसमुच्चय ४, १५

आ श्लोकमां उत्तरार्ध आखुं शुद्ध रथोद्धतानुं छे पूर्वार्धमां पण अंत्यसंधि ल्गालगा शुद्ध रूपे रहेला छे. पहेली पंक्तिमां पहेलो संधि गाल्गा जाईए तेने बदले ललल्गा छे, एटलुं ज पहेला गुरुनुं लघूकरण थयुं छे. ए ज रथोद्धतानो बीजो संधि छे, पण तें त्यां वेवडानो नथी कारण के बीजा संधिमां गुरूकरण थई ए लगागा बन्या छे. बीजी पंक्तिमां पण ए बीजा संधि ल्गागा ज छे, जो के त्यां पहेलो संधि पोताना मळ रूप गाल्गामां ज रह्यो छे. रथोद्धतामां आटलो ज फेर थयो छे. विकृति छतां क्याई संधि भांगतो नथी ए स्पष्ट छे. विकृति एवी नथी के रथोद्धताना मुख्य मेळनो नाश करे, अने तेथी आ विकृतिने पण जुदु नाम आपवानी जरूर ऊभी थती नथी

परंपराथी मळेला पिंगळोमां अणवपराया छंदोनुं अने अल्प महत्त्वनी विकृतिओनुं एटलुं बधुं भारण थयुं छे के ए नकामां नामोनी साफसूफी करवानी जरूर छे. अने तेम छतां ज्यां नवा अने स्वतंत्र मेळ जणातो होय त्यां नवुं नाम आवश्यक छे ए ध्यानमां राखवुं जोईए. आ रीते हुं प्रियंवदाने स्वतंत्र छंद न गणुं पण रथोद्धता अने स्वागता स्वतंत्र छंदो छे ज. तेम ज प्रमिताक्षरा, मंजुभाषिणी, कलहंस ए बधाने स्वतंत्र छंदो गणुं कारणके

जो के ए बधाना नवघो वसततिलका साथे बतावी शकाय छे छता तेमाना दरेकनो मेळ स्वतत्र छे. पण जे छदो सममात्रवादेशव्यापारथी थता होय, अथवा एकाद मात्राना विवर्धन के सडनथी थोडा बदलाता होय, पण कोई नवो मेळ व्यक्त न करता होय, मात्रमूळ मेळनी विकृति ज बतावता होय, जे मूळनी साथे उपजाति के मिश्रण तरीके ज आवी शकता होय पण जेमनामां स्वतत्र ऊभा रहेवा जेटलु जीवनसामर्थ्य न होय, एवाने जुदां जुदां नामो आपवानी जरूर नथी. अने तेथी में आ ग्रन्थमा बहु ओछा नामो वापर्यां छे

अहीं सुधी जे कई मेळ विशे कह्यु ते उपरथी जणाशे के अनुष्टुपने एक ज वृत्त के छद गणता तेनो आ रीते खुलासो थई शकतो नथी. तेमा अमुक अमुक अक्षरोनु लघु गुरु स्वरूप नियत न होवाथी उपरनी रीते तेना सधिओ पाडी शकाता नथी. पण बीजी एक रीते संधिओ पाडी शकाय. अनुष्टुपना जेटला विकल्पो होय ते दरेकना सधिओ जुदा जुदा नियत करी बतावी शकाय. मारु वक्तव्य स्पष्ट करवा श्री उमाशकरना 'रति-मदन' काव्यमाथी थोडा अनुष्टुपो नीचे उतारु छु'

जोती'ती : सिंधु उल्लासे ऊछळी ऊछळी जतो,
वेळुमा जळनी रेखा मृदुतामयि आकतो १

परतु पूछ तो एने, खडको काळमीढ त्या
ऊभा ते किंचिते भीज्या, झीकी शिर मथ्यो छता ! २

लीलोतरी-लचताने वहे मित्र वसतने
के कैलास तणे भाले विशाळे एक, जो बने, ३ १७०

स्फुरावी तो जुए मजु म्होरती वेल माधवी,
शिवने हृदये लीला तारीये एवि छे थवी ४

स्वर्गंगा शीकरे इन्द्रचाप दीठु जगे कहे,
के शुचि शिवहैये तु रमणा रागनी चहे ? ५

प्राचीना, पृ ६७–६८

आ श्लोकोने आपणे स्वीकारेला सधिओमा न्यासवा होय तो नीचे प्रमाणे न्यास थाय.

गागागागा लगागागा	गालगागा लगालगा
गालगा ललगा गागा	ललगा ललगा लगा

बीजा स्थानना गुरुनी जगाए बे लघु मूक्या छे एम करवाथी रथोद्धतानो मेळ शिथिल थाय छे. एटलु ज नही, पण ध्यानमा आव्यु हशे के ए विकृत सधिनु स्वरूप एवु छे के एने स्वागतानो पण नही कहाय अही ए पक्ति रथोद्धतामा आवे छे एटले एने आपणे रथोद्धतानी विकृति गणीए, पण जो ए स्वागतामा आवी होत तो एने स्वागतानी विकृति-गणत आ उपरथी स्पष्ट थशे के छन्दोनु स्वरूप तेना सधिओ उपर आधार राखे छे अने लघूकरणव्यापार सधिओनी विशिष्टतानो नाश करे छे अलबत्त गुरूकरणव्यापार पण मेळमा विक्षेप आणे छे पण एनी प्रक्रिया सधिओ सोसरी चाली शक्ती नथी, एनो व्यापार सधिओनी अदर ज पुराई रहे छे, पण लघूकरणव्यापार अनेक सधिओ सोसरो जई आखा छदना मेळनो नाश करे छे वृत्तविकासमा आपणे घणी जगाए लघूकरणने ज प्रवृत्त थतो जोयो पण ए ज व्यापार अते वृत्तना बधनो नाश करे छे हवे विरहाकना विलासिनी छदनो दाखलो लईए:

मणिविरामयाणाण मज्झओ
घित्तुआण दो दे शिलीमुखे ।
पत्थिव च तइअ विलासिणी–
पाअअम्मिं फुडणेउरिल्लिए ॥

वृत्तजातिसमुच्चय ४, १५

आ श्लोकमा उत्तरार्ध आखु शुद्ध रथोद्धतानु छे पूर्वार्धमा पण अत्यसधि लगालगा शुद्ध रूपे रहेलो छे पहेली पक्तिमा पहेलो सधि गालगा जोईए तेने बदले लललगा छे, एटलु ज पहेला गुरुनु लघूकरण थयु छे ए ज रथोद्धतानो बीजो सधि छे, पण ते त्या वेबडातो नथी कारण के बीजा सधिमा गुरूकरण थई ए लगागा बन्यो छे बीजी पक्तिमा पण ए बीजो सधि लगागा ज छे, जो के त्या पहेलो सधि पोताना मूळ रूप गालगामा ज रह्यो छे रथोद्धतामा आटलो ज फेर थयो छे विकृति छता क्याई सधि भागतो नथी ए स्पष्ट छे विकृति एवी नथी के रथोद्धताना मुख्य मेळनो नाश करे, अने तेथी आ विकृतिने पण जुदु नाम आपवानी जरूर ऊभी थती नथी

परपराथी मळेला पिंगळोमा अणवपराया छदोनु अने अल्प महत्त्वनी विकृतिओनु एटलु बधु भारण थयु छे के ए नवामा नामोनी साफसूफी करवानी जरूर छे अने तेम छता ज्या नवो अने स्वतत्र मेळ जणातो होय त्या नवु नाम आवश्यक छे ए ध्यानमा राखवु जोईए. आ रीते हु प्रियवदाने स्वतत्र छद न गणु पण रथोद्धता अने स्वागता स्वतत्र छदो छे ज तेम ज प्रमिताक्षरा, मजुभाषिणी, कलहस ए बधाने स्वतत्र छदो गणु. कारणके

जो के ए बधाना मवयो वसततिलका साथे बतावी शकाय छे छतां तेमाना दरेकनो मेळ स्वतन्त्र छे. पण जे छदो सममात्रवादेशव्यापारथी थता होय, अथवा एकाद मात्राना विवर्धन के खडनथी थोडा बदलाता होय, पण कोई नवो मेळ व्यक्त न करता होय,–मात्र मूळ मेळनी विकृति ज बतावता होय, जे मूळनी साथे उपजाति के मिश्रण तरीके ज आवी शकता होय पण जेमनामा स्वतन्त्र ऊभा रहेवा जेटलु जीवनसामर्थ्य न होय, एवाने जुदा जुदा नामो आपवानी जरूर नथी. अनें तेथी में आ ग्रन्थमा बहु ओछा नामो वापर्यां छे.

अहीं सुधी जे कई मेळ विशे कह्यु ते उपरथी जणाशे के अनुष्टुपने एक ज वृत्त के छद गणता तेनो आ रीते खुलासो थई शकतो नथी. तेमा अमुक अमुक अक्षरोनु लघु गुरु स्वरूप नियत न होवाथी उपरनी रीते तेना सधिओ पाडी शकाता नथी. पण बीजी एक रीते सधिओ पाडी शकाय. अनुष्टुपना जेटला विकल्पो होय ते दरेकना सधिओ जुदा जुदा नियत करी बतावी शकाय. मारु वक्तव्य स्पष्ट करवा श्री उमाशकरना 'रति-मदन' काव्यमांथी थोडा अनुष्टुपो नीचे उतारु छु:

जोती'ती: सिधु उल्लासे ऊछळी ऊछळी जतो,
वेळुमा जळनी रेखा मृदुतामयि आवतो १

परतु पूछ तो एने, खडको काळमीढ त्या
ऊभा ते विंचिते भीज्या, झीकी शिर मथ्यो छता ! २

लीलोतरी-लचताने वहे मिश्र वसतने
के कैलास तणे भाले विशाळे एक, जो बने, ३ १७०

स्फुरावी तो जुए मजु म्होरती वेल माधवी,
शिवने हृदये लीला तारीये एवि छे थवी ४

स्वर्गंगा शीकरे इन्द्रचाप दीठु जगे वहे,
के शुचि शिवहैये तु रमणा रागनी चहे ? ५

प्राचीना, पृ ६७–६८

आ श्लोकोने आपणे स्वीकारेला सधिओमा न्यासवा होय तो नीचे प्रमाणे न्यास थाय

गागागागा लगागागा गालगागा लगालगा
गालगा ललगा गागा ललगा ललगा लगा १

लगालगा लगागागा	ललगागा लगालगा	
गागागागा लगागागा	गागा ललगा लगा	२
गागालगा लगागागा	लगागा ललगा लगा	
गागागा ललगा गागा	लगागागा लगालगा	३
लगागागा लगागागा	गालगागा लगालगा	
ललगा ललगा गागा	गागागागा लगालगा	४
गागागागा लगागागा	गालगागा लगालगा	
गालगा ललगा गागा	ललगागा लगालगा	५

अही न्यास मूकता पादान्त ह्रस्वने गुरु करी मूक्यो छे, अने छेल्ली पंक्तिमा 'शुचि'नो 'चि' गुरु गण्यो छे कारण के अनुष्टुपमा बीजो अने त्रीजो बन्ने अक्षरो लघु आवी शकता नथी, एटलु न्यासपद्धति विशे कहेवानु. हवे न्यासमा जे जे संधि प्रतीत थाय छे ते सर्व पूर्वे आवी गयेला जणाशे[12] पण आटला बधा भिन्न छंदोने एक नाम आपी शकाय ? अनुष्टुपनु बहुलतम गुरुवाळु रूप

गागागागा लगागागा , गागागागा लगालगा

अने बहुलतम लघुवाळु रूप

ललगा ललगा गागा ललगा ललगा लगा

१२ आम कहु छु पण ते माटे जरा साशंक तो छु:

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूत शुद्धिमत्तर ।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दु क्षीरनिधाविव ॥

रघुवंश, १ १२

तेनो न्यास

लगा लगा गाललगा लगागा गालगा लगा
लगा ललगा गागा गागागा ललगा लगा

प्रथम चरणमा गाललगा आवे छे तेने आपणे क्याय स्वीकार्यो नथी अलबत्त एने परिहरवा लगा लगागा लल्गा एम संधिओ छूटा करी शकाय, पण संधिओना संस्कारो पहेला जणाव्या तेवा जणाय छे तेनी सामे एम कही शकाय के ए प्रतीतिनु कारण पंक्तिमा बे चतुरक्षर शब्दो छे ए छे ए खरु, छता संधिओना आ पृथक्करण अने न्यासथी संतोष थतो नथी एटलु नोधवु जोईए.

ए बे वच्चे अनेक सधिओ आवे छे — आवी शके, ए बधाने एक ज अनुष्टुप नाम आपी शकाये? मिश्रोपजातिनुं दृष्टान्त अहीं काम आवी शके? मिश्रोपजाति प्रवाहमा केटलांकेटला वृत्तो आवी जाय छे! ए बधाने आपणे एक ज उपजाति के मिश्रोपजातिनु नाम आपीए छीए नाम खोटासाचा विशे प्रश्न नथी. प्रश्न ए छे के ए छन्दप्रवाहने आपणे स्वीकारीए छीए, एने स्वच्छन्द गणता नथी, तो आने पण एक प्रवाह तरीके स्वीकारी न शकीए? आ एवो प्रवाह छे के जेमा व्यक्तिना जुदा जुदा नामो पिगले पाड्या नहीं. मात्र मिश्र प्रवाहने ज एक नाम आप्यु, अने ए रीते अनुष्टुपने शुद्ध सस्कृत वृत्तप्रवाहमा स्थान आपी न शकीए? अलबत्त त्यारे पण एने अर्धसम वृत्त तो गणवु ज पडे कारण के एनो उपसहार लगालगा एवा स्थिर सधिथी समचरणमा ज थाय छे. पण आ स्थिति सतोषकारक लागती नथी. मिश्रोपजातिमा आपणे स्वीकारीए छीए के तेमा छदो बदलाय छे, अर्थात् तेमा आवता भिन्न भिन्न छन्दोने आपणे स्वतत्र छद तरीके स्वीकारीए छीए. मात्र एटलु विशेष के एना कुशल मिश्रणथी एक प्रवाह चाली शके छे एम आपणे कहीए छीए. प्रवाहने एक नाम आपवाथी दरेक पक्तिनो छद एक ज छे एवु निष्पन्न थतु नथी. अने मिश्रणमा त्रिष्टुभथी माडीने पृथ्वी सुधीना प्रयोगो थया छे अर्थात् आ मिश्रणमा जुदा वृत्तने जुदु वृत्त ज आपणे गणीए छीए अनुष्टुपमा आपणे एम गणता नथी तेनो पठनसस्कार एवो नथी एमा दरेक पक्ति अनुष्टुपनी ज विषम के सम पक्ति छे. तो एक ज स्थाने आवता भिन्नभिन्न लगुगुगुच्छो क्या सिद्धान्तथी आवी शके छे, अने केवी रीते ए प्रश्न रहे छे ज, आ बधा कारणोने लीधे आ अनुष्टुपने आपणे अत्यार सुधी स्वीकारेला वृत्तोमा स्थान आपी शकीए नहीं.

आपणे मेळ सबधी सामान्य रूपे कईक कह्यो वृत्तोना आ विभागनो उपसहार करीए ते पहेला एक वात तरफ लक्ष आपवु जोईए में अहीं मद्दयु के सस्कृत वृत्तोमा बे मोटा कुटुबो छे, एक इन्द्रवज्रानु अने बीजु शालिनीनु. बन्ने वेदकालना त्रैष्टुभो छे बन्नेमाथी अनेक प्रकारना नवा वृत्तो विस्तर्यां छे ए बधा में जे क्रमथी तेमनो विस्तार बताव्यो ए ज क्रमे विकस्या छे एम कहेवानो उद्देश नथी. मारी दृष्टि अहीं पौर्वापर्यनी नथी, पण वृत्तोनी मेळनी दृष्टिए सरखामणी करता तेमना बधोमा जे सबध देखाय छे ते बताववानी छे. ते उपरात अहीं मारे ए कहेवु छे के आ बधो विकास वृत्तोने लघुबाहुल्य तरफ लई जनारो छे इन्द्रवज्रा अने शालिनी बन्ने गुरुप्रधान वृत्तो छे तेमना कुटुबना बीजा वृत्तोने आ दृष्टियी जोता बधा धीमे धीमे बधारे बधारे लघुबाहुल्य तरफ जता जणाशे अहीं ए बधा तेना कुल अक्षरो अने लघुगुरुनी सख्या मूकी बतावु छु:

वृत्त	कुल अक्षरसंख्या	गुरुसंख्या	लघुसंख्या
इन्द्रवज्रा	११	७	४
उपेन्द्रवज्रा	११	६	५
इन्द्रवंशा	१२	७	५
वंशस्थ	१२	६	६
वसंततिलका	१४	७	७
रथोद्धता	११	५	६
स्वागता	११	५	६
प्रियंवदा	१२	४	८
चन्द्रवर्त्म	१२	४	८
चपला	११	५	६
प्रमिताक्षरा	१२	४	८
मंजुभाषिणी	१३	५	८
द्रुतविलंबित	१२	४	८
शालिनी	११	९	२
वैश्वदेवी	१२	१०	२
वातोर्मि	११	८	३
मंदाक्रान्ता	१७	१०	७
स्रग्धरा	२१	१२	९
मालिनी	१५	७	८
हरिणी	१७	८	९
सुवदना	२०	१०	१०
बाकी थोडा ज रह्या ते जोई लईए			
पृथ्वी	१७	७	१०
नर्दटक	१७	५	१२
शिखरिणी	१७	८	९
शार्दूलविक्रीडित	१९	११	८
प्रहर्षिणी	१३	७	६
रुचिरा	१३	५	८

अर्धसमवृत्तो पण आमां अपवादरूप नथी ए छंदोना प्राचीन स्वरूपना मात्रात्मक मापमां एकसाथे गुरुओ आवी शकता पण छेवटे एमनां जे लगात्मक रूपो

सस्कृत साहित्यमा नियत थया ते बधा लघुप्रधान ज थया वैतालीयनु गुरुबहुलतम रूप वैसारी छे तेमा सम विषम पादोना गुरुलघुनी सख्या नीचे प्रमाणे छे

		कुल	गुरु	लघु
वैसारी	विषम	९	५	४
	सम	१०	६	४

तेनु एक रूप वियोगिनी छे

वियोगिनी	विषम	१०	४	६
	सम	११	५	६

तेनु लघुबहुलतम रूप अपरवक्त्र छे

अपरवक्त्र	विषम	११	३	८
	सम	१२	४	८

हवे औपच्छन्दसिकनो जुदो विचार करतो नथी पण आटला समीक्षण उपरथी स्पष्ट थाय छे के वृत्तोनो विकास गुरुबहुलतामाथी लघुबहुलता तरफ थयो छे गुरुबहुल वृत्तो प्रौढि अने गौरवने व्यक्त करवा समर्थ छे, लघुबहुल वृत्तो मार्दव अने लालित्यने माटे उचित छे आ दृष्टिए कही शकीए के वृत्तविकासमा मार्दव अने लालित्यनी छन्दसामग्री वधी छे वळी ए पण कही शकीए के जेमा बन्ने शक्तिओ सरखी होय एवा अयतिक वृत्तो त्रैष्टुभ उपजाति अने वसततिलका छे, अने तेनी नजीकमा ज पृथ्वीने मूकी शकीए माटे ज लावा वृत्तान्तकथनने माटे आ वृत्तो वधारे सगवडवाळा नीवडे सयतिक वृत्तोने मात्र आ दृष्टिए जोई शकाय नहीं कारण के तेमा लघुओ अने गुरुओ सळग सतत आवे छे, अने पक्तिनी लबाईनु एक नवु तत्त्व अदर उमेराय छे ए रीते ए वधारे अटपटा छे आ लघुगुरुसतति शार्दूलविक्रीडितमा टूकामा टूकी आवे छ एटलु ज विशेष नोधवा जेवु छे

आ प्रकरणोमा आपेला चरणना आ लावा पृथक्करणथी स्पष्ट थयु हशे के चरणोना आ अतिम घटको ते सधिओ छे आ सधिओ, बधा, पठनमा मेळना भिन्न अवयवो होवानो सस्कार पाडे छे ते, बधा ज गुर्वन्त होय छे अने भिनभिन्न सख्याना गुरुओ, के लघुओना बनेला होय छे आ लघुओ अने गुरुओ ते वृत्तपिंगलना मूळभूत तत्त्वो छे ते परस्पर अप्रमेय छे छन्दोजगतनी रचनामा सौथी पहेला आ लघुओ गुरुओना सधिओ बने छे पछी ए सधिओथी ज, ए सधिओना भिन्नभिन्न विन्यासथी भिनभिन्न छदो बने छे अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तोनो मेळ लघुगुरुओना नियतक्रमविन्यासथी थाय छे

ए खरुं छे, पण विन्यासमां ए लघुगुरुओ अक्केक भिन्नभिन्न अलग घटको नथी होता पण ते प्रथम संधिओमां निबद्ध थयेला होय छे, अने छन्दोनी सर्व रचना आ संधिओना प्रपंचनी छे. नवा छंदो रचाता पण आ संधिओ ज गतिमान थई नवरचना सर्जे छे. नैयायिकोना मते जेम परमाणुओमांथी सीधेसीधा पदार्थो बनता नथी, पण तेना प्रथम द्वयणुको त्रिसरेणुओ बने छे, अने पछी तेना संयोगथी पदार्थो बने छे, तेम अही प्रथम लघुगुरुओना संधिओ बने छे अने पछी तेमना संयोगथी भिन्नभिन्न छंदोरचना बने छे. अथवा अर्वाचीन रसायनशास्त्र प्रमाणे जेम परमाणु, प्रोटोन अने भिन्नभिन्न संख्याना इलेक्ट्रोननुं बनेलु होय छे, अने पछी ए परमाणुओना रासायानिक संयोगोथी भिन्नभिन्न पदार्थो बने छे तेम अही प्रथम ओछामां ओछा एक गुरु अने बीजा गुरुओ के लघुगुरुओ अमुक रीते गोठवाई तेना संधिओ बने छे. परमाणुनी रचनामां एकाद इलेक्ट्रोन वधतां के घटता जेम परमाणुनुं आखुं स्वरूप बदलाई जाय छे, तेम आ संधिओमांथी एकाद लघु के गुरु घटतां छंदनुं स्वरूप बदलाई जाय छे. संधिओनी गोठवणीनो क्रम बदलातां पण छंदनु स्वरूप बदलाई जाय छे. आ संधिओ आटला ज लघुगुरुना आवा क्रमथी ज केम बंधाया, अने तेना अमुक रीतना विन्यासथी छन्दोनो मेळ केम बन्यो अन्यथा केम नथी बनतो तेनो खुलासो हु करी शकतो नथी. ए संबंधी मारे एटलु ज कहेवानु छे के आटला संधिओना आटला न्यासथी ज मेळ बनी शके छे, एवी छन्दःसौष्ठवनी कोई अज्ञात आवश्यकता छे.

अंग्रेजी फारसी अने मात्रामेळी छंदोनो मेळ, जेनी साथे आपणे साधारण रीते परिचित छीए, तेना करता आ मेळ बहु विलक्षण छे. उपर कह्या ते बधा मेळो अमुक संधिना आवर्तनोथी निष्पन्न थाय छे. अंग्रेजीनो मेळ इयाम्बिक ट्रोकिक के एवा संधिना अमुक आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे. फारसी गझलोनो मेळ मफाईलुन् के एवा एक के वधारे संधिओना आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे. आपणी मात्रामेळ रचनानु पण एम ज छे. पण उपर कह्यां ते वृत्तोनो मेळ एवा कोई आवर्तनथी सिद्ध थतो नथी, पण लघुगुरुना संधिओनी गोठवणथी सिद्ध थाय छे. ए रीते ए, जगतना आपणने परिचित मोटाभागनी पद्यरचनाथी भिन्न प्रकारनो छे, अने आवर्तनो उपर आधार नही राखतो होई विलक्षण छे, गूढ छे, संवादना कोई गूढ नियमने वश वर्ते छे, अने हु जाणु छु त्यां सुधी बीजा कोई साहित्यनी पद्यरचनानी संधिओ करतां आनी संधिसामग्री घणी मोटी अने घणा मोटा वैविध्यवाळी छे. संस्कृत वृत्तोनी असर ए रीते अनन्य छे. संस्कृत वृत्तोनु भाषांतर मात्रामेळी छंदोमां उतारतां जे असंतोष, जे ऊणप रही जाय छे तेनु एक विशेष कारण आ छंदनी अनन्यता छे.

आ छदो आज सुधी गवाता, ए खरं पण ते तालथी गवाता नहीं. मात्रामेळ छदोमा आपणे आगळ जोईशु तेम, सधिना स्वरूपने सगीतना ताल साथे सबध छे. एवो ताल साथेनो सबध आ वृत्तोने नथी. 'भरतनाट्यशास्त्र'मा आ वृत्तोना पठन अने गान सबधी वर्णन मळी आवे छे. अने तेमा तालनो उल्लेख नथी.[13] अने अर्वाचीन छन्दविवेचको पण आ बाबतमा सम्मत छे

---

१३. 'भरतनाट्यशास्त्र'मा पाठ्यगुणो नीचे प्रमाणे गणाव्या छे: "पाठ्यगुणा निदानीं वक्ष्याम.। तद्यया सप्तस्वरा, त्रीणि स्थानानि, चत्वारो वर्णा, द्विविधा काकु, षडलङ्कारा:, षडङ्गानीति ।" (भ. ना. शा. वॉ. २, पृ. ३८५) सप्त स्वरो, त्रण स्थान, चार वर्ण, बे प्रकारनी काकु, छ अलंकारो, छ अंगो. तेमा सप्त स्वरो ते सगीतना प्रसिद्ध सा रे ग म वगेरे सप्त स्वरो छे (एजन पृ. ३८६). त्रण स्थानो ते उर, कठ अने शिर छे. (एजन. पृ. ३८७) चार वर्णो ते उदात्त अनुदात्त स्वरित अने कपित छे (एजन पृ ३९०). बे प्रकारनी काकु ते साकाक्ष अने निराकाक्ष एम बे प्रकारनी छे (एजन पृ. ३९१) छ अलकारो ते उच्च, दीप्त, मन्द्र, नीच, द्रुत अने विलबित छे (एजन पृ ३९२). छ अगो ते विच्छेद, अर्पण, विसर्ग, अनुबध दीपन अने प्रशमन (एजन पृ ३९६). आ बधा शब्दोना अर्थो विवरण अने प्रयोग विना पूरा समजाय एवा नथी पण तेनो गमे ते अर्थ होय ते छता आमां ताल आवतो नथी एटलु अवश्य कही शकाय चौखम्बानी आवृत्तिमा (अध्याय १९मो पृ २२१थी पृ २२४) तथा निर्णयसागरनी आवृत्तिमा (अध्याय १७मो पृ २८०थी २८४) पाठ्यना आ ज गुणो कहेला छे तेम छता आ बे आवृत्तिओमा अध्यायने अते आवता "एवमेतत्स्वरकृत कलाताललयान्वितम् । दशरूपविधाने तु पाठ्य योज्य प्रयोक्तृभि ।" आ श्लोकमा तालनो उल्लेख आवे छे पण ते पाठदोष छे ए स्थानना गायकवाड ओरिएन्टल सिरीझना पुस्तकमा (पृ ४०४) 'कलाकाललयान्वितम्' पाठ छे ते खरो समजवो जोईए. अने ए ज अध्यायमा आ ज सबधमा आगळ कलाकालनो उल्लेख त्रणेय पुस्तकोमा आवे छे "विषादे च वितर्के च प्रश्नेऽप्यामर्ष एव च। कलाकाल प्रमाणेन पाठ्य कार्यं प्रयोक्तृमि. ।" (श्लोक १४१, पृ. ४०२) अने आ ज श्लोक थोडा पाठान्तर साथे चौखम्बा आवृत्तिमा (श्लोक ६९, पृ. २२५) अने कशा पण पाठभेद विना निर्णयसागरमा (श्लोक १२८, पृ २८५) मळी आवे छे अहीं जे कई कहेलु छे ते छन्दना पठन विशे नथी, पण भावप्रदर्शन विशे छे ए स्पष्ट छे, एटले सदर्भ जोता ताल शब्दने स्थान नथी एटलु अवश्य कही शकीए.

के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळवृत्तो ताल साथे गावानां नथी नरसिंहराव गुजरातीमां वपराता छंदो विशे बोलता मात्र हरिगीत जेवा छंदोने ज तालबद्ध कहे छे. मालिनी मंदाक्रान्ता जेवाने नहीं. (Gujarati Language and Literature vol II, p. 245) ए ह ध्रुव पद्यरचनाना भिन्नभिन्न प्रकारो विशे बोलतां कहे छे: "पृथ्वी, शिखरिणी, स्रग्धरा आदि वृत्त लघुगुरु रूपनी मर्यादी योजना द्वारा ऊपजती नादलहरीने लीधे गेय छे तोटक, भुजंगप्रयात, पंचचामर आदि आवृत्त संधिना स्वभाव विशेषमां तालबद्ध होई गेय ज छे. . . . " (सा वि. १, ११७) अर्थात् वृत्तो ताल साथे गवाता नथी. ए. ह ध्रुवना ज माप्यकार जेवा थर्वे आ बाबत विस्तारथी अने दाखलादलीलथी स्पष्ट करे छे" अलबत्त आ वृत्तोने पण तालबद्ध करी बतावावानो प्रयत्न थयो छे, अने ए प्रयत्न मौलाबक्ष घीसेसा जेवा संगीतकोविदने हाथे वडोदराना महाराजा सयाजीरावना आश्रये पुस्तकरूप पामेल होवाथी एने प्रतिष्ठा पण मळी छे. पण ए शास्त्रीय पद्धति नथी. दाखला तरीके ए प्रयत्नमां आवृत्तसंधि अने अनावृत्तसंधि छन्दोनो भेद गण्यो नथी अने तेमां यति विराम के विलम्बन रूपे आवी शकती नथी."

१४. . . . "आ संधिओ जणाव्या, तेमांथी कोई पण एक ज संधिनी बे अथवा ते करतां घणी आवृत्तिओथी जो वृत्त बनाववामां आवे तो ते वृत्त गेय एटले गायनने अनुकूळ थशे पण जो जुदा जुदा अनुवादी [=अवादी] संधिओ लई तेनुं वृत्त बनावीए तो ते पाठ्य एटले के श्लोकनी माफक बोलातुं वृत थशे, केमके एक ज संधि पुनः पुनः अनेक वार आवे, तो, गायन पक्षे तालना सरखी मात्राना समूहो थता होवाथी कोई पण चोक्कस तालमां गाई शकवानी अनुकूळता थशे परंतु पाठ्यवृत्तमां एक ज संधि, बे करता वधारे वार आवर्तन पामतो नहीं होवाथी गायन पक्षे कोई एक मुकरर ताल थतो नहि होवाथी पाठ्य वृत्त ते मात्र पाठ (पठन) करवानी रीत प्रमाणे बोलाशे " . . . . (गायनवादन पाठमाळा पु १. वि ३. छंदोगीतविनोद पृ. ११०)

१५ आनो सचोट दाखलो प्रहर्षिणी छे प्रहर्षिणीनी मात्रा गणता वीस थाय छे तेने मौलाबक्षे १० मात्राना तालमां मूकी बतावी छे, नीचे प्रमाणे:

राग शहना, ताल चतुश्रजाती प्रतिमठताल विलंबकाल मात्रा १०
री री री रि ग । म प मा ग री रि । गा सा
२ २ २ . २ २ २ २

प्रहर्षिणीनी ज पंक्ति तेमणे संगीतना स्वरोमां मूकी छे, अने जे स्वर बे मात्रानो करवानो छे तेनी नीचे में २नो अंक लखेलो छे. आ रीते प्रथम तालमां

अने ए प्रयत्न, वृत्त संबंधी खोटा ख्यालथी उपस्थित थयो जणाय छे. वृत्त संपूर्ण रीते संगीतनी रीते तालबद्ध न गवाय एमां जाणे कईक आपणा छंदोनी अपूर्णता होय, नामोशी होय एवी समजणथी थयो जणाय छे. ए संबंधमां तो बर्वे कहे छे ते योग्य जणाय छे के "पाठ्य अने गेय ए बेनो' मार्ग प्राचीन काळथी ज भिन्नभिन्नपणे प्रवर्तंतो आवेलो जणाय छे. आ उपर लक्ष न आपता घणा संगीतज्ञोनो एवो मत छे के, गमे तेवा वृत्तने गमे ते रागतालथी गाई शकाय छे, तो पछी पाठ्य श्लोकने माटे आवो निर्बंध शो? आं अभिप्राय धरावनारामां काव्य, पिंगल, शब्दनृत्यनो संवाद अने ए बधानो संगीत साथे केवा योगथी संयोग करवामां आवे तो कर्णसंवादना रसमां क्षति थशे के नहीं, ए विशेनुं सूक्ष्मज्ञान न होवुं जोईए, एटलुं ज टूंकामां कही शकाशे." (गायनवादन पाठमाळा पृ. ११०)

पण तालबद्ध न गाई शकाय एम कहेवा साथे आ वृत्तो पण गावाना छे एवो अभिप्राय तो प्रवर्ते ज छे. बर्वे पण एमना आ पुस्तकमां दरेक छंद परंपरा प्रमाणे केवी रीते गवाय छे तेनुं स्वरांकन आपे छे. अने उपर प्रमाणे कहेतां छेल्ले उपसंहारमां कहे छे: "भमराओनो गुंजारव बे के त्रण स्वरमां थाय छे तेम पाठ्यवृत्तोनुं गुंजन बे त्रण चार के पांच स्वर सुधी पण करी शकाशे." (एजन)

अलबत्त अत्यार सुधीनी परंपरा गावानी छे अने श्लोकबद्ध पद्यो प्राचीन रीते के तेमां थोडो फेरफार करीने गाई शकाय तेनी ना नथी. पण अर्वाचीन पिंगलने आ संबंधमां नवुं कहेवानुं ए छे के आ वृत्तोनो संगीतना स्वरो विना पण पाठ करी शकाय छे वृत्तोनी आ पठन-क्षमता ए छन्दोविकासमां आवती अद्यतन दृष्टि छे. *कलाओनो इतिहास जोतां कलाओ प्रथमावस्थामां संकीर्ण* रूपमां जन्मळी आवे छे अने धीमे धीमे विकसती विसकती ज भिन्न थई भिन्नभिन्न प्रस्थान करे छे तेम काव्य आज सुधी संगीत साथे संश्लिष्ट हतुं, ते आ युगमां स्वतंत्र थाय छे, ए मात्र शब्द अने अर्थनी ज कला रहे छे, अने आ वृत्तोमां संगीतथी स्वतंत्र पोतानो मेळ प्रगट करे छे तेने ये त्रण संगीतना स्वरोनी पण आवश्यकता रहेती नथी, आवश्यकता रहे छे मात्र अर्थानुसारी छन्दोबद्ध पठननी काव्य जेम नाट्यकला साथे सखीभाव राखे छे, अने तेथी जेम अद्भुत कलाकृतिओने प्रगट करे छे तेम ते संगीत साथे

अहीं प्रहर्षिणीना पहेला पांच अक्षरो आवे छे. अने त्यां त्रण अक्षरो पछी यतिने अवकाश नथी, यति न ज होय ए रीते पहेला पांच अक्षरो त्यां गावाना आवे छे. (संगीतानुसार-छंदोमंजरी, पृ. ३६)

पण शरीभाव रासतुं आव्युं छे अने रागनो पण ए इच्छामूलक साहचर्य हतुं, काव्यना पोताना अस्तित्व माटे एक आवश्यक अंग हतो नहीं.

अने आ स्वातन्त्र्यथी काव्ये नवी ज प्रगति करी छे ते मर्म काव्यरसज्ञो समजी शकशे. अर्वाचीन युगमां स्व. कान्ते एक ज छन्दनो नवो श्लोकबंध (मंदाक्रान्ताशिखरिणी) आप्यो अने एक ज काव्यमां भावने अनुकूल रीते छंदो बदलवानी शैली आपणने आपी. सद्‌गत नरसिंहरावे सवादी पण भिन्नभिन्न छंदोना चरणोनो नवो श्लोकबंध आप्यो, अने तेमांथी अनेक छंदोना चरणोना चार के वधारे पंक्तिओना श्लोकबंधो थया. प्रो. ब. क. ठाकोरे आपणने अनेक छन्दोनी पंक्तिओनी थता छन्दप्रवाहोनो प्रयोग करी बताव्यो अने तेथी काव्यने वळी नवी मुक्ति मळी, अने काव्ये अनेक छन्दोना नवा प्रयोग करी बताव्या एमां कविने जूना नवा छन्दोनुं एक बहु मोटुं क्षेत्र मळे छे, ते दरेक भावप्रसंगीने अनुकूळ छन्द पसंद करी शके छे के नवो योजी शके छे, अने तेथी काव्यभावने शब्ददेह लावा फलक उपर अर्थानुसारी नर्तन करवाने अपूर्व अवकाश अने प्रसंग मळे छे. छन्दना आ विकासमां गुजराती काव्ये सात्त्विक अभिमान लेवा जेवो फाळो आप्यो छे, एम कहेवामां स्वभाषासाहित्यना अभिमानजन्य कोई अत्युक्ति नथी थई जती एम मानुं छुं.

८

मात्रामेळ के जातिछंदो : परंपरागत स्वरूप

बीजा प्रकरणमा छन्दोना प्रकारोनी चर्चा करता मात्रामेळ के जातिछदोना स्वरूपनी सामान्य रूपरेखा दृष्टान्त साथे बतावी हती आनु स्वरूप समजवु एक रीते वधारे सहेलु छे कारण के छदमा आवर्तन तरत जोई शकाय छे आनो मेळ आवर्तनात्मक छे अने छता आना मेळ विशे पण मारे केटलुक कहेवानु छे, जेना विना छन्दोना मेळनी मीमासा हु अधूरी मानु छु आ मीमासा करवा माटे तेनी पूर्वभूमिका तरीके, में वृत्तमा कर्यु हतु तेम, प्रथम जातिछदोनु परपरागत स्वरूप आपी जाउ छु एम करवामा पण हु छदोनो क्रम मारी रीते ज लईश अने निरपण पण मारी सज्ञामा करीश

मात्रामेळ छदोनु स्वरूप सामान्य रीते गणोथी निरूपाय छे आ गणो ते अक्षरमेळ वृत्तो निरूपवाना अक्षरगणो नही, पण भिन्नभिन्न सख्याना मात्रागणो छे प्राचीनतम पिंगलना 'छन्द सूत्र' मा मात्र चार मानाना गणनो उल्लेख छे[१] पण पछी पिंगलोमा जुदी जुदी मात्रामेळ रचनाओ आवी अने निरूपण पद्धति झीणवटवाळी थता जरूरियातो वधी तेथी पिंगलोए जुदी जुदी सख्याना मात्रागणो स्वीकार्या, हेमचद्र बे त्रण चार पाच अने छ मात्राना गणो स्वीकारे छे, अने तेना वडे छदोना स्वरूपो निरूपे छे *'प्राकृतपैंगल'*कार अने हिंदीमा प्रतिष्ठित 'छन्द प्रभाकर' पण आ ज गणो स्वीकारे छे, जो के बने हेमचन्द्र करता जुदी सज्ञाओ वापरे छे जेनी साथे आपणे सबध नथी पण आ साधनोवाळी पद्धति पण वृत्तोनी अक्षरगणपद्धति जेवी ज *अशास्त्रीय* छे पहेलु तो ए के आ मात्रामेळना पिंगलकारो पण एक चरणमा आवती मात्रानी कुल सख्या प्रमाणे ज छदोना विभागो पाडे छे टूकाने पहेला ले छे अने पछी वधता वधता आगळ ३२ मात्राना छद सुधी जाय छे तेथी वधारे मात्राना छदो मात्रादडको गणाय छे अने छेवटे अर्धसम विषम अने मिश्र छदो आवे छे पण छदोना मेळ पारखी एमने अनुकूळ कोई पद्धतिथी एनु निरूपण करता नथी ऊल्टु एमनी पद्धतिथी एमनु स्वरूप शोधवु वधारे मुश्किल बने छे दाखला तरीके 'छन्द प्रभाकर' २८ मात्राना छदोनु सामान्य नाम यौगिक कही, तेना भेदो ५,१४,२२९ जणावी पछी सार छद आपे छे·

१ ल समुद्रा गण । ४, १२ छन्द शास्त्रम्

सार (१६+१२ अन्तमें वर्णा ऽऽ)

सोरह रविकल अंते वर्णा, सार छंद अति नीको ।
चरित महिम कछु बालकृष्ण अरु, सुघर राधिकाजीको ।।

बीजी बे पंक्तिओ उतारतो नथी अहीं स्वरूप ए प्रमाणे कह्यु छे के

सार छंद सोळ अने बार मळी कुल अठ्ठावीस मात्रानो छे, जेने अंते कर्ण एटले बे गुरु आवे छे आ पद्धति खोटी छे मात्रामेळ छंदोनो मेळ चरणनी के अर्धचरणनी कुल मात्रासंख्या आपवाथी मळी रहेतो नथी, तेमां संधिओ होय छे अने ए संधिओना आवर्तनोथी कुल मात्रा मळी रहेवी जोईए खरु तो एम कहेवु जोईए के मात्रामेळ छंदोमां अमुक मात्रानो संधि होय छे, अने ए संधिना अमुक आवर्तनोथी तेनु चरण थाय छे उपर आपेला छंदमां पण चतुष्कल संधिना, पहेला यतिखंडमां चार अने बीजामां त्रण आवर्तनो छे पहेला यतिखंडमां 'सोरह, रविकल, अंते, वर्णा' एम चतुष्कलना चार आवर्तनो स्पष्ट रीते देखाई आवे छे बीजा यतिखंडमां 'सार छंद अति' एमां चच्चार मात्राना आवर्तनो छूटा देखाता नथी, आठ मात्रानो एक संधि आवे छे, ए अपवाद छे जेनो खुलासो मात्रा-मेळना पिंगले करवो जोईए आ ज रीते पछीना चरणोमां पण 'बालकृष्ण अरु', अने 'सुघर राधिका' एटलामां चतुष्कलो पडी शकता नथी, ए पण 'सार छंद अति' जेवो ज प्रसंग छे पण छंदनो मेळ चतुष्कलोना आवर्तननो छे ए ज पिंगलनु मुख्य वक्तव्य होवु जोईए तेने बदले कुल मात्राओ सोळ अने बार आपी छे ते खोटो मार्ग छे

आनी पछी २८ मात्रानो बीजो छंद हरिगीत आवे छे'—

हरिगीतिका (१६+१२ अंतमें ।ऽ)

शृंगार भूषण अंत रगं जन, गाइये हरि गीतिका।
हरि शरण प्राणी जे भये बहु हे तिन्हें भव भीतिका।।

आ पछी आवती बे पंक्तिओ छोडी दउ छु आना उपर टीका नीचे मुजब छे

शृंगार=१६ भूषण=१२

इसका रचनाक्रम यो है—२, ३, ४, ३, ४, ३, ४, ५=२८

जहा जहा चौकल है उनमें 'जन' जगण ।ऽ। अतिनिंद्य है, अन्तमें रगण ऽ।ऽ मधुमधुर होता है ।

अही यतिखडोनी कुलमात्रा आपवा उपरात मात्रागणो दर्शाववा पडया छे, एटले के कुलमात्राथी छद नथी बनतो एटलु स्पष्ट थाय छे पण आ आटली मात्राना गणो ज शा माटे तेनो खुलासो अही मळतो नथी चार मात्राना गणमा जगण लगाल न आवी शके तेनु कारण पण जणाव्यु नथी खरु तो आ छद सप्तकल सधिना आवर्तनोथी बनेलो छे, ए आवर्तनो पण आ निरूपणमा स्फुट देखाता नथी, ४, ३ ४, ३ बे वार आवे छे तेथी आवर्तन जाणनार समजी शके, पण नही जाणनारनी आखे तो आवर्तित संधि चडशे ज नही. अने चतुष्कलना मेळवाळो सार अने सप्तकलना मेळवाळो हरिगीत एक ज साथे मुकाय छे ए पण प्रचलित विभजननी अशास्त्रीयता बतावे छे

अने सौथी मोटो प्रश्न के आ मात्राओने अमुक ज गणमा शा माटे मूकवी तेनो पण खुलासो आ प्राचीन परपराना कोई पिंगलो आपता नथी तेनो पहेलवहेलो खुलासो आपवानु मान गुजरातने फाळे जाय छे कवि दलपतरामे सौथी पहेला मात्रामेळ पिंगलमा ताल्व्यवस्था योजी, अने तालनी आवश्यकताथी गणो पाडवा पडे छे, अमुक जगाए अक्षर पूरो करवो पडे छे ते समजाव्यु अने मात्रामेळना निरूपणमा तेमणे तालस्थानो अने तालसख्या दर्शावी अने कह्यु के तालनी मात्रा ताल पहेलानी मात्रा साथे जोडाई जाय तो ताल तूटे, पाछळनी मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे नही[२] तेओ कहे छे —

वरणमेळ तो वरण गणि, रचता रहे न व्हेम,
मन धरि मात्रामेळमा, ताल धरो कहु तेम १६

---

२ पिंगलमा दलपतरामे दाखल करेली ताल्व्यवस्थानी अपूर्वता अने महत्त्व बीजा पिंगलकारोए पण नोंध्यु छे १८९३मा प्रसिद्ध थयेला 'भगवतपिंगल'नी प्रस्तावनामा तेना कर्ता जीवराम अजरामर गोर लखे छे "पिंगलनो विषय गूजराती भाषामा पहेलो जाहेर करनार क्वीश्वर दलपतराम डाह्याभाई सी आई ई छे, अने तेमणे ज ताळनी अगत्यनी बाबतनो मोटो शोध कर्यो छ के जे ताळनी बाबत हिंदुस्तानी कविता करनारा अद्यापि समजता नथी " बर्वे पण ए ज कहे छे "मात्रावृत्तिना ताल गुजराती पिंगलो सिवाय बीजा कोई पिंगळोमा आपेला नथी, ने ते सुधारणा प्रथम लोकप्रिय स्वर्गस्थ दलपतरामे पोताना पिंगळमा करी " (गायनवादन पाठमाळा पुस्तक १ वि भाग ३ खड १ छदोगानविनोद प्र २. मात्राजाति गान पृ ५२)

ताळनि मळने पाछली, मळ्ये न तूटे ताळ;
आवि मळे जो आगली, ताळ तुटे तत्काळ १७

वर्णमेळ एटले अक्षरमेळमा अक्षर ल्घु के गुरु होम ते प्रमाणे मूकवाथी छद मळी रहे मात्रामेळमा ताल आवे तालनी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे नहीं, पण आगली मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे पण वळी उमेरे छे के

ताळ ल्गारव तूटता, गणे न गुणिजन दोप,
लागे कथिता लगडी, तो सुणि नहि सतोप १८

दल्पतपिंगळ पृ ७

आ वधु दाखलाथी वधारे सारी रीते समजी शकाय तेने माटे दल्परामे आपेलो ज चरणाकुळनो दाखलो लउ छु

१३ चरणाकुळ छद — मात्रा १६, ताल ४

चरण चरणमा मात्रा सोळे, ताळ धरो चोपाई तोले,
छे गुरु बे जो छेवट ठामे, छद नकी चरणाकुळ नामे ७९

भाग्य, अफिण ने गाजो जाणो, ते मदिरानी प्रजा प्रमाणो,
मूळ दुखना उपजे एयी, जाय मनुपनो बुद्धी जयी ८०

अही कह्यु के दरेक चरणमा सोळ मात्रा आवे, अन तेमा चोपाई प्रमाणे एटले १, ५, ९, १३ ए सख्यावी मात्रा उपर ताल आवे उपरनी बाबत समजाववा माटे हु उपरना एक चरणमा मात्रा सख्या लखी बतावु

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ९ ११ १३ १५
च र ण च र ण मा मा त्रा सो ळ
८ १० १२ १४ १६

ताल पहेली अने पाचमी मात्रा उपर पडे छे ते बन्ने मात्राना अक्षरो छूटा छे ते पछी नवमी मात्रा छूटी नथी, ते दसमी साथे मळीने तेना एक गुरु थयो छे, पण तालनी मात्रा पछीनी मात्रा साथे मळे तो तेथी ताल तूटतो नथी एम कह्यु छे, एटले त्या ताल तूटतो नथी तेरमी मात्रानु पण एम ज छे एटले क्याई ताल तूटतो नथी पण उपरना दृष्टान्तमाथी ज एक बीजी पक्ति लईए

१ ३ ४ ६ ७ ९ १० ११ १३ १५
मू ळ दु ख ना उ प जे ए थी
२ ५ ८ १२ १४ १६

अही तालनी पहेली मात्रा तेनी पछीनी एटले वीजी साथे मळी गई छे, ते दोष नथी पण तालनी पाचमी मात्रा तेनी आगळनी एटले चोथी साथे मळी गई छे ते दोष छे उपर मात्रानी सख्या जे रीते लखी छे ते उपरथी ए पण जणाशे के आम थाय त्यारे तालभग शायी थाय छे आपणे जोई शकीए छीए के तालनी मात्रा आवी रीते आगली मात्रा साथे जोडाई गुरु बने छे त्यारे ते गुरुनी बीजी मात्रा बने छे, तालनी मात्रा आगळनी मात्राथी ढकाई गई होय छे, ए ताल मेळववाने खुल्ली नथी होती, अने तेथी ताल *तूटे छे ए तालनी मात्रा ज्यारे पछीनी मात्रा साथे जोडाय छे त्यारे ए* रीते ए ढकाई जती नथी, ए ताल मेळववाने माटे खुल्ली होय छे अलबत प्रस्तुत दाखलामा पाचमी मात्रा उपरनो ताल तूटे छे पण ते दलपतरामे आपेला 'ताल लगारक तूटता गणे न गुणिजन दोष' ए अपवादमा आवे छे आ अपवादनो सिद्धान्त शो ए दलपतरामे चर्च्यु नथी आपणे ए प्रश्न यथास्थाने चर्चवानो रहेशे पण आपणे आगळ चालीए

दलपतरामना छदमा ज तालनी जगाए तालनु चिह्न करी जोईशु तो तरत समजाशे के तालनी मात्रा खुल्ली राखवाथी सधिओ छूटा पडे छे जेम के

| | | |
चरण चरणमा सोळे मात्रा

अहीं दरेक सधि तालथी छूटो पडे छे अने तालने लीधे सधिना आवर्तनो तरत स्पष्ट देखाय छे चरण च, रणमा, सोळे, मात्रा एम दरेक सधि अने तेना आवर्तनो स्पष्ट देखाय छे

दलपतरामे आपणने समजाव्यु के तालनी मात्रा उपर ताल बराबर पडी शके माटे ते मात्रा, आगळनी मात्रा साथे मळी जवी न जोईए, खुल्ली रहेवी जोईए एनो ज अर्थ ए के तालनी मात्रा पहेलानो मात्रा आगळ अक्षर पूरो थवो जोईए के हु ध्रुवे आपणने आ वस्तु वधारे स्फुट करीने समजावी के त्या अक्षर पूरो करवानु कारण ए के छन्दना मात्रासधिओ छूटा पडी शके ए प्रमाणे सधिओ छूटा न देखाय तो पछी सधिओना आवर्तनो छे एम कहेवानो कशो अर्थ रहेतो नथी नीचे एक गद्य पक्ति उतारु छु

"आ साते प्रसगकाव्यो छे, तेम सवादकाव्यो पण छे"

आमा गणी जोशो तो दरेक खड सोळ सोळ मात्रानो जणाशे पण तेमा कोई प्रकारना सधिओ प्रतीत थता नथी, एटले ए मात्रामेळनी पक्ति नथी सोळ

मात्राथी ज जो चरणाकुळ थतो होत तो आ चरणाकुळ बन्यो होत. पण गमे तेटलो प्रयत्न करी जोता पण आ चरणाकुळ पेठे पठी शकाशे नही. अने तेनु कारण ए छे के आमा चतुष्कल संधिओ छूटा पडता नथी. अने तेथी तेमा ए संधिओनु आवर्तन पण नथी आवर्तन नथी एटले मेळ पण नथी.

ते ज प्रमाणे हरिगीत पण ताल आपीने संधिओ छूटा पाडीने बतावी शकाशे. दलपतराम हरिगीतमा ताल नीचे प्रमाणे कहे छे:

त्रीजी उपर पछि त्रण चतुर पर एम आठे ताळ छे
ते ताळमा जो जगण तो, न कहीश छंद रसाळ छे

अर्थात् पहेलो ताल त्रीजी मात्रा उपर आवे अने पछी तेमा त्रण अने चार मात्राओ अनुक्रमे वधारता जवी अने एना पर ताल नाखवो. एटले पहेलो ताल त्रीजी मात्रा उपर, ते पछीनो छट्ठी उपर, ते पछी चार उमेरता दसमी उपर, पछी त्रण उमेरता तेरमी उपर, पछी चार उमेरता सत्तरमी उपर ए प्रमाणे वीसमी उपर, चोवीसमी उपर अने छेल्ले सत्तावीसमी उपर. ३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ ए प्रमाणे ए प्रमाणे ताल मूकी जोईए'

३ ६ १० १३ १७ २० २४ २७
शृं गा र भू ष ण अ त ल ग ज न, गा इ ये ह रि गी ति का

तालनी जगाए में मात्रासंख्या मूकी छे जेथी ताल अने तालनी मात्रा बन्ने एक साथे समजाय आ ताल प्रमाणे नीचे प्रमाणे संधिओ पडता जणाशे

शृंगार भू, पणअतलग, जनगाइये, हरिगीतिका

गणी जोता दरेक संधि सात मात्रानो थशे अने एवा सप्तकल संधिना चार आवर्तनोथी हरिगीत थयेलो जणाशे आ सप्तकल संधिनी विलक्षणता ए छे के तेमा एक नही पण बे ताल छे, अने ए बन्ने ताल माटे मात्रा खुल्ली राखवी पडे छे 'छन्दप्रभाकरे' जे गणो पाडी बताव्या ते आ ताल मात्राओ खुल्ली राखवा माटे

हवे प्रश्न रह्यो आ जातिछंदोने माटे संज्ञाओ नक्की करवानो आपणे आगळ जोई गया के आ संधिओमा गुरुनी जगाए बे लघु मूकी शकाय छे एम न थई शके एवा गुरुने माटे आपणे गा संज्ञा राखी हती, अने आवो फेरफार करी शकाय तेवा गुरु माटे आपणे दा संज्ञा राखी हती एटले दा=२ मात्रा ए प्रमाणे आपणी संज्ञानो अर्थ छे ए समीकरण प्रमाणे आपणे चतुष्कल

माटे दादा सज्ञा राखी शकीए. आ सज्ञा के. ह. ध्रुवे सौथी पहेला पसद करी छे अने तेमा ताल बतावबा तालचिह्न मूकवानी व्यवस्था राखी छे, दादा ए प्रमाणे. आम कर्या पछी सधिना आवर्तनो आ सज्ञाना आवर्तनोथी ज बताववाना रहे. जेम के दादा दादा दादा वगेरे. आनी पछी ताल माटे मात्रानी सख्या आपवानी रहे ज नही उपर प्रमाणे दर्शाव्या पछी पहेली पाचमी नवमी मात्राए ताल छे एम कहेवानी जरूर रहेती नथी. सधिओ छूटा छे, एटले सधिघटक अक्षरोना गुच्छो छूटा पडी ज जशे, अने तेमा तालनु स्थान जणाई ज जशे. जेम के

चरण च, रणमा, सोळे, मात्रा,

अही दरेक चतुष्कल सधिमा पहेली मात्राए ताल आवे ए स्पष्ट छे 'चरण च,' पछी, 'रणमा', एम ताल एनी मेळे निर्देशाई जशे. अने तालनी मात्रा आगळनी मात्रामा भेळववी नही एम कहेवानी पण जरूर नही रहे, कारण के सधिओ छूटा ज छे, मात्रा भळी हशे तो सधि ज छूटा नही पडे. अने बीजो लाभ ए थशे के, वृत्तोमा आपणे गा अने लना न्यासथी छदनी पक्तिनु लगात्मक पठन करी शकता हता तेम अही पण सधिदर्शक अक्षरोथी छदनु पठन करी शकीशु.

गाने बदले आपणे जेम दा संज्ञा नक्की करी तेम लने बदले अही कोई बीजी सज्ञानी जरूर पडशे नही. कारण के ल अही पण पोताने रूपे ज स्थिर रहेशे दाने बदले बे लल मूकी शकाय छे पण लने बदले कशु मूकी शकातु नथी. अलबत्त बे ललनी जगाए एक गा मूकी शकाय छे पण त्या तो आपणे दा ज मूकीशु जेमा गा अने लल बन्ने विकल्पो आवी जाय छे. अने बीजु ए के सधिओमा ज्या दानी साथे ल आवे छे त्या तेनु स्थान स्थिर होय छे एम ज होय कारण के आसपासना दा नी जगाए गा के लल आवता तेना स्थानने कशी असर थती नथी एटले आपणे बधा सधिओ दा अने लथी बतावी शकीशु.

उपरना चरणाकुळ छदनी उत्थापनिका ज आपणे आ सज्ञाथी करी जोईए :

दादा दादा दादा गागा

छदना लक्षणमा अते बे गुरु कहेला छे तेथी त्या गागा सज्ञाथी चतुष्कल दर्शाव्यु. आम जरूर पडे त्या आपणे गानो पण उपयोग करवो पडशे.

पण हजी एक प्रश्न रहे छे. परणाद्धळनु स्वरूप एवु छे के तेमा चार-चतुष्कलो आवे. हवे उपरनी संज्ञा चतुष्कलना बधाय पर्यायो दर्शाववा समर्थ छे? दा=गा अथवा लल मूकतां दादामाथी नीचेना पर्यायो निष्पन्न थाय छे: गागा, गालल, ललगा लललल. पण हजी एक पर्याय बाकी रह्यो लगाल. दानी जगाए गा के लल मूकता लगाल नही साधी शकाय. एटले के दादा संज्ञा आ एक पर्याय बतावदा असमर्थ छे एक रीते तेमा आकस्मिक लाभ रहेलो छे ते ए के घणी जगाए चतुष्कल रचनाओमा अमुक अमुक स्थाने आ लगाल निषिद्ध करवो पडे छे त्या दादा संज्ञा बराबर इष्ट पर्यायो उपर ज व्याप्त थई रहेशे. पण घणी जगाए पाचेय पर्यायोनो समावेश करवानो आवे छे. एने माटे वर्वे 'चाआ' एवी संज्ञा करे छे, पण ए पठनमा कठोर लागे छे, अने 'आ' तो चार मात्रा पूरी करवा माटे ज उमेरवो पडे छे. अन्यत्र में आने माटे दा–दा एवी संज्ञा वापरेली, एटले के बे दा वच्चे समासदर्शक आडी लीटी करेलो पण ते छापमा वादवाकीना चिह्नवाळी जेवी देखाय छे, अने पठनमा दादाथी भिन्न ओळखी शकाय नही ए एनी क्षति छे. एटले उच्चारमा दादाने ज मळती अने छता तेनाथी जुदी परखाय एवी नवी संज्ञा 'दद्दा' योजु छु अने आने मात्र संज्ञा तरीके योजु छु एटले एने विशेष समर्थन के खुलासानी जरूर रहेती नथी घणाखरा चतुष्कल-सधि छदोमा जगण रहित सधि ज वपराय छे, मात्र अपवादरूपे जगण क्याक क्याक आवे छे एटले एवी रचनाओमा उत्थापनिका दादाथी ज आपीश. आपणा मात्रामेळ रचनाना पिंगलो आ बाबतमा झीणवटवाळा नथी एटले घणी जगाए जगणना स्थाननी चर्चा करता नथी पण ए खरू छे के जगण बहु ओछो वपराय छे एटले जगणना स्थाननो स्पष्ट निषेध न होय, तो पण दादाथी चतुष्कल रचनाओ सामान्य रीते निर्देशु त्या जगण तद्दन निषिद्ध न मानवो, पण अपवादरूपे आवी शके एम मानवु. खरु तो जगण-ना निषेधनु कारण जाणवु ए ज महत्त्वनु छे अने एम थया पछी मात्रामेळनी उत्थापनिकाओ दरेक विगतमा पूर्ण आपवी अशक्य जणाय तो पण कशु अनिष्ट थई जवानु नथी

हवे हु मात्रामेळ छदो एक पछी एक मारा निरूपणने अनुकूळ क्रमे लईश अने तेम करता पहेला एक वात मारे सामान्य रूपे कहेवानी ते ए के आपणा प्राकृत अपभ्रंश गुजराती पिंगलो जो के सामान्य रीते छदोमा प्रास आवश्यक छे ए बाबत उल्लेखता के चर्चता नथी पण अपभ्रंश साहित्यथी मांडीने छदोमा प्रास सार्वत्रिक बन्यो छे, अने गुजरातीए पण अपभ्रंशनो ए वारसो अपनावी लीधो छे पिंगलो प्रासनी वात नही करता पण सर्वत्र

दलपतरामे आपेलो आनो लक्षणछद आपणे उपर जोई गया तेमा अते बे गुरु आणवानु कह्यु छे पण त्या ज नीचे टीप छे के "अते एक गुरु होय तो पण नभे" (द पि पृ १३)

अलक अथवा अरिल्ल· दादा दादा दादा दालल

अर्थात् चरणाकुळमा जेम अते दागा के गागा आवतु हतु तेम अही दालल आवे छे ते पछी जेकरी लईए

जेकरी दादा दादा दादा लगा

अही अत्य चतुष्कल लगा एवु एक खडित मात्रानु रूप ले छे ते पछी चोपाई

चोपाई दादा दादा दादा गाल

अही पण छेल्लु चतुष्कल एक मात्रा जेटलु खडित गाल एवु रूप ले छे आ प्रमाणे पहेला बे छदो पूरी सोळ मात्राना छे, बीजा बे पदर पदर मात्राना छे छता एना ताल सरखा होवाथी अने तफावत जूज होवाथी, अने तेमनु पठन एक सरखु होवाथी ए चारे छदो चोपाई *गणाय* छे अने चोपाईना प्रवाहमा वपराय छे

जेकरि चोपाई चरणाकुळ, अलक वळी ए चारेने मुळ,
चोपाई कहिये साधारण, ताळ बराबर छे ते कारण ८४

द पि पृ १३

अही दलपतरामे अरिल्लने पण चोपाईमा गणावेल छे पण गुजरातीमा ए छद बहु विरल वपरायो छे अपभ्रश साहित्यमा तेनो पुष्कळ वपराश हतो ते पछी पद्धरी के पद्धति लईए

पद्धति के पद्धरी दादा दादा दादा लदाल

आ छद पण अपभ्रशमा ज विशेषे करीने वपरायो छे गुजरातीमा भाग्ये ज प्रयोजायो हशे छदनु उपरनु लक्षण में हेमचद्रना 'छन्दोनुशासन'मांथी लीधु छे "चीर्नौ जे जो लीर्वान्तेऽनुप्रासे पद्धति।" तेना उपर टीका छे "चगण चतुष्टय। पादान्तेऽनुप्रासे इति पद्धति पद्धटिकेत्यन्ये। अस्यापवाद नात्र विषमे जगण, पादान्ते च जगणो लघुचतुष्टय वा।" (छन्दोनु० पृ २६ब) अर्थात् चार चतुष्कल सधिओ अने चरणने अते प्रास होय त्यारे पद्धति के पद्धटिका छद थाय तेमा अपवाद बे विषम चतुष्कल जगण (लगाल) न थाय, अने अत्य चतुष्कल जगण होय अथवा चार लघुनु होय अपभ्रश

साहित्यमा आ छद आ स्वरूपे ज मळे छे, अने छता दलपतराम तेनु लक्षण जुदु आपे छे.—

३ ६ ११ १४ ३ ६ ११ १४

प्रतिचरण सोळ मात्रा प्रमाण, ते चरण अंत जो जगण आण;

३ ६ ११ १४ ३ ६ ११ १४

त्रण चक्र रुद्र रत्ने ज ताळ, पद्धरी छदनो एज ढाळ ८७

द पि पू १४

अही कुलमात्रा तो सोळ ज छे, उपरनी ज रीते अते जगण कह्यो छे (जो के सर्वलघुनो विकल्प जणाव्यो नथी) पण तालनी मात्रा जुदी ज कही छे: हेमचद्रनी रीते चार चतुष्कलो आपीए एटले ताल १, ५, ९, १३ मात्राए ज पडे. पण दलपतराम ३, चक्र एटले ६, ११ अने १४ मात्राए ताल मूके छे. एमनी रीते ए प्रमाणे ताल माटे खुल्ली मात्राओ मळी रहे छे, अने ए स्पष्ट करवा में तालस्थानमी मात्रासख्या बतावी छे पण हेमचन्द्रे जे दृष्टान्त आप्यु छे तेमा ताल माटे ए बधी मात्राओ खुल्ली मळी आवती नथी हु हेमचन्द्रनु दृष्टान्त नीचे उतारु छु

१ ३ ५ ६ ८ ९ १० ११ १३ १४ १६

छ त्रा य मा ण ध र णो र गे न्द्र

२ ४ ७ १२ १५

१ ३ ४ ५ ७ ९ १० ११ १२ १३ १४ १६

पा र्श्व जि ने न्द्र स्म र मृ ग मृ ग न्द्र

२ ६ ८ १५

१ ३ ४ ५ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

द र्श य दा र्ण दु रि त ति मि र नि क र

२ ६

१ ३ ५ ६ ७ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

स त्प द्ध ति मा स्य जि त र ज नि क र

२ ४ ८

अही बीजी पक्तिमा छठ्ठी मात्रा ताल माटे उपलब्ध नथी केम जे ए आगळनी मात्रा साथे जोडाई गई छे तेम ज ‘छन्द प्रभाकर’मा जे पद्धतिनो लक्षणछद आपेलो छे तेमा पण बीजी त्रीजी अने चोथी पक्तिओमा छठ्ठी मात्रा ताल माटे खुल्ली मळती नथी —

व सु व सु क ल प द्ध रि ले हु सा ज,

१ ३ ४ ५ ७ ८ ९ ११ १२ १३ १४ १६

से व हु स त त स त न स मा ज।

२ ६ १० १५

१ २ ३ ५

भ जि ये रा धा स ह न द ला ल,

४ ६

क टि जे हे रा ब भ व सि न्धु जा ल॥

छन्दप्र० पृ. ४९

एटले आपणे आ बाबतमा दलपतरामनु लक्षण नहीं स्वीकारता हेमचन्द्रनु ज स्वीकारीनु चतुष्कलमा पर्यायोनु पृथक्करण करता जणाशे के पद्धतिमा त्रीजी मात्रा हमेशा खुल्ली ज रहे कारण के त्या जगण आवे तो ज त्रीजी मात्रा ढकाय, अने जगण तो त्या निषिद्ध छे, पण बीजु चतुष्कल गागा के गालल रूप ले तो छठ्ठी मात्रा अवश्य ढकाय, अने ए रूपो ए जगाए निषिद्ध थया नथी. ए स्थाने लगाल अने लललल तेम ज ललगा रूपो आवे तो छठ्ठी मात्रा खुल्ली रहे, अने अकस्मात् ए रूपो पद्धरीमा आवी शके छे, पण ए एनु लक्षण नथी दलपतरामे आवु स्वरूप शाथी स्वीकार्युं, अने एमणे स्वीकारेला तालो कया प्रकारना छे ते आपणे आगळ यथास्थाने जोईशु हमणा तो एटलु ज कहेवु बस थशे के दलपतरामे आपेली तालव्यवस्था पद्धतिना स्वरूपनी नथी, अने एनु स्वरूप आपणे हेमचन्द्रे आप्या प्रमाणेनु स्वीकारवु जोईए.

पद्धतिनी चर्चा पूरी करता पहेला तेना अर्धनो बनेलो मधुभार छंद पण लईए. अपभ्रंशमा ए क्याय क्याय वपरायो छे

मधुभार: दादा ल्दाल

पद्धतिमा कुल चार चतुष्कलोमांथी अहीं आपणे छेल्ला बे लईए छीए आना ताल पण पद्धति प्रमाणे ज होय ए स्वाभाविक छे. पण दलपतरामे आना ताल पण पद्धतिनी पोतानी रीते आप्या छे:

वळ आठ आण, मधुभार जाण
गुरु अंत होय सशय न कोय २६
त्रीजी छठी ज मात्रा कही ज
त्या ताळ दीज, लघु पचमी ज २७

द. पि. पृ. ८

पाचमी लघु अने अते ग अने ल एटले लगाल जगण ज थ्यो. अने ताल त्रीजी अने छठ्ठीए उपर बताव्या प्रमाणे. आने विशे जु्दु कई कहेवानी जरूर रहेती नथी. आनी पछी हु काव्य के रोळा लउ छु:

रोळा. दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा

१ आ छद चतुष्कल सधिना कुल छ आवर्तनोनो बनेलो छे. एटले कुल २४

मात्रानो छे एमा विशेष ए छे के ११ मी मात्राए यति छे आ यतिए शब्द पूरो थवो जोईए वृत्तोमा हु यति दर्शाववा दड करतो हतो तेने बदले मात्रा-मेळमा हु उपरना भागमा एववडु अवतरण चिन्ह करु छु दलपतरामना लक्षण उपरथी ज आ स्वरुप स्फुट थशे

वाव्य अथवा रोला छद — मात्रा २४, ताळ ६

अर्ध चरण अगियार, तया पछि तेर वळानु,
प्रयम पछी प्रति चार, वळा पर ताळ भलानु,
जगण न होय जरूर, तमाम तपासो ताळो
काव्यछद वरि ऊर, तिमिर अणसमजण टाळो १०३
जन्म मरण दुख हरण, चरण श्रीहरिना सेवो,
ए प्रभु अभराभरण, तरण तारण छे तेवो;

द पि पृ १६

आगळ उतारतो नथी यतिनी जगाए लक्षणछदमा अल्पविराम छे तेयी तेनु स्थान जणाई आवशे उपर आपेली प्रथम चार पक्तिओमा त्रीजु चतुष्कल दाल'ल आवे छ पछीनी बेमा ललल'ल आवे छे
ते पछी हु प्लवगम लउ छु

प्लवगम दादा दादा दाल'ल दादा दाल्गा

अही स्पष्ट थशे के रोळानी पेठ ज आमा ११मी मात्राए यति छे आ छदना पहेला चार चतुष्कलो बरावर रोळाना जेवा छे पछी फेर पडे छे दलपतराम जूनी प्रणालिकाने अनुसरीने प्लवगममा आदि अने अतमा गुरु आवश्यक गणे छे

१६ प्लवगम छद — मात्रा २१, ताळ ५
मात्रा प्रतिपद एक, अने विस आणिये,
एकादश दश उपर जरुर जति जाणिये,
एक उपर पछि चतुर, चतुर पर ताळ छे,
आदि गुरू, गुरु अत, प्लवगम चाल छे ९०

द पि पृ १४

आ लक्षण नीचे टीप[३] छे के "ताळनो अने आदि गुरु तथा अत गुरुनो

३ आ टीप सद्गत के ह ध्रुवे 'दलपत पिंगळ'नु सस्करण करता उमेरी छे जुओ प्रस्तावना पृ ४

नियम 'हुन्नरखाननी चढाई' मा पळायो नथी " (एजन) ते ते पंक्तिओ हु नीचे उतारु छु

वय छो,टीमा, वस्यों' छु, हिंदु, स्तानमा

अही पंक्तिनो पहेलो अक्षर गुरु नथी अने यतिवाळु चतुष्कल लगा'ल छे ते कर्णकटु लागे छे ते जोई शकाशे

धातु औषधी शोध, राजनी नीतियो

अही प्रथम बे चतुष्कलोने बदले दालगालदा अष्टमात्रक संधि आवेलो छे में आगळ कह्यु तेम चतुष्कल रचनामा ए क्याय आवे तो तेथी दोष थतो नथी ए आठ मात्रा पछी 'शोध' शब्द आवो अगियार मात्राए यति आवे छे पण ते पछी ल आवी ए त्रीजु चतुष्कल पूरु थतु नथी खरी रीते त्या पण, पंक्तिना प्रारभमा थयु छे तेम, 'शोध राजनी' एवो दालगाल्दा संधि फरी आवे छ रोळामा अने प्लवगममा आम घणी वार बने छे, तेने दोष गणवो न जोईए हवे अते पण गुरु न होय एवो दाखलो जोईए

हिंदु मनो हु हाल, थया छु युरोपियन,
कोइ न जाणे मने, हतो आ हिंदुजन

दलपतकाव्य भाग २, पृ २७

प्रारभमा गुरु छे, अतमा गुरु नथी आ अनियमितता छे, एनु खरू स्वरूप आपणे मेळनी चर्चामा जोई शकीशु हाल तो एटलु ज नोधीशु के मात्रा-मेळमा नियमो मात्र सामान्य रीते प्रवर्ते छे, ते बधा निरपवाद अने अव्य-भिचारी नथी

आनी पछी हु सवैया लउ छु सवैयाना बे प्रकारो छे, सवैयो बत्रीसो अने सवैयो एकत्रीसा

सवैयो बत्रीसो दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा

सवैया एकत्रीसो दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

आ लावामा लावी चतुष्कल रचना छे बन्नेना दृष्टान्तो 'दलपतपिंगळ'मांथी ज मूकु छु

सवैया छद—मात्रा ३१–३२, ताळ ८

सज्जन कवि जो करो सवैया, हैयामा धरि हेत अनत,
मात्रा एकत्रीस चरणमा, सोळे तो विश्राम वसत,

वत्रीसा पण बीजि तरेना, रुचिरा तुल्ये ताळ रहत,
एकत्रीसे लते गुरुलघु, वत्रीसामा वे गुरुअंत. ११४

* * *

जो ससार सुखे सुधरे तो, जोगि वनी जावे कुण बावू,
तीर्थं पिता माता तजि कोण चडे गिरनार सिधाचळ आवू;

* * *

द. पि. पृ. १८–१९

सोळ मात्राए यति, त्या लक्षणछदना अन्त विराम मूकेलु छे, अने ए यति 'तीर्थं०'वाळी पक्तिमा पळाई नथी ए पण ध्यानमा राखवा जेवु छे. अर्थात् आ यतिने पिंगळकार पोते एटली स्थिर अचळ के आवश्यक मानतो नथी.

आ पछी रुचिरा लईए:

रुचिरा: दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

दलपतराम प्रमाणे उपरनु लक्षण आपेलु छे दलपतराम आठ आठ मात्राए एम वे मध्य यतिओ आपे छे

२३ रुचिरा छद—मात्रा ३०, ताळ ८

चरण चरणमा त्रीसे मात्रा, अते तो गुरु एक करो,
आठे आठे पडता पाठे, वळि थोडो विश्राम धरो,
एक उपर पछि चारे चारे, ताळ सरस लावो तेमा,
रुचिरा नामे छद रुपाळो, अल्प नथी सशय एमा ११२

द पि. पृ. १८

बीजी पक्तिमा 'आठे आठे पडता पाठे' एटला भागमा शोभानो खातर प्रास छे ते ध्यानमा आव्यु हशे आ लावी पक्तिओमा आ प्रमाणे यतिओ मूकी तेना खडोने प्रासथी जोडवाने कविओ स्वाभाविक रीते ललचाय छे. आ पछी चोपायो लउ छु

चोपायो. दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दागा

दलपतरामनु लक्षण जोईए:

२१. चोपाया छंद—मात्रा २८, ताळ ७

प्रथम अरधमा सोळ कळा करि, ऊपर बारे आणो,
ताळ प्रथम पछि श्रुतिश्रुति ऊपर, जो चोपाया जाणो;
अंते तो गुरु अक्षर आणी, चरण रचो शुभ चारे,
बे चरणे पण कोइ कहे छे, हशे सुणेल हजारे १०८

द. पि. पृ. १७

आमा खास नोधवा जेवु ए छे के आनी चारने बदले बे पक्तिए कडी गण-वानी पण परपरा छे आनी पछी सामान्य परपराने नही अनुसरता, अर्धसम गणाती दूहानी रचना हु लउ छु:

दूहो: दादा दादा दालदा' दादा दादा गाल

दलपतराम तेनु नीचे प्रमाणे लक्षण आपे छे:

३१. दोहरा छंद—मात्रा ४८, ताळ १२

पहेले त्रीजे तेर कळ, अवर पदे अगियार;
मू, भूते ने भक्तिए, ताळ दोहरे धार १३७
कर लघु कळ अगियारमी, जगण न ताळ हरेक;
ताळ प्रथम के बीजिमा, निभे जगण कदि एक. १३८

द पि पृ. २४

आमा ताळमा जगण न आववा देवो एम बहुधु छे, ते में चतुष्कल रचनाओ विशे प्रारभमा सामान्य रीते बहुधु छे तेमा आवी जाय छे. दाखला तरीके आनी पछी दृष्टान्त माटे बीजा दोहरा मूक्या छे तेमाथी पहेलो लईए:

भान खानने मानतु, गानतान गुलतान;
ज्ञान विना विदवाननु, मान धरे नादान. १३९

अही 'भा न खा न ने' ए अक्षरोमा 'नखान' ए जगण छे, अने एने लीधे तालनी पाचमी मात्रा दटाई जाय छे. बीजा तालमा जगण आववानु आ परिणाम छे. पण में आगळ बहुधु तेम आ रचना दालगालदा छे अने ते बे चतु-ष्कलोनी जगाए आवी शके छे जगणने सर्वथा निषिद्ध कह्यो छे छता पहेला चतुष्कलमा आवी शके एम बहुधु छे तेनो दाखलो अही आपेला दोहरामा नथी. पण ताल सबधी आगळ उतारेला दोहरामा जगणना दृष्टान्तो छे:

ताळनि थळ ने पाछली, मळ्ये न तूटे ताळ,
आवि मळे जो आगली, ताळ तुटे ततकाळ १७
ताळ लगारख तूटता, गणे न गुणिजन दोष;
लागे कविता लगडी, तो सुणि नहि संतोष १८

द पिं पृ ६

अही 'मळ्ये न' अने 'गणे न' ए सम पंक्तिना प्रथम ताल्मा आवता जगणो छे आ जगणनो निषेध के अनिष्टतानो ख्याल पिंगलना अभ्यासीओमा ओछो छे एटले में तेना दाखला उपर आप्या छे 'छन्दःप्रभाकर' पण जगणनो निषेध करे छे दोहा विशे ते कहे छे

ल० — जान विषम तेरा कला, सम शिव दोहा मूल।

अने टीका आपे छ "विषम चरणोमें १३ और सम चरणोमें (शिव) ११ मात्राएँ होती हैं। 'जान विषम' पहिले और तीसरे अर्थात् विषम चरणोंके आदिमें जगण नहीं होना चाहिये। अन्तमें लघु होता है।" (छन्दःप्रभाकर पृ ८४) अर्थात् 'प्रभाकर' तो विषम चरणना आदिमा जगणने निषिद्ध गणे छे दलपतरामे एम कह्यु नथी पण तेमना पण जगणना प्रसगो विषम पादमा नथी आवता, सम पादमा ज आवे छे एटले 'प्रभाकर' प्रमाणे पण एमा दोष नथी 'प्रभाकर' आ स्थाने विचक्षण रीते दृष्टान्तो आपी चर्चा करे छे तेमा जगण उपरात शब्द क्या तोडवो ए प्रश्न पण आवे छे, जेनी चर्चा हु आगळ करवानो छु अही तो एटलु नाधवु बस थशे के दोहरामा जगण अनिष्ट छे दोहरा पछी 'सोरठो लईए 'सोरठियो दूहो' एनु टूकु नाम सोरठो थई गयु छे

सोरठो दादा दादा गाल' दादा दादा दालदा

दूहाना विषम सम पदो उलटाववाथी आ नवो छद थयो छे दलपतरामे स्पष्ट लख्यु नथी पण ए नोंधवु जोईए के पदो उलटावता पण तेनु मूळ प्रासस्थान कायम रहे छे, एटले के सोरठाना विषम चरणोमा आवता गाल गणमा प्रास आवे छे जम के

व्हाला तारा वेण, स्वपनामा पण साभरे,
नेह भरेला नेण, फरी न दीठा फारबस १५२

द पिं पृ २५

विषम चरणो 'वेण' अने 'नेण'ना प्रासथी सधायेला छे 'फरी न' एम सम चरणमा प्रथम स्थाने जगण आवे छे, ए ध्यान खेंचे छे दलपतरामे दोहरा

सोरठाने चार चरणना गण्या छे, पण एने द्विदल गणवानी प्राचीन परंपरा छे अने ते शास्त्रीय छे, एटली नोंध अहीं जरूरनी छे

आनी साथे दलपतरामे नहीं आपेलो उल्लाल छंद लईए गुजराती साहित्यमां उल्लाल स्वतंत्र छंद तरीके वपरातो नथी, छप्पानी छेल्ली बे पंक्तिओमां आवे छे पण अहीं दूहा सोरठानी साथे तेनो उल्लेख करवो योग्य छे.

उल्लाल: दा दादा दादा दालदा' दादा दादा दालदा

अहीं पहेला एक दा मूक्या पछी दोहरातुं विषम चरण बेवड्युं छे ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे के आ चतुष्कलो शरू थया पहेलां आवतो दा निस्ताल छे उल्लाल द्विदल होय छे; उपर आपी ते एनी एक पंक्ति छे तेनुं लक्षण दलपतराम छप्पाना लक्षण छंदनी छेल्ली पंक्तिमां आ प्रमाणे आपे छे

पछिमां बे कळ ने बेवडुं, दूहा प्रथम पद जाणजो १७९

द पिं पृ २८

आ पछी हुं लीलावती छंद लउं छुं

लीलावती: दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दागा गा

दृष्टान्त माटे दलपतरामनो लक्षणछंद उतारुं छुं:

२५ लीलावती छंद—मात्रा ३२, ताळ ८

मात्रा बत्रीसे चरण चरणमां, अंते तो गुरु बे आणो,
लीलावति नामे छंद बनावो, जति दश आठ उपर जाणो,
त्रिजि कळ पर ताळ पछी श्रुति श्रुति पर, तेज रिते स्वरगति ताणो,
आ लोक विषे परलोक विषे, प्रभुपद भजि पूरण सुख माणो ११७

द पिं पृ १९

आने रुचिरा साथे सरखावी जोता जणाशे के आमां रुचिरानी पूर्वे एक निस्ताल दा मूकेलो छे, बाकी बधी रीते ए रुचिरा प्रमाणे ज छे—मध्य यतिमां, अने तालमां पण उपर उल्लालमां जेम पहेलो एक निस्ताल दा आवे छे एवो ज अहीं आवे छे अहीं त्रीजी पंक्तिमां आवता 'पछी' शब्द उपर टीप छे के "आवा प्रसंगे ज्यां अर्धयति होय, त्यां ते पूरेपूरी न सचवाय तोपण यतिभंग गणातो नथी" जे आगळ जोशुं तेम जातिओमां यतिनुं सामान्य शैथिल्य दर्शावे छे आ पछी पद्मावती छंद लउं छुं

पद्मावती: दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

आ छद लगभग लीलावती प्रमाणे ज छे तेमा विशेप ए छे के अही मध्य-यतिथी पडता बे यतिखडोने प्रासथी जोडवाना छे, जे बतावबा में नीचे लहरीयुक्त लीटी करी छे बीजो भेद ए छे के लीलावतीमा अते बे गुरु आवे छे, आमा एक आवे छे, जो के दलपतरामे ए विशे कशो निर्देश कर्यो नथी पण आपणे जाणीए छीए के अत्य बे गुरु कह्या होय त्या एकथी पण चाले छे, जेम के चरणाकुळमा . दलपतरामनु लक्षण जोईए :

२७ पद्मावती छद — मात्रा ३२, ताळ ८

दश आठे खासा, धरि अनुप्रासा, उपर कळा चौदे आवे,
पद्मावति नामे, छद सुकामे, गुणवता कविजन गावे;
लीलावति जेवा, ताळ ज लेवा, कोमळ पद रचशे कविता,
उजळो जश जामे, सघळे ठामे, ते शोभे जेवो सविता १२९

द पि पु. २१

दृष्टान्त उपरथी आतरप्रास समजाशे अते एक गुरु के बे गुरु बखानो उल्लेख नथी, पण एक गुरु ओछामा ओछो आवश्यक छे एम पठन उपरथी पण जणाशे

आ पछी हु मरहट्ठा लउ छु दलपतरामे तेनो लक्षणछद नीचे प्रमाणे आपेलो छे :

२२ मरहट्ठा छद — मात्रा २९, ताळ ७

मात्रा दश आठे, धर जति पाठे, उपर कळा अगियार,
मरहट्ठा नामे, कविता कामे, छद बनावो सार,
छे गुरु लघु छेल्लो, एम ज मेलो, खेलो लावी खात,
तजि बे चच्चारे, ताळ ज धारे, त्यारे थाय निरात ११०

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय .

दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा गाल

आ छद पद्मावतीने बहु ज मळतो छे फरक एटलो ज छे के पद्मावतीनो अत्य खड दादा दादा दादा गा छे तेनी जगाए अही दादा दादा गाल छे आ पछी त्रिभगी लईए ए पण पद्मावतीने मळतो ज छे

त्रिभगी दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा' दादा गा

आमा पद्मावतीथी आगळ जई आठ मात्राए एक यति वधारे छे अने एथी थयेला त्रणेय यतिखडो एक ज प्रासथी साधेला छे लक्षणछद जोईए.

२६ त्रिभंगी छंद — मात्रा ३२, ताल ८

मात्रा दश आणो, आठ प्रमाणो, वळि वसु जाणो, रस दीजे,
अंते गुरु आवे, सरस सुहावे, भणता भावे, त्यम कीजे;
लीलावति जेवा, ताळ ज देवा, त्रिभंगि लेवा, छंद करो,
जतिपर अनुप्रासा, धरिये खासा, सरस तमासा, शोधि धरो. ११९

द. पिं पृ. १९

अही मध्ययतिओ अने आंतर प्रासो वधारेमां वधारे आवे छे आ जातनी आगंतुक शोभा ज्यां ओछामां ओछी छे एवो हवे दुमिला लईए:

दुमिला: दा दादा दादा दादा दा'दा दादा दादा दादा गा

एनु पठन जोवा लक्षणछंद जोईए:

२८ दुमिला छंद — मात्रा ३२, ताल ८

बधिये मळि मात्रा बत्रिस छे, पण एक गुरू अंते धरिये,
विश्राम करी कळ सोळ बने, दुमिला ए विधिये आदरिये;
दुमिला गण मेळ थकी मळनो, कळ तो ते तुल्य गणी करिये,
तजि बे पछि ताळ तमाम तमे, गणि आठ धरो श्रुति आतरिये १३१

द पिं पृ २२

अही पहेली बे मात्रा निस्ताल छे पछी सात चतुष्कलो अने छेल्ले गुरु आवी बत्रीस मात्राओ थाय छे ए रीते जोतां एम कही शकाय के रुचिरानी आगळ अही एक निस्ताल दा मूकयो छे पण एक बीजो फरक पण छे रुचिरामा आठ आठ मात्राए यति आवे छे तेवी यति आमा नथी आमा जे यति छे, ते पहेलो निस्ताल दा ते पछी त्रण चतुष्कलो पूरा थाय, अने पछी जे चोथु चतुष्कल आवे तेनी वचमा यति आवे छे बीजी रीते जोईए तो आमा सवैया जेटली ज ३२ मात्रा छे, ताल आठ छे, सोळ मात्राओ यति छे, छता पहेली बे मात्राओ निस्ताल होवाथी आनु पठन सवैया करता तद्दन जुदु छे खरु तो लीलावतीथी शरू करी अही सुधी जे छंदो लीधा ते बधानी ज ए खासियत छे के तेमा प्रारंभमा एक निस्ताल दा आवे छे पण आ छंद सवैया जेवो ज सादो होवाथी तेनो सवैया साथेनो भेद खास स्पष्ट करवानी जरूर रहे छे

हवे चतुष्कलसंधि रचनाओमां छेल्ले हु आर्यावर्ग लईश आर्या छंद बो प्राचीन छे, घणुखरु प्राकृत साहित्य आर्यामा लखायु छे, एने संस्कृत साहित्ये पण अपनावेल छे, पण एनु बंधारण उपर आपी ते सर्व

चतुष्कल रचनाथी भिन्न प्रकारनु छे तेथी तेने हु छेल्ले लउ छु. अत्यार सुधीना छदो करता तेनु बधारण पण वधारे अटपटु छे, अने तेना बधारणनी चर्चामा पिंगले घणी झीणवट वापरी छे, जे चतुष्कल रचना उपर बहु प्रकाश पाडे छे हवे आपणे तेनु दलपतरामे आपेलु बधारण जोईए, एम करता ज्या कई नवु उमेरवु पडशे त्या उमेरीश '

३३ गाथा अथवा आर्या छद — मात्रा ५७, ताळ १५

सात चतुष्कळ ने गुरु, विषम चतुष्कळ विषे न जगण धरो;
छठ्ठे जगण, न लघु वा, बार मळाए विराम करो. १६४
ए आर्या पूर्वारध, अवर अरधमा विशेष शू कहियें;
छेक चतुष्कळ छठ्ठु, त्या केवळ एक लघु लइये. १६५
प्रथम पछी चच्चारे, ताळ भला प्रथम अर्धमा दीसे,
पछि शशि शर नव तेरे, सत्तर बावीश छब्बीशे १६७

द. पि पृ. २६

आर्या द्विदल छे तेना पूर्वार्धमा कुल सात चतुष्कल आवे पण तेमा विषम स्थाने कोई पण जगण न आवे. पण तेमा छठ्ठे स्थाने जगण अथवा न लघु एटले नगण उपरात एक लघु अर्थात् सर्वलघु चतुष्कल आवे दरेक दलमा बार मात्राए यति आवे अने उत्तरार्धमा छठ्ठा चतुष्कलनी जगाए मात्र एक लघु आवे पूर्वदलमा पहेली मात्राथी ताल शरू थई पछी चच्चार मात्राए ताल आवे अने बीजा दलमा १, ५, ९, १३, १७, २२, २६ मी मात्राए ताल आवे आपणी सज्ञामा आ नीचे प्रमाणे मूकी शकाय.

आर्या { दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदाल दादा गा
दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा ॥

एकी स्थाने दादा मूकवाथी त्या जगण निरवकाश थई ज जाय छे बेकी स्थाने दद्दा मूकवाथी जगण सहित सर्व चतुष्कलोने अवकाश मळे छे छठ्ठे स्थाने लदाल मूकवाथी जगण अथवा सर्वलघु एनी मेळे आवश्यक बने छे कारण के लदालना ए बे ज पर्यायो छे एटले दलपतरामनु लक्षण आटलामा आवी जाय छे ते उपरात जणाशे के में दरेक दलने अते गुरु मूक्यो छे, तेने आर्यानु लक्षण गणवु जोईए आ उपरात खास कहेवानु ए के लदालने स्थाने लगाल न होय अने सर्वलघु एटले लललल होय त्यारे पहेला लए शब्द पूरो थवो जोईए, एवु सर्व सस्कृत पिंगलोनु विधान छे '(छ शा ४, १८ वगेरे) एनु एक दृष्टान्त गुजरातीमा नीचे मूकु छु:

रक्षो लक्षणवन्तो, देवोए मुकुटमणिथि पूजेलो,
दशमुख अगूठाए, चाप्यो ते रुद्रनो पाद॥

'भगवदज्जुकीय'ना मगलनो अनुवाद

प्रथमार्धनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थशे

गागा गालल गागा' गागा गालल ल'लल गागा गा

अही छठ्ठो गण सर्वलघु ललल्ल छे, अने तेना पहेला लघुए 'मुकुट' शब्द पूरो थाय छे वळी एक विशेष नियम ए छे के छठ्ठो गण जगण अथवा सर्वलघु आवी गया पछी जो सातमो गण सर्वलघु आवे तो तेना आदिथी ज शब्द शरू थवो जोईए ४ तेनु दृष्टान्त दलपतरामनी लक्षणनी पहेली आर्यामाथी

४ आ स्थाने हलायुध अने बीजी बाजु 'वृत्तरत्नाकर'–'छदोमजरी' भिन्न-भिन्न अभिप्रायो आपे छे उपर आपेलो अभिप्राय हलायुधनो छे ते स्पष्ट कहे छे, "षष्ठे गणे मध्यगुरौ सर्वलघौ वा जाते सप्तमो गण सर्वलघुश्चेद्भवति, तदा प्रथमाक्षरादारम्य पद प्रवर्तते।" (छ शा ४, १९ उपरनी टीका) अने दृष्टान्तो पण बन्ने प्रकारना आपे छे एकमा छठ्ठा जगण पछी सर्वलघु आवे छे, बीजामा छठ्ठु चतुष्कल सर्वलघु छे, अने सातमु पण सर्वल्घु छे 'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमजरी' पण आ बाबतमा स्पष्ट छे 'छन्दोमजरी'नो टीकाकार श्रीरामधन भट्टाचार्य स्पष्ट कहे छे, "षष्ठे जगणे तु नास्ति काऽपि व्यवस्था इति पर्यवसितम्।" (छ म क पृ २०२) पण मूळ 'छद शास्त्र' जोता मने हलायुधनो अर्थ साचो लागे छे "षष्ठो ज्" (४, १६) छठ्ठो गण जगण होय "न्लौ वा" (४, १७) अथवा न–ल चतुर्लघु होय "न्लौ चेत् पद द्वितीयादि।" (४, १८) छठ्ठो गण जो चतुर्लघु होय तो पद बीजा लघुथी शरू थाय "सप्तम प्रथमादि" (४, १९) आखा वाक्यो बेसाडता नीचे प्रमाणे अन्वय थाय छे "षष्ठो न्लौ चेत् पद द्वितीयादि" अने "सप्तम न्लौ चेत् पद प्रथमादि" अर्थात् छठ्ठो चतुर्लघु होय तो पद बीजा लघुथी शरू थाय, सातमो चतुर्लघु होय तो पद प्रथम लघुथी शरू थाय आ ज अन्वय आ पछीना सूत्रमा चाले छे "अन्त्ये पञ्चम" (४, २०) "अन्त्यार्धे पचम न्लौ चेत् पद प्रथमादि" अर्थात् द्वितीयार्धमा पाचमो गण चतुर्लघु होय तो पद पहेला लघुथी शरू थाय हेमचद्र पण आ ज अभिप्रायने अनुसरे छे एम मानु छु तेनु सूत्र छे "षष्ठे ले लाद्विनीयात् सप्तमे चाद्यात्पदमन्त्यार्धे च पञ्चमे।" छठ्ठो न ल होय त्यारे बीजा लघुथी पद शरू थाय, सातमो न–ल होय त्यारे आद्य लघुथी पद शरू थाय अने बीजा अर्धमा पाचमो न–ल होय त्यारे पण आद्य लघुथी शरू थाय (छन्दोनु० २७अ) पण हलायुधनो मत स्वीकारवानु मारु कारण तो मेळनु छे जे आगळ स्फुट थशे

मळी रहे छे. तेना पूर्वार्धमा 'विपे न' एवो जगण छे. ते पछी सर्वलघु 'जगण ध' आवे छे तेमा पहेली मात्राथी ज नवो शब्द शरू थाय छे आवो ज द्वितीयार्ध विशे एवो नियम छे के तेनो पाचमो सर्वलघु होय तो तेमा पण आद्य लघुथी ज शब्द शरू करवो. दृष्टान्त माटे, हलायुधे मुजना अनेक श्लोको आप्या छे, तेमाथी एकनु गुजराती मूकु छु :

जय हो मुज नृपतिनो, सह्रु अर्थिजनो तणो ज कल्पतरु।
सामन्तचक्रमेरू, दाता अनवरत दानोनो ॥

द्वितीयार्धमां पांचमो गण (अनवर [त]) सर्वलघु छे अने त्याथी ज नवो शब्द शरू थाय छे.

पिंगळोए आर्याना अनेक विभागो दर्शाविला छे, जेमके, बीजे चोथे स्थाने जगण अवश्य होय तेने चपला कहेली छे, अने वळी चपलाना पण तरेहवार नामोवाळा विभागो आपेला छे, पण हु तेने महत्त्व आपतो नथी. मात्र एक विभाग तरफ ध्यान दोरु छु, केम जे ए आर्याना स्वरूप उपर अमुक दृष्टिए प्रकाश पाडे छे. आपणे उपर जोयु के आर्यामा त्रण चतुष्कले एटले बार मात्राए यति आवे छे जे आर्यामा एम यति न आवे तेने विपुला कहेली छे आ यतिनो अभाव बन्ने पादमा होय अथवा हरकोई एकमा ज होय. विपुलाथी भिन्न एटले बन्ने सयतिक दलवाळी आर्याने पथ्या आर्या कहेली छे आपणे अही सुधी जेना लक्षणनी चर्चा करी ते पथ्या आर्या छे

विपुला प्रकार यतिना अभावथी ज थाय छे, पण 'रणपिंगल' तेनु निरूपण जुदी रीते करे छे त्रीजा गणनो शब्द बार मात्रा उल्लघीने ज्या सुधी जाय त्या यति आवे तेने ए विपुला कहे छे

त्रीजा गणकेरो शब्द, ज्या पुरो थाय त्या विरति आणो,
विपुला आर्या त्रण जातिनी, बने छे खरू जाणो ६५
रणपिंगल पृ १०६

अने 'रणपिंगले', उपरनी विपुलामा बारमी मात्रा पछी ज्या शब्द पूरो थाय छे त्या यतिदर्शक अल्पविराम पण करेलु छे 'छन्द सूत्र'नो के हलायुधनो के हेमाचार्यनो मत आवो जणातो नथी तेओ बन्ने यतिना अभावने ज विपुलानु लक्षण गणे छे पण 'वृत्तरत्नाकर' कहे छे के विपुलानो पाद आद्य गण-त्रयने ओळगीने जाय छे, अने टीकामा नारायण भट्ट एनो एवो अर्थ करे छे के पादनी यति त्रण गणने ओळगीने जाय ते विपुला ते उपरथी 'रणपिंगले'

आवा मतनो उल्लेख कर्यो जणाय छे पण ज्या शब्द पूरो थाय त्या यति मानवी ए अनवस्था छे छता आ मत परोक्ष रीते यतिशैथिल्य उपर प्रकाश नाखे छे ए रीते महत्त्वनो छे 'रणपिंगल' विशेष कहे छे के "जेनो कोई भाग विपुल एटले विस्तारवामा आवे ते विपुला कहेवाय" ए नोधवा जेवु छे

आर्याना ज दलोना भिन्नभिन्न विन्यासोथी नवानवा छदो कर्या छे ते जोईए आर्याना प्रथमार्धने ज बेवडीने द्विदल करवाथी गीति थाय छे

३४ गीति छद—मात्रा ६०, ताल १६

गाथा पूर्वारध सम, ए ज मुजब उत्तरार्ध पण आणो,
गुणिजन गणजो गीती, जरुर तफावत जरा नही जाणो १७०
द पि पृ २६

आर्याना उत्तरार्धने ज बेवडवाथी उपगीति थाय छे

३५ उपगीति छद—मात्रा ५४, ताल १४

आर्या उतरारध सम, पूर्वारध प्रेमथी करिये,
ए कविता उपगीति, अद्‌भुत जुक्तीथि आदरिये १७३
द पि पृ २७

आर्याना बन्ने दलो उलटाववाथी उद्‌गीति थाय

३६ उद्‌गीति छद—मात्रा ५७, ताल १५

उतरारध आर्यानु, पूर्वारध जो गणो प्रीते,
पूर्वारध राम पछिनु, ते उद्‌गीती रचो रसिक रीते १७४
द पि पृ २७

दलपतरामे नहीं आपेल एक ज प्रकार आमा उमेरु छु, ते स्वधकनो गीतिने अते एक गुरु उमेरी कुल ३२ मात्रा करवाथी स्वधक थाय छे मात्र दष्टान्त खातर आगळ आपेली एक आर्यामा जरा फेरफार करी मूकु

जय हो भुज नृपतिनो, रहु ओधवलो तनो ज जे परदुस्तर,
रामतचद्रमेरु, दाता आचरत दानना वर्ण समो

अहीं हु चतुष्कल रचनाओ पूरी करी त्रिकल रचनाओ लउ छु त्रिकल राधि माटे हु दाल मात्रा रागोन आमा त्रिकल गाल अने लगल ए बन्ने पर्यायो थावी जाय छे पण, त्रीजो पर्याय लगा नही आवी शके पण चतु-

ञ्जलोमा दादामा नही आवतो जगण—रगाल, बीजा चतुष्कलोथी भिन्न राखवानी जरूर हती तेवी कोई जरूर लगा दिसे नथी, एटले दालने आपणे त्रिकलना प्रणेय पर्यायोनी गना गणीशु.

दलपतरामे त्रिकलना ज गणाय एवा बे ज छदो आपेला छे तेमानो एक तो छ ज मात्रानो थाम छद छे ते मने स्वीकारयोग्य लागतो नथी. मात्र एक कौतुक छे अने ए जता पछी मात्र हीर छद रहे छे, तेनु लक्षण जोईए :

१८ हीर छद—मात्रा २३, ताळ ८

त्रेविश वळ, रवि सवळ, मित्र प्रवळ, प्रेमथी,
आदि उपर त्रण त्रण पर, ताळ तु धर नेमथी;
शास्त्र अत, शास्त्र अत, विरतिवत, तोय ते,
आदि दीर्घ, अत रगण, हीर छद, होय ते. ९९

द पि. पृ १६

कुल त्रेवीश मात्राओ, तेमा पहेली मात्रा पर अने पछी त्रण त्रण मात्रा उमेरता जता ताल नाखवा. छ छ मात्राए यति राखवी. चरणना प्रारभमा गुरु आवे अने अते रगण गालगा आवे तेनी आपणी सज्ञामा उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

हीर' गाल दाल' दाल दाल' दाल दाल' गाल गा

आ पछी हु आ वर्गमा महीदीप मूकु छु, जोके दल्पतरामे तेना तालनी व्यवस्था त्रिकलथी नही पण षट्कलथी करी छे आपणे प्रथम तेमनु लक्षण जोईए:

१७ महीदीप छद—मात्रा २२, ताल ४

बाविश वळ सवळ अत, जुगल दीर्घ दीजे,
चार वळ उपर विराम, महीदीप कीजे,
प्रथम उपर खट खट पर, ताळ सरस तेमा,
सुणता पद सरस दिसे जुक्ति सरस जेमा ९५

द पि पृ १५

अर्थात् कुल २२ मात्रा, अते बे दीर्घ, चार चार मात्राए यति, ताल पहेली मात्राथी शरू थई पछी छ छ मात्राए आवे

हवे दल्पतरामे आमा छ छ मात्राए ताल कह्यो छे, पण पठन करता तरत जणाशे के आमा त्रिकलो जुदा पडे छे, अने हीर छदनी पेठे ज त्रण त्रण मात्राए ताल नाखी शकाय छे

दाल दाल दाल दाल दाल दाल गागा

एम करी शकाशे मात्र एक ज जगाए ए नही बनी शके — छेल्ली पंक्तिमा छेल्ली पंक्तिनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थशे

ललगालल ललल ल्गा गाल ललल गागा

पहेली छ मात्राना बे त्रिकलो नथी पडी शकता पण एम ताल क्याक 'लगीरक' तूटता आपणे रचना सदोष कहेता नथी, एटले हु आने पण त्रिकल रचना ज गणीश.

आ रचनामा एक बीजी बाबत पण नजरे पडशे हीर छदमा आखी पंक्तिमा त्रिकलना बे ज पर्यायो गाल अने ललल ज आवता हता आमा ते बे उपरात ल्गा पण जणाय छे बीजी पंक्तिमा 'महीदीप' शब्द आवे छे ते लगागाल छे पण ल्गानो पण आपणे दालमा समावेश कर्यो छे एटले उपर आपेली उत्थापनिका बराबर छे

पण आ स्थाने आपणे षट्कलने त्रिकल मात्रामेळ रचनामा स्थान तो आपवु जोईए जेम चतुष्कल रचनामा दालगालदा अने ल्दागाल्दाने आपणे बे चतुष्कलनी जगाए स्वीकारता हता तेम अही षट्कलने बे त्रिकलनी जगाए स्वीकारवु जोईए एनी सज्ञा दादादा करीश

हवे त्रिकल रचनाओमा हु दिंडी लईश 'दलपतपिंगल मा के नर्मदाशकरना पिंगलमा के 'रणपिंगलमा' आनो निर्देश नथी तेनु कारण स्पष्ट ए छे के आ मराठी साहित्यमाथी नवो अपनावेलो छद छे तेनी पिंगलचर्चा सौथी पहेली के ह ध्रुवे 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना निबधमा करेली छे तेओ कहे छे.

"मात्राबंधमा अने अक्षरबधमा प्लुततत्त्वने स्थळ आपवानु मान आपणा दक्षिणी बधुओने छे दिंडी ए एक मात्राबद्ध रचना छे एनु उदाहरण —

दिंडी

मोहफद नाखि जाय का उडी तू —
तरुडाळ? पखि! बाळ छा हजो तू,
मधुर किलकिलाट गान साज म्हणे
विविधवरण मेघशरण का न माणे?

यामा दात्र मधिनी पाच आवृत्ति पछी 'च' सधि आवे छे ए 'च' सधिनु प्रथम दुकल प्लुत बोलवानु छे, माटे त्या दीर्घ स्वरनो उपयोग अथापत्र

छे. 'च' मधिनु बीजू द्रुवल चरणने अते होनाथी पूर्वना दीर्घनो प्रतिध्वनि बनी दीर्घ किवा गुरु ज होवो इष्ट छे आ रीते दिंडीना चरणमा दाल सधिनी पाच आवृत्ति पछी बे गुरु सिद्ध थाय छे एमानो उपान्त्य गु प्लुत छे" (सा वि २, ३०५)

अही एव साथे घणा प्रश्नो उपस्थित थाय छे प्रथम तो ए के दिंडी सिवाय गुजरातीमा जे जे मात्रामेळ रचनाओ प्रसिद्ध छे, तेमा क्याई प्लुत आवतो ज नथी? बीजो ए के जो प्लुत कहेवो होय तो साथे साथे केटली मात्रानो प्लुत ए पण कहेवु जाईए अने उपान्त्य गुरु पछी जे बीजो गुरु आवे छे ते मात्र प्रतिध्वनि माटे ज छे, अने पोने पण प्लुत नथी? अने सौथी महत्त्वनो प्रश्नो तो ए छे के मराठीमाथी जे दिंडी छद गुजरातीमा लीधो छे तेनु मूळ स्वरूप दालना ज आवर्तनो छे के कई जुदु? आ बधा प्रश्नो जाति छदोना मेळमा हु हाथ लईश हमणा तो ये ह घ्रुवे जे कई कहयु ते रजू करवु एटलो ज उद्देश छे तेमना प्रमाणे दिंडीनी उत्थापनिका नीचे प्रमाण थाय.

दिंडी दाल दाल दाल दाल दाल गागा

जेमा उपान्त्य गुरु प्लुत छे तेना पर ताल के ह घ्रुवे नथी कह्यो पण ताल स्पष्ट छे एटले मूक्यो छे आ सत्रथी वर्वेए अने सद्गत नरसिंहरावे चर्चा करी छे पण तेनु स्थान मेळनी चर्चामा छे, अही नथी अही तो मात्र एक त्रिकल रचना तरीके आ छद स्वीकारायो छे ते तरफ ध्यान खेचवानो ज उद्देश छे अही त्रिकल रचनाओ पूरी करु छु, अने पचकल रचनाओ हाथमा लउ छु

पचकल रचनाओमा सौथी पहेली गुजराती पिंगलोए नही आपेली मदनावतार नामनी रचना लउ छु 'कविदर्पण' (उल्लास, १, २२, उदा० ३७) अने 'छदोनुशासन' बन्ने ए आपे छे एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

मदनावतार दालदा दालदा दालदा दालदा

अर्थात् पचकल दालदाना चार आवर्तनोनी एक पक्ति आ विशे विशेष कहेवा पहेला हु बने प्रयोमाथी तेना उदाहरणो आपु छु

रोसगुरुगिरिसविसमच्छिमुच्छतए
पलयजलणम्मि गयणम्मि गच्छतए।

समितम्मतरद्दयमणनस्थि सणे
को रामो हुज्ज मयणारधारवणे ॥ ३७॥

कविदर्पण, ८५

गिज्जति गीईओं पिज्जति मइराओं
नच्चति वेगाओं परि्हसिअवेराओं।
एवमन्नोन्नपरिरमणासारए
कीलति रामाओं मयणावमारए॥

छन्दोनु० पृ ३३ब

बरावर पाठ करता जणाशे के 'कविदर्पण'ना दृष्टान्तमा सर्वत्र दाल्दा सधि वेसी जशे आवी रीते प्लयजल, णमिगय, णमिग, रुचतए वगेरे पण 'छदोनुशा० सन'नु पठन करतां दाल्दा सिवायना पचमात्रक सधिओ तेमा भळेला जणाशे स्पष्ट पचाली दर्शाववा हु सधिओने ल्गात्मक रूपमा मूकु छुं

गागाल गागाल गागाल ल्लगाल
गागाल गागाल ल्लल्लल गागाल।
गालगा गाल्ल्ल गालगा गालगा
गागाल गागाल ललगाल गालगा ॥

अही दादाल अने दाल्दा बन्ने सधिओनु मिश्रण जणाशे आवा मिश्रणो थई शके के केम ए चर्चा मेळता अगनी छे, ते आपणे आगळ करीशु

आनी पछी हु गमक लउ छु वपराशनी दृष्टिए आ महत्त्वनो नथी, अने बहु ज टूको छे, छता एना सधिना स्वरूपनी खातर तेने लउ छु तेनी उत्थापनिका

गमक दादाल

एटली ज थाय दलपतराम तेनु लक्षण नीचे प्रमाणे आपे छे

१ गमक छद — मात्रा ५, ताळ १

कळ वाण, पद जाण, ते गमक, पद समक १
त्रीजी ज, कळ कीज, त्या ताळ समाळ २

अर्थात् पाच मात्रानु चरण, तेमा त्रीजी मात्रा उपर एक ताल हवे हु प्रसिद्ध झूलणा लउ छु तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

झूलणा दाल्दा दालदा' दालदा दालदा' दालदा
दालदा' दालदा गा

दस दस मात्राए यति अने दालदाना सात आवर्तनो पछी एक गुरु एम एक चरण थाय छु तेना दृष्टान्त तरीके नरसिंहनो पडो लउं छु,

निरखने गगनमा कोण घूमी रह्यो,
ते ज हु ते ज हु शब्द बोले;
श्यामना चरणमा इच्छु छू मरण रे
अहींया कोइ नथि कृष्ण तोले

न का स पृ. ४८४

आमा स्पष्ट रीते दालदाना आवर्तनो छे पण 'अहींया' शब्दना लदादा आवे छे, ए नोंधवा जेवु छे

पचकलना कुल त्रण पर्यायो थाय : दालदा, लदादा, दादाल तेमा क्रमवमा आपणे दादाल सधि जोयो पण ते बहु टूको छे, अने तेमा दादालनु एक ज आवर्तन थाय छे, तो हवे बे आवर्तनवाळो दीपक लईए:

दीपक छद—मात्रा १०, ताळ २[५]

दस मात्रिया देख,
गुरु अत गणि लेख,
दीपक नको नाम,
छे छद सुखधाम ३०

त्रीजो वने आठ,
त्या ताळनो ठाठ,
पण पाचमी मात्र
ते लघु तणु पात्र ३१

द पि पृ ९

अही ताल बहु अटपटी रीते बतावेलो छे त्रीजो पछी आठमी उपर ताल कह्यो छे एटले पाच मात्राने अतरे ताल ठर्यो अने सधि पचकल थॉ. पठनथी तरत समजाशे के उत्थापनिका

दीपक दादाल दागाल

ए प्रमाणे छे

---

५ मूळमा ३ ताल छपाया छे ते देखीतो पाठदोष छे

पचकलना अहीं मायता त्रण सधिओ दाल्दा ल्दादा अने दादाल छे एक ज पक्तिमा आवी दावे के नही ए प्रश्न मेळवो छे, जे आपणे पचकल छदोना मेळनी चर्चामा हाथ धरीशु

ए पछी आपणे सप्तकल सधिना छन्दो लईए तेमा प्रथम हरिगीत लउ छु

हरिगीत दादालदा दादाल्दा दादान्दा दादालगा

आ सधिमा बे ताल छे ए एनी विशेषता छे तेमा यति चौदमी के सोळमी मात्राए आवे छे आपणे दल्पतरामनु लक्षण लईए

२० हरिगीत छद — मात्रा २८, ताळ ८

वळ सकळ अठ्ठावीश मा, गुरु अतमा ए रीत छ,
दाणगार वे रत्ने जती, मनहरण ते हरिगीत छे
त्रीजी उपर पछि त्रण चतुर पर, एम आठे ताळ छे,
ते ताळमा जो जगण तो, न चहीन छद रसाळ छे १०५

द पि पृ १७

पहेलो ताल त्रीजी मात्रा उपर आवे, अने पछी त्रण अने चार एम एक पछी, एक उमेरता जे मात्राओ आवे ते उपर ताल पडे एटले के ३ ६ १० १३ १७ २० २४ अने २७ ए मात्राओ उपर ताल पडे, अते गुरु आवे, सोळ के चौद मात्राए यति आवे उपरना छदमा १, २, ४ पक्तिओमा चौदमी मात्राए यति छे, अने त्रीजी पक्तिमा सोळमी मात्राए यति छे, जे बधी अल्पविरामथी दर्शावेली छे आनी पहेली बे मात्रा छाडी नर्मदाशकरे नवो हरिगीत रच्यो छे·

विषमहरिगीत दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल गा

अही सधि दादालदा ने बदले दालदादा थाय छे, जे सप्तकलनो एक भिन्न पर्याय ज छे बन्ने प्रकारोना मिश्रण थाय छे आ छदने नरसिंहरावे विषम-हरिगीत नाम आप्यु नरसिंहरावे एक खडहरिगीत नामनी नवी रचना प्रयोजी छे ते जोईए

ऊछळो उल्लासथी
सिन्धु उर पर राजता
हसे उज्ज्वल हासथी
नणगण तरगो आज आ; १

स्मरणसहिता पृ १

तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दा दालदादा दालगा

बीजी एक वैचित्र्यमय रचना जोईए जेनें श्री खबरदारे मिश्रहरिगीत कहेली छे

ओ मेघ वृष्टी लावजे
तुज रेल अहिं रेलावजे।
गडगड करी,
भडभड भरी,
रणवाद्य तुज वगडावजे। —
धरणी विशे कई तापना संताप छे,
पूठे पडचा मनहरमुखी कइ पाप छे,
ए सर्वने तुज रेल्मा घसडी जई होमावजे,
ओ मेघ! कर कर वृष्टि! दुर दुर सर्व ए व्हेवडावजे

'मेघने,' विलासिका

स्पष्ट रीते आमा सप्तकल सधिना भिन्नभिन्न सख्याना आवर्तनो छे एम आ रचनानु पृथक्करण सरल छे

आनायी अर्ध सख्यानी मात्रानी पक्तिनो उधोर छद छे, पण तेनो सधि हरिगीत करता जरा भिन्न छे ए सधि छे दादादाल आपणे दलपतरामनु लक्षण पहेलु लईए

१० उधोर छद—मात्रा १४, ताळ ६

मात्रा चौदनु पद मान, गुल अंते उधोर प्रमाण,
ताळो एक त्रण शर आठ, दश ने बार पर पण पाठ ५६
द पिं पृ ११

एक पक्तिमा चौद मात्रा, अते गुरु लघु आवे, अने ताळो १, ३, ५, ८, १० ने १२ मात्राओ पर पडे आ रीते एनीं उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दा दा दा ल दा दा गा ल

स्पष्ट रीते आ सप्तकल छे, पण हरिगीतना सप्तकलमा बे ज ताल हता, मामा दलतपरामे त्रण ताल नाख्या छे ते हु मानु छु के बधी सप्तकल

રચનાનો મગજ રૂપે વિચાર નહી કરવાનું પરિણામ છ જો હરિગીતની પેઠે આ ઉપર તાલ નાખના હોય તો દા દા દા ૦ એમ તાલો પડે આનાથી પણ ટૂંકો, આના અર્ધ જેટલો ઘત્તા છંદ દલપતરામે આપેલો છે, તેમા આ જ પ્રાપ્તિ છે, પણ તાલ મેં અહી સૂચવ્યા પ્રમાણે (એટલે કે દા દા દા ૦) છે છંદ મેં પથાય વાપરાયો જોયો નથી પણ માત્ર સરસામણી માટે લઉ છુ

૩ ઘત્તા છંદ—માત્રા ૭, તાળ ૨

મુનિ પળવંત, ગુરુ લઘુ અંત, ઘત્તા છંદ, છે ગુણવંદ ૨૦
પૃથ્વી પાંચ, જ્યા વઠ વાંચ, ત્યાં ધર તાળ, ભણિ ગમાળ ૨૧

દ પિ પૃ ૮

તાળ પૃથ્વી એટલે પહેલી અને પછી પાંચમી માત્રાએ છે

સપ્તકલ સધિના મુખ્ય ચાર પર્યાયો થાય તેમા દાદાલ્દા હરિગીતમા આવે છે દાલ્દાદા સઙહરિગીતના આવે છે દાદાદાલ્ ઉપોરમા આવે છે અને બાકી રહેલ લ્દાદાદા તે હરિગીતમા અને સઙહરિગીતમા મિશ્રણ તરીકે આવે છ

માત્રાસધિઓમા આટલા જ સધિઓ આવે છે તેમા સૌથી સાદો ત્રિકલ છે, અને સૌથી અટપટો સપ્તકલ છ

આ ઉપરાત અહી આવી ગયેલા છંદોના મિશ્રણથી નવા છંદો બને છે તે હવે જોઈએ

મિશ્રણોમા સૌથી પહેલો કુંડળિયો દલપતરામ લે છે

૩૭ કુંડળિયા છંદ—માત્રા ૧૪૪

કુંડળિયો કરતા કરો આદિ દોહરો એક,
પળની ચોથા ચરણને, ઉલટાવો ધરિ ટેક,
ઉલટાવો ધરિ ટેક, કાવ્યના ચાર ચરણ સમ,
ચરણ રચો શુભ ચાર, છ પદ બાધે સઘળા ત્યમ,
પ્રથમ ચરણનો પ્રથમ, શબ્દ છેવટ જો ભળિયો,
છે તે રૂડો છંદ, કહે કવિજન કુંડળિયો ૧૩૫,

દ પિ પૃ ૨૭

આમા દોહરાનુ અને રોળાનુ મિશ્રણ છે તેમા દોહરાના બે દલ આવે છે અને રોળાની ચાર પક્તિઓ આવે છે દોહરાના ઉત્તરાધનો છેલ્લો યતિખડ દાદા દાદા ગાલ એટલો ભાગ રોળા શરૂ થતા તેમા ફરી આવે છે એમ કરવાને

पूरी सगवड छे कारण के रोळानो पहेलो यतिखंड बरावर ए ज प्रमाणे छे. छेल्ले कहेवु छे के ए रोळाना अनगा दोहराना प्रथम चरणनो प्रथम शब्द मूकवो. एने माटे दलपतरामे आपेलु दृष्टान्त अही उतारु छु:

नहि डोले जो नाग तो, नहि वशीनो नाद,
जगम जन थिर थाय नहि, सुणि कवितानो साद;
सुणि कवितानो साद, मरद मादा नहि डोले,
नहि कविता ते ठाम, बरावर वानरो बोले;
कहे कवि दलपतराम, नाम धिक खोटु खोले,
धिक वशी वानार, नाग सुणि जो नहि डोले. १७६

एजन पृ २७–२८,

खरी रीते रोळाने अते दोहराना प्रारभना वे चतुष्कलो आवे छे अने तेमा अर्थने अनुकूळ रीते शब्दोनो क्रम पण बदलाय छे ते आ दृष्टान्तमा जणाशे. अही बे रचनाओ जुदीजुदी रहेती नथी पण रहेणाईने एक थई जाय छे, ते ध्यानमा राखवा जेवु छे दोहरानो छेल्लो यतिखंड रोळामा फरी आववाथी रचनाओ भिन्न छता एक थई जाय छे, अने प्रारभना अने छेवटना शब्दो एक थवाथी आमा छदने एकत्व मळे छे चारणी रीते पठन करवाने आ छद बहु ज अनुकूळ छे

गुजराती पिंगळोमा कुडळियानो आ एक ज प्रकार प्रसिद्ध छे पण आवा मिश्रणो बीजा छदोना पण थाय छे आने ज मळती मिश्र रचना कुडलिनी छे तेमा आर्या अने रोळानु मिश्रण आवे छे हु मानु छु दलपतरामे आपेली रचनामा दोहरो पुल्लिग छे माटे ए रचनाने कुडळियो कह्यो छे, अने आ रचनामा प्रथम आर्या स्त्रीलिंग छे एटले आने कुडलिनी कही छे खरी रीते पहेलीने दोहरा-कुडळियो, अने बीजीने आर्या-कुडलिनी कहेवी जोईए. पहेलीमा दोहरानी जगाए सोरठा जेवी दोहरानी बीजी रचना आवी शके छे, अने ए ज रीते आर्याकुडलिनीमा आर्या जेवी गीति उपगीति वगेरे रचनाओ पण आवे छे कुडलिनीनु लक्षण 'रणपिंगल'मा नीचे प्रमाणे छे.

२२ कुडलिनो, कुडलिणो (आर्या-कुडलिनी) मात्रा १५३

धरिने प्रथम ज आर्या अत पदनि कुडळी फरी करजो,
तेम थता रोला पद, सरखु आवे त्यम ज धरजो,
सरखु आवे त्यम ज, तमे पछि रोला रचजो;
तेमा कल चोवीश, नियमसर रचवा मचजो;

आदि रचेला बोल, उचारो अंते फरिने;
रचजो कुंडलिनी ज, प्रथममां आर्या धरिने २००
रणपिंगल १, पृ. १८२-३

आ उपरथी जणाय छे के आमां रचनानी मुख्य खूबी ए छे के बे स्वतंत्र छंदो, पहेलाना अंत्य पदना बीजाना आदिमां यतां आवर्तनथी जोडाई जाय छे, अने बीजाना अंतमां पहेलाना आद्य चरणना शब्दो फरी आवी एक आखो सुबद्ध छंद बने छे

दलपतरामे पिंगलमां तो एक ज कुंडळियानो प्रकार आपेलो छे पण तेमनां काव्योमां एक बीजो प्रकार मळी आवे छे तेने कुंडळिया-तोटक कहीशुं. प्रथम तेनुं लक्षण 'रणपिंगल'माथी लउं छुं:

१३. कुंडळिया-तोटक, मात्रा ११२

तेर अने अगियारना, चरण रचीने चार;
एम करीने दोहरो, ते पर तोटक धार
धर तोटक ते पर प्रेम धरी, उलटी तुक चोथि दुहानी करी;
रच तोटक कुंडलिया सरखा, कविता करि एम पछि हरखा.
र पिं १, १४१

आनो दलपतरामे करेलो प्रयोग:

घाव रुझे तरवारनो, तीर तणो पण तेम,
कदी न रूझे वचननो, जीव कपायो जेम;
ज्यम जीव कपाय रुझाय नहीं, वचनोनि पिडा पण तेम कहीं;
घटमांहि करे ज कलेश घणो, कदि घाव रुझे तरवार तणो १२
'विजयविनोद' दलपतकाव्य-२, पृ. १८०

आवी एक बीजी मिश्र रचना 'रणपिंगल' आपे छे, जेनुं सामान्य नाम चूडाणा छे तेमां पचा नामना जातिछंद साथे आर्याकुलना छंदने जोडवामां आवे छे पचा आ सिवाय अन्यत्र नोंधायो नथी एनुं लक्षण 'रणपिंगल' नीचे प्रमाणे आपे छे :

पचा

पूर्वार्ध ६+४+२ , ६+२+गु+ल = २३
उत्तरार्ध ६+४+२ ; ६+२+गु+ल = २३

मात्री रीते तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

पंचा: दादा दादा दादा, दादा दादा गाल

खरी रीते आ रोळा ज छे, मात्र तेमा अते दागाने बदले गाल मूकेलो छे. एटले के चूडाणा रचनामा पण रोळानो ज प्रकार आवे छे हवे आपणे आ मिश्र रचनाओ जोईए

२६ चडाणापचागाहा (आर्या) कुडलिनी माना १०३

पचा एक ज आणी, ते पर गाहा धार,
चूडाणाकुडलिनी, एवी छे सुखकार,

एवी छे सुखकारी, पचागाहा तणे भले नामे;
कविजन कविता करवा, जोडे छे आपने कामे २०४

र पिं पृ १९४

आ विशे विशेष कहेवानी जरूर नथी पचानी जगाए दोहरो के तेनु कोई रूपान्तर आवी शके छे तेम ज आर्यानी जगाए तेनु कोई रूपान्तर आवी शके छे. जेम के

२७ चूडाणा उपदोहा विगाहा (सद्गीति) कुडलिनी मात्रा १०५

उपदोहो रच एक, जेने के'छे सोरठो,
ते पर राखी टेक, राख विगाहा शोभती,
राख विगाहा रूडो, जे उदगीती तणे नामे,
उपदोहा वीगाहा, चूडाणाकुडलिनि यने आमे २५०

रँ पिं १, पृ १९५

अही सुधीनी वधी कुडळिया रचनाओ एक ज प्रकारना छदोना मिश्रणनी छे, केम जे दोहरा आर्या रोळा वधी चतुष्कल रचनाओ छे पण भिन्न प्रकारना छदोना कुडळिया पण मळे छे 'छदःकोष' एना वे छदो आपे छे चदायणो अने चदायणी पहेलो दोहरो अने कामिनीमोहन[६] जेने आपणे अही मदनावतार

६ 'छन्दःकोष' कामिनीमोहनना लक्षणमा तेने रगण एटले गालगाना आवर्तनोयी वनेलो कहे छे मत्त असलोइ रगणण सजुत्तय, (छ को श्लो १०) अर्थात् रगण सयुक्त एशी मात्रानो कहे छे एटले 'छदःकोष'ने मते आ आवृत्तसधि अक्षरमेळ थाय पण आगळ चदायण'मा अने चदायणीमा जे कामिनीमोहन आवेलो छे, जेने में आखो ज उतारेलो छे, ते पाछो रगणात्मक नथी, तेमा दालदा मात्रामेळो सधि आवे छे, एटले मे एने मदनावतार गणी शकीए एम कहेलु छे

मात्रानु चरण पण नथी " चरणाकुळनु थाटलु लक्षण लई लईए एटले त्या पाछळ चतुष्कलोना चार आवर्तनो मात्र रहे छे खरी रीते त्या चरणाकुळ छे ज नही ए छद खरो तो छेल्ली मात्रा खडित थयेलो चोपायो छे —

| | | | | | | |
दादा दादा दादा दादा । दादा दादा दादा गाल

एटले आ चद्रावळा छद चोपाया अने चरणाकुळनु मिश्रण छे एम कहेवु जोईए

आमा कुडळी करवानी कही छे अने आ छदोमा बन्ने आवश्यक स्थळे कुडळी छे पण 'रणपिंगल' कहे छे के कुडळी आवश्यक नथी प्रथम तो 'रणपिंगल' आ नाम सामे पण वाधो ले छे ते कहे छे "गुजरातीमा हाल जे चद्रावला नाम कहेवाय छे ते अशुद्ध छे 'छदकामदुधावत्स'मा एनु नाम चद्रावली लख्यु छे चद्र+आली अथवा आवली एटले चद्राली अथवा चद्रावली नाम आप्यु छे तेमा कुडळी वाळवानु अथवा प्रथम चरण जेवु ज छेल्लु एटले आठमु चरण लाववु एवो नियम कर्यो नथी" (रणपिंगल १, पृ १४२) अने एवा कुडळी विनाना चद्रावळा पण मळे छे, जेनो प्रसिद्ध दाखलो कालीदासना ध्रुवाख्यानना चद्रावळानो छे

श्री गुरु गोविन्दने वरणवु, प्रेमसु लागु पाय,
आराधू अविनाशी एवा आदि निरजन राय,
आदि निरजन अकळ स्वरूप, रामे लीधा रमवा रूप,
सृष्टि निपावा थइ मनसाय, सुभट थई पोढ्या जळमाय
जे जे वैकुठराय १
बृ का दो १, पृ ६०५

अही पहेली पक्ति दोहरानी, बीजी चोपायानी, अने पछीनी चोपाईनी छे चोपायाना अत्य खडना शब्दो पाछळ आवती चोपाईमा फरी आवे छे, पण अंते कुडळी नथी. एटले आने कुडळिया रचना कही शकाय नही अने उपरनो दाखलो बतावे छे तेम आ रचनाना पण भिन्नभिन्न प्रकारो छे

अही सुधी आपणे बे जुदा जुदा कडीबद्ध छदोना मिश्रणो के जोडाणो जोया पण आखी कडीओना नही पण तेना दलोना मिश्रणीना बे दाखला मळे छे ते लईए अने 'छदकोष'मा मळे छे पहेलो दाखलो हु चूडामणिनो लउ छु तेमा प्रथमार्धमा दोहरो आवे छे, अने उत्तरार्धमा आर्यानो उत्तरार्ध आवे छे

पुव्वद्धउ पढि दोहडउ । पच्चद्धउ गाहाण।
चूडामणि जाणिज्जउ मज्झे सयलाण छंदाण॥ ४८॥
छदकोष

आनी उत्थापनिका (जगणव लु वेकी स्थान खास जगावतो नथी.) आम थाय :

चूडामणि : { दादा दादा दालदा दादा दादा गाल
दादा दादा दादा दादा दादा ल दादा गा

ते पछी वेरालु लउं. तेमा त्रण पादो दोहरानां अने छेल्लु ते आर्यानुं चोथुं पाद आवे :—

दोहा छंदह तिन्नि पय। पढमइं सुद्ध पढेहु॥
पुणवि चउत्थुवि गाहपउ। वेरालुवि तं वियाणेहु॥ ३३

उत्थापनिका : { दादा दादा दालदा दादा दादा गाल
दादा दादा दालदा दादा दादा ल दादा गा

बन्ने दृष्टान्तोमा प्रास छे. छतां प्रासनी मुश्केली पण स्पष्ट छे. प्रथमार्द्धमां दोहरो छे एटले अंते गाल आवे. तेनी साथे प्रास मेळववाने आर्यानो अंत्य यतिखंड छे एटले अते दागा आवे. एटले प्रथमार्द्धमा अते ह्रस्व जोईए, अने उत्तरार्धमा अते एनी साथे प्रास मेळववा ह्रस्व मूकी पछी दीर्घ उच्चारण करवु पडे. एकंदर प्रासनी जरा मुश्केली रहेवानी एम हुं मानु छु. बाकी आ मिश्रण पठनमा सुन्दर तो जणाय छे. रचना दोहराथी बहु दूर. नथी जती.

आ पछी प्राचीन अपभ्रंश साहित्यमा पुष्कळ वपरायेलो पण जूनी गुजरातीमा ज लुप्त थयेलो वस्तु के रड्डा छंद लउ छु. तेना लक्षण विशे जुदाजुदा पिंगलोमा जुदाजुदा गणो आपेला छे, जे गणपद्धतिनी अपूर्णता दर्शाववानु मारु साधन थाय, पण तेमा नहीं ऊतरता हु तेनु स्वरूप मारी योजना प्रमाणेनु आपु छु :

वस्तु अथवा रड्डा
दालदादा दालदादा ल।

दादा दादा दाल । दालदालदा दालदालल ।
दादा दादा दाल । दालदालदा दालदालल॥

दादा दादा दालदा, दादा दादा गाल ।
दादा दादा दालदा, दादा दादा गाल॥

पहेलुं दृष्टान्त हरमान याकोबी संपादित 'सनत्कुमारचरित'मांथी लउ छु. एना कर्ता हरिभद्र सूरि १२मा सैकाना छे.

गणी शकीए तेनो, अने बीजो आर्या अने कामिनीमोहननो बनेलो छे. पहेला जोई गया ते प्रमाणे छंदनी जाति दोहरा अने आर्या उपरथी निर्णीत थई छे हु दृष्टान्तो मूळमाथी ज टाकु छु

चंदायणो

सो चदायणु छदु फुडु। जहि धुरि दोहा होई।
अइ कोमलु जणमणुहरणु। बुहियणससिउ सोइ॥

बुहियणह ससियउ सोइ सलहिज्जए
कामिणीमोहणो पुरउ पाठिज्जए।
मत्त अडवीससउ जेण विरइज्जए
सोवि चदायणो छदु जाणिज्जए॥ ३२॥

छदकोष पृ ५८

चंदायणो

सो चंदायणिछंदो जेण पढिज्जति पठम गाहाओ।
कामिणिमोहण पुरओ मत्ता अस्सीय सजुत्तो॥

मत्त अस्सीइ (जुय) होइ नीरुत्तम
पचकल सव्व ससिकल थ सज्जुत्तम।
कामिणीमोहणो पुरउ पाठिज्जए
सोवि चदायणो छदु सलहिज्जए॥ ३९॥

एजन, पृ 59

कुडळिया रचनाना वर्ण रक्षणो अही जळवायेला छे पचकलोनु स्वरूप जोता जणाशे के आ आगळ आवी गयेलो मदनावतार ज छे

आ सिवाय कुडळिया अनेक प्रकारना थाय छे पण अही आपी ते ज रचनाओ सौथी सुन्दर छे छता बीजी रचनाओ केवी होय छे तेना दृष्टान्त तरीके दयारामनो एक कुडळियो उतारु छु

श्री गुरु गोविन्द समरता सकळ मनोरथ सिद्ध,
सकळ मनोरथ सिद्ध थाय बुद्धि शुभ प्रकाशे,
महा मगळ आनद होय दुख दुष्कृत नासे,
जगत उखाणे जटित, रचित आ मनप्रबोधिनी,
राधावर रतिकरणि प्रीत्त परपच निरोधिनी,

निरोध करवा चित्तने, दये वचन आ कीध,
श्री गु गोविन्द समरता मस्ळ मनोरथ सिद्ध

वृ का ो १, पृ ६१४

म्ही प्रथम आखा दोहराने बदले दोहरार्ध ज आवे छे पछी पूर्वोक्त कुडळियानी पेठे ज चार पक्तिनो रोळा आवे छे पण उपसहार त्या नथी थतो रोळा पछी फरी आखो दोहरो आवे छे, जेमा दोहरानु आद्य दल आखु उत्तरार्ध तरीके आवे छे आ रचना पूर्वोक्त कुडळिया जेवी सुन्दर नथी

पछी छप्पो अथवा छप्पय छद लईए

३८ छपय छद — मात्रा १५२

छपय छद करनार, प्रथमना चार चरणमा,
कळा करो अगियार, अने वळि तेर वरणमा,
पचम पद पण तेर, आदि कळ उभय वधारो,
ते ऊपर पण तेर, छठु पण एम सुधारो,

कळ प्रथम उपर चच्पार पर ताळ चार पद आणजो,
पछिमा बे कळने बेवड दुहा प्रथम पद जाणजो १७९

द. पि. पृ २८

आमा पण रोळा आवे छे, जो के दलपतरामे ए नामनो उल्लेख कर्यो नथी चार रोळाना पद पछी, आपणे आगळ जोई गया ते उल्लाळो आवे छे ए छप्पानु स्वरूप छे आ पण सुन्दर मिश्रण छ रोळानी पछी लावी उल्लाळानी पक्तिओ उपसहार करवामा बहु सारी रीते उपयुक्त थाय छे

आ पछी दलपतराम चद्रावळा आपे छ

३९ चद्रावळा छद — मात्रा ११८

चरणाकुळनु चरण रचीने• दुहा उत्तरपद देख,
बे चरणो तो एम बनावी, पछि कुडळि पण पेख,
पछि कुडळि पण पेखि विचारो, चार चरण चरणाकुळ धारो,
मन रच चद्रावळा मचीने, चरणाकुळनु चरण रचीने १८१

द पि पृ २९

लक्षणमा आवता प्रथम चरणाकुल शब्द आगळ निशानी करी नीचे टीप आपी छे के "चरणाकुळना चरणने अते एक गुरुवाळु के बे लघुवाळु सोळ

तुगपणमिरु विउसु सुकुलीणु।
सुसमत्थउ खतिपरु सीलवतु सोहग्गमदिरु।
अहिगम्मउ दुद्धरिसु धणसमिद्धु दाणम्बुसदिरु॥
जयजणनयणसुहावणउ ग यतेय पभारु।
आससेण अमिहाणुनिवु आसि वसुन्धरसारु॥ ४५१
सनत्कुमारचरित, पृ २६

आ रचना गुजरातीमा ऊतरता तेना पहेला सप्तकल साधिनी वीप्सा थई, ते सिवाय तेमा बीजो वधो फेरफार थयो नथी

चलीँय गयवर चलीँय गयवर गुडीँय गज्जन्त,
हू पत्तउ रोसभरि, हिणहिणत हय थट्ट हल्लीँय।
रह भय भरि टल्टलीँय मेरु, सेसुमणि मउड खिल्लीँय।
सिउ मरुदेविहि सचरीँय, चूजरीँ चडिउ नरिंद।
समोसरणि सुरवरि सहिय, वदिय पढम जिणद॥ १६
भरतेश्वरबाहुबलिरास, पृ २

आ रचनानो अपभ्रश साहित्यमा पुष्कळ वपराट हतो ते गुजरातीमा शुद्ध रूपे, अने प्रथम सप्तकलनी वीप्साना विशष लक्षण साथे ऊतरी आवी, पण पछी तेनु स्वरूप धीमे धीमे ओळखातु बध थयु, अने तेनु एक एक अग लुप्त थता थता छवे ए आखी लुप्त थई गई एक रचना पिंगळमाथी केम लुप्त थाय छ, ए व्यापार आ ग्रथना अधिकारनो नथी, एटल हु ए निरूपतो नथी पण रसिक विषय तो छ ज ए आखा, में मारा 'प्राचीन गुजराती छदो'मा चर्चेलो छ (, १७७ थी १८२) आ रचना अत्यारे लुप्त थई छ पण मारा समजवा प्रमाण ते पुनरुज्जीवित करवा योग्य छ

अही हु जातिछदोनु निरूपण पूरु करु छु अने हवे एना मेळनो विषय हाथमा लईश

६

मात्रामेळ के जातिछंदोनो मेळ

आपणे गया प्रकरणमा जोई गया के मात्रामेळ के जातिछंदोमा अमुक अमुक नियत सख्यानी मात्राना सधिओ होय छे, अने एमाना कोई एक सधिना अमुक सख्याना आवर्तनोथी जातिछदनु चरण बने छे आ सधिओ अमुक चार ज छे चतुष्कल, त्रिकल, पचकल, सप्तकल अलबत्त, कोई कोई जातिछदोमा आखु चरण एक ज सधिना आवर्तनोनु बनेलु न होय एवु उपलक दृष्टिए जणाय छे, जेम के चोपाईमा दादाना त्रण आवर्तनो आवी छेल्ले गाल आवे छे, जे देशीती रीते चतुष्कल नथी, पण पक्ति मुख्यत्वे कोई एक ज सधिना आवर्तनोनी छे एटलु तो आपणे कही शकीए छीए आ नियत-सख्य मात्राना सधिना नियत सख्याना आवर्तनो ए ज आ प्रकारने वृत्तोथी व्यावृत करे छे, जे वृत्तो अनावृत्तसधि छे जातिछदोना मेळ पकडवामा आ सामान्य लक्षण बहु सूचक छे

आ सधिओ विशे बीजो एवो नियम ए छे के आ सधिओ पक्तिमा छूटा पडता होवा जोईए एटले के दरेक सधि स्वतत्र अक्षरथी शरू थतो होवो जोईए, तेनी पहेली मात्रा आगला सधिना अत्याक्षरमा भळेली न होवी जोईए आ नियम घणो महत्त्वनो छे, अने एने प्रधान लक्षणोमा गणवो जोईए सरु तो एम न थाय तो सधिओ छूटा न ज पडी-शके, छूटा न पडे एटले सधिना आवर्तनो ज प्रतीत न थाय सधिओ आद्याक्षरथी शरू थवानो नियम आवश्यक न होय तो हर कोई मजकुरमा आपणे गमे ते सधिनो आरोप करी शकीए दाखला तरीके पदर मात्राना कोई वाक्यने आपणे त्रण चतुष्कलो अने गालनु बनेलु, के पाच त्रिकलोनु के त्रण पचकलोनु बनेलु के बे सप्तकलो अने एक लघुनु बनेलु एम गमे ते रीते घटावी शकीए आ नियम पण घणु ज सूचक लक्षण छे

पण आ बन्ने लक्षणो जे मेळनु सूचन करे छे तेना स्वरूपनु सूचन, एक रीते दलपतरामे तालनी व्यवस्था करी, करी आपेलु ज छे आ दरेक सधिमा मुक अमुक स्थाने ताल छे, अने ए ताल सधिनी नियत मात्रा उपर ज पडवो जोईए मधिओ अलग राखवानु कारण तालनी मात्रा ताल माटे उपलभ्य—खुल्ली राखवी ए छे अर्थात् जातिछदोना नियमो तालना रक्षण माटे छे अर्थात् जातिछदोनो मेळ तालमा होवानु आपणने प्रबळ सूचन मळे छे

अने आ संधिओ अमुक अमुक मात्राना ज केम छे?—चार, त्रण, पांच, सात मात्राना ज केम छे? ए संधिओनी मात्रा अमुक संख्यानी छे, एवा केवळ संख्यामानमां कोई गवादनी आवश्यता होई शके नहीं मात्र संख्याना आकलनमां ज पद्यनी हृद्यता रहेली होत तो आ चार ज संख्याथी भिन्न अनेक संख्याना संधिओ बन्या होत पण एम नथी केवळ संख्यामान ए तो पद्यना आकलनमां अप्रस्तुत छे अने तेथी विक्षेपक पण थई शके आपणो कवितापठननो अनुभव तो एवो छे के तेना पद्यपठनमां कोई संख्यानुं आकलन थतुं होतुं नथी वसंततिलकाना पठनमां पंक्तिमां चौद अक्षर आवे छे एवुं पठनमां प्रतीत थतुं नथी, ए संख्या तो आपणे पछीथी पठनसंस्कारोना पृथक्करणव्यापारथी शोधी काढीए छीए तेवुं ज जातिपठननुं छे एटले आ संख्याओनो पद्य साथेनो संबंध कोई संख्या तरीकेनो नथी पण कोई इतर तत्त्वनो छे

आ तत्त्वनुं सूचन आपणे उपर जोई गया ते तालमांथी मळे छे आपणे जोयुं के संधिओ बंध तालने माटे मात्रा खुल्ली रहे तेवी रीते योजायेलो होय छ आ ताल शब्द सहेजे आपणने संगीतना तालनुं सूचन करे छ वळी आपणा जातिरचनाना चारेय संधिओनी मात्रासंख्या पण संगीतना तालोनुं सूचन करे छे जातिरचनाना संधिओ चार मात्राना, त्रण मात्राना, पांच मात्राना अने सात मात्राना छे तो आ मात्रासंख्यानी बराबर बमणी मात्राना तालो संगीतमां मळी रहे छ संगीतमां आठ मात्रानो लावणी ताल छ, छ मात्रानो दादरो ताल छे, दश मात्रानो झप ताल छे, अने चौद मात्रानो दीपचंदी ताल छ अर्थात् संगीतना अपर कहेलुं दरेक तालमात्रामां पद्यरचनाना बब्बे संधिओ मार्ई रहे छे लावणीमां बे चतुष्कल संधिओ, दादरामां बे त्रिकलो, झपमां बे पंचकलो, अने दीपचंदीमां बे सप्तकल संधिओ पद्यरचनानो ताल सामान्य रीते तालीना रूपनी बे कोई बे वस्तुना आघातथी थता थडकाराना रूपनी के छेवटे अवाजना थडकारोना रूपनो छे हुं विद्यार्थी हतो त्यारे तो जातिरचनानो पाठ अमे हाथथी ताळी दईने करता अत्यारे पण कदाच कोई निशाळमां ए प्रथा चालु हशे पिंगळमां मात्रामेळ रचनाना ताली ताळी दईने ज बतावाता अने जातिछंदोना पठन उपर ध्यान आपता जणाशे के तेमां ताल अवाजमां थडकाराथी के भारथी बतावाय छ तेथी पद्यना तालने पद्यभार पण कहे छे ता संगीतना तालनुं पण बाह्य स्वरूप आवुं ज छे वर्ते कहे छे "ताल शब्दनो मुख्य अर्थ ता एवो छे के, बे हाथे ताळी आपवी ए ज अर्थ गायनविद्यामां स्वीकारेलो छे ताल

शब्दनी गायनविधाने लगती व्याख्या करीए तो एवी रीते थई शके के, मुकरर करेला काळने अंतरे बंने हाथथी ताळी आपवी, अथवा बीजी कोई रीते टकोरो के आघात करवो ते." (गा. वा पा. पु. १, वि. १ पृ० ६७) आ रीते भिन्न-भिन्न संधिओनी मात्रासंख्या अने मधिमा आवता तालनु स्वरूप बन्ने आपणने पद्यसंधितालनुं संगीततात साथेनु अनुसंधान सूचवे छे. अने आटला स्पष्टीकरण पछी आपणने ए अनुसंधाननी निष्पत्ति तरत समजाय छे. कोई पण गायक उपरना कोई तालमा कोई गीत एटले वाङ्मय रचना गातो होय त्यारे एनी वाणी पण ए गीतनी तालबद्ध योजनाने अनुकूल थाय, तेनी साथे सारूप्य साधे ए स्वाभाविक छे अने ए अनुकूलता के सारूप्य एज संधिबद्धता. संगीतना तालमा कालमात्रानी अमुक अमुक योजना के आकृति आवती होय छे, अने वाणी ए कालमानाने नियत पद्धतिए वाङ्मय मात्राथी पूरे एमाथी संधि थाय. लावणी तालनी एक कालमात्रा वाणीमा लघुथी पुराय अथवा बे कालमात्राओ बे लघुथी के एक गुरुथी पुराय, तो लावणीनी आठमात्राओ बे चतुष्कल संधिओथी पुराय. जेम रघोळी पूरनार, कल्पित पुष्पपादडोनी आकृति रंगथी पूरे छे तेम वाग्गेयकार तालनी कालमात्रानी आकृतिने वाणीथी — अक्षरोनी कालमात्राथी पूरे अने ए रीते संधिओ निष्पन्न थाय. पिंगलमा रूढ थयेलो जाति शब्द पण आनु समर्थन करे छे. भरतनाटयशास्त्रमा जाति शब्द जे अर्थमा वपरायो होय छे ते अर्थ लगभग आधुनिक रागने मळतो छे, एवु विद्वानोनु मानवु छे अने जातिछंदो बधा ज तालबद्ध गीतमा गावाने अनुकूल होय छे. एटले हवे मात्र जातिछंदपृथिओने संगीतना तालो साथे घटाववानु ज बाकी रहे छे पण एम करीए ते पहेला संगीतमा तालनु स्थान अने तेना स्वरूपनो सादामा सादा रीते जरा विचार करी लईए

संगीत ए स्वरोनी हृद्य आकृतिथी निष्पन्न थाय छे. मानव कंठ तो अनेक स्वरो काढी शके छे पण तेमाथी अमुक ज स्वरो जे हृद्य छे तेनो ज संगीत प्रयोग करे छे. भौतिक शास्त्रनी दृष्टिए आ स्वरो हवाना अमुक संख्याना आदलनोथी थाय छे. आ आदोलनोनी संख्या वधे तेम तेम स्वर वधारे उच्च के तार बने, घटे तेम मन्द्र बने संगीत सा रे ग म प ध नी एवा सात[1] स्वरोनो प्रयोग करे छे आ स्वरोना आदोलनो वच्चे

१ संगीतना सात ज स्वरो मनाय छे अने तेथी सप्तक एवु नाम रूढ थयु छे पण खरी रीते आथी वधारे स्वरो संगीत प्रयोजे छे अने उच्चतानी दृष्टिए ए स्वरो जे बे स्वरो वच्चे आवे छे तेमाना एवना धोरणे ते कोमल के तीव्र बोलाय छे जेम के कोमल 'रे' ते 'सा' अने 'रे' वच्चेनो पण 'म'

अमुक प्रमाण हमेशां रहेलुं होय छे. दाखला तरीके आपणे जे स्वरने 'सा', एटले मध्यम सप्तकनो 'सा' ठराव्यो होय तेमां २४० आंदोलनो होय तो ते 'सा' साथे संबंध राखता 'प'नां ३६० एटले के दोढां आन्दोलनो थाय अने आ सप्तक पूरुं थता पछी तार सप्तकनो जे 'सा' आवे तेनां ४८० एटले पहेला 'सा'ना करता बमणां आंदोलनो होय. अने ए ज रीते नीचेना एटले मन्द्र सप्तकमा जतां मन्द्रनो 'सा' मध्यमना 'सा'थी अर्धां एटले १२० आंदोलनोनो होय. आम आ त्रणेय सप्तको अने तेना सातेय स्वरो अंदरअंदर नियत संबंधवाळा होय छे. एम होय तो ज तेनो संगीतमा प्रयोग थई शके. पण दरेक गायकने पोतानो 'सा' नक्की करवानो हक होय छे. कोई २४० आंदोलनोवाळा ध्वनिने 'सा' स्थापे तो कोई २५६ आंदोलनोवाळा ध्वनिने 'सा' स्थापे. एम दरेकने पोतानो 'सा' स्थापवानी छूट छे पण ए 'सा' स्थपाया पछी बाकीना बधा स्वरो अंदरअंदर ए ज नियत संबंधवाळा होवा जोईए. ए आखु षड्जग्राम अंदरअंदर नियत संबंधवाळा स्वरोनी एक सृष्टि छे.

ज्यारे गायक कोई पण गीत अमुक रागमा गाय छे त्यारे ते आ संगीते स्वीकारेला स्वरोनो प्रयोग करतो होय छे. हवे आ संगीतना संस्कारोनुं पृथक्करण करीशु तो जणाशे के आमा स्वरो उपरांत तालनु तत्त्व पण भेगु मळेलु होय छे. संगीतना साजमा स्वरोत्पादक वाद्य सारंगी के दिलरुबा होय तो तालोत्पादक साज तबला के मृदंग होय छे. आ ताल अनेक प्रकारना होय छे. ते भिन्नभिन्न संख्यानी मात्राना होय छे अने भिन्नभिन्न संख्याना मात्राखंडोमा विभक्त होय छे. मात्राओनी भिन्नभिन्न प्रकारनी रचनाथी तेनी भिन्नभिन्न हृद्य आकृतिओ थाय छे. साजथी गवाता संगीतमां आ ताल तेनी मात्राओ अने ए मात्राओना पण सूक्ष्म विभागो, तबलां के मृदंगना भिन्नभिन्न प्रकारना अवाजथी व्यक्त थाय छे.

आ रीते ताल तत्त्व संगीतमा प्रवेश पामी संगीतना स्वरोने कालमां मर्यादित करे छे. कोई पण रागमा गवाता गीतमां संगीतना स्वरो होय छे एटलुं ज नहीं, एमानो दरेक स्वर अमुक मात्रा सुधी प्रयोजायेलो होय छे अने रागनी आकृति आ रीते स्वर अने ए स्वरनी कालमात्रा ए बेथी नियत थाय छे.[२]

अने 'प'नी वच्चेनो ते 'म' तीव्र कहेवाय. आ कोमल अने तीव्र गणाता पण स्वरो ज छे पण मुख्य स्वरो सात स्वीकराता होवाथी कोमल तीव्र अने शुद्ध बधा माटे सामान्य नाम श्रुति कहेवाय छे.

२. अलबत्त राग व्यक्त करतुं बधुंय संगीत तालबद्ध होतुं नथी. गायक घणी वार राग शरू करता 'नोमतोम' ले छे तेने ताल नथी होतो जो के तेने लय होय छे.

आ तालमात्रा ते कोई पण कालमापक यन्त्रथी मापीने नक्की करेलो सर्वसमत समय नथी जेम स्वरोमा गायक पोतानो 'सा' पोते नक्की करे छे, तेम ताल माटेनी मात्रानो गाळो पण गायक पोते ज नक्की करे छे अने स्वरोनी पेठे ज, ए एक वार नक्की करेला मात्रासमयने ज मात्रानी बधी रचनाओ — मात्राना बधा प्रकारना विभागो माटे,' तेणे पछीथी अनुसरवानु होय छे

आपणे उपर जोयु के मात्रानो गाळो गायक पोते नक्की करे छे हवे गायनमा सा रे ग म प ध नी ए सात स्वरोना त्रण सप्तको होय छे अने मध्यम सप्तकना 'सा'ना आदोलनोथी तार सप्तकना 'सा'ना आदोलनो बमणा होय छे, अने मद्र सप्तकना तारना आदोलनो अरधा होय छे, तेने मळती रीते, आ नियत थयेली मात्रानो गाळो पण लय उपर आधार राखे छे लय एटले गीतनो वेग सामान्य रीते गानार धीमा वेगथी गान शरू करे छे अने त्वरित वेग तरफ जाय छे वेगनी दृष्टिए लय त्रण छे विलबित, मध्य अने द्रुत धारो के कोई गायक विलबित वेगथी गीत शरू करे छे तो ते ज वखते ए विलबितनी मात्रानो गाळो नक्की करशे पछी धारो के सगीत आगळ चालता ते वेग वधारवा माडे छे, तो पहेलाना वेग करता बमणो वेग थाय त्या सुधी तेणे मध्यलयमा गायु गणाय विलबित लयनी नक्की करेली मात्रानो गाळो, तेथी अर्ध थाय त्या सुधी मध्यलयनी मात्रा गणाय ए ज प्रमाणे मध्यलयनी मात्राथी गीत शरू थाय अने पछी वेग वधवा माडे तो, मध्यलयनी मात्रानो गाळो तेनाथी अरधो थाय त्या सुधी गीत द्रुत लयमा चाल्यु गणाय आ रीते मात्रानो गाळो ज्यारे गायक नक्की करे छे त्यारे ते अमुक लयनी मात्रानो गाळो नक्की करे छे, पण एक वार एम कर्या पछी तेणे ते गाळाना मापने वळगी रहेवु जोईए अने वधारे त्वरित लयोमा जवु होय त्यारे पण तेना प्रमाणनी सीमामा रहेवु जोईए सगीत जेम स्वरमा तेम तालमा पण अदरअदरना सबधोथी गूथायेली एक सृष्टि छे सामान्य पद्यपठनमा पण आपणे वेग वधारीए घटाडीए छीए विधिपुरसर श्रोतावर्ग आगळ पठन करवु होय तो अमुक वेगमा पठन करीए, पोताने माटे ज पठन करवु होय तो ते करता वधारे त्वरित वेगमा करीए, ए ज वस्तु गोखवा माटे पठन करता होईए त्यारे एथी पण वधारे त्वरित वेगमा करीए आम काव्यपठनमा पण आपणे वेग ओछो वधतो करीए छीए पण ते वेग ए काव्यकलानु अग नथी होतो बाह्य बहारना प्रयोजनोने ते आभारी छे पण सगीतमा वेग ए पण सगीतकलानो ज भाग छे अने सगीतनु केटलुक वैविध्य ए तत्त्व उपर आधार राखे छे आ रीते सगीतना लयने पद्यना सवाद साथे सीधो सबध नथी पण मात्रानो गाळो लय उपर आधार राखतो होवाथी

आपणे तेनी आटली चर्चा करी आपणे प्रस्तुत वात ए छे के संगीत जेम स्वर तेम ज तालथी नियुक्त थयेलुं होय छे तेना तालतत्त्वने पद्यरचना साथे संबंध छे अने ए ताल अनेक मानाखंडोमां अने मात्राओमां विभक्त थयेलो होय छे

आ रीते सामान्य व्यवहारमां तालनो अर्थ मात्र ध्वनिनो थडकारो एवो थाय छे ते संगीतमां खूब विकसित अने पुष्ट थाय छे संगीतमां ताल ए अमुक संख्यानी मानानी, पटोळा ऊपरना फूल जेवी आवर्तनवाळी, एक हृद्य आकृति छे आ आकृति अने तेना अंगोपांगो संगीतमां तबलाना ओछा वत्ता बलवाळा अनेक प्रकारना ध्वनिथी व्यक्त थाय छे, एटले तालनो मुख्य अर्थ ध्वनिनो थडकारो ए अहीं लुप्त तो नथी थतो पण ए गौण बने छे अने तालनो मुख्य अर्थ कालमानानी आवर्तनशील हृद्य आकृति एवो थाय छे हवे, पाछु फरीने जोता, जणाशे के पद्यरचनामां पण तालनो थडकारो नियत संख्यमात्राना संधिओने जुदा पाडवा, तेमने व्यक्त करवा ज आवतो हतो, छतां सामान्य व्यवहारनो अर्थ अने संगीतपरिभाषानो अर्थ बन्ने ध्यानमां राखवा जेवा छे

ऊपर कह्यो ते संगीतताल संगीतना संगीतस्वरमय स्वरूपमां मळी आवे छे पण तेनामां एटलु कलासामर्थ्य छे के स्वरो विना पण, तेने कलाजगतमां स्वतंत्र स्थान छे एनी प्रतीति आपणने संगीत विनाना मृदंगवादनमां थाय छ पण तेनो बहु ज प्रसिद्ध सर्वविदित दाखलो छे आपणो ढोल मात्र आघातजन्य ध्वनिथी ए रसनिष्पादक कलात्मक आकृतिओ रचे छे अने तालना आ सामर्थ्यथी, ज ते संगीतविशिष्ट पद्यरचनामां ऊतरी आवी शके छ ओनु स्वरूप आपणे संगीतनी एक पछी एक विशेषता दूर करीने समजवा प्रयत्न करीए धारो के कोई एक माणस कथा पण साज विना तबला के मृदंग विना गीत गाय छे संगीत श्रवणगम्य कला छे तो संगीतना बन्ने तत्त्वो स्वर अने ताल श्रवणगम्य ज होवा जोइए एम होय तो आपणे तालनो भौतिक अंश शोधी काढवो जोईए ध्वनिना भौतिक स्वरूपनु पृथक्करण करता विज्ञान तेना नीचे प्रमाणे घटक अंशो बतावे छे पहेलो स्वर स्वरने उपर जोयु तेम आंदोलनसंख्याथी नियत करी शकाय छे हवे ताल था आदोलनसंख्याने तो असर करी शके नहीं एम थाय तो 'सा' ते 'सा' ज न रहे आदोलनसंख्या वधे के घटे तो ते कोई बीजो ज स्वर थई जाय एटले ताल, स्वरने असर करी शके नहीं ध्वनिनु स्वरूप घडवामां बीजु तत्त्व ते तेनी उपाधि के वस्तु कहीए तांबाना तार, लोढानो तार, तातनो तार, ए दरेक एक ज स्वर काढे त्यारे पण तेमां भेद रहे छे— आपणे कहीए के 'उपाधिभेदात' जुदा जुदा माणसना आपणे अवाजो

ओळखीए छीए ते स्वरना उपाधितत्त्वने लीधे आपणे विचार करीए छीए ते प्रसगे तो एक ज माणस गाय छे एटले उपाधिभेदने अवकाश नथी. एटले ताल उपाधिभेदथी व्यक्त थई शके नही ध्वनिनु त्रीजु तत्त्व ते तेनी विपुलता छे आपणे एक गीत गाता होईए पण श्रोतावर्ग मोटो होय तो मोटो अवाज काढीए, श्रोतावर्ग नानो होय अने एनु ए ज गीत होय तो हळवो अवाज काढीए बन्ने गीतमा 'सा' एनो ए ज रहेवानो छे, बधा स्वरो एना ए ज रहेवाना छे, फेर पडे छे ते मात्र मोटा नाना अवाजनो. आ फरकने माटे आपणी भाषामा जोईए तेवा चोक्कस शब्दो रूढ नथी. भौतिक दृष्टिए आ फरक आदोलनविस्तारना वधारा घटाडाथी थाय छे. हळवा बोलाता 'सा'ना अने मोटेथी बोलाता 'सा'ना आदोलनोनी सख्या तो एक ज होय छे, पण हळवा अवाजमा ए आदोलनोनो विस्तार टूको होय छे माटे में उपर तेने अवाजनी विपुलता कही छ सगीतमा³ अने पद्यरचनामा ताल, स्वरनी विपुलताथी दर्शावाय छ पद्यरचनाना पठनमा तालनी मात्रा जरा मोटेथी बोलाय ते वखते अवाज हळवाथी ऊलटो एटले जरा भारे होय तेथी तालने पद्यभार पण कही शकाय साधारण गद्यना पठनमा कोई शब्द तरफ विशेष ध्यान खेचवु होय त्यारे आपणे ए शब्द उपर भार दईए छीई —ए शब्द (खरू तो तेनो अमुक अक्षर) वधारे मोटा अवाजे बोलीए छीए, तेम पद्यमा पण भार आपणे अवाजने मोटो करीने दर्शावीए छीए भौतिक दृष्टिए ताल अवाजनी विपुलताथी, अवाजना भारथी दर्शावीए छीए एम कहेवाय गद्यभारमा क्वचित् भारवाळा अक्षरनु उच्चारण विलबित करवामा आवे छे, पण पद्यभार, के तालनो भार तो क्षणिक ज होय छे ए एक थडकाराना रूपनो होय छे धीमे वाचता होईए त्यारे पण ए थडकारो आवे छे, अने मनमा वाचता होईए त्यारे पण तेना मानसिक उच्चारणमा ए थडकारो होय छे आटली चर्चा ध्यानमा राखीने आपणे एम कही शकीए के जातिछदोमा सघिओ, सामान्य रीते, अमुक अमुक सगीत तालना अर्थमा, सामान्य रीते, दरेक तालमात्रा वाणीनी एक मात्राथी पूरवाथी थाय छे, अने

---

३ सगीतमा ताल हमेशा भारथी ज, अवाजनी विपुलताथी ज, दर्शावाय छे एम नथी सम आवता गानार क्वचित् जेना पर सम पडतो होय ते स्वरनु उच्चारण एकदम धीमु करी नाखे छ क्वचित् समनी आगळना स्वरने थडकारो आपी क्षणिक अवाज बध करी पछी तरत समनो स्वर उच्चारे छे पण आ बधा प्रकारो स्वरनी ओछीवत्ती विपुलता द्वारा ज व्यक्त थाय छे एम कही शकाय अने सगीतमा तो आ उपरात अभिनयथी पण ताल घणी वार व्यक्त थाय छे

तेमा ते ते सगीततालनो ताल ते ते तालनी कालमात्राने पूरनारा अक्षर उपर पडे छे आ ताल उच्चारणमा थडकारायी व्यक्त करवामा आवे छे

आ अति सामान्य रूपे करेली चर्चा दाखला आपी स्पष्ट करवी जोईए सगीतना तालनी कालमात्राने वाणीना अक्षरोनी कालमात्राथी पूरवी एटले शु, ए क्यारे नियमपूर्वक पुरायेली गणाय, क्यारे नियम विना पुरायेली गणाय, ए सघळु दाखलाथी बतावयु जोईए ए हु सगीतना भिन्नभिन्न गीतो स्वराकनो साथे उतारीने बतावचा प्रयत्न करीश ।

पहेलु गीत हु 'केशवकृति'नु लउ छु जेनु स्वराकन वर्वेए आपेलु छे मूळ गीत नीचे प्रमाणे छे

सद्गुरुशरण विना अज्ञानतिमिर टळशे नही रे,
जन्म मरण देनारू बीज खरू बळशे नही रे सद्गुरु०
प्रेमे वचनामृत पान विना, साचाखोटाना भान विना,
गाठ हृदयनी ज्ञान विना, गळशे नही रे सद्गुरु० १
शास्त्र पुराण सदा सभारे, तन मन इन्द्रिय तत्पर वारे,
वगर विचारे वळमा, सुख रळशे नही रे " २
तत्व नथी मारा तारामा, मुज्ञ समज नरता सारामा,
सेवक सुत दारामा दिन वळशे नही रे " ३
केशव हरिनी करता सेवा, परमानद बतावे तेवा,
शोध विना सज्जन एवा, मळशे नही रे, " ४

के कृ पृ ९७

आमा पहेली बे पक्तिओ ध्रुव के टेकनी छे अने तेनी पछी कडीओ आवे छे ध्रुवनी दरेक पक्ति अने दरेक कडी एक सरखी रीते गवाय छे वर्वेए नमूना माटे ध्रुवनी बन्ने पक्तिओना अने पहेली बे कडीना स्वराकनो भेगा आपेला छे आमानी पहेली कडीमा पाठदोष[४] छे, तेथी हु मात्र बीजी कडीनु स्वराकन आपु छु वर्वेए पोतानी पद्धतिथी स्वराकनो आपेला छ पण आ पछी जे स्वराकन मारे आपवान छे ते भातखडेनी पद्धतिनु छे ते साथे सरखाववु सहेलु पडे माटे हु आना स्वराकनो पण भातखडेनी पद्धतिथी आपु छु वर्वेए गीतना स्थायी अने अतरो ए बे भागो स्वराकनमा दर्शाव्या नथी पण ए जरूरना होवाथी हु दर्शावु छु

४ वर्वेमा 'प्रेमामृतवच' एवो पाठ छे, जे देखीती रीते खडित छे उपरनो पाठ 'केशवकृति' जोई सुधार्यो छ

राग देस, ताल त्रिताल, मात्रा १६

स्थायी

सा सा सा सा	रे रे म म	प – नि –	सां रें सां सां
स द गु रु	श र ण वि	ना ऽ श ऽ.	शा ऽ न ति
ज ऽ न्म म	र ण दे ऽ	ना ऽ रू ऽ	वी ऽ ज ल
२	०	३	×
नि ध प ध	म प म ध	प ध म ग	रे – – –
मि र ट ळ	दो ऽ ऽ न	ही ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
रू ऽ व ळ	धो ऽ ऽ न	हीं ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×

अंतरो

म – म –	प प नि नि	सा – सा सा	सां – सां –
शा ऽ स्त्र पु	रा ऽ ण स	दा ऽ सं ऽ	भा ऽ रे ऽ
२	०	३	×
नि – नि –	सां – सां –	नि सा रें सां	नि ध प –
त न म न	इं ऽ द्रि य	त ऽ त्प र	वा ऽ रे ऽ
२	०	३	×
रें – रें रें	रें रें रें –	नि रें सा सा	नि ध प प
व ग र वि	चा ऽ रे ऽ	व ळ मां ऽ	सु ख र ळ
२	०	३	×
म प म ध	प ध म ग	रे – – –	
शो ऽ ऽ न	ही ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ।	
२	०	३	

गा. वा पा पु १ वि ३. पृ १८७

प्रथम तप पूरती स्वराकननी पद्धति जाणी लईए. गीतनी पक्तिओ अही प्रथम स्वराकन पहेला आपेली छे ते स्वराकनमा तरत जडशे. सामान्य रीते स्वराकनमा गीतनी पक्तिनी उपर स्वरो दर्शावाय छे अने नीचे ताल-चिह्नो अपाय छे आ गीत त्रितालनु छे तेमा सोळ मात्रा आवे छे, अने ए सोळ सोळ मात्रा त्रितालमा आवता ते चच्चार मात्राना खडो के कोठामा विभक्त थाय छे. गीतनी पक्तिमा क्याक ऽ आवु अवग्रहचिह्न आवे छे ते खाली मात्रा के मात्रानो अभाव बतावे छे अने तेनो अर्थ एवो छे के ते मात्रा के मात्राविभाग

आगळा अक्षरथी पूरवानो छे गीतनी प्रथम पंक्ति सदगुरु। शरण वि।ना ऽ अ ऽ। ज्ञा ऽ नति। एम छे तेमा प्रथम कॉलममा चारेय मात्रा जुदाजुदा अक्षरथी पुराय छे, 'सदगुरु', एवा चार अक्षरथी बीजा कॉलमनी चार मात्राओ पण 'शरण वि' एवा चार अक्षरथी पुराय छे त्रीजा कॉलममा पहेली मात्राने स्थाने 'ना' छे अने बीजी मात्राने स्थाने अवग्रह छे तेनो अर्थ एवो समजवानो के पहेली मात्रामा आवतो 'ना' बीजी मात्रा पण पूरे छे अर्थात् गीतनो ए एक अक्षर त्या बे मात्राने पूरे छे एज रीते त्रीजा कॉलममा आवतो 'अ' अने चोथामा आवतो 'ज्ञा' पोताने स्थाने रहीने पछीनी मात्रा पण अर्थात् बब्बे मात्रा पूरे छे आ रीते जोता गीतना अत तरफ आवता 'शो' कुल त्रण मात्रा, पछी आवतो 'ही' अने 'रे' दरेक चच्चार मात्रा पूरे छे गीत पंक्तिना अक्षरोनी उपर आवता स्वरावनोमा क्याक — आडी लीटी आवे छे त्या एम समजवानु के ए मात्रामा तेनी आगळनो स्वर लबाववानो छे दाखला तरीके गीतने अते 'रे' आवे छे तेना उपर रे स्वर छे तेनो अर्थ ए के गीतनो 'रे' रे स्वरमा गावानो छे हवे आपणे जोई गया के गीतनो 'रे' अवग्रहथी बतावेली बाकीनी त्रण मात्रामा पण लबाय छे अने ए लबाती प्लुतिनी मात्राओ उपर — आडी लीटी छे एटले ए प्लुतिनी मात्राओ पण — आडी लीटीनी आगळ आवेल रे स्वरथी ज पूरवानी छे अर्थात् गीतनो 'रे' चार मात्रामा लबाय छे, अने एनो स्वर रे पण चार मात्रामा लबाय छे प्लुतिमा आम सर्वत्र बनतु नथी— क्वचित ज, बने छे आगळ जोई गया के अत तरफ आवतो 'शो' त्रण मात्रामा लबाय छे, पण प्लुतिनी मात्राओ जुदाजुदा स्वरमा गावानी छ 'शो' नी पहेली मात्रा, उपर लखेल म मा, तेनी बीजी मात्रा, उपर लखेल प मा अने त्रीजी मात्रा पाछी उपर लखेल म मा गावानी छे

पद्यरचनाने आ स्वरवैविध्य साथे झाझु काम नथी एक ज पद्यरचना अनेक रागमा, अने एक ज रागमा अनेक स्वरवैविध्यथी गाई शकाय तेम ज बे के त्रण स्वरोमा सादी रीते पठी शकाय, के एक ज स्वरमा पण पठी शकाय पद्यरचनाने मार्मिक सबध सगीतना तालनी साथे छे आगळ आप्या ते स्वरावनोमा गीतना अक्षरोनी नीचे जे २ ० ३ × आवा सख्याको अने चिह्नो आपेला छे ते तालना चिह्नो छे त्रिताल कुल सोळ मात्रानो छे तेनो मुख्य ताल जे सम गणाय छे ते सोळ मात्राए, × आवी निशानी करी छे त्या पडे छे त्रितालना बीजा गौण अगो होय छे ते ० अने आकडाथी बतावेला छे खरु तो जेम गीत सादी रीते थोडा स्वरोमा गाई शकाय छे, अने एक मात्राना सोळमा भाग जेटला टूका कालमा भिन्न

भिन्न स्वरो मूकी गाई शकाय छे, तेम ताल लावे लावे अतरे मात्र चपटी वगाडीने बतावी शकाय छे, तेम ज एक तालनी मात्रानो सोळाश जेटलो टूको भाग पण तबलाना बोलोथी बतावी तालने समृद्ध करी शकाय छे जेम एक आखी स्वरसृष्टि छे, तेम ज एक आखी तालसृष्टि छे पद्यरचनामा जेम स्वरोनु सादामा सादु रूप, अथवा छेक एक स्वर जेवु सादु स्वरूप उगर्यु, तेम तालनु पण सादामा सादु स्वरूप, मात्र सधिमा अमुक थडकारा रूपे ज ऊतरी आव्यु छे

आपणे स्वराकननी पद्धति गोळ गोळ जोई लीधी हवे अही तरत समजाशे के आ गीतमा तालमात्रा पूरवाने प्रयोजेला अक्षरोमा एवी सामान्य व्यवस्था छे के वाणीनो लघु अक्षर तालनी एक कालमात्रा पूरे छे, अने वाणीनो गुरु तालनी बे कालमात्रा पूरे छे रा द गु । श र ण वि । ना ऽ अ ऽ । शा ऽ न ति । एमा सोळ मात्रा बराबर ए ज व्यवस्थाथी पुराई छे आगळ जता शा ऽ स्त्र पु । रा ऽ ण स । दा ऽ स ऽ । भा ऽ रे ऽ । ए पण ए ज प्रमाणे; तेम ज त न म न । इ ऽ द्रि य । त ऽ त्त र । ता ऽ रे ऽ । पण ए ज प्रमाणे पुराई छे आखु गीत जोता जणाशे के कशा पण प्रयत्न विना दरेक चार चार कालमात्रानो खड चारचार अक्षरमात्राओथी पुराय छे (कडीना अत तरफ 'शे नही रे' मा गुरु अक्षरो वधारे मात्रा रोके छे पण ते पण आखा गीतमा ए स्थाने एक ज रीते एक ज प्रमाणथी पूरे छे अने त्या पण अक्षरमात्रा अने कालमात्रा साथे सबध तो नियत ज होय छे) अने आ प्रक्रिया एटली बधी स्वाभाविक लागशे के जाणे गीतमा एथी अन्यथा बनी ज न शके एम प्रथम प्रत्यय तो थशे पण बधा गीतोमा एम नथी थतु अने हवे हु तेनो दाखलो आपु छु मारु मुख्य वक्तव्य ए ज छे के पद्यरचनामा ए सबध नियत होय छे अने ए नियत सबध ए पिंगलनो अधिकार दर्शावे छे ए नियत सबध आखा गीतमा सळग न होय तो ए गीत पिंगलना अधिकारमा न आवे हवे हु उपरनाथी विलक्षण गीत लउ छु जे पिंगलना अधिकार बहारनु छे

ए गीत गुजराती नाटक मडळीना 'अजब कुमारी' नाटकनु मगळगीत गीत छे एना रचयिता प्रसिद्ध कवि मूळशकर हरिनद मूळाणी छे अने तेनी तर्ज प्रसिद्ध सगीतज्ञ पडित वाडीलाल बाधेली छे आ गीत अने तेनु स्वराकन मे श्री जयशकरभाई जेओ आ नाटक मडळीना विख्यात नट हता अने कविना अने पडित वाडीलालना निकटना स्नेही हता तेमनी पासेथी मेळव्यु छे अही हु प्रथम ए गीत चोपडीमा छपातु हतु ते रीते नीचे उतारीश अने पछी तेनु स्वराकन आपीश गीतना गानमा बेवडाती पक्तिओना स्वरादनो लिपिमा बेवडीश नही

'अजब कुमारी' नाटकनुं मंगलगीत

जय नटवर धाओ री व्हारे वेगे चडो
करुणाघन कोमल कमळदललोचन हरि. . . . धाओ री०
तुम विण अवर भ्राता ना
त्राता धाता दाता
विपदमोचन भक्तरोचन
आर्त्त आ सुणि वीनती
करो दृष्टि दुखी प्रती
धाओ धाओ रमापती — दयाळो — करुणा०

राग कल्याण : ताल दीपचंदी

स्थायी

ग रे सा सा	रे रे —	— — रे रे	नि नि —
ज य न ट	व र ऽ	ऽ ऽ धा ओ	री ऽ ऽ
३	×	२	०
।			
म — प —	ग — रे	ग — — प	ग रे —
व्हा ऽ रे ऽ	वे ऽ ऽ	गे ऽ ऽ च	डो ऽ ऽ
३	×	२	०
।			
नि ध प म	ग ग —	ग — ग —	ग ग ग
क रु णा ऽ	घ न ऽ	को × म ल	क म ल
३	×	२ ×	०
ग ग ग —	ग ग ग	म रे रे रे	नि नि —
द ल लो ऽ	च न ह	री ऽ धा ओ	री ऽ ऽ
३	×	२	०
।			
म — प —	ग — रे	ग — — प	ग रे —
व्हा ऽ रे ऽ	वे ऽ ऽ	गे ऽ ऽ च	डो ऽ ऽ
३	×	२	०

अंतरो

नि ध प प	ग ग ग	ग — ग —	ग — —
तु म वि ण	अ व र	भ्रा ऽ ता ऽ	ना ऽ ऽ
३	×	२	०

– – रे –	गम प –	ग – रे –	ग – रे
ऽ ऽ भ्रा ऽ	ताऽ ऽ ऽ	ऽऽ शा ऽ	ता ऽ ऽ
३	×	२	०
सा रे सा –	ग ग ग	प – प प	ग – ग
दा ऽ ता ऽ	वि प द	मो ऽ च न	म ऽ क्त
३	×	२	०
ध – ध ध	नि ध नि	सा – रें रें	सानि सा ध
रो ऽ च न	आ ऽ र्त्त	आ ऽ सु णि	बीऽ ऽ न
३	×	२	०
प – – –	ध नि ध	निसा रें रें	सानि सा ध
तीऽ ऽ ऽ	क रो ऽ	दुऽ ष्टि दु	खोऽ ऽ प्र
३	×	२	०
प – – –	नि ध नि	सा – रें रें	सानि सा ध
तीऽ ऽ ऽ	धा ऽ ओ	धा ऽ ओ र	माऽ ऽ प
३	×	२	०
प – – –	म प –	मप धनि सा नि	ध प –
तीऽ ऽ ऽ	द या ऽ	लुऽ ऽऽ ऽ ऽ	क रू ऽ
३	×	२	०
प – म ग	ग ग –	ग – ग ग	ग ग ग
णा ऽ ऽ ऽ	ध न ऽ	को ऽ म ल	क म ल
३	×	२	०

आ पछी "दललोचन हरि धाओ री म्हारे वेगे चडो" वगेरे ध्रुव पक्तिओ ए ज स्वरोमा अने ए ज तालोमा आवे छे एटले फरी वार लखी नथी

आ गीतनी स्वराकनपद्धति एनी ए ज छे पण एक व बाबत तरफ ध्यान खेचवु जरूरी छे अही अर्धमात्रानो उपयोग थयो छे पहेलो भाग जेने स्थायी कहे छे तेमा अर्धमात्रा आवती नथी पण अतरामा आवे छे 'भ्राता' शब्दनो 'ता' छे तेनी पहेली अर्धमात्रा 'ग'मा अने बीजी अर्धमात्रा म

मां बोलाय छे आवी ज रीते 'वीनतो' ना 'वी'नी बे अर्धमात्राओ जुदा-जुदा स्वरोमा वालाईने पछी तेनी प्लुतिनी मात्रा पाछी जुदा स्वरमा बोलाय छे स्वरो तरफ जरा नजर करता ज आनु स्वरवैविध्य विशेष छे ए जणाशे जो के स्वरोनी केटलीक क्षीणवट तो में स्वरांकन लखवामा छोडी दीधी छे —ए आपणा प्रश्नने प्रस्तुत नथी माटे पण आ गीत खास तो ए बतावबा मूक्यु छे के आमा घणा स्थानो एवा देखाशे ज्या लघु गुरु अक्षरोनो कोई नियमित रीते सगीतनी कालमात्राओमा विनियोग थयो नथी दाखला तरीके 'जय नटवर' ए छ लघु अक्षरोमा पहेला पाच एक सरखी रीते अकेको सगीतनी मात्रा रोके छे, पण छेल्लो 'र' त्या ज चार मात्रा रोके छे 'स्हारे'नो दरेक गुरु बब्बे मात्रा रोके छ, पण 'वेगे'नो दरेक गुरु त्रण त्रण रोके छे 'धाओ'ना बन्ने गुरु स्थायीमा अकेकी ज रोके छ, अतामा पहेलो गुरु बे अने बीजो अेक मात्रा रोके छ 'भ्राता त्राता दाता दाता'मानो दरेक शब्द बब्बे गुरुनो छे पण गीतमा जुदी जुदी सख्यानी मात्राओ रोके छे अने 'दयालु'नो 'लु' एक साथे चार मात्रा रोके छ स्थायीमा 'करुणा' उलगा उच्चाराई चार मात्रा रोके छे पण ए ज शब्द पछीथी आवता 'रु' बे मात्रा अने 'णा' चार मात्रा रोके छे अलबत्त आखा गीतमा 'सदगुरु०' गीतनी पेठे बधाई कालमात्रा अने अक्षरमात्रानो प्रमाणबद्ध मेळ आवतो ज नथी एम नथी गीत दीपचदी तालमा छे जेनी १४ मात्राओ होय छे, अने तेना गौण अगो ४ ३ ४ ३ मात्रानाखडोना छे दीपचदीमाथी निष्पन्न थतो जातिसधि सप्तकल छे, अने ते ज्या वपरायो छे त्या अडचण रहेती नथी.

कमलदल लो।चन हरी धाँओँ
विपदमोचन। भवरोचन। आर्त आ सुणीँ। वीनती

करा वृष्टि दु। ग्धोग्रनो
धाओँ धाओँ र। मापनी

अहीं, पहेला पक्तिना बे सप्तकल सधिओ छे पछीनी एक पक्ति ता आखी विषम हरिगीतनो ज छे, अने ते पछीनी बे अर्ध पक्तिओ ते पण विषमहरिगीतना उत्तरार्धनी छे आम सधिओना आवर्तनो आवे छ पण ते सळग नथी आवतां उपरनां सप्तकला सिवाय अक्षरोमाथी बीजा कई सप्तकला नहीं जडे अने त्यारे प्रश्न थशे के आ प्रमाण गानमा भाषा प्रयोजशो अने तेम छता अक्षर-मात्रानो तालमात्रा साथे सदा स्थिर सबध न राखवानु प्रयोजन शु? जवाब ए छे के आ कृतिओ मात्र गावाने माटे ज रचायला छे ए समाय त्यारे ज अनुभव मधुर अक्षरा प्लुत वर्डने केवो रीते गायनने सुन्दर करे छे ते समजाय त्यारे

ज तेमा अक्षरविन्यासनु सौन्दर्य समजाय आ जातनी रचनाने आपणे 'गीत' अर्थात् केवळ गीत कहीशु आ गीतोनी खासियत ए जणाशे के ते एक बाजु मात्रामेळ रचनानी पेठे पठनक्षम नथी, तेम बीजी बाजु ए सादा गद्य तरीके पण पठनक्षम नथी. 'जयनटवर०' कोई मात्रामेळ रचनानी पेठे पठी शकाशे नहीं, तेम ज गद्यनी पेठे पण पठी शकाशे नहीं. आनो एक बीजो दाखलो 'नूपुरझकार'मायी उतारु — स्वराकन विना.

जार्तनो पुकार

गीत[६]

दुरितकूपे पडचो हु हे जगत्त्राता!
लोभन लता नीरखी मुज पाय चकयो —
दुरित कूपे० १

श्रवण न धरीं तुज वाणी मगल,
कूपमुख अध वनी
चरण मूक्यो. दुरित कूपे० २

करुण रुदन सुणी तात! उगारो,
नीरखवा दिव्य प्रभा
हु अति भूख्यो दुरित कूपे० ३

आ गीत वाचता तरत समजाशे के तेमा कोई नियत मात्रासख्यावाळा सधिओ नथी पण वाची जोता ए बाबत कई शका रहेती होय तो ते, पुस्तकने अते स्वराकन अने तालाकन आपेलु छे तेयी निरस्त थाय छे त्या लखेलु छे के "ताल झपा — अन्य मते, दीपचदी (तालनी मात्रा १४)" गीत नीचे ताल टप्पो कह्यो ते साळ मात्राना त्रितालनो ज एक प्रकार छे, (गायन वादन पाठमाळा पु १ विभाग १ पृ ६९) अने बीजी रीते गाता १४ मात्राना तालयी पण गवाय एम कहचु गायननी दृष्टिए आमा कशो ज विसवाद नथी, कारण के गायक एकनु एक गीत भिन्नभिन्न रागमा तेम ज तालमा गाई शके. पण १६ मात्राना अने १४ मात्राना बन्ने तालोमा गाई शकाय एनो अर्थ ए थयो के अही कोई अमुक मात्राना ज अक्षरसधिओ नथी अक्षरन्यास जोता पण एम ज जणाशे अने गीत वाची जोता जणाशे के ते गद्यमा पण वाची शकाय

६ मधुर रूपे विराजो हे विश्वराजा ए बगाळी गीतनी चाल राग—जगलो, सोरठ, अने कईक अशे गोडसारग — एम मिश्रण जणाय छे ताल, टप्पो. नूपुर झकार (प्रथम आवृत्ति) पृ. ७४

एवुं नथी. आ ज खरी रीते अपद्यागद्य, अपद्य–अगद्य छे. ध्यानपूर्वक जोशो तो आमां पद्य के गद्यनी पंक्तिओ पण जणाशे नहीं. 'सद्गुरु०' काव्यमा पंक्तिओ छे. 'जय नटवर०' मा पंक्तिओ आपी छे पण तेनो कशो अर्थ नथी, कारण के ए पद्यनी पंक्तिओ बनती नथी, तेम ज गद्यनी पण बनती नथी. भातखंडे पोतानी संगीतनी क्रमिक पाठमालामा गीतोने भिन्न पंक्तिबद्ध आपता ज नथी तेनुं कारण कदाच आ ज होय के ए गीतोमां पंक्तिओ होती नथी. एमां मात्र स्थायी अने अंतरो, के एवा जे कोई संगीतना भागो आवे छे ते ज होय छे, पंक्तिओ होती नथी. आम गेयतानी दृष्टिए आपणे काव्योना नीचे प्रमाणे भागो करी शकीए: (१) अगेय पद्यरचना, जेवा के प्रो. ठाकोरना अगेय पृथ्वीबद्ध परिच्छेदो. अहीं स्पष्ट करवु जोईए के अगेय एटले कोई पण माणस गावा धारे तो .पण गाई ज न शके एम नहीं, पण कर्ताए गावाना उद्देशथी नहीं रचेली, अने माटे गाया विना मात्र पठन करवाथी तेनु भावन वधारे सारुं थाय एवी. (२) बीजी पाठ्य-गेय रचनाओ जेवी के 'सद्गुरु०': आ रचनाओ गवाय छे पण साथे साथे पाठ्य पण छे. बे त्रण स्वरोथी सादी रीते तो तेनु पठन-गायन थई शके, गावी ज न होय तो पण सादु पठन थई शके. (३) अपाठ्य अने गेय एटले के केवळ गेय. मात्र गावा माटे ज रचेली, अने गावा सिवाय ते गद्य के पद्य तरीके पठी न शवाय एवी."

---

७. हु मानुं छु के मे उपर जेने अपाठ्य अने केवळ गेय कह्यां अने जेने पाठ्य-गेय कह्यां तेनो भेद अभिनवगुप्त पण करे छे. 'भरतनाट्यशास्त्र'ना पंदरमा अध्यायमां संस्कृत सम अर्धसम विषम वृत्तो आपी दीधा पछी नीचे प्रमाणे आवे छे:

एवमेतानि वृत्तानि समानि विषमाणि च ।
नाटकाद्येषु काव्येषु प्रयोक्तव्यानि सूरिभि:॥ १९२
सन्त्यन्यान्यपि वृत्तानि यान्युक्तानीह पिङ्गदा।
न च तानि प्रयोज्यानि हृतशोभानि तानि हि॥ १९३
यान्यत्र प्रतिषिद्धानि गीतके तानि योजयेत्।
ध्रुवायोगे तु वक्ष्यामि तेषामेव विकल्पनम्॥ १९४

अर्थ एवो छे के 'आ प्रमाणेनां सम विषम वृत्तो नाटक वगेरे काव्यमां योजवां. बीजां वृत्तो पण नग्रह करी अहीं—आ पुस्तकमा कहेला छे ते प्रयोगयोग्य नथी. कारण के ते शोभा विनाना छे. अहीं जे प्रतिषिद्ध कर्यां तेने गीतमां योजवा, तेने विषे ध्रुवायोगमा आगळ कहीश.' आना उपर अभिनवगुप्त कहे छे: "ननु हृतशोभानीति चेत् कथं प्रयोज्यानीत्याह: यान्यत्र प्रतिषिद्धानीति;

आ रीते सधिने, एटले के अमुक सधिना आवर्तनोथी थती पक्तिने हु गेयकृतिओमा जातिछदोनु व्यावर्तक लक्षण गणु छु एटले गेयकृतिओमा सधिओना आवर्तनो देखाय तो ज अने त्या ज पिंगलनो अधिकार, पिंगलनी हकूमत, तेनी बहार नही अने सधिना आवर्तनोनु आटलु महत्त्व छे तो ज्या ज्या जातिछदोना सधिना सळग आवर्तनो न देखाय, त्या त्या तेनो शास्त्रीय खुलासो करवो ए पण पिंगलशास्त्रनु काम छे जेम के उपर में 'सद्गुरु०' गीतने पाठ्य कह्यु, तेमा चतुष्कल सधिओना आवर्तनो बताव्या, पण त्या ज पाछु पक्तिना अत तरफ चतुष्कल सधिना अवर्तनो बध पडी नवा ज लघुगुरुयूथो आवता जणाय छे सदगुरु । दारण दि । नाऽ ऽऽ । शाऽन ति । मिर टळ । शे ऽ ऽ न । ही ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ऽ ऽ । एमा चार चतुष्कलो पछी 'शे'नी बेने बदले त्रण मात्रा थाय छे, ते पछी 'ही'नी चार थाय छे, 'रे'नी चार थाय छे अलबत्त आनो खुलासो आगळ आवशे, पण एटलु तो अही पण बतावी शकाय के भले पाचमा खडथी अक्षरमात्राना चतुष्कलो नथी आवता, पण आखा गीतमा ते स्थाने आ एक ज नियत रीते नियत स्थानना अक्षरोनी नियत प्लुति थाय छे आवी नियमितता आपणे पेला अपाठ्य गीतोमा जोई नथी[८]

गीत पाठ्यमानत्वाभावात् न वृत्तगता श्रव्यतापेक्षते केवल तालयोजनार्थं साम्यमवश्यकर्तव्यमिति मात्राणा वर्णाना नियमस्तत्राश्रीयते।" पूर्वपक्ष करे छे के 'जो वृत्तो शोभा विनाना होय तो पछी ते योजवा ज शा माटे?' तेनो खुलासो करे छे के 'अही जे गीतो प्रतिपिद्ध कर्या तेमा पाठ्यता नथी, तेथी वृत्तगत श्रव्यतानी तेमा अपेक्षा होती नथी तेमा तो तालयोजना माटे ज मात्राओ अने वर्णो योजेला होय छे अही गीतोनो पाठ ज नथी थई शकतो एम कहेलु छे, ते में उपर कहेलु छे ते ज अर्थमा एम हु मानु छु काव्य गद्य होय के पद्य होय, बन्ने रूपमा ते श्रव्य के श्राव्य कहेवाय छे, ते श्राव्यता आ गीतमा नथी एम कहेलु छे ते मात्र गेय छे

उपर 'वृत्तगता श्रव्यतापेक्षते' एम छे त्या—पा खोटो जणाय छे पण अर्थ उपर प्रमाणे छे एम हु मानु छु (भ ना गा वॉ २. अध्याय १५, पृ २८६–७)

८ मराठी ओवीमा सधिओ होता नथी, मात्र प्रास होय छे- मारी दृष्टिए हु एने प्रासबद्ध गद्य कहु ए पद्यरचना नथी एनु पठन स्वरोना लहेंकाथी थाय छे ए खरु पण एम तो हरिकीर्तनकारो गद्यने पण एवा ज स्वरोना लहेंकाथी बोले छे वधारेमा वधारे एटलु कही शकाय के ए कईक गद्य अने पद्य वच्चेनो आकार छे आगळ जता ए ओवी ज सधिबद्ध थई अभग नामनी पद्यरचना बने छे

संगीतना तालनी मात्रा साथे जातिछंदना सधिओनो संबंध छे, अने तेथी तेना अंग परिणामो जातिछंदोना बंधोमां प्रतीत थाय ए स्वाभाविक छे तेवुं एक परिणाम ए छे के संगीतना एक तालनी समस्त मात्रामां जाति-छंदना बे सधिओ समाय छे तेथी बधा ज जातिछंदोना चरणमां बेकी संख्याना सधिओ ज होय छे एक बहु ज सादा दाखला जेवो होय तो चतुष्कल छंदोमां चोपाई चार आवर्तनवाळी छे, तो पछी रोळा छ आवर्तनवाळो, अने सवैयो आठ आवर्तनवाळो छे आ लक्षण जातिछंदोनो भेळ संगीततालनी साथेना संबंधने लईने होवाना मूळ सिद्धान्तो समर्थित करे छे आ लक्षण एटलुं ध्यानार्ह छे के ज्यां प्रथम दृष्टिए चरणमां सधिनां बेकी आवर्तनो न देखाय त्यां ए बाबतनो खुलासो करवानी जवाबदारी पिंगले लेवी जोईए अने ए खुलासो संतोषकारक थतां, फरी मूळ सिद्धान्तने एक विशेष समर्थन मळे ए स्वाभाविक छे

जातिछंदोना तालोना अने सधिओना संगीतना तालो साथेना आ नाता उपरथी केटलाक प्रश्नो उपस्थित थाय छे अने ए प्रश्नोना खुलासाथी ज जातिछंदोना स्वरूप उपर विशेष प्रकाश पडे छे, अने आ प्रकाशथी वळी आपणा मूळ सिद्धान्तने बिम्ब-प्रतिबिम्ब न्याये विशेष समर्थन मळे छे आ संबंधमां पहेलो प्रश्न आ प्रमाणे मुकाय तालनो संबंध अनंत काल साथे होवाथी तेने प्रमलाथी बंध न करीए त्यां सुधी ते अनंत चाल्या करे एवुं तेनुं स्वरूप छे एक गीतमां जे ताल शरू करेलो होय छे तेने गीतमां बंध करीए नहीं त्यां सुधी ते एक सरखो चाल्या करे छे तो ते रीते छंदमां शरू थयेली, ए तालमांथी ज उद्भवेली सधिपरंपरा पण अनंत चाल्या ज करे अने एम ए सतत चाल्या करे तो पछी छंदनी पंक्तिओ केवी रीते एक बीजीथी जुदी पडे? जातिछंदमां तो चार चतुष्कले चोपाईनी पंक्ति थाय छे, छ चतुष्कले रोळानी पंक्ति थाय छे, आठ चतुष्कले सवैयानी पंक्ति थाय छे, अने जो सधिपरंपरा सतत चालु रहेती होय तो एक पंक्ति पूरी थईने बीजी शरू थई एवी प्रतीति केवी रीते थाय? आ प्रश्न साचो छे अने आपणे जोईशुं के ए पंक्तिओनो विच्छेद करवामां ज पिंगल विकास पाम्युं छे

आ विच्छेद माटे पिंगल मुख्यत्वे करीने बे हिकमतोनो उपयोग करे छे एक तो प्रासनो, बीजो पंक्तिना अंत्य सधि के सधिओने अने ते साथे क्वचित् प्रथम सधिने अमुक चोक्कस रूप आपवानो घणे भागे आ बन्ने हिकमतो एक साथे प्रयोजाय छे आमां प्रास तो सुप्रसिद्ध छे, जो के हजी सुधी तेनुं रहस्य पूरेपूरुं पिंगलमां स्वीकारायुं नथी अने बीजी हिकमत तरफ तो ध्यान ज गयुं नथी एम कहुं तो चाले

जातिछंदोमा प्रास पंक्तिने छेडे आवे छे ए प्रसिद्ध छे ए त्या, घणा माने छे एम, अलंकार माटे आवे छे ए खोटु छे, एनु मुख्य प्रयोजन सधिओना सतत आवर्तनोमा पंक्तिनो अंत बतावववानु छे माटे ज तेने हिंदीमा तूकान्त, तूक-टूकनो अंत कहे छे प्रास पंक्तिओने जुदी पाडतो जाय छे अने बब्बे पंक्तिओने अंत आगळ साधी तेना युग्मो पाडतो जाय छे जेम बे छूटा पतराने एक छेडे काणु पाडी तेमा कडी परोवीए तो बे पतरा भेगा थाय छे, (घणा ताम्रपत्रो एवी रीते भेगा करेला होय छे) तेम प्रास एक कडीनी पेठे एक ज जगाएथी बे पंक्तिओने साथे छे आ रीते सधाईने भेगी थयेली पंक्तिना युग्मने आपणे कडी के टूक कहीए छीए आ रीते भेगी थयेली बे पंक्तिओ गानमा थोडा वैविध्यथी आरोह-अवरोहनु एक संपुट रचे छे आथी जातिछदोनु एकम आ प्रसिद्ध बे पंक्तिनी एक टूक के कडी छे आपणा पिंगलो अत्यारे जातिछंदोना चार चरणो गणे छे पण ते संस्कृत पिंगलोनी देखादेखीए आपणा घणाखरा जातिछदो कविताप्रयोगमा जोईशु तो बब्बे पंक्तिना ज जणाशे लांबी पंक्तिपरंपराओमा, चोपाईना घणा लांबा परिच्छेदोमा चारथी निःशेष भागी शकाय तेवा चतुष्पाद छदो नही पण, प्रासबद्ध कडीओ मळशे

एटले प्रास ए जातिछंदोमा संधिनी सतत परंपरामा पंक्तिनो अंत व्यक्त करवानु काम करे छे संस्कृत अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमा पंक्तिनो अंत चरणान्त यति अने चरणान्त गुरुना विलंबनथी दर्शावाय छे, एटले संस्कृत वृत्तोने चरणान्त दर्शाववा प्रास आवश्यक नथी संस्कृत पिंगलोमा प्रास मात्र शोभानो शब्दालंकार छे, अने तेथी एनी चर्चा पिंगलोमा कदी थई नथी पिंगलकारो प्रथम संस्कृत वृत्तोना पिंगलकारो थया अने पछी तेमणे जाति-छदोने पिंगलना अधिकारमा लीधा तेनु परिणाम एक ए आव्यु के अपभ्रंश जातिछंदोमा प्रास सार्वत्रिक बन्यो त्यारे पण पिंगलकारोए जातिछंदना निरू-पणमा तेने आवश्यक स्थान आप्यु नही आ विचारदोष आपणा सुधी पहोच्यो छे सद्गत के ह ध्रुवे पिंगलना प्रश्नोनी ऊडी चर्चा करी छ पण तेमणे प्रासनो प्रश्न समग्रपण विचार्यो नथी जातिछंदोमा मध्ययति ए छदनु अंग नथी एम कही तेओ आगळ कहे छे के आतर प्रास ए पण छन्दनु अंग नथी अने ते संबधमा प्रासनी चर्चा करे छ

"ए शब्द (प्रास) व्युत्पत्तिमा स अनुप्रास साथे अने अर्थमा स यमक साथे सबंध धरावे छे वर्ण के वरडीनी आवृत्ति ते अनुप्रास, अने वर्णना समूहनी आवृत्ति ते यमक बन्ने शब्दालंकारो छे प्राचीन यमकमा आधुनिक प्रासनो अंतर्भाव थाय छे प्रासना बे प्रकार छे एक चरणना अंत्य भागने

ते पछीना चरणना अत्य भाग साथे जोडनारो यमक ते अत्यप्रास अने साधारण बोलीमा प्रास कहे छे चरणना खडोने परस्पर जोडनारो जे यमक ते आतरप्रास पहेला प्रकारनो प्रास गूजराती हिन्दी वगेरे भाषाना पद्यात्मक साहित्यमा पदान्तना पर्याय बन्यो छे चरणोने यमक द्वारा अत्य भागमा साकळी लेवानी रीति ए भाषाओमा रूढ छे. ज्या सुधी आपणा दोहरा चोपाईमाथी अत्यप्रास नीकळी जशे नही त्या सुधी आपणी पद्यरचनाना एक लाक्षणिक अभिमत अग तरीके ए टकी रहेवा निर्मित छे परतु आतर प्रासनी हकीकत जुदी छे प्रयोगमा योजाता बीजा अलकारोनी पेठे ए एक शब्दालकार छे " (प अं आ पृ ३५)

अही आतरप्रासने शब्दालकार कह्यो ते बराबर छे, अने चरणान्त प्रासने तेथी भिन्न कह्यो ते पण बराबर छे, पण ते शा माटे आवे छे, तेनु छन्दमा शु स्थान छे ते ये ह मुवे कद्यु नथी प्रास चरणने अते आवे छे, ते सादा विधान तरीके साचु छे पण छन्दोरचनानी दृष्टिए ए वस्तुस्थितियी ऊलटु कथन छे पहेला चरण सिद्ध थई तेने अते प्रास आवे छे, एम नथी पण प्रास ज चरणनो अत सिद्ध करे छे—व्यक्त करे छे, एम छे[९] अने दोहरा चोपाईमाथी अत्य प्रास नीकळी जशे नही त्या सुधी ए पद्यरचनाना अग तरीके टकी रहेशे एम कहेवु ए तो शब्दान्तरे पुनरुक्थन छे एमनी आ विषयनी बधी चर्चा जोता जणाय छे के तेमना मनमा एवो वहेम छे के चरणान्त प्रास ए छन्दनु अग छे, पण ते केवी रीते, शा कारणोथी, ए सबधी विचार नही करेलो होवाथी ए सबधी निर्णयात्मक विधान तेओ करी शक्या नथी आ ज निबधमा तेओ आगळ कहे छे "आपणी पद्यरचना साथे कई पण सबध धरावतो होय, तो अत्यप्रास धरावे छे मध्यप्रास तो केवळ शोभार्थे छे " (एजन पृ ५९) अही पण एमनु वचन सदिग्ध छे

प्रास ए व्युत्पत्तिनी दृष्टिए सस्कृत अनुप्रासमाथी आव्यो जणाय छे, पण ए, स्वरूपे, अनुप्रास नथी तेम यमक पण नथी प्रासने केटलाक अत्यानुप्रास कहे छे केटलाक अद्य यमक कहे छे पण ए बधा नवा प्रयोजेला शब्दो भ्रामक छे हेमचद्र प्रास माटे सामान्य रीते अनुप्रास शब्द वापरे छे (छदोनु० पृ २६ ब) अने 'प्राकृतपिंगल' अने बीजा केटलाक पिंगलो यमक शब्द वापरे छे पण तेमानो कोई शब्द प्रासनो चोक्कस अर्थ बतावता समय नथी सामान्य रीते बे भिन्नार्थ शब्दोनो अत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर एक ज होय त्यारे

९ मराठी ओवी गद्य जेवी ज छे छता मात्र प्रासथी तेनी पक्तिओ पडे छ, ए पक्तिना अत बतावनारु प्रासनु सामर्थ्य बतावे छे

ए बे शब्दो वच्चे प्रास मळ्यो गणाय 'काम' अने 'धाम' वच्चे प्रास छे बन्ने शब्दो भिन्न छे बन्नेमा अत्य अक्षर 'म' एक ज छे, उपान्त्य स्वर 'आ' एक ज छे अनुप्रास मात्र कोई पण व्यजनना आवर्तनथी थाय छे 'काव्यप्रकाश' तेनु लक्षण 'वर्णसाम्यमनुप्रास,' अर्थात् वर्णसाम्य एटले अनुप्रास एवु सूत्र बही टीका करे छे के 'स्वर वैसादृश्येऽपि व्यजनसदृशत्व, वर्णसाम्यम्।' स्वर भिन्न होवा छता व्यजननु सादृश्य होय — साम्य होय ते अनुप्रास. 'खूब चलित जल हाले' ('गानमसर', पूर्वालाप) ए पक्तिमा 'ल'नी आवृत्तियी अनुप्रासालकार थाय छे तेमा 'लि' 'ल' 'ले' एम जुदा जुदा स्वरो साथे 'ल' आवे छे आपणा पादान्त प्रास माटे आवु वर्णसाम्य कई काम न आवे. अने ए नोधवा जेवु छे के अनुप्रास घणे भागे एक ज पक्तिमा आवे छे, ज्यारे प्रासनु स्थान घणुखरु नियत छे — बे पक्तिने अते ज ए आवे यमकमा बे के वधारे अर्थवाळा अक्षरो भिन्न अर्थमा एने ए क्रममा आवृत्त थाय छे[१०]

वणसे वणमेवना थकी नरधारी नर धारणा नकी

द पि पृ ६६

अही प्रथम पादमा 'वणसे' अक्षरो एने ए क्रममा बे वार आवे छे अने त्या भिन्न जगाए ए अक्षरोनो एक ज अर्थ थतो नथी बीजा पादमा 'नरधा'-नु पण एम ज बने छे 'हळवे हळवे हळवे हरजी' एमा 'हळवे' अक्षरो फरी वार आवे छे, पण अथ एनो ए रहे छे तेथी ते यमक नथी पण यमक अने प्रासमा घणो भेद छे यमकमा बे के वधारे अक्षरो आवृत्त थवा जोईए, प्रासमा बे अक्षरो आवृत्त थवानी जरूर नथी, अत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर ए बे आवृत्त थवानी जरूर छे 'काम' अने 'धाम'मा यमक छे ज नही, पण प्रास छे अने यमक पण घणे भागे अनुप्रासनी पेठे एक ज पक्तिमा आवे छे प्रास बे पक्तिओने छेडे आवे छे

उपरनी जे प्रासनी व्याख्या आपी तेमा थोडी विगत उमेरवी रहे छे पक्तिना अतना बन्ने शब्दोमा छेल्लो अक्षर प्रत्यय होय तो प्रत्यय बाद करीने तेनी आगळ प्रास मेळववो जोईए दृष्टान्तथी आ नियम केटलो स्वाभाविक छे ते तरत समजाशे

मूरख मित्रो मळी, गाळ दइ गमत करशे,
मारि परस्पर लात, वातमा मश्करि धरशे,

दलपतकाव्य भा २ पृ ५७

---

१० अर्थे सत्यर्थभिन्नाना वर्णाना सा पुन श्रुति। यमकम्
काव्यप्रकाश, उल्लास ९, सूत्र ११७

बन्ने अंत्य शब्दोमां 'शे' प्रत्यय छे तेथी प्रास 'कर' अने 'धर' ए शब्दो वच्चे मेळव्यो. एम न थाय तो प्रासनी अपेक्षा अपूर्ण रहेशे. क्वचित् तेने आघात लागशे. 'साथमां' साथे 'हाथमां' प्रास बराबर छे पण 'हाथमां' साथे 'नादमां' के 'मोदमां' ए प्रासबुद्धिने संतोषशे नही, जो के त्यां अंत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर एक ज छे. संस्कृत वृत्तोमां प्रास आवश्यक नथी पण जो प्रास राखवो होय तो सपूर्ण प्रास राखवो जोईए. कान्तना प्रासो घणा रमणीय छे.

रे प्हेलां न हती कदी अनुभवी आवी उदासीनता,
दीठी शु न कठोर! तें करुण जे व्यापी मुखे दीनता!

'उपालम', पूर्वालाप

'ता' प्रत्यय होवाथी प्रास तेनी पहेलाना बे अक्षरोमां मेळव्यो छे. प्रत्ययो लांबा होय त्यां पण आ ज नियम पळावो जोईए.

व्योमथी जळनी धारा जोरमां पडती हती;
ढळी पलगने पाये सुन्दरी रडती हती!

'रमा', पूर्वालाप

अत्यना 'ती हती' ए त्रणेय अक्षरो प्रत्ययना छे, एटले तेनी पूर्वेने स्थाने 'पड' अने 'रड'नो प्रास मेळव्यो आपणे जोयु के प्रास बे भिन्न शब्दो वच्चे मेळववो जोईए. तेथी एकनो एक शब्द बन्ने पक्तिने अते आवे तो प्रास मळ्यो गणाय नही त्यां ते शब्दने प्रत्ययनी पेठे बाद करीने तेनी पहेला प्रास मेळववो जोईए. जेम के:

मुख मीठां, ने मनमां कपट, स्वारथ लगी सगाई छे,
कदी जोखमकारी जीवने, मूरखनी मित्राई छे.

दलपतकाव्य भा. २. पृ. ५७

अही बन्ने पक्तिने छेडे 'छे' एक ज शब्द छे. तो प्रास तेने छोडीने तेनी आगळ मेळव्यो.

उपर कह्यु के बन्ने शब्दोमा एक ज प्रत्यय होय तो तेने बाद करीने प्रास मेळववो पण एक शब्दमा प्रत्यय होय अने बीजामा प्रत्यय न होय तो प्रत्यय बाद करीने प्रास मेळववानी जरूर रहेती नथी जेम के

बोली शक्यो नहि मुखथी वाणी
आसुप्रवाहे आख भराणी.

एजन, पृ. ५९

'भराणी'मा 'णी' प्रत्यय छे, पण 'वाणी'मा 'णी' प्रत्यय नथी तेथी तेने वाद करवानी जरूर रहेती नथी उपरनो प्रास निर्दोष छे तेम ज जो के एकनो एक शब्द बन्ने पक्तिने छेडे आववाथी प्रास बनतो नथी, पण एव ज शब्द बन्ने जगाए जुदा जुदा अर्थमा आवतो होय तो प्रास मळयो गणाय दाखला तरीके 'आवो' विशेषणनो 'आवो' क्रियापद साथेनो प्रास चाली शके. वळी प्रास माटे अत्याक्षर अने उपान्त्य स्वरनी आवृत्ति आवश्यक कही पण तेमा केटलीक छूट लई शकाय छे—कोईक रीते पण उच्चार साम्यनी असर थती होय तो दाखला तरीके

धीरेथी ढाळी रहे त्या वीजणा
कोण बीजु रे—विना ते सदावत्सल लोमडा.
आतिथ्य पृ १२७

'ड'अने 'ण'ना उच्चारसाम्यने लईने आ प्रास सुनिर्वाह्य बने छे तेम ज

आजे विदेशीने हाथे थया छेक ज जर्जर
देशी मुज,—देवता ए जोवा आव्यो छु मदिर
एजन, पृ ११२

अही उपान्त्य स्वर भिन्न छे छता प्रास सुनिर्वाह्य छे आ बधाने हु सुनिर्वाह्य गणु छु पण उपान्त्य स्वरनो मेळ ज न होय, अत्याक्षरमा पण मात्र स्वर ज सरखो होय ए बधाने हु प्रासाभास गणु छु अलबत्त प्रास बीजी अनेक रीते विकास पाम्या छे पण अही ते आपणो विषय नथी. अही तो मात्र पक्तिनो अत बताववा ते आवे छे ए ज मुख्यत्वे प्रस्तुत छे"

११. प्रास सबधी एक नानी हकीकत नोधु छु 'प्रासस्थानना शब्दो घणे भागे तो बब्बे अक्षरोना ज होय छे पण ज्या प्रासस्थानना बन्ने शब्दो वधारे लाबा होय छे त्या प्रासनी अपेक्षा अत्य बे अक्षरथी जरा आगळ वधे छे 'सागर'नी साथे 'नागर'नो प्रास सुन्दर लागशे तेवो बीजो कोई नही, लागे 'पामर' के 'नटवर' एटला सुन्दर नही लागे, तेम छता ए खोटा नथी. आ मात्र एक वलण छे, नियम नथी, अने जुदा जुदा विषयो अने छदो परत्वे तेनु बलाबल जुदुजुदु होय छे दलपतरामनो नीचेनो मनहर जोवा जेवो छे

मनहर छद

मेलो घेलो पेलो जुओ आग खेलमा ऊभेलो
गोदडे गूथेलो एवो आवे हनूमानजी,
काळा हाथ दारूवाळा, दोसे दाढी मोढु काळु,
पाघडोनो पल्लो पूठे पूछडा समानजी,

प्रास सामान्य रीते बे पंक्तिओने अंते आवी बन्ने पंक्तिओने भिन्न करीने पाछी सांधे छे, पण कोई कोई वार एक पंक्तिना बे खंडोने पण ते सांधे छे आनो एक दाखलो प्रथम संस्कृतमांथी आपु—अने ते पण अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तनो :

नवलविबुधशोभः स्वस्तिनिःशेषशोभः
कृतरिपुविजयाशः प्राप्तयुद्धावकाशः ।
अजनि हरसुतेनानन्तवीर्येण तेना—
खिलविबुधचमूनाम् प्राप्य लक्ष्मीमनूनाम ॥

कुमारसंभव १३, ५१

आ श्लोक 'कुमारसंभव'ना १३मा सर्गनो छे कुमारसंभवना आठ सर्गो ज कालिदासना लखेला छे, ते पछीना प्रक्षिप्त छे, एम विद्वानोनु मानवु छे अने आ श्लोकमा यमक नही प्रास आवे छे, ए ए भाग प्रक्षिप्त होवानो एक खास पुरावो गणाय कालिदासे यमकनो उपयोग कर्यो छे, पण प्रासनो कदी नही, पण आपणे तो आने एक चरणना बे यतिखंडोना प्रासना दृष्टान्त तरीके जाईए छीए आने उतारवानु खास कारण तो ए छे के आवा ज प्रासवाळा श्लोको गुजरातीमा थया छे कवि रत्नेश्वरना आ श्लोको प्रसिद्ध छे, पण हु ते पहेलाना जैन कवि शान्तिसूरिनो एक श्लोक उतारु छु :

निरुपम कुळवाली, रूपनी चित्रसाली,
अविकुल गुणवल्ली, कामभूपालभल्ली;
,, कइ हुइ सुर राणी, मानवी मइ न जाणी,
अहव हुइ जि नारी, तोइ तु हुइ गधारी

वृत्तरचना पृ १२

त्रीजा चरणमा 'मइ' अने चोथा चरणमा 'हुइ' एक गुरु तरीके अने 'गधारी'नो प्रथमाक्षर लघु तरीके उच्चारवाना छे ते देखीतु छे आ मात्र एक चमत्कार एक शब्दालंकार ज छे अने तेनु मात्र ऐतिहासिक महत्त्व छे.

लोक नासानास करे, त्रास पामी तेनी ठामे
एने नावे काच जेने रामजी जमानजी,
ठेकी ठाम ठाम आग, लगाडीने आघो खसे,
हश हनूमानजी के मुल्ला सुलेमानजी.

अही प्रासमा 'जी' तो प्रत्यय तरीके बाद करवो जोईए पण तेनी आगळ उपान्त्य स्वरथी जगाए आखो अक्षर आवृत्त करेलो छे 'समानजी' 'जमानजी'मा जो काढता पण त्रण अक्षरो सुधी प्रास जाय छे

हवे आपणे पंक्तिनो अंत व्यक्त करनार बीजी हिकमत, अंतना संधिओने अमुक खास रूप आपवु, ए जोईए. आना सौथी सरल दाखला चोपाई अने तेना पेटाप्रकारोमांथी मळे छे. आपणे जोई गया के चरणाकुल, अलल अथवा अरिल्ल, जेकरी अने चोपाई (विशिष्ट) ए सर्व चोपाईना प्रकारो गणाय छे. चरणाकुलनी उत्थापनिका दादा दादा दादा गागा, एमां छेल्ला संधिने दागा गागा अथवा दागानु विशिष्ट रूप आपेलु छे. अरिल्ल दादा दादा दादा दालल एमां अंत्य संधिने दाललनु विशिष्ट रूप आपेल छे. चोपाई सिवायनो पद्धति पण अहीं प्रस्तुत छे. तेनी उत्थापनिका दादा दद्दा दादा ल्दाल एमां पण अंत्य संधिने विशिष्ट रूप आपेल छे. आ बधा दाखलामां संधिना अनेक पर्यायोमांथी एक पर्यायने ज अंत्य संधि तरीके पसंद करेलो छे पण जेकरी चोपाईमां ते उपरांत जरा विशेष बने छे. जेकरी. दादा दादा दादा ल्गा एमां लगा, अने चोपाई दादा दादा दादा गाल एमां अंत्य संधिनु रूप गाल ए बन्नेमां अंत्य संधिने निश्चित ल्गात्मक रूप तो मळे छे पण ते उपरांत ते बन्नेमां अक्षरमात्रा गणता जणाशे के ए संधिमां एक अक्षरमात्रा ओछी थाय छे. अहीं पण संधिपरंपरा तो चालु रहेवी जोईए अने रहे ज छे,—दरेक संधि चार मात्रानो हावो ज जोईए नहितर मेळ तूटे, एटले खरु तो एम बने छे के अक्षरसंधिनी एक मात्रा तूटे छे, पण चतुष्कल तालसंधि एमनो एम ज रहे छे, अर्थात् ए अंत्य संधि लगा अने गाल पूरेपूरी चार तालमात्रा पूरे छे, अने ए रीते संधिपरंपरा अने तज्जन्य मेळ सुरक्षित रहे छे. उपरना बन्ने दृष्टान्तोमां एटले के जेकरीमां अने चोपाईमां, ध्यानपूर्वक पठन करतां जणाशे के गामां एक मात्रा वधे छे, अर्थात् ए संधिनो गुरु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छ.

आ प्रक्रिया बधा प्रकारना संधिओना जातिछंदोमां थाय छे. ए प्रक्रिया व्यवस्थित रीते तो आपण आ पछीना भिन्नभिन्न संधिना जातिछंदोना प्रकरणोमां जोईशु पण उपरनी प्रक्रियाना विशेष दृष्टान्तो तरीके एक बे बीजा संधिओना छंदो जाईए.

हीर गाल दाल दाल दाल दाल दाल गाल गा

अहीं अंत्य संधि उपरांत प्रथम संधिने गालनु विशिष्ट रूप आपेलु छे अने अंत्य संधि गा मूक्यो छे त्यां एक अक्षरमात्रा खंडित थाय छे अने गा

एटले अंत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छे अही विशिष्ट लयात्मक रूप, अंत्य एक नही पण बे संधिओने मळेलु छे, ते पण ध्यानमा आव्यु हशे आ प्रक्रियाने आपणे प्लुति–सहकृत–अक्षरमात्रा–खडन एम अथवा यात्संधिना रक्षणपूर्वक अक्षराधिनु खडन एम कही शकीए आनो एक ज बीजो दाखलो लईए आपणे गया प्रकरणमा मदनावतार जोई गया तेमा दरेक पक्तिमा पचकल संधिना चार आवर्तनो आवे छे आमा अने झूलणामा शो फेर छे ते बन्नेनी उत्थापनिका पासे पासे मूकीने जोईए

मदनावतार दाल्दा दाल्दा दालदा दालदा
दाल्दा दालदा दाल्दा दाल्दा

आ मदनावतारनी बे पक्तिओ थई हवे झूलणानी एक पक्ति लईए

झूलणा दालदा दाल्दा दालदा दाल्दा
दाल्दा दाल्दा दाल्दा गा

हु ध्यान दोरवा मागु छु ते ए उपर बे मदनावतारमा दालदाना आवर्तनो एम ने एम क्यांई पण विशिष्ट थया विना चाल्या करे छे झूलणानी पक्तिमा अते दालदा संधि खडित थई त्या तेनु गा एवु मात्र एकाक्षर रूप रहे छे अक्षरमात्रा मात्र बे ज रहे छे, पण ए गुरु त्या आखो पचकल कालसंधि पूरे छे, पाचमात्रानो प्लुत बने छे अने एवा प्लुत स्वरूपे पक्तिनो अत दर्शावे छे चोपाई अने जेकरीमा एक ज अक्षरमात्रा खडित थती हती, अही त्रण मात्राओ खडित थाय छे चोपाई जेकरीमा गु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छे अही झूलणामा अंत्य गुरु पाचमात्रानो प्लुत थाय छे आ अंत्य संधिओने खडित करवानो व्यापार अटपटो छे, अने तेना वधारे अटपटा स्वरूपो आपणे जातिछदोना मेळना निरूपणमा वधारे विस्तारथी तपासीशु

आ अक्षरमात्राखडननु एक बीजु परिणाम पण ध्यान आपवा जेवु छे एथी ए पक्तिने अते शब्दोच्चारणने हानि थया विना सगीतना लल्कारने अवकाश मळे छे आपणा माणभट्टोने पक्तिना अतनो प्रलबित लल्कार करता घणाए साभळ्या हशे

आपणे जोयु के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमा वृत्तना चरणने अते यति आवती अने त्या गुरु आवतो अने तेनु विलबन थतु श्लोकार्धे यतिस्थाने विलबन उपरात विराम पण आवी शकतो वळी चरणनी अदर मध्ययति आवती अने त्या टूकु विलबन थतु जातिछदोनो मेळ भिन्न प्रकारनो होवाथी एमा यतिनु स्वरूप एनु ए रही शकतु नथी प्राचीन पिंगळकारोए संस्कृत

वृत्तो अने जातिछदोना निरूपणमा बन्नेना स्वरूपनी भिन्नतानो, तेमना मेळनी भिन्नतानो विचार कर्यो नथी एटले बन्नेमा जाणे एक ज स्वरूपनी यति होय एवी सामान्य मान्यता प्रवर्ते छे, पण जातिछदोनो मेळ जोता ए मान्यतानी अनुपपत्ति तरत जणाशे. पहेलु तो ए के ज्या एक ज सरखी कालमात्रावाळा सधिना आवर्तनो थता होय त्या कोई सधिनी मध्यमा विलबन करी ज न शकाय. एम करीए तो तेनु कालमान वधी जाय, अने मेळ तूटे जाति-छदोमा घणी वार एम सधिनी अदर यति आवे छे. रोळा अने आर्या आना प्रसिद्ध दाखला छे. रोळानी पक्ति दलपतराम प्रमाणे नीचे प्रमाणे थाय छे:

रोळा: दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा

अही त्रीजा सधिमा त्रण मात्रा पछी यति आवे छे जे में एकवडा अवतरण चिह्नथी बतावेली छे. आखो प्रवाह चतुष्कलोनो छे, चच्चार मात्राए ताल आवे छे, तेमा त्रीजा चतुष्कलमा यति आवतां होवाने कारणे जो विलबन के विराम करीए तो तालप्रवाह तूटे, मेळ तूटे. ते ज प्रमाणे आर्यामा पण अमुक प्रसगे सधिनी अदर यति आवे छे. आर्यानां प्रथमदलनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे:

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदाल दादा गा।

अही नियम एवो छे के छठ्ठा चतुष्कलमा जो चारेय लघु आवे तो पहेला लघु पछी यति आवे पण जो त्या जगण एटले लगाल आवे तो यतिनो कशो नियम नथी. अर्थात् छठ्ठु चतुष्कल ल'ललल अथवा लगाल बने हवे एन कोई भाग्ये ज कही शकशे के त्या ज्यारे चतुर्लघु रूप होय त्यारे यतिने लीधे विलबन थाय अने लगाल रूप होय त्यारे विलबन न थाय एक ज छदमा आम मानवु ज अशक्य छे खरु तो छदनो मेळ चतुष्कलोना आवर्तनोनो छे, एने आपणे बरावर समजीए तो पछी यतिने कारणे विलबननो अवकाश रहेतो नथी. एटले आ बधा प्रसगे यतिनो अर्थ त्या शब्दनो अत आवे एटलो ज करवो जोईए छन्दशास्त्रमा आ स्थाने बीजा लघुथी पद शरू थाय छे, एटलु ज कह्यु छे (छ शा. ४, १८), यति कही नथी, यतिनी चर्चा तो ते पछी छठ्ठा अध्यायना आदिमा आवे छे हेमचन्द्र पण सूत्रमा यति शब्द वापरतो नथी टीकामा वापरे छे त्या ए शब्द उपचारथी वापरे छे[१२]

अही आपणे पक्तिनी अदर मध्ययति एक सधिनी अदर आवती जोई, पण केटलाक दाखलामा तो एवु बने छे के चरणने अते सधि पूरो थयो होतो

१२. जुओ गत पृ. ३२० पादटीप

नथी, अने यतिनो बाकीनो भाग पछीना आवता चरणना प्रारंभमां होय छे अर्थात् चरणान्त यति पण यतिनी अंदर पहेली होय छे त्यां पंक्तिना अंतनी यति विरामात्मक के विलंबात्मक होई शके ज नहीं. आ बाबत जाति छंदोनी विस्तृत चर्चामां आगळ आवशे पण अहीं टूंकमां एटलुं कहीं दउं के गया प्रकरणमां बतावेली ओवी पद्धतिओ ए छन्दोमां प्रथम निस्ताल दा आवे छे, अने पछी दादा चतुष्कलोनां आवर्तनो चालतां छेवटे गा आवे छे, ए गा अपूर्ण चतुष्कल छे, अने ते पछीनी पंक्तिना पहेला निस्ताल दा साथे जोडाई आखुं चतुष्कल बने छे अर्थात् चरणान्ते पण त्यां विलंबात्मक के विरामात्मक यति नथी. निष्पन्न ए थयुं के जातिछन्दोमां मध्ययति तेम ज चरणान्त यति बन्ने आवश्यक रीते विलंबात्मक के विरामात्मक नथी. जातिछंदोमां यति एटले के शब्दान्त ए मात्र एक छंदोभंगी छे. संस्कृत वृत्तो अने जातिछंदो बन्नेनी सरखामणी करतां आपणे एम कही शकीए के प्रास ए संस्कृत वृत्तोनुं अंग नथी, त्यारे तुकान्त प्रास ए जातिछंदोनुं अंग छे, यति ए संस्कृत वृत्तोनुं अंग छे त्यारे जातिछंदोनी ए एक भंगी मात्र छे एनो चमत्कार छे तेनी ना नथी, पण ते छन्दनुं आवश्यक अंग नथी, एक छंदोभंगी छे, अने ए महत्त्वनो फरक छे.

जातिछंदोमां जो यति ज न होय तो पछी पठनमां क्यांई विराम ज न आवे? क्यांई पण पठन खळ्या वगर शी रीते चाली शके? प्रासथी अने बीजी रचनायुक्तिओथी चरणनो अंत व्यक्त थाय पण त्यां विराम के विलंबनुं स्थान न होय तो पठनार श्वास शी रीते लई शके? आवर्तनो सतत चाल्यां करतां होय तो श्वास लेवानो पण विराम शी रीते मळे? आनो एक जवाब ए छे के झूलणा जेवा छंदमां आपणे जोयुं के पंक्तिने अंते त्रण मात्रा जेटलो अनक्षर गाळो छे त्यां गुरुना विलंबनने बदले विराम लेवो होय तो लई शकाय. पण आ जवाब बधा प्रसंगोने व्यापी शकतो नथी. घणा जाति-छंदोमां अंत्य संधिमां एवो के एटलो अनक्षर अवकाश होतो नथी. त्यां शुं समजवुं? खरुं तो आ मात्र श्वास लेवानो प्रश्न नथी. पंक्तिनो तात्पर्यार्थ श्रोताने मनमां ऊतरे एटला माटे पण विरामनी जरूर होय छे. आनो एक जवाब ए छे के संगीतना स्वरो साथेना के स्वरो विनाना विलंबित पठनमां तो पठन एटलुं धीमुं होय छे के गमे त्यां श्वास लई लेवाय छे पण तेवा नहीं पण श्रोताओ आगळ करवाना पठनमां, छंदने अंते जो संधि पूरो थतो होय तो त्यां बे संधि जेटलो समय विराम करी शकाय छे. बे संधियो आखो ताल बनी रहे छे, अने एक ताल आखो वच्चमां जतां ताल परंपरा चालु रहे छे. में

पहेला प्रकरणमां कह्युं तेम तालपरंपरामां के सधिपरंपरामां नि.शब्द चालेलो काळ पण तालपरंपरानुं—छदनु अंग बनी रहे छे, अने ताल तूटतो नथी. पण ते सिवाय पण पठनकार गमे त्या अनुक प्रयोजन माटे छंदने पडतो मूकी शके छे, अने पछी पाछु पठन ज्यायी पडतु मूक्यु हतुं त्याथी साधीने आगळ चोली शके छे. तेथी पण आगळ जईने पठनकार प्रयोजनने खातर छंदने गमे त्यारे पडतो मूकी शके छे, अने गमे त्यारे गमे त्यायी पाछो शरू पण करी शके छे. ए वखते छदनु अनुसधान कल्पी लेवानु रहे.

परिशिष्ट १

के० ह० ध्रुवनो अनावृत्तसंधि मात्रामेळ संबंधी मत

में सवळा जातिछदोना मेळ, सधिओना आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे एम कह्यु. के. ह. ध्रुव तेमा बे छदोनो अपवाद माने छे. काव्य अने प्लवंगम ए बे छदोने तेओ अयतिक गणे छे, अने बन्नेमा ११मी मात्राए यति होय त्यारे तेने भिन्न दर्शाववा बन्नेने उपकाव्य अने उपप्लवगम एवा नामो आपे छे. अने आ यतिने लीधे आ बन्ने छदो अनावृत्तसधि बने छे एम माने छे. आपणे एमनु आखु कथन जोईए·

"आवृत्त सधिना समचतुष्पद मात्राबंध साथे सरखावता अनावृत्त सधिना छंदनी सख्या छेक कमी छे मात्र बे ज मात्राबंध अनावृत्त सधिना मळी आवे छे एकने आपणे पिंगळमा प्लवगम अने बीजाने काव्य कहिये छिये ए नाम अपभ्रंश भाषामायी गूजरातीमा ऊतरी आव्या छे अपभ्रंश साहित्यना प्लवगम अने काव्य आवृत्तसधिना समचतुष्पद मात्राबध छे. पहेला छदना चरणमा चावा सधिना चार आवर्तन पछी बाहवा आवे छे. बीजानु चरण उक्त सधिना छ आवर्तनथी नीपजे छे. तेमा छेल्ला आवर्तनमा चावा सधिनो गागा भेद वपराय छे चरण आवृत्तसधिना होवाथी ए बे छदमा मध्य यति छे नहि. गूजरातीमा प्लवगम अने काव्यना जूना नामथी जे बे मात्राबंध ओळखाय छे, तेमा अनावृत्तसधि आवे छे, अने चरणना बे खड पडे छे, अर्थात् एमा मध्य यतिनी जरूर छे. आ अगगत तफावतने लीधे एमने नवा नामथी ओळखाववानी अगत्य जोई एकने हू उपप्लवगम अने बीजाने उपकाव्य कहू छू. तेमनी ऊठवणी नीचे प्रमाणे छे:

उपप्लवगम . ।ावा ।ावा ।ाह । हृ।ावा ।ाहगा ।

उपकाव्य : " " " " ।ावा ।ागा ।

पहेला छंदमा पाच अने बीजामा छ मात्रासंधि छे ते पंक्ती चोथो जे हृवावा संधि, तेना बीजी मात्रा उपर भार पडे छे अने बीजा बंधामा पहेली मात्रा भारयुक्त छे एमा पूर्वापर ।ाह अने हृ।ावान् स्वतंत्र व्यक्तित्व टकावी राखवाने माटे मध्य यति ऐकान्तिक उपपत्ति धरावे छे, अर्थात् ते आवश्यक छे मध्य यति दूर थता संधिनू अनावृत्तत्व नाश पामी गूजराती भाषाना उपप्लवगम तथा उपकाव्य अपभ्रंशना अनुक्रमे प्लवगम अने काव्य बनी जाय छे" (प ऐ आ पृ ३६–३७)

आ आखु निरूपण जातिछंदोनी यति पण अनावृत्तसंधि वृत्तोनी यति जेवी ज छे एवा मतव्यथी प्रेरायेलु छे में आगळ कह्यु तेम जातिछंदोनो मेळ संधिओना सतत आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे, अने तेमा अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमा आवती विलंबनात्मक के विरामात्मक यतिने अवकाश ज नथी, कारण के चतुष्कलनी वचमा विराम के विलंबन करवा जईए तो चतुष्कल पछी चतुष्कल न रहे, ने मेळ तूटे एक वार एटलु स्वीकारीए एटले पछी चतुष्कलोनो प्रवाह ज रहे छे के ह भुवे यतिने अनावृत्त-संधि अक्षरमेळ वृत्तो जेवी गणी, तेथी पंक्तिना खंडो स्वीकार्या अने तेथी यति पछीना खंडनो एक स्वतंत्र खंड तरीके विचार कर्यो, अने यतिखंडोना संधिओ भिन्न होवा जोईए ए पोताना मतने अवलंबी भिन्न संधिओ शोधवा प्रेराया खरी रीते रोळा अने उपकाव्य तथा प्लवगम अने उपप्लवगम बन्नेना तालो दलपतरामे बताव्या छे तेवा चतुष्कल संधिना ज छे, अने यतिथी तेमा कशो फेरफार थतो नथी दलपतरामना तालो फरी जोईए

काव्य ।दादा ।दादा ।दाल'ल ।दादा ।दादा ।दादा

प्लवगम . ।दादा ।दादा ।दाल'ल ।दादा ।दालगा

आवी, संधिनी अंदर यति, आर्याना छठ्ठा चतुष्कलमा आवे छे त्या तेओ चतुष्कल आवर्तनो स्वीकारे छे तो अहीं न स्वीकारवानु कशु कारण नथी.

१०

चतुष्कलसंधि छंदो — मेळनी दृष्टिए

आपणे गया प्रकरणमां जातिछंदोना मेळनो सिद्धान्त जोयो. ए मेळ अने तेमाथी निष्पन्न थता नियमो बधी जातिरचनाओमां केवी रीते प्रवृत्त थाय छे ते जोवु जोईए. आ प्रकरणमां आपणे चतुष्कल संधि रचनाओ ए दृष्टिए जोईए.

चतुष्कल रचनाओना प्रारंभथी ज एक प्रश्न उपस्थित थयो छे, ते ए के कोई कोई रचनाओमा — खास करीने आर्या अने पद्धतिमां, विषम संधिस्थाने जगण शा माटे निषिद्ध कर्यो छे? एक बीजो प्रश्न पण उपस्थित थयो छे के ज्यांक चतुष्कल संधिओ छूटा पडता नथी त्यां पण 'ताल लगारक' तूटर्यो गणी तेने निर्वाह्य गणे छे तेनु कारण शु छे? हाल तुरत तो आपणे पहेलो ज प्रश्न विचारीए.

आपणे जोयुं के बधा संधिओ, अमुक अमुक तालना अर्थमां, तालमानानी जगाए-अक्षरमात्राना विनियोगथी थया छे. चतुष्कल संधि लावणीना तालमांथी थयो छे. लावणीनो ताल सद्‌गत वर्वे नीचे प्रमाणे आपे छे:

लावणी: १ २ । ३ ४ ५ ६ । ७ ८
÷   ०

गायन वादन पाठमाळा पुस्तक १, पृ. ६९

मात्राना अंक नीचेनी संज्ञाओ तालनी छे. आमा ÷ चिन्हवाळु तालस्थान छे ते सम एटले के सौमां मुख्य छे. ते पछी ३जी मात्रा नीचे निशानी छे ते गौण तालस्थान दर्शावे छे. पद्यरचनामा आपणे तालस्थान थडकार थी दर्शावीए छीए अने तेने ताल कहीए छीए तो ए रीते अहीं पहेली मात्रा उपर आवता समने प्रधान ताल कहीए अने त्रीजी मात्रा उपरनाने गौण ताल कहीए. मुख्य ताल माटे अक्षर उपर ऊभी लीटी अने गौण ताल माटे अक्षर उपर गोळ मीडु करता आपणो संधि दादा थाय.

सामान्य रीते पिंगलमा मुख्य ताल ज स्वीकाराय छे अने तेमां कशुं खोटुं नथी. पण अहीं आपणे जरा वधारे झीणवटथी जोवानी जरूर छे. चतुष्कलना गागा गालल ललगा लललल ए चारेय प्रस्तारोमा मुख्य ताल माटे

पहेली मात्रा उपलभ्य छे, ते साथे साथे गौण ताल माटे त्रीजी मात्रा पण उपलभ्य छे मात्र ल्गाल ए एक ज विकल्प एवो छे ज्यां गौण ताल माटे त्रीजी मात्रा उपलभ्य नथी, कारण के ते मध्य गुरुनी पहेली मात्रा नीचे दटायेली छे चतुष्कल रचनाना प्रारंभमां पद्धतिमां अने आर्यामां बन्नेमां, विषम स्थाने जगण निषिद्ध करेलो छे तेनु कारण ए छे के पंक्तिना प्रारंभमां चतुष्कल मधिनी बन्ने तालनी मात्राओ तालने माटे खुल्ली होय तो ज साद रचनानो प्रारंभ स्खलन विना, अडचण विना थई शके

गौण ताल जगणमां दबायेलो होवाथी तेनो उच्चार विकट, जरा विक्षेपकारक जणाय छे अने जो के पिंगलमां गौण ताल आपणे स्वीकारता नथी तो पण जगणमां गौण ताल दबायेलो होवाथी एक साथे अडोअड जगणो आवता आखी रचनानो मेळ करवो बने छे एटला माटे कोई चतुष्कल रचनामां स्पष्ट निषेध विना पण, जगणो,एक साथे बे जेटला पण अडोअड आवता नथी चोपाईमां कोई जगाए जगणनो निषेध कर्यो होतो नथी, पण तेमां पण क्याई एक साथे बे जगण आवेला जणाशे नही कवि स्वाभाविक रीते ज तेने टाळीने चाले छे कवितानी एक जगणपूर्ण बनावटी पंक्ति करी जोईशु तो तेनु उच्चारण ज जगणसातत्यनी अनिष्टता बतावी आपश "ल्गार विवेक बताव भाई" ए उच्चारणमां खडबचडु जणाश आर्यानी पंक्ति वधारे लांबी छे तेमां जगणसातत्य वधारे विक्षेपकारक जणाशे "विचार विवेक विनोद त्रणेय वदीय मळे न सहे वस्या" वाचता आ कोई पद्यरचना छे एम पण नही लागे गाडानी मुसाफरीमां अनेक धाचोमाथी पसार थता, अथवा सवारीमां ऊट के घोडु खदता जे अनुभव थाय छे तेना जेवो अनुभव अही थशे कारण ए छे के गौण ताल वर्याव अनवकाश रहे तेनो वांधो नथी पण क्याई पण ल्गोल्ग बे संधिओमां एवु बनता मेळ असह्य बने छ एटले जगण विशे ए पहेले स्थाने इष्ट नथी एम कह्या पछी बीजु ए कहेवानु आवे छे के क्याय पण बे जगणो लगोलग आवे ते इष्ट नथी आ बे अनिष्टोनो समवय ज अशक्य करवो होय तो पद्धति अने आर्यामां छे तेवो ज नियम करवो पडे एटले के जगणने एवी स्थानोमां निषिद्ध करवो पडे

तेम छता पिंगल्कारोए क्यी चतुष्कल रचनाओमां एम कर्यु नथी पण जे अमुक अमुक रचनाओने तेमणे बहु ज सफाईदार गणी तेमां ज तेमणे जगणनो निषेध कर्यो संस्कृत पिंगळोए आ रीते आर्याना बधारण उपर खूब ध्यान आप्यु अने तेमां एवी स्थाने जगण न पेसी जाय तेनी चीवट राखी ए ज प्रमाणे अपभ्रंश पिंगल्कारोए तेमना अतिप्रिय छंद दोहरा विशे

पण एवी समाळ राखी. पण ते सिवायना छदोमा एनो निषेध न कर्यो. छता चोपाईओनो प्रवाह जोशो तो चरणना आदिमा जगण भाग्ये ज जणाशे. दलपतरामने छदो उपर सारु प्रभुत्व हतु एटले दलपतकाव्य भा २जा माथी अकस्मात् हाथ आव्यो ते चोपाईनो एक परिच्छेद दृष्टान्त तरीके लउ छु. तेना पृष्ट ५९, ६० उपर प्रासबद्ध २६ चोपाईओनो एक परिच्छेद छे तेमा कुल चार जगाए जगण वपरायो छे. हु ते तं पक्ति उतारु छु अने जगण नीचे लीटी करु छु.

सारथि शक्यो न धीरज आणी
करवा लाग्यो विचार त्यारे
ते नहि बोली शक्यो तथापि
रुवे घणा बाळक नरनारी

आ चारमायी मात्र एक ज स्याने चरणना प्रारभमा जगण छे — उपर उतारेली पक्तिओमायी छेल्लीमा.

तो हवे ए प्रश्न रहेशे के जगण आवो विक्षेपकारक होय तो तेने अमुक स्थान पाछु नियत शा माटे करी आपे छे? पद्धतिमा तो, ए अते आवे छे त्या ए पक्तिनो अत व्यक्त करतु लक्षणात्मक रूप छे एटलो खुलासो बस थशे. आर्यांना स्याननी चर्चा आर्यानिरूपणमा आगळ करीशु

आगळ चालता पहेला एक वस्तुनो खुलासो करवो रहे छे आवृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तोमा मोतीदामनु लक्षण चार जगण गणाय छे दलपतराम पण तेने चार जगणयी बनेलो छद जणावे छे अर्थात् अहीं जगणो लगोलग आवेला जणाय छे पण दलपतरामनी तालयोजना जोता जणाशे के ए खरी रीते चार जगणनो बनेलो नयी

मोतीदाम छद — अक्षर १२

जजोजि जहा जगदीश जपाय,
रसो गणि मौक्तिकदाम रचाय; १२८

द पिं पृ. ४४

ताल पहेली मात्रा उपर नयी पडतो, पहेली मात्रा बाद करीने शरू थाय छे. अने पठन करता जणाशे के पहेली मात्रा बाद करीने गालल सधिना आवर्तनो शरू थाय छे प्रयम पक्तिने अते 'पाय' छे ए, पछीनी पक्तिना 'र' ने

मेळवीने एक चतुष्कल रचे छे. एटले के आ छंद गालल संधिनां आवर्तनोनो छे, लगालनां आवर्तनोनो नहीं.

आर्यामां अने पद्धतिमां जगणने विकल्पे सर्वलघु चतुष्कल आवी शके छे, अहीं ए प्रस्तुत नथी एटले चर्चतो नथी. यथास्थाने तेनी चर्चा आगळ करीश.

आ लगालना निषेधनो खुलासो जेम गौण तात्पर्य थाय छे तेम ज बे संधिओ छूटा न पडतां पण अमुक अमुक अक्षरयूथोमां रचना निर्वाह्य गणाय छे तेनो खुलासो पण आ गौण तात्पर्य मळे छे. बे संधिओ छूटा क्यारे न पडे? आगला संधिनो अंत्य लघु पछीना संधिना आद्य लघु साथे मळीने एक गुरु बनी जाय त्यारे. एटले आ प्रसंग प्रथम संधि गालल, ललल के लगाल होय अने ते पछीनो ललगा, लललल, के लगाल होय त्यारे ज बने. आ जातनां संधिओनां संश्लिष्ट थयेलां रूपो नीचे प्रमाणे थाय (१) गालगालगा (२) गालगालल्ल (३) गालगागाल (४) ललगालगा (५) ललल-गालल, (५) ललगागाल (७) लगागालगा (८) लगागाललल, (९) लगागागाल. आ बधा रूपोमां पहेली मात्रा खुल्ली छे, पांचमी खुल्ली नथी, गुरुनी पहेली मात्रा नीचे दटायेली छे. पण आमानां १, २, ४, ५,, ७, अने ८ रूपो चतुष्कल रचनाओमां आपणे वपरायेलां जोईशुं. दर्वेए तो आ रचनाओनो खास स्वीकार कर्यो छे. ते कहे छे:

चच कदि बे साथे मळे, तो तेना आदेश,
लगागालगा ने वळी गालगालगा वेश. ७
गायन वादन पाठमाळा पुस्तक १, विभाग ३, पृ. ५३

आ दोहरामां ज चच एटले बे चतुष्कलोनी जगाए (७) अने (१) तो आवी गयां. दर्वेए आ बे ज जणाव्यां छे अने अलबत्त आ बे रूपो ज वधारे वपराय छे पण उपर बताव्यां ते बीजां पण वपराय छे. दाखला तरीके पहेला ज प्रकरणमां आपणे उतारेल तुलसीदासनी चोपाईनी चोथी पंक्तिमां 'प्रभु बिलोकि जनु' एवुं अक्षरजूथ जोयुं हतुं ते ललगाललल हतुं. 'दलपतकाव्य'मां एक आवी चोपाई आवे छे.

सकळ हिंदुनां राज्यस्थान
नहि कोइ द्वारामतो समान;

दलपतकाव्य. भा. २, पृ. ५६

अही प्रथम पंक्तिमा 'सकळ हिंदुना' छे ते लललगालगा छे. अर्थात् सारी रीते निर्वाह्य रूपोने टूकमा मूकवा होय तो दालगालदा अने लदागालदा कहेवा जोईए. निषिद्ध रूपो माटे हु एम कहु के जेने अंते गागाल आवे छे ते ज निषिद्ध छे. अर्थात् आगली त्रण मात्राओ गमे ते रूपमा आवी शके छे मात्र पाछली पाच मात्राओ गागाल रूपमा आवे छे त्यारे ज ए रूपो निषिद्ध बने छे.

हवे आनु कारण शोधवु घणु सहेलु बने छे दालगालदा अने लदागालदामा अलबत्त पाचमी मात्रा एटले के बीजा चतुष्कलना मुख्य तालनी पहेली मात्रा गामा दटाई जाय छे पण ए चतुष्कलनी त्रीजी, सळग गणता, सातमी मात्रा ए गुरु पछीना लघुने लीधे गौण प्रास माटे उपलभ्य बने छे, अने तेथी मुख्य तालनो लोप थता पण गौण तालथी मेळनो उद्धार थई मेळ आगळ चालवा लागे छे पण निषिद्ध अक्षरयूथ दालगागाल के लदागागालमा, बीजा चतुष्कलनो मुख्य तालनी तेम ज गौण तालनी बन्ने मात्राओ लुप्त थता ए आखु चतुष्कल ताल रहित रही जाय छे, अने तेथी मेळ खडित थई जाय छे मात्रासख्या माडीने हु विशेष स्पष्ट करु

(१) लदागालदा [१ २ ४ ६ ७ / ३ ५ ८] (२) दालगालदा [१ ३ ४ ६ ७ / २ ५ ८] (३) लदागागाल [१ २ ४ ६ ८ / ३ ५ ७] (४) दालगागाल [१ ३ ४ ६ ८ / २ ५ ७]

आ चारेयना पहेला चतुष्कलमा पहेली एटले मुख्य तालनी मात्रा खुल्ली छे. एटले पिंगलनो नियम सचवाई जाय छे ते पछी (२) के (४) जेवा रूपमा त्रीजी मात्रा खुल्ली होय के (१) के (३) जेवा रूपमा ढकायली होय ते महत्त्वनु नथी महत्त्वनु ए छे के बधा रूपोमा बीजा चतुष्कलनी पहेली मात्रा, एटले सळग गणता पाचमी मात्रा गुरुमा ढकायेली छे एटले बीजा चतुष्कलना मुख्य तालने अवकाश नथी मळतो, पण तेना गौण ताल जे चतुष्कलनी त्रीजी मात्रा उपर एटले के सळग गणता सातमी मात्रा उपर पडवो जोईए, ते लदागालदा अने दालगालदामा खुल्ली छे, अने लदागागाल अने दालगागालमा ए पाचमी अने सातमी, बन्ने ढकायेली छे, अने तेथी पहेला बेमा मेळ ऊगरी जाय छे, बीजा बेमा भागे छे अही पण मेळने भागनार लगाल ज जणाशे बीजा चतुष्कलमा लगाल आवे अने एनो पहेलो लघु आगला सधि साथे जोडाई जाय एटले, लगालनु मुख्य तालस्थान पण लोपाय, एनु गौणतालस्थान तो पहेलेथी ज लुप्त हतु

आ उपरथी आपणे चतुष्कलसंधि जातिओ विशे बे मुख्य नियमो करी शकीए, के एनी रचनाओमा बने त्या सुधी पक्तिने प्रारभे जगण न मूकवो.

बयाक आवी जाय तो चाले बीजु ए के पंक्तिमां कोई पण स्थाने के जगण साथे आववा देवा नही, आवे तो दोष छे नीजु ए के चतुष्कलसंधि जातिओमां गमे त्यां के चतुष्कल संधिओनी जगाए $\frac{\text{ल्दा}}{\text{दाल}}$ गाल्दा आवी शके. एथी मेळ लोपातो नथी त्यां ताल 'लगीरक तूटयो' छे एटलु कहेवानी पण जरूर रहेती नथी आने आपणे चतुष्कल रचनाओमां आवतो एक अष्टकल संधि गणीशु, अने मूळ संधि दादानी अपेक्षाए आने निष्पाद्य के द्वैतीयीक संधि गणीशु जेम दादामां एक ज स्थाने — प्रथम मात्राए ताल मूकीए छीए तेम आमां पण मात्र पहेली मात्रा उपर ताल मूकीशु गौण तालनो पिंगलमा निर्देश नथी करता ते व्यवहार चालु राखीशु आवो ज चतुष्कलनो एक बीजो निष्पाद्य संधि छे पण ते जवल्लेज वपराय छे, अने तेना उल्लेखनो प्रसंग हवे नजीकमां ज आवे छे -

सोळ मात्रा एटले षोडशी रचनाओमां आपणे पद्धति जोई गया. अपभ्रंश पिंगल प्रमाणे आपणे तेनु माप नीचे प्रमाणे आपेलु

पद्धति · दादा ल्दा दादा ल्दाल

अहीं मात्राओ सळंग गणता, ताल १, ५, ९, १३मी उपर पडे छे पण आपणे गया प्रकरणमां जोयु के दलपतरामनी आ छंदनी तालव्यवस्था जुदी छे आपणे तेनो लक्षणछंद जोईए

प्रति चरण सोळ मात्रा प्रमाण,
ते चरण अंत जो जगण आण,
गण चक्र रुद्र रत्न ज ताळ,
पद्धरी छंदनी ए ज ढाळ

द पिं पृ. १४

हवे अहीं जो मात्र पद्धरी छंदना प्राचीन स्वरूपनो ज प्रश्न होत तो जवाब सहेलो छे अने ते आपणे आगला प्रकरणमां आप्यो के उपर उत्थापनिकामां आप्यु ते ज तेनु साचु स्वरूप छे (गत पृ. ३०८–१०). त्यां आपणे जोयु के ए प्राचीन उत्थापनिकामां दलपतरामनी तालयोजना बेसी शकती नथी, केम के तेमां त्रीजी मात्रा तो तालने माटे अवश्य उपलब्ध होय छे पण ते पछीनी छठ्ठी उपलब्ध होती नथी पण आपणे माटे एटलु बस नथी दलपतरामनो पद्धति ते भले प्राचीन अपभ्रंशनो पद्धरी नथी, आगळ जईने एम

पण कहीए के एने पद्धरीनु नाम पण न अपाय, पण आपणे त्या ज अटकी शकीए नहीं. आपणे ए तपास करवी जोईए के ए कोई बीजो छद छे के छद ज नथी? अने बीजा छद होय तो आपणी मेळयोजनामा तेने क्या स्थान मळे? आने माटे आपणे दलपतरामना पद्धरीनो ज अभ्यास करवो जोईए ए रीते जोता जणाशे के दलपतराम जेम चोथा चतुष्कलने स्थाने लगाल मूके छे तेम घणी जगाए बीजा चतुष्कलने स्थाने पण लगाल मूके छे. आगळ जे लक्षण उतार्यु छे तेमा अने ते पछी आवता बीजा छदोमा पण बीजा चतुष्कलने स्थाने लगाल छे. पण तेमा एक अपवाद छे. लक्षणछदनु चोथु चरण

पद्धरी छदनो ए ज ढाळ

एम थाय छे अर्थात् एमगे सर्वत्र बीजे स्थाने लगाल मूक्यो नथी अही ता गालगागाल एवु अष्टकल पण आवे छे अने आ अष्टकल ते उपर स्वीकारेलु दाल/लदा गालदा नथी. उपर उपरथी जोवा जईए तो ए निषिद्ध करेलु गालगागाल थवा जाय छे पण ए निषिद्ध अष्टकल अने आ बन्ने एक ज नथी ए निषिद्ध अष्टकलमा प्रथम मात्रा उपर ताल पडतो हतो अने एम करवा जता बीजु चतुष्कल ताल विनानु रही जतु हतु अही एम नथी अही ताल त्रीजी मात्राथी शरू थाय छे एटले एनो गुरुलघुन्यास मात्र जोई ते निषिद्ध गणी लेवु बराबर नथी जातिछदोनो मेळ तालथी थाय छे अने ताल तूटता तूटे छे. माटे आपणे एनी लघुगुरुयोजना उपरात तालयोजना पण जोवी जोईए.

आ छद दलपतरामे पोते योज्यो होय एम जणातु नथी एमणे पोते मात्र एक दल छद नवो योजेलो छे, आ पद्धरीने एमणे नवो कह्यो नथी. तपास करता आ छद तेमणे हिंदीमाथी लीधो होय एम मने जणाय छे दलपतरामने हिंदी सारु आवडतु हतु, तेमणे पोते हिंदीमा काव्यो लख्या छे अने तेमणे जेम सस्कृत तेम हिंदी पिंगळनो पण अभ्यास करेलो हतो उपरनो छद तेमणे हिंदीमाथी लीधो छे तो आपणे आ छदनी थोडी हिंदी पक्तिओ पण जोईए नीचेनी क्तिओ हु 'पृथ्वीराजरासा'माथी लउ छु त्या आने छद कहेलो छे.

छद

कच्छ ही देश सिन्धु समघ्य। १
चंद्रसेन ईस पर्वत सनध्य॥ २

संवत अठार ओगनीस सोइ। ३
कलपात ईक संग्राम होइ॥ ४
पतिर भार सव्वा प्रमान। ५
तरहे पठान चहुआन रान॥ ६
संवत अठार छत्तीस जान। ७
कच्छ ही सिन्धु डोलत निधान॥ ८
परसिन्धु वन्य कारन प्रमान। ९
इह सुनहि बात चहुआन रान॥ १०
कच्छ ही देश भूपाल होइ। ११
सू हि कर्न करि हेति को ॥१२

—पृथ्वीराज रासेकी प्रथम संरक्षा पृ० ३९

मात्र छंदनी दृष्टिए जोतां पण थोडी अशुद्धि जणाय छे. आपणे ते सुधारीने तेनु स्वरूप जोईशु. पंक्तिओ २ थी ७ अने ९ तथा १०मां पूर्वार्धमां प्रथम चतुष्कल पछी लगाल आवे छे. पण १ली, ८मी अने ११–१२मीमां 'पद्धरीछंद'नी पेठे ज गालगागाल आवे छे. प्रथम चतुष्कल पछी लगाल आवे छे तेने दादालगाल ए रूपे मुकाय, अने १, ८ वगेरे पंक्तिमां उपलब्ध थता बीजा रूपने गालगागाल एम मुकाय. आगां बन्नेमां पहेली बे मात्राओ निस्ताल छे. एटले दा ने बाद करीने जोतां दालगाल अने लगागाल एवां रूपो मळी आवे छे. आपणे आगळ जे चतुष्कलनिष्पाद्य अष्टकल जोयु तेनु स्वरूप $\frac{\text{दाल}}{\text{लगा}}$ गालदा हतु. अने एमां मात्र एक ज मुख्य ताल आपणे पहेली मात्रा उपर मूकेलो हतो. अहीं पद्धरीमां आवतु रूप दादालगाल ए स्पष्ट रीते दालगालदाना छेल्ला निस्ताल दाने अंतेथी उपाडी आदिमां मूक्याथी थयेल छे. खरी रीते आ संगीतनी सुप्रसिद्ध प्रक्रिया छे. सतत अनवच्छिन्न चालता तालने गमे त्यांथी शरू करीने आगळ चाली शकाय छे. मोतीदाममां आपणे आ ज प्रक्रिया जोई हती. अहीं पण ए ज प्रक्रिया छे. दालगालदादालगालदादालगालदा एम एक अनंत श्रेणी चाले छे. तेमां रचना पहेला दाथी शरू करो तो सधि दालगालदा

मात्राना बावाह्‌वाह्‌नो (प्रयोग) पद्धरी (प्रा. पज्झडिया. हि. पद्धडी)-मां थाय छे." (प. ऐ. आ. पृ. ३०) कहेवानो भाग्ये ज जरूर होय के दा अने ल संज्ञाने छोडीने तेमणे अहीं बा अने ह संज्ञा लीधी छे. एमणे प्राकृत पज्झडियामां आ संधि कह्यो छे, पण में आगळ बताव्युं छे के हेमचन्द्र वगेरेए आपेला दृष्टान्तोमां आ संधि गोठवी शकातो नथी. एटले आ संधि खरो तो दलपतरामना अने हिंदी साहित्यना पद्धडीनो छे.

के. ह. ध्रुवे जेने हुं निष्पाद्य कहुं छुं एवा आ बावाह्‌वाह्‌ संधिने मुख्य संधिओमां स्थान आप्युं अने एना जेवा ज दालगालदा संधिने न गणाव्यो ए आश्चर्य जेवुं छे. खरुं तो चतुष्कल रचनाओमां आ, दालगालदा ज वधारे वपराय छे. अने ए एमणे स्वीकार्युं पण छे (प. ऐ. आ. पृ. ३८). कदाच एवो तर्क थाय के बावाह्‌वाह्‌ना आवर्तनोथी जेम हिंदी पद्धरी थाय छे तेवो कोई छंद दालगालदाना आवर्तनोथी थतो नथी, एवुं एनुं कारण होय. अत्यारना पिंगळमां एवो छंद नथी ए खरुं पण प्राचीन पिंगलोमां दालगालदाना आवर्तनोवाळा छंदो मळी आवे छे. जेम के:

उग्गदित्ततवसावभासुरो
तो गओ मसाणं मुणीसरो।
तं च केरिसं कालगोयरं
सिवसियालदारियमओयरं।
जसहरचरिउ १, १३

आमां स्पष्ट रीते दालगालदाना आवर्तनो जणाशे. दरेक पंक्तिमां ए संधिना बे आवर्तनो छे. 'महापुराण'मां पण आ छंद वपरायो छे.

वल्लहंतरगगकंपणं
एम जाम जायं पयपणं
माणिमाणवित्थारमयणं
सित्थ 'यसंणिहियमग्गणं
महापुराण ३४–१०

आ रचनाओनी स्वतन्त्र छंद तरीके क्याई गणना थई नथी. पण तेनु वधारण जोता तेम थवानी जरूर छे आने ज मळनो एक अक्षरमेळ छंद पिंगलोमा नोंधायो छे हिन्दी 'छन्दःप्रभाकर,' 'रणपिंगल' वगेरे तेने कामदा कहे छे. तेनु माप :

कामदा : गाल गाल गा गाल गाल गा = १० अक्षरो

आने आपणे दालगालदानु लगात्मक रूप गणी शकीए एना आमा बे आवर्तनो थाय छे. ए रीते ए उपर उतारेल बे जपम्रश छंदोने मळनो थाय. 'संगीत छंदोमंजरी' (पृ ९) आने मोळ मात्रानो गणी राग केदारो ताल चतुश्र जाति त्रिनालमा तेना स्वराक्नो आपे छे अर्थात् आने अष्टकल मधिना आवर्तनोनो छंद गणी शकाय वर्वे आ स्वीकारता, एनु ललित छंदने मळनु पठन पण थाय छे एम नोंधे छे (गायन वादन पाठमाळा पु १, वि ३, पृ ७). कामदा साहित्यमा वपरायेलो में जोयो नथी, एटले बेमाथी कई एक ज पद्धति खरी छे ते कही शकतो नथी एटले एनी बन्ने शक्यता स्वीकारु छु ललित छंदना निरूपण साथे तेने फरी जोईशु पण अहो तेने आ अष्टकलना आवर्तनथी सिद्ध थता छंद तरीके गणवामा कशो दोष नथी. आ सिवाय पण केटलाक छन्दोमा तेना आवर्तनो आवे छे पण ते रचनाओ सोळथी वधारे मात्रानी छे, एटले अही षोडशी रचनाओना संदर्भमा एने लेतो नथी पण आटला उपरथी एटलु तो अवश्य जणाय

हवे के दालगालदा संधि चतुष्कल रचनाओमा बे चतुष्कलोनी जगाए मात्र आकस्मिक रीते ज नथी आवतो पण तेना ज आवर्तनोना विशिष्ट छंदो पण छे

षोडशी रचनाओमा आपणे पद्धति जोई गया हवे बाकी चोपाईना सामान्य नामे चालतो अन्य रचनाओ जोवानी रही ते पण आपणे आगळ जोई गया छीए

चरणाकुळ दादा दादा दादा गागा / दागा

एमा पूरी सोळ अक्षरमात्रा छे, अने चरणान्त व्यक्त करवा अत्यसंधिने विशिष्ट रूप आपेलु छे

अलक के अरिल्ल : दादा दादा दादा दालल

एमां पण पूरी अक्षरमात्राओ छे, अने अंत्य संधिने जुदी रीते विशिष्ट रूप आपेलु छे.

जेकरी : दादा दादा दादा लगा

चोपाई : दादा दादा दादा गाल

आ बन्नेमां अंत्य संधि बे रीते विशिष्ट थाय छे. तेनुं रूप लगात्मक छे ते उपरांत तेमांथी एक अक्षरमात्रा रहित करेली छे. अलबत्त ए अंत्य संधि पोताना गुरुने त्रण मात्रानो प्लुत करी आखो चतुष्कल मात्रासंधि पूरी आपी संधिनां आवर्तनोनो मेळ चालु राखे छे. आ खंडनव्यापार केटलाक ओछा जाणीता छंदोमां आर्यो पण आगळ गयेलो मालूम पडे छे. जेम के:

हालक छंद — मात्रा १४, ताल ४

जुग जुग जुग कळ गुरु अंते,
हालक छंद कह्यो संते;
प्रथम पछी चारे चारे
ताळ धरे, न जगण धारे. ५२

द. पिं. पृ. ११

जुग एटले चच्चार मात्राना त्रण संधिओ अने अंते गुरु. तेमां क्यांई जगण न आवे. पहेली मात्रानी ताल शरू थई आगळ चच्चार मात्राए ताल आवे. एटले के १ली, ५मी, ९मी, १३मी उपर ताल. आपणी रीते

हालक : दादा दादा दादा गा

दादा रूप मूकवु एटले जगणनो शक्यता ज न रही. अंते एक गुरु आवे छे, ते अंत्य चतुष्कल कालसंधिनो एकलो प्रतिनिधि छे, अने आखा चतुष्कलने पूरे छे एटले के त्यां चार मात्रानो प्लुत थाय छे. पठनमां स्वाभाविक रीते गुरुने लंबावीने चार मात्रानो करीने ज पछी ते पछीनी पंक्ति आपणे बोलीए छीए. आ खंडनव्यापार तेथी पण आगळ तुरग छंदमां जाय छे:

तुरग छंद — मात्रा १२, ताळ ३

जुग जुग जुग कळ धरिये,
जगण न जतिमां करिये;
प्रति जति प्रथम ज ताळे
ते वृत तुरग रुपाळे. ४१

द. पिं. पृ. १०

अही जति शब्द खोटी रीते वपरायो होय एम जणाय छे. पण आ उपरना हालकने ज मळतो छंद जणाय छे. लक्षणमां अंते गुरु कह्यो नथी पण उदाहरणमां सर्वत्र छे. आपणी रीते तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

।   ।   ।
सुरग: दादा दादा दागा

पंक्तिए पंक्ति छूटी पाडीने बोलवी होय तो एक आखा चतुष्कल जेटलो समय विराम के विलंबन करी पछी बीजी पंक्ति बोलवी जोईए. कारण के आवर्तनो बेकी ज होई शके. पठन करतां आ बाबत स्पष्ट थशे. पण बन्ने पंक्तिने एक गणी पठन करतां वच्चमां एवा विरामनी के विलंबननी जरूर नही जणाय. पण त्यारे ए छ चतुष्कलोनो छंद गणाय.

आवी पण टूंको ११ मात्रानो आभीर छे. तेनी उत्थापनिका दादा
।   ।
दादा गाल एवी 'दलपतपिंगळ'मां आपेली छे (द. पिं. पृ. ९). पण आ दोहरानुं सम चरण छे, एनी चर्चा दोहराना संदर्भमां करवी वधारे अनुकूळ पडशे. आ टूंको छंद तो भाग्ये ज वपराय छे, एटले तेने अही लेतो नथी. एवो ज एक छंद वरवीर 'रणपिंगल' भा. १, पृ १० मे आपे छे तेनुं स्वरूप
।   ।   ।
दादा दादा गालगा ए प्रमाणे छे, ते यति पूर्वेनु दोहरानु विषम पाद थई रहे छे, एटले एनी चर्चा पण अही नथी करतो.

षोडशी रचनाना मुख्य मुख्य जाति छंदो अही पूरा थाय छे. पण विषयनी सपूर्णता खातर तेना मुख्य मुख्य रुपात्मक छंदो पण आपणे जोवा जोईए. आमां स्वाभाविक रीते सौथी पहेलो प्रसिद्ध तोटक आवे जे संस्कृत साहित्यमां पण खूब प्रसिद्ध छे.

तोटक: ललगा ललगा ललगा ललगा

आने ज नाममां तेम ज स्वरूपमां मळतो एक मोटक छे जे हाल वपरातो नथी, पण घणो जूनो हशे एम मानुं छुं, कारण के ठेठ 'भरतनाट्यशास्त्र'मां तेनो उल्लेख छे.

मोटक: गालल गालल गालल गालल

मोटकनुं आ स्वरूप 'छंदोमंजरी'मां छे (२, ९३). दलपतराम आने मोदक कहे छे (द. पिं. पृ. ४३). पण भरते अपेलुं तेनुं स्वरूप जरा भिन्न छे:

आदौ द्वौ पञ्चमश्चैवाप्यष्टमं नैधनं तथा।
गुरुण्येवादशे पादे यत्र तन्मोटक यथा॥
ग. ना. गा. वो. २, १५, ४०, पृ. ५२८

अर्थात् पहेला बे, पाचमो, आठमो, छेल्लो एटला अक्षरो गुरु. पादमा कुल अक्षर अगियार. आ प्रमाणे तेनु स्वरूप नीचे प्रमाणे थाय:

गागा ललगा ललगा ललगा

आ पछी दोधक लईए.

दोधक: गालल गालल गालल गागा
द. पि. पृ. ३८

विद्युन्माला पण षोडशी रचनानु ज लगात्मक रूप छे.

विद्युन्माला: गागा गागा गागा गागा

मोतीदाम आपणे आगळ जोई गया छीए

मोतीदाम: ल गालल गालल गालल गाल

आ बधा छंदोमा चतुष्कलना एक ज पर्यायना आवर्तनो आवे छे. दोधकमा अंते गागा छे पण ते तो अंत्य चतुष्कलने आपेलु विशिष्ट रूप छे, जेम भरतं मोटकमा प्रथम चतुष्कलने आपेलु छे तेम. पण चतुष्कलना भिन्न पर्यायोना मिश्रणथी थयेली लगात्मक रचनाओ पण होय छे ते आपणे आगळ जोयु, अने ते चालु संदर्भमा आपणे टूंकमा जोईए.

भ्रमरविलसिता: गागा गागा लललल ललगा
जलोद्धतगति: लगाल ललगा' लगाल ललगा
चंचलाक्षिका अथवा गौरी: लललल ललगा लगागालगा
प्रहरणकलिका: लललल ललगा लललल ललगा
पणव: गागा गालल ललगा गागा
नवमालिनी: लललल गालगाल'लल गागा
कुड्मलदंती: गालल गागा' ललललल गागा

अहीं चतुष्कलना पर्यायो उपरान्त बे जगाए द्वैगौणीव संधि दाल/लदा-गालदानो प्रयोग पण थयो छे. वळी अंत्य गंधि गहित होय एवा पण छंदो मळे छे जेम के

उपस्थिता: गागा ललगा ललगा लगा
वृत्ता: लललल लललल गागा गा

उपस्थिता तो जेवरीनु ज लगात्मक रूप जणाशे. त्या एक मात्रा खडित थई छे वृत्तामा हालवनी पेठे वे मात्रा खडित थई छे

आ बधा लगात्मक जातिछदोमा चतुष्कलनो ताल क्या आवे ? के ह ध्रुव तोटक सबधी कहे छे. "तोटकमा . . चित्ररचनाना सधि, जे वे बिनजोर रूपथी शरू थाय छे, तेना प्रथम सधिना ए बे बिनजोर रूप नोखा राखी जोरदार बीजथी आरभ थता त्रण 'च' सधि अने ते पछी 'दा' बीज गोठवाई जाय छे. अहि . . पहेला बे बिनजोर लघु बीजनू बिनजोरपणू जाळववाने प्रथम मात्रात्मक सधिना 'दा' बीजमा गुरु रूप वापरवू पडे छे." (सा वि पृ २९३) भावार्थ के-ललगाने सधि न गणता ललने निस्ताल मात्राओ तरीके बहार राखो गालेलना आवर्तनोथी -तोटक निष्पन्न थयो मानवो · आ रीते लल गालल गालल गालल गा आपणे प्रथम आ प्रश्न बधा सयोगो ध्यानमा लई विचारी जोईअे प्रथम तो ए के लघु उपर ताल न ज पडी शके अेम न कहेवाय. चोपाई जेवा छदना सामान्य पठनमा प्रथम मानाए ज ताल पडवानो, पछी त्या ललगा रूप होय के लललल होय एटलु ज नही वचमा ज्याज्या आवा रूपो आवे त्या पण सधिनो प्रथम मात्राए ज ताल पडवानो भ्रमरविलसितामा त्रीजु अने चोथु चतुष्कल लललल ललगा छे ते बनेमा प्रथम मात्राए पडवानो अने एम थता त्या पठनमा कशु अयुक्त जणानु नथी बीजु आ रीत अख्त्यार करता प्रथम ज लललल आवे त्या शु करवु ? दाखला तरीके चचलाक्षिका के गौरीना न्यासमा ? अहो कोई रीते पहेलो मात्राओने बाद करी शकाशे नही एम करवा जता अते आवता लगागालगामा ताल मूकी शकाशे नही एटलु ज नहीं केटलीक जगाए ललगाना आवर्तनो होय त्या पण आम नही करी शकाय दाखला तरीके नीचेना बे अर्धसम वृत्तोमा :

वेगवती	ललगा ललगा ललगा गा गालल गालल गालल गागा
वैतुमती :	ललगा लगाल ललगा गा गालल गालगालल गागा

बनेमा प्रथम अर्धमा त्रण चतुष्कलो अने चोथा चतुष्कलनी जगाए एक गुरु मात्रा छे, जे चार मात्रानो बने छ अने बीजा अर्धमा तो स्पष्ट गाललया ज आवर्तनो शरू थाय छे पठनमा पण प्रथमार्धमा ललगाया ज आवर्तनो शरू थाय छे, अने तेमा ताल प्रथम ल उपर जणाशे एटले मने बधी रीते विचारता कोई पण एक पर्यायना तालनो विचार तेने वितथी विशिष्ट करी करवो ए साची पद्धति जणाती नथी लगाल जवो पर्याय जेमा गौण ताल दबायेलो रहे छे

वृत्तामां अनादि गागा तालनिर्णायक बने छे चचलाक्षिका अथवा गौरीमां द्वैतीयीक संधि तालमात्रानो निर्णायक बने छे

चचलाक्षिका अथवा गौरी: लललल ललगा लगागालगा

जलोद्धतगतिमां प्रथम मात्रा सिवाय कोई बीजी मात्रा तालयोग्य जणाती नथी

जलोद्धतगति. लगाल ललगा । लगाल ललगा

अहीं ललगामां गा उपर ताल नाखवा जता वांधो ए आवे के ए त्रीजी मात्रा लगालमां उपलभ्य नथी एटले तेमां प्रथम उपर जणाव्या प्रमाणे पहेली पर ज ताल नाखवो पडे

प्रहरणकलिता ललल ललगा ललल ललगा मा ललगा एम त्रीजी मात्रा उपर ताल नाखवा जता आद्य चतुर्लघु चतुष्कलना त्रीजी मात्रा उपर ताल नाखवो पडशे आ चतुर्लघुमां कोई गुरु तो नथी ज, अने जो बधा लघुमांथी ताल माटे कोईनी पसंदगी करवी होय तो आद्य लघुनी करवी जोईए कारणके आद्य पठननो थडकारो एने मळे छे ललगामां आपणे घणी वार पहेली मात्रा उपर ताल जायो छे, एटले उपर आपी ते ताल-व्यवस्था ज बरावर छे प्रश्न मात्र रह्यो तोटकनो तेमां ललगाना ज आवर्तनो छे आपणे सामान्य रीते लघु गुरु वच्चे ज पसंदगी करवानी होय त्यारे ताल माटे गुरुने ज पसंद करीए छीए दलपतराम पण तोटकमां त्रीजी मात्राथी चतुष्कल ताल शरू करे छे एटले ताल गुरु पर आवे ए स्वीकार उपपन्न बने छे पण ते माटे पहेला बे लघुने वाजु पर काढी गालल संधि गणवानी जरूर मने जणाती नथी मने ललगाना पठनमां तेम ज तोटकनी कविताना पठनमां पण ललगा संधि ज समळाय छे जेम के

'रमता भमता कदि दिव्य वन,
फुलडां जडियां रडला सुजन,
बहु वेळ रह्यां पडि मूंज वने,
गुथि आज दऊं रसिका ! तमने'

'अवतरण', कुसुममाळा पृ. १

आमां पठनमां ललगाना आवर्तनो ज समळाशे.

षोडशी रचनाओ पछी हवे चोवीशी रचनाओ आवशे बीजी रीते कहीओ तो चतुष्कलना चार आवर्तनोवाळा प्रकार पछी छ आवर्तनोना प्रकारवाळी रचनाओ आवे एक आखो ताल ए संगीतना कालमाननो अखंड विभाग छे, अने एक तालमानमां बे संधिओ आवे छे एटले रचनाओनो विस्तार बब्बे संधिनी वधघट वाळो होय.

आमां मुख्य बे रचनाओ छ कवित के रोळा, अने प्लवंगम

रोळानी रचना तो सादी छे पण तेने विशे एक बे बाबत कहेवानी प्राप्त थाय छे पहेलु ए के तेमां अगियार अक्षरे यति कहेली छे पण प्रयोगमां ते पळाती नथी तेनु कारण में आगळ कह्यु ते प्रमाणे ए छे के जातिछंदोमां यति ए छंदनु आवश्यक अंग नथी, पण भंगी छे,—शोभा छे आना दृष्टान्तो पुष्कळ मळी रहे छे जेम के

झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसति,
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहति,
झळझळ झळझळ झळझळ ए वीजुलिय झबकई
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपई

प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रह पृ ३८

अहीं कोई पण पंक्तिमां ११मी मात्राए शब्द पुरो थतो नथी सर्वत्र बारमी मात्राए पूरो थाय छ 'रणपिंगल'मां नोंध छे के 'रोळाना चरणमां ११मी मात्रा लघु होय ते रोळा काव्य कहेवाय छ'(रणपिंगल भा १ पृ ३६–३७) पण यति जो छंदनु अंग होय तो ते आघीपाछी थई शके नहीं ए ज पिंगल रसावलीमां पण ११मी मात्राए यति आवश्यक कहे छे पण दयारामनी रसावलीमां सर्वत्र ए यति पळाई नथ।

चिंतामणि माटो पण' जेनो आप्यो मळिशे,
त्यारे ते चिंतामणि' थकि दाता अति बळिशे, १७३
श्री महाप्रभु स्वतंत्र पुरुष श्रीमुख साभळिशु,
तेमनि कृपा ज्यहां तेनू भाग्य अत। वळिशु १७४

दयारामकृत काव्यमणिमाळा पृ २७१

मात्र त्रीजी पंक्तिमां ११मी मात्राए शब्द पूरो थाय छ, ते सिवाय क्यांई ११मीए यति पळाई नथी पहेला पंक्तिमां 'पण आगळ शब्द पूरो थाय छे त्यां १२ मात्रा पूरी थाय छ बीजीमां 'चिंतामणि आगळ शब्द पूरो थाय छे त्यां १०मात्रा पूरा थाय छ एट तो अहीं यति पळाई ज नथी एम कहेवू

जोईए. आ दृष्टान्त साथे साथे ए पग बतावे छे के चोपाईनी पेठे रोळामां पण बन्ने प्रासबद्ध पंक्तिए अकेक कडी गणाय छे, जे बधा जातिछंदो माटे स्वाभाविक धोरण गणावु जोईए.

दयारामे रसावला पण लख्यां छे ते पण आ रसावलीथी भिन्न जणाता नथी:

रसावला

हीरा रत्न परीक्षा' ज्यम सहु झवेरि माह्यर;
एदृश अमूल्य चिंतामणि शु लहे मति वाह्यर. ४७
विरल नाम पग लहे' दृष्टिगोचर नथि केनी;
ते माटे शु चिंता'मणि कयहुं ओ पण छेनी? ४८
वंदीजन नृपसदृश' सभा पर्यंत वखाणे;
रंग म्हेल राणी' वृत्तान्त अनुभवी जाणे. ४८

दयारामकृत काव्यमणिमाला. पृ. २४६

आमां पण यतिनु नियत स्थान जणानुं नथी. केटलेक जगाए १२मी मात्राए शब्द पूरो थाय छे अने छेल्ली पंक्तिमां तो दसमी मात्राए शब्द पूरो थाय छे. एटले यति पळाई नथी.

रोळा छंदमां यति छंदनु अंग नथी ए खरु पण ते साथे ए पण स्वीकारवु जोईए के ११मी मात्राए यति होय छे त्यारे रचनामां एक सुन्दर भंगी आवे छे. एम ने एम चाल्या आवतां चतुष्कलोमां भाषानी एक हिकमतथी छंद आखो दोर्यो ऊठे छे. आ भंगी आ पछी आवतां प्लवंगममां पण आवे छे. आ भंगीने लीधे ए यतिस्थाने लघुगुरुन्यास उपर जे असर थाय छे ते तरफ पिंगळकारोनु ध्यान गयु नथी पण ते जोवा जेवु छे. ११ मात्राए यति आवे एटले त्रीजा चतुष्कलमां त्रण मात्रा पछी शब्द पूरो थाय एम थवा माटे ए त्रण मात्राओ त्रण रूपे आवी शके · ललल, गाल अथवा लगा. आमां घणे भागे गाल, तेथी ओछी सख्यामां ललल, अने क्वचित ज लगा आवे छे. अर्वाचीन गुजरातीमां रोळा बहु वपरायो नथी पण छप्पाना पहेला चार चरणो रोळाना चरणो होवाथी शामळमांथी रोळानी पुष्कळ पंक्तिओ मळी शके. ते जोतां तरत जणाशे के गाल रूप ज विशेष वपरायु छे आपणे ८मा प्रकरणमां रोळानु जे दृष्टान्त उतार्युं छे तेमां गाल अने ललल बन्ने रूपो स्पष्ट मळी आवे छे सौथी वधारे वपरायेलो छे एटले एना दृष्टान्तो अहीं आपतो नथी. मात्र लगाना आपु छु.

मह्यिं मोटु दान, अणूयी लोभी गानो,
गयनयि प्रेमू मन, विवेक देवोयी दानो,
चद्रयि निर्मळ क्षमा, क्रोध अग्नीयी तानो
दुधयि उजळो यदस, अमल मदिरायी मानो
वृ मा दो मा ३, पृ ३९२-३

उल्लाल उतारतो नयी बीजु दृष्टान्त

वृक्ष एकना डाळ, बार भलि भात भणीजे,
पांनडि त्रणसें साठ, गुणीजन जोइ गणीजे
चतुर जुआ चोवीश, सरग फळ तेना फळिया
एकविसट्ठ छर्में, पत्र कविलोके कळिया
एजन, पृ ३९५

विप्र याचजे वाण, त्रिया खटरस खावाना,
भोगी खटरस भणो, गणो खटरस गावाना,
जोगी खटरस खोल, बोल खटरस दा पुयें,
कहे खटरस धन धर्म, नेक राखिश नहि तुय्ये
एजन, पृ ३९८

पहेला कवितमां त्रीजी क्तिमा यति स्थाने 'क्षमा', बीजामा चोथी पक्तिमा 'छर्में', त्रीजामा बीजी पक्तिमा 'भणो' एटला ज त्रगा रूप छे अने ते पण बधाई एक ज कडीमा बे नथी ए ज एनी विरलता अने अनिष्टता बतावे छे बाकी तो बधा ज गाल छे आ पछी एक बीजी बाबत पण नोंधवा जेवी छे आमांथी कोई पण एक रीते अगियार मात्राए शब्द पूरो थाय, पछी ए रचना आगळ कया रूपे चाले छ? अलबत्त एक रीत तो तरत सूझे एवी छे के चतुष्कलनी बाकीनो लघु आवी पछी चतुष्कलो आगळ. चाले एवु घणी जगाए बने पण छे जेम के पहेला छदनी पहेली पक्तिमा "दान अ,णूयी," एमा यति पछी आवता 'अ' लघुथी अधूरू रहेलु चतुष्कल पूरु थाय छे पण सवत्र एम बनतु नथी घणी जगाए त्या दालगालदा एवो द्वैगी-यीव सधि आवे छ जेमके "वृक्ष एकना डाळ वार भलि भात गणी जे" एमा 'वृक्ष एकना', ए दालगालदा छे ते पछी 'डाळ वार भलि' ए पण दालगालदा छ ए ज प्रमाणे 'खोल बोल खट' तथा 'धर्म नेक रा' ए बधा दालगालदाना ज रूपो छे पण विशेष ए छे के ज्या शब्दात लगाथी थायछे, त्या, एनी पछी ल आवीन भाग्ये ज चतुष्कल पूरु थाय छे, घणे भागे

तो लगागालदा ज त्या थाय छे, अने ए रीते जगण बने त्या सुधी टाळवामा आवे छे उपरना दृष्टान्तोमा 'क्षमा क्रोध ए' 'छसें पत्र वचि' ए बने लगागालदा छे मात्र 'भणे ग'मा ज जगण आवे छे आ आखी रूपावतोनी वार्तामा मने बधा मळीने ए स्थानना पाच ज जगणो मळ्या छे निचोड ए थयो के ११मी मात्राए यति आणवी होय तो दाल ए रूप ज इष्ट छे, लगा इष्ट नथी, अने लगा आवे त्या पण ए चतुष्कलमां जगण इष्ट नथी

अही आपणे जोयु के बे चतुष्कलोनी जगाए लदागालदा आवे छे तो आगळ षोडशी रचनामा लदागालदाना आवर्तनथी जेम एक षोडशी रचना जोई तेवी चोवीसी पण थाय छे ते जोईए अल्बत्त आ रचना पण अपभ्रश साहित्यमा ज वपरायेली मळे छे

हेला इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्ग।
दायवदेज्ज पत्तववहारसारमग्ग॥

महापुराण खड १, पृ १४७

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दालगाल्दा दालगालदा गा

अही प्रथम एक चतुष्कल आखु आवी पछी दालगाल्दाना ब आवर्तनो थाय छे पछी छ आवर्तनो पूरा थवाने एक चतुष्कल खूट तेनी जगाए मात्र गा आवे छ, जे त्या आखा कालसन्धिन पूरे, अर्थात् ए गा चार मात्रानो छ आने मळता आवली छदमा छल्लु आखु अक्षरचतुष्कल खडाई जाय छ

आवली घरिऊण इसी सुणिग्गयवेसय
दूरविमुक्कसगय जणियतोसय।
तिस्सा रइकएण परिसेसियगओ
एमत्त भरेण झाणालय गओ॥

महापुराण ख १, पृ १२१

उत्थापनिका दादा दालगाल्दा दाल्गालगा

छठ्ठु चतुष्कल आखु अनक्षर छ ए आखु य विरामथी अही पुराय छ आवी रीते दालगाल्दाना अमुक स्थानना प्रयोगथी पण अपभ्रशमा अने प्राचीन गुजरातीमा भिन्नभिन्न रचनाओ थई छ, ते बधाना दृष्टान्तो अही आपतो

नथी. ए बधी भातीओ छे, जे एक वार छंदनुं स्वरूप समजाया पछी कोई पण कवि स्हेलाईथी प्रयोजी शके, अने वाचनार ओळखी शके. तेने जुदाजुदा छंदोनां नामो पाडवां नथी. (जुओ प्रा गु छं पृ ६९)

आगळ ८मा प्रकरणमां जोयुं के वर्णोनी रचनाओमां अंतर प्रासवाळी अनेक रचनाओ थाय छे, जेनां नामो वधारे प्रासवाळी भिन्न छे. वर्णोस मात्रा जेटली लांबी पंक्तिमां एवी भातीओ करवाने पुष्कळ अवकाश मळी रहे. थोडानी रचनाओ एटली टूंकी छे के एमां एवी भातीओ थई शके नहीं. पण चोवीशी रचनाओ लांबी छे, अने तेमां कविओए एवी अंतर प्रासनी भातीओ करी छे. अलबत्त आवी रचनाओ अत्यारना गुजराती साहित्यमां प्रयोजाती नथी, पण अपभ्रंशमां ए मळी आवे छे. नमूना तरीके हुं एक दृष्टान्त लउं.

सिबूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयलि वियसिअसयदलि रमवणे।
उववणु करेप्पिणु जिणुपणवेप्पिणु पंगमुउ
णरवइ जयणायउ कयणियमायउ रिसहगुउ॥

महापुराण १३, ९, पृ २२९

आ आखी रचनानी मात्रा गणीए तो २४ थई रहेत. ए रीते एने सादो रोळा गणवो होय तो गणी शकाय. एम करतां एना चतुष्कलो नीचे प्रमाणे पाडी शकाय. पहेली ज पंक्ति मात्र चतुष्कले अल्पविराम करी उतारुं छुं.

सिबू, सरिदा,रइ सुर,हिसमी, रइ सुर, भवणे

पण आ जातना संधिओ त्यां उद्दिष्ट नथी. उद्दिष्ट नीचे प्रमाणे छे:

सि]बु सरिदारइ, सुरहिसमीरइ, सुर भवणे
को]इलकुल, कलयलि, वियसिअ, सयदलि, रमवणे।

आ प्रमाणे वाचतां पंक्तिनो अंतरप्रास तरत व्यक्त थशे. पहेली पंक्तिमां दारइ—मीरइ नो अंतरप्रास, बीजीमां कलयलि–सयदलि नो अंतरप्रास व्यक्त थशे. उच्चारणमां ज ए अंतरप्रास ऊठी आवशे अने माटे ए ज साचो संधिन्यास छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दा] दादा दादा,' दादा दादा,' दादा गा
दा] दादा दादा,' दादा दादा,' दादा गा

पठनमां पहेलो दा निस्ताल छे ते जुदो बोलाय छे, अने तेनी पछी चतुष्कलो शरू थाय छे छेवटे गुरु आवे छे, ते गुरु, पछीनी पंक्तिना दा साथे संयोजाई पूरु चतुष्कल थई रहे छे आवी रीते ज्यां पंक्तिनी पहेली मात्राओ उपरनी पंक्तिना अंत्य अक्षरो साथे जोडाई संधि रचाती हशे त्यां हु तेने पराङ्मुख कौंसथी दर्शावीश ए निस्ताल दा पछी बब्बे चतुष्कलोना यतिखंडो पडे छे, जे आंतरप्रासथी सांधेला छे आ अष्टमात्रक खंडोने ए रीते एक उपांग तरीकेनु स्वतंत्र अस्तित्व छे ते बताववा तेने अंते में अर्धविराम करेलु छे एक संधि बतावदा हु अल्पविराम करु छु, तो बब्बे संधिनो खंड बताववा हु अर्धविराम करु आ रचना त्रिभंगीने बहु ज मळती छ त्रिभंगी करतां तेमां एक आंतरप्रासबद्ध अष्टकल ओछु छे एटलो ज फेर छे

त्रिभंगी मात्रा दस आणो, आठ प्रमाणो, वळि वसु जाणो, रस दीजे

अंते गुरु आवे, सरस सुहावे, भणतां भावे; त्यम कीजे

आमांथी त्रीजु अष्टकल काढी नाखतां उपरनी अपभ्रंश रचना बनी रहे:

मा] त्रा दस आणो, आठ प्रमाणो, रस दीजे,
अं] ते गुरु आवे, सरस सुहावे, त्यम कीजे.

अने आपणे द्विभंगी राळा कही शकीए

आ जातनी आंतरप्रासनी भंगीओ अपभ्रंशमांथी गुजरातीमां ऊतरी आवी नथी पण एक बीजा प्रकारनी भंगी गुजरातीमां आवे छे तेनु दृष्टान्त आगळ शामळमांथी आपेला अवतरणमांथी मळी आवे छ

भोगी खटरस भंगी, गंगी खटरस गावाना
जोगी खटरस खोल, बोल खटरस शा पुन्ये

अहीं यतिस्थाने 'भंगी-गंगी' अने 'खोल-बोल' ना प्रासो आवे छे आगळ जोयेला यतिखंडोने अंते आवता आंतरप्रासथी आ भिन्न छ, अने तेने माटे प्राससांकळी एवु नाम आपवु मने योग्य लागे छे सांकळना बे अंकोडा एकबीजाने अडीने भिडायला होय छे तेम आ प्रासो अडीने पासेपासे आवे छे, माटे आने सांकळी कही छ केटलाक आने यमकसांकळी कहे छे पण उपरना दृष्टान्तथी समजाशे के अहीं प्रास छे यमक नथी—जो के क्यांक क्यांक प्रास साथे यमक पण भळेला मळी आवे छे के ह ध्रुवे 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां 'अनुभवबिन्दु'ने आ प्राससांकळीनी

युक्तिथी पोतानी रीते शोधन करी मूक्यु छे मूळ काव्य छप्पामा छे, हु तेमाथी रोळा जेटली चार पक्तिओ एक जगाएथी उतारु छु.

जाणी ले जगदीश शीश सद्गु ने नामी,
अवसर छे आ वार, सार श्रीपति भज स्वामी,
तें जावू नथी दूर, ऊर अतर अवलाकी,
टाल असत अहकार, चार स्वत रह्यो छ रोकी
प ऐ आ . ६१

अर्वाचीन युगमा नर्मदे 'हिंदुओनी पडती'ना काव्यमा अने बीजा केटलाक काव्योमा रोळानो विस्तृत उपयोग कर्यो छे तेणे पण कयाक सुन्दर प्राससावळी पाडी छे हु थोडी पक्तिओ उतारु छु

सलाम रे दिलदार यारनी कबूल करजे,
राखिश मा दरकार, सार समजी उर धरजे
घणा घणा लइ घाव तावथी खूब तपाया
नही भोगपर भाव नावमा नीर भराया
नर्मकविता पृ ७३३

साधारण रीते नर्मद प्रास मेळववामा बहु कुशळ नथी पण उपरनी पक्तिओमा तुकान्त प्रास तेम ज प्राससाकळी बन्ने सुन्दर छे

रोळा घोषबद्ध पठनने माटे अनुकूल छे ए घोषने आद्य वेग आपवा एना परिच्छेदोना प्रारभमा 'अह' के 'एँह' एवु छद बहार गद्यमा बोलाई पछी पठन शरू थाय एवी परपरा केटलाक प्राचीन काव्योमा नोंधायेली मळी आवे छे खास करीने फाग के फागु काव्योमा आवो प्रारभिक उमेरो मळी आवे छे जेमके

अह सोहग सुन्दर रूववतु गुण मणिभडारो
कचण जिम झलकत कति सजम सिरिहारो
थूलिभद्द मुणिराउ जाम महियलि बोहतउ
नयरराय पाडलियमाहि पहुतउ विहरतउ ॥ २ ॥
प्राचीन गुजराती काव्य पृ ३८

'हेमविमलसूरिफाग'मायी पण हु थोडी पक्तिओ नीचे उतारु छु

अहें मनि धरीं सरस तें सरसतीं, वरसतीं अविरल वाणि
सिरितपगछपति गाइसु भाविस्यु नित सुविहाणि
जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्यसचय पृ १८६

आ पण उपर जेवी ज रचना छे तेमा विशेषमा वचमा प्राससाकळी छे जे आगळ आपेला अवतरणनी बीजी पक्तिमा पण जणाय छे ते सिवाय अही नोधवा जेवु विशेष ए छे के अही पक्तिओना छेल्ला चतुष्कलनी एक मात्रा खडित थईने ते गाल बनेलो छे पोडनी चोपाईना अत्य सधिना बधा विकल्पो रोळाना अत्य सधि तरीके आवे छे उपर प्राचीन गुजराती काव्यमाथी लीधेला अवतरणमा आवता 'डारो-हारो' ए प्रासमा चरणाकुळनो अत्यसधि गागा छे, ते पछीनी प्रासबद्ध कडीमा आवतो 'हुतउ — रतउ' मा अरिल्लनो दालल सधि छे, तेनी उपर आपेला 'नर्मकविता'ना दृष्टान्तमा 'करजे-घरजे' ए चरणाकुळनो दागा सधि छे अने उपर आपेल फागमा आवतो 'वाणि-ह्राणि' ए गाल के गा‿ल सधि छे आ सधिमा अत्य ह्रस्व इ कदाच गुरु बोलातो हशे एवा तर्कथी आ गाल न जणाय पण स्पष्ट गालान्तना दृष्टान्तो ए ज पुस्तकमा अन्यत्र मळी आवे छे जेम के

लहूँअ लगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।
रत्नपरीक्षा रजवई राय अनु राण ॥ २ ॥

तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सुचत ।
रूपवत अनु सीलवत परिणाविय कत ॥ ३ ॥

साहु रायदेसलह पूतु ततु सेवइ पाय ।
कला करी रजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १०

जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्यसचय पृ २४०-४१

पृ २३८ उपरना 'सघपति समरसिंह रास'नी बीजी भाषा १४ रोळानी छे, तेमाथी मात्र गालान्त रोळा में उपर उतार्या छ अही 'वाणि-०हाणि' जेवी शकाने स्थान नथी कारण के त्रणेय रोळामा अते अकार आवे छे, अने गुजरातीमा अकार असदिग्ध ह्रस्व छे आ गालान्त रचना शृगारना फागुमा रूढ थई जणाय छ 'मनिधरि०' ए दृष्टान्त 'हेमविमलसूरिफाग'नु छे ते ज प्रमाणे नयसुन्दर, रूपचदकुवर रासमा फाग आपे छे त्या आ ज रचना छे आनी पेठे ज रोळानो परिच्छेद पद्य वहारना रूल्लाराआरभव अध्यवथी शरू थाय छे, अने मध्यमधि आगळ प्रास साकळी पण पड छे नयसुन्दर प्रासनी प्रस्तावना चोपाईथी करे छ अने पछी फागनो रोळा शरू थाय छे

(ढाळ — फागनी देशी)

ईम अनोपम अमृतथि गळी करे गोष्टि भलि भलि मन रळी;
कामिनी कनक गौर शरीरा, रूपचद रससागर हीरा १

आ पछी 'आहे' थी रोळा शरू थाय छे अही आवतो 'आहे' ते 'हेमविमलसूरिफाग'मा आवता 'अहे' थी अभिन्न हशे एम हु कल्पना करु छु. ए एक ज उच्चारने जुदी जुदी रीते लखवानी आ रीत हशे एम हु मानु छु

आहे हीरू मुद्रडी ऊपर तीणी परे तरस सयोग,
रस सुरत रमे हेजे ए, रोजें ए सवळा भोग २

आहे सहकारता अतिरस, अधरस अमृतपान,
करे कुवर तजी क्रीडा, क्रीडा अति असमान ३

सुन्दरी कहे तव स्वामी, कामी मूके रोळ;
देव भली नहि ए तुम्ह, अम्ह सही करशी टोळ ४

नन मन करता अगना, अगना भीडे सोय,
बाहुपाश कुचतस्कर, रसभर वधे दोय ५

चोळी कसण त्रटूके, मूके तोहि न कत,
घण गजमत करे वश, अकुश कर ज महत ६

आनदकाव्यमहोदधि ६, ८९

प्रसिद्ध 'वसन्तविलास' आ ज परपरानो छे

पहिलउ सरसति अरचिसु रचिसु वसतविलास
वीणु धरइ करि दाहिण वाहिण हसलउ जासु
वसततणा गुण गहगह्यॉं महमह्याँ सवि घनसार
त्रिभुवन जयजयकार पिका रव करइ अपार

रोळामा घणी वार अगियारने बदले बारमी मात्राए शब्द पूरो थाय छे केटलाक रोळामा त्या ज यति आवे छे एम 'रणपिंगल' कहे छे, अने आगळना दाखलामा आपणे एम जोयु पण छे अने रोळा जो गालान्त होय तो पहेला १२ मात्रा पछीनो भाग ११ मात्रानो थई रहे पहेली १२ मात्राने तेर गणवी मुश्किल नथी, अत्य लघु होय तो ते सहेलाईथी थई शके, एटले आ रचना सहेजे १३+११ दोहरा जेवी लागी जाय पण लागुी लाबी परपरा जोता तरत समजाशे के ते रोळा छे अने उपरना बन्ने दृष्टान्तोनी केटलीक पक्तिओ रोळामा बेसशे, दोहरामा नही बसे जेम के पहेला दृष्टान्तनी 'करे कुवर तजी क्रीडा' 'चोळी कसण त्रटूके', अने बीजा दृष्टान्तनी 'त्रिभुवन जयजयकार पिका रव' भाषाना शैथिल्यने लीधे घणी वार जातिछदोमा आवो भ्रम थवा सभव छे अने एटला माटे लाबा सन्धान् पठन करी तेमाथी निर्णायक थई शके

एवी पंक्तिओ लई तेना उपरथी छन्दना स्वरूपनो निर्णय करवो जोईए. देशीओमा तो ए पठननु घणु वधारे महत्त्व छे ए आपणे आगळ जोईशु

रोळानो अत्यसधि चोपाईना ज अत्यसधिना वधा विकल्पो धरावे छे रोळाने अते दागा अथवा गागा आवे ए तो आपणे जोई गया घणी जगाए अरिल्लनी पेठे गालल पण आवे छे ए पण जोयु घणी वार गाल आवे छे, —खास करीने रोळानी फागु रचनामा पण चोपाईमा पण सामान्य रीते नही स्वीकारायेला एवा अत्यसधिना जुदा ज प्रकारना विशिष्ट स्वरूपथी रोळामाथी प्लवगम अने आभाणक थया छे ते हवे आपणे जोईए

प्लवगम आपणने परिचित छे आभाणक मात्र अपभ्रश साहित्यमा ज आवे छे आपणे प्रथम तेनु स्वरूप जोईए 'छन्दकोष'मा तेनु लक्षण नीचे प्रमाणे आपेलु छे

मत्त हुवइ चउरासी, चउपइ चारिकल
तेसठिजोणि निवधी जाणहु चहुयदल।
पचक्कलु वज्जिज्जहु गणु सुद्धुवि गणहु
सोवि अहाणहु छदु जि महियलि वुह मुणहु॥ १७

छन्दकोष

अर्थमा ऊतरवा करता आ लक्षणछदना पठनथी ज स्वरूपनिर्णय करवो वधारे सलाहभरेलु छे स्पष्ट रीते उत्थापनिका

आभाणक दादा दादा दादा दादा दालल ल

एम थाय. हेमचद्र जेने रासक कहे छे ते पण आ आभाणक ज छे, जो के एनु लक्षण बहु गोळगोळ आपेलु छ अही पण एनो लक्षणछद उतारु छु

सुररमणी अगवयवहुविहरासयथिणिअ
जोईविदविदारम सय अमुणिअचरिय।
सिरिसिद्धत्थनरेसरकुलचूडारयण
जयहि जिणवर वीर सयलभुवणाभरण।

छन्दानु० पृ ३५अव

बराबर पाठ करता जणाशे के अही रोळाना छेल्ला चतुष्कलमा मात्र एक लघु अक्षर ज राखलो छ अने ए अक्षर लबाईने ए आखा चतुष्कलने पूरे छे सर्वत्र पाठ ए ज रीते थई शकश हजी सुधी आपण चतुष्कल रचनामा जे जे मात्रावडगो जोया तेमा आ सौथी वधारे मोटु छे, आमा त्रण अक्षर-

मात्राओ खडित थयेली छे. लघु चार मात्रानो प्लुत बने छे. अही में पहेला प्रकरणमा कहेलु के जातिछदोमा क्याक क्याक एकलो लघु ज त्रण के वधारे मात्रानो प्लुत थाय छे तेनु आ दृष्टान्त छे. आ छद रोळानो ज प्रकार छे आमा मध्ययतिनो उल्लेख नथी अलबत्त हेमचन्द्र रासकमा यति मूके छे—जरा जुदे स्थाने. तेनु रासकनु लक्षण "दामात्रानो रासको ढे.।" टीका: "दा इत्यष्टा दशमात्रा नगणश्च रासकः । ढैरिति चतुर्दशभिर्मात्राभिर्यति.।" (छन्दोनु० ३५अ) अर्थात् अढार मात्रा अने अते नगण (ललल)नु एक पाद अने तेमा चौद मात्राए यति. ए भेद यतिनी आगन्तुकता बतावे छे पण पठन परथी आभाणक अने रासक ए एक छे ए तरत जणाशे अने एक जगाए तो एम स्पष्ट कहेलु पण छे (जुओ आखी चर्चा माटे — प्राचीन गुर्जर छदो, पृ ८०–८१)

प्लवगम पण आभाणक जेवो ज रोळामाथी निष्पन्न थयेलो छद छे. बन्नेमा अक्षर मात्रा २१ छे बन्नेमा अत तरफ त्रण त्रण मात्रा खडित थई छे जे कई फरक पडे छे ते खडनपद्धतिनो छे. आभाणकमा छेल्ला चतुष्कलमा मात्र एक लघु ज छे, अने तेनी त्रण मात्राओ खडित थई छे. प्लवगममा छेल्ला बे चतुष्कलोमा थईने त्रण मात्राओ खडित थई छे आपणे जोईए के केवी रीते. प्लवगमनी उत्थापनिका ८मा प्रकरणमा नीचे प्रमाणे छे:

प्लवगम: दादा दादा दाल'ल दादा दालगा

आमा अते आवतो दालगा बे रीते आवे, ललल्गा अने गालगा. गुजरातीमा घणे भागे गालगानु ज प्राधान्य छे दलपतरामे आपेला लक्षणछंदमा सर्वत्र गालगा ज आवे छे अने ए लक्षणछद. पछी आपेला उदाहरणोना चार छदोमा मात्र बे पक्तिमा ज ललल्गा रूप छे, बाकी सर्वत्र गालगा ज छे आ गालगा रूप ज गुजराते पसद कर्यु छे एम कही शकाय आ रूप ज्यारे वपराय छे त्यारे प्रथम गा त्रण मात्रानो प्लुत बने छे अने छेल्लो गा चार मात्रानो प्लुत बने छे आ रीते गा॰ऽगा—, अने एम थईने त्या छेल्लु अष्टकल बनी रहे छे सूक्ष्म ध्यान दई पठन करता ए प्रमाणे प्लुतिओ जणाशे हु मानु छु के आ प्लुतिने लीधे ज आ छदनु नाम प्लवगम पड्यु छे, पण ए मारो तर्क छे, तेना पर हु मुख्य आधार राखतो नथी. मुख्य आधार पठन ज होई शके अने एवु पठन चतुष्कल रचनाओमा अनेक जगाए जणाई आवशे. दाखला तरीके आपणे जोयेलु 'सद्गुरु०' ए गीत एना दृष्टान्त तरीके हु सीधी प्रथम उतारु. तेमा दरेक ध्रुव पक्ति ३२ मात्रानी थती हती:

सदगुर। शरण वि। नाऽ अऽ। ज्ञाऽ नति
मिरटळ। शेऽऽ न। हीऽऽऽ। रे ऽऽऽ

(गत पृ ३४७)

एमां 'शेनही' उपर प्रमाणे ज गालगा छे अने ते उपरना मठनगायनमां अष्टकल बने छे तेनी पछी रे चार मात्रानो प्लुत आवी कुल बत्रीस मात्रा पूरी थाय छे वर्वे प्लवगममां गालगाने उपर प्रमाणे ज अष्टकल थतु गणे छे:

"प्लवगमनी मात्राओ संगीतना चालू व्यावहारिक तालोमांथी कोईनी साथे मळती नथी आवती, तेथी गावामां बहु अनुकूळता थई पडती नथी पण जो तेने संपूर्ण अंशे गायनने अनुकूळ बनाववो होय तो तेनो छेल्लो संधि जे'दालगा छे तेने बदले गालगा एवो करवामां आवे तो तेमानो प्रथम गा ३ मात्रा सुधी लबावी, तथा छेल्लो गा ४ मात्रा सुधी लबावी आखा वृत्तनी २४ मात्राओ करी, चोताल अथवा एक्का तालमां गाई शकाशे ने ए ज कारणथी मापमां पदान्ते गालगा (अथवा रगण) आणवा विशे खास विकल्प जणाव्यो छे "

गायनवादन पाठमाळा पु १ वि ३, छंदोगीत विनोद, पृ ६२

अनेक चतुष्कल रचनामां आ गालगा आठ कालमात्राओ पूरे छे आपणे थोडा बीजा दाखला लईए "ओधवजी संदेशो केजो श्यामने" ए देशी पण रोळानी ज देशी छे अने शुद्ध प्लवगममां बसे छे तेमां अंते आवतो गालगा 'श्यामने' ते अष्टकल छे श्या ऽ मन — ए रीते आवा अनेक दाखला परथी आपण चतुष्कल रचनामां गालगा अने अष्टकलनु समीकरण करी शकीए

हजी एक प्रश्न रहे छे अंते गालगाने बदले ललगा होय त्यारे प्लुतिनी व्यवस्था केवी रीते थाय? आपणे बन भगानी मिश्र रचनानो छंद 'दलपतपिंगल'मांथी उतारीए

इंद्रपुरी अनुसार, नगरिओ नोखमा,
कोटिध्वज सॉहुकार, गरजता गोखमा,
सुदंरिओ गुणसार, महा गुण मरदमा,
को जाणे कहिं ठार, गया मळि गरदमा

द पिं पृ १५

'नोखमा' 'गोखमा' स्पष्ट रीते 'नो ऽ खमा —' 'गो ऽ खमा —' एम बोलाय छे पण ए पछी 'मरद'मा' पण ए ज रीते एटले के पहेली बे मात्रा पछी

प्लुतिनी एक मात्रा वधारीने अने अंत्य गुरु पछी बे मात्रा वधारीने बोलाय छे. एटले के 'मर॒दमा —' 'गर॒दमा —' ए रीते. पठन करता आ स्पष्ट थशे. पण खास प्रयत्न करीने गरदमा ᴗᴗᴗ एम अंत्य गुरुने पाचमात्रानो प्लुत करवो होय तो करी शकाशे. जो के एवो पाठ प्लवगममा में साभळ्यो नथी पण एवु पठन करीए तो त्या चरणने अंते दालगालदा संधि आवे आ रीते:

गर द मां ᴗᴗᴗ
दा ल गा लदा

हजी आनी एक तद्दन भिन्न प्रकारनी पठनपद्धति स्वीकारवी जोईए, जे मने नरसिंहरावनी प्लवगम विशेनी चर्चा उपरथी सूझे छे[१] एमनो ज दाखलो लेता ते मारी रीते नीचे मुजब मुकाय.

छने थाती छाय' छडीपर ᴗᴗᴗ छाजता
दादा दादा दाल' लदा दा ललल गालगा

आ पद्धति प्रमाणेनु पठन में कोईक ज वार साभळ्यु छे पण ए छे ते रूपे शास्त्रीय छे अने एना जेवी ज छंदोभगीमा एना जेवु ज पठन बीजे में साभळ्यु छे एटले आने स्वीकारवु जोईए. अही ध्यानमा आव्यु हशे के अही प्लुति अने अंत्य गालगा एकपिंड बनी दालगालगानो द्वैतीयीक संधि बने छे. अने ए रीते रोळानी २४ मात्रा थई रहे छे

आ प्लुतिव्यवस्थाथी आपणे आ छंदोनो मेळ अने तेना संधिओना आवर्तनो स्पष्ट करी शकीए छीए तेथी प्लवगमना दलपतरामे आपेला लक्षणमा जे अपूर्णता के विसवाद देखातो हतो तेनो खुलासो थई जाय छे. दलपतराम प्रमाणे प्लवगमनी उत्थापनिका:

। । । । ।
दादा दादा दाल'ल दादा दालगा

चार चार मात्राए ताल पडे छे एटले १, ५, ९, १३, १७ एम पाच ताल पडे छे पण प्लवगमनी मात्रा कुल २१ छे, तो १७मी पछी २१मी उपर ताल केम न पडयो? बीजो स्वाभाविक प्रश्न ए ऊभो थाय छे के प्लवगमना स्वाभाविक पठनमा अंत्य मात्रा पहेली मात्रा उपर ताल पडे छे, तो तालनी

१ जुओ नरसिंहरावनु Gujarati Language and Literature Vol. II, p. 287. एमणे अही प्लवगम अने गरबा विशे कह्यु छे ते लांबी चर्चा मागे छे तेथी ए आ प्रकरणना परिशिष्ट तरीके मूकी छे.

व्यवस्था केवी रीते करवी? अक्षरमात्रा गणता ए २०मी मात्रा थाय. बन्नेनो खुलासो में दर्शावेल पठनमा रहेली प्लुतिमात्राओ मूकवाथी थई जाय छे, अने जातिछंदोमा अंत्य एक के बे संधिओनी अक्षरमात्रा खंडित थाय छे ए नियमने प्रबळ समर्थन मळे छे.

में उपर कह्यु के आभाणक अने प्लवंगम बन्ने रोळानी नण अक्षरमात्रा खंडित करवाथी थती भिन्नभिन्न रचनाओ छे आ बन्ने भेदोनो विकल्प स्वीकारीने तेनी एक ज उत्थापनिका आपवी होय तो नीचे प्रमाणे थाय.

| | | | |
दादा दादा दादा दादा दाळदा

वच्चे आवती यति जे जातिछंदनु अंग नथी ते अही मूकी नथी कारणके आभाणकमा नथी. अने अंते दालदा मूक्यु छे तेमांथी आभाणकनी दालगा तेम ज प्लवंगमनी गालगा तेम ज ललगा बन्ने भंगीओ निष्पन्न करी शकाशे. आ बन्ने रचनाओनु पठनगान एटलु बधु एक सरखु छे के कविओए एक ज छंदमा बन्नेनो प्रयोग कर्यो छे दाखला तरीके अब्दुल रहेमान जे छन्दशुद्धि माटे आग्रह धरावतो जणाय छे तेणे एक ज छंदमा बन्ने प्रयोज्या छे:

जिणिहउ विरहह कुहरि एव करि घल्लिया
अत्थलोहिं अकयत्थि इकल्लिय मिल्हिया।
सदेसडउ सवित्थरु तुहु उत्तावलउ
कहिय पहिय पिय गाह वत्थु तह डोमिलउ ॥९२

सदेशरासक, पृ ३६

अही पहेली बे पंक्ति प्लवंगमनी अने बीजी बे आभाणकनी छे अब्दुल रहेमानने तो आभाणक सुविदित हतो पण ए रचनानो उल्लेख पण नहीं जाणनार दलपतरामे केवळ अंतरसूझथी आ बन्नेनु मिश्रण करेलु छे के ह. ध्रुवे प्लवंगमना लक्षण सबंधी नोंध करतां ते तरफ आपणु ध्यान खेंचेलु (गत पृ. ३१२) आपणे फरी जोईए

हिंदू मटी हु हाल, थयो छु युरोपियन,
कोई न जाण मने, हतो आ हिंदु जन,
चीन विलायत जाज, राज मारु ठर्यु,
हिंदूनी हद देवि, अधिक तो आदरू. ५०

दलपतकाव्य भा. २. पृ. २७

अही पहेली बे पंक्तिओ आभाणकनी छे, अने बीजी बे प्लवंगमनी छे

हवे रोळानी मुख्य मुख्य लगात्मक रचनाओ जोईए तेमा सौथी प्रसिद्ध मत्तमयूर छे

मत्तमयूर गागा गागा। गालल गागा ललगा गा

सस्कृत साहित्यमा आ वपरायो छे गुजरातीमा पण रमणभाईए एक जगाए वापर्यो छे हु बे ज पक्तिओ उतारु छु

जागो पुत्रो हिंदतणा आळस छोडी,
धारो धारो शू मददे देव ज कोई,
कविता अने साहित्य वो ४, पृ १४९

आमा कुल पाच चतुष्कलो छे अने अत्य चतुष्कल खडित थवाथी त्या एकलो गुरु रहे छे जे पठनमा चार मात्रानो प्लुत थाय छे आनी पछी असबाधा.

असबाधा गागा गागा गा। लल ललगल गागा गा

अही यतिने खसेडीने पाचमा गुरु पछी मूकी छे अलबत्त आ यति जातिछदनी ज यति छे बाकी चतुष्कलो उपर प्रमाणे ज छे आ बहु वपरातो नथी आ पछी कान्तोत्पीडा अने जलधरमाला लईए

कान्तोत्पीडा गालल गागा गालल गागा गागा

जलधरमाला गागा गागा। ललगल गागा गागा

पहेलामा यति नथी बीजामा मत्तमयूर जेवी चार गुरु पछी यति छे बन्नेमा पाच ज चतुष्कलो छे, छदु आखु खडित थयेलु छे, अने ए आखा चतुष्कल जेटलो अही विराम आवे छे

उपर आपेला छदोमा मुख्यत्वे गागाना आवर्तनो छे तो आ ज वर्गमा आवता भ्रमरावळी छदमा मात्र ललगाना पाच आवर्तनो छे बीजी रीते कहीए तो आमा तोटक करता ललगानु एक आवर्तन वधारे छे दलपतराम एनु बीजु नाम नलिनी आपे छे

भ्रमरावळी ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

पाच आवर्तनो होवाथी आमा पक्तिने अते एक ललगाना आवर्तन जेटलो विराम आवे छे अने ए रीते एमा पूरा छ एटले बेकी आवर्तनो थई रहे छे आ छद गुजरातीमा पण वपरायो छे कविश्री खबरदारे आ छदने सॉनेट माटे वधारे अनुकूळ गण्या छे, अने अग्रेजी सॉनेटना पर्याय तरीके एओ एने ध्वनित करे छे नर्मद उपरनो एमनो सॉनेट आ छदमा छे थोडी पक्तिओ लईए

विर नर्मद! तूं जगमा लडि जंग गयो
तुज वीरछवी निरखी चख अश्रु भरे!
कइ पुष्प नवा खिलता तुज प्रेम-करे
स्थळ सर्व विखेरि दई कृतकृत्य थयो;

विलासिका, पृ. २६

चतुष्कलोनां छ आवर्तनोवाळा रोळा पछी आठ आवर्तनोवाळो बत्रीस मात्रानो सवैयो आवे. तेने बत्रीसो सवैयो ज कहे छे. सामान्य चोपाईना एक प्रकार चरणाकुळना लक्षणमा अंते बे गुरु आवे एवो सामान्य निर्देश आवे छे अने छता त्या एक गुरु पण चाले छे तेम ज बत्रीसा सवैयाना लक्षणमा अते बे गुरु आवश्यक गणे छे पण एक गुरु चाले छे. तेम ज जेम सामान्य चोपाईना अरिल्ल के अडिला प्रकारमा अंते दालल आवे छे तेम ज सवैयामा पण आवे छे. हुं 'अंगदविष्टि'मांथी एक दृष्टान्त लउं छुः

सवैयो

हूकम होय हजूरी केरो, सोपी नाखु वाघो सायर,
हूकम होय हजूरी केरो, महाकाम करवा छु मायर;
हूकम होय हजूरी केरो, जुद्ध जोर करु त्या जाहर,
कासद काम सोप्यु बरम मुजने, छेक मुने केम कीधो कायर? ४४

वृ. का. दो १,४३४–३५

छेल्ली पक्ति खडबचडी छे ते सरखी करीने वाचवी पडे एवी छे, बाकीनी बराबर. छे. बधीमा अत्य चतुष्कल दालल आवे छे अते एक गुरुनु दृष्टान्त पण ए ज काव्यमाथी मळी रहे छे.

विष्टि काम करवु ते शाने, करगरि बोल शा माटे कहिये?
नगर डगर करवू निरवशी, शत्रुवचन शा माटे सहिये?
सुत परिवार सँघारू एना, हवे राज बेसी बयम रहिये?
लक्ष घसा सीता अहिं लावू, जरूर पणे अयोध्या जइए. ५२

एजन, पृ. ४३६

तेम ज चोपाई सामान्यनो जे विशेष प्रकार चोपाई तरीके ओळखाय छे तेमा अत्य चतुष्कल एक मात्रा जेटलु खडित थई गाल बने छे, तेम ज सवैयामां पण बत्रीसानो एकत्रीसो गालान्त सवैयो बने छे, अने चोपाईनी अखडित रचना करता चोपाईनी गालान्त रचना जेम वधारे लोकप्रिय छे, तेम ज

बत्रीसा करतां एकत्रीसो वधारे लोकप्रिय छे. बन्ने सवैयानी उत्पापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

सवैयो बत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा

सवैयो एकत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

सोळ मात्राए यति छे पण ते छंदनु अंग नथी. एटले के अविचल नथी. सवैयानी पंक्ति घणी लांबी छे, चतुष्कल रचनामां ए ज सौथी वधारे लांबी छे, एटले एमा अनेक जातनी छंदोभंगीओने अवकाश छे. तेमा सौथी पहेलां हुं अंत्य संधिओनी अक्षरमात्रा खंडननो प्रकार हाथमां लउं छु. सवैयानी मूळ बत्रीस मात्रा तेमाथी एक तूटीने एकत्रीसो थयो. ए खंडनव्यापार आगळ चालता त्रीसो सवैयो थाय. आपणे आगळ जोई गया ते रुचिरा एवी रचना छे (गत पृ ३१३). पण चोबोला तरीके ३० मात्रानी जे रचना प्रसिद्ध छे तेने पण हुं सवैयो ज मानुं छु. दलपतरामे ए आपेल नथी. पण 'रणपिंगल'मां ए आवे छे. सामान्य रीते आ १६ अने १४ मात्रानी अर्धसम जाति मनाय छे. 'प्राकृतपैंगल'तेनु आ ज लक्षण आपे छे (प्रा. पै. पृ. २२६). पण 'रणपिंगल' पोते तेने त्रीसी रचना कहे छे, ए ज यथार्थ छे. आम मध्ययतिने चरणान्त गणी त्यां ज पंक्ति पूरी थयानो घणी वार भास थाय छे अने ए भास पाछो स्वतंत्र छन्दोविकासने उपकारक पण थाय छे. 'रणपिंगल' चोबोला नीचे प्रमाणे आपे छे:

"चोबोला, चोमाला, चतुष्पया, चतुर्वंना, चतुर्वचन, चउबोला: १–३ विषम पदमां १६ मात्रा. २, ४ समपदमां १४ मात्रा. प्रत्येक दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

विषम पदे नरि सोळ कळा पछि, समभां चौद सदा धरजो;
प्रथम उपर पछी श्रुति श्रुति चढना, तालो चोबोले करजो. ३५
त्रीस कलाना वे दल छे पण, चार पदे बोलायां छे;
चतुर्वचा पछि नाद रहे छे, चतुष्पया भांपाय छे." ३६

आ छंद गुजरातीमां बहु वपरातो नथी, पण तेनु दृष्टान्त हरिने महत्त्व छे. सवैयानो मार्ग ज जरूर शोध के पटनना तेनो अंत्य गुरु चार मात्रानो थई चतुष्कल पूरुं करे. आ ज गद्यलयविस्तारमां आगळ चाल्ना चोपायो आवे. जेमां २८ मात्रा छे अने. चतुष्कलना आठ आवर्तनो छे. आ छंद गुजरातीमां पृथक्

वपरायो छे. बत्रीसी रचनानो अत्यार सुधी गणावेली बधी शाखाओमां आ सौथी वधारे वपरायो छे. देशीओमा वपराती चोपाई दावटी ते आ प्रकार छे. 'कान्हडदेप्रबंध'मां जे पवाडु आवे छे ते आ ज प्रकार छे:

गमि गमि मारेवा लागा, मलिक सवे वचि कीधा
अंगे अंगि विहु दल साह्या मलिकि उँथला दीधा. ५१
सींगिणि गण सपराणा गाजइं; साह्या आवइ तीर;
ऊडइ लोह वीज जिम झबकइ, भडई मोटा पीर. ५२
कान्हडदेप्रबंध (आवृत्ति २) पृ. ३४

आ दृष्टान्त उपरथी तरत जणाशे के जेम षोडशी रचनामां दागान्त साथे गालान्त रचना छे, जेम रोळामा दागान्त अने गालान्त बन्ने रचना छे, जेम सवैयामा बत्रीसो अने एकत्रीसो सवैयो छे तेम चोपायामा पण अठावीशो अने सत्तावीशो, दागान्त अने गालान्त बन्ने रचनाओ छे. दयाराम आ चोपाया रचनाने दुवैयाछंदने नामे प्रयोजे छे आ नाम 'दलपतपिंगल'मा नथी पण हिन्दी 'छन्द-प्रभाकर'मा 'दोवै' (छ. प्र. पृ. ६९) मळे छे त्या तेनु स्वरूप १६–१२ अते कर्ण (=बे गुरु) एम आपेलु छे पण एक गुरु पण चाले एम दर्शाविलु छे. पण दयाराम २७सी २८सी बन्ने रचनाओ दुवैया नामथी वापरे छे

जयश्री वल्लभहरि हरिवल्लभ श्रीम्हाप्रभु वागीश,
श्री कृष्णानन विश्वानर परमानद म्हालक्ष्मीश.
दयारामकृत काव्यमणिमाला भा ३जो, पृ. ९९

कुरंगाक्षी कमलाक्षी कामलता कदर्पा रगा,
केतकीं मालतीं माधवीं मुग्धा मजुकीं माननीं गगा.
एजन, पृ. १०७

पहेली बे पंक्तिओ २७ मात्रानी छे, बीजी बे २८नी छे. आ रचनामां १६ मात्राए यति सचवाई नथी, ए यतिनी अनिश्चलता बतावे छे. आ रचनामा छेल्लु चतुष्कल कालु पठनमा विराम रूप ले अने त्या अंते गाल आवे त्यारे गाल चोपाईनी पेठे गा⏑ल बने. अने चोपाईमा जेवी लगान्त जेकरी रचना छे तेवो चोपायानी शुद्ध जाति रचना जोके गुजरातीमा मळी आवती नथी, पण चोपायानिष्पन्न पदोमा एवी लगान्त रचनाओ छे. जेम के स्व. मेघाणीनु—

नवा कलेवर धरो हसला नवा कलेवर धरो
भगवी कथा गई गधाई साफ चदरिया धरो
हसला नवा कलेवर धरो

अने आवती टेक टाळीने वाचता आ शुद्ध लगान्त चोपायो छे दयारामनु

प्रेम वश अवतरे प्रेमरस एना उरमा ठरे "

ए पण लगान्त रचना छे[२] आ पद छे, एने शुद्ध जातिछदमा नही गणी शकाय, पण आगळ उपर आ रचनानो उल्लेख करवानो जरूर छे माटे *अही आ रचनानु दृष्टान्त आपु छु अने जो के अत्यार सुधी लगान्त चोपायो* वपरायो नथी पण ते वापरी शकाय एवो छे ए आ उपरथी जणाशे आ प्रमाणे बधी चतुष्कल रचनाओमा अत्य सधिओ एक सरखी रीते ज खडित थाय छे

आ चोपायाना स्वरूप विशे मारे विशेष हवे ए कहेवानु के आ ज रचनानो पहेलो यतिखड स्वतत्र पक्ति होय ए रीते खडित थता दोहरा रचना *निष्पन्न थाय छे अने तेम थता पण तेना प्रासनु स्थान* जे हतु ते ज रहे छे दोहरो, चोपायानी २७सी रचनामाथी निष्पन्न थाय छे कई रीते ते बन्ने पासे पासे मूकी बतावु छु

चोपायो दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गाल

दोहरो दादा दादा दाल्दा' दादा दादा गाल

बन्नेमा गाल आगळ ज प्रास आवे छे

आ दालदा ते अभाणक-प्लवगमनी पेठे अष्टकलनु खडित रूप छे अने ए बे छदोनी पेठे ज, प्लुतिनी मात्रा दालदाना जुदाजुदा पर्यायोमा उमेरता त्या अष्ट-कला थई रहे छे जेम चाबोलो द्विपदी छ, पण यतिस्थाने चरणान्त गणा-यायी ते चार चरणनो गणायो तेम ज आ दोहरो पण द्विपदी ज छे, पण यतिस्थाने चरणान्त गणावाथी ते चतुष्पद गणायो, अने चतुष्पद गणावाथी पछी ते अर्धसम मात्रामेळ जाति गणायो बोलवानी सगवड खातर तेमा

---

२ 'गीतगोविंद'मा शुद्ध लगान्त चोपायो मळे छे:
समुदितमदने रमणीवदने चुम्बनवलिताधरे
मृगमदतिलक लिखति सपुलक मृगमिव रजनीकरे।
गीतगोविंद १५।२

चार पदो गणीए तो भले पण ए स्वरूपे द्विपदी छे जेमाथी दोहरो ऊतरी आव्यो छे ते मूळ चोपायो द्विपदी छे, अने चोपाया द्विपदीनो मूळ प्रास साचवीने तेमाथी ऊतरी आवेलो दोहरो पण द्विपदी छे दोहरामा दलान्ते गाल एवु लगात्मक रूप छे ए चोपायाने आभारी छे, अने एना पंक्तिना प्रारभमा आवता यतिखडमा कोई लघुगुरु स्थिर नथी ए पण एना पूर्वज चोपायाने आभारी छे प्लवगममा अने आभाणकमा दालगा अने दाललल एवा लघुगुर्वात्मक रूपो स्थिर थया तेनु कारण ए त्या चरणने अते आवे छे ए छे दोहराना दालदा स्थान चरणने अते मूळथी नथी पण जेम जेम दोहरानो पहेलो यतिखड स्वतत्र चरण थतो गयो तेम तेम त्या दालगा रूप निश्चित थतु गयु छे गुजरातने गुर्वन्त रूप अने तेमा पण गालगा माटे पक्षपात छे पठनमा आ गालगा, गा⌣लगा — रूप ले अने अत्य गा⌣ल आव्या पछी एक चतुष्कल जेटलो विराम आवे, अने ए रीते रचना पूरी आठ चतुष्कल जेटली थई रहे

बर्वे आ मतने पोतानी रीते टेको आपे छे:

"जो के दोहरो ए सपूर्ण अशे गेय (सगीतक्षम, गायनने अनुकूळ) नथी तो पण जो गेय करवो होय तो उत्तम पक्ष ए छे के पहेला अने त्रीजा चरणनी अतनो दालदा ए सधि छे तेने गालगा एवु स्थिर रूप आपवु अने तेमाना पहेला गुरुने ३ मात्रा तथा बीजा गुरुने ४ मात्रा सुधी लवाववो, अने ते ज प्रमाणे बीजा तथा चोथा चरणना उपान्त्य गुरुने ३ मात्रा सुधी लवाववामा आवे तो तेथी आखा वृत्तमा सगीतना तालना ४–४ मात्राना गाळा पडशे, ने पछी ते चतुश्र जाति एक तालो, लावणी के चलतीमा गवाशे अथवा कदाच गालगान बदले प्रथमना गा ने बदले दा राखी (विषम चरणने) अते लगा एवु कायमनु रूप रखाय तो पण सारु केवळ गरबी वगेरेमा ज्या ज्या साखीओ गवाय छे ते साखी ते दोहरो ज छे, मात्र विषम चरणने अते लगा रखाय तो पण गावा तरीके, अने साखी तरीके पण दोहरानो उपयोग करी शकाय तेम छे"

गा वा पा पु १ वि ३ पृ ७८

अही मारा मतने सपूर्ण समर्थन मळे छे मात्र एटलु ज के समचरणने अते गा⌣ल आव्या पछी एक चतुष्कल जेटलो विराम आवे ए एमणे कह्यु नथी पण लावणीमा ए गान लेवु होय तो त्या पूरी ३२ मात्रा थवी ज जोईए ए एमना वक्तव्यमाथी फलित थाय छे बीजु एमणे गालगाने बदले दालगा आवी

शके एम कह्यु एनो अर्थ ए थयो के त्या गालगाने बदले लललगा रूप पण आवे अने एम थाय त्यारे—जो के बधेंए स्पष्ट कह्यु नथी पण—त्या लललग।।ऽऽएम अत्य गुरु पाच मात्रानो प्लुत बने अने ए रीते दालगा-लदा जेवो अष्टकल सधि बने जेनी छेल्ली त्रण मात्राओ अनक्षर थाय अने त्या विलबन के विराम आवे हवे दाल्दाना पर्यायोमा एव ज पर्याय जोवो बाकी रहे छे दालल ल, जे आभाणवनी भगीने मळतो छे में आगळ कह्यु तेम आ भगी प्राचीन छे, अने जूना अपभ्रश साहित्यमा आ भगीवाळा दूहा घणा मळे छे त्या त्या अत्य लघुने लबावीने चार मात्रानो प्लुत करवो जोईए

तुलसीदासना रामायणमा आवा दूहा सारी सख्यामा आवे छे उदा-हरणार्थ हु एक उतारु छु

मोहसम दीन न दीनहित' तम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवशमणि' हरहु विषम भवभीर।।

आश्रम भजनावलि पृ ९३

में ध्यान दईने तुलसीदासना अनेक दूहानु पठन-गान साभळ्यु छे, अने तेमा जोयु छे के ज्यारे ज्यारे आ रीते दालल ल आवतु त्यारे अत्य लघुनु प्रलबित पठन-गान थई त्या आखु चतुष्कल पुरातु

हवे एक बाबत मारे स्पष्ट करवी जोईए में उपर कह्यु के दोहराना सम मतिगडनी अत्य सधि गाऽल लागाई पछी एक चतुष्कल जेटला त्या विराम आवे चोपायामा अने दोहरामा बनेमा श्रेम थाय छे पण ते साथे ओ पण नोधवु जोईओ के दोहराना साखी जेवा प्रलबित गानमा गालनो गुरु सात मात्रा सुधी लबाई पछी लघुथी ए अष्टकल पूरु थाय छे आ रीते

दादा दादा गा——ऽल

सगीतमिश्र पठनमा तो आम थाय छे पण जरा पण स्वर-वैविध्य विनाना पठनमा शु थाय छे ? सूक्ष्मतायी जोता मने एम जणाय छे के एवु पठन बे रीते थाय छे वर्गमा शिक्षक पठन करतो होय एवा विधिसर पठनमा गालगाना पहेला गुरुमा पण प्लुति नथी आवती त्या मात्र पहेला गुरु उपर ताल आवे छे अने छेल्ला गा पछी त्रण मात्रानो विराम आवे छ एटले के त्या दाल्गाल्दा होय ए रीते मात्र दाल्गा बोलाई बाकीनी मात्रा अनक्षर रहे छे, ते साथे ध्वनिशून्य पण बने छे एटले के त्या त्रण मात्राना विराम

रहे छे अने बीजा यतिखडमा ए ज रीते त्या पाच मात्रा ध्वनिशून्य रहे छे. पण माणस केवळ पोता माटे वाचतो होय के गोखतो होय त्यारे आटलो ध्वनिशून्य गाळो पण ते पाळतो होतो नथी. त्या पठनवार दादा दादा गालगा एम प्रवाहबद्ध गालगाना पहेला गुरु पर ताल नाखी त्याथी ताल छोडी दे छे. अने बीजो यतिखड आवता त्या ताल शरू करे छे. अने ए ताल पण गालना तालथी छोडी दई, तरत बीजो यतिखड शरू करे छे एम थाय छे. ताल सळग चालतो होतो नथी. छता दरेक पक्तिमा चतुष्कल सधिना ज आवर्तनो होवाथी एनो घोष मेळबद्ध लागे छे. हु मानु छु के ए मेळ लागवामा दोहरानु वैधिक पठन सळग तालवाळु होय छे एनो सस्कार पश्चादभू तरीके काम पण करे छे पण आवु, तालनु तूटक पठन थई शके छे माटे ताल पोते सळग नथी, अथवा न होय तो चाले एवु निगमन मने स्वीकार्य नथी. जातिछदोना विकासमा क्याई पण ताल तूटक चालतो होय एवो प्रसग में जोयो नथी. ताल जाणी जोईने छोडी शकाय छे, अने पाछो ते पकडीने आगळ चाली शकाय छे. शिक्षक वर्गमा कविता शीखवतो होय त्यारे दोहरानु चरण पठी ए चरण अने ताल बन्नेने छोडी दई विवरण करे, अने विवरण पूरु थता बीजु चरण ताल साथे पाछो उच्चारे छे, त्या एना विवरण दरमियान ताल चालतो नथी होतो एम, प्रयोजन माटे, पठन अने ताल बन्नेने छोडी शकाय छे पण छन्दनु शुद्ध स्वरूप तालबद्ध छे, अने ए ताल जे कृतिमा अभिप्रेत होय ते कृतिमा सळग होय छे

दूहो चोपाया साथे उपर दर्शाव्यु तेम मार्मिक सबध धरावे छे ए बाबत अनेक रीते छदोमा जणाई आवे छे घणी वार एक ज कडीमा एक पक्ति दोहरानी अने एक चोपायानी आवे छे

राज पायने पारखू, नाडी ने वळि न्याय,
तरवृ ततरवू तस्करवू आठे आपकळाय.

आ प्रसिद्ध कहेवत छे कहेवतो घणी शिथिल रचनावाळी होय छे, पण उपरनी कहेवत पिंगळनी दृष्टिए सफाईवाळी छे तेमा पहेली पक्ति दोहरानी छे अने बीजी सतावीसा चोपायानी छे दयारामना दोहरामा आवा मिश्रणो मळी आवे छे:

नानाविधि स्तुती करी, परम पुरुष आनद,
जय जय जय श्रुति गीत गाय छे, भाखी नाना छद.

भूमि रक्षण करवा माटे धार्यो वराह् अवतार,
पछे कपिल रूपे थई, कह्यो सांख्य वीचार १९
स्वायंभुवना द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मति धीर
तेनो ध्रुव बाळक थयो, वळि उत्तम गभीर ७१
ध्रुवे राज्य घणु कर्युं, पछ गया निज लोक,
सर्वनि ऊपर सदा बिराजे, ध्रुव सदा निःशोक ८२

दयारामकृत परचुरण कविता (प्रा का सी),पृ १४९–१५६

आर्वाचीन कवितामा पण आवो एक प्रयोग मळी आवे छे

एकल खाव, एकल जीव्, एकल रमवु, ईश!
एकल वाटे विचरवु, करम न मदी रखोश

शेपना काव्यो, पृ ८०

सामान्य रीते दोहराना बधारणमा गालान्त यतिखंड ज स्वीकाराय छे पण अन्य स्वरूपना अरय सधिवाळा चोपायाना यतिखडो दोहरामा ऊतरेला मळी आवे छे जेमके—

वळीवळीने रातभर टपटप नेवा चुवे
आभ झरूखे एकलु कोण रही रहि रुवे.
ञमके तमरा तिमिरमा, तरुथी जलकण खरे,
बहाळा वदली पण पर फोरा खखडया करे,
घन गगडे, थथरे धरा, छाती ऊठे छळी,
पडघा गिरिगोरभता प्रगटे उरथी वळी!
पडता फरता जीवनी कोण वेदना कळे?
टपटप नेवांरव थकी लची पोपचा ढळे

आतिथ्य, पृ १३८

आनी उत्थापनिका आ प्रमाणे थाय

दादा दादा दाऽदा' दादा दादा ल्गा

शुद्ध दोहरामा आ आमा फेर एटलो ज छे के दोहराना प्रासधारक अरय गान सधिने बदले अहीं ल्गा सधि छ बीजी रीते कहीए के आ गालान्त चोपायाने बदले ल्गान्त चोपायामाथी ऊतरी आवेल छे एना जूना एक बे दाखला मळे छे ते मूकु छु

मेळो रयो नथी जाणता, जाणता जुजवा थवे
सरोवर घणु सभाग्या, हगा मे रामण गय

ह्रस्व दीर्घनी घणी छूट लेवी पडे छे, पण लोकगीतना दूहामा आवी छूट घणी वार आवे छे एक बीजो दाखलो पण में सघरेलो छे ते मूकु छु ओढा अने मोरना टूका सवादमा ए मोरनी उक्ति छे·

अमे डुगरवळना राजिया काकर चणी पेट भरा,
मारी रते ना बोलु तो हैंडा फाटी मरा.

दूहो ललकाराता अदर गद्य टूकडा पण बोलाता, तेम अही थयु छे तेवा टुकडा काढी नाखता दूहो नीचे प्रमाणे थाय.

डुगरवळना राजिया, कावर पेट भरा,
मारी रते न बोलु तो, हैंडा फाटी मरा

आ बन्ने दूहानी मारी वाचना साची होय तो आ लगान्त चोपाया साथे सबध धरावता दूहा छे तेम ज दागान्त चोपाया उपरथी ऊतरेला दूहा पण मळे छे.

खाओ पिओ सुवास ल्यो, मनमा राखो हेता,
मरी जवु छे मानवी, छातीएँ हाथ देता

बीजो वधारे सफाईवाळो छे —

हालू हालू नर थयो, राख्यो न रहे रगे,
हाथ हने पग पेंगडे, ताणी भीडया तगे[1]

आम दोहराना दलना आखा प्रासधारक यतिखडमा चोपायाना प्रासधारक यतिखडना बधा विकल्पो जणाय छे

दूहो अति सुदर छे अति लोकप्रिय छे अने अति प्रसिद्ध छे तेथी तेने विशे बहु झीणवटथी चर्चा थयेली छे जेम सस्कृतप्राकृत पिंगलकारोए बधी रचनाओ विशे चर्चा न करता आर्या विशे ज झीणवटथी चर्चा करी तेम अपभ्रश-हिंदी पिंगळोमा दोहरा विशे थयु छे एटलु ज नही दोहराना स्वरूपनी चर्चाना घणा सूचनो आर्यामाथी लेवाया छे, एम हु मानु छु आपणे पण दोहरा विशेनी ए चर्चा अही जोईए

---

१. एवा ज बीजा दूहा

चदनका कटका भला, अवर काठका भारा;
पडितकी दु घडी भली, मूरखशू जनमारा
आनदकाव्यमहोदधि, वॉ ६ रूपचदकुवररास पृ ५३

'प्राकृत पैंगल' मुख्यमुख्य जातिछंदोनी बाबतमां छंदना एक गुरुनी जगाए बे लघु मूकवाथी जे भिन्नभिन्न आकृतिओ थाय तेनां जुदांजुदां नामो आपे छे. ते प्रमाणे दोहानी भिन्नभिन्न आकृतिओना ते जुदांजुदा नामो आपे छे. जेम के २२ गुरु अने ४ लघु मळी २६ अक्षरना दूहानुं नाम भ्रमर छे. दोहरामा आथी वधारे गुरुओ न आवी शके अने आथी ओछा लघु न आवी शके. उत्थापनिका करी जोईए:

गागा गागा गालगा गागा गागा गाल

कुल तेर अक्षर थया तेमां ११ गुरु छे अने २ लघु छे. ते उपरना आंकडा साथे मळी रहे छे. 'प्राकृत पैंगल' आनु दृष्टान्त पण आपे छे जेनुं भाषान्तर कंईक नीचे प्रमाणे करी शकाय:

छे अर्धांगे पार्वती जेने गंगा शीष,
जे व्हालो छे लोकने, वदूं हूं ते ईश.

आ तो छंदोनुं गणित थयुं पण आ पछी 'प्राकृत पैंगल' दूहाना लघुगुरुनी संख्या विशे आगळ कहे छे, ते जोईए:

बारह लहुआ विप्पी तह बाईसे हिं खत्तिणी भणिआ।
बत्तीस होइ वेसी जा इअरा सुद्दिनी होई ॥८३॥
प्रा. पै. पृ. १४४

अर्थ एवो छे के दोहारचनामां बार लघु होय तो ते ब्राह्मणी, बावीसे क्षत्रियाणी, बत्रीसे वैश्य अने इतर ते शूद्रिणी गणाय. इतरनो अर्थ उपर आपेली संख्याथी वधारे लघुवाळी रचना ते शूद्रा एवो अर्थ थाय. आ बधामा सिद्धान्त मने एवो जणाय छे के गुरु तूटीने जेम जेम लघु वधता जाय तेम तेम रचना शिथिल थती जाय. अने आ सिद्धान्त बधी जातिरचना माटे हुं साचो मानु छु. अक्षरमेळ वृत्तोमा पण आपणे आ ज नियम उपर आव्या हता, अने अहीं पण ए ज नियम साचो पडे छे.

'प्राकृत पैंगल' एक बीजो पण नियम उपर जेवी ज आलंकारिक भाषामा कहे छे.

जस्सा पढमहिं तीए जगणा दीसंति पाअ पाएण।
चंडालह घर रहिआ दोहा दोस पआसेइ ॥८४॥

जेना पहेला अने त्रीजा पादमां जगणो होय ते चंडालना घरमां रहेली दोहा-रचना दोष प्रकाशे छे. अही विषम चरणमा जगण निषिद्ध कर्यो छे, ते मात्र

प्रारंभमां ज निषिद्ध कर्यो छे के आखा चरणमां ते स्पष्ट नथी. गुजराती पिंगलोमां आ संबंधी कशुं कह्युं नथी पण हिंदी 'छंद प्रभाकर' आ लक्षणनी चर्चा दोहा (चंडालिनी) एवा नामथी करे छे 'प्राकृत पिंगल'मां चंडाल शब्द मात्र निकृष्टताना अर्थमां छे पण 'छंद प्रभाकर' ए जाणे दूहानो प्रकार होय एम गणता जणाय छे कदाच कोई परंपरामां एवो शब्द रूढ थई गयो हशे. आपणे सविस्तर एनुं वक्तव्य जोईए

"दोहा (चंडालिनी)

ल०— जहां विषम चरणनि परै, कहूं जगन जो आन।
बखान ना चंडालिनी, दोहा दुख की खानि॥

टी०—गणागणका विचार प्रधानतः छन्दके आदिमें ही देखा जाता है अतएव दोहेके पहले और तीसरे चरणके आदिमें कोई ऐसे शब्दका प्रयोग न करे कि जिसके तीनों वर्ण मिलकर जगणका रूप (ᴗ–ᴗ) सिद्ध हो जाय। यदि ऐसा हो तो ऐसे दोहेको चंडालिनी कहते हैं। यह दूषित है अतएव त्याज्य है। जगणसे अभिप्राय यह है कि प्रथम तीन वर्णोंमें (लघु गुरु लघु) मिलकर एक शब्द पूर्ण हो (अर्थात् जगणपूरित शब्द जैसे तीसरे चरणमें 'बखान' लिखा है) यदि प्रथमके तीन वर्ण मिलकर जगण तो सिद्ध होता हो परंतु शब्द प्रथम और दूसरे अथवा दूसरे और तीसरे वर्णके मिलनेसे हि पूर्ण होता हो तो ऐसा शब्द दूषित नहीं है।" भावार्थ के विषम चरणमां जे निषेध कर्यो ते निषेध चरणना प्रारंभनो समजवो चरणनी मध्यमां जगणनो निषेध न समजवो पण 'छन्द प्रभाकर' एथी आगळ जईने कहे छे के आ जगणना निषेधनो अर्थ एवो समजवो के जगणना त्रणेय अक्षरो मळीने एक शब्द थतो होय तो ज ए निषिद्ध छे, जेमके उपरना दूहामां 'बखान' शब्द. पण जो जगणना पहेला बीजा अक्षरथी एक शब्द बनतो होय तो निषेध लागु न पडे जेम के पहेला चरणमां 'जहां वि' छ ए निर्दोष छे तेम ज बीजा त्रीजाथी एक शब्द बनतो होय तो पण ए जगण निर्दोष छे आ छेवटना विकल्पनुं दृष्टान्त 'छन्दप्रभाकर'मां मळतुं नथी मळवुं दुर्लभ छे, कारण के बीजा त्रीजा अक्षरथी एक शब्द बनवा माटे पहेलो लघुमात्राथी आखो शब्द बनवो जोईए. गुजरातीमां सामान्य विचार करतां तरत तो एवो शब्द मात्र 'न' ज जणाय छे 'न मूर्ख समजे एटलूं' 'न मान के आदर रहे' 'न बोल एवुं अघटतूं' अलबत, 'जहां वि' जेवुं सफाईवाळुं तो ए नथी प्रेमानन्दनी प्रसिद्ध पंक्तिओमां जरा फेरफार करी आपणे 'जहां वि' जेवा दृष्टान्त माटे एक दूहो उपजावी शकीए.

तुटी गरीनी झूपडी, लुटी गरीनी नार,
सरमां सरीना छोकरां, मळ्या न बीजी वार.
(सुदामाचरित्र कडवा १३, ११ उपरथी)

अहीं आपणे एटलुं उमेरीए के जगणमां पहेला एक के बे अक्षरे शब्द थाय तो चाले तेम ज त्रणथी वधारे अक्षरनो शब्द त्यां आवे तो पण चाले जेम के

प्रदक्षिणा पोते करी
शामळ, पंचदंड २६७ बृ. का. दो. १. पृ. ४०४

निशाळमांथी नीसरी
दलपतराम.

कोई आपणे जोडी काढीए.

वनारसी साडी सजी

अने आखा जगणनो एक ज शब्द बने ते पण तद्दन निषेध करवा जेवुं नथी जणातुं.

प्रणाम कीधो पोपटे
शामळ, 'पंचदंड' कडी २८८ बृ. का. दो. १, ४०५

पतीज पाडो मूजने
शामळ, 'नदबत्रीशी' कडी ४९३ बृ. का. दो. १, ३७४

आमां एकशब्दी जगण खास खराब नथी लागतो एटले जगण विकट छे, एटलुं ध्यानमां राखी तेनो वधारु थतो प्रयोग दोषपर गणवो जोईए नहीं. खरु तो जगणनी अंदर वधारु शब्दान्त जोईए ए नियम दोहरा के एवा कोई एक छन्दनो नथी पण संधि अने शब्दान्तनो छे.

आपणे जोयुं के दोहराना दलनो उत्तर यतिखंड चोपायानो उत्तर खड छे. ए उत्तर यतिखड सवैयाना उत्तर यतिखडना मात्राखडनथी थयेलो छे. सत्तावीसा चोपायामां अतनी पाच मात्रा प्लुत रूपे अनक्षर रहेली छे. केटलाक दोहरामां आ उत्तरखड हजी वधारे खोडंत थई गालनो लघु अनक्षर बने छे. जेमके :—

दिन गणंता मास गया, वरसे आतरियां,
सूरत भूली साइबा, नामे वीसरियां.

बीजा दृष्टान्तो

जे मारग केशरि गयो, रज लागी तरणा;
ए खड ऊभा सूकशे, नहि चाखे हरणा.
पीपळ पान खरता, हसती कूपळिया;
तम वीती अम वीतशे, धीरी बापुडिया.

'पीपळ०' वाळो यतिखंड अनियमित छे, पण उत्तर यतिखडो उपरना दृष्टान्तना छे. दयारामनो एक दूहो आवो मळे छे:

सुथरा दिल बेंसाहि रखि, जेसा आगे था,
माना धागा मुजका, पाया ईना था.

कागनो एक दूहो आवो मळे छे:

मीठपवाळा मानवी जग छोडी जाशे,
कागा एनी काण तो, घरघर मंडाशे.
कागवाणी भा. २, पृ. ९२

उत्थापनिका अहीं

दादा दादा दालदा' दादा दादा गा

ए प्रमाणे थाय छे अहीं सवैयाना उत्तर खडनी छ मात्राओ अनक्षर थाय छे. सवैयानु आथी वधारे खडित रूप में जोयु नथी

अहीं आपणे दोहराना उत्तर यतिखडना फेरफारो जोया. पूर्वयतिखडमा पण एक नोधवा जेवो फेरफार मळे छे पूर्वयतिखडमा अते दालदा आवे छे. एना पर्यायोमा एकथी पाच सुधीना लघु आवी शके छे ते आपणे जोयु. पण एक बीजा प्रकारनो फेर पण आवे छे जे गुजरातीमा बहु परिचित नथी. ए दालदा बदलाईने लदादा बने छे, जेना दृष्टान्तो मने हिंदी अने डिंगलमा मळया छे 'रघुनाथरूपक गीतांरा' ए डिंगलनु पुस्तक छे, तेमा दोहराना लक्षणोनी चर्चामा ज नीचेनो दोहरो आवे छ:

परमुख सनमुख परामुख, श्रीमुख बले सुजाण।
कहूँ मछ कवि जुत्तकर, च्यार उक्त पहिछाण॥
र रू. गी. पृ. ३८

पूर्वदल अहीं दादा दादा लदादा एम थाय छे आवा बीजा दृष्टान्तो दयाराममाथी पण मळे छे पण ते पण तेना हिंदी काव्योमाथी:

हरि रछ्यक कदु कहुं न डर' जाय जगलमें बेंठय;
सो कोपत नहिं बचेंगो-' संत पताल तर पेंठय.

दयारामकृत काव्यमणिमाला, भा. १, पृ. १२४

बीजां दलोनां दृष्टान्तो:

स्वपचिरानि यतिग्रसंभव' को लहि नृप हिय बात.

एजन, पृ. १३२

हरि सहिष्णु अति कृपानिधि, सो क्यों छोडे टेक ?

एजन, पृ. १३३

आ बधा दृष्टान्तोमा दालदाने बदले लदादा थयु छे, तेने हु मेळनी क्षति के दोष गणतो नथी. आपणे आगळ जोई गया के आ दालदा उच्चारता के गयाता कोई वार दा⌣लदा—ए प्रमाणे प्लुतिबद्ध थाय छे, अने कोई वार दालदा⌣–ए प्रमाणे प्लुतिबद्ध थाय छे. आ बीजी रीतना प्लुतिबद्ध स्वरूपनों पर्याय लदादालदा छे ए आपणे जाणीए छीए. ए बन्नेने आपणे द्वैतीयीक अष्टकल संधिओ कह्या छे. तो ए रीते दालदा⌣—नी जगाए लदादा⌣– पण आवी शके. अर्थात् दालदानी जगाए लदादा खोटु नथी.

बने प्रसगे पहेली मात्रा उपर ताल आवे. दालदा अथवा लदादा

दोहराना यतिखडोने उलटाववाथी सोरठो थाय छे ए आपणे जोई गया छीए पण एथी भिन्न रीते दोहराना यतिखडोना जुदाजुदा न्यासथी थती जुदीजुदी रचनाओ 'रघुनाथरूपक गीतांरो' नोंधे छे. जेमके,

जपे समुझ नित जाप, सागर-भव तिरबो सहल।
जल तिरिया पाहण सुजड़, पतसिय नाम प्रताप ।।

र रू गी. पृ. २

अही पूर्वार्ध सोरठानुं छे, उत्तरार्ध दोहरानु छे. 'रूपक' आ प्रासने अतमेळ कहे छे अने आ रचनाने खुडा-दोहा कहे छे.

एक बीजी रचना लईए:

राम वरण जुग रूप ए, सह वरणां सिरताज।
रहे मुकुंदमणराज, अ.पर अवरां ऊपरे॥

एजन

अही पूर्वार्ध दोहरानो छे, अने उत्तरार्ध सोरठानो छे. रूपक आ प्रासने मध्य-मेल कहे छे अने रचनानु नाम तूंबेरी कहे छे. आ बधी रचनाओमा कायमी

तत्त्व ए छे के प्रास गाल संधिनो ज मळे छे, पछी ए गाल दलनी मध्यमां होय के दलने अंते होय.

उपर आपी ते मध्यमेळनी रचना आपणा लोकसाहित्यना दूहामां पण जणाय छे. जेम के:

वाडी माथे वादळां, मेडी माथे मेह;
दुःखनी दाझल देह, मुख देखाडो भाणना.

काठियावाडी जवाहीर, पृ. ३१

मागशरमां मानवी, सौना एक ज श्वास;
ते वातुनो विश्वास, जाण्युं करशे जेठवो.

एजन, पृ. २५

गरना डुंगर जागिया, फरवर्या वेणुना वन्न,
म्हे तारू रे मन्न, वकोळ न क्यूं वरडाधणी.

एजन, पृ. ३४

दूहा जरा खडबचडा छे पण ए दूहा छे अने मध्यमेळना छे एटलुं स्पष्ट छे. आवो एक अर्वाचीन दूहो पण

वादळ दळ सजिए वळी, मे बारे मंडाय;
(पण) कागा नव कोळाय, सूकल ठूठा सागना.

कागवाणी, भा. २जो, पृ. ८६

खंडित थयेला यतिखंडोवाळी पण आवी रचना मळी आवे छे:

हरिया अपाडें हुवा, दाळल डुगरडा;
(पण) कागा कोळे ना, मननां वळियल मानवी

एजन, पृ. ८५

आ मध्यमेळनो ज दूहो छे पण तेमा प्रासना अधिष्ठानभूत गाल संधि खंडित थई मात्र गा रूपे ज रह्यो छे अलबत्त प्रास बहु सारो नथी. आनी सुंदर पण जरा अटपटी रचना शाह अब्दुल लतीफना दूहानी छे. श्री माणके एनो प्रयोग कर्यो छे:

धींगा गढ धीरज तणा, टगमग डुले असार,
अबोल अंतर कळकळे, 'पियुपियु' करे पुकार;
वरसे वज्जर धार, विज झबुके घन गडगडे. १२

आलबेल, पृ. ५३

अही दूहा पछी अर्धसोरठो आवी दूहो दोढाय छे, अने त्रणेय पंक्तिओमां गाल संधिए एक ज सळंग प्रास आवे छे. आने दोढियो दूहो कही शकाय जो के सोरठो लोकसाहित्यनो दोढियो दूहो आनाथी भिन्न छे.

दोहराना ज यतिखंडोने स्वतंत्र चरण तरीके लई बनेला बे छंदो आपणे आगळ जोई गया ते अही विचारी लईए. (गत पृ. ३८१) तेमा बरवीर दोहराना प्रथम एटले विषम यतिखंडोनो बनेलो छे. दादा दादा गालगा. अही गालगा अष्टकल बने छे. साहित्यमां आनो प्रयोग जोयो नथी. पण बाल जोडकणांमां जोयो छे. जेम के

हीकानां बे काचलां,
सोनाना बे माछलां.

अही का⌣चलां–, मा⌣छलां—एम बोलाय छे. अने आभीर दोहराना सम-यति-खंडनो बनेलो छे. ते पण साहित्यमां वपरायो जोयो नथी. बाळ जोडकणांमां आवे छे, जेम के

छैये मांडयां हाट,
त्यांथी निकळ्यो भाट.

घणे भागे अही अंत्य गाल, तेनो गुरु प्लुत बनी आखु अष्टकल बने छे. वार्ता कहेतां त्यां लहेंकाथी गुरु सात मात्रानो प्लुत बने छे.

दोहरो अति प्रसिद्ध होवाथी बीजा केटलाक छंदोनां स्वरूपो, ए छंदो दोहरामाथी निष्पन्न थया होय ए रीते निरूपाय छे. एवु एक स्वरूप सोरठो आपणे जोई गया. तेम ज छप्पानी छेल्ली बे पंक्तिमा जे उल्लालो आवे छे, तेने दलपतराम

पछिमां बे कळने बेवडु, दुहा प्रथम पद जाणजो १७९

एम कहे छे एटले के

दा दादा दादा दालदा, दादा दादा दालदा

एमा प्रथम बे मात्रानो निस्ताल दा आवी पछी दूहानु प्रथम पद दादा दादा दालदा बेवडाय छे एम कहे छे. ते ज प्रमाणे 'प्राकृत पैंगल' एक चुलिआला छदनु निरूपण पण दोहराना बंध उपरथी करे छे:—

अथ चुलिआला छद।
चुलिआला जइ देह विमु

दोहा उप्पर मत्तह पचइ।
पअ पअ उप्पर संठवहु
सुद्ध कुसुमगण अंतह दिज्जइ॥ १६७॥

प्रा. पैं. पृ. २७४

अर्थ एवो छे के दोहा उपर जो पाच मात्रा आपो तो चुलिआला थाय. अने तेने पद पद उपर मूकवी. अने शुद्ध कुसुमगण देवो. अही पदनो अर्थ दल एटले के द्विदल चुलिआलानु एक दल, एटले अर्द्ध एवो करवानो छे. कुसुमगण एटले लघु पछी गुरु पछी बे लघु, लगालल. उपरना लक्षण प्रमाणे अने लक्षणछद प्रमाणे उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

चुलिआला: दादा दादा दालदा' दादा दादा गालल गालल

अही उत्तरखडनी मात्रा सवैया बत्रीसाना उत्तरखड जेटली-पूरी सोळ थई रहे छे. पूर्वखड अलबत्त दोहरानो एटले त्रण अक्षरमात्रा खडित हतो तेवो रहे छे. आ प्रमाणे पिंगलोनी पद्धति छे, पण एने हुं ऐतिहासिक सत्य तरीके स्वीकारी शकतो नथी. आ चुलिआला वगेरे खरी रीते द्विपदीओ छे जे कडवाने अंते गवातो. 'महापुराण'मा आ बधी रचनाओ द्विपदी घत्ताओ तरीके आवे छे. आपणे त्रणेयना दृष्टान्तो जोईए.

छुडु छुडु वारणि असुमइहि सेण्णइ जाम हणति परोप्परु।
अतरि ताम पइट्ठ तहि मति चवति समुब्भिवि णियकरु॥

महापुराण, पृ. २८८

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दादा दादा दाललल' दादा दादा गालल गालल

ए ज प्रमाणे एक उल्लाल लउ छु'

परमाणु अट्ठ जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुब्भवइ।
अट्ठहिं तसरेणुहिं पिंडयहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ॥

एजन, पृ. २३

आनो उत्थानिका आ प्रमाणे थाय:

दा दादा दादा दाललल' दादा दादा दालल ल

हवे सोरठो लईए आनु वधारण सामान्य सोरठाथी जरा भिन्न होवाथी तेनां बे दृष्टान्तो लउ छु.

वदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइ उग्घुट्ठइ।
विण्णि वि वुड्ढइ ताइ मुहसालहि उवविट्ठइ॥

एजन, पृ ५३०

ता खयरायसुयाहि वभु महेसरु अच्चुउ।
णिरलकार जिणिदु सालकारहि सयुउ॥

एजन, पृ ५३१

आनी उत्थानिका

| | | | | |
दादा दादा गाल' दादा दादा गालगा

आम एनो सधिन्यास सामान्य सोरठा जेवो ज छे, पण तेनो प्रास सोरठानी पेठे गाल सधिनिष्ठ नथी पण गालगानिष्ठ छ जो दोहरा उपरथी ज सोरठो थयो होय तो प्रास गालनिष्ठ बने वळी 'महापुराण'मा अनेक जातनी द्विपदीओ आवे छे पण क्याई दोहरो द्विपदी तरीके आवतो नथी चुलिआला दोहरामाथी व्युत्पन्न थयो एम लागे पण एमा जे पाचमात्राओ दोहराना गालना अते लगाडाय छे एम कहेवाय छे त्या शब्दान्त यति पण नथी उत्तरखडने अते गालल गालल एवा बे सधिओ आवे छे जे मात्रारचनानो चरणान्त बतावे छे एटले मने आ रचनाओ बत्रीशीना काठा उपरथी स्वतत्र रीते घडाई होय एम लागे छे पछीथी दोहरो धीमे धीमे घटातो, एना सौंदर्यना माहात्म्यने लीधे एनी साथे अनुसधान करी बीजा छदो निरूपावा लाग्या अने तेनी असरथी ए छदोना अगो पण दोहरा जेवा थया. एटले अत्यारनो प्रचलित सोरठो ए दोहराने उलटावीने करेलो छद छे ए खरु, पण ते पहेला सोरठो द्विपदी तरीके स्वतत्र रीते विकसेलो पण खरो

आठमा प्रकरणमा सवैयाना सामान्य वर्गमा लीलावती, पद्मावती, मरहट्टा, त्रिभगी, दुमिला, वगेरे छदो मूक्या छे ते बधा मूळ बब्बे प्रासबद्ध पक्तिनो कडीना रूपना हता, अने ते मूळ कडवामा आवती द्विपदीओने मळती रचना छे पछीथी ए चार पक्तिना छदो बन्या छे बधाने एक साथे मूकवाथी तेमनु स्वरूप जणाई आवश

लीलावती	दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
पद्मावती	दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
मरहट्टा	दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा गाल

त्रिभंगी : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा' दादा गा

दुमिला : दा दादा दादा दादा दा'दा दादा दादा दादा गा

बधामां पहेलो एक निस्ताल दा आवी पछी चतुष्कलो शरू थाय छे लीलावती पद्मावती त्रिभंगी अने दुमिलामां आवा सात चतुष्कलो आवी पछी छल्ले गा आवे छे, जे पछीनी पंक्तिना निस्ताल दा साथे मळी आठमुं चतुष्कल रचे छे. बाकी तो आ रचनाओमां यतिखंडो अने तेने जोडता आंतरप्रासोनी कारीगरी छे

आ रचनाओमां आवतो दादा दादा दादा गा ए चोपायानो अंत्य खंड गणी शकाय. मरहट्ठा रचना आ बधाथी एटले ज अंशे निराळी छे के त्यां चोपायाना खंडने बदले दोहरानो अंत्यखंड आवे छे चोपायामांथी दोहरो थतां तेना अंत्यखंडमां जे फेरफारो थाय छे ते ज फेरफारो थई आ मरहट्ठानो अंत्यखंड बने छे बाकी आपणे चतुष्कल रचनाओ विशे जे जोई गया छीए तेथी विशेष अहीं कंई कहेवानुं रहेतुं नथी

अपभ्रंश कडवामां आथी भिन्न प्रकारनी द्विपदीओ पण आवती तेमांनी केटलीक महत्त्वनी छे ते अहीं जोई जईए आमां हुं सौथी प्रथम आरणाल लउं छुं

जो जिप्पइ णहारिणा कुलसवारिणा पयडसुहडरोलें।
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकले॥

महापुराण, खंड १, पृ २६६

उत्थापनिका दादा दालगालगा' दालगालगा' दादा दादा गा

आपणे आ प्रकरणमां दालगालदाना आवर्तनोवाळी षोडशी अने चोवीशी रचनाओ जोई हती तेवी आ बत्रीसी रचना छे पंक्तिनी मध्यमां आवता बन्ने यतिखंडो आंतरप्रासथी साधेला छे एक बे आथी जरा विलक्षण प्रकारनी द्विपदीओ जोईए

जे रुद्धा समरि बद्धा ते णिय मेल्लिवि पुज्जिय।
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुरहुँ विसज्जिय॥

महापुराण, पृ ४५८

अहीं बे यतिखंडो आंतरप्रासथी साधेला छे आपणे जोयेला छंदोमां पद्मावती छंद आवा आंतरप्रासथी सधायेलो छे आ बन्ने रचनाओने आपणे पासे पासे मूकी सरखावी जोईए

पद्मावती दा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
जे रुद्धा' सगरि बद्धा' तेणिव मेल्लिवि पुज्जिय
दादा दादा' दादा दादा गालल

पहेलो यतिखड बाद करता बीजो यतिखड पद्मावती जेवो ज छे, पद्मावती पेठे ज आतरप्रास धारण करे छे, अने अत्य यतिखड पण पद्मावती प्रमाणे ज चाले छे मात्र पद्मावतीनो एक छेल्लो गा आमा नथी, तेनो खुलासो स्पष्ट छे के अक्षरमात्राखडनमा ए लुप्त थयो छे हवे पद्मावतीमा बीजो प्रासधारक यतिखड दादा दादा' छे तेनी पहेलानो ए प्रासधारक यतिखड दा दादा दादा' एटलो लावो छे तेने बदले अही 'जे रुद्धा' दा दादा एटलु ज छे छता एटलो टूको खड पछीना दादा दादा साथे प्रासबद्ध छे अर्थात् ए पण ओछामा ओछो एटलो लावो एटले के अष्टकल जोईए ए टूको छ एनो ए अर्थ थयो के, ए यतिखड स्वतत्र होय ए रीते खडित थयो, एटले एनी अष्टकलमा खूटती मात्राओ प्लुतिथी पूरवी जोईए ए प्रमाणे तेनु पठन करी जोता रचनानो पाठ सुदर थई रहे छे आ रीते—

जे रुद्धा~' सगरि बद्धा' तेणिव मेल्लिव पुज्जिय
दादा दा~' दादा दादा' दादा दादा दालल

आने ज मळतो बीजो दाखलो 'महापुराण'माथी मळे छे

हयकम्मे जिणवरवम्मे उवरि उवरि रकु वि चडइ।
कयगावें पत्यिव पावें हेट्ठामुहु राउ थि पडइ॥
महापुराण २१, १ पृ ३३४

उपरनी ज पद्धतिए प्लुति मूकी आनु पठन करता उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दा~' दादा दादा' दादा दादा दादा ल

उपरनी रचना करता अही एक लघु विशेष छे पद्मावतीमा अते जे गुरु आवतो हतो ते अही खडित थई मात्र लघु रह्यो ए लघु प्लुत थई आखु चतुष्कल पूरे एटले रचना बत्रीशी थई रहे

उपरनी रचनाओमा प्रासबद्ध अष्टकलोमा मात्र पहेलु ज खडित थयेलु छे. पण बन्ने ए रीते खडित थया होय एवी पण रचना मळे छे आपणे प्लुतिनी मात्रा उमेरीने ज जोईए.

पियमेलइ〰' गयकालइ〰'एक्कहिं दिणि सहकारिणि।
णिरुवमसइ〰' सेंधुरगइ〰' णाहितणयमणहारिणि॥

महापुराण, सधि ५, पृ ७२

अर्थात् जेम चोपायानो सोळ मात्रानो पहेलो यतिखड त्रण मात्रा जेटलो खडित थई तेमाथी दोहरानो पहेलो यतिखड बन्यो, तेम अही पण पद्मावतीमा आवता प्रासबद्ध अष्टकलोनो बन्ने मात्राओ खडित थई ए रीते आ खडन-व्यापार, ज्या ज्या स्वतत्र पक्ति गणी शकाय एटलो लाबो यतिखड मळी आव्यो त्या त्या प्रवृत्त थयो

हु आगळ कही गयो के अपभ्रश प्रबधोमा कडवाने अते जे घत्ताओ आवती तेमा वपराती आ बधी द्विपदीओ छे आवी तो घणी भिन्नभिन्न द्विपदीओ छे, पण तेमनी विविधता उपर दर्शावेला व्यापारोथी ज थयेली छे. आ द्विपदी प्रकार अही निरूपायो छे तो साथेसाथे घत्ता अने द्विपदीना विशेष नामथी ओळखाती रचनाओ जोता जईए बन्ने 'प्राकृत पैंगल'मा आपेली छे घत्तानो लक्षणछद नीचे प्रमाणे छे

अथ घत्ता

पिंगल कइ दिट्ठउ छद उकिट्ठउ घत्त मत्त बासट्ठि करि।
चउ मत्त सत्त गण बे बि पाअ भण तिण्णितिण्णि ल्हु अत घरि॥९९॥

प्रा पै पृ १७०

पठन उपरथी, अने आ लक्षणछदना वधाराना एक गाहामा विशेष लक्षण आपेलु छ ते ध्यानमा लेता तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

घत्ता दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दालल ल

उपरना लक्षणछदना पहेला दलना अत्य यतिखडमा 'घत्तमत्तवा' ए द्वैतीयीक अष्टकल छे तेम ज बीजा दलना पहेला यतिखडमा 'मत्त सतगण' पण द्वैतीयीक अष्टकल छे, पण ए छदनु अग नथी छदना दृष्टान्त तरीके आवती घत्ताभा ए सधि नथी एटले उपर आपी ते ज उत्थापनिका बराबर छे तेमा आतरप्रास आवश्यक छे, जो के लक्षणमा कह्यो नथी ए रीते ए पद्मावतीनी बहु नजीक जाय छे

पद्मावती दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
घत्ता दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दालल ल

तफावतने हवे शब्दोमा वतावयानी जरूर रहेती नथी

बीजो छद द्विपदी लईए तेनु लक्षण 'प्राकृत पैगल', प्रथम वे छदोमा आपे छे पठन जोता मने पहेलो लक्षणछद दोषवाळो जणाय छे एटले हु बीजो छद लउ छु

सरसइ लइ पसाउ तहि पुहविहि करहि पइत्त कइअणा ।
महुअर चरण अत लइ दिज्जहु दोअइ भणहु बुहअणा ।। १५३

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

द्विपदी दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा

उपरना लक्षणछदमा 'लइ पसाउ तहि' अने 'चरण अत लइ' ए बन्ने द्वैतीयीक अष्टकलो छे, अने घणी द्विपदीओमा ए अष्टकल ए स्थाने आवे छे पण व्यापक तरीके (महापुराण सधि २, कडवक १३, वॉ १ पृ २९) ते भाग्येज वपरायेलो छे त्या जोता, ए स्थाने एनो प्रयोग अव्यभिचारी जणातो नथी तेम ज घणी द्विपदीओमा ए सधि अते वपरायेलो जणाय छे जेमके द्विपदीना दृष्टान्त तरीके 'प्राकृत पैगल' नीचेनी द्विपदी आपे छे

दाणव देव बेवि ढुक्कतउ गिरिवर सिहर कपिओ ।
हअ गअ पाअ धाअ उट्ठनउ धूलिहि गअण झपिओ ।। १५५
प्रा पै पृ २६०

अही अते 'सिहर कपिओ' अने 'गअण झपिओ' बन्ने लदागालदा छे अने उपर कहेला 'महापुराण'ना कडवानी घणी द्विपदीओमा आ ज सधि अते आवे छे अलबत्त 'प्राकृत पैगल'मायी पहेली उतारेली द्विपदी जोता जणाशे के छदनु ए, अविचल अग नथी, पण घणी द्विपदीओमा आ अते आवे छे अने तेथी आ छदने एक विशिष्ट ढाळ मळे छे, वळी आ द्वैतीयीक सधि, पक्तिमा ठेठ अते आवतो होय एवा दाखला विरल ज छे माटे आ लक्षणने हु नोधवा लायक लक्षण गणु छु अलबत्त, आ बधी ३२ती रचनाओ छे एटले सूटती मात्राओ विलबन के विरामथी पुराय छे ए याद राखवु जोईए

आठमा प्रकरणना क्रमे चालता हवे आर्यासूचना छदो लेवा जोईए आपणे जोई गया के सस्कृत पिंगलकारोए आर्याने वगे घणो विचार कर्यो छे अने तेथी आर्यानु स्वरूप बहु ज चोकस थयु छे चतुष्कलसधिमेळ रावधी

आपणे जे विचार करी गया ते दृष्टिए आर्याना नियमो तपासीए आर्यानी परंपरा प्रमाणेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे.

आर्या: दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लगाल/ल'लल दादा गा

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा

तालो दलपतराम प्रमाणे मूक्या छे ते स्मरण करीने आगळ चालीए. आमा पहेलो नियम के एकी स्थानमा जगण लगाल न आवे ए नियमनु कारण आपणे जाणीए छीए के रचनाना पठनप्रारंभमा चतुष्कलना प्रधान अने गौण बन्ने तालोना स्थानो उपलब्ध रहे ए छे अने पहेले स्थाने जगण निषिद्ध थता, पछी तेने बीजे स्थाने ज अवकाश आपवो पडे, अने एम कर्या पछी, बे जगणो लगोलग न आवी जाय माटे तेने सळग एकी स्थाने निषिद्ध करवो पडे ज प्रारंभमा जगण न आवे ए नियम सामान्य रीते बधी चतुष्कल रचनाओमा पळाय छे, अने क्याक प्रारंभमा जगण आवे ए दोष नथी, तो पछी प्रारंभमा जगणनो सदतर निषेध करवानी अहीं पण जरूर रहेती नथी, एम कही शकीए. एम कर्या पछी बे जगणो साथे न आवी जाय एटला एक ज नियमनी जरूर रहे छे सद्गत नरसिंहराव पण ए ज मतना छे आपणा विवेचन साहित्यमा सद्गत मगनभाई चतुरभाई पटेलना 'अभिज्ञान शाकुन्तल'ना भाषान्तरमा आवती आर्याओनी अनेक पिंगलक्षतिओ श्री जहागीर सजाणाए 'वरात'मा सख्याबध दृष्टान्तो आपी समर्थ रीते पुरवार करी, तेने अगे सद्गत नरसिंहरावनी एक गीतिमा आवती सधिसमृष्टिनी* क्षति तेमणे बतावी ए उपरथी नरसिंहरावे गीतिना स्वरूप उपर एक लाबो विद्वत्तापूर्ण लेख 'वसन्त'ना १६मा वर्षमा आप्यो तेमा तेओ कहे छे के

"विचार, वाणी, वर्तन त्रणे समन्वित करे जनो विरला

आ गीतिदलमा 'विचार' ए प्रथम गण जगण छे अने छता आखी पक्ति लयशुद्ध बोली शकाय एम छे " (वसन्त अषाढ, सवत १९७३ वर्ष १६ अक ६ पृ ३५१) अलबत्त आम कह्या पछी एटलु ज याद राखवानी जरूर छे के रचनामा क्याई बे जगणो भेगा थवा न जोईए आ पछी प्रश्न करवा जेवो नियम ए छे के छठ्ठी सधि जगण अथवा चतुर्लघु शा माटे आवश्यक मान्यो हशे? पिंगलकारोने जगण विकट लाग्यो, ए एमनी सूक्ष्म

* आ सधिसमृष्टिनु दृष्टान्त नीचेनो यतिखड हतु:
"कठे वाणी रही काइ अटकी"

संवेदन शक्ति बनावे छे. पण ते साथे साथे एमने जगणनी आवश्यकता अने ते पण अमुक ज स्थाने शा माटे जणाई? जगणनो निषेध करता करता पण पिंगलकारो तेने अमुक स्थाने आवश्यक जरूर माने छे. जेम के 'प्राकृत पैंगल' कहे छे:

> एक्के जे कुलवन्ती बे णाअके हि होइ सगहिणी।
> णाअकहीणा रंडा वेसा बहु णाअका होई॥ ६३
>
> प्रा. पैं. पृ. ११८

जगणनुं एक नाम नायक छे. ए शब्द उपर श्लेष करीने कहे छे आर्या के गाथा, तेमां एक नायक होय तो कुलवती, बे नायक होय तो सगृहिणी, नायक विनानी रांडेली अने बहु नायकवाळी वेश्या थाय. प्राकृत 'सगहिणी'नो अर्थ एक टीकाकार विधवा थया पछी परणेली (एजन) अने बीजो व्यभिचारिणी (एजन पृ. ११९) आपे छे. अर्थात् अहीं जगणनो विरोध तो छे ते साथे तेनी आवश्यकता पण कही छे. 'वृत्तजातिसमुच्चय' आ ज वात बीजी रीते कहे छे.

> ठाणट्ठिओ पसाहइ ठाणहरहियो (अ)जेण विनडेइ।
> मज्जाअ भिन्न लघइ तेण गुरु मज्झओ राआ॥
>
> वृत्तजातिसमुच्चय

"पोताने स्थाने रहेलो शोभा आपे छे. स्थान रहित थता कोपे छे. मर्यादा उल्लंघतो नथी, तेथी मध्यगुरु (जगण) राजा कहेवाय छे." अहीं पण जगणनो निषेध अने आवश्यकता बन्ने कहेली छे. अने विचार करता तेनो निषेध अने आवश्यकता तेना एक ज लक्षणमांथी ऊभा थता जणाय छे. ए लक्षण ते तेनुं विकटत्व. जगण सिवायना बधा चतुष्कल पर्यायो उच्चारणमां बहु ज लीसा छे, फीसा छे. ए लीसापणुं लांबे गाळे अरुचिकर लागे छे तेमां पण आर्या जेवी लांबी पंक्तिमां तो ते अरुचिकर लागे ज अने तेथी त्यां विकटत्व आवश्यक बने छे. जमवामां जेम पोची वस्तुओमां कोई कडक भावे छे, तेम. अने तेथी तेने छठ्ठे स्थाने आवश्यक गण्यो पांच स्थान सुधी लीसा संधिओ आवता अरुचि उपचित थाय ते छठ्ठे स्थाने जगणथी लुप्त थाय. तेने छठ्ठे ज आवश्यक गण्यो एनुं कारण ए के एनी पछी पाछा बीजा संधिओ आवे जेथी पंक्ति पूरी थया पहेलां एनुं विकटत्व लुप्त थाय. अने ए रीते पाछी पंक्ति लीसी बनी रहे. नरसिंहराव पोतानी रीते आ वात रजू करे छे.

"लगाल—ए लघुगुरु योजनानुं स्वरूप एवुं छे के लना नीचाणमांथी गानी दीर्घताना शिखर उपर चढी तरत लना नीचाणमां पडाय छे. आ गति

होडीनी गतिमा थता फेरफारना जेवो छे, पाणीनी सपाटी उपर थोडी वार — रागो वखत — सरल चालीने पछी एक तरगनी टोच उपर चढी तरत होडी पाछी सरल सपाटीमा पडीने चाले त्हेवु भान जगणथी थाय छे, अने पक्तिमा उल्लास मळे छे अथवा क्वचित् क्वचित् न्हानो तरग उपर चढी पाछी होडी पडे त्हेवु भान पण जगणथी थाय छे, " (वसत, श्रावण सवत १९७३, वर्ष १६, अक ७, पृ ४६२) आ जगणनो निषेध अने तेनी छट्ठा स्थाने नियुक्ति बन्ने जगणना स्वरूपनी ऊडी समज अने कलानी सूक्ष्म सवेदनशक्ति अने सर्जकशक्ति दर्शावे छे

सिद्धान्त तरीके आपणे स्वीकार्यु के बे जगण भेगा न आवी जाय ए रीते प्रथम स्थाने जगण आवी शके आ जातनो जगणनो पहेलो प्रयोग मने सद्गत राजाराम रामशकरना 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमा जणाय छे

समान कुलने वयनो समान रूपानुराग सबध
परस्पर प्रेम थकी, करनारा पुण्यवत जन विरला
नागानन्द नाटकनु गुजराती भाषातर पृ ३६

आ पछी स्वाभाविक रीते ए प्रश्न आवे के जगणना विकल्पे छठ्ठे स्थाने सर्वलघु चतुष्कल आवी शके अने ए आवे त्यारे तेना पहेला अक्षरे शब्द पूरो थवानो नियम शा माटे कर्यो? जगण साथे आ सर्वलघु चतुष्कलने उच्चारणमा कशी समानता नथी जगण उत्कट छे, सर्वलघु फीसु अने शिथिल छे पण आ कारणने लीधे ज आ सर्वलघु जगणना जेटलु ज विरल बनेलु छे अने ए विरलत्वमा ए जगणना जेवु ज छे एम कही शकाय शिथिलत्वने लीधे आ सर्वलघु चतुष्कल जगण जेटलु ज अनिष्ट गणायेलु छे 'प्राकृत पैंगले' जेम जगणनी अप्रशस्यता आलकारिक भाषाथी कही छे, तेवी ज रीते लघुबहुलत्वनी अप्रशस्यता पण कही छे ते कहे छे

तेरह लहुआ विप्पी एआईसेहि खत्तिणी भणिआ।
सत्ताईसा वेशी सेसा सा सुद्दिणी होई॥ ६४॥
प्रा पैं पृ ११९

आर्या तेर लघुथी ब्राह्मणी, एकवीस लघुथी क्षत्रियाणी, सत्तावीश लघुथी वैश्या, अने एथी वधारे लघुथी शूद्रिणी थाय छे आ विधान लघुनु अनिष्टत्व ज बतावे छे अने लघुजन्य शिथिलता ज एनु कारण जणाय छे

सर्वलघु चतुष्कल शिथिल छे ए खरु पण तेना पहेला अक्षरे यति एटले के शब्दान्त आववाथी एनु शिथिलत्व घटे छे ए नरसिंहरावनो अभिप्राय यथार्थ

छे एमना गीति उपरना तावा लेखमां सर्वलघुना दृष्टान्त तरीके तेओ कालिदासनो नीचेनो यतिखंड ले छे

प्रसीद रम्भोरुविरमसरम्भात्।

अही छठ्ठो गण 'रु विरम' ए चार लघुनो बनेलो छे ते सबधी तेओ कहे छे "रम्भो' ए पाचमो गण अने 'रु' ए छठ्ठा गणना आरम्भे आवेलो मळी 'रम्भोरु' शब्द बे गण वच्चे वहेंचाई जवाथी, बने गणमा ए शब्द पग मूकीने ऊभो छे तेथी बन्ने गणने जोडनार अकोडो दाखल थाय छे अने बे गण दिलष्टतामा गूथाय छे . उपर कह्या प्रमाणे दिलष्टता साधक बे गण उपरनु आक्रमण ना होय तो शिथिलता आवे; उदाहरण:—

(१) अपराधी नूनमह प्रसीद कान्ते परिहर सरंभम्।

आम होय तो 'कान्ते' अने 'परिहर' ए बे गण जुदा जुदा शब्दोने लीधे अशृखलित रही शिथिलता थात

(२) "राजे रेणे अरणो मगळ माळा घननिकटे जेवो"

(रा केशवलाल ध्रुवकृत 'विक्रमोर्वशीय नाटक' आवृत्ति २ जी, अ ५, श्लोक ४)

आ स्थळे पण उपर कहेली स्थिति ज आवे छे छठ्ठो गण—घननिक चार लघुनो अने पाचमो अने छठ्ठो गण जुदा जुदा शब्दोने लीधे अशृखलित रही शिथिलता आवे छे"

'वसत' माघ सवत १९७३, वर्ष १६, अक १, पृ ३५, ३६

पण आ उपरात एक बीजी बाबत पण हु नोधवा इच्छु छु ते ए छे के सामान्य रीते शब्दनो अत्य एक ज लघु सधि बहार जाय ए इष्ट नथी एवु एकथी वधारे चार थता रचना क्लिष्ट बने छे, अर्थबोध विक्षिप्त थाय छे आ विक्षेपकता ज सर्वलघुनी पसदगी करावनार तत्त्व छे जगण गीणताल्ने दाबी दे छे तेने लीधे विकट बने छे, विक्षेपक बने छे तेम आ सर्वलघु चतुष्कल पण आगला शब्दनो छेल्लो एक ज लघु तेमा आवे छे तेने लीधे विक्षेपक बने छे अने एम आ छठ्ठा स्थानना, जगणना स्वरूपनो नही तो, एक भिन्न स्वरूपनो विरल अने विक्षेपक प्रयोग बनी रहे छे

अने छठ्ठा स्थाननो प्रयोग विक्षेपक छे माटे ज एवो नियम छे के एनी पछी सातमे स्थाने जो सर्वलघु आवे तो त्याथी नवो शब्द शरू थवो जोईए आ सबधी मतभेद छे, ते आपणे गया प्रकरणमा (पृ. ३२०) जोई गया छीए

हलायुध, आ सर्वलघु सबधी नियम, छठ्ठो सधि गमे ते होय, एटले के छठ्ठा सधिना बन्ने विकल्पोमा प्रवर्ततो माने छे, अर्थात् छठ्ठाना स्वरूपथी एने स्वतत्र माने छे, त्यारे 'वृत्तरत्नाकर' छठ्ठो सर्वलघु होय त्यारे ज तेने प्रवर्ततो माने छे हु हलायुधनो मत साचो मानु छु तेनु कारण ए छे के छठ्ठे स्थाने एक विक्षेपकारक तत्त्व आव्या पछी, ते पछी तरत ज शब्दभगनो बीजो विक्षेप अनिष्ट छे जेम रचनाना प्रारभमा अविक्षेप आवश्यक छे तेम ज अते पण आवश्यक छे अने छठ्ठो ज सधि विक्षेपकारक छे त्यारे तो विशेष करीने सातमो विक्षेपकारक न जोईए प्रयोगो जोता पण आ हलायुधना मतने ज समर्थन मळतु मने जणाय छे सातमे स्थाने सर्वलघुना दृष्टान्तो मेळववानी दृष्टिए 'ज्ञानपञ्चमीकथा'मानी त्रीजी अने चोथी कथानी दरेकनी सवासो आर्याओ हु जोई गयो तो तेमा सातमा स्थानना बधा सर्वलघु चतुष्कल सधिओमा सधिना प्रारभथी ज शब्द शरू थाय छे आ बधा दृष्टान्तोमा छठ्ठो सधि जगण ज छे, एटले छठ्ठो सर्वलघु होवानी आवश्यकता परास्त थाय छे पहेली कथामा आवा चार दृष्टान्तो छे बीजीमा त्रण छे हु दरेकमाथी बब्बे लउ छु

(१) तद्दिवसे च्चिय तीए गब्भे सुह-असुहकम्म परियरिओ।

इलो १६

(२) देसति बहुजणाण धम्म जिणदेसिय च पइदियह।

श्लोक ११९ ज्ञानपञ्चमीकहा ३ भद्दाकहा पृ २५, २९

(३) उवगरणेण समेया रघणए सुव्वया वि अइकुसला।

श्लो २५

(४) जइ चित्त न विसुद्ध ता जाण तवोवण पि घरसरिस।

श्लो १२१, एजन, पृ ३२, ३३

चारेय दृष्टान्तोमा छठ्ठो सधि जगण छे, अने चारेयमा ते पछी सर्वलघु सधि आवता सधिना प्रारभथी शब्द शरू थाय छे एटले नियम हलायुध प्रमाणे एवो ज गणवो जोईए के सातमो गण ज्यारे ज्यारे सर्वलघु होय त्यारे त्यारे तेना पहेला लघुथी ज शब्दनो प्रारभ थवो जोईए बीजी रीते कहीए तो शब्दनो अने सधिनो प्रारभ एक साथे थवो जोईए आ नियम सर्वलघु माटे ज करवानु कारण हु मानु छु के बधा पर्यायोमा सर्वलघु ज्यारे बे शब्दो वच्चे वहचाय छे त्यारे ज सौथी वधारे विक्षेप करे छे बीजा सधिओ एवो विक्षेप करता नथी

आर्याना पूर्वार्धमां छठ्ठे स्थाने लगाल के ल'ललल मूकीने पद्यपठन यति लेसु थतु अटकाव्यु तो उत्तरार्धमा ए ज काम छठ्ठा सविने बीजी रीते विक्षेप-कारक करीने कर्यु, अहीं सधिनु ज खडन कर्यु, — ए चतुष्कलनी त्रण मात्रा कापी नाखी त्या मात्र एक लघु रहेवा दीधो. एथी चाल्यो आवतो चतुष्कल-प्रवाह विच्छिन्न थाय, तेमा विक्षेप आवे ए देखीतु छे. अने पठन पण तेनी साक्षी पूरे छे. अने आ प्रमाणे त्या चतुष्कलो ओळखवामा मुश्केली पडे एवु थवानु छे माटे तेनी आगलु चतुष्कल सर्वलघु होय तो त्याथी शब्दारंभ थवो जोईए एवो नियम कर्यो जेथी ए चतुष्कलनो सस्कार बराबर पडे. अही पण ए नियम सर्वलघु माटे ज छे. आ प्रमाणे आर्याना परपराप्राप्त नियमोनो पूरो खुलासो थई रहे छे, जो के यति अने पठननो प्रश्न हजी विचारवानो रहे छे. पण ए तरफ जईए ते पहेला हजी सधिओ विशेनो ज एक प्रश्न बाकी रहे छे ते जोई लईए.

आपणे आगळ जोई गया के बधा चतुष्कलमधि रचनाओमा बे चतु-ष्कलोनी जगाए लदागालदा के दालगालदा आवी शके छे. तो ए द्वैतीयीक अष्टकल सधिने आर्यायुग्मा अवकाश आपवो के नही ए प्रश्न रहे छे. नरसिहराव एने अवकाश आपवो एवो मत दर्शावे छे अने तेने माटे तेओ नीचेना दृष्टान्त खास रचीने मूके छे.

> विना ज्ञान जे बोले ते नर हलवो पडे ज्ञानिवर्गे.
> मग्नमान थइ ऊभो दुर्योधन ते क्षणे हसी कृष्णा.
>
> एजन, पृ. ३५०

पहेला दृष्टान्तमा आर्या लदागालदाथी अने बीजामा दालगालदाथी शरू थाय छे. एटलु ज नही बधाक आ द्वैतीयीक सधि छठ्ठा स्थानना जगणनु काम पण करे छे एम तेओ बतावे छे. गीतिनी चर्चामा तेओ दृष्टान्त आपे छे:

> "पवित्र जन्मो त्याथी पावन तेने कोण करे बीजु?
> (मणिलाल द्विवेदीनु 'उत्तर रामचरित')

अने पछी कौंसमा टीप आपे छे:

> "(अहि 'कोण करे' ए शब्दो उच्चारीने 'करे कोण' एम वर्णाथी शैथिल्य सुधाराशे; म्हे इ स १८८४ मा जूनना 'बुद्धिप्रकाश'मां पृ. १२७-मे ते बताव्यु हतु.)"
>
> एजन, पृ. ७३०

अही मणिभाईनी मूळ पंक्तिमां छठ्ठे स्थाने आवश्यक जगणने स्थाने 'कोणक' गालल आवतो हतो. नरसिंहरावे सूचवेलो फेरफार 'करे को'थी त्यां लदागालदा बने छे, अने तेथी पंक्तिमां श्लेष आवे छे ए साचु छे. खरी वात तो ए छे के ए स्थाने कंईक पण विक्षेप इष्ट छे, ते अही आ संधियी बनी रहे छे, एटले रचना आस्वाद्य थाय छे.

प्रो. ब. क. ठाकोर तो आ अष्टकल संधि स्वीकारे छे एटलु ज नही एमणे एना अनेक प्रयोगो कर्या छे, जे तेओ आ गीतिनी चर्चाना सबधमा ज दर्शावे छे. जेम के:—

> "म्होर करुं तुज अनंग चाप च्हडावी रहेल मनसिजने;
> उत्तम शर पाचेना बनी वीध जा पथिकवधूजनने."
> वसंत, चैत्र, संवत १९७४ वर्ष १७, अक ३. पृ. १५९

अही 'बनी वीध जा' ए लदागालदा छे. आर्यागूथमा आ अष्टकल संधिनो पण सौथी पहेलो प्रयोग मने 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमा ज मळे छे:

> विधि हरिहरने पण जे, गर्वने लिधे नमी न जाणे ते
> शेखरक आज तुजने नमु छू नव मालिके, मना व्हेली.
> नागानन्द नाटकनु गुजराती भाषातर पृ. ३९

अही 'गर्वने लिधे' ए दालगालदा छे.

आ रीते आ प्रयोगो सिद्धान्तथी साचा छे, अने कविप्रयोगोथी अर्वाचीन काळमा समर्थित छे. पण एम होय तो दोषित करेला मगनभाई चतुरभाईना नीचेना प्रयोगो विचारवा रहे.

> लता गेरवी पाडु पाडु पत्रो

अने

> पचबाणनु श्रेष्ठ बाण तुं था

अही न स्वीकारवानु कारण एक ज होई शके के अही एक ज यतिखंडमा-- दालगालदा के लदागालदाना एकने बदले बे प्रयोगो थाय छे. अने एम थतां संवादनो प्रकार बदलाई जाय छे आ मेळ बदलाई जाय छे ए मतने एक बीजी रीते पण समर्थन मळे छे आपणे आगळ (गत पृ. ३७८) जोई गया के अष्टकलना बे आवर्तनो आवता होय एवा जुदा ज छदो निपजी आवे छे. मतलब नहीं जेवी बाबतने अवलवी छदने नवु नाम आपवानु वलण प्राचीनोमां

अमर्याद हतु छता अहीं तो आपणे कही शकीए के आ संधिना बे आवर्तनोथी मेळवेलु स्वरूप बदलाय छे पठननी असर जरूर बदलाय छे एटले नरसिंहरावनो वांधो हु आ कारणथी स्वीकारु छु आ पद्धतिनी विचारणाथी आपणे एम पण कही शकीए के प्राचीन छन्दशास्त्रीओ आर्यायूथमा आ संधिने अवकाश नही आपीने आर्याने अमुक ज स्वरूपनी शुद्ध राखवा इच्छता हता अने तेथी मूळ आर्यामा आपणे जे फरफारो स्वीकार्या, जगण संबधी अने आ अष्टकल संबंधी, ते पण अपवादरूप ज गणवा जोईए आपणे येनकेनरे स्वीकारवु जोईए के आर्याना मूळ नियमो कैलानी आवश्यकतानी बहु सूक्ष्म समजण दर्शावे छे

हवे आपणे आर्याना पठन संबंधी विचार करीए में गया प्रकरणमा कह्यु छे तेम जातिछंदोमा हु यतिने विलंबनात्मक के विरामात्मक स्वीकारतो नथी ए मात्र, ए स्थाने शब्द पूरो करवानी भंगीरूपनी छे अने आ बाबतने विपुला नामनी स्वीकारायली आर्याथी समर्थन मळे छे आपणे आगळ जोई गया तेम विपुला आर्यामा बार मात्राए यति नथी आने हु पछीथी पेसी गयेली शिथिलता मानतो नथी आपणु शास्त्रबंधननु सामान्य मानस जोता शिथिलता पछीथी पेसी गयेली होय ए शक्य लागतु नथी ए एवी शिथिलता होत तो पिंगल तेने स्पष्ट रीते यतिभंग मानत अने ए शिथिलता ज होत तो कालिदास जेवो छंदोनो सूक्ष्म कलाविद एनो प्रयोग न करत आपणा शिष्ट कविओए तो पिंगलमा यतिस्थाने शब्द तोडवानी जे छूट आपी छे ते पण क्याई भोगवी नथी तो आ एक आर्यानी बाबतमा कालिदास एम करे ए संभवतु नथी कालिदासनी ए आर्या नीचे प्रमाणे छे

ईसीसिचुम्बिआइ भमरेहिं सुउमारकेसर सिहाइ।
आदसअंदि दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाइ॥

अहीं प्रथम दलमा पंक्तिनी अंदर आवता सानुस्वार इ अने हिं बन्ने लघु छे अने त्रीजु चतुष्कल 'आइभ' एम थता यति रहेती नथी 'भमरेहिं' नो भ बारमी मात्रा थई त्रीजा चतुष्कलनो भाग बने छे एवी ज रीते बीजा दलमा 'दअमा' ए त्रीजु चतुष्कल बने छे, अने त्या आवेला 'दअमाणा' शब्दनो णा चोथा चतुष्कलमा आवतो जाय छे एटले यति रहेती नथी. यति साची होय तो कदी लुप्त थाय नही, आघीपाछी थाय नहीं एटले हु आ यतिने पण जातिछंदोनी यति जेवी मात्र एक छंदोभंगी ज मानु छु ए रीते आर्याने पण हु सळंग पठन करवानी रचना ज मानु छु अने त्रीश मात्रानु सळंग पठन न थई शके एम पण न कही शकाय ए रीते ए पण बत्रीसी रचनानी

सत्य वे मानाना खंडनथी थयेलो प्रकार ज गणाय आर्यामा अते गा आवश्यक छे ते चार मात्रानो प्लुत थई त्या बत्रीस मात्रा पूरी थई रहे छे पण ते साथे आर्याना बीजा दलना पठननो खास विचार करवानो रहे कारण के तेमा छठ्ठु चतुष्कल त्रण मात्रा जेटलु खडित थाय छे दलपतराम ए खडित मात्रावाळा चतुष्कलने निस्ताल राखी सातमानी पहेली मात्राथी ताल शरू करे छे पण आपणे जे रीते ताल समजीए छीए ए रीते ए शक्य नथी

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा

पाचमा चतुष्कलनी पहेली मात्राए ताल पड्यो पछी शु पाच मात्राए ताल पड्यो एम गणवु ? चतुष्कल सधिना मेळमा ए शक्य नथी. हु मानु छु के त्या अते लदागालदा सधि बने छे अने तेनी बीजी लघु मात्रा प्लुत होय छे आ रीते

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदादा॒गा——

आ, मात्राओ मेळववाने करेली कोई युक्ति नथी जे रीते परपराथी पठन थाय छे तेने सूक्ष्मताथी जोता मने त्या ए अष्टकल सधि जणायो छे अने तेथी ए यतिखड आखो सळग चतुष्कल सधिना आवर्तनोनो थई रहे छे पक्तिने ठेठ अते लदागालदा आवे ते विरल छे पण द्विपदीमा ते आपणे आगळ जोई गया छीए आर्या विशे आटलु कह्या पछी आर्यामूयनी बीजी रचनाओ, जेवी के गीति, माटे खास कश कहेवानु रहेतु नथी

आर्याना पठन सबधी मे जे उपर कह्यु ते जातिछदना अल्पतम सगीतवाळा शुद्ध पठननी दृष्टिए कह्यु छे पण ते साथे नोधवु जोईए के अत्यारे आर्या अने गीतिओ आपणा शास्त्रीओ अने हरदास बावाओ अमुक रीते ज गाय छे ए रीते गाता तेमा मध्ययति बहु दृढ रीते आवे छे अने आखु गीतपठन प्रलबित स्वरोथी नियत सख्यानी मात्राथी गवाय छे तेमा पहेली बार बार मात्रा पछी चार मात्रानो अवकाश आवे छे जे स्वरोना विलबनथी पुराय छे, अने दलना अते आवता गुरु पछी वळी बीजु छ मात्रानु विलबन थाय छ ए रीते आर्यानु, पहेलु दल कुल चाळीश मात्रानु बने छे अने बीजु पण गानामा एटली ज मात्रानु थाय छे आ गीतपद्धति में गुजरातमा सर्वत्र जोई छे अने हु मानु छु के महाराष्ट्रमा पण ए ज रीत छे आना सस्कारो एटला बधा दृढ छे, के हवे कदाच विपुला आर्या आपणे त्या न रचाय- एम करवा जता यतिनी दृढ अपेक्षाने आघात पहोचे अने

छतां आपणु रचित्र धीमे धीमे एटलु रुचिर थतु जाय छे के विपुलार्थी पण ए भरडे नहीं.'

अर्वाचीन गाळामा आर्यावृत्तना प्रयोगो पण ओछा थया छे आपणा नवा कविओने अक्षरमेळ वृत्तो वधारे प्रिय अने रुचिकर थई पड्या छे ए कदाच एनु कारण होय पण आपणा प्रयोगशोधी प्रो. ठाकोरे आर्यानो पण विस्तार कर्यो छे अने ते कृति पण ध्यान आपवा योग्य छे तेमणे पोते तेने मात्रामित्र कही छे हु ए काव्यना बे छदो उतारु छु.

पूना अने मुबई

१. पूणा मुबई तुलना शके करी येम कविजन तो'
पूणा कुदरत खोळे मुबई रत्नाकर कटि पर धरतो

---

४. आर्यांना पठन सबधी 'प्राकृत पैगल'मा एक गीति छे.

पढम पी हंसपअ बीए सिहस्स विक्कम जाआ।
तीए गअवर लुलिअं अहिवर लुलिअं चउत्थए गाहा। ६२॥
प्रा पै पृ ११७

अर्थ एवो छे के गाथाना पहेला पादनु पठन हसगति जेवु, बीजानु सिंहनी फाळ जेवु, त्रीजानु गजवरनी गति जेवु, अने चोथानु सर्प जेवु 'प्राकृत पैगल'ने आवी आलकारिक भाषानो शोख छे आगळ जगणनी बाबतमा जगणना पर्याय नामना शब्द पर श्लेष करी गाथाने रडा वगेरे कही, अने लघुना ओछा वधारे भरावा उपरथी ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वगेरे कही त्या आपणे जगणनी अमुक स्थाने आवश्यकता अने अन्यत्र प्रशस्याप्रशस्यता तथा लघुना भरावानी अप्रशस्यता, एटलु तो समजी शकता हता, पण उपरना वर्णनथी तो एथी पण ओछो प्रकाश पडे छे. वधारेमा वधारे एटलु कही शकाय छे के प्रथम पाद एटले यतिखड टूको छे, ते धीमे धीमे गवाय एटले एनी हस जेवी मथर गति कही बीजो यतिखड लाबो अढार मात्रानो छे एटले एनी गतिने सिहनी 'फाळ' साथे सरखावी (जेम शार्दूलविक्रीडितमा लाबा यतिखडने सिहनी फाळ साथे सरखाव्यो छे तेम) त्रीजानी गतिने गजगति साथे सरखावी, गजगति पण धीमी होय छे पण पहेला यतिखडनी गति हस जेवी अने बीजानी गज जेवी एवो जे भेद कर्यो ते तो मात्र उपमावैविध्य माटे ज कर्यो हशे, कारण के बन्ने यतिखडो सरखा छे छल्लानी गतिने सर्प जेवी कही तेनु कारण तेमा चतुष्कल सधिओनो प्रवाह छठ्ठु चतुष्कल खडित थई गति स्खलित थाय छे ए हावु जोईए एवी रीते वर्णनने बेसतु करी शकीए छीए पण पठनपद्धति नक्की करवामा वर्णन मार्गदर्शक थई शके एवु नथी बहु आलकारिक भाषानो आ दोष छे

पूणार्नी सरिताओ उदधिखाडियो रसळत मुबइनी,
महिषोधण टेकरियो एके अवरे शिशुचनघण सह शी गिरणी.

३ शिवाजि कदमे अन्कित अय मडित पार्वती मुकुटे
एक धरे छे जोडी भक्तिज्ञानयी अमर वनी निकटे;
अवरे भव्य सनातन घारापुरिनी त्रिमूर्ति, कन्हेरी
गुफाहारमा सभामडपे अमोघवत्सल ते मुदिता घेरी।
भणकार (ई. स. १९४२) पृ. २९२

आ छद विशे प्रो. ठाकोर कहे छे: "लखता लखता आ नवो छंद बेसी गयो. एने 'आर्यातिलक' नाम आपु छु. पक्ति १ ली — आर्यानी वीजी पंक्ति; २ अने ३ — आर्यानी १ ली पंक्ति; ४ थी — पूर्वार्धमा चार मात्रा वधारे, उत्तरार्ध, आर्यानी १ ली पक्तिनो: ए प्रमाणे एनु माप छे." (भणकार टिप्पण पृ ७९) विशेष एटलु बतावबा जेवु छे के अहीं छठ्ठे स्थाने जगण मूकवानो के त्या सर्वलघु चतुष्कल आव्यु होय तो पहेले लघुए शब्द पूरो करवानो आग्रह राख्यो नथी. पण तेथी खास मेळ वगडतो जणातो नथी. कारण के आखी रचना जुदी छे. बीजु ए के 'उदधिखाडियो' ए द्वैनीयीक अष्टकल सधि छे अने त्रीजु ए के अवतरणनी छेल्ली पक्तिमां पहेला यतिखंडमा एवा बे द्वैनीयीक सधिओ लागलागट पासे आवता मेळ बदलाय छे, अने ते गीति जेवो सुन्दर नथी लागतो आखी रचना तेम छता नवी छे, अने कोईने नितान्त सुन्दर न लागे तो पण ध्यानमा लेवा योग्य छे. नवो प्रयोग साचो दिशानो छे.

प्रो. ठाकोरे आर्याना एक बीजा प्रकारनो प्रयोग कर्यो छे, जेनो उल्लेख आपणे हमणा गीतिना स्वरूपनी चर्चा जोई तेमा आवे छे नरसिंहराव ए आर्यामां क्षति बतावे छे के तेना पहेला यतिखडना छेल्ला चतुष्कलमा एक मात्रा ओछी छे. ते आर्या नीचे प्रमाणे छे:

पौरव नृपनू राज्य, धृष्टोनो शासक जग आखामा,
त्या अविनय को आज, मुग्ध तपस्वी कन्या सह माडे?
(व. क. ठाकोरनु 'अभिज्ञान शाकुन्तल' अक १, श्लोक २३)
वसत, मार्गशीर्ष, सवत् १९७४, वर्ष १६, अक ११, पृ. ६७५

आना जवाबमा प्रो ठाकोर कहे छे: "म्हारा तरजुमामा आवा चार श्लोक छे. . . . जे नथी आर्या के नथी गीति, के नथो आपणा परपरागत छन्दः-

शास्त्रमां नोंधायेलो कोई पण पद्यबन्ध. आ चार श्लोक नवी मिश्र रचनाना छे. एमांना विषम पाद सोरठाना छे अने समपाद आर्या के गीतिना समपादने मळता छे. एटले एमने सोरठी आर्या के सोरठी गीतिनां नाम आपु छु." (वसंत, चैत्र, संवत १९७४, वर्ष १७, अंक ३. पृ. १४९) आगळ जता तेओ पांते एवी बीजी एक सोरठी आर्या उतारे छे ते जोईए:

> *राजाए शु धर्म बीसरवो यदि रुचे न वयूं हाथे?*
> *—मतामदना धर्म ज्यां त्यां एवा सदोष ज ते.*
>
> एजन, पृ. १५८

आ बीजा श्लोकना आर्याखंडमां जगणनु स्थान साचव्यु छे, पहेलामां साचव्यु नथी, तेथी रचना लूली लागे छे ए तो देखीतु छे एटले आवी सोरठी आर्यामां पण आर्यानी खासियतो राखवी सारी एटलु तरत जणाशे पण नरसिंहरावनी चर्चानो ए विषय नथी. एमणे मूळ मुद्दो ए चर्च्यो छे के सोरठाना यतिखंडो साथे आर्याना यतिखंडोनु आ मिश्रण सुश्राव्य छे? —सवादी छे? नरसिंहराव ए विशे नीचे प्रमाणे वदे छे: "खास जोवानु एक ए छे के ए मिश्र रचनामां लयबंध साचवाय छे के केम? ए सकलनामां घटनासारस्य छे के केम? मने तो लयभग स्पष्ट लागे छे, अने घटना क्षतिवाळी जणाय छे, ... म्हने तो आ रचना जोईने, गणपतिनु माथु कपाई गयेलु चन्द्र-लोकमां पडवाथी हाथीनु मायु लावीने धड उपर बेसाड्यु ते कथा याद आवे छे." (एजन, ज्येष्ठ, संवत १९७४, पृ. २७१) नरसिंहरावने आ संयोजन विसंवादी जणायु. पण संवादता संस्कार माटे पण अभ्यास अने परिचयनी जरूर होय छे. आ ज जातनु मिश्रण आठमा प्रकरणमां आपणे जोई गया चूडामणिमां पूर्वार्ध दोहरो छे, उत्तरार्ध आर्या छे अने वेरालुमां त्रण पादो के यतिखंडो दोहराना छे अने चोथो यतिखंड आर्यानो छे आ रचनाओ दोहराने केटली वधी मळती छे ए बताववा प्रथम दोहरानु अने पछी तेमां ज थोडा फेरफार करी रचेल चूडामणि अने वेरालुनु दृष्टान्त आपु छु:

दोहरो: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात,
जोबन छायी तारुणी, तारा छायी रात

चूडामणि: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात
जोबन छायी तारुणी, ताराथी छायली रात

वेरालु: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात
जोबन छायी तारुणी, ताराथी छायली रात

जो दोहरा अने आर्यानु मिश्रण थयु तो सोरठाना अत्य यतिखड साथे एनु मिश्रण न ज थई शके एम न कहेवाय उपरना मिश्रणमा आपणे जोईए छीए के दोहरानो पूर्वयतिखड तेर मात्रानो छ, अने आर्यानो बार मात्रानो छे; अने एकने बदले बीजो मूकी शकाय छे तो सोरठानो त्या आवतो गालान्त यतिखड अगियार मात्रानो छे, ए पण आर्याना पूर्व यतिखडनी बहु ज नजीक छे, अने त्या वेसी जाय एवो छे आपणे आ बे रचनाओ साथे सोरठी-आर्या के सोरठी-गीतिने पण स्थान आपीए उत्थापनिका.

सोरठी-आर्या { दादा दादा गाल' दादा दादा ल्दाल दादा गा
{ दादा दादा गाल' दादा दादा ल दादा गा

आने सोरठी-आर्या कहेवी होय तो कहेवाय, पण एक बीजी रीते पण आना मेळनो खुलासो करी शकाय अने एम करता नरसिंहराव के छदोनु मिश्रण कहे छे ते मिश्रणनु अवलबन पण न करवु पडे पूर्वयतिखडमा बारने बदले अगियार माना छे, अने एम यतिखडने पण स्वतत्र मानी तेना मात्राखडननो व्यापार आपणे आगळ अनेक जगाए जोयो छे एटले आ एक यतिखडित आर्यानु ज स्वरूप छे एम कही शकाय अने ए वधारे साचु छे ए रीते आना मेळनो खुलासो वधारे समर्थ अने वस्तुने अनुरूप बने छे अने जे सोरठानो प्रास छे ए पण आर्या साथे विसवादी नथी एवी रीते बे यतिखडोन विशिष्ट स्वरूप आपी प्रासथी साधवाना प्रयोगो आपणे रोळामा जोया छे. (गत पृ १३९) अने त्या पण आ ज अगियार मात्रानो खड हतो[५]

---

५ अहो आने मळती एक मिश्र रचना मने 'मृच्छकटिक'मा मळी छे ते नोधु छु

जे अत्तवल जाणिअ' भाल तुलिद वहेइ माणुस्से।
ताह खलण न जाअदि' ण अ कन्तालगदो विवज्जति॥

मृच्छकटिक (Kale's Edition 1924) अक २, श्लो १४, पृ ५६

आमा स्पष्ट रीते पहेला त्रण यतिखडो आर्याना छे, अने चोथो यतिखड ते वियोगिनीना समपादनो छ आ प्रमाणे

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल्दाल दादा गा
दादा दद्दा दादा' ललगागा ललगा ल्गालगा

पण आ नाटकनो सस्कृत टीकाकार पृथ्वीधर नीचेनी टीकामा आने वैतालीय छन्द कहे छे अने टीका करे छ "तुलित वलितमिति 'वा पदान्त' — इति बिन्दो-

वर्णोमां मात्रानो रचनाना लगात्मक छंदो केटलाक छे पण ते घणाखरा नहीं वपरायेला अने अरुचिकर छे. आटली लांबी पंक्तिमां एक ज लगात्मक रूपनो सौथि आवर्तन पाम्या करे ते कंटाळाकर ज नीवडे. छतां ए बे रूपो कंईक वपरायेला छे ते नीचे आपुं छु.

इन्द्रविजय अथवा मत्तगयंद } गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गागा

पंक्तिनो अंत दृढ करवा अंते गागा आवे छे. आमां यति नथी. बीजो एथी ओछो प्रसिद्ध दुमिला लईए:

दुमिला: ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

दलपतराम दरेक गा उपर ताल मूके छे. ए रीत आपणे तोटकमां स्वीकारी छे.

रोळामां जेम अंत्य बे संधिओ सहित थई तेनी गालगान्त प्लवंगम रचना थई तेम सवैयामांथी एवो कोई जातिछंद निष्पन्न थयो नथी. पण यशोस मात्राना पदोमां ए गालगा वारवार आवे छे, जेनो दाखलो आपणे आगळ जोई गया.

सद्गुरु शरणवि नाश शानति मिरदळ शो∽न हीं— रे—

अंते आवतो गालगा 'शोनहीं' ए प्लुति साथे गणतां स्पष्टपल छे.

अर्वाचीन समयमां केटलांक नवी रचनाओ आपणे अन्य साहित्यमांथी अपनावी छे तेमांनी जे चतुष्कल रचनाओ होय तेनो पण अही उल्लेख करवो जोईए आ रचनाओमां पहेलो अंजनी गीत छे. ए गीत छे ए

लघुत्वम्।" अभिप्राय एवो छे के छन्दने खातर पदान्तने लघु के गुरु लई शकाय छे ए विकल्प प्रमाणे श्लोकमां आवता तुलित शब्दनो अंत्याक्षर लघु गणवो. पण तुलित शब्द पादान्ते छे एम कोई रीते गणी शकाय एम नथी अने एम गणतां पण वैतालीय थतो नथी एटले हु आने टीकाकारनी गेरसमज मानु छु अने में उपर बताव्युं तेम आ रचना बराबर आर्या-वैतालीयमां बेसी जाय छे एटले एने मिश्ररचना मानवी जोईए छतां आ मिश्ररचनाना बीजा दाखला मने मळया नथी, एटले आनो टीपमां उल्लेख करू छु कोई पिंगले आ रचना मान्य करी होय एम मारा जाणवामां नथी. पण मने आ रचना सुन्दर जणाई छे अने आतुं हुं कहुं छु ते ज मिश्र स्वरूप होय तो आपणा कविओए मिश्ररचनाना केवा विविध प्रयोगो कर्या छे ते जोई आश्चर्य थया विना रहेवो नहीं।

तरीके तेनी पदोमा गणना थाय छता एनु भाव एक जातिछंदना जेवु ज सुघड छे एटले अही तेनो उल्लेख आवश्यक गणु छु. अजनी गीत सौथी पहेलु कान्ते लख्यु गणाय छे, पण बीजा केटलाक छंदोमा तेम आमा पण, एमना मित्र राजाराम रामशकर तेमना पुरोगामी नीवळे छे एमना 'नागानन्द'ना गुजराती भाषान्तरमा पृ. ४३मे एक अजनी गीत छे पण एमा प्रास मेळव्यो नथी एटले ए हृद्य जणातु नथी. एटले कान्तनु ज अजनी गीत दृष्टान्त तरीके उतारु छु:

विप्रयोग

(अजनी गीत)

आकाशे एनी ए तारा:
एनी ए ज्योत्स्नानी धारा:
तरुण निशा एनी ए: दारा—
क्या छे एनी ए?

पूर्वालाप, (आवृत्ति ३), पृ ५५

पहेली त्रण पक्तिओ सोळ सोळ मात्रानी एक ज प्रासथी साधेली छे. एमा चार चतुष्कल सधिओ आवे छे एने चरणाकुळनी त्रण पक्तिओ कही शकाय. त्रणेय पक्तिमा अत्य चतुष्कल गागा छे चोथी पक्ति टूकी छे, दस मात्रानी छे, उपरना प्रासथी विखूटी छे, अने ए चरणाकुळनी अत्य छ मात्राओ खडित थईने बनेली छे अर्थात् एनो अत्य गुरु आठ मात्रा जेटला काल सुधी लबाववानो छे आनी खास खूबी तो ए छे के त्रीजी पक्ति प्रासथी आगली बे साथे सधायेली छे, छता अर्थमा अने पठनमा ए चोथी साथे वधारे गाढ रीते सधायेली छे एम बताववा पठनमा त्रीजी पक्ति आगळ — आवु चिन्ह पण करेलु छे त्रीजी पक्ति प्रासथी पहेली बे साथे सधायेली अने अर्थ अने पठनथी चोथी साथे सधायेली होवाथी एक सुन्दर भगीनो अनुभव थाय छे तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

अजनी: दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा
दादा दादा गा— — —

एक बीजा गीतमा कान्ते आ रचनामा जरा फेर करेलो छे.

व्हालाओने प्रार्थना

रोनारू भीतरमा रोतुं,
ल्होनारू भीतर ना ल्होतु'
दूर सखानु हंयु
साथे रोतु ने जोतु
व्हालाओ व्हालाने कहेजो!
सागरमा तो साथे व्हेजो,
स्हेवाना एकाबीजाना
साथे सौ स्हेजो

आ गीतमा मूळ फरक तो प्रास रचनानो छे पण तेनी चर्चा पहेला एक लेखनमुद्रणपद्धतिनो फरक जोई लेवो जोईए 'व्हालाओने०' वाचना पहेला छदमा त्रीजो चोथी पक्ति भेगी वाचता ते उत्थापनिका प्रमाणे थई रहे छे, पण तेमा त्रीजोमा त्रण चतुष्कलो छे एटले एक चतुष्कल ओछो छे अने ते नीचेनी पक्तिमा छपायो छे वाजो छद उत्थापनिका प्रमाणे ज छे ए सबधी छदनी दृष्टिए मारे कई कहेवानु नथी पहेला छदमा कदाच अर्थनी दृष्टिए कविए एटलो फेरफार कर्यो हशे मुख्य कहेवानु छ ते प्रास विश छे अही त्रीजी पक्ति प्रास-योजनाथी विखूटी पडी जाय छे, अने चोथी प्रासयोजनामा सामील थाय छे पण एम थवाथी एक बीजो फेरफार थाय छे त्रीजी चोथी भेळी बोलाई एक छब्बीसा सवैयानी सळग पक्ति बनी जाय छे एने खरी रीते हवे त्रण पक्तिनु काव्य कहेवु जोईए जेमा त्रीजी पक्ति वधारे लाबी छे आ रीते

दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा दादा दादागा-- -- --

मने पोताने अजनीनी मूळ प्रासयोजना ज वधारे सुन्दर लागे छे

अही सर्वत्र प्रासनिष्ठ सधि आपण गागा जोयो छे, पण क्याक दागा पण चाले क्याक दादा पण चाले एना दृष्टान्तो प्रो ठाकोरना काव्योमाथी मळी रहे छे

रामेश्वर एडीए चळके
पुरी द्वारिका माथो झळवे
मा म्हारी वाळोनी ठळके जय जय मा म्हारी!

सप्तशूल पंजाब एक धर:
परशू अरवल्ली बीजे कर.
तेग लटकती सॅह्याद्रि कटि पर: जय जय मा म्हारी!
'माजीनु स्तोत्र', भणकार, पृ. २१२

प्रो ठाकोरे आ रचनामा बीजा पण केटलाक फेरफार कर्या छे पहेला तेनु दृष्टान्त लउ

अ सौ नर्मदा भट्ट

खभाळे रहेंती'ती न्हानी,
जानैया आव्या स्हेलाणी,
एके भुरकी नाखी छानी —केवी, नानी?
भणकार, पृ ९७

प्रासरचना आगळ जोई गया ते ज अजनीनी विशिष्ट छे ते ज छे फरक मात्र चोथा चरणमा थयो छे—ते चोथा चरणनी बे मात्राओ कापवानो. तेना पठननी प्लुतिनी व्यवस्था ध्यानमा राखवा जेवी छे ए प्लुतिनी मात्राओ दर्शावता नीचे प्रमाणे बने छे.

दादा —गा गा— — —
केवी —न्हा नी— — —
क्या छे एनी ए — — —

जूनी अने नवी पक्ति अने तेना प्लुतिस्थानो सरखाववाथी फरक ध्यानमा आवशे आ फरकमा रचना पोतानु जूनु सौंदर्य कईक पण खूए छे एम हु मानु छु एमनो एक बीजो रचना पण जोईए

कोकिल विलाप

कोकिल टहुक्यो उच्च घटामा,
टहुक्त उतर्यो अक छटामा,
ज्या तडकाशीळा हिंडोळे हीचू हू कोडे
भणकार, पृ १०१

अही फेर मात्र एटलो छे के पहेला बे पक्तिमा एक प्रास छे, अने चोथी टूकी छता त्रीज। चोथामा एक बीजो प्रास छे आखा काव्यमा प्रासनी आ ऐक ज रीत राखी नथी पण ते बधा प्रयोगो जोवानो जरूर नथी आ प्रमाणे आ रचना गुजरातीमा अनेक रीते विकसी छे

प्लवंगम-पठन विशेना अन्य मतोनी चर्चा

Language and Literature Vol. II p. 286 7 उपर नरसिंहराव देशा अने पदनी चर्चा करे छे, अने तेमा देशीमा पण कालनु मात्रामाप होवु जोईए एम सार्वात करवा दाखला आपे छे तेमा तेओ प्लवगमनो दाखलो आपे छे: "(b) Take the following line of the regular metre known as प्लवगम:—

छने थाती छाय छडीपर छाजता

and the following line of garabi of the type of आसो मासो शरदपुन्यमना रात्य जा:

हा ! देव ! शु विपरीत दूखडु दीधलु ?

You can read one and the other in convertible forms, the underlying metric formation being one and the same; the difference consisting in the chanting of them and the shifting of the यति; thus in प्लवंगम the यति is after the eleventh mâtrâ while the garabi is a non-stop line altogether. Read the garabi line with the caesura after त in विपरीत and the ड turned into a three matrâ प्लुत and it will be प्लवगम; or read and chant the प्लवगम line without the caesura after य in छाय and without lengthening the र in छडीपर into a प्लुत and it will be the garabi of the type stated.

[Note : I would not insist on the प्लुत in the प्लवगम metre; for it is possible to read it as one matra syllable and yet secure the rhythm. The प्लुत variation is but an ornamental element in chanting] '

नरसिंहराव प्लवगम अने प्लवगमना गरबां वन्नेना बयनी अभिन्नता स्वीकारे छे. छता बन्नेनो भेद पण करे छे. ए भेद एक तरफथी प्लवगममा

११ मी मात्राए यति छे, गरबीमा यति नथी एनो गणावे छे. तेओ कहे छे के प्लवगम यतिक छे, गरबीनु पठन सतत अविरत छे पण अही खरी वात ए छे के प्लवगमनु पण पठन तो सतत ज छे, कारण के यतिस्थाने आपणे विराम के विलबन करी शकता नथी. ए यतिवाळु चतुष्कल बीजा चतुष्कलो जेवु चार मात्रानु ज रहे छे बीजु, ए प्लवगम अने गरबीना पठनमानमो एक एवो भेद करे छे के प्लवगममा 'छडीधर' शब्दनो 'र' प्लुत थाय छे. गरबीमा एम थतु नथी. हवे 'र' प्लुत थतो होय तो केटली मात्रानो प्लुत थाय छे ए पण नक्की थवु जोईए. प्लुतनी मात्राओ न आपी होय त्यारे ए साधारण रीते त्रण मात्रानो गणाय. 'र' ए प्रमाणे त्रण मात्रानो बनता उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

छत्रे थाती छाय छडीधर ⏑ ⏑ छाजता

प्लुतिनी मात्रा साथे गणता कुल २३ मात्रा थाय हवे एओ ज 'हा दैव'नी पक्तिमा ए रीते 'दूखडु'ना 'डु'ने प्लुत करवाथी उपर प्रमाणे पठनमात्राओ थई रहेशे एम कहे छे करी जोईए. मूळ पक्ति नीचे प्रमाणे छे.

हा दैव शु विपरीत दूखडु दीधलु

आमा हादै, वशुंविप, रीत दूखडू, दीधलु ए प्रमाणे मात्रागणो छे पहेला बे चच्चार मात्राना, 'रीत दूखडू' ए आठ मात्रानो, अने 'दीधलु' पाच मात्रानो. ए रीते एमा कुल २१ मात्रा थई रहे छ एमा 'डू' गुरु छे तेने प्लुत करवाथी एक मात्रा वधे छे तो कुल २२ मात्रा थाय एटले बन्ने पक्तिओ सरखी थती नथी खरु तो नरसिंहरावे पोताना सिद्धान्तना समर्थन माटे आखी पक्तिनु मात्रामाप आपवु जोईतु हतु अने प्लुतिनी मात्रासख्या पण आपवी जोईती हती 'छडीधर'ना 'र'नी त्रण मात्रा कही तो ते साथे 'दूखडू'-ना 'डू'नी पण केटली मात्रा ते कहेवी जोईती हती वळी प्लवगममा प्लुति मूकवी होय तो मुकाय न मूकवी होय तो पण पठन बरावर चाले ए नोंध तो एमना मूळ सिद्धान्तने विघातक छे एम प्लुति विकल्पे नाखी शकाती होय तो मात्रामाप छेवटे असिद्ध रहे आ बवा विसवादनो खुलासो मे आ प्रकरणमा कह्यु ए रीते ज थई शके छे के प्लवगम ए मूळ रोळानी ज प्लुतिबद्ध रचना छे. अने प्लुतिनी मात्राओ मूकवानी भिन्नभिन्न पद्धतिथी भिन्नभिन्न रचनाओ अने पठनो थाय छे आभाणक अने प्लवगम ए मात्राखडनना भिन्न व्यापारथी थयेल छे अने ए बन्ने पद्धति छोडी प्लुति चार चतुष्कलो पछी नाखवी होय तो ते त्रण विशेष मात्रानी ज जोईए आ प्रमाणे

छने, याती, छांय छ, डीघर, ᴗᴗᴗ छाजता,
हा दै, वसुधिप, रीत दूसडू, ᴗᴗᴗ दीघलु,

साथे साथे प्लवगम विशेनो वर्वेनो मत जाईए तेओ कहे छे "हवे इतिहास उपरथी आ विशे विचार करीए तो प्लवगमनी उत्पत्ति दोहरामाथी थयेली होय एम चोक्कसपणे जणाय छे, ते एवी रीते के 'दुहानु बीजु चरण ते प्लवगमनो प्रथम यतिवाळो खड छे अने दुहाना पहेला चरणमानी आरभनी त्रण मात्रा ओछी करी, जार अने सधिनी व्यवस्था मूळ प्रमाणे राखवाथी प्लवगमनो बीजा यतिवाळो खड बने छे '' (गायनवादन पाठमाळा पु १ वि ३ पृ ६२) वर्वेए आपेलु अवतरण के ह ध्रुवनु छे (सा वि भा २ पृ २९७) पण ध्रुवे ए मत ठेठ सुधी राख्या के केम ए जाणवा साधन नथी प ऐ आ पृ ३७ए प्लवगमनु निरूपण आवे छे, त्या उपरना मतनो अनुवाद थयो नथी, एटले ए मत एमण छाडी दीधो होय ए स्थितिमा आपणे एने वर्वेनो मत ज मानीए वर्वेनु कहेवु न्यासथी प्रथम स्पष्ट करीए
। । । । ।
दादा दादा दाल ल्दादा दाल्गा ए प्लवगमनो वर्वेनो न्यास छे अलबत्त प्लवगममा यति सुधामा दादा दादा दाल आवे छ अने ते दूहाना उत्तर यति-खड देखाय छे, पण ते आकस्मिक ज छे दूहामा गाल छ पण ए गाल चतुष्कल छे, अने तेनी पछी एक आखु चतुष्कल अनक्षर छे वर्वे पोते पण दोहराना स्वरांकनमा गा त्रण मात्रानो अने ल चार मात्रानो आपे छ (गा वा पा पु १, वि ३ पृ ८०) ज्यारे प्लवगममा तो दाल ल ए चतुष्कल-परपरानी एक कडी छ अने तेनी पछा पाछु ल्गोल्ग दादा आवे छे एटले गाल आगळ रचनानो कोई स्वाभाविक अवयव पडतो नथी अने तेनो स्वतत्र अवयव तरीके विचार करवो अप्रामाणिक छे के ह ध्रुवे अनावृत्तसधि वृत्तोनी यति, अने जातिछदोनी यतिनो मूळ स्वरूपभद न जोया तेनु आ एक परिणाम छे

११

त्रिकल, पंचकल, सप्तकल जातिओनो मेळ

जातिरचनामा आवर्तित थतो त्रिकल सधि सगीतना दादरा तालमाथी निष्पन्न थाय छे बर्वे दादरा तालनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे:

दादरो. १ २ ३ ४ ५ ६
÷ o

अनु अर्थ त्रण मात्राए थाय तेमा प्रथम मात्रा उपर ताल पडे छे दरेक मात्राने अक्षरथी पूरता आ सधिने आपणे दालनु रूप आपी शकीए. त्रण मात्रानो ललल सधि पण छे पण गुरु अक्षर भारे होई ए स्वाभाविक रीते वधारे तालक्षम छे तेथी त्रिकल बीज साधारण रीते दाल एवा रूपथी निर्देशाय छे. त्रिकल सधिनो एक पर्याय लगा थाय अने ए रूप आपणे दालमाथी निष्पन्न करी शकता नथी, जेम लगाल रूप दादामाथी निष्पन्न करी शकता नहोता तेम चतुष्कलनी पद्धतिए, दालना त्रणेय पर्यायो माटे आपणे दलल एवी सज्ञा करी शकीए, पण एम करवानी जरूर नथी कारण के लगानु लगाल जेवु महत्त्व नथी एटले सामान्य रीते आपणे दाल सज्ञाथी ज चलावी लईशु

२ आ सधिना छदो गुजरातीमा बहु ओछा वपराय छे दलपतराम छ मात्राना चरणनो वाम छद आपे छे, ते तो मात्र एक कौतुकरूप छे एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

वाम दाल दाल

ए पछी हीर आवे छे ते महत्त्वनो छे आठमा प्रकरणमा आपणे एनु लक्षण जोयु छे (जुओ गत पृ ३२३), अने सधिओना प्रवाहनी दृष्टिए ते नीचे प्रमाणे मूकी शकाय.

हीर· गाल दाल' दाल दाल' दाल दाल' गाल गा

आ छदमा पक्ति दर्शाववा अत्य सधिओने लगात्मक रूप मळेलु होवा उपरात आद्य सधिने पण लगात्मक रूप मळेलु छे अत्य सधिनी एक मात्रा खडित थयेली छे, जेने गणतरीमा लेता सधिना कुल आठ आवर्तनो थाय छे, अर्थात्

बेकी आवर्तनो थई रहे छे. यति छ छ मात्राए एटले दादराना एक एक ताले मूकी छे, ते, अलबत्त, एक भंगी छे, छंदनु अंग नथी.

आ पछी आठमा प्रकरणना क्रमे हु महीदीप लउ छु, अने तेनुं लक्षण फरीथी उतारुं छु:

१७. महीदीप छंद — मात्रा २२, ताल ४

याविश वळ रावळ अंत, जुगल दीर्घ दीजे,
दार वळ उपर विराम, महीदीप कीजे;
प्रथम उपर खट खट पर, ताल सरस तेमा,
सुणता पद सरस दिसे जुक्ति सरस जेमा. ९५

द. पि. पृ. १५

पठन करता आमां पण त्रिकल संधिना आवर्तनो जणाशे. पण दलपतरामे एनो ताल पहेली मात्रा पछी छ छ मात्राए नाख्यो छे, एटले आपणी परिभाषामा एने षट्कल सधिना आवर्तनो कहेवा पडे. आम करवानु कारण चारनी पक्तिओमां 'सुणतां पद' ए स्थाने त्रिकल सधिओ जुदा पडता नथी ए छे. अही त्रीजो चोथो मात्राओ 'ता' अक्षरमा भेगी थई गई छे. आने चतुष्कल रचनाना लदागालदा अने दालगालदा ए बे द्वैतीयीक संधिओ साथे सरखावी शकाय. आ द्वैतीयीक सधिओ, एक सधिनो अत्य लघु बीजा सधिना आद्य लघु साथे जोडाई जई एक गुरु थवाथी थया हता तेम ज अही त्रिकल सधिओमा पण एक सधिनो अत्य लघु, बीजा सधिना आद्य लघु साथे मळवाथी आ षट्कल सधि निष्पन्न थयो छे. गाल के ललल साथे लगा के ललल मळवाथी ए थाय. ए रीते त्रिकलोमा ४ द्वैतीयीक सधिओ थाय: गागागा, गागालल, ललगागा, ललगालल. उपर आपेल 'सुणता पद' ए ललगालल सधि छे. आ बधा सधिओ त्रिकल जातिओमा द्वैतीयीक सधिओ तरीके आवी शके छे. अही, चतुष्कलोमा $\frac{\text{लदा}}{\text{दाल}}$गागाल हतो तेवो कोई निषिद्ध सधि नथी. अर्थात् त्रिकल रचनामा दादादाने अवकाश छे. अने तेम छता कहेवु जोईए के एक ज पक्तिमा आ द्वैतीयीकना एकथी वधारे आवर्तनो शोभता नथी. आपणे एक एवी पक्ति दृष्टान्त खातर बनावी जोईए:

युद्धोत्सुक चित्तवाळा पक्षी पण अते तो
हारेला पक्षोथी अधिकु सुख ना पेखे.

रचनामा षट्कलनो मेळ प्रतीत थतो नथी. एटले त्रिकल रचनामा आ द्वैतीयीक सधि एक अपवाद रूपे ज आवी शके. पदोमा त्रिकलो अने तेना द्वैती-

योकोना कलामय संयोगथी अनेक सुन्दर रचनाओ थाय छे ते आपणे आगळ जोईशु.

आ महीदीप छंदमां लदाना आवर्तनो पण आवे छे ते आपणे उपरना छंदमा 'महीदीप' (लगागाल) शब्दमा जोई शकीए छीए. एथी त्रिकलना आवर्तनोमां कांई भगाण पडतु नथी केम जे दालमा छे तेम ज लदामा पण त्रिकलना ताल माटे प्रथम मात्रा उपलब्ध होय छे. आ उपरथी त्रिकल रचना, माटे आपणे दाल बराबर लदा एवुं समीकरण करी शकीए.

आ समीकरण त्रिकल रचनाओ माटे साचु छे एटलु ज नही पण अन्य रचनाओ माटे पण साचु छे ए आपणे आगळ जेम जेम प्रसंगो आवता जशे तेम तेम जोईशु. अत्यार पहेला आनो एक प्रसग आवी गयो छे ते अही नोंधीए. चतुष्कलना द्वैतीयीक संधिओ, आपणे जोयु के लदागालदा अने दाल-गालदा हता अने तेमा पहेली त्रण मात्राओमा लदा अने दाल आवे छे ए उपरना समीकरण प्रमाणे ज छे. अही याद राखवु जोईए के आ समी-करणना बन्ने संधिओमा पहेली मात्राए ताल आवे छे, ए प्रमाणे पहेली मात्राए ताल आवतो होय तो ज ए समीकरण साचु पडे, कोइ अन्य मात्रा पर ताल आवतो होय त्यारे साचु पडे न्हीं. दाखला तरीके आ द्वैती-यीक संधिमा अत्य त्रण मात्राओ आवे छे त्या ए लागु करी शकाय नही. कारण के ए त्रण मात्रामा जे गौण ताल छे (जे आपणे चिह्नथी दर्शावता नथी) ते उपान्त्य मात्रा उपर छे, लदागालदा ए प्रमाणे, त्या उपरनु समीकरण लगाडवा जईए तो लदागागाल शक्य बने, अने पछी त्या, आपणे आगळ जोई गया तेम, उपान्त्य मात्रा ढकाई जाय एटला माटे आपणे महीदीपनी उत्थापनिका दलपतरामथी जुदा पडी नीचे प्रमाणे राखीए:

I I I I I I I
दाल दाल दाल दाल दाल दाल गागा

उपरनी चर्चाथी आपणे प्रथम एम कही शकीए के आ छंद त्रिकलनां आवर्तनोनो छे, अने आपणे दालमा प्रथम मात्राए ताल कह्यो छे ते मुजब अही पण मूकवो जोईए. पट्कल क्याक आवे तो तेने अपवाद तरीके आवतो द्वैतीयीक संधि गणवो. ते उपरात अही जोई शकाशे के आना अंते आवता बे सधिओ खडित थया छे. तेमा प्लुत मात्रा उमेरता तेनुं रुप गा‿ गा‿ थाय. अने ए प्रमाणे महीदीपनु पठन थाय पण छे. पण वधारे रूढ पठनमा बन्ने गुरु बोलाई पछी बे मात्रा प्लुत बोलाय छे. अर्थात् अत्य गा

चार मात्रानो प्लुत बने छे. बन्ने प्रकारनी प्लुतिओने स्थान आपतां मेळनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

महीदीप { १ दाल दाल दाल दाल दाल दाल गा॰ गा॰
२ दाल दाल दाल दाल दाल दाल गागा —

बीजी पद्धतिए अंते षट्कल आवे ते स्पष्ट छे. दलपतरामे बार मात्राए यति कही छे पण तेने हु छंदनु अंग गणतो नथी एटले मूकतो नथी.

आठमा प्रकरणमा त्रिकल जातिछंदोना निरूपणमां में आ बे छंदो पछी दिंडीना स्वरूपनी चर्चा करी हती. अहीं ए तरत हाथमा न लेता निरूपणनी सरलता खातर प्रथम त्रिकल संधिना लगात्मक रूपोनु निरूपण करीश. त्रिकल जातिओनी सरखामणीमा त्रिकलनी लगात्मक रचनाओ वधारे विकास पामेली जणाय छे — छेवट संख्यामा तो वधारे छे ज 'दलपत पिंगळ'मा आपेली रचनाओमाथी आपणे मुख्य मुख्य जोईए:

समानिका: गाल गाल गाल गा अक्षर ७
दृष्टान्त: रोज रोज घघदानिका
जो सती समानिका;

द. पि. पृ. ३३

बे पंक्तिओ बस थशे. अहीं गाल अर्थात् जातिसंधि दालना कुल चार आवर्तनो थयां छे, जेमाना छेल्ला संधिनो अंत्य एक लघु खंडित थयो छे, अने तेथी पंक्तिनो अंत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत छे. ए रीते त्रिकलना कुल चार आवर्तनो थई रहे छे. ताल गालनी पहेली मात्रा उपर पडे छे ए स्पष्ट छे ते पछी प्रमाणिका लईए जेनु बीजु नाम नगस्वरूपिणी छे.

नगस्वरूपिणी अथवा प्रमाणिका छंद — अक्षर ८

जरा लगाडि जीवडो,
प्रमाणिकापणू घडो;
वधे वडाइ विश्वमां
भलूं थशे भविष्यमां. ३३

द. पि. पृ. ३५

आनी उत्थापनिका: लगा लगा लगा लगा

एम थाय, अर्थात् आ लदानु लगात्मक रूप छे. आमा ताल क्यां आवे? आपणे महीदीप छंदमा एक पंक्तिना प्रारंभमा आवता 'महीदीप' शब्दमा

पहेली मात्रा उपर ताल नाख्यो हतो : लदादाल ए रीते छे. पण दरेक स्थाने ताल क्यां पडे छे ते पठनथी नक्की करवु जोईए. अही ताल स्पष्ट रीते बेकी स्थाने आवता गुरु पर पडे छे. अने तेथी आपणे ताल ए गुरु उपर मूकवो-जोईए. ए प्रमाणे उत्थापनिका : लगा लगा लगा लगा एम थशे. अही मोतीदामनो दाखलो स्वाभाविक रीते याद आवशे. तेमा दलपतराम जगणना आवर्तनो निर्देशे छे पण ताल पहेला लघु पछीना गुरु उपर मूके छे, एटले सुधी प्रमाणिकानो दाखलो मोतीदाम जेवो छे, पण तेथी आगळ तेनु साम्य जतु नथी. मोतीदाममा निस्ताल लघुने आपणे छूटो करी पछी आदि ताल गालल सधिना आवर्तनोथी दर्शाव्यो हतो. अही एम करवानी जरूर नथी. कारण के अही, पठनमा लगाना आवर्तनो सभळाय छे. लने भिन्न करीने गालना आवर्तनो अवश्य करवा पडता नथी. एम करवु होय तो थाय, पण लगाना आवर्तनो थई शकता होय तो तेने निषेधीने गाल मूकवो ए मने एक निरर्थक प्रक्रिया जणाय छे. अर्थात् सर्वत्र पठनने ज आवा प्रश्नोमा आपणे निर्णायक राखवु जोईए. अने पठनथी निर्वाह पामती कोई वस्तुनो निषेध करवो न जोईए. अर्थात् बधा सधिओ तालथी ज शरू करवा जोईए एवो नियम करवानी हु अही जरूर जोतो नथी. मोतीदाममा, अने बीजी प्रथम निस्ताल आवता दाखाळी चतुष्कल रचनामा आपणे निस्ताल मात्राओ अलग करीने सन्धिओ शरू करता हता, ते मात्र पठनने वफादार रहेवा ज, निस्ताल मात्राथी सधि शरू न ज करी शकाय एवा कोई सिद्धान्तने लीधे नही. आ पछी हु समानिका–प्रमाणिका जेवु ज चामर अने नाराचनु जोडकु लउं छु बन्नेनी उत्थापनिका पासे पासे मूकु छु :

चामर : गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

नाराच : लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा

चामरमा गालना सात आवर्तनो पछी एक गा आवे छे, जे गालनु खडित रूप छे. नाराचमा लगाना कुल आठ आवर्तनो आवे छे. एक ज लगात्मक सधिना आवर्तनोवाळा छन्दोमा उपरना ज सौथी वधारे वपराय छे. तेनाथी घणा ओछा वपराशवाळो छन्द सेनिका जोता जईए.

सेनिका : गाल गाल गाल गाल गाल गा

अहीं छ आवर्तनो छे, छेल्ला सधिनी एक मात्रा समानिका-चामर प्रमाणे लुप्त थाय छे नीचेनु दृष्टान्त सेनिकानु छे तेना आंतरप्रासनु वैचित्र्य ध्यान खेंचे एवु छे:

पत्तिया सणाहणेहरत्तिया
सुत्तिया णिमीलयच्छिवत्तिया।

महापुराण, खड १, ३, ५. पृ ४०

आ पछी सारग लउ छु:

३५ सारग छद—अक्षर ९

नय सहिने नित्य रहे,
सउ जन सारग वहे;
भणि भणिने भक्ति करे,
भवजळ ते तुर्त तरे. ५०

द. पि. पृ. ३७

आ छद बहु वपरातो नथी. पण तेमा जुदाजुदा लगात्मक रूपोथी त्रिकलना आवर्तनो थया छे ए तरीके ए लीधो छे. 'दलपत पिंगळ'मा छापभूलथी के कोई कारणथी ताल बराबर जणातो नथी ते सुधारीने हु मूकु छु:

सारग: ललल लगा गाल लगा

आ पछी एक वार तो बहु ज लोकप्रिय थयेलो ललित छद हु लउ छु:

५७ ललित छद—अक्षर ११

नर रळा गण' न्याल हु थयो,
ललित लक्षणे ' ज्ञानमा गयो;
जन जगत्पती ' जो न ते भजे,
न सुख सपती' स्वर्गनी सजे १०१

द पि. पृ. ४२

आ छदनी पादटीपमा लखेलु छे के 'ललितमा छट्ठा अक्षर पछी यति आवश्यक छे.'

मेळनी दृष्टिए जोता आमा स्पष्ट रीते त्रिकलना जुदा जुदा लगात्मक रूपोथी त्रिकलनु आवर्तन थयेलु जणाशे छदनु लगात्मक रूप आपी तेमा सधिनो अत अल्पविराम मूकी दर्शावता न्यास नीचे प्रमाणे थशे:

ललल, गाल, गा ' गाल, गाल, गा

दरेक यतिखंडमा त्रिकलना बे आवर्तनो पछी एक गुरु आवे छे यतिखंडनो अंत्य संधि घणी वार पंक्तिना अंत्यसंधिनी पेठे खंडित थाय छे, ए ध्यानमा आवता तरत समजाशे के, यतिखंडने अंते आवतो गा ए गालनु खंडित रूप छे. ए रीते जोता प्लुतिनी मात्रा उमेरता आनी जातिछंद तरीकेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे दर्शावी शकाय.

दाल दाल दा⏑ दाल दाल दा⏑

एम करता पंक्तिमा बेकी आवर्तनो थई रहे छे, एटले आ जातिछंद स्पष्ट रीते त्रिकलनां आवर्तनोनो बनी रहे छे. अने पठन संवादी बनी रहे छे. पण सामान्य रीते ललित छंद आ रीते गवातो नथी ए उपरनी रीत करता वधारे प्रलंबित रीते गवाय छे, अने त्यारे तेनी प्लुति लबाई दरेक खंड त्रिकलना चच्चार आवर्तनोनो बने छे नीचे प्रमाणे:

दाल दाल दा⏑ — ⏑ दाल दाल — ⏑

आ रीते प्लुति लाबी टूकी करीने आ छंद बे रीते गाई शकाय छे. लाबी अने रूढ परंपरा बीजी रीतनी छे आ बीजी रीतमा यतिखंडने अंते आवतो गुरु छकल बने छे, संगीतनु आखु षट्कल ए गुरु पूरे छे आ बन्ने मतने बन्नेनो संपूर्ण टेको छे अलबत्त प्राचीन परंपरा प्रमाणे बन्ने आने अक्षरमेळ वृत्तोमा स्थान आपे छे:

"११ ललित

इतर नाम भाविनी, कनकमंजरी, भामिनी, इन्दिरा, शुद्ध कामदा, विद्युवदिता, राजहंसी

छंद – त्रिष्टुभ ६६४मु वृत्त अक्षर ११ (गायनमा मात्रा १६)

माप न र र ल ग उदा० — ललित थाय छे, नाररा लगे
||| SIS SIS | S

६ अने ५ अक्षरे यति आखा वृत्तनी १६ मात्रा थाय छे खरी, पण तेना चार चार मात्राना पृथक् पृथक् खडको नहीं पडवाथी ६ठ्ठो अने ११मो अक्षर त्रण 'मात्रा सुधी लबावो, त्रण त्रण मात्राना छूटा छूटा खडको पाडी जलद दादरा तालमां गाई शकाय अथवा तो (विलंब) दादरामा गाई शकाय ते माटे ६ठ्ठो अने ११मो अक्षर ६ मात्रा सुधी'लबावी गावामा आवे छे."

गा. वा. पा. पु १, वि ३, छंदोगीतविनोद. पृ. १३

सर्वेए इन्दिरा नाम आप्युं छे ते 'भागवत'मां आवतुं गोपिकागीत आ छंदमां छे अने तेमां इन्दिरा शब्द आवे छे ते उपरथी पडेलुं छे:

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज।
शयत इन्दिरा शश्वदत्र हि। वगेरे.

आनुं ललितं नाम नर्मदे पाडेल छे (नर्मकविता पृ. ९).

आ संदर्भमां आपणे कामदा फरी जोई जईए. चतुष्कल रचनाने अंगे ते आपणे जोयुं हतुं, तेनी उत्थापनिका

कामदा: गालगालगा गालगालगा

एवी आपणे त्यां करी हती अने त्यां द्वैतीयीक संधि गालगालगानां बे आवर्तनवाळो आ छन्द गण्यो हतो. पण आ छंद बीजी दृष्टिए जोता ललितने बहु ज मळतो छे अने तेनी ललित प्रमाणे उत्थापनिका करता ते त्रिकल रचना बनी शके:

कामदा: गाल गाल गा⌣ गाल गाल गा⌣

अर्थात् तेने त्रिकलना मेळमा लेता तेना पांचमा अने दसमा स्थानना गुरुने त्रण मात्रानो के विलंबित रीते लेता

कामदा: गाल गाल गा⌣ — ⌣ गाल गाल गा⌣ — ⌣

एम छ मात्रानो प्लुत करवो जोईए. आटली लांबी प्लुति तो ज(?)थई शके — शोभी शके, जो कामदामा ए स्थाने ललितनी पेठे यति होय. कामदा गुजरातीमा वपरायु नथी. ए मराठीमां वपराय छे अने 'छन्दोरचना'मां आपेला तेना मापमां यति छे अने तेणे आपेला दृष्टान्तमा पण यति छे:

कृष्ण वस्त्र हें' भयद घेउनी
अखिल विश्वही' त्यांत झाकुनी
रगणि संगमा' हृदयिं उत्सुक
जाय अष्टमी' – कुमुदनायक.

छन्दोरचना, पृ. ४०९

पण आ दृष्टान्त, पटवर्धन कहे छे तेम शुद्ध लगात्मक नथी (एजन पृ १८२ ७१०मा छन्द उपरनी टीप), जात्यात्मक छे. वर्ण तेने लगात्मक गणे छे अने तेमा पाचमे अक्षरे यति माने छे. ते कहे छे: "(आ छन्द) ४, ६ के १६ मात्राना कोई पण तालमा गवाशे. आम छे तोपण ३ के ६ मात्राना

जलद दादरा के दादरामा गावानो प्रचार विशेष छे; ने ए तालोमा गाती वखते ५मो अने १०मो अक्षर ६ मात्रा सुधी लवावीने बोलवामा आवे छे."
गा. वा. पा. पु. १, वि. ३, छदोगीतविनोद,, पृ. ७

आथी विशेष त्रिकलनी कोई रुगात्मक रचनाओ जोवी हु आवश्यक मानतो नथी. त्रिकलनी लगात्मक रचनाओ जोता एक वात जणाशे के तेना जाति-छदोमा लदा ओछु वपराय छे, पण तेनी लगात्मक रचनाओमा लगाना आवर्तनो ठीक ठीक आवे छे.

हवे हु दिंडी लउ छु. आठमा प्रकरणमा (गत पृ. ३२५) के. ह. ध्रुवनो उपन्यास में नीचे प्रमाणे दर्शाव्यो हतो :

दाल दाल दाल दाल दाल गागा

अने एनी अपूर्णता विशेना मारा तर्को दर्शाव्या हता. अही हवे हु एना मेळनी चर्चा हाथमा लउ छु

आ उत्थापनिका अनेक दृष्टिए अपूर्ण छे दिंडी मूळ मराठी साहित्यनो छद छे अने सद्गत नरसिंहराव कहे छे के मराठी नमूना उपरथी भोळानाथ साराभाईए एने गुजरातीमा उतारी[1] उपर जे उत्थापनिका आपी ते प्रमाणे ज भोळानाथ अने बीजा केटलाक गुजराती कविओए दिंडीओ लखी छे पण ते मराठी मूळ दिंडीथी केटलीक रीते भिन्न छे अने ए भिन्नता पिंगळनी दृष्टिए जाणवा जेवी छे आ भिन्नता नरसिंहराव पोते स्वीकारे छे तेओ कहे छे.

"दिंडीनु माप नीचे प्रमाणे छे —

गोडबोलेकृत 'वृत्तदर्पण'मा वर्ण्यु छे — चरण चार, अंत्य यमक, बन्ने चरणमा अथवा चारेमा सरखो, मात्रानो नियम (वर्णनो नथी), चरणमा १९ मात्रा, नवमी मात्राए यति, प्रथम विभागमा प्हेलो त्रण मात्रानो गण (गाल, लगा; अथवा ललल), पछी त्रण गुरु अथवा ६ लघु, अथवा लघु-गुरु मळीने ६ मात्रानो गण, बीजा विभागमा, ३ मात्रानो गण, पछी ३ मात्रानो गण, ते पछी बे गुरु.

१. I once thought and still think that dindi (as also abhanga) was first introduced into Gujarati poetry by Bholanath Sarabhai (who wrote his dindis, deliberately on the Marathi model sometime before A.D. 1880). Gujarati Language and Literature Vol II p 267.

वस्तुतः नीचे प्रमाणे स्वरूप छे:—

(I) दाल दाल दाल दाल दाल गा. . . गा

अथवा (II) दाल दादा दादाल दाल गा—गा

अने बन्ने विकल्पमां छेवटना गुरु ते अनुक्रमे छ अने त्रण मात्राना प्लुत छे—तेथी गा. . .गा ने बदले पा. . .पा. . मुकाय.

अर्थात्, नीचे प्रमाणे दिंडोनुं स्वरूप बे विकल्पोमां दर्शावाय:—

दाल दाल दाल दाल दाल गा गा

अथवा दाल दादा दादाल दाल गा गा

(तालस्थान ऊर्ध्वरेखा (।)थी दर्शाव्यां छे.)

पेटा ताल ० संज्ञाथी दर्शाव्या छे. दिंडोनी गेयता विचारतां, वस्तुतः छेवटना बे गुरु ते प्लुत छे, प्रथमनो छ मात्रानो, बीजो त्रण मात्रानो तेथी गा गाने बदले पा६ पा३ एम मूकाय, तो पूर्ण स्वरूप प्रतिबिंबित थाय.

तालव्यवस्था:—४ थी, १०मी, १६मी अने २२मी मात्राओ उपर ताल आवे छे (मुख्य ताल); अने १ली, ७मी, १३मी अने १९मी उपर पेटाताल.

(प्लुतदर्शन स्वीकारीने ज तालस्थान ने पेटातालस्थान २२मी अने २१मी मात्राए बताव्यां छे.)

वस्तुतः I वाळो विकल्प II वाळामां अंतर्भाव पामे छे. परंतु पेटा-तालना दर्शन माटे बे विकल्पो जुदा मूक्या छे. उदा० I विकल्पमां ७मी मात्रा (पेटातालवाळी) त्रीजो दानी प्रथम मात्राए स्पष्ट छे, पण विकल्पमां ए ज ७मी मात्रा दानी बीजी मात्रा स्थाने होई पेटाताल झीले छे. अर्थात् बीजी मात्राउपर पेटाताल होय ते II मां निगूढ कोई स्थळे होय ते I मा प्रथम मात्रानुं स्थान लई प्रगट रहे छे.

नोंध:—गोडबोलेना 'वृत्तदर्पण'माथी उतारो आप्यो छे ते पछीनो भाग में फलित सिद्धान्त (corollary) रूपे विस्तारथी मूक्यो छे."

बुद्धचरित (आवृत्ति १९४७) पृ. ११९-१२१

अही दिंडोना स्वरूप विशे नरसिंहरावे जे कई कह्युं छे ते साथे हुं सामान्य रीते सहमत छु जो के पेटातालस्थान २१मीने बदले १९मीजे कहेवुं जोइए. तेम ज उपर प्रधानगौण तालना दढ अने मीडां करेलां छे

तेमा पण मने मुद्रणदोष जणाय छे पण ते विषे विशेष लखवानी जरूर नथी, कारण के नीचे में ज दर्शावेल उत्थापनिका आपी छे ते ज तेमने उद्दिष्ट छे तेम हु मानु छु अही मात्र एक बे बावत मारे स्पष्ट करवी जोईए हु सगीतना गौणतालने जातिछदनी चर्चामा खास कारण विना लाववा मागतो नथी एटले दिडोना स्वरूपमा हु एनो निर्देश न करु बीजु, हु जातिओमा यतिने आगन्तुक मानु छु एटले ९मी मात्राए दर्शावेला यतिने हु छदनु अग न मानु अने एम करवाने मने मराठी दिडोओनु ज समर्थन छे पटवर्धन 'छन्दारचना'मा दिडीना दृष्टान्तो आपे छे तेमा सर्वत्र यति नथी हु तेमाथी पहेला बे दृष्टान्तो उतारु छु

(१) घोष ऐका 'ग्यानबा तुकाराम'!
राउळाची ही वाट सुखाराम!
गूढ भक्तीची दाखवीत लीला।
पहा दिण्डी चालली पण्ढरीला (२६१)

(२) "मणी पडिला दाढलि मकरतोण्डी
सुखें हस्तेंचो काढवेल प्रौढी,
परी मूर्खाचें चित्त वाधवेना
दवो कूर्मीच्या पाळवेल सेना" (तुकाराम पृ २१५८८)
छन्दोरचना पृ ४१०[१]

अलबत्त गोडबोलेए आपेला दिडीमा नवमी मात्राए यति छे, 'छन्द प्रभाकर' पण यति मान छे (छन्द प्रभाकर पृ ५६), पण सिद्धान्त जोता यति आवश्यक नथी अने दृष्टान्त पण एनु ज समर्थन करे छे एटले आपण यतिने छन्दना लक्षणमा स्वीकारीशु नही ए दृष्टिए दिडीनी प्रधान गौण बन्ने ताली दर्शावतो उत्थापनिका हु नीचे प्रमाण आपु

दिडी दाल] दादादा, दाल दाल, गा – – , गा ⏑

२ पटवर्धन आ छदने भृङ्गावर्तनी अर्थात् षण्मात्रक सधिना आवर्तनो वाळो गणे छे एओ सिद्धान्तथी त्रिकल रचना स्वीकारता नथी, षण्मात्रक ज स्वीकारे छे अलबत बधा त्रिकल रचनाओनो षण्मात्रक रचनाओमा समावेश करी शकाय, पण तेमा छन्दना स्वरूपनु पूरेपूरु विशिष्ट दर्शन थतु नथी, ए ए योजनानी अपूर्णता छे तेओ दिडीनु स्वरूप नीचे प्रमाणे दर्शावे छे

७० दिण्डी ⏑⏑–⏑ | – – – – | ⏑–⏑ | ⏑–⏑ | – +
छन्दोरचना पृ ४०५

अहीं मारे एटलुं उमेरवानुं के अंते आवतुं त्रिकल ते, पछी आवती पंक्तिना त्रिकल साथे जोडाई, एक षट्कल रचे. ए रीते षट्कल तालपरंपरा स्थापित थाय. आ रीते आ, नरसिंहरावे कह्युं छे तेम, संगीतप्रधान रचना छे, अने तेथी ते पदोना वर्गनी छे, पण तेमां मात्राबद्ध संधिओ जातिनी माफक ज सुघड अने सुरेख रीते आवे छे, एटले जातिओमां तेने लई शकाय छे. पदोमां आपणे जोईशुं के घणी त्रिकल अने षट्कल रचनाओमां आ प्रमाणे एक निस्ताल त्रिकल आवी पछी दादराना षट्कलना आवर्तनो तेमां शरू थाय छे, अने तेथी में उपर अर्धविरामथी दर्शावेल छे तेम षट्कल संधिओ पण आमां दर्शाववा जोईए.

गुजरातीमां आवतां, आ रचनानो एक स्थिर रहेलो षट्कल तूटीने बे त्रिकलोनुं रूप पाम्यो एनुं पिंगलनी दृष्टिए ए महत्त्व छे के एक तालमांथी बे संधिओ निष्पन्न थाय छे तेनो आ स्पष्ट दाखलो छे. अहीं देखातो दादादा गुजरातीमां आवतां दाल, दाल बन्यो अने आखी रचना रूढ़ंग त्रिकलात्मक बनी. मराठी जाणनार वर्गे पण ए त्रिकलात्मक रचना ज स्वीकारी छे. तेनुं माप तेओ नीचे प्रमाणे आपे छे.

दाल, दाल दाल; दाल, दाल, गा गा

अने मारा चिह्नोमां मूकुं तो नीचे प्रमाणे थाय

लदा / दाल	दादादा	लदा / दाल	लदा / दाल	दागा

अंते बे गुरु जोईए तेने बदले अहीं एक ज गुरु मूकेलो छे ते सरतचूक ज जणाय छे. कारणके पृ. ४०९ उपर दिंडीनी चर्चा करे छे त्यां अंते बन्ने गुरु आवश्यक गण्या छे पण तेमनी प्लुत मात्राओ खोटी रीते दर्शावेली छे. पृ. ३५९ उपर तेओ नीचे प्रमाणे प्लुत मात्राओ मूके छे.

"पहा। दिण्डी चा—। लली पण्ड—। रीऽऽ ला। ऽऽऽ

छन्दोरचना पृ. ३५९

अवग्रह चिह्न एक प्लुतमात्रा दर्शावे छे. तेमणे अंते आवता बन्ने गुरुने प्लुत गण्या छे खरा पण दरेकनी प्लुति मात्रा होवी जोईए तेटली गणी नथी. उपरनो पंक्तिमां उपान्त्य 'री' छ मात्रानो प्लुत बने छे, अने आखा षट्कलमां ते एक ज अक्षरनो विन्यास होवो जोईए, अने अंत्य 'ला' पण मात्रानो प्लुत होवो जोईए, अने तेने पछीना गणमां स्थान मळवुं जोईए. मने स्मरण छे के तेमनी आ सरतचूक महाराष्ट्रीय टीकाकारोए बतावी छे.

बर्वे ताल अक्षर नीचे आडी लीटीथी बतावे छे, ते में पण कायम राखेल छे. आ उपर तेओ लखे छे:

"आमा प्रथमनी ३ मात्रा मूकी चोथी मात्राथी माडी 'छ छ मात्राए ताल आपी दादरा तालमा गवाय छे; ए ताल गाती वखते उपान्त्य गुरुने कुल ६ मात्रा सुधी लवाववामा आवे छे, ने छेल्ला गुरुने त्रण मात्रा सुधी लवावी तेनी साथे आरंभनी त्रण मात्राओ लई तालनो गाळो पूरो कराय छे."

गा. बा. पा पु. १. वि. ३, छंदोगीतविनोद पृ. ९७

गुजरातीमा दिंडीओ सळंग त्रिकलात्मक बनी पण, कान्ते, तेमना घणी बाबतमा पुरोगामी राजाराम रामशंकरे, अने पछीथी नरसिंहरावे पण, मराठी दिंडीओ लखी छे प्रथम दाखलो राजारामनो लउ:—,

न्याय मार्गे में योजि प्रजा सर्व,
सज्जनो कर्या सुखी न मने गर्व.
स्वसादृश्य दीधु बधुजनोने में
राज्यपालन पण कर्यूं अति प्रेमे.

नागानन्द नाटकनु भाषान्तर, पृ. १३

पहेली पंक्तिमा दाल पछी दादादा आवे छे, जो के पछीनीमा दालना सळंग आवर्तनो आवी जाय छे

कान्तनी दिंडी शुद्ध मराठी दिंडी छे तेमा सर्वत्र पहेला दाल पछी दादादा आवे छे.

छत्र जेवा बेठा हता पिताजी,
लग्नग्रथी अभिनव रसाल ताजो,
जनेताओ र्‌हेता सचित ज्यारे,
ते अमारा दिवसो वही गया रे

'रमा,' पूर्वालाप, पृ. ८

अही नवमी मात्राए यति पळाई नथी.

हवे पचकल जातिरचनाओ लईए आपणे आगळ जोई गया के तेनी मुख्य जातिरचनाओनो सधि दालदा छे मदनावतार के कामिनीमोहनमा आ सधिना चार आवर्तनो थाय छे झूलणामा आठ सधिओ आवे छे अने तेना अत्यसधिनु खडन थवाथी ए आ सधिनो सौथी सुन्दर अने व्यापक छद बन्‍े छे बर्वे झपताल नीचे प्रमाणे दर्शावे छे:

७ झपताल, मात्रा १० : १ २ । ३ ४ ५ ६ ७ । ८ ९ १०

गा. वा. पा. पु. १, वि १, पृ. ८१

पांच मात्राए अर्धताल थई रहे. एटला भागमा मात्राओ बे अने त्रण एवी रीते विभक्त थाय छे. अने तेमा प्रथम मात्रा उपर प्रधान ताल पडे छे आपणे झूलणामा जोयेलो संधि उपरनी मात्रारचनाने अनुकूल करी समजी शकाय छे. दालदामा प्रधान ताल पहेली मात्रा उपर पडे छे अने दालदाना बे विभागो दा अने लदा करीए तो, तेना विभागो पण झपना मात्राविभागो साथे समान्तर थई रहे छे, मेळमा आवी रहे छे. अने आगळ उपर ज्यारे गौण ताल गणनामा लेवानी जरूर पडशे त्या एनो फरी विचार करीशु. हाल तो आपणे झूलणाना दृष्टान्तोथी आगळ चालीए:

बीज कडवू हतु गर्भ कडवो हतो,
गर्भनूं स्थान पण हतु एवु;
हतु शैशव कटू युवा कडवी हती
वृद्धपणु आवियू झेर जेवु
'लीबाळी' कागवाणी, भा. २जो, पृ. १९

प्रथम चरणमा एक तरफ 'हतु ए' लदादा छे, तेम ज बीजी पंक्तिमा 'हतु पं' तेम ज 'युवा कड' वच्चे लदादा छे प्रश्न ए छे के दालदाना आवर्तनो साथे आ लदादाना आवर्तनो आवी शके? तेथी मेळने हानि थाय?

खरी रीते आ प्रश्न आना करतां जरा मोटो छे. पचकल बीजना त्रण जातिसंधिओ विकल्पे थाय. आपणे स्वीकारेल दालदाना आवर्तनो पासेपासे मूकी एना सतत प्रवाहमायी जुदीजुदी जगाएथी संधिनो आदि कल्पी आपणे ए विकल्पो जोईए

दालदादालदादालदा

पहेले ज अक्षरेथी पचकल लेता दालदा मळे छे. बीजे अक्षरेथी लेता लदादा मळे छे त्रीजे अक्षरेथी लेता दादाल मळे छे. ते पछी दालदा फरी आवे छे. एटले के पचकलना त्रण जाति संधिओ थया: दालदा, लदादा, दादाल. आ त्रणेय एक ज सळंग पंक्तिमा आवी शके के केम ए प्रश्न आपणे विचारवानो रहे छे. पण ए प्रश्न हाथमा लईए ते पहेला आ संधिओ एटले लदादा अने दादाल संधिओना छंदो आपणे जोई जईए

लदादा सधि दालदा सधिना आवर्तनोवाळा छदोमा अपवाद तरीके आवे छे, पण एना ज आवर्तनोनो कोई जातिछद नथी दालदानो जातिछद प्रथम गमक लईए

१ गमक छद — मात्रा ५ ताल १

कळ वाण,
पद जाण,
ते गमक
पद समक १
त्रीजी ज,
कळ कोज,
त्या ताल,
समाळ २

द पि पृ. ७

उत्थापनिका दादाल

अही त्रीजी मात्रा उपर ताल कहेला छे ते दालदाना आवर्तनोमा आवतो ताल ज छ, दालदादालदा आ श्रणीमा त्रीजा अक्षरथी पचकल लेता दादाल मळे, तेमा ताल त्रीजी मानाए ज होय आ छद तो मात्र कौतुक जेवो छे एनाथी बमणा आवर्तनावाळो दीपक वधारे वपराशमा आवे छ ते आपणे जोई गया तेनी उत्थापनिका

दीपक दादाल दागाल

थाय छे ते आपणे जोयु अही बेकी आवर्तनो छ अने अते आवता गाल अक्षरो छदना अतने विशिष्ट रूप आपवा आवे छ

आ उपरात दलपतराम एक जळतरण आपे छ ते जोईए

८ जळतरण छद — मात्रा १३, ताल ३

तेर कळनो ज पदबध,
जाणजो जळतरण छद,
पाच पाचे ज विश्राम,
गुरु लघू अतने ठाम ४६

द पि पृ १०

उत्थापनिका : दालदा दालदा गाल

आ स्वरूपनो खुलासो सरल छे. त्रीजा संधिनी छेल्ली बे मात्रा खंडित करी ते अंत्य होवाथी तेने लगात्मक रूप आपेलुं छे. ए त्रण संधि पछी पण संधिना बेकी आवर्तनो पूरा करवा त्या चोथु आवर्तन अक्षररहित रहे छे, अने ते विरामथी पुराय छे. स्वाभाविक पठन एम ज थाय छे. मने आ छंदमा लांबे सुधी टकी रहेवानी शक्ति जणाती नथी. लांबी पंक्तिना काव्यना मुखबंध तरीके ए आवी शके एम जणाय छे. आने वपरायेलो जोयानुं मने याद नथी. पण आने मळतो एक छंद के. ह. ध्रुव संपादित प्रेमानन्दना मासमां वपरायेलो छे:

वलवले विरहिणी विरह वाध्ये
मन्मथे मोहना बाण साध्ये.
पियु विना अद घडी नव सुहाये
जीव जदुनाथ विरहे रे जाये. ८

प्रेमानन्दकृत ,मास, पृ. ५

प्रेमानन्दे आने मात्र 'छंद' कहेल छे अने ते देशीओनी वच्चे वच्चे आवे छे. ए पण देशोनी रीते ज गवातो होवो जोईए. छेल्ली पंक्तिमां रे छे ते देशीनी खातिरत छे. पण ते सिवाय छंदनु घडतर देशी जेवु शिथिल नथी, जाति जेवुं सुघड छे, एटले अही लईए. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

दालदा दालदा दालदा गा

अंत्य चोथा चतुष्कलनो त्रण मात्रा खंडित थई छे अर्थात् अंत्य गुरु पांच मात्रानो प्लुत बने छे, बराबर झूलणानु अंत्य अर्ध छे.

आ पछी पंचकल संधिओनां भिन्नभिन्न स्वरूपोना लगात्मक संधिनां आवर्तनोवाळा छंदो जोईए. तेमां सौथी वधारे परिचित भुजंगप्रयात के भुजंगी छे. उत्थापनिका दलपतराम प्रमाणे करुं छु.

भुजंगी : लगागा लगागा लगागा लगागा

एनाथी जरा ओछो प्रसिद्ध स्रग्विणी.

स्रग्विणी : गालगा गालगा गालगा गालगा

उपजातिना प्रवाहमा वारंवार छूटक आववाथी प्रसिद्ध थयेलो

ग्राही के
विध्वकमाला } गागाल गागाल गागाल गागा

छेल्ला संधिनो अत्य लघु खडित थयेलो छे.

भुजंगीनो अर्ध सोमराजी लगागा लगागा क्याक वपराय छे. स्रग्विणीनो अर्ध विमोहा गालगा गालगा वपरातो याद नथी. ए ज प्रमाणे विध्वकमालानो उत्तरार्ध हारी गागाल गागा पण वपरायो याद नथी. ते पछी शैल लईए:

शैल: लगागा लगागा लगागा लगाल

अही चोथा पचकलना अत्य गुरुने बदले एक लघु मूक्यो छे एटले ए लघुनु पठन गुरु तरीके थशे. जातिओमा एम थाय छे ए हु आगळ कही गयो छु. उपान्त्य गाने त्रण मात्रानो प्लुत करीने पण पचकल पूरुं करी शकाय. ए पछी दलपतरामे आपेल कद जोईए.

कंद: लगागा लगागा लगागा लगागा ल

पठन करता तरत जणाशे के भुजगामा एक लघु उमेरवाथी बनेलो आ छद तद्दन मेळ विनानो छे. चार आवर्तने एक पक्ति पूरी थाय छे, पक्तिने लंबाववी होय तो बीजा बे आवर्तनो सुधी लबाववी जोईए एटले के तेने छ आवर्तनोनी करवी जोईए, अने ए बे आवर्तनो पूरता एकलो एक लघु अही असमर्थ नीवडे छे. ए पछी दल लईए जे दलपतरामे पोते नवो बनाव्यो जणाय छे.

दल: गाललल गाललल गालगा गा

अत्य गुरु चोथु पचकल पूरे छे अर्थात् अत्य गुरु पाच मात्रानो प्लुत बने छे.

पडधमी: लललगा लललगा लललगा गागा

अही पण अत्य सधिमा एक मात्रा खडित थई छे तेथी अत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत बने छे.

आ सिवाय बीजा केटलाक 'दलपत पिंगळ'मा आपेला छे पण ते महत्त्वना नथी, एटले लेतो नथी. पण आपणा पिंगळोमा नही आवतो एक छद लउ छु—अश्वधाटी. आ छद गुजरातीमा कोई प्रसिद्ध कविए वापर्यो नथी. ए छदमा रचेला पडित जगन्नाथना श्लोको सस्कृत जाणनारा शास्त्रीओमा बहु प्रसिद्ध छे आ छद दक्षिणमा प्रसिद्ध छे, मराठीमा वपरायो छे, अने पटवर्धन तेनी नोंध ले छे. हु प्रथम जगन्नाथनो एक श्लोक लउ:

गजायितोऽपिमति गजासुरोऽपि वत गजायतेऽत्र धनद.
गजाघटीति गुणपुञ्जायितस्य न तु गुञ्जामित च गनकम्॥
किं जाग्रती जयसि? किं जानती स्वपिषि? सिंजानन्पुरपदे!
तजापुरेशि! नयनजाक्षि! साधु तदिदजातु वा विभु शिवे? १३॥
अश्वधाटी

पटवर्धन आनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे. हु मारी लगानी सज्ञामा ते उतारु छु.

गागाल। गाललल। गागाल। गाललल। गागाल। गाललल। गा
छ. र. पृ. १९०-१९१

आ रीत पण उपपन्न छे आ रीते जोतां आमां पचकलना छ आवर्तनो थई एक गुरु आवे छे, ते वेळी आवर्तनो पूरा करवा दशमात्रक बने छे, अर्थात् ए गुरु दश मात्रानो प्लुत बने छे अथवा तेनी पछी विराम आवी कुल दश मात्रानो गाळो स्था जाय छे. पण अनेक वारना सांभळेला पठनोथी मन नीचे प्रमाणनो न्यास सूचे छे.

गा] गालगा, लललगा; गालगा, लललगा; गालगा, लललगा;

आ रीते पक्तिना अत पछी आठ मात्रानो गाळो गया पछी बीजी पक्तिनो पहेलो गुरु मळता दश मात्रानो ताल पूरो थई रहे. एम करतां पक्तिमा रहेला अतरप्रासो वधारे स्फुट थाय छे, ताल पठन प्रमाणे निर्देशाय छे, अने आपणे अनेक सगीतात्मक' रचनाओमा जोयु छे तेम, छेल्लो एटले चोथो दशकल सधि बे पक्तिओ वच्चे विभक्त थई बे पक्तिओ रेणाई जाय छे सगीत प्रधान होवाथी में पचकल उपरात दशकल पण अर्धविरामथी दर्शाव्या छे. आ अश्वधाटी जो के गुजरातीमा नथी आवतो पण कोण जाणे केम, एमाथी ऊतरी आवी होय एवी एक रचना दलपतराम आपे छे:

८२ लीला छद — अक्षर १४

तू भावि जंग लडि, थावयो नही ज लेश,
लीला विषेज मन, कीधू सदा प्रवेश;
रे लाभनो न कदि, कीधो ज तें तपास,
दमी दिठो ज दिल, दीठो न देवदास. १८४
द. पिं. पृ. ५२

तालमा छापनी भूल होय के गमे तेम होय एक सरखी तालनी मात्रानी श्रेणी चालती नथी. पहेली पछी छठ्ठो, पछी अगियारमी आवे छे त्या सुधी पचकलनी श्रेणी चाले छे, पण पछी 'न' उपर ताल आवे छे ते चार मात्राए आवे छे, अने 'ले' उपर आवे छे ते पण चार मात्राए आवे छे. ए ताल प्रमाणे तो एटलो भाग दोहरानो सम यतिखड "थावयो नही ज लेश" वंचाय! कोई रचनामा एक ज पंक्तिमा एम पचकल साथे चतुष्कलनु मिश्रण न थई शके. कविनी समज एवी हती, के छापनी भूल छे ते जाणवा साधन नथी. हु तेनो पचकलोनो न्यास नीचे प्रमाणे करू :

गा गालगा, लललगा, गालगा लगाल;

अत्य ल ने गुरु करता त्या एक पंचकल बनी रहे. पछी अश्वधाटीनी पेठे आठ मात्रानो विराम आवो पछीनो पक्तिनो निस्ताल गुरु तेमा मळी आखु दशकल थाय. छद सुन्दर नथी लागतो, पण अश्वधाटीनी असर देखाय छे माटे उतार्यो छे. आ पछी हु पचकलनी कोई लगात्मक रचना अही चर्चवा जेवी महत्त्वनी मानतो नथी.

हवे हु तालनी चर्चा हाथमा लउ छु. आपणे दालदा सधिने मुख्य संधि तरीके स्वीकार्यो छे. तो शास्त्रीय पद्धति ए छे के बीजा सधिओने दालदाना प्रवाहमाथी ज निष्पन्न करवा अने ए निष्पन्न थयेला सधिओमा पण ए प्रवाहमा ज्या ताल आवतो होय ते ज स्थाननो ताल पण राखवो. हु स्पष्ट करु :

दालदादालदादालदादालदा

पहेला अक्षरथी शरू करता दालदा सधि मळे छे, तेमा पहेली मात्राए दालदा एम ताल छे. बीजा अक्षरथी शरू करता लदादा निष्पन्न थाय छे अने तेमा अंत्य दा उपर ताल छे एटले सधिमा लदादा एम ज ताल राखवो जोईए. त्रीजा अक्षरथी शरू करता दादाल मळे छे अने तेमा बीजा दा उपर ताल छे, तो दादाल एम ज एमा ताल राखवो जोईए. आ प्रमाणे एकतन्त्र व्यवस्था करता

भुजगी : लगागा लगागा लगागा लगागा

एम थाय छे. ए प्रमाणे ताल गोठवी पठन करतां कशो वांधो आवतो नथी. ए प्रमाणे विष्वक्माला के माहींमां बीजा गा उपर ताल आवे

माही के
विष्वक्माला : } गागाल गागाल गागाल गागा

दलपतराम आमां पहेला गा उपर ताल नाखे छे,—पण हुं मानुं छुं, तेमने अक्षरमेळना आ आवर्तनात्मक रूप समजायुं नहोतुं माटे, बाकी आ ज एटले दादाल सधिना गगार अने दोधक वर्गमां तेओ दादाल ए प्रमाणे ज ताल नाखे छे. के. ए पृ. पण दादाल सधि स्वीकारतां ए ज स्थाने ताल नाखे छे. तेमणे तेने वाभाह कहेलो (प. पि. आ. पृ. २०) छे पण तेमणे ह्रस्व के गुरुनी विशे आ पुस्तकमां कई कहेलुं नथी.

अहीं ए स्पष्ट करवुं जोईए के ज्यां गागागा के गागाल ए सधिना ज आवर्तनो प्रारंभथी शरू थया होय त्यां ज आ प्रमाणे ताल आवश्यक बने छे पण कोई बीजा सधिथी शरू थयेला छंदमां वचमां उपरनो कोई सधि आवतो होय तो दरेक सधिए प्रारंभथी चाली आवती तालनी श्रेणी प्रमाणे ताल लेवो जोईए. दालदा लदादा दालदा दालदा एम आवे त्यारे बीजा लदादा सधिए पहेली मात्राए ताल लेवो जोईए. ते ज प्रमाणे दादाल वचमां आवे तो तेणे पण पहेली ज मात्राए ताल लेवो जोईए. दालदा साथे लदादा आव्यानो दाखलो, आपणे पंचकलना निरूपणना प्रारंभमां उतारेल काव्यमां जोई गया हता

बीज घडयूं हतुं गर्भ घडयो हतो
गर्भनुं स्थान पण हतुं घडयुं

आमां दालदाथी आवर्तनो शरू थाय छे अने पंक्तिने अंते 'हतुं घडयुं' त्यां लदादा गा एम आवे छे त्यां लदादामां पण चाली आवेली श्रेणी प्रमाणे पहेली मात्राए ज ताल आवे. दादाल माटे नीचेनुं दृष्टान्त मळे छे .

शब्द घोल खरो सकल विद्या भणे
अध्यात्म ऊपरे आवी ओप

भक्तिज्ञानना पदो, पद ४१, म का स पृ. ४८६

अही 'अध्यात्म' ए दादाल छे अने त्या पण पहेली मात्राए ज ताल पडे छे. ज्यां लदादा के दादालना आवर्तनो प्रारभथी ज होय त्या लदादा अने दादाल एम ताल पडवो जोईए अने तेना लगागा अने गागाल ए रूपोमा पण ए ज ताल ऊतरी आववो जोईए, एटलु मर्यादित वक्तव्य अही छे.

हवे प्रश्न ए रहे छे के दालदाना अवर्तनोमा लदादा आवे अने दादाल आवे ए बन्नेनी सरखी असर छे? के कई फरक छे? अही आपणे जेम लगालनी खास असर समजवा लावणीना गौण तालनी स्थितिनो विचार कर्यो हतो तेम अही पण झपना गौण तालनो विचार करवो आवश्यक छे. अने आ सदर्भमा हु दालदा सधिनो झप साथेनो आखो सबध फरी वार विचारी जवा इच्छु छु. बर्वेए झप आप्यो छे ते फरी वार जोईए.

झपताल १० मात्रा. १ २ । ३ ४ ५ ६ ७ । ८ ९ १०

पहेला कही गयो तेम अहीं दसनी अर्ध पाच मात्रा लेता तेना बे विभागो २+३ एवा स्पष्ट मालूम पडे छे. आपणे झूलणानो जे दालदा सधि लईए छीए तेमा पण दा+लदा एम लेता उपर प्रमाणे विभागो पडी रहे छे पण प्रधान अने गौण बन्ने तालो ध्यानमा लेता केटलीक मुश्केलीओ प्रतीत थाय छे झप तालमा त्रीजी मात्रा उपर गौण ताल छे आपणे हमेशा मुख्य सधि पसद करता, ताल माटे गुरु अक्षरने अवकाश होय एवी रीते सधिनी घटना करीए छीए.' तेने बदले, उपर आपेला झपना निरूपणमा दालदामा गौण ताल मूकता ते लघु उपर आवशे: दा ल दा ए प्रमाणे ताल स्थाने गुरु मूकीए तो सधि दादाल थशे आ सधि पण पचकलनो ज पर्याय छे पण तेमा तालनी व्यवस्था आपणे स्वीकारी छे तेथी भिन्न जणाशे दादालमा आपणे बीजा दा उपर मुख्य ताल मूकीए छीए, तेने बदले उपरना सधिमा बीजा दा उपर गौण ताल आवशे. आ प्रमाणे जोता झपतालनी मात्राव्यवस्थामाथी आपणे बराबर दालदा मेळवी शकता नथी एम करवा माटे आपणे एक बीजी उपपत्तिनु अवलबन लेवु पडशे, जे पण प्रामाणिक छे दालदानी घटना बे रीते सभवे छे. आ पचकलनु पृथक्करण करता तेमा प्रधान रूपे दाल एवु त्रिकल बीज जणाशे. आ दालमा गौणतालयुक्त दा उमेरवाथी पचकल बीज निष्पन्न

थाय छे; दालमां दा उमेरतां दालदा थशे, अने दालनी पूर्वे दा उमेरतां दादाल थशे. बन्ने रूपो पिंगलना मधिओ साथे अभिन्न छे आमा झपनी मुख्य व्यवस्था, एटले के पांच मात्राना २ अने ३ मात्राविभागो कायम रहे छे. ते उपरांत तालव्यवस्था पण कायम रहे छे: उपर जे झपतालनी मात्राओ ताल सहित बतावी छे तेमां, ए तो कहेवानी जरूर ज नथी के प्रधान तालो वच्चेनु अंतर पांच मात्रानु छे, अने एम होय तो पछी गौण तालो वच्चे पण एटलु ज पांच मात्रानु अंतर होय. खरा महत्त्वनी वात तो प्रधान गौण वच्चेनु अंतर छे. झप तालना पूर्वार्धने ज संधि गणी तेना आवर्तनो करता नीचे प्रमाणे थाय.

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

अही गौण ताल अने प्रधान ताल वच्चेनु अंतर एक बाजुथी गणता बे मात्रानु छे, बीजी बाजुथी गणता त्रण मात्रानु छे. दा ल दा ना आवर्तनोमां पण ए-ज अंतर जणाशे.

१	३	४	६	८	६
दा	ल	दा	दा	ल	दा
१		५	७		१०

गौण ताल प्रथम संधिमा चोथी मात्रा उपर छे. तेनी पूर्वनो प्रधान ताल तेनाथी त्रण मात्रा दूर छे, तेनो पछीनो प्रधान ताल तेनाथी बे मात्रा दूर छे. एटले के दालदा अने तेनी ज साथे दादाल बन्नेनी घटना झपतालने समान्तर ज छे अने तेथी दालदा एवो गौणतालयुक्त संधि आपणे पिंगल माटे प्रमाणभूत गणी शकीए. अने हवे आपणे दालदाना आवर्तनो साथे ते सिवायना बीजां आवर्तनोनो मेळ जोईए. उपर जे दालदानो प्रवाह आपेलो छे तेमा पहेली अने छठ्ठी मात्रा प्रधान ताल माटे उपलब्ध छे. हवे दालदाना प्रवाहमा लदादा भळता ए ज सख्यानी मात्राओ ए ज रीते उपलब्ध रहे छे:

१	३	४	६	७	६
दा	ल	दा	ल	दा	दा
५		५		८	१०

एने ए ज १ली अने छठ्ठी प्रधान ताल माटे, अने ४थी अने ९मी गौण ताल माटे उपलब्ध रहे छ, एटले दालदाना आवर्तनोमा क्याक लदादा आव-

वाथी मेळने जरा पण विक्षेप थशे नही बोलवामा पण विक्षेप थतो नथी. हवे दालदामा दादाल भळता शी असर थाय छे ते जोईए

१ ३ ४ ६ ८ १०
दा ल दा दा दा ल
२ ५ ७ ६

अही प्रधान ताल माटे १ली अने ६ठ्ठी उपलभ्य छे गौण ताल माटे ४थी उपलभ्य छे, पण ९मी नथी उपान्त्य दानी जगाए गुरु आवे तो ९मी मात्रा गुरुनी आंगली मात्रा नीचे दबाई जाय पण आपणे ल्गालमा जोयु छे के एटलाथी मेळ तूटतो नथी मात्र उच्चार उत्कट थाय छे गागालनो उच्चार पण उत्कट छे तालथी स्वतन्त्र रीते विचारता पण बे गुरु पछी एक लघु आवता उच्चार घणो ज उत्कट बने छे एवी असर करवा ए पर्यायनो उपयोग करी शकाय पण ए उत्कट होवा छता दादाल के गागालना आवर्तनोनो छद बनाववामा कशो प्रत्यवाय नथी

१ ३ ५ ६ ८ १०
दा दा ल दा दा ल
२ ४ ७ ६

दादाल सधिने स्वतन सधि लेता जणाय छे के तेमा गौण प्रधान तालनी एवी व्यवस्था छे के तेना आवर्तनमा बन्नेने खुल्ली अबाधित मात्रा मळी रहे छे माटे ज दादाल के गागालना आवर्तनोना छदो मळी रहे छे हवे दादालना आवर्तनोमा बीजा पर्यायो भळता मेळने शी असर थाय ते जोईए

१ ३ ५ ६ ८ ६
दा दा ल दा ल दा
२ ४ ७ १०

पहेलानी पेठे ज १ली ६ठी गौण ताल माटे अने ३जी ८मी प्रधान ताल माटे उपलभ्य छे अर्थात् मेळ पूरेपूरो सचवाई रहे छे पण दादाल साथे ल्दादानो मेळ एटलो सारो मळतो नथी

१ ३ ५ ६ ७ ६
दा दा ल ल दा दा
२ ४ ८ १०

अही गौण ताल माटे १ली ६ठ्ठी उपलभ्य छे पण प्रधान ताल माटे ८मी उपलभ्य नथी एटले मेळ बगड छ एटले दादालना प्रवाहमा लदादाने अनिष्ट ज गणवो जोईए दादालना प्रवाहबद्ध कोई छदमा में लदादा पर्याय जोयो नथी लदादाना प्रवाहवाळो कोई जातिछद नथी एटले एनी साथे मेळनो प्रश्न रहेतो नथी, पण तेम छता उपरनी रीते गणतरी करी जोता

जणाशे के लदादाना प्रवाहमां दालदा भळता गौण ताल माटे मात्रा अनुपलभ्य बने छे, अने लदादा साथे दादाल भळता गौण अने प्रधान बन्ने तालो माटे मात्रा अनुपलभ्य बने छे आ बधा परिणामो नीचे प्रमाणे सगृहीत करी शकाय

दालदाना प्रवाहमा लदादानो सपूर्ण मेळ बेसे पण दादाल आवता गौण तालनी मात्रा दबाय अने रचना उत्कट बने

दादालना प्रवाहमा दालदानो सपूर्ण मेळ बेसे पण लदादा आवता प्रधान तालनी मात्रा दबाय एटले एने अनिष्ट गणवो जोईए

लदादाना प्रवाहमा दालदा आवता गौण तालनी मात्रा दबाय छे, अने दादाल आवता गौणप्रधान बन्नेनी मात्राओ दबाय छे, एटले के मेळ तूटे छे

बधा परिणामोने एक नजरे जोता जणाश के त्रिकल सबधी आपणे जे एक समीकरण कर्यु के दाल = लदा ए ज अही प्रवर्ते छे दालदामा दाल छे ते लदा बनी शके छ एटले दालदा साथे लदादानो मेळ बसे छे ते ज प्रमाणे दादालमा पण दाल छे तेथी तेनी साथे दालदानो मेळ बेसे छे. लदादामा दाल छे नही तेथी तेनी साथे कशानो सपूर्ण मेळ बसतो नथी अने आ रीते दालदाना मेळनो विस्तार जोता दालदानु आपणे दाल + दा एवु पृथक्करण कर्यु ते बिंबप्रतिबिंब न्याये समर्थित थाय छे अने तेथी दालदाने जाति छदोनो प्रकृतिभूत सधि मानवामा कशो बाधो आवतो नथी

पण अही उमेरवु जोईए के अही दालदा, लदादा अने दादाल सधिओ विशे जे कई कहयु छे ते पिंगलनी उत्पत्तिनी दृष्टिए कहयु छे आपणे दालदा बीजने प्रधान लई तेना तालोने मूळभूत गणी उपर प्रमाण परिणामो जोया पण सगीतनी दृष्टिए त्रणेय सधिओने स्वतत्र लई शकाय, अने सगीतनी दृष्टिए गमे त्या ताल मूकी श्रेणी रचवामा कशो दोष आवे नही पण एटलु कहेवु जोईए के सधिनु जे कोई स्वरूप लईए, अने तेमा जे कोई तालव्यवस्था स्वीकारीए तेने पछी वळगी रहीने ज आखी रचनामा तालव्यवस्था करवी जोईए एटलु पिंगळ माटे आवश्यक छे सामान्य रीते दालदा के लदादा

दादाल एम ताल मूकी श्रेणी करता कशो बाधो आवशे नहो, कारण के पहेली मात्राए ज मुख्य ताल मूकीए तो त्रणेय सधिओने अवकाश मळशे ज कारण के सधिनी पहेली मात्रा हमेशा खुल्ली होय ज पहेली सिवायनी मात्रा लीधी होय त्यारे ज जोवान् के तालनी मात्रा उपलभ्य छ के नही अने वधारे झाणवटथी छदनी असर पारखवी होय तो गौणतालनी मात्रानो पण विचार करवो जोईए पण ते साथे ए ध्यानमा राखवु जोईए के पिगले पोतानो पक्षपात आपणे प्रकृतिभूत गण्यो छे ते दालदा सधि तरफ बताव्यो छे

हवे सप्तकल रचनाओ लईए ए १४ मात्राना दीपचदी तालमाथी निष्पन्न थई छे वर्वे दीपचदी ताल नीचे प्रमाण आपे छे

होरी-दीपचदी १ २ ३ । ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० । ११ १२ १३ १४

तालना अर्धमा सात मात्राओ आवे अने तेमा पहेला खडमा दाल आवे छे. अने बीजा खडमा दादा आवे छे अर्थात् दालदादा एम सधि निष्पन्न थयो. आ सधिनी श्रेणीमाथी नीचेना सधिओ निष्पन्न थाय

दालदादादालदादादालदादादालदादा

पहेला अक्षरथी सधि लेता दालदादा, बीजाथी लेता लदादादा, त्रीजाथी लेता दादादाल अने चोथाथी लेता दादालदा अने ए प्रमाण ज श्रेणीना तालो दरेक सधिमा ऊतरी आवे अही प्रथम सधि दालदादा मळे छे, पण तेना करता वधारे प्रसिद्ध अने परिचित सधि दादालदा छे जे हरिगीतमा आवे छे

हरिगीत दादालदा दादालदा दादालदा दादालगा

अत्य गुरु पक्तिनो अत बतावबा आवे छे ए साथे दादालदाना पूरा चार आवर्तनो छ दलपतराम आ छदमा १४मी के १६मी मात्राए यति कहे छे अलबत्त यति ए छदनु अग नथी, पण तेना वे वैकल्पिक स्थानो केम थया ते जोवा जेवु छ १४ मात्राए तो सधिना ब आवर्तनो थई रहे एटले यति आवी शके ए देखीतु छ पण सोळे आवे छे त्या खरी रीते उत्थापनिका ज

जरा जुदी थाय छे एम कहेवुं जोईए. दालदाने बदले त्यां पहेलो निस्ताल दा जुदो करी पछी दालदादानां बे आवर्तनोए यति आवे छे एवो एनो अर्थ छे. आ प्रमाणे :,

दा,दालदादा दालदादा दालदादा दालगा

एक एवो मत छे के प्रथम मात्रा उपर ताल आवे ए रीते ज संधि नक्की करवो. हुं एवो कोई सिद्धान्त करवाना मतनो नथी. संधिनुं स्वरूप पठन उपरथी ज दरेक प्रसंगे नक्की करी लेवुं एम हुं मानुं छुं. अत्यार सुधी आपणे संधिओनी ए रीते ज व्यवस्था करी छे अने आद्यमात्रा उपर ताल न होय एवा संधिओ स्वीकार्या छे. आ पण तेवो प्रसंग छे.

अर्वाचीन युगमां हरिगीतनां ठीक ठीक नवां रूपो योजायां छे. सौथी पहेलां नर्मदाशंकरे पंक्तिमां आवतो प्रथम निस्ताल दा काढीने ज रचना शरू करी, जेने आपणे छव्वीसी रचना कही शकीए.

छव्वीसो हरिगीत: दालदादा दालदादा दालदादा दालगा

छव्वीसी अने अठावीसी रचनाओना मिश्रणने नरसिंहरावे विषम हरिगीत कही. नरसिंहरावे एथी आगळ जईने खंड हरिगीतनी रचना करी. तेना सामान्य रूपनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

खंड हरिगीत: दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दा दालदादा दालगा

अही संधि प्रथम मात्राना तालवाळो दालदादा छे अने दरेक पंक्तिमां तेनां बे आवर्तनो छे, पण बीजा संधिनी अंत्य बे मात्राओ खंडित थई छे, जे त्यां विलंबनथी पुराय छे, पण चोथी पंक्ति उपसंहारार्थे लावी थाय छे तेमां प्रथम निस्ताल दा आवे छे, जे आगली एटले त्रीजी पंक्तिना संधि साथे भळीने आखो संधि बनी रहे छे. तेमने पोते शास्त्री पण वधारे वैचित्र्यमय रचनाओ करी छे. सद्गत बाबुराय, कवि न्हानालाल तथा खबरदारे पण आ ज संधिना जुदीजुदी संख्याना आवर्तनोवाळी पंक्तिओनी भिन्नभिन्न रचनाओ करी छे, जेनी विगत आपवानी मने जरूर जणाती नथी.

आ पछी आपणे आनायी अर्ध सधिसख्यावाळो उधोर लईए. आठमा प्रकरणमा जोई गया तेम दलपतरामना लक्षण उपरथी तेनी नीचे प्रमाणे उत्थापनिका थाय :

उधोर दादादाल दादागाल

अही दलपतराम आ सप्तकलमा दरेक दा उपर एक एम त्रण तालो नाखे छे. दा दा दा ल ए रीते. ए देखीतु ज अनुपपन्न छे दालदादानी श्रेणीमाथी आपणे आ सधि निष्पन्न करता तेमा दादादाल ए प्रमाणे ताल नाखेलो, अने एने ज साचो गणवो जोईए दलपतरामे ज उधोरर्थी अरधा कतामा दा दा दा ल एम ताल नाखेलो छे मे आगळ पद्धरीने अगे कहेलु के दलपतराम कोई वार गुरुना सभवमात्रथी गुरुना भारने सताल गणवा प्रेराय छे, तेवु अही थयेलु छे (गत पृ. ३७७).

हवे सप्तकलनी लगात्मक रचनाओ जोई जईए

सौथी पहेला प्रिय ललगालगा पचाक्षरी आवे छे पछी

तोमर ल ल गा ल गा ल ल गा ल

अही सप्तकलना बे आवर्तनो छे, तेमा बीजा सधिनो अत्य गुरु खडित थयेलो छे तेनी मात्राओ उपान्त्य गानी प्लुतिथी पुरवानी छ पछी

सजुकता ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा

हस ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा

हसमा त्रण आवर्तनो थाय छे, चोथा आवर्तननो गाळो विरामात्मक रहे छे.

९४ रूपमाळी छद — अक्षर १७

रास जा जिम गाळयो बवा वर्ष बहु थाय,
राणि जो शुभ रूपमाळि चिते न भूपति न्हाय,
बोलवो मुख बोल ते करि तोलवत विचार,
वाढवो नहि आकरो अगबुद्धि एव उचार १९७

द पि पृ ५४–५५

उत्थापनिका : गालगालल गालगालल गालगालल गाल

अहीं गालगाललना त्रण आवर्तनो छे, अने चोथु आवर्तन खंडित थई गाल रूप बने छे

आ रूप प्लुतिओथी पुराई पूरु सप्तकल बने छे, पण तेम करवानी पद्धतिओ बे छे, एक तो अंते आवता लघुने ज पांच मात्रानो प्लुत करवो ए पण ते करता वधारे परिचित पद्धति उपान्त्य गुरुने त्रण मात्रानो करी अंत्य लघुने चार मात्रानो प्लुत करवानी छे ढाळ नामे प्रसिद्ध सप्तकल देशीमां अंत्य खंडित संधि घणी वार गाल रूपे आवे छे अने त्यारे में कही ते बीजी रीते ए प्लुतिबद्ध थाय छे 'कादंबरी'मांथी चार पंक्ति लई स्फुट करु'

ढाळ

गूढ कोटर पत्र छाया जोई वसमु ठाम
शुक समूह अनेक आवी करि तिहां विश्राम.
पत्र विहुणा पाखडी नरि पखी दरगी पान
दिवस रजनी तिहां रहि छि जाणी उत्तम स्थान
कादंबरी, कडवु ४

आ अलबत्त सप्तकलनी देशी छे, पण तेमां संधिओ अणीशुद्ध छे तेनी उत्थापनिका

दालदादा दालदादा दालदादा गाल

एम थाय छे अने पठनगानमां अंत्य संधि गाल, गा ⌣ ल ⌣ – आ प्रमाणे उच्चाराय छे रूपमाळी आ देशी साथे सरखावतां ए देशीनु ज लगात्मक रूप जणाशे प्लुतिनी मात्रा बे रीते पूरतां नीचे प्रमाणे थाय

१ गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गाल – –

२ गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ⌣ ल ⌣ –

आ पछी चर्चरी के विबुधप्रिया लईए

९९ चर्चरी अथवा विबुधप्रिया छंद— अक्षर १८

रास जो जिम रासडा, जन भाखता न मुख भलु,
चर्चरी चितमा धरो, वळि कष्ट वारण बेटलु,

क्लेशथी लवलेश जो कदि क्रोध अंतर ऊपजे,
नेणमा वळि वेणमा पण शांति सज्जन तो सजे. २०५
द. पिं. पृ. ५७

उत्थापनिका: गालगालल गालगालल गालगालल गालगा

अत्यसंधिमा बे मात्रा खडित थई छे ए देखीतु छे. दलपतरामे बार मात्राए अल्पविराम करेलु छे ते यति दर्शावे छे, एटले जातिओमा होय छे तेवी शब्दान्तसूचक यति त्या छे, जे छंदनु अग नथी. रोळानी पेठे संधिनी अदर यति अन्वान् आ पण दृष्टान्त छे. आने मळती पण देशी होय छे, जेमा अते गालगा आवे छे, पण ते अहो मूकवानी खास जरूर नथी.

आ पछी झूलणा लईए. झूलणा जाति पचकल छे, पण आ लगात्मक झूलणा सप्तकल छे

१०१ झूलणा छद — अक्षर १९

सज जोभरे सलुणो सदा शुभ वाक्यमाहि मिठाश,
झुलतु ज वाळक झूलणातणु हर्खि होय हुल्लास;
नर नारि धारि विचारिने वळि सारि सारि कहेज;
सुणि रक ने वळि राय ते दिल राजि राजि रहे ज. २०७
द. पिं. पृ. ५७–५८

उत्थापनिका. ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगाल

आनो अत्य सधि रूपमाळी जेवो छे अने तेनी पेठे बे रीते तेनु पठन थाय. प्लुतिनी मात्राओ पूरता बन्नेनो उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

१. ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगाल —

२. ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगा॒ल॒

पहेली पद्धतिमा सप्तकलनी मात्राओ पूरी करवा अत्य ल त्रण मात्रानो प्लुत बने छे, बीजीमा उपात्य गा त्रण मात्रानो प्लुत बनता अत्य ल गुरु बने छे एटलो रूपमाळो करता आमा भेद छे. पण आ वधी रचनाओमा खूटती मात्राओ छेल्ला रूपकलना अत्य गालमा कोई बीजी रीते पण वहेचीने प्लुतियोजना करी शकाय. आ पछी गीतक के मुनिशेखर लईए.

१०४ गीतक अथवा मुनिशेखर छंद—अक्षर २०

सजि जा भरी सळगाय बंदुक ताकि ताड निशान तूं
शुभ ए पळा मुनिशेखरे शिखवेलि ते ज समान तूं,
करि क्षत्रि धर्मनु कर्म ते परमार्थ पूर्ण तु पामशे,
दळ दुष्टने सुख दीनने दई जे भरी जश जामशे २११

द पि पृ ५८

उत्थापनिका ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा

पूरा चार आवर्तनो थई रहे छे विशेष कई कहेवानु रहेतु नथी

हवे सप्तकलना चार पर्यायोना अदरअदरना सबधो जोईए आ सबधमा सौथी पहलु ए कहेवानु प्राप्त थाय छे के जो के आ सधिमा बे ताल नाखवानी परपरा छे पण कर्वेए आपेला तालनु स्वरूप जोता दालदादा एम एक ज मुख्य ताल छे, ल पछी आवता दा उपरनो ताल गौण छ, अने गौण ताल सामान्य रीते आपणे पिंगलमा लेता नथी सद्गत के ह ध्रुवे पण सप्तकल सधिओ आपेला छे तेमा एक प्रधान ताल ज बतावेलो छ वाहगावा वाग्राहना अने गांगावाह अने आ ताल परस्पर उपपत्तिवाळा छे आ रीते

दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा

त्रीजा अक्षरथी सधि लेता दादादाल मळ छ, चोथाथी लेता दादालदा मळ छ लदादादाना स्वतत्र आवर्तनोनी कोई जातिरचना मळती नथी एटले ध्रुवे आ सधि आप्यो नथी एम जणाय छे अने एक ज ताल नाखवाथी पण सधिना आवर्तनोमा सवादने कशी हानि थवानी नथी कारण के सधिनु स्वरूप एक बाजु प्रधान तालथी तेम बीजी बाजु लना नियत स्थानथी असदिग्ध रीते नियत थई जाय छे छता परपराथी ब ताल चाल्या आवे छ तो तेने स्वीकारवामा पण कशो दोष नथी अने आ बधा पर्यायोना परस्पर मेळो जोवा ए आवश्यक पण छ

हर कोई एक सधिना आवर्तनप्रवाहथी निष्पन्न थता सवादमा बीजो कोई सधि आवी जाय तो तेनो शो असर थाय ए हवे आपण जोईए ए जोवा माट आपण गौण तालनु स्थान ध्यानमा लेवु पड छ ते आपण जाणीए

છીએ. આપણે સૌથી પહેલા હરિગીતનો સંધિ દાદાલદા લઈએ. એમાં સંધિની ત્રીજી અને છઠ્ઠી માત્રા પર તાલ પડે છે. આના પ્રવાહમાં જો દાલદાદા આવે તો તેથી તાલમાત્રાના સ્થાનમાં કાંઈ વિક્ષેપ આવતો નથી કેમ જે દાલદાદામાં ત્રીજી માત્રા અને છઠ્ઠી માત્રા બન્ને ખુલ્લી છે, અને તેથી બન્ને તાલને પોતાની માત્રા મળી રહે છે, આ પ્રમાણે: દાલદાદા. પણ લદાદાદા સંધિમાં ત્રીજી માત્રા દટાયેલી છે, જો કે છઠ્ઠી ઉપલભ્ય છે, પણ એટલાથી સંવાદનો નિર્વાહ થતો નથી. પઠન કરી જોતાં જણાશે કે દાદાલદાના આવર્તનોમાં લદાદાદાથી વિક્ષેપ થાય છે. માત્ર સંધિઓને મૂકીને વાંચતાં પણ એ વિક્ષેપ જણાઈ આવશે. આપણે બન્નેના દાખલા લઈ જોઈએ:

દાદાલદા દાલદાદા દાલદાદા દાદાલદા

પઠનમાં ક્યાંઈ વિક્ષેપ આવતો નથી. પણ

દાદાલદા દાદાલદા લદાદાદા દાલદાદા

લદાદાદા આગળ મેળ તૂટે છે ખાસ દાખલો બનાવી જોતાં પણ એમ જ જણાશે.

નરદેવ ભીમકની સુતા મહાભારત મહિં કથી જે

'મહાભારત' આગળ મેળ તૂટે છે તે જ પ્રમાણે એ પ્રવાહમાં દાદાદાલ પણ નહીં આવી શકે કારણ કે એમાં છઠ્ઠી માત્રા અનુપલભ્ય છે. અર્થાત્ દાદાલદાને માત્ર એક જ સંધિ દાલદાદા અનુકૂળ પડ્યો. આપણે કહી શકીએ કે અહીં પણ દાલ અને લદાનું સમીકરણ સાચું પડ્યું હવે આપણે દાલદાદા એ સંધિના પ્રવાહનો વિચાર કરીએ આમાં લદાદાદા સરલતાથી ભળશે. દાલદાદામાં તાલ ૧લી અને ૪થી માત્રાએ આવે છે એ બન્ને માત્રાઓ લદાદાદામાં ઉપલભ્ય છે આપણે અહીં પણ દાલ અને લદાનું સમીકરણ જોઈએ છીએ. પણ દાદાલદા નહીં આવી શકે કારણ કે એમાં ૧લી ઉપલભ્ય છે પણ ૪થી દટાયેલી છે એટલે અહીં પણ એક સંધિને બીજો એક જ સંધિ સંવાદી નીકળ્યો અને બાકીના બે વિસંવાદી નીકળ્યા

તે પછી લદાદાદા લેવાની જરૂર નથી કારણ કે એના આવર્તનની કોઈ જાતિરચના નથી, જો કે આગળ જોઈશું કે પદોમાં એના આવર્તનોવાળી

पुनरुक्त रचनाओ आवे छे पण उदरनी पद्धतिए एनो पण विचार करी जोईए आमां २जी अने ६ट्ठी मात्राए ताल छे आनी साथे गणमांथी एक पण संधि संवादी नहीं थई शके कारण के ए बन्नेय संधि दाथी शरू थाय छे जेमां बीजी मात्रा दबायेली छे तेमांथी दा शरूवाळा बे संधिओ एटले दादा-लदा अने दालदादामां छट्ठी मात्रा उपलब्ध छे, पण दादादालमां तो २जी अने ६ट्ठी बन्ने दबायेली छे पण रूपावलीमां आपणे जोयुं तेम बन्ने तालोने पोतानी मात्रा मळी शके तो ज संवाद संभवाय छे, एक पण तालनी मात्रा लुप्त थतां संवाद रहेतो नथी एटले लदादादा साथे कोई बीजो संधि संवादी थई शकतो नथी

हवे बाकी रह्यो दादादाल. आमां १ली अने ५मी मात्राए तालो छे दादालदामां पण १ली अने ५मी मात्रा उपलब्ध छे, एटले ए संधि दादादालना प्रवाहमां आवी शके. दालदादा अने लदादादा बन्नेमां पांचमी मात्रा उपलब्ध नथी एटले ए बे संधिओ न आवी शके अहीं पण दालनुं ल्दा ए समीकरणथी ज संवादी संधि मळे छे आ प्रमाणे संवादी के विसंवादी संधिओ दाल लदाना समीकरणथी ज शक्य बने छे लदादादामां दाल वे लदा एककेय नथी एटले त्यां संवादी संधि मळी शक्यो नहीं अलबत्त एमां लदा छे, पण समीकरणमां पहेली मात्राए तालवाळो लदा के दाल संधि छे, लदाने समान रूप अशक्य छे

आगळ दालदामां जोयुं ते रीते आ सप्तकलोनी उपपत्ति विचारी जोईए आपणी पासे प्रथम मात्राए तालवाळो दादा संधि छे, अने तेवो ज प्रथम मात्राए तालवाळो दाल संधि छे आ बन्ने जोडतां दालदादा अने दादादाल एम बे रूपो मळे ए बन्नेमां आपणे उपर स्वीकारेला तालो यथा-स्थाने ऊतरेला छे ए रीते आने ए बे संधिओनो बनेलो एक संश्लिष्ट संधि कही शकाए सरळपणे उपपत्ति एथी पण आगळ चाले छे

दालना पर्यायो अने दादाना पर्यायो उपरना संधिमां मूकतां जे जे रूपो मळे छे ते बधां सप्तकल साथे संवादी थाय छे आपणे करी जोईए

दालदादामा दादा कायम राखी दालना पर्यायो गाल, लगा, ललल मूकी शकाशे : जेम के गालदादा, लगादादा, लललदादा ए बधां संवादी रूपो छे. तेवी ज रीते दाल गालल, दाललगा, दाल गागा, दालललल ए पण संवादी छे. पण दादामायो आपणे लगाल निष्पन्न करी शकता नथी, तो दादानी जगाए लगाल मूकता निष्पन्न थतु रूप संवादी नहीं बने. दाल-लगाल ए दालदादा साथे संवादी नथी.—दालदादा दाललगाल एम भेगु बोली शकाशे नही. तेम ज दाल लगाल ए प्रमाणे ताल नाखीने पंक्ति रची शकाशे नही. एक दृष्टान्त बनावीने मूकुं.

देव समस्तनी सगाना सर्वे सदस्य आविया छे.
दाल लगा लदा लगागा दाल लगाल दालगा गा

दादागाल के दादादाल, दालदादा साथे संवादी थई शकतु नथी कारण के अहीं दालनी जगाए दादा आवे छे, ते एनो पर्याय नथी. तेम ज दादानी जगाए आवतो दाल पण एनो पर्याय नथी

बीजी रीते ए ज संधिसंश्लेष दादादाल तरीके पण मूकी शकाशे. अने त्या पण दरेक बीजभूत संधिना स्वीकार्य पर्यायो आवी शकशे, अस्वीकार्य नही आवी शके. दादाने स्थिर राखी दालना पर्यायो आवी शकशे जेम के दादालगा दादागाल दादाललल तेम ज दालने स्थिर राखी दादाना पर्यायो मूकी शकाशे. जेम के गालल दाल, गागा दाल, ललगा दाल, ललल दाल. पण दादानी जगाए लगाल नही मूकी शकाय मात्र संधिओनु पठन पण संवादी नहीं लागे. आपणे मूकी जोईए

दादा गाल लगाल दाल

ए प्रकारनी पंक्तिओ रची जोता ए वधारे स्फुट थशे.

सवार साज उपास्य देव
विशे ज ध्यान अवश्य मेव

શોભતુ નથી. એ ઉધોર જેવુ જરા પણ જણાતો નહીં ઉધોર પ્રમાણે તાલની માત્રા ઉપલબ્ધ હોવા છતાં એ ઉધોર બનતો નથી એનુ પઠન સટકે છે પછી એવુ સટકુ જ પઠન જોઈએ હોય તો ઉધોરથી અન્ય કોઈ છંદ તરીકે એને પ્રયોજી શકાય તે જુદો પ્રશ્ન પણ આ પૃથક્કરણ અહીં સાચુ ઠરે છે.

ઉપર લીધેલા સંશ્લિષ્ટ સંધિઓ દાદાદાલ અને દાલદાદા એ બેમાંથી એકનેયમાંથી ઉપરની પદ્ધતિએ દાદાલદા કે લદાદાદા એટલે કે ઉપરના વિશિષ્ટ તાલવાળા સંધિઓ નિષ્પન્ન નહીં થઈ શકે એટલે એ સંધિઓને સ્વતંત્ર લઈ એ જ પદ્ધતિએ તપાસો સવાદી પર્યાયો શોધીએ એમ કરતાં દાદાલદામાં પર્યાય આવી શકે એવો માત્ર એક જ સંધિ છે દાલ એટલે દાદાલદાના સવાદી પર્યાયો દાગાલદા, દાલગાદા, દાલલલદા એટલા જ થઈ શકશે તેમ જ લદાદાદા સંધિમા પણ વચમાં આવતો દાદા માત્ર પર્યાયવાળો છે એટલે તેના સવાદી પર્યાયો લગાગાદા, લગાલલદા, લલલગાદા અને લલલલલદા એટલા જ થઈ શકશે. દાદાની જગાએ લગાલ મૂકતા સંધિ વિસવાદી થઈ જશે લલગાલદા (તાલ ધ્યાનમા રાખવાના છે) સંધિના આવર્તનોથી રચના થઈ શકશે નહીં લલગાલદા લલગાલદા એ પઠન પણ વિષમ લાગે છે તેની રચના કરી જોઈએ : 'ન કરાય એ કરવૂ પડે' શોભતુ નથી એ સવાદી હોવાનો ભાસ થાય છે તેનુ કારણ કે અજાણતા જ આનુ પઠન દાદાલદા જેવુ થઈ જાય છે 'ન કરાય એ કરવૂ પડે' એ પ્રમાણે બાકી એ લગાલવાળો સંધિ ત્યા સવાદી બની શકતો નથી આમ ભિન્નભિન્ન રીતે ઉત્પત્તિ જોતા પરિણામો બરાબર જણાય છે અર્થાત્ પૃથક્કરણ સાચુ છે

અને પચકલમા મેં જેમ છેવટે કહ્યુ તેમ અહીં પણ કહેવુ પ્રાપ્ત થાય છે કે જો કે જાતિછંદોના પ્રયોજન માટે આપણને દાદાલદા સંધિ પ્રકૃતિભૂત જણાય છે પણ સગીતના પ્રયોજનો માટ દાદાલદા, દાલદાદા, લદાદાદા, દાદાદાલ બધા સરખા જ છે, અને સગીતકાર તેમા પોતાની કલાને અનુકૂલ રીતે ગમે ત્યા તાલ નાખી તાલવિસ્તાર કરી શકે

परिशिष्ट क

जातिछंदोनुं परिशिष्ट : डिंगलना छंदो

गया प्रकरणमा जातिछदोना मेळनी चर्चा पूरी थाय छ तेमा में गुजरातीमा परपराथी चाल्या आवता जातिछदोनो मेळ दर्शाविलो छ आमा दर्शावेलो मेळ ए प्रकारना सर्व छदोने लागु पड छ ए बतावववा ब भिन्नभिन्न परपराना छदोने हु टूकमा जुदा जुदा परिशिष्टमा जोई जवा इच्छु छु तेमानी एक परपरा ते डिंगलनी बीजी ते गझलोनी

अही डिंगलना पिंगलोनी के डिंगल भाषाना स्वरूपनी चर्चा करवानो इरादो नथी आ प्रकरण माट एटलु कहेवु बस थश के हिंदीथी भिन्न एक डिंगल भाषा छ, जेमा भाट चारणो कविता करता अने ए डिंगलना पिंगलने पण डिंगल कहे छ 'रणपिंगल' भाग ३जामा डिंगलना छदो आपेला छ अने दृष्टान्तो गुजरातीमा तेम ज डिंगलमा पण आपेला छ ए गुजराती दृष्टान्तो मने एटला सुदर नथी लाग्या एटले एमा घणीखरी जगाए प्रमाणभूत गगल डिंगलनो ग्रथ 'रघुनाथरूपक गीतारो', तेने ज प्रमाणभूत गणी हु तेना ज दृष्टान्तो अही आपीश अलबत्त एम करवामा हु जातिछदोनो ज क्रम अनुसरीश जातिछदोना मेळ विश मारे ज कई कहेवानु हतु ते में सविस्तार आ पहेलाना प्रकरणोमा कही दाखलु छ एटले अही हु मात्र डिंगलनु दृष्टान्त, ते उपरथी तेनी उत्थापनिका मूको, आगळ कही गयला मेळना सिद्धान्तोथी तेना स्वरूपनो खुलासो करीश विशष नही अहा आपेला छदोना नामो डिंगलना विशष नामो छ, ए नामो काई कोई जातिछदोमा जुदा अर्थमा आवे छ, तेनाथी तेन भिन्न समजवा हु पहेला पोडशी रचनाओ लउ छु प्रथम दुमल —

दुमेल

दसरथ नृप स्रवण हुआ रघुनदण,
कवसल्या उर दुष्ट निकदण।
रूप चतुरभुज प्रकटत रीधो,
दरसण निज मातानं दीधो॥

र रू गी पृ ६०

डिंगलनी एक खासियत अहीं ज नोधवी जोईए ते ए के तेमां घणा छंदोमां आद्य द्वालामां[1] एटले कडीमां बे बे नण मात्राओ वधारानी आवे छ ए आद्य कडीमां ज आवे छे, पछीनी कडीओमां आवती नथी गीतनो ललकार शरू करवा ए वधारानी मात्रा गवना बोलाती हशे एम हु मानु छु — जेम जातिछंदोमां आपणे जोयु के केटलाक रोळाना पठनमां 'एह' एम प्रथम आवी पछी छन्द शरू थतो

उपरना दुमेलमां पहेला चरणमां बे मात्रा वधारे छे, ते बाद करता बधा चरणो सोळ मात्राना, चार चतुष्कलना छे, अने तेना अतनु कोई एक ज प्रकारनु लगात्मक रूप निश्चित नथी अत्य सधि प्रथमनी व पंक्तिओमां गालल छ, बीजी बेमा गागा छ आगळ ललगा पण आवे छे प्रास बब्बे पंक्तिनो छे, ए खास नोधवु जोईए कारण के मात्र प्रासना फरकथी डिंगल-कविओ छदने जुदु नाम आपे छे आनी उत्थापनिका

दादा दादा दादा दादा[1]
दादा दादा दादा दादा[2]

१ अने २ चतुष्कलोनो प्रास

आ पछी हु पालवणी लउ छु दृष्टान्त

पुलियो नेह चाप कथ तोपाणी,
धाम जनक मिलिया रजधाणी।
हुतो कठै पोरस कुल हाणी,
अब तै सिया दगैनर आणि॥

र रू गी पृ १६६

दुमेलमां अने पालवणीमां एटलो ज भेद छे के दुमेलमां बब्बे पंक्तिओनो प्रास छे, पालवणीमां चारेय चरणोनो एक ज प्रास छे आ प्रासना कारणे दुमेलने अर्धपालवणी पण कहे छे आमां पण प्रथम पंक्तिमां बे मात्रा वधारे आवे छे उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी आ पालवणीना त्रीजा चरणने प्रासमुक्त राखी १–२–४ चरणोनो सळग प्रास राखता झडळुपत थाय छे.

---

[1] द्वाला शब्दना सामान्य अर्थ छद के कडी थाय छे जुओ 'रूपक' पृ ५२, ५९ पण कयांक दस बे चरण पण थाय छ (एजन पृ ६२) पहेलो अर्थ सामान्य होई हु ए अर्थमां ए शब्द वापरु छु ए शब्द गुजरातीमां रूढ करवा जवो छ 'रणपिंगलमां दवालो शब्द आवे छे रणपिंगल भाग–३ डिंगल पृ–१.

झडनो अर्थ डिंगळमा पद थाय छे. आमां एक पदमा एटले के त्रीजा चरणने अंते प्रास लुप्त छे. माटे तेने झडळुपत कहेल छे.

झडळुपत

डेरा रोपया उत्तर दिस डारण,
मन नहचैं लकेसुर मारण।
वले विचार करे लिपमीवर,
घरे जनम मरजादा धारण॥

र. रू. गी. पृ. १७८

आमा पण प्रथम पंक्तिमा त्रण मात्रा वधारे आवे एम 'रूपक' कहे छ. पण डेरा शब्दमायी त्रण मात्रा बाद करीने पाठ थई शके नहीं. एटले हु आ नियम अने पहेलो पक्तिनो पाठ खोटो मानु छु. 'रणपिंगल' पहेली पक्तिमा बे ज मात्रा वधारे कहे छे, अने पाठ 'डेरा रोपिया उत्तर दध डारण' आपे छे. (डिंगल पृ. ६९, ७०) तेमा आवतु माप प्रमाणभूत गणवु जोईए. तेमा बे मात्रा वधारेनी गणी रा रौं,पिया उ, तर दध वगेरे शब्दोनो चतुष्कलोमां पाठ थई शके छे. आ उपरथी डिंगल प्रासने केटलु महत्त्व आपे छे ते जणाशे. आ पछो ईलोल.

ईलोल

मदोदर! भोलै भूलमती,
जल आसी वारध लाधजतीं।
जल आयर वारध लाधजती
मुँह मडै भोलै भूलमती॥

र. रू. गी. पृ. १६९

एनु लक्षण एवु आपेलु छे के दरेक पक्तिमा चार चतुष्कलो, छेल्लु चतुष्कल सगण एटले ललगा, चारेय पक्तिनो एक सळग प्रास, अने बीजी पक्तिना शब्दोनो त्रीजी पक्तिमा ऊयलो आवे, अर्थात् एमाना केटलाक शब्दो फरीने आवे. पण पठन करता मालूम पडशे के पहेली बे मात्रा निस्ताल रहे छे, अने पछो ताल शरू थाय छे. उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दा] दादा दादा गाल्ल गा

अत्य गुरु, पछीनी पक्तिना निस्ताल दा साथे जोडाई चतुष्कल रचे. उपर बताव्यो ते ऊयलो डिंगलना छदोनु एक महत्त्वनु लक्षण छे. घणा छदोमां ए आवे छे.

आ पछी उमंग लईए.

उमंग

कटियां श्रुतनाक लिया कर में
रचना कह सूपनखा घरमें ।
नारी इक वीर उभै नर में
तिसड़ी न लखी सुपनंतर में॥

र. रू. गी. पृ. ११३

'रूपक' सोळ मात्रा, अंतमां गुरु, अने चारेय पंक्तिमां एक ज प्रास एटलुं ज लक्षण आपे छे. पण पठन करी जोतां ईलोलनी पेठे आमां पण पहेलो निस्ताल दा आवे छे तेने जुदो करी उत्थापनिका करवी जोईए. फरक ए छे के ईलोलमां अंते गाल्ल गा आवतुं हतुं, आमां अंते दादा गा आवे छे.

उत्थापनिका: दा] दादा दादा दादा गा

ते पछी सावक अडल लईए:

सावक अडल

दासरथी लिखमण सुत दशरथ,
दोऊ सुणे सिधारे दसरथ।
दीह उचाटी कीधे दशरथ
दीधो प्राण पछाड़ो दसरथ॥

र. रू. गी. पृ. ११२

आ चार चतुष्कलोनी पंक्तिवाळी षोडशी सादी रचना छे. एनुं विशेष लक्षण मात्र एटलुं ज छे के तेमां एक ज चतुष्कल शब्द चारेय पंक्तिने अंते आववो जोईए. आनो एक बीजो प्रकार पण छे.

निरखे अवासा भर निजर,
नह देखे दशरथ नृप निजर ।
निज देखे नह बंधव निजर,
नर दीठा विलख्या सह निजर॥

एजन, पृ. ११३

उपर करतां फरक एटलो ज छे के अहीं अंत्य चतुष्कलनी एक मात्रा खंडित थई ए त्रिकल नगण बने छे, अने ए त्रिकल शब्द चारेय पंक्तिने अंते आवे

छे ए त्रिकलनो अंत्य लघु विलंबाई त्या चतुष्कलनुं कालमाप पूरुं थाय. प्रथम पंक्तिमां 'अवासा' शब्दमां अ गुरु इष्ट छे. त्यां कदाच 'आवासा' शब्द हशे, अथवा ते पछी आवतो न बेवडो बोलाई अ गुरु थतो हशे.

आ पछी सेलार छंद लईए.

सेलार

तपसीरो रूप धरे ततताई
अडग कुटी गइ सीत उठाई।
सियल पुकारी साद सुणीजे
कीजे हो हरि! बाहर कीजे॥

र. रू. गी. पृ. १३५

आ पण चतुष्कल षोडशी रचना छे दुमेलनी पेठे तेना पहेला छंदनी पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे आवे छे. बीजी पंक्तिनां छन्दनी दृष्टिए 'अडग' ने बदले 'अडर' पाठ वधारे सारो छे छेल्ला एटले चोथा चरणमा विधि नामनो शब्दालंकार आवे छे. विधिना स्वरूप विशे विशेष जाणवा मळतुं नथी पण तेनी जरूर पण जणाती नथी 'रणपिंगल' विधि शब्द न वापरता केवळ शब्दालंकार शब्द वापरे छे (डिंगल पृ ७४). आ गीतमा पछीना छंदोना छेल्ला चरणो 'धीरो रे आयो हू धीरो।' 'भागो रे नभ मारग भागो।' 'दीजो रे प्रभुनूं सुद दीजो।' अने 'छोडे रे तन सील न छोडे।' ए प्रमाणे आवे छे ए उपरथी एनुं सामान्य स्वरूप जणाई आवशे आम आवी सादी द्विरुक्तियो यती असरोने पण डिंगल महत्त्व आपी तेनो नवो छंद बनावे छे. आ पछी सवैयो — डिंगलनो सवैयो लईए.

सवैयो

परहस्त पटे, कर झूंझ कटे।
भिदवाण भटे, हृदमाण हटे ।
रतकुंभ जगावण राण रटे॥

र. रू गी. पृ. १९८

डिंगले प्रासे प्रासे पंक्ति गणी छे, पण छेल्ली पंक्तिनुं स्वरूप जोता एने षोडशी त्रिपदी गणवी मने योग्य लागे छे गुजरातीमां जे सवैयो रचना प्रसिद्ध छे तेथी आ बहु भिन्न छे. आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

ललगा ललगा' ललगा ललगा।
ललगा. ललगा' ललगा ललगा।
ललगा ललगा ललगा ललगा।

मध्य यति तेम ज चरणान्त यति मळी कुल पांच यतिस्थानोमां चतुष्कलोमां सळंग प्रास. गुजरातीमां जातिछंदोमां कोई त्रिपदी रचना नथी, अहीं छे.

आ पछी त्र्यंबको लईए: हुं मारी रीते पंक्तिओ पाडी लखु छुं.

त्र्यंबको

पूछी मां आगल अय प्रभा।
पितु बंधु न दिसे अंग प्रभा।
सज–राज न रंग न रंग नरा, गन राज न रंगन राज समा। १
पुत्तर वर माग्यो नृप पासं।
मह सो सुत ओ लिय तिण पासं।
श्रीराघव लिखमण लिखमण राघव राघव लिखमण वनवासं २

एजन, पृ. ११४

डिंगल आने चतुष्पाद रचना गणे छे, में त्रिपाद गणी छे. त्रणेय पादोमां एक सळंग प्रास आवे. पहेली बे पंक्तिओ चार चतुष्कलोनी षोडशी रचना, त्रीजी आठनी बत्रीसी रचना, पण तेमां उपर बताव्या प्रमाणे शब्दो फरी फरीने आववा जोईए. आ प्रमाणे शब्दो फरी फरीने आवे एवी डिंगलमां घणी रचनाओ छे. डिंगलमा घणे भागे ललकारीने बोलवाना छंदो आवे छे, अने तेमां मात्र पुरुक्ति पण पठनथी अंतर करी शके छे. मूळ प्रमाणे त्रीजी पंक्तिने एक न गणता बे गणवा जता बीजा छंदमा यतिभंग थाय, एटले त्यां सळंग पंक्ति ज इष्ट जणाय छे. पठन जोतां आ रचनामां पण पहेली बे मात्रा निस्ताल जाय छे ते दूर करीने दादाना आवर्तनो गणवा जोईए. उत्थापनिका ए रीते नीचे प्रमाणे थाय:—

दा] दादा दादा दादा गा
दा] दादा दादा दादा गा
दा] दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा गा

डिंगल षोडशीयी वधारे लावी रचनाओने पण षोडशी तरीके ज निरूपे छे, पण हु मारा क्रम प्रमाणे निरूपण करीश अने हवे मारी दृष्टिए जे बत्रीसी रचनाओ छे तेनु निरूपण करीश सौथी सादो प्रथम त्रबकडो लउ छु.

त्रबकडो :

अगद मेलियो सद दूत अपपर, वल अकला मजबूत वडालो।
वप सिणगार घूत खल बैठो, रचे सभा अदभूत रढालो॥
र रू गी पृ १७९

दुमेलमा जेम गीतनी प्रथम कडीमा त्रण मात्राओ वधारे आवे छे तेम अही पण त्रण मात्रा वधारे आवे छे ते पछी दादाना आठ आवर्तनो आवे छे सोळ मात्राए यति आवे छे खास उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी 'अग' एटले गद्यमा बोली पछी चतुष्कलबद्ध पाठ करता बराबर सवैयो बत्रीसो जणाशे बीजी पक्तिमा 'वप सिण' चतुष्कल पछी 'गार घूत खळ' आवे छे ते दालगालदा अष्टकल सधि छे, ते कहेवानी जरूर नथी डिंगले उपरना छदने षोडशी रचना गणी छे, अने हु एने बत्रीसी गणु छु एटले, डिंगल प्रमाणेनो चतुष्पाद छद मारी रीते निरूपता द्विपाद बने छ आ परिणाम बधी बत्रीसी रचनामा आवशे आ पछी हु छोटो साँणोर लउ छु.

छोटो साँणोर

एकण दिन अमर सकल मिल आया, करी अरज साभल करतार।
राज बिना मारै कुण रावण, भूरो रवण उतारै भार।१
इला सखत मडियो असुराणो, सकट जोरो अकथ सहा।
दीनानाथ! तूझ बिन दुखरी, किणनै जाय पुकार कहा॥ २॥
र रू गी पृ ९८

आमा पण काव्यना पहेला छदमा बे मात्राओ वधारे छे, ते छोडीने छदनु पठन करवानु छे 'रूपक' त्रण मात्राओ वधारे कहे छे पण ते भूल छे छोटो साँगोर छदना चरणो विकल्पे एकत्रीस मात्राना अने त्रीस मात्राना होय छे एकत्रीस मात्राना होय त्यारे आठमो सधि गाल आवे, त्रीसना होय त्यारे आठमो सधि गा आवे पहेली कडी एकत्रीस मात्रानी गालान्त छे, बीजी त्रीसनी गान्त छे एम अही अत्य सधिनी एक अने विकल्पे बे मात्राओ खडित थई छे

સાંણોરના ચાર પ્રકાર ગણાય છે તેમાનો પહેલો બેલિયો તે ૩૧સો ગાલાન્ત સવૈયો છે, અને બીજો સોહણો તે ગાત ત્રીસો સવૈયો છે તેના ઉદાહરણોની જરૂર રહેતી નથી ત્રીજો પ્રકાર જાગડો છે એ ૨૮સો ચોપાયો છે આપણે દૃષ્ટાન્ત લઈએ

જાગડો સાણોર

પડિયો મુરઝાય સેસ ઇલ ઊપર સક્ત રાણ સુત સાજી।
ધરકે ભાલ વન ચરા થાણા, મુખ કુમલાણા માજી॥

ર રૂ ગી પૃ ૧૯૧

પ્રથમ પંક્તિમા બે માત્રા વધારે છે તે પછી ચતુષ્કલો ચાલે છે સોળ માત્રાએ યતિ છે, એ કહેવાની જરૂર નથી કારણકે 'રૂપક' તો એ યતિખંડને ચરણ જ ગણે છ અંત્ય ચતુષ્કલમા બે ગુરુ ઇષ્ટ છે, જો કે 'રૂપક' એને લક્ષણ ગણતુ નથી આઠમુ ચતુષ્કલ આખુ અહી અનક્ષર રહે છે 'રૂપક' આ રચનાનુ એવ લક્ષણ કહે છે કે આમા ક્યાક ક્યાક નગણ લલ્લ અવશ્ય આવવો જોઈએ સાંણોરનો ત્રીજો પ્રકાર ખુડદ સાણોર છે આપણે ઉદાહરણ લઈએ

ખુડદ સાણોર

વ્યાકુલ લખ સેસ વિભીષણ બોલે, કમલાપતસૂ જોર કર।
ધનુષધરણ ધીરજ ઉર ધરજે, હિવ કીજે ઉપચાર હર॥ ૧॥

એજન, પૃ ૧૯૨

પ્રથમ કડી બે ઢાલમા બે માત્રા વધારે છે, બાકી આ ૨૯સો સવૈયો છે, જેમા સોળ માત્રાએ યતિ છે, અને અંત્ય આઠમા સંધિની ત્રણ માત્રા ખડિત થઈ ત્યા માત્ર એવ જ લઘુ રહે છે એ અંત્ય લઘુ ચાર માત્રાનો પ્લુત બને છે આ માત્રાખડન આભાણક જેવુ જ છે જેનો અંત્ય ચતુષ્કલ સંધિ એક માત્ર લઈ પુરાય છે અને આભાણકની પેઠે જ એ અંત્ય લના ઉચ્ચારણને મદદ કરવા આગલા સંધિની અંત્ય બે માત્રા પણ બે લઘુરૂપ લે છે જાતિ છદોમા સવૈયાનુ આભાણક જેવુ સ્વરૂપ ગુજરાતીમા આવતુ ન હતુ, તે અહી આવે છે આપણે પ્રથમ આભાણક આપી પછી ખુડદ સાણોરની ઉત્થાપનિકા મૂકીએ, જેથી બન્ને સરખાવી શકાય

આભાણક દાદા દાદા દાદા દાદા દાલ્લ લ
ખુડદ સાણોર દાદા દાદા દાદા દાદા' દાદા દાદા દાલ્લ લ

बन्ने जगाए अत्य लघु पछीनी चतुष्कलनी त्रण मात्राओ अनक्षर रहेली छे. 'रूपक,' खुडद साणोरनु स्वरूप आपता अते बे लघु मात्रा कहे छे पण तेना उदाहरणमा सर्वत्र उपर प्रमाणे दालल ल आवे छे, अने ए ज खरु स्वरूप जणाय छे. आ पछी हु पखालो लउ छु:

पखालो

धरियो पण जनक इसी मन धारे धनक पिनाक चढाय धरे।
महपत आय सयबर माहें वसुदा कुँमरी तिको वरे॥ १॥
तात हूँत इधकी परतिग्या, साभल वात वहूँ सरसाल।
तनमन धार भाल दसरथ तण, मे गल राल दई वरमाल॥ २॥

एजन, पृ. ७४

आमा छोटा साणोरनी पेठे त्रीसो अने एकत्रीसो सर्वयो विकल्पे आवी शके छे, त्रीसा सर्वयानी पंक्ति गान्त होय, एकत्रीसानी गालान्त होय. 'रूपक' साणोरथी आनो भेद बतावे छे के साणोरमा लघु गुरु भेद छे आगा नथी, पण साणोरमा पण ए भेद मात्र अत्य सधि सबधी हतो, अने ए तो अही पण सचवायो छे. मारा पोताना प्रयोजन माटे मने आटलु निरूपण पूरतु लागे छे आ पछी सिहचलो लईए.

सिंहचलौ

परगत इम भ्रात चहूँ परणीजे, माण किता घा मारिया।
डाणा हूत सजोडा डेरा पाछा वीद पधारिया॥ १॥

एजन, पृ. ८६

पहेली पक्तिमा बे मात्रा वधारे छे, ते बाद करी आनो मेळ विचारवानो छे आ कृति प्लवगमनी पेठे छेल्ला बे सधिओ खडित थईने बनेली छे, अने प्लवगमनी पेठे ज तेने अते प्लुतिवद्ध गालगा आवे छे जेमा प्लुतिनी मात्रा पूरता ते अष्टकल बनी रहे छे खुडद साणोर जेम खडित मात्रानी पद्धतिए आभाणकने मळतो छे तेम आ सिहचलौ प्लवगमने मळतो छे बन्नेने सरखावी शकाय माटे बन्नेनी उत्थापनिकाओ साथे साथे मूकु छु

प्लवगम' दादा दादा दाल'ल दादा गालगा
सिंहचलो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गालगा

बन्ने जगाए गालगा उच्चारणमा गा॰॰गा — थईने अथवा प्लवगमने अगे बतावेलो छे तेवो कोई बीजो रीते प्लुति साथे अष्टकल बने छे प्रसिद्ध गुजराती जातिछदोमा आने मळती कोई रचना नथी

आ पछी आने मळती रचना लहचाल लईए:

लहचाल

सुत भ्रात कटे सक धोट वधे धव,
बीस भुजाण विचारियो जी।
निरबीजा वानर नेम गमुन्नर,
पेख इसो मन धारियो जी॥ १

एजन, पृ. २१३

पहेली बे मात्रा निस्ताल रही पछी गालल्गा छ आवर्तनो आवी छेल्ले गालगाजी आवे छे गालगाना आवर्तनोमा क्याक गागा पण आवी जाय छे आ अते आवता गालगाजीने लीधे त्या गा ⌣लगा – $\frac{\text{जी}}{\text{गा}}$ – एम अष्टकल उपर बीजी चार मात्रानु चतुष्कल मूकी रचना करी जोवानो प्रथम विचार आवे पण आनु पठन जोता हु आने सत्रमेळमा मूकवा इच्छु छु एटले ए प्रकारमा आनो फरी विचार करीश

आ पछी हु अमेल लउ छु. एनो अर्थ मेल एटले प्रास विनानो थाय छे आखा डिंगलमा आ एक ज प्रासहीन रचना छे. एनु लक्षण आप्यु नथी पण ए छोटो साणोर अने पखाला जेवो त्रीसो एकत्रीसो सवैयो छे

अमेल

मकरी वन माहि प्रीत सू साचो, उवर जठै दरसण अभिलाख।
आश्रम उभै सहोदर आया, त्रिभवण नायक सेस तठै॥ १॥

— एजन, पृ. १४१

पहेली पक्तिमा बे मात्रा वधारे छे, ते जता बाकी रहेली पक्ति एकत्रीसा सवैयानी गालान्त छे, बीजी त्रीसानी गान्त छे आ पछी अरटियो

अरटियो

एकण दिहाडै मुनिराज अजोध्या, कोमय आवण कीधो।
राजाहूत मिले रिपराजा, दो मझ आसण दीधो॥ १॥

एजन, पृ ६४

छद शुद्ध २८सो चोपायो छे, विशेष एटलु के अते बे गुरु जोईए अने 'रूपक' कहे छे के पक्तिमा क्याई नगण (ललल) न आवे. प्रथम पक्तिमा त्रण मात्रा वधारे छे जागडो साणोर अने आ अरटियामा फेर एटलो ज छे के अरटियामा नगण न आवे, जागडामा नगण क्याक क्याक अवश्य आवे. उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी. आ पछी अरट लईए :

अरट

इम राज करै अजनद आयोध्या नेत बधी निपतंत।
जगा जीत तपोबल जालम ओप बडे अखडैत॥ १

एजन, पृ. ६२

आ सत्तावीसो चोपायो छे. तेने अते गाल आवे छे. अने गुजरातीमा जेम दोहरामा अने मरहट्टामा अते आवता गालमा अत्य लघुस्थाने घणेभागे अ होय छे तेम अरटमा पण अत्य लघु स्थाने अ ज आवे छे. पहेली पंक्तिमा बे मात्रा वधारे होय छे उत्थापनिका :

	।	।	।	।	।	।	।
अरट :	दादा	दादा	दादा	दादा'	दादा	दादा	गाल

आ पछी हु झडमुगट रचना लउ छु :

झडमुगट

तरवर वन सिखर जोवता सरतर, कर सारग तुन्नीर कर।
वर लेहा दीठी अग रघुवर, पर धर पडियो धरण पर॥ १॥

एजन, पृ १४०

आ रचना खुडद साणोरमा अमुक रीतना प्रास मूकवाथी थयेली छे हु प्रथम आ रचनानी उत्थापनिका आपु, तेथी तेनु स्वरूप दर्शाववु वधारे सहेलु पडशे.

लल ललदा दादा दादा दालल' ललदा दादा दालल ल
ललदा दादा दादा दालल, ललदा दादा दालल ल

पहेली बे मात्रा चरणमा वधारानी छे ते दूर करी छद जोवो जोईए. खुडद साणोर पेठे आमा चार यतिखडो छे तेमा अते 'रूपक'ना कहेवा प्रमाण बे लघु—पण मारी दृष्टिए त्रण लघु आवश्यक छे आ रचनामा विशेष ए छे के बधा यतिखडोमा पण पहेलु चतुष्कल ललथी शरू थवु जोईए, अने ललथी तेनो अत आववो जोईए, दरेक यतिखडमा पहेला बे लघु अक्षरो छे ते ज यतिखडोमा छेल्ला आववा जोईए, अने चारेय यतिखडोना प्रास

मळवा जोईए. खुद्द साणोरमां अमुक अमुक स्थाने दानी जगाए बे लल मूकी, अमुक प्रासरचना करी ए ज आनु विशेष छे. आ पछी हंसावलो लईए :

हंसावलो

पयधररा मथण जगतरा पालग, सररा अचल सतरा साथ।
वररा दियण जगतरा वच्छल, नंररा रूप नमो रघुनाथ॥ ११॥

एजन, पृ. १४८

पहेली बे पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे ते बादी नाखता आ गालान्त एकत्रीसा सवैया रचना छे. तेमां विशेष ए छे के तेमां रा (छठीनो प्रत्यय) फरी फरीने आववो जोईए 'रूपक' कहे छे के आमां उल्लेखालंकार आववो जोईए. ए अलंकारनो अर्थ ए छे के एकने बहुविध बहुगुणथी वर्णववो खरु कहीए तो शब्दोना अमुक रूपना पौन.पौन्यनी आ रीति छे वाने मळतो पाडगत छे ते लईए:

पाडगत

गगागुडदि दुहुओडा दल गाजे, तागुडदि तवल वाजे रिणातूर।
रागुडदि राम रावण जुध रोपे, सागुडदि समाम अडे सजसूर ॥ १॥
भागुडदि भूत जोगण गण भैरव, आगुडदि अमर अपछर गण आण।
पागुडदि प्रबल परचर दुर पेखत, वागुडदि व्योम सुर छया विमाण।

एजन, पृ. २१६

डिंगलनी पद्धति प्रमाणे पहेला चरणमां वधारानी मात्रा छे, एटले स्वरूप निर्णय माटे हु बीजी कडी लउ छु आ जातिना पठनथी जणाशे के आ चतुष्कल रचना छे, तेमाना रवानुकारी शब्दो दूर राखी वारवार पाठ करी जोता जणाशे के ए रवानुकारी अक्षरोथी त्रण लघु बने छे ए त्रण लघुओथी क्याक सर्व लघु चतुष्कल बने छे, क्याक ललललगालदा अष्टकल बने छे हु छेल्ली पंक्तिमा चतुष्कलो अल्पविरामथी अने अष्टकलो अर्धविरामथी बतावु :

पागुडदि प्र, बल पर,चर दुर, पेखत, —
वागुडदि व्योम सुर, छया वि, माण

पहेला यतिखंडमा लललल, लललल, लललल, गालल एम चतुष्कलो पडे छे. बीजामा लललगाललल; एम पहेलु अष्टकल आवे छे, पछी लगाल, गाल

एम संधिओ आवे छे. आ रीते गणता पहेली पंक्तिमा बे मात्रा वधारे छ. 'रूपक' त्रण मात्राओ वधारे कहे छे ते भूल छे. केवळ स्वानुभवी शब्दोथी अही नवो छंद करेलो छे. वाकी आ गालान्त एकत्रीसो सवैयो छे. आ पछी हु सतसणीं लउं छु.

सतसणीं

आया मृग मार रोसनू आसे, वंधव! सुणो सवीता ।
दायण कुटो विरणी दीसे, सही गमाई सीता ।
रे मन मीता रे मन मीता किण विध कीजिये ॥ १ ॥

एजन, पृ. १३८

पहेली पंक्तिमा बे मात्रा वधारे छे ते बाद करता आनी पहेली बे पंक्तिओ जोडो सारणीनी एटले २८सा सवैयानी छे. अने त्रीजी पंक्तिमां छेवटे गालगा छे तेने अष्टकल गणता ए पंक्ति पण २८सो बनी रहे छे. आ त्रीजी पंक्ति छंदमा रे थी शरू थाय छे अने ते पछी आवता बे शब्दो रे साथे बेवडाय छे. अने पछीनु वाक्य आखा गीतमा एनु ए आवे छे. आ पछीना छंदोनी पंक्तिओ नीचे प्रमाणे छे 'रे रग खोटे रे रग खोटे, किण विध कीजिये'॥ 'रे सुध आवे रे सुध आवे, किण०।' 'रे वृत्तधारी रे वृत्त-धारी, किण०।' 'रे जणम्हारा' वगेरे. आमा त्रीजी पंक्ति टेकना प्रकारनी छे आ पछी दीपक लईए: एनु स्वरूप बराबर समजाय माटे एनी पंक्तिओ हु मूळमा छे तेथी जरा जुदी रीते लखु छु.

दीपक

इसवर सीय सेस चढे रथ ऊपर, तहक सारथी खडे तुरग
नगर हलक हाले नरनारी
भर घघो छोडे घरवारी
मिल तानू दी सीख उमग॥ १॥

एजन, पृ. १०९-१०

पहेली पंक्ति (त्रण वधारानी मात्रा बाद करता) गालान्त एकत्रीसा सवैयानी छे. पछीनी बे पंक्तिओ शुद्ध षोडशी चोपाईनी प्रासबद्ध छे, अने तेमानी बीजी पंक्तिने छेल्लु पद एवी रीते मळे छे के ए आखी पाछी ३१सा सवैयानी थई रहे एटले के ए पदर मात्रानो सवैयानो उत्तर यतिखड छे. एक सुन्दर वैचित्र्यमय रचना छे वधारानी त्रण मात्रा छोडता उत्थापनिका.

दीपक: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

दादा दादा दादा दादा
दादा दादा दादा दादा
दादा दादा दादा गाल

गालनी साथे गालनो अने वचली बे पंक्तिमां दादा साथे दादानो प्रास मळे. आ पछी चोटियो लईए :

चोटियो

मारे आवरे रिण रोपण वका, बंधु सुग्रीव वकारे।
ऊठे सुण धूमजधडअधायो, धींग क्रोध उर धारे।
हूं हिव आवियो पगमांड हकारे।। १।।
मौने आय अनाहक मार्यो, साम सूंन विण लेसा।
जादव वंश देवकी जामण, घर अवतार धरेसा ।।
दाखे दसरथ सुत वदलो जद देसां।। ४।।

एजन, पृ. १५३-५४

पहेलामां त्रण मात्रा वधारे छे एटले ए न लेतां बीजी कडी ज लईए. तो जणाशे के पहेली बे पंक्तिओ २८ना चोपायानी गागान्त छे. तेनी साथे एक टूंकी ए ज प्रासवाळी पंक्ति चळगाडेली छे. डिंगलमां अने लोकमां आपेला गीतमांथी आ टूंको पंक्तिनु माप निश्चित थई शकतुं नथी पण उपर आपेला गीतनी छेल्ली पंक्तिमां पांच चतुष्कलो स्पष्ट छे. त्यां छठ्ठु विलंबन के विरामक रहे. आ पछी एक घणी ज वैचित्र्यमय रचना लईए चित्तविलास :

चितविलास

धनुधारे! रे धनुधारे!
सर एका बाल सिधारे!
महाराजधिराज सुग्रीव मनारा सारा कारज सारे।
कीधो भूप पुरी कैकंधा दोयण दूर विदारे
रे धनुधारे।। १।।
रघुराजा! रे रघुराजा!
रिप मूक गिडद दराजा।

चोमास रहे ये म्रास गुचगा ताम पदे जरा ताजा।
देखे राम पयोधर दामण सीत विरह तन राजा।
रे रघुराजा॥ २

एजन, पृ. १५५-५६

आ जरा अटपटी रचना छे, गेय छे, पण शुद्ध चतुष्कलोनी छे, अने जाति-छदो जेवा ज तेना सधिओ स्पष्ट छे. हु नीचे तेने चतुष्कलोमा दादा सधिओमां पृथक्कृत करी मूकु छु:

			धनु]	धा रे	रे धनु	धा रे	—	
			दा]	दादा	दादा	दादा	दा	
			सर]	ए का	वाल सि	धारे	रे धनु	धारे	—
			दा]	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दा
महा	राजधि	राजस्	प्राव म	नारा	सारा	धारज	सारे	—
दा	दादा	दाद.	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा
कीधो	भूपपु	रांवे	वधा	दोवग	दूर वि	दारे	रे धनु	
दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	
						धारे	—	

रघु	राजा	रे रघु	राजा	—		
दा	दादा	दादा	दादा	क्ष		
रिध	मूकगि	इद द	राजा	रे रघु	राजा	—
दा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दा
चो	मास र	वगेरे				
दा	दादा					

आ प्रमाणे छदना चतुष्कलोनी व्यवस्था छे. उपरनी उत्यापनिकामा में 'धनु-धारे' नुवनी पेठे बेवडेल छे, ते मने पठन करता आवश्यक जणाय छे. हु मानु छू के त्या पठन ए रीते थतु हशे जो के में साभळेलु नथी. पण एटलो भाग काढी नाखवो होय तो काढी शकाशे अने 'धारे' पछी बे अनक्षर मात्रा राखो तेने पछानी लावी पक्तिना पहेला निस्ताल दा साथे जोडो उपरनी पेठे ज चतुष्कल रचो शकाशे बन्ने रीते चतुष्कलो बेकी सख्याना थई रहेशे अलबत्त आनो पाठ साभळया विना आ व्यवस्था मे करी छे एटले अशे उपरनी उत्यापनिका अजमायशी गणाय

निशाणी नामनी केटलोक रचनाओ डिंगल आपे छे, तेमा घणेखरी चतुष्कल रचनाओ छे आपणे ते लईए:

शुद्ध निशाणो

सिव भजा सामल सलल पंचे इक पाला,
तसकर दवे उलूक ज्यूं ऊँगा किरणालां ।
पडोन छेडे पारको विहुयरण विचाला,
ऐसा राज करे अवध दशरथ नृपवाला ॥ १

एजन, पृ. २७०

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दादा दालदा' दादा दादा गा

दूहाना अर्धनी एक पंक्ति छे, तेमां फरक एटलो ज छे के दूहामां अंते गाल आवे छे तेनी जगाए अहीं मात्र गा छे. दूहानो आवो एक प्रकार आपणे जोयो पण हतो (गत पृ. ४१३).

गरवत निसाणी

दढ़ प्रताप आठूंदिसा पसरे अवनी पर।।
हितू कमऋ फूर विहर भात चक्र हणमर।।
नित अ ।.त कहुँ ले ि नह तह के दुख तोमर।
सूरजकुल सूरज सपै वड़ तेत सियावर।। १

एजन, पृ. २७०

उत्थापनिका।

दादा दादा दालदा' दादा दादा लल

शुद्ध निसाणीनी पेठे ज दोहाना अर्धनी एक पंक्ति अने शुद्ध निसाणीने अंते गा हतो तेनी जगाए अहीं बे लघु छे, एटलो ज फेर. बाकी दूहानो ज मेळ छे.

निसाणी गद्धर

जिण पुर चुपराजे अवरन गाजे केवल मेघ घुरायदा।
सब रहे ठिकाणे हुकम प्रमाणे, मारुत मते जलाइदा।।
कालाद अराणें भय नहिं आणें भय दुज दीना लायदा।
राघव राजिन्दा अवधति नदा, अैसा राज दिपा यदा।। १

एजन, पृ. २७१

आपणे आगळ जोई गयेल आ पद्मावती ज छे. एना ज आतरप्रासो पण छे (जुओ गत पृ. ३१७, ४१८) फरक मात्र एटलो ज के आ निसाणीमां चरणान्ते त्रण गुरु दृष्ट गणेला छे.

निसाणी पैडी

जिण रइयत सात सुखा सरसाई, सातू ईत भीत नहकाई,
निजदल गवण अगम कर दीरघ घेरत नगर अरदा है।'
घट रित ही सफल कुसुम वन दरखत, घटही सास उपावे हरपत
बारह मास सदा मन भाया पावस पूर झरदा है। १

एजन, पृ. २७२

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दा] दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा गा
दा] वगेरे

पहेली पंक्तिमां पहेलो दा निस्ताल छे पछी बत्रीसो सवैयो आवे छे जेना छेल्ला त्रण अक्षरो गुरु छे, अने यतिखंडोनो प्रास छे. पछी बीजी पंक्तिमां त्रीसो सवैयो छे, जेनो छेल्लो गा पछीनी पंक्तिनो दा पकडी आखु चतुष्कल रचे छे. नरसिंहराव 'नूपुरझंकार'मां आ छंदनो प्रयोग करे छे, ते उपर प्रमाणे ज छे, परंतु कंईक सरतचूकथी तेओ उपर आपेली बीजी पंक्तिने सवैयो माने छे तेमनो छंद जोतां ते उपर प्रमाणे ज नीकळशे

जो! पांडव कौरव रमण चढावी, चंद्र वंशने नहु दीपावी
लुप्त कर्या निर्वाण विशे सहु उदय अस्त पलटावीने.

नूपुरझंकार, पृ. ८८

बीजी पंक्ति ३० मात्रानी छे, एकत्रीस के बत्रीसनी नथी. पछी एमणे त्रीसी रचनाने पण सवैयो कही होय तो कशु कहेवानु रहेतु नथी

निसाणी सिर खुली

नाचै मोर निहारे अहिफण ऊपरे,
मूपक सीस न धारै घात मजारिया ।
माहोमाह न मारै वैर बुन्यादरा,
ऐसे तेज अकारै राजै रघुपति ॥

एजन, पृ. २७१

आनी उत्थापनिका करतां ते बराबर प्लवगम थई रहे छे, पण फरक ए छ के आ निसाणीमां बार मात्राए यति आवे छे, अने बार मात्राना धारेय यतिखंडो प्रासथी जोडेला छे, अने चरणान्त प्रास छे नहीं.

निसाणी सोहणी

फिरै गर्वीता ग्वालिया गायाँ सिघ करै रखवाली।
निघडक एण पिलग सूँ दावालेण लगायर आली॥
चिड़िया बाद विहग वन बाजाँ हूत हसे दे ताली।
बधे गरीबाँ बल इधक ऐसी धाक सियावर वाली॥

एजन, पृ २७४

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दादा दालदा' दादा दादा दादा गागा

पहेला यतिखडमा दोहरानो पहेलो यतिखड, अने ते पछी चार चतुष्कलो जेमानु छेल्लु गागा

निसाणी रूपमाला

बामण चार वेदबे बकता, आगम दृष्टी ग्यांन धुरधर।
साहुकार सको धजवधी दूजी जात अलेप कुरदर॥
सारा ही सुखपूर विचारै निदत और नरेस उरदर।
ऐसी राम प्रभा जिस आग देखत लाग सहज पुरदर॥

एजन, पृ २७४

बत्रीसो सवैयो छे, जनी छेल्लो सधि गालल रूप ले छे उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी चारेयमा अेक ज प्रास छे

निसाणी मारु

धाम धाम जग होम वद धुन रिप अभिराम ररदे।
दयावत अत साह मोम दिल, हित परपीड हरदे॥
पवन अवर जिह सुखी अनारा घन गृह पूर घरदे।
अदल नीत जगजीत अयोध्या रघुवर राज करदे॥

एजन, पृ २७५

उत्थापनिका दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा

अंते ब गुरुवाळो २८ सो चोपायो अने सळग प्रास

निसाणी झीगर

खटतीसूँ बव तणा खितधारी विग्रह रूप धरारा है।
पूनामे आय करे निजराणी ले धन जिवे धरारा है॥

घर घर का हूँत चहुँ चक धूजे दिल खल पडे दरारा है।
क्वसलयानद जसी का रैणा ऐसा तेज करारा है॥

एजन, पृ. २७७

उत्थापनिका दा] दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा गा

निसाणी दुमिला

दड धजा वे होत दार धनुवका धार।
पल छ सास पुणजे पुकार, छद मदरा सार॥
चोरी परचित हरण नार नर जोरी नार।
ऐसा राज करे उदार क्वसल कवार।

एजन, पृ. २७७–७८

उत्थापनिका दादा दादा दालगाल्दा दादा गाल

आवी चार पक्तिनो एक छद थाय तेमा पक्तनी मध्दमा आवता गाल आगळ शब्दयति, अने ए गाल अने पक्तिने अते आवता गाल ए आठेय गालनो एक प्रास आनु वाठु २३सा गालान्त रोळानु छ अने वचमा गाल आववा माटे बीजो अष्टकल सधि दालगालदा करवो आवश्यक छे

निसाणी वार

सेवे ससि सूरज इद सिव ब्रह्मादि ब्रह्म वृदारका।
जपे दुय रसण हजार सूँ हरिगुण नित सीस हजारका॥
कह कह सह थका मछ कहे पडत जन पारापार का।
वरणन कर कासूं वरणऊँ, कवसलजिह राजकवार का॥

एजन, पृ २७८

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दा] दादा दादा दालदा' दादा दादा दागा लगा

पहेली बे मात्रा निस्ताल छे, ते पछी दूहानो विषम यतिखड आवे छे अने पछी जेकरीनी एक पोडशी पक्ति आवे छ, एम करीने एक पक्ति थाय छे 'रूपक' अते गालगा आवश्यक माने छे, ज उपर प्रमाणे बे सधिओमा वहेंचाय छे आखो रचना मने सुन्दर देखातो नथी पछी पठनमा कोई नवी ज भगी दाखल थती होय तो कही शक्तो नथी

अही चतुष्कल रचनाओ पूरी थाय छे आ पछी त्रिकल रचनाओ लउ छु

डिंगलमां त्रिगण रचनाओ बहु ओछी जणाय छे गोयो पहेली गोखो लईए ·

गोखो

विदेही तणें दिवाण। ईस चाप धरे आण ॥
तोडया ओप तांण। ऊठिया धरे अपाण ॥
राज राव अने राण। पिनाक पै धरे पाण ॥
हिले हीय हीणमाण। दई बाण दई बाण ॥ १ ॥

एजन, पृ ७६

'रूपक' आनु लक्षण एवु बाधे छे के दरेक पदमा आठ अक्षरोथी चार मात्रा करवी, अने एवा आठ चरणो करवा अंतमा गुरुलघु मूकवा आठेय पदोनो एक सळग प्रास राखवो अने अंतनी तुकमा वीप्सा आवे उपर आठ वर्णोथी चार मात्रा थाय छे ए खरु पण त्या दरेकमा त्रिकल संधिना चार आवर्तनो आवे छ अंते गुरुलघु गाल वहेलु छे एटले आने गालना चार आवर्तनोनो छंद कहेवो योग्य छ अंत्य त्रिकल सिवाय कोई जगाए गालने बदले लगा पण आवे छे ए स्वीकारवु जोईए

उत्थापनिका गाल गाल गाल गाल

आठने बदले चार पदनो छंद करवाथी अर्धगोखो थाय छे तेमा पण अंत्य पदमा वीप्सा जोईए (एजन पृ १३६) बीजी रचना वीरकंठ छे

वीरकंठ

करा जोड रूपवीस, साम पाय नाम सीस ।
वाघ चाल महावीर, कूदियो किसीस ॥
निसाचरा कालनेम, पतीलक तणो पेम।
मांग बीच बणे रह्यो, सदमा मुनीस ॥ १ ॥

एजन, पृ १९५

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे

गाल गाल गाल गाल, गाल गाल गाल गाल ।
गाल गाल गाल गाल, गाल गाल गाल ॥

आ अर्ध छंद थयो आना अंत्य गाल साथे बाकीना अर्धना अंत्य गालनो प्रास मळे अंत्य संधि तरीके गाल ज आवे, ते सिवाय क्याक लगा आवी शके आ पछी पचकल रचनाओ आवे पचकलोमा प्रथम बडो साणोर लईए

वडो साणोर

मुरा दरस सर पडु मुनुकला तेवीस घर
जुग विसय सवत कल दुसर जतरं।
पच कलतणी द्वे चार गण विपम पद,
सामुहं मेल गण कला सतरे ॥१

एजन पृ ५०

लदा दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गा
दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गा

डिंगलना घणा छदोनी पेठे पहेला छदनी पहेली पक्तिमा त्रण मात्राओ वधारे आवे छे ते सिवाय, आ प्रसिद्ध झूलणा ज छे आमा पाच पाच मात्राना सधिओना आवर्तनो स्पष्ट छे वधाक दालदा साथे लदादा वपराय छे, जे झूलणामा पण बने छे* पछी शुद्ध सँणोर लईए:

शुद्ध सँणोर

मगण आद गुर तीन फल रमा विवुधा मही,
पिता पिंगल गिरा मात तन पीत।
रिधि कँस्यप अरोहण कमठ शृगार रस,
मगध पत दुज वरण नयण त्रिय मीत॥

एजन, पृ ५२-५३

* आ रचना सादी छ छता डिंगलकार एनु स्वरूप केवु भ्रामक आपे छे, एनो आ छद चोक्कस दाखलो पूरो पाडे छे 'रूपक' आनु स्वरूप एवु आपे छे के प्रथम पदमा ६, ५, ५ अने सात मात्राओथी २३ मात्राओ, बीजा पदमा बे वार पाच पाच मात्रा पछी ७ मात्रा, विपम पद एटले त्रीजा चरणमा पाच पाच मात्राना चार गण थाय छे अने चोथा चरणमा १७ मात्रा राखवी जोईए (एजन, पृ ५१) आ लक्षणनी अपूर्णता बतावबा हु दा अने ल सज्ञाथी उपर प्रमाण गणो मूकी बतावु छु पहेलु चरण आम करी शकाय

दादादा, दालदा, दालदा, दादालदा

आथी कदी साणोरनो मेळ आवी शकशे नहीं छेल्लो सात मात्रानो गण दादादाल मूकु तो पक्ति वधारे विसवादी जणाशे में उपर बताव्यो ते ज खरो मेळ छ

उत्थापनिका

दा:] दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गाल

प्रथम पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे छे ते अंतां पचकलना आवर्तनो झूलणानी रीते ज चाले छे, फरक एटलो ज के झूलणामां अंते संधि खंडित थई गा रहे छे त्यां अहीं गाल रहे छे एमानो गुरु चार मात्रानो प्लुत थई त्यां पचकल पूरू थाय छे आमां पण लदादानु मिश्रण छे आ पछी एक प्रहास के गरबत नामनी पचकल रचना आपी छे, ते गान्त झूलणा ज छे, सिवाय के पहेली कडीनी पहेली पंक्तिमां त्रण मात्राओ वध छे आ पछी मुक्तागृह लईए-

मुक्तागृह

पगा वद उतमग मा कनैथी पधारे
पधारे महल को दड पाणी ।
विदेही सुनानें गुणी जेती विगत,
विगत तती पुणी तात वाणी ॥ १

एजन, पृ १०४

पहेली पंक्तिमां त्रण मात्राओ वधारे छे ते सिवाय आ लदादाना मिश्रणवाळो झूलणा ज छे विशेषमां पहेली पंक्ति (एटले चार आवर्तननो यतिखंड) नो छेल्लो शब्द पछीनी पंक्तिमां फरी आवे ते ज प्रमाणे त्रीजी पंक्तिनो छेल्लो शब्द चोथी पंक्तिमां फरी आवे आ पछी सावझडो लईए

सावझडो

सुणे वयण अगद कलह, सुभड सरसाविया,
यरव जलयाल जिम त्रिकुट जण थाविया ।
चाल बाध धुरा दनुज ललचाविया ।
अतवप अकपन समर सज आविया ॥

एजन, पृ १८३

पहेली पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे छे ते सिवाय आ रचना कामिनीमोहन के मदनावतार छे, जेमां दरेक पंक्तिमां दालदाना चच्चार आवर्तनो आवे छे अहीं चारेय पंक्तिना एक सरखा प्रास छे मध्य पंक्तिना प्रासने अर्थ सावझडो पहेलो छ (एजन पृ १८७–८८) आ पछी चाटियाल लउ छु:

चोटियाल

सुणे सुदनखा बैण चढ हाकिया साकुरा,
खर दूंषर त्रिसर पल झाल खागा,
पूर तन पहरिया ॥
उरस छवता थका आविया अडाकी,
आखता असुर रघुबीर आगा
कोप लोयण किया ॥ १

एजन, पृ. १३१

पहेलो त्रण मात्रा वधारानो बाद करता गुर्वन्त झूलणानी पक्ति आखी आवे छे ते पछी दालदा दालगा एटलो एक लटकतो पक्ति आवे छे अने पछी फरी वार ए प्रमाणे ज आखो कडी पुरो थाय छे लावा झूलणा पक्तिओ बन्ने प्रासथी सधाय छे ते उपरात पेली बन्ने लटकती पक्तिओ पण प्रासथी सधाय छे उत्थापनिका

दाल] दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गा
दालदा दालगा ।

आ अर्थ थयु

हवे सप्तकल रचनाओ लईए तेमा पहेला प्रथम प्रौढ लईए

प्रौढ

मगके मुकामा करे मियुला । आविया अवधेस।
सुण अतुल साज झलूस सारा । मिले छक मियलेस ॥ १

एजन, पृ ८३

आ स्पष्ट रीते बे प्रासबद्ध पक्तिओनी एक कडीनी सप्तकल रचना छे पण रूपक तेनी चार पक्तिओ पाडे छे, अने पहेलीने पाच, चार, त्रण, चार, ए प्रकारे १६ मात्रानी, अने बीजीने त्रण, चार, त्रण ए रीते १० मात्रानी कहे छे तेना खरा मेळनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे

दा] दालदादा दाल्दादा' दाल्दादा गाल

अत्य गाल पछी बे मात्राओ अनक्षर रहे छे, जे पछीनी पक्तिना प्रथम निस्ताल दा साथे मळी आखु सप्तकल पुरु करे छे बधाय दाल+दादाने बदले ल्दा-

दादा आवे छे, जेनो खुलासो आगळ जातिछंदोमा आवी गयो छे. बीजो प्रौढ नामनो रचनामां पंक्तिमा प्रथम आवतो निस्ताल दा नथी होतो एटलो ज फरक होय छे. दृष्टांत:

प्रीतकर पूरहूत ऊपर। उठँ रघुबर आप।
सहस भग किय चसम सहसा । सकत मेटे श्राप॥

एजन, पृ ८५

जुदी उत्थापनिका आपवानी जरूर नथी आ पछी इकखरो लईए

इक्खरो

सुण सेसरे सुण सेसरे, दिलके कई उपदेसरे।
वनवास जावण वेसरे, इम आखियो अवघेसरे॥ १

एजन, पृ १०७

उत्थापनिका · दादालदा दागालगा । दादालदा दागालगा

आ अर्ध यमु. दरेक पाद चौद मात्रानु, दादालदाना बे आवर्तनोनु, पदान्ते गालगा आवे, अने चारेय पदोनो एक सळंग प्रास. आ पछी हेलो.

हेलो

उठ आय कवसल मात आगें, लुले सीरप पाय लागे।
दखे वायक दीण॥
कैंकई बदनाम कीधो, दोप मोटो मने दीधो।
हुवो सारे हीण।। १

एजन, पृ. ११६

उत्थापनिका:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा दालदादा
दलदादा गाल

आ अर्ध यमु. पहेली पंक्तिमा आंतरप्रास. अने तेने एक टूंकी पंक्ति दालदादा गाल लटकावेलो. ए पंक्तिने एवी ज बीजी पंक्ति साथे प्रासथी सांधेली. काव्य जोवाथी प्रास योजना समजाशे. गाल पछी चार मात्रा अनक्षर रहे छे. पहेला छंदनो पहेलो पंक्तिमा बे वधारे मात्रा आवे, बाकी बधीमां १४ मात्रा ज आवे. आ पछी भाख लईए.

माख

आयो भरथ अवध अभंग, मडे पावडी उतमंग।
रइयत कोध अत उछरंग, इम आवास जाय उमंग॥ १

एजन, पृ. १२२

रूपक एक चोकल अने पछी बे पचकल करी कुल चौद मात्रा करवानु कहे छे पण छंद स्पष्ट रीते आपणे उधोर कहीए छीए ते छे.

दादादाल दादागाल

चारेय चरणनो एक प्रास. बब्बे लीटीनो प्रास मळे त्याले अरध माख कहेवाय. आ पछी धमाल लईए.

धमाल

रावण ससा दिग्गज रूप दडकवन रमै,
निरलज सुपनखा तिण नाम नरक अनग में।
सीतानाथ आगल सार आई विण समै,
माल सकाति अदभुत नरम सुचि रत सभ्रमें॥

एजन, पृ. १२८

उत्थापनिका. दाद।] दालदादा दालदादा दालगा

आवी चार पंक्तिओ थाय. अत्र दालगामा बे मात्रा अनक्षर रही छे, ते उपरात ते पछी आवर्तनी सन सरखाना करवा त्या एक सप्तकल जोईए जनो दाल जेटलो भाग अनक्षर रह्यो छे, अने ए दालनी अनक्षर मात्राओ ते पछीनो पंक्तिना प्रथम आवता निस्ताल दादा साथे जोडाई सप्तकल रचे. ए अनक्षर मात्राओ मूकता उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दाद] दालदादा, दालदादा; दालगा –, – ⏑
दादा,] दालदादा वगेरे

चारेयमा सळग प्रास छे. आ पछी भवर गुजार लईए

भवर गुजार

हणु मिलत धुर हर दीव सिर हय, रिघु बजरंग हुवो समरथ।
चवे रघुवर वयण वनचर, सीत सुध साजै॥
तो कहू अरियण तेण कण कण, हरथ मारु विसळ हुण हुण।
विकट पूरू मनावछत, गहर गुण गाजै॥ १

एजन, पृ. १५०

उत्पाधिका स्पष्ट छे

दा] दाल्दादा दालदादा' दाल्दादा दाल्दादा
दाल्दादा दालदादा' दालदादा गा

आ अर्थ थयुं तेमां पहेला पक्तिना यने यतिखडो प्रासथी सधायेला बीजी पक्ति चोथा पक्ति साथे प्रासबद्ध आवे बीजा पक्तिमा गा पछी एटा धनदार छे अने ते पछाी पक्तिना दा गाये जोडाई सप्तकल रचे ते पछी कैवार लईए

कैवार

दिगलय अगद आद द्वादश, तहुविया तेबी।
इन अरण सो विच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देसी॥ १

एजन, पृ १६१

उत्थापनिका सरल छे

दा] दालदादा दालदादा' दाल्दादा गा

आवी बे पक्तिनी एक कडी थाय विशेष खुलासानी जरूर नथी आ पछी अठतालो लईए

अठतालो

माकें कुभवाले वेर काजा, सकजोत उझेल साजा।
वियण गो खल कुभ लाजा, जाग ताजा जोस॥
जाय जोगण वद जाजा, प्रजुण वन्हो वरे प्राजा।
वहण आवध होम वाजा, रुपि दराजा रोस॥ १

एजन, पृ २०६-०७

पहेली पक्तिमा चार मात्रा वधारे छ, ते जता बाकी दालदादा दालदादा एम बे सप्तकलना यतिखडो त्रण छ, अने चोथो दालदादा गाल छ त्या अर्धकडी थई प्रासनो योजना जोवी सरल छ उत्थापनिकानी जरूर नथी आ पछी काछो लईए

काछो

रघुपत जगतमिण उपसास राले, भामणी चिहु ओर भाले
तन विचाले जो वरे।
चित लाग चालें गात गालें, घर समालें धीर॥

दूरे दिलाले कैक काले अचल थाले ऊपरे।
दाठा दयाले तेण ताले वध वडाले वोर॥ १

एजन, पृ. १४५

पहेली पंक्तिमां चार मात्रा वधारे छे एटले ए काढीने ज उत्थापनिकानो विचार करवानो. एम करतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दादा] दालदादा दालदादा[1]' दालदादा दालदादा[2] दालदादा[3] दालगा

दा] दालदादा[4] दालदादा[5]' दालदादा[6] गाल

दा] दालदादा[7] दालदादा[8]' दालदादा[9] दालगा

दा] दालदादा[10] दालदादा[11]' दालदादा[12] गाल

दालगा साथे दालगानो प्रास मळे, गाल साथे गालनो प्रास मळे ते उपरात एकथी १२ सुधीना स्थानोमां प्रास छे. आ पछी त्रकूटबंध लईए.

त्रकूटबंध

कुळे भ्रात मंत्री सुत घटे, उर क्रोध रावण ऊपटे।
मन समझ नहचे घटे मरणो, सजे पण घमसाण॥
वध ओप वाजत्र वाजिया, सझ रोप वगतर साजिया।
कस कमर बडकर गहर कर, धर धजर आवध सघर धर॥
चढ चले रथ पर ढुर चमर, भड अवर निसचर रिण भवर।
मिल चहुर मूछां मुहर भर, वज पखर घूघर भिडज वर।
गज चोर फरहर खुल अगर, झुक अतुर लोयण अगनझर।
अर आवियो आराण॥१

एजन, पृ. २१९

पहेली त्रण पंक्तिनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे.

दा दालदादा दालगा' दा दालदादा दालगा
दा दालदादा लगादादा' दालदादा गाल
दा दालदादा दालगा' दा दालदादा दालगा

आ पछी पण सघिओ तो चार पंक्तिओ सुधी आ ज प्रमाणे चाले छे. पण अमुक असर करवा तेना लघुबहुल अने लध्वंत रूपो वपराय छे. अने लगभग दरेक संधिमां प्रास राखेला छे अने ए चार पंक्तिओ पूरी थतां एक टूंकी पंक्ति लटकावेली आवे छे. दा दालदादा गाल अने उपरनी बीजी

पंक्तिना गाल साथे तेनो प्रास मळे छे. आखी कृति प्रास माटे ज छे. एना प्रासो मूळ छंद उपरथी जोई लेवा. आ पछी चित्तहिलोल लईए.

चित्तहिलोल

ले हुकम सीता खबर लेवण, सकज राघव संत।
लह लंक दिस सज उदवलंघण, हालियो हणमत।
तो बलवंतजो बलवंत धारघ लांधवे बलवंत॥ १

एजन, पृ. १६३

उत्थापनिका:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गाल–

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गाल

तो दा] गालदादा गालदादा दालदादा गाल

आ उपरथी सप्तकलोनो विन्यास समजाशे अने १थी ५ स्थानोमां सळंग प्रास अने तेमां ३, ४, ५ स्थाने एक ज शब्द उपर छे ते प्रमाणे फरी फरीने आवे अने त्रीजी पंक्ति 'तो' थी शरू थाय. हवे सुवग लईए.

सुवग

लंगरी रिम सेन लाडो, गुमर धारक लाज गाडो।
इल झडे कुंभेण आडो, झूझ जाडो झूझ जाडो॥ १

एजन, पृ. २०५

उत्थापनिका: दालदादा दालदादा

आवी चार पंक्तिओ, तेमां सळंग प्रास, अने चोथी पंक्तिमां आवे छे तेवी वीप्सा. आ पछी भाखरी लईए.

भाखरी

मिथला महिपतीजो अवनी कोध जिग आरंभ।
तेडे समगतीजो लिख फुरमाण बाहु प्रलभ॥
कर कर कामतीजो खोपे जैय हुथ जस खंभ।
नागर नोवतीजो घर घर घुरत द्वार असंभ।
घर द्वार नोवत घुरत बाजत तोस पट्ट अवरेख।
बंध पोल विसाल तोरण बणे चित्र विशेष॥

ग्रत सदत पीत पताक फरक्त वरण घहु गुण्वेप ।
मध जनकपुर सुर असुर मानच पड़े गमृत पेख ॥ १

एजन, पृ. ७०

आ एक सुन्दर रचना छे. तेमा पहेली चार पंक्तिओनो गाधिन्यास नीचे प्रमाणे छे:

दादादाल गा—गा ⌣ दादादाल दादागाल

बराबर स्पष्ट थाय माटे एक सरल पंक्तिने उपरना न्यासमां मूकी बतावु.

ना गर नो व तो – जी ⌣ घर घर पुर त द्वा रअ स भ
दा दा दा ल गा – गा ⌣ दा दा दा ल दा दा गा ल

पण एक जुदी रीते पण आनु पठन थई शके.

दादादाल गागा—⌣ दादादाल दादा गाल

अर्थात् मात्र जो एकलो ज पाच मात्रानो प्लुत बने पछीनी पंक्तिओनी उत्थापनिका सरल छे आ पछी गजगत लईए

गजगत

कुभज वह कहे जो सियवर सुण नहे ।
जदे पग बहे जो गैलो वन गहे ॥
वन गहे गैलो जेण विच में रहे राखस रोस में।
तन तुग नाम कबध तिणरो करग जोजन कोसमें॥
सो हुवो गद्रप श्राप वासव धिके प्राक्रम धारिया।
विणसोस दूर प्रसार बाहा घणा जीव सहारिया ॥ १

एजन, पृ. १२५

आनी पहेली बे टूकी पंक्तिओनी उत्थापनिका भाखरीना बन्ने विकल्पो प्रमाणे ज छे

जी
दादादाल गा – गा ⌣ दादादाल गा – – ⌣
दादादाल गा – गा ⌣ दादादाल गा – – ⌣

अथवा

जी
दादादाल गागा – ⌣ दादादाल गा – – ⌣
दादादाल गागा – ⌣ दादादाल गा – – ⌣

आ पछी

दा] दाल्दादा दालदादा दाल्दादा गाल्गा

एवी चार पंक्तिओ आवे छे जे हरिगीत जेवी ज छे तेमा विशेष ए छे के बीजी पंक्तिना छेल्ला थोडा शब्दोनु, पछीनी लावी पंक्तिमा सिंहावलोकन थाय

आ सप्तकल रचनानी एक सिंहचली निसाणी छे ते जोईए

निसाणी सिंहचली

रघुवस नायक कीत जिणरी यवण वरणे राज।
कुण साज वरणे त्रीत जो नर उदध बधे पाज॥
दध पाज बधे यवण लावे उतर मारग छेह।
मग छेह उत्तर करे गिणती वूंद सावण मेह॥

एजन, पृ २७६

उत्थापनिका दा] दालदादा दाल्दादा दालदादा गाल

पण आमा विशेष ए छे के आमा सिंहावलोकन थाय छे, एटले के पंक्तिना अतमा आवता शब्दो ते पछीनी पंक्तिना आदिमा फरी आवे छे एम आवता थणे भागे शब्दोनो क्रम ऊलटाय छे

आ सिवाय 'रूपक' केटलीक कुडलिया रचनाओ आपे छे ते पण टूकमा जोई जईए

झड उलट

आठू दिस वरतै अदल, राघववाले राज।
सीख समपै सोहडा, कर मन वछत काज॥
काज मन वछता पूर सगला किया।
धवल हरि दुरग धन देस कितरा दिया॥
कोध अर निकटव जीत रावण जिसा ।
जमी पग फील जिम, दवे आठू दिसा।

एजन, पृ २७९

पहेलो दोहरो छे अने ते पछी मदनावतार आवे छे दोहराना छेल्ला यतिखडनु सिंहावलोकन थाय छे, अने दोहराना पहेला शब्दो, मदनावतारने अते आवी कुडली थाय छ आने 'छन्द काप' चदायणो कहे छ अन ते आपणे आगळ जोई गया (गत पृ ३३४) आ पछी कुडलियो राजवट लईए

राजयट

सियवर राज समापिया, पाट अवध लव पेख।
कुस नै समप कुसावती, वधव सुतौ विशेष॥
वधव सुतौ विशेष, दोय सुत भरत सुदत्तिय।
तक्षक नै तखनलो, पुखर नै पुखरं वत्तिय॥
असो लिछमण उभय, अँगद नगरी अगद नै।
चद्रकेत चद्रवती, सत्रुघण सुतौ सुजद नै॥
कनवज मुराह समुभात कर पति मथुरा इम थापिया।
इण भांत मछ वह आठहो सियवर राज समापिया॥

एजन, पृ. २८०

अहीं दोहरा पछी छप्पो आवे छे, अने पहेलानी पेठे ज सिंहावलोकन अने कुंडली थाय छे. गुजरातीमां आ रचना जाणीती नथी. 'रूपक' शुद्ध कुंडलियो आपे छे ते आपणो कुंडलियो ज छे, दोहरारोळानुं मिश्रण. एटले ते अहीं उतारतो नथी ते पछी दोहाल लईए :

दोहाल

रूपक यह रघुनाथरो, पिंगल गीत प्रमाण ।
कहियो मछाराम कवि, जोधनगर जग जाण॥
जोधनगर जगजाण वास गूँदी विसतारा॥
बगसीराम सुजाव, जात सेवग कूवारा॥
सवत ठारे सतक वरस तेराठो वचाणो।
सुकल भादवा दसम वार ससि हर बरताणों॥
मत अनुसारे मे मछा, सुध कर लिखो सुजाण।
रूपक यह रघुनाथरो पिंगल गीत प्रमाण॥

एजन, पृ. २८१–८२

अहीं प्रथम दुहो, अने पछी चार पक्ति रोळानी आवे छे अने वच्चे सिंहावलोकन थाय छे पण अंते रोळा पछी दोहरा थाय छे, अने प्रथम दोहरानी पहेली पक्ति आखी अत्य दोहरानी छेल्ली पक्ति बनी कुडली रचाय छे. ते पछी कुडलनी लईए

कुडलनी २

कीजै तीरथ कोट, कोट गोदान ताम दिज्जियकै।
अभय करे रख ओट, कर वे विवाह किन्ना॥

किशा ब्याहे कोडलो जु किन्यावल लेवै।
माल खजाना मुल्क दुजाँ उदकै दत देवै॥
राम् राम इक तरफ दुवँ तरफां सह दीजै।
तऊ न हूवै राम तूल कोट जो तीरथ कीजै॥

एजन, पृ. २८२

आपणे आगळ जोयु के 'रणपिंगळ' कुंडलिनो आपे छे, अने तेमा आर्या अने रोळानु मिश्रण आवे छे. (गत पृ. ३३१) हुं मानु छु के आ ते ज कुंडलिनो छे, जो के आर्या तो छेक्को यतिखंड अहीं शुद्ध ऊतरेलो नथी. 'रूपक' पण अही प्रथम आर्या होवानु ज कहे छे, छतां पिंगळना पुस्तकमां ज आवी भूल जोई आश्चर्य थाय छे. 'रूपक'मां तेनो खुलासो मळतो नथी.

हवे आपणे संख्यामेळ प्रकार जोवानो रह्यो. कवित जेवा छंदो आपणे हिंदीमांथी ज लीधा छे, अने हिंदीमा तेनो वहोळो वपराश छे, पण डिंगलमा तो मने एक ज असंदिग्ध संख्यामेळ रचना मळे छे — सपखरो. आपणे जोईए:

सपखरो

अंगा ऊससे सवायो तायो सुणे वैण रागवाला,
वडालां छोह में छायो चलां चोल वन्न।
कलेसा आघायो लेण रटवका सजोर काम,
दहूकां रामरे माथे आयो कुंभकन्न॥ १

एजन, पृ. २००

'रूपक' आनु लक्षण एवु आपे छे के विषम चरणोमा १६ वर्ण अने समपादोमा १४ वर्ण ए प्रमाणे एक द्वालामा ६० वर्ण होय छे. प्रथम द्वालाना प्रथम पादमा १९ वर्ण होय छे एम कह्यु छे पण गणी जोता अढार ज थाय छे. आवी भूल, कोण जाणे केम, 'रूपक'मा बे त्रण जगाए थई छे

आपणे आगळ मुक्तधारा तरीके जेनो नोंध करी तेमा अने आमा कशो फरक नथी. आ सबंधी 'रूपक' एक विशेष नियम एवो आपे छे के आमा सगण (ललगा) भगण (गालल) अने नगण (ललल) न आवे, अर्थात् आ रचनामा कोई पण जगाए बे के वधारे लघुओ भेगा थाय तेनो निषेध कर्यो. आनु कारण संख्यामेळनो चर्चामा आवी जाय छे. संख्यामेळमा दरेक अक्षर बे मात्रानो थवो जोईए. उच्चारणमा दरेक अक्षरनो ए प्रमाणे उच्चार न करवो होय तो वधारे सारी रीत ए छे के दरेक चतुरक्षर संधिने आठ

मात्रानो करवो, अने ते एवी रीते के दरेक लघुने बे मात्रानो करवाने बदले लघुने लघु ज बोली तेनी पछी आवता नजीकना गुरुने प्लुत करवो. आ प्लुत दूर न पडी जाय माटे बे के वधारे लघुओ भेगा करवानो निषेध कर्यो. आ युक्तिथी कदाच पण लघु आवे तो तेथी खूटती मात्रा पूरवा माटे तेनी पछी तरत ज गुरु मळी ज रहेवानो. आ नियम सख्यामेळनुं जे स्वरूप आपणे नक्की कर्युं तेना फलित नियमनो होई, ए स्वरूपना समर्थनरूप बने छे.

आपणा कविओ अने मुक्तधारा करता लवाईमां आ छंद कर्यो छे, ए पण नोंधवुं जोईए. बीजा छंदो करता आ छंदनी भाषामां जोडाक्षरो वधारे आवे छे ते आगळना लघुने गुरु करवाने, जेमके नं. घटमनुं उपर चट्का कर्युं छे.

आ पछी बीजो छंद हुं सख्यामेळ तरीके जोवा इच्छुं छुं, ते सख्यामेळ अवश्य छे एम हुं कही शकतो नथी. पठन उपरथी जणाय छे के कदाच ए सख्यामेळ होय. अने एम होय तो उपरना चतुरक्षर संधिना सख्यामेळथी ए भिन्न प्रकारनो छे. एने जातिछंद तरीके हुं एक वार जोई गयो छुं. ए छंद छे लहचाल. एनुं दृष्टान्त आ प्रकरणमां आवी गयुं छे, एटले फरी उतारतो नथी. एना सख्यामेळना पठनमां एनो दरेक अक्षर बे मात्रानो बोलाय छे. अने एना संधिओ चतुरक्षर नहीं पण त्र्यक्षर छे. ए रीते एनुं पठन नीचे प्रमाणे थाय

सुत	म्रात व	टे साय	धीट व	घे धक
दादा	दा दा दा	दा दादा	दादा दा	दादादा
	बोल मु	जाण वि	धारियो	जी
	दादा दा	दादा दा	दादा दा	दा
निर	वाजा –	वानर	ने मग	मुवर
दादा	दादा दा	दादादा	दादादा	दादादा
	धेल द	सो मन	चारियो	जी
	दादादा	दा दादा	दादादादा	दा

जरा विलंबित रीते — धीरे धीरे बोलता लघुने गुरु करवा पडे छे ते खराब नथी लागतुं. दरेक त्र्यक्षर संधि छ मात्रानो दादादा बने छे अने आठ संधिओनी एक पंक्ति बने छे. आठमा संधिमां चरणान्त जो आवे छे, ते पछीनी पंक्तिना पहेला बे अक्षरो साथे मळी दादादा संधि पूरो थई रहे छे. कदाच कोई गुरु चार मात्रानो पण बने छे, ते उपर जोई शकाय छे. पछीनामां पंक्तिनो प्रारंभ गुरुथी थाय छे त्यां ए गुरु पण चार मात्रानो बने छे जेम के चोथा ढाळामां

पे—	से गा	प्रारभ	सोय श	डीसभ
दादा	दा दादा	दादादा	दा दादा	दादादा

ए रीते पहेलो गुरु चार मात्रानो बने छे आ रचनाने सख्यामेळ छदोमा स्थान मळवु नथी गुजरातीमा ए नथी ज एम नथी, दाखला तरीके आगळ उपर फरीना हुं जे ताटक गोपालनी रचना लेवानो छु ते शुद्ध अक्षरसख्यामेळ ज छे ए रागमा गवाय छे ए जुदो प्रश्न छ, पण तेन रागमा न लेता जो पठन करीए तो ए अक्षर सधिवाळो सख्यामेळ थई रहे छ अही आयी विशेष एनी चर्चा अस्थाने छे मात्र एटलु के उपरनी रचना अक्षर सधिनो सख्यामेळ छद होवानो मने सभव जणायो छे, अने माटे तेने हु ए वर्गमा मूकु छु

अही डिगलनी चर्चा पूरी थाय छे डिगलनी विशेषताओ अहीथी जोई लेवी होय तो तेनां खास लक्षणो ए कहेवाय के ते जातिछदोनो ज भगोओ छे एनी भगोओ घणीखरी प्रासवैचित्र्यनी होय छ, तेथी ओछ प्रसगे सिहावलोकननी अने एथी ओछे वीप्सानी होय छे क्याक क्याक एमा 'जी' के 'रे' जेवा सबोधनोने नियत स्थान होय छे, अने क्याक तो अमुक एटले के छठ्ठी विभक्तिना रा प्रत्ययवाळा शब्दोनी पण भगी होय छे. ए बधी रचनाओ पठनना असरकारक थाय ए दृष्टिए सर्जाई छे, अने हजी पण एनी ए असर छे पठनमा, मुशायरामा ए सकळ नोंवड एथी वधारे अही प्रस्तुत नथी मारो मुख्य आशय तो ऊडती नजरे एने जोई जई, जातिछंदोना सिद्धान्तो त्यां पण लागु पडे छ एटलु बतावबानो छ

परिशिष्ट क

जातिछंदोनुं परिशिष्ट २ जुं : गझल

आ परिशिष्टमा हु साधारण रीते गुजरातीमा गझलने नामे ओळखाय छे ते छदोना मेळनी टूकी चर्चा करवा इच्छु छु खरी रीते गझल ए कोई छद के छ दप्रकारनु नाम नथी दी० ब० कृष्णलाल झवेरी कहे छ "'गझल' ए छन्दनु नाम नथी 'गझल' ए काव्यनो एक प्रकार छे ए मूळ अरबी शब्द छे अने एनो अर्थ प्रनयुक्त भाषामा अथवा काव्यरूपे बोलवु एम थाय छे

'गझल'ना मूळ एटले फारसी साहित्यमा गझलना वस्तु सबध नीचे मुजब निर्देश करेलो छ

"प्यार, सौन्दर्य, मननी वेदना, उन्नतता वर्णवता शब्दो, वियोगने अगे पडता दुःखोनो विगत, प्रेमनु रुदन, माशूक जोडे एक थई जवा माटेनी फिकर, गाल परना तल तथा इवाटाना वखाण, माशूक जोडे मुलाकातनी तीव्र इच्छा, तेम ज सुख-चेननो अभाव, बेचेनी, उजागरो, अतःकरण बाळी नाखे एवो निःश्वास, दुःखार्तनाद, रुदन, अशक्ति अने शरीरना सुकाई जवानु वर्णन — ए सिवाय बीजु काई तेमा होवु जोईए नही आ रीते आशक-माशूकना वियोगनी यातना, माशूकनी पोताना आशक तरफ बेपरवाई, आशकनी माशूक प्रत्ये मिलन माटे आजीजो अने विज्ञप्ति, मालावाला — ये जेनो सेंकडे एक पण वखते स्वीकार थतो नथी, ते तेमाथी निर्दिष्ट थवु जोईए. आ उपरात मद्य-दारूना उपासकोनो — पीनाराओनो — आनद, वसत ऋतुनु सृष्टिसौंदर्य, गुलाब अने बीजा फूलोथी भरेला बाग अने तेमा गायन करता बुलबुल वगेरेनी शोभाना वर्णन पण तेनु साधन गणाय छे छेवट ढोळघालु सतो अने कहेवाता सूफी दरवेशोना पाखडखाना तथा ढोंग, तेमना पाखड ने दभ, तेमनु बनावटी अने कृत्रिम साधुपणु — एने उघाडा पाडवा तेम ज तेवा ईसमोने चाबखा मारवा माटे पण 'गझल'नो उपयोग थाय छे" ('गुजराती गझलो' प्रस्तावना पृ. ६,७)

'शाईरी'ना कर्तानो पण ए ज मत छे तेओ कहे छे · "अरबी भाषामा तो गझल एटले 'स्त्रीओथी वातो करवी' एम छे, पण पिंगळशास्त्रीओए एनी समजूती नीचे प्रमाणे आपी छे "गझल ते पद्योनु नाम छे के जेमा प्रेम, मोह, रूप, सुन्दरता, प्रेमनु दीवानापणु, मोज, आशा, डर, रझामदी, खुशी, गमी, पानखर, फूल, पतगियु, मजनु, लयला वगेरे शब्दो वडे प्रेम विषयोना वर्णन थाय, अथवा बोधक आज्ञाओ करवामा आवे " ('शाईरी' भाग १–२. पृ. ६९) पण आ विषयनी कविताओ फारसी उर्दूमा जे अमुक छदोमा गवाई ते गझल कहेवावा लागी, अने तेमानी जे जे गुजरातीमा ऊतरी ते पण गझलो कहेवाई गुजरातीमा अर्वाचीन युग पहेला पण कोईकोई जैन कविओए गझलो लखी छे, अने दयारामे पण गझलरेखता लख्या छे पण गुजरातीमा तेनो पहेलो शोख लगाडनार मस्त कवि बालाशकर छे तेना अनुसरणमा मणिलाल नभुभाईए गझलो लखी छे अने पछी कलापीए गझलोने बहु लोकप्रिय करी, अने अत्यारे पादपूर्ति साथे गझलोनो पण मुशायरो थाय छे. गुजरातीमा गझलोना थोडा ज प्रकारो ऊतर्या छे, अने तेमा छदनी दृष्टिए केटलाक प्रयोगो तथा फेरफार थया छे, एटले गझलोना मेळनु स्वरूप जाणवु जरूरनु छे

मूळ 'गझल'मा कोई विषयनु सळग निरूपण थतु नही. "गझलनी खासियत ए छे के दरेक बेतमा भिन्नभिन्न भावना के लागणी दर्शावाय छेः कोई एक अमुक विचार, भाव या लागणी एकज बेतमा समाई जाय छे, तेनी पछीनी बेतमा तेने खेंचवामा आवतो नथी, मतलब के आखी गझल एकज भावनु दर्शन करावती नथी, परतु तेमां जुदीजुदी भावनाओ एकत्र थयेली जोवामा आवे छे." ('गुजराती गझलो', प्रस्तावना पृ. ८) "गझलनी कडीओ एवी होवी जोईए के एक कडीने बीजी कडी साथे जोडाण होवु न जोईए. एक गझलने मेना पोपटनी कहाणी, के कौमी जुस्सो, के मात्र छाज्यामा पूर्ण करवी न जोईए. कहाणी किस्साओ, के छाज्या माटे रुबाई, मुसद्दस, के कतआ होवा जोईए." ('शायरी' भा २, पृ ६९–७०) पण गुजरातीमा आ मर्यादा सचवाई जणाती नथी अलबत्त गुजरातीमा पण कहाणीओ के किस्साओ गझलोमा जवल्ले ज लखाया छे, पण एक ऊर्मिकाव्यमा आवी शके तेवी भावनी सळगता आपणी गझलोमा आवे छे., जेम के कलापीनी 'सनमनी शोध'नी गझल खिस्ती प्रार्थनाना सळग भावनु काव्य छे 'आपनी यादी'नो पण भाव सळग छे. अने छता बन्नेमा गझलना जेवा उछाळा पण छे एटले भावसळगताने आपणे गझलनो दोष नही गणीए.

दी० ब० कृ० मो० झवेरी कहे छे के गझलना एक 'काव्यनी पाच सात या ओगणीस बेतनी सख्या राखवामा आवे छे,' ('गुजराती गझलो' पृ. ६) पण आ वचन पण आपणी गझले स्वीकार्यु नथी आपणी गझल बेतनी कोई सख्या आवश्यक मानती नथी, ए पोतानी ऊर्मिना प्रकटीकरण माटे जोईए तेटलो विस्तार करे छे.

गझल ए द्विदल छद छे, ते बब्बे पक्तिओनी कडी के बेतोनी बनेली होय छे. बेतना दरेक चरणने मिसरा कहे छे 'शाईरी'ना कर्ता, आ चरणने तुक पण कहे छे बे मिसरा के तुकनी एक कडी माटे 'शेअर' एवु नाम छे, जेना उपरथी कवि शायर कहेवाय छे, अने पिंगळ शाईरी कहेवाय छे. गझलना स्वरूपनु वर्णन करवा पहेला हु एक टूकी गझल उतारु छु जेथी दृष्टान्त आपी वर्णन करवु सहेलु पडे

सपना दिलासा शा?

जता मदफन तरफ घरथी वजववा ढोलतासा शा?
वजववा ढोलतासा शा? उजववा आ तमाशा शा?
थता पहेला खमे मुजने हतु ना कोई ओळखतु,
कबर आगळ हवे मारी फूलो, साकर पतासा शा?

गयो रमनार वेचाई सदानो येनसीबोने;
पछीथी नाखवा तेनो उपर शतरजपासा शा?
बीजाने माज तो एके हतो हरगिज मुकायो ना—
कहो, तोनानो हालत पर पछी मुकवा निसासा शा?
दमे आखर पतंगियाने कहो छो शु तमे आवी?
न आप्यो प्रेम तो मुजने—हवे सपना दिलासा शा?

गुजराती गझलो पृ. ११३

कुल पाच कडी के बेतनु आ काव्य छे. फारसी छदोमां प्रास बहु महत्त्वनु स्थान भोगवे छे, अने प्रास उपर घणी झीणवट भरी तेमा चर्चा छे. उपरना दृष्टान्तमा जणाशे के पहेली कडीना बन्ने चरणो के टूको एक ज प्रासथी सधाया छे. पछीनी कडीमा एम थतु नथी, पण पछीनी दरेक कडीनी बीजी पक्ति, पहेली कडीनो प्रास झीलती जाय छे, एम पहेली कडीनो प्रास कडीए कडीए साळग चाले छे. आ रीते प्रासनी दृष्टिए पहेली कडी, पछीनी कडीओथी जुदी पडे छे. आने शाईरीमा 'पूर्वकडी' कहेली छे. आवी पूर्वकडीओ कोई गझलमा एकथी वधारे पण होय अर्थात् पहेली बे त्रण के थोडी कडीओमा बधा दलो के टूको पहेली कडीनी पेठे ज एक ज साळग प्रासवाळा होय. उपरनी गझलमां छेल्ली बेतमा कविए पोतानु तखल्लुस गूथेलु छे ए फारसी कविओनो रिवाज हतो. ए छेल्ली कडीने 'शाईरी'मा 'पूर्णकडी' कहेली छे.

अही में उपरनी कडीओमा प्रासनो निर्देश करेलो छे, पण फारसी पिंगल तेनु पृथक्करण करी तेना बे विभाग दर्शावे छे, काफीयह् के सादी रीते बोलता काफिया अने रदीफ उपरनी गझलमा प्रासवाळी दरेक पक्तिमा छेवटे एक ज शब्द आवे छे 'शा' (के 'शा'). ए आ गझलनो रदीफ छे. अने रदीफ पहेला गझलनो काफिया आवे छे. 'शाईरी'मा आ रदीफने तूकान्त कहेल छे. तेना कर्ता कहे छे: "तूकान्तमा मात्र एकना एक ज अक्षरो एक ज स्वरूपे होवा आवश्यक छे, अर्थो साथे सबध नथी. एक ज स्वरूप साथे तेना ते ज अक्षरो होय, पण तूकान्त आगळना शब्दो एवा जोडवामा आवे के तूकान्तना अर्थ बदलाई जता होय तोये बाधो नथी. तूकान्तनु होवु ए आवश्यक नथी. पण साधारण रीते तूकान्त होय तो ठीक लागे छे तूकान्त नानामा नानो एक अक्षरी पण थई शके छे, जेम के छे या, थी, ने वगेरे. तूकान्त गमे तेटलो मोटो पण थई शके छे:

अदा पण तमारी अति मन पसद
जफा पण तमारी अति मन पसद

उपली कडीमां 'अदा, जफा, प्रासो छे, बाकी बधा शब्दो तूकान्त छे. तूकान्त जेटलो लांबो हशे, तेटलो निभाववो कठिन थई पडशे." (शाईरी भा.२, पृ. ६४–६५)

आ उपरथी समजायुं हशे के काव्यमां आपणे जेने टेक के ध्रुव के ध्रुवखंड कहीए ते रदीफ छे. पण एटलुं विशेष के रदीफ कडीनो अंदर ज समाई गयेलो होय छे त्यारे टेक के ध्रुव के ध्रुवखंड घणा बार कडी बहार लटकावेलो होय छे. अने बीजुं ए के प्रासबद्ध शब्दनो प्रत्यय पण छूटो होय तो ते पण रदीफ गणाय.

जे मझा मळती सनमनी यादमां
ते मझा क्यांथी मळे फर्यादमा –

आमा 'मां' रदीफ छे. रदीफ पहेला काफिया आववो जोईए ते 'याद' अने 'फर्याद'मा आवी जाय छे. प्रासनी चर्चामां आपणे आ ज आवश्यकता जुदा शब्दोमां स्वीकारी छे: ए रीते के चरणने अंते एक ने एक प्रत्यय के शब्द आवतो होय तो एने बाद करी तेनी आगळ प्रास मेळववो जोईए. (जुओ गत पृ. ३५९) आ उपरांत फारसी पिंगळोमां रदीफ काफिया विशे जे झीणवट वाळी चर्चा करी छे, तेमा ऊतरवानो जरूर नथी, गुजरातीमां लखाती गझलोने माटे तो नथी ज.

गुजराती गझललेखकोए रदीफ काफियाना आ बधा नियमो पाळ्या नथी. पूर्वकडीनी बन्ने तूको रदीफ के काफिया वाळी होवी जोईए, अने पछीनी दरेक बेतनी बीजी तूके एने झीलवो जोईए ए नियम घणाए पाळ्यो नथी. बालाशंकर कवि, जेने फारसी साहित्यनो सारो अभ्यास हतो ते पण सर्वत्र एक सरखी रीते रदीफ काफिया पाळता नथी. तेमनी 'खबर ले' गझलमां तेमणे बन्ने पाळेल छे.

उतारना कंइ प्यार ए, दिलदार खबर ले;
गमख्वार जिगर ख्वारनी, कंइ यार खबर ले.
गुलिस्तानमा हेरान छे, मस्तान आ बुलबुल;
भर प्यार नयो यार, वफादार खबर ले.

गुजराती गझलो, पृ. १९

अही पहेली कडीमां बन्ने चरणो प्रासबद्ध छे. तेमा 'खबर ले' रदीफ छे अने 'दिलदार- यार'थी काफिया रचाय छे, पछीनी कडीमां ए रदीफ काफिया कडीनी बीजी पंक्तिमां मिलाय छे, बन्ने आखी गझलमा ए प्रमाणे सळंग

थाय छे दरेक कडीने अंते 'समर ले' आवे छे अने तेनी आगळ 'समजदार', 'खबरदार', 'निगहदार', 'सरदार', वगेरे शब्दोथी काफिया रचाय छे पण एनी ज एक बीजी गझलमा आ नियमो पळाया नथी 'दीठी नही!' गझल जोईए

बलिहारी तारा अगनी, चबेलीमा दीठी नही;
सरलाई तारा दिलनी, मैं यज्ञमा दीठी नही;
मन महारु एवु कुळु, पुष्पप्रहार सहे नही,
पण हाय! तारे दिल दया, मैं तो जरा दीठी नही

गुजराती गझलो, पृ १

अही 'दीठी नही' रदीफ छे ते बीजी कडीमा ऊतरेलो छे अने आखी गझलमा पण ऊतरेलो छे पण रदीफ पहेला पहेली कडीमा पण काफिया नथी, अने आखी गझलमा काफिया छे ज नही मणिभाई नभुभाईनी 'अमर आशा'मा रदीफ अने काफिया बन्ने सचवाया छे

बही लाखो निराशामा अमर आशा छुपाई छे,
खफा खंजर सनमनाना रहम ऊडी ल्पाई छे
जुदाई जिंदगीभरनी करी रो रो वधी काढी,
रही गई वस्लनी आशा अगर गरदन कपाई छे

एजन, पृ ३१

'छे' रदीफ छे अने 'छुपाई-लपाई-कपाई' आगळ जता 'कमाई' वगेरेथी काफिया थाय छे पण बालाशंकरनी पेठे ज एमणे पण क्याक मात्र रदीफ ज साचवेल छे पण कलापीए तो क्याक क्याक बन्नेमाथी कशु ज साचव्यु नथी जेमके:

हमारा राह

कटायेलु अने धूठु घसीने तीक्ष्ण तें कीधु,
कर्यु पाछु हतु तेवु, अरे! दिलबर हृदय मारु
गमीना जाम पी हरदम घरी माशूक! तने गरदन्!
न खंजरथी कर्या टुकडा! न जामे ईश्क पायो वा!
पछी बस मस्त दिल कीधु, उघाडी चश्म में जोयु,
सितमगर तोय तु मारो, खरो उस्ताद छे प्यारा!

आमा रदीफ नथी काफिया नथी तेम आपणो प्रास पण नथी प्रास विनानी कविता फारसीमा बिलकुल नथी एम नथी 'शायरी'ना कर्ता "सामान्य

कडी" विशे कहे छे: "कोई पण वजन सहित बे तूकोनी कडी थाय छे. सामान्य अथवा सादी कडीनी बन्ने तूको सप्रास होती नथी. उदाहरण:

प्रेम मुज उरथी कदी जूदो पडी शकतो नथी,
बाळवयथी ए दयाहिण तो गळानो हार छे.

"झार", शाईरी भा. २ पृ. ७२

आनो अर्थ हु एम समजु छु के ज्यारे कोई एक ज कडी छूट्टा मुक्तक तरीके कहेवामा आवे त्यारे तेने प्रासनी जरूर नथी. अने गझलनु स्वरूप जोता आ अपवाद स्वाभाविक छे. कारण के रदीफ अने काफिया बन्ने सळग गझलना दरेक बेतमा मूर्त्त थता लक्षणो छे. ए लक्षण एक ज तूकमा अनवकाश बने छे पण सळग चालती गझलमा तो प्रास आवश्यक छे, गणवो जोईए.

गझलना छदो, हु आगळ बतावीश एम जातिछदोना जेवा, आवृत्तसधि छदो छे. जातिछदोमा में कारणो आपी दर्शाविलु छे के तेमां चरणान्त वतावता प्रास आवश्यक छे. एटले गझलमा पण प्रास आवश्यक गणवो जोईए. गझलनी रीत प्रमाणे तेमा पूर्व कडोनो प्रास, पछीनी कडीओमा अने सळग राखवाथी एक प्रकारनी सुदर भगी बने छे. तेमा पण गझलना मूळ नियम प्रमाणे जो एक बेत के कडोने बीजी कडी साथे अर्थनो सबध ज न होय तो तो सळग प्रास आवश्यक गणवो जोईए, कारण के सळग प्रास न राखीए तो पछी ए गझलने सळग एक कृति राखनार बीजी कोई वस्तु रहेती नथी. पण एम न होय, अने एक ज भाव के ऊर्मिनी गझल होय तोपण आपणा जातिछदोनी पेठे गझलमा पण कडीए कडी स्वतत्र प्रासवाळी होय तो तेमां हु कशु खोटु जोतो नथी. एवी गझलो गुजरातीमा लखाई पण छे मणिभाई नभुभाईनी 'निराशा ए ज छे आशा' (गुजरातनी गझलो पृ. ३३) गझलमा एवा प्रासो छे, जो के क्याक क्याक बहु निष्प्राण प्रासो छे, क्याक प्रासो नथी. अर्थात् गुजराती कवितामा गझलना मूळ सळग प्रासने बदले आवतो दरेक कडीनो स्वतत्र प्रास जाति-छदोना मेळने अनुकूळ होवाथी आपणे स्वीकारी लेवो जोईए. एक भाषानी कवितरीति बीजी भाषामा जता कईक फेरफारो अवश्य थाय, तेवो आ एक गुजरातीमां थयेलो फेरफार आपणे स्वीकारवो जोईए.

आपणे आगळ जोयु के गझलमा सळग भाव होतो नथी सळग भाव के कथन माटे रूबाई मुसद्दस के कताना प्रयोग थाय छे. आ विशिष्ट रचनाओ पण प्रासनी भंगीयो थता भिन्नभिन्न थयो छे. ते आपणे अहीं ज जोई लईए.

कतअ् नामना बंधमां पहेली त्रीजी टूको निष्प्रास होय छे, बीजी चोथी सप्रास होय छे. जेम के:

आ तो विख्यात छे बळवान बहादुर शूरा
जाते आझाद रही खोलता पयंशना बंद
रंगे, रूपे, कदे, शोभाए, मनोहरतामां
सअदीया रोशे अझल हुस्न बतुर्कां दादंद
"शार", शायरी भा. २, पृ. ७२

रुबाईमां पहेली बीजी अने चोथीमां एक ज प्रास होय छे त्रीजी प्रास बहारनी होय छे. जेमके:

हरगिज् बतर्क़ं शर्बते अवे न सूरम्
ता अज् कफ़े अन्दोह् गरावे न सूरम्
नाने न क़नम् बर नमके हेच कसी
ता अज् जिगरे लख्त कबावे न सूरम्.
हकीम खैयाम

मुसद्दसमां पहेली चार पंक्तिओ एक ज प्रासमां होय छे, अने ते पछी बे स्वतंत्र प्रासनी आवे छे. एम छ पंक्तिनो एक बंध थाय छे. मोटा मोटा कविओए इतिहासो आ बंधमां वर्णवेला छे. उदाहरण:

कदमने कियामतनी चाले उठावी,
पलकमां हजारो फसादो, जगावी
-फरत नैनथी नैनने को मिलावी,
उडावी गयो मुज हृदयने चुरावी
निराधार मुजने बनावी लुटारो,
थयो एक पळवारमां गुम ठगारो.
"वहशी" रादेरी

हवे आपणे अरबी-फारसी छंदोनी घटना जोईए छंदोना घटक अवयवो तरीके अमुक अमुक शब्दो, नक्की थयेला छे आ शब्दो बे प्रकारना छे; मूळ शब्दो जेने 'अर्कान' कहे छे ते, अने तेमांथी ऊपजेला शब्दो जेने 'फुरूआत' कहे छे ते मूळ शब्दो (१) फऊलुन् (२) फाइलुन् (३) मुस्तफ्इलुन् (४) मफाईलुन् (५) फाइलातुन् (६) मुतफाइलुन् (७) मुफाअलतुन् (८) मफ्ऊलातु ए प्रमाणे आठ छे आ शब्दो अमुक अमुक मापना अक्षरोना गुच्छोना संकेत तरीके स्वीकाराया छे. ए संकेतोने नीचे प्रमाणे

आपणा लगात्मक सकेतोमां उतारी शकाय. फऊलुन् = लगागा, फाइलुन् = गालगा, मुस्तफ्इलुन् = गागालगा, मफाईलुन् = लगागागा, फाइलातुन् = गालगागा, मुतफाइलुन् = ललगालगा, मुफाअलतुन् = लगाललगा, मफ्ऊलातु = गागागाल. फऊलुन् लगागा अने फाइलुन् गालगा स्पष्ट रीते पचकल छे, बाकी बधा सप्तकल छे. मुस्तफ्इलुन (गागालगा) अने मफाईलुन (लगागागा) उपरांत मुतफाइलुन (ललगालगा) अने मफाअलतुन् (लगाललगा) भिन्न शब्दो तरीके स्वीकाराया छे ए बतावे छे के आ शब्दो लगात्मक रूपना छे, तेमा मात्रामेळी परिवृत्ति शक्य होत तो पछीना बेनो पहेला बेमा ज समावेश थात. एटले एक मूळ सिद्धान्त तरीके आपणे फारसी गझलोना आ घटक अवयवोने लगात्मक मात्रामेळी संधिओ समजवा जोईए.

में आगळ कह्यु के आ अर्कानमांथी भिन्नभिन्न प्रक्रियाओथी नवा शब्दो सिद्ध करवामां आवे छे जेने फुरूआत कहे छे. आ प्रक्रियाओ 'जिहाफ'ना सामान्य नामथी ओळखाय छे. दाखला तरीके फऊलुन् शब्दमांथी नीचे प्रमाणे आठ शब्दो सिद्ध कराय छे: १ फऊल २. फऊल् ३. फअल् ४. फालुन् ५. फअ् ६. फाअ ७. फऊलान ८. फअूलान. आने 'रणपिंगल' विकृतगणो कहे छे, जे नाम हु पण स्वीकारी लउ छु. कोई कोई वार जुदा जुदा अर्कानमांथी एकनो एक विकृत गण सिद्ध करवामां आवे छे जेमके उपर आपेलो फअ् फाइलुन्मांथी पण सिद्ध करवामां आवे छे. 'रणपिंगले' बधा अर्कानमांथी कुल ११६ विकृतगणो सिद्ध थता बताव्या छे. आपणे ए बधा जाणवानी जरूर नथी. ए बधाय उर्दूमां वपराता पण नथी. आपणा प्रयोजन माटे अमुक गण विकृत गण छे अने ते अमुक मूळ शब्दमांथी सिद्ध थयो छे ते जाणवानी जरूर नथी. छंदना स्वरूपना निरूपणमां जे कांई गण के गणो वपराया होय तेनु लगात्मक रूप जाणीए ए ज जरूरनु छे.

. अरबो फारसी छंदोनुं एकम एक कडी के बेत छे, अने तेना स्वरूपनिरूपणमां आखी बेतनु स्वरूप निरूपाय छे. संस्कृत समवृत्तोनी पेठे तेना एक ज चरण के तूकनु स्वरूप निरूपातु नथी, पण बे तूकनु निरूपाय छे, अने तेनु कारण एवु जणाय छे के तेनी बीजी तूक कोई वार पहेलीथी भिन्न होय छे.

छंदोनुं सादामां सादु स्वरूप ते एक बेनमा उपर आपेला अर्कानना आठ, छ के त्रण आवर्तनोनु छे. सौथी वधारे प्रचलित रूप आठ आवर्तनोवाळु छे. एटले के एक तूक के पंक्तिमां एक शब्दना चार आवर्तनोवाळु छे. फारसी पिंगलना अर्कान उपरथी छंदोनां नामो पडेलां छे. उपर आठ अर्कान आप्यां

तेमांनां सातनां आवर्तनोथी सात छंदो बने छे. 'धाईरी'मांथी ज आ कोठो हुं उतारुं छुं. आ कोठामां आवर्तन संख्या ते एक पंक्तिनी समजवी.

	नाम	आवर्तन संख्या	अर्कानिनो शब्द
१	मुतक़ारिब	४	फऊलुन् (लगागा)
२	मुतदारिक	"	फाइलुन् (गालगा)
३	रजझ	"	मुस्तफ्इलुन् (गागालगा)
४	हझज	"	मफाईलुन् (लगागागा)
५	रमल	"	फाइलातुन् (गालगागा)
६	कामिल	"	मुतफाइलुन् (ललगालगा)
७	वाफिर	"	मुफाअलतुन् (लगाललगा)

आठमो शब्द मफ्ऊलात् (गागागाल) तेनां चार आवर्तनोनो कोई छंद बनतो नथी. गणोना मिश्रणमां मात्र ते वपराय छे. १लो मुतक़ारिब ते बराबर भुजंगी छे. बीजो मुतदारिक 'दलपत पिंगल'मां नोंधेलो स्रग्विणी छे. त्रीजो रजझ ते हरिगीतना दादालदाना गागालगा एवा लगात्मक रूपनो सप्तकल संधिनो छंद छे. ए पछीना बधाय, सप्तकल संधिना भिन्नभिन्न लगात्मक रूपोनां आवर्तनोवाळा छंदो छे. एक वात तरत ध्यानमां आवे छे के आपणी गुजराती भाषामां सप्तकल छंदो बहु ओछा छे, त्यारे फारसी अरबीमां सप्तकल छंदोनो ज विशेष करीने विकास छे. गुजराती गझलो घणीखरी आ सप्तकलोनी ज छे, जो के बीजा प्रकारो पण कोई कोई मळी आवे छे. मुतक़ारिबनी एक सुघड रचना पतीलनी आ नीचे दृष्टान्त तरीके उतारू छु:

नही आशना आशनाथी जुदो छे,
खुदानो न बंदो खुदाथी जुदो छे.
लडे जग आ ने करे हुक्म पेलो
सिपाही नही पेशवाथी जुदो छे.
भराया कटोरा शरावे शिराझी,
करे जेम गुर्बा करे तेम गाझी;
गुनो शाहनो ना गदाथी जुदो छे,
खुदानो न बंदो खुदाथी जुदो छे.

प्रास जरा वधारे जटिल छे, पण संधि फऊलुन् लगागा स्पष्ट छे. फाइलुन् गालगानी कोई गझल मारा ध्यानमां नथी. रजझना गुजरातीमांथी घणा दाखला मळी शकशे. रजझमां मुस्तफ्इलुनना एटले गागालगाना चार आवर्तनो आवे.

हूं जाउं छूं हूं जाउं छूं त्यां आवशो कोई नहीं
सो सो दिवाळी वाधता त्यां फावशो कोई नहीं.

बरावर गागालगागा चच्चार आवर्तनो छे गझलमां घणे सुधी बराबर आ लगात्मक संधि सचवाय छे कोई जगाए गुजरातीमां न सचवायो लागे, गुरुनी जगाए बे लघु लागे, पण त्यां घणुंखरुं उच्चारणफेर होय छे जेमके आ गझलमां ज आगळ :

आ चश्म दुरजे छे चडयुं आलम बधी नीहाळवा,
ते चश्म पर पाटो तमे वींटो हवे शक्शो नहीं

'आ चश्म दुर' एमां गागालगागा छेल्ला गानी जगाए 'दुर' छे पण त्यां बे लघु नथी, कारण के फारसी प्रमाण अहीं दुर् एवो उच्चार इष्ट छे एवी ज रीते 'ते चश्म पर'मां 'पर्' उच्चार छे, अने ए उच्चार गुजरातीना साधारण उच्चारणथी बहु दूर नथी, कारण के 'पर'नो अन्त्य 'अ' द्रुत बोलाय छे, अने श्री ठाकोर तो आने 'पर्' उच्चारी गुरु गणवाना मतना छे ए ज रीते 'शक्शो' उच्चार थाय छे अने एम बन्ने तूकमां लगात्मक उच्चारण सचवाय छ पण आ संधिवाळी बीजी अनेक गजलो जोतां एक गुरुनी जगाए बे लघुना दाखला मळी आवे छे 'ईश्कनो बंदो' गजलमां

तें एक टीपू लाल दुनिया वेचतां ना ना मळे.

'ते एक टी' 'पू लाल दुनि' एमां बीजा संधिमां संधिना छेल्ला गुरुनी जगाए 'दुनि' आवे छे एने बे लघु गण्या विना छूटको नथी अने 'प्रेमथी तुं शुं डरे'मां

दई घास पर रसभर अने एवुं थतां तूं शुं डरे?

एमां 'रसभर अने' एक संधिमां पांच लघु भेगा थई गया छे तेमां पहेला चार गागानी ज्गाए छे एम आपणा कविओ आ संधिओने हमेशा लगात्मक ज राखता नथी क्यांक क्यांक तेना मात्रामेळी रूपोथी चलावी ले छे अने संधिओ स्वरूपे मात्रामेळी छ एटले एने दोष गणी काढवो न जोईए अलबत्त एटलुं स्वीकारवुं जोईए के आवी छूट बहु लेतां गझलनुं मूळ सौन्दर्य ओछुं थया विना रहेतुं नथी 'शाईरी'मां कर्ताए आ छूटने वाजबी गणी छे आ रजझ छंदना ज दृष्टान्तमां 'समजू जने समजी जई अभिमानने वणसाडवो' ए डाह्याभाई घोळसाजीनी पंक्ति तेमणे स्वीकारी छ (शाईरी भा १, पृ २७) आमां 'सम', 'अभि' अने 'वण' त्रणेय लघु द्विको गुरुनी जगाए छे

आपणे फारसी उच्चारण विशे थोडो विचार कर्यो तो साथे साथे ए पण अही ज नोंधी लईए के ऊर्दूमा 'ए' अने 'ओ' ह्रस्व अने दीर्घ बन्ने छे. गुजरातीमा कविओ घणी जगाए ए बन्ने स्वरोने ह्रस्व पण प्रयोजे छे, अने आपणा उच्चारणमा ए वढगु जणातु नथी एटले गुजरातीमा पण छदनी आवश्यकता प्रमाणे ए बन्ने स्वरोने ह्रस्व के दीर्घ लई शकाय. गुजरातीमा तो गमे त्यारे ह्रस्वने दीर्घ अने दीर्घने ह्रस्व गणवानी छूट पण छे ज.

हवे हझज लईए. तेनो शब्द मफाईलुन् लगागागा छे जातिछंदोमा आ स्वरूपनो कोई छद नथी, जो के दालदादाना आदेश तरीके लदादादा आवे छे. पण गझलोमा लगागागाना आवर्तनोवाळी गझलो पुष्कळ रचाय छे. 'सरस्वतीचद्र'नी प्रसिद्ध गझल 'दिया छोडी, पितामाता' ए हझज छे. कलापीनी पहेली गझल 'फकीरी हाल' 'अये उल्फत्! अये बेगम' पण हझज छे. मणिलालनो प्रसिद्ध गजल 'कही लाखो निराशामा' पण आ ज छे. वधारे दाखलानी जरूर नथी.

रमल प्रकारनो शब्द फाइलातुन् गालगागा छे. एना चार पूर्ण आवर्तनोवाळी गुजरातीमा कोई गझल मन मळती नथी एटले 'शाईरी' भा. १मा तेना दृष्टान्त तरीके एक पंक्ति आपेली छे ते उतारु छु:

हु बहु हिम्मत धरी के मुज हृदयनी चोर तु छे.

आमा 'मत' अने 'मुज' एक गुरुनी जगाए आवे छे, एटलो तफावत रहे छे ते रहेज नोधु छु

आ पछी कामिल आवे छे जेमा मुतफाइलुन् ललगालगाना चार आवर्तनो आवे बराबर आ मापनी गझल मळवी मुश्किल छ कारणके आपणा लेखको गझलोनु लगात्मक रूप बराबर साचवता नथी, अने जरा मात्रामेळी परिवृत्तियो आनु दादालदा रूप थई जवानो सभव बहु प्रबळ छ पण 'शाईरी'ना कर्ताए बताव्या प्रमाण आवृत्तसधि अक्षरमेळ गीतक के मुनिशेखर छद बराबर आ ज मापनो छे दलपतरामनु दृष्टान्त बराबर बध बमी रहे छे:

सजि जो भरी सळगाव बदुक ताकि तोड निशान तू
शुभ ए कळा मुनिशेखरे शिखवेल ते ज समान तू.

मस्त कवि बालाशकरनी 'हरिप्रेमपचशी'नी पहेली गझलना नमूनानी पंक्ति उपर कहेल कामिल छे:

गई यक ब यक जो हवा पलट् ना तो दिलमें अपने करार यह

श्री उमाशंकर आ मूळ पंक्तिने नझीरनी ओळखावे छे. ते बराबर वाजिब छे. पण तेना नमूना पर लखायेली बालाशंकरनी पंक्तिओमां एनुं लयात्मक रूप सचवायुं नथी.

बलिहारि तारा अगनी चबेलिमा दीठी नही.

'बलिहारि ता' ए ललगालगा बराबर छे, पण पछीना संधिओ गागालगामां सरी पडे छे.

आ पछी छेल्लो प्रकार वाफिर, मुफाअलतुन् लगाललगाना चार आवर्तनोनो आवे. 'शाईरी'मां आनी पंक्ति मळती नथी. एटले एनुं दृष्टान्त हुं 'रणपिंगल'मांथी उतारूं छुं:

सदाचरणे सदा सुख छे, दुराचरणे नकी दुख छे;
रखावट राखवी ठिक छे, रखावट ए रडो रुख छे.

रणपिंगल भा. ३, पृ. ६१

गुजरातीमां शुद्ध स्वरूपनी आ गझल मळवी मुश्केल छे.

आ बधा छंदो आवृत्तसंधि छे. तेमनो मेळ संधिना आवर्तनोनो छे ए स्पष्ट छे. अने फारसी पिंगलना आ अर्कान मुख्य छे ए जोतां आटला उपरथी पण गझलोनो मेळ मात्रामेळो छे एवं कहेवामां कशुं साहस नथी. पण आ सिवायना फारसी छंदो पण मात्रामेळना धोरणे ज विस्तार पामे छे, एना पण पुष्कळ दाखला मळी रहे छे तेमांना केटलाक जोईए:

आपणे लगागाना चार आवर्तनोवाळो मुतक़ारिब जोई गया. ते पछी 'शाईरी'मां (२) मुतक़ारिब मकसूर छंद (१२ अक्षरी) आवे छे.

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल
लगागा लगागा लगागा लगाल

बराबर आ ज मापनो 'दलपतपिंगल'मां दोल छंद मळी आवे छे:

यथा याजको ते यथो धारि धीर,
यथी धोलमां के नदीनीर तीर.

अहीं अंत्य यति स्पष्ट रीते एक मात्रा जेटलो पडित थयो छे. ए पछी 'शाईरी'मां ११ अक्षरी (३) मुतक़ारिब आपेलो छे:

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फअल्
लगागा लगागा लगागा लगा

करूं याद तारी हमेशा खुदा
नथी कोइ तारा विना किब्रियां

अहीं छेल्लो सधि वळी वधारे खडित थाय छे तेनी अंत्य बे मात्रा अनक्षर बने छे. आ पछी दशाक्षर (४) मुतक रिब नीचे प्रमाणे आवे छे:

फअ्लुन् फऊलुन् फअ्लुन् फऊलुन्
गागा लगागा गागा लगागा
तुज् नामनी हू माळा जपू छू
पापो थकी हू तौबा करू छू.

पठन करता मालूम पडशे के अहीं गागालना आवर्तनो छे अने बीजा अने चोथा सधि, बन्नेनी अकेक मात्रा खडित थयेली छे.

गागाल गागा॰ गागाल गागा॰

विष्वकमाला के ग्राही अने आमा एटलो ज फेर छे के ग्राहीमा मात्र चोथा सधिनी ज एक मात्रा खडित थयेली छे. तेनो बीजो सधि अखड छे.

ग्राही: गागाल गागाल गागाल गागा॰

कदाच अहीं शका थाय के मूळ सधि लगागाने स्थाने बीजा ज सधि गागाल मूकीने छदनो मेळ दर्शाववो ए प्रामाणिक छे? खरु प्रमाण तो पठन छे, अने पठनमा जे थतुं होय ते दर्शाववु ते अप्रामाणिक होई शके नहीं पण खास तो ए कहेवानु छे के फारसी पिंगलनी परिभाषामा अेक ज नामना छदमा एम आखो सधि फरी जवाना घणा दृष्टान्तो छे आ पछीनो (५) मुतकारिब छद (१४ अक्षर) एवो छे

फअ्लुन् फाअफऊलुन् फअ्लुन् फाअफऊलुन्
गागा गालगागा गागा गाललगागा

आमा स्पष्ट रीते चतुष्कल सधिना गागा अने गालल रूपना कुल छ आवर्तनो छे. आथी ज कोई पण एक शब्दने आरंभे सधि गणी शकता नथी. शब्दो गोठवता पठनमाथी कोई जुदो ज सधि नीकळी आवे छे आमा पण फऊलुन् आवे छे एटले एने मुतकारिब कह्या छे पण छदनो मेळ ए पचकल फऊलुन्ने अवलबतो नथी एटले के कोई अमुक शब्दना नामनो छद ए ज शब्दना पिंगलसधिना आवर्तनोनो छे एम कही शकाय नहीं अने माटे ज आपणे माटे बधा फारसी नामो जाणवानी हु अगत्य जाती नथी. अदरनो मेळ

जोई लईए एटले बस. एक ११ अक्षरी (६) मुतक़ारिब बराबर दोधक छे।

फाअफऊल फऊल फऊलुन्
गाललगाल लगाल लग.गा
=गालल गालल गालल गागा

दृष्टान्तनी जरूर रहेती नथी. ११ अक्षरी (७) मुतक़ारिब असम छंद ते बराबर विध्वकमाला ज छे:

फअ्लुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन्
गागा लगागा लग.गा लगागा
=गागाल गागाल गागाल गागा॰

दृष्टान्तनी जरूर नथी. आ पछी (८) मुत्क़ारिब असम छंद (२० अक्षरी)।

फाअफऊलुन् फाअफऊलुन् फाअफऊलुन् फाअफऊलुन्
गालल गागा गालल गागा गालल गागा गालल गागा

आ दोधकनी बेवडी पंक्ति बराबर छे. (९) मुतक़ारिब असम छंद (२० अक्षरी, १६ शब्दो):

फऊलुन् फअल् फऊलुन् फअल् फऊलुन् फअल् फऊलुन् फअल्
लगागा लगा लगागा लगा लगागा लगा लगागा लगा

अही लगागालगा द्वैगेयीक अष्टमात्रिक संधिनां चार आवर्तनो छे अथवा दरेक सत्र संधि लगाने लगा—गगाने आखी रचनाने लग.गानां आवर्तननी गणी शकाय. ते पछी (१०) मुतकारिब २० अक्षरी लईए:

फअ्लुन् फऊलुन् फअ्लुन् फऊलुन् फअ्लुन् फऊलुन् फअ्लुन फऊलुन्
गागा लग.गा ग.गा लगागा गागा लगागा गागा लगागा

मेळनी दृष्टिए आ नीचे प्रमाणे थाय:

गागाल गागा॰ गागाल गागा॰ गागाल गागा॰ गागाल गागा॰
आगळ आ प्रकार आवी गयो छे एटले विशेष कहेवानी जरूर नथी.

(११) मुतक़ारिब मक्बूज़ २० अक्षरी:—

फऊल फअ्लुन् फऊल फअ्लुन् फऊल फअ्लुन् फऊल फअ्लुन्
लगाल गागा लगाल गागा लगाल ग.गा लगाल गागा

आ स्पष्ट रीते चतुष्कल संधिनां आवर्तनो छे. दृष्टान्तनुं पठन करतां ए विशेष स्पष्ट थशे.

न पूछ सहचर के हाल शा छे, विचित्र हुं पेच तावमां छुं
न चेन पामु न जीव जाये, मजब् तरहना अझाबमां छुं.

अर्कानमां कोई चतुष्कल शब्द नथी. वर्चे चतुष्कल रचनाओ आ रीते सिद्ध थाय छे.

(१२) मुतक़ारिब २२ अक्षरी

फाअ फऊल फऊल फऊल फऊल फऊल फऊल फअल्
गाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगा

मेळनी दृष्टिए आमां आवर्तनो गाललनां छे. नीचे प्रमाणे:-

गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा

अंत्य आठमा संधिना बे लघुओ अनक्षर रह्या छे.

हवे (१३) मुतक़ारिब १८ अक्षरी लईए:

फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफ़ऊलुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफ़ऊलुन्
गागा गागा गाललगागा गागा गागा गाललगागा

स्पष्ट रीते गागा अने गालल एम चतुष्कलना बे पर्यायोनां आवर्तनो छे. आ पछी (१४) मुतक़ारिब मुझाअफ् १८ अक्षरी लईए.

फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफ़ऊलुन् फाअफ़ऊलुन् फअ्लुन्
गागा गागा गागा गाललगागा गाललगागा गागा

मेळनी दृष्टिए:

गागा गागा गागा गालल गागा गालल गागा गागा.

हवे (१५) मुतक़ारिब १५ अक्षरी:

फअ्लुन् फअ्लुन फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्
गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गा

अंत्य आठमा संधिनो अंत्य गुरु अनक्षर छे.

हवे (१६) मुतदारिक १२ अक्षरी लईए:

फाइलुन् फाइलुन् फाइलुन् फाइलुन्
गालगा गालगा गालगा गालगा

मा आपणो स्रग्विणी ज छे.

(१७) मुतदारिक २४ अक्षरी

फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन्
ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

तोटकथी बेवडी लांबी एक पंक्ति छे.

(१८) मुतदारिक ८ अक्षरी:—

फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन्
गागा गागा गागा गागा

आवृत्तसंधि लगात्मक विद्युन्माला छे

(१९) मुतदारिक १२ अक्षरी ते उपरना संधिना छ आवर्तनोनो छे.

हवे (२०) हझज आवे छे. सोळ अक्षरी हझज आपणे जोई गया छीए. तेना विकारो लईए. तेमा प्रथम (२१) हझज १४ अक्षरी:

मफ्ऊल् मफाईल मफाईल फऊलुन्
गागाल लगागाल लगागाल लगागा

मेळनी दृष्टिए आनो नीचे प्रमाणे संधिविन्यास थाय:—

गा] गाललगा गाललगा गाललगा गा—

त्रिकल अने षट्कल संधिना आमा आवर्तनो छे. पहेलो गा निस्ताल छे अने पछी गाललगानो पहेलो मात्राथी षट्कल ताल शरू थाय छे. चोथा आवर्तनमा गा छे ते चार मात्रानो प्लुत छे, अने पछीनी पंक्तिना पहेला गा साथे मळी षट्कल रचे छे. उदाहरणनु पठन करता ए मालूम पडशे:

सो वार गुनह् गार खतावार तमारो—
पण लाख वखत् यार परस्तार तमारो—

कोई अर्कान्ना शब्दथी विकल्प के षट्कल रचना थती नथी, ते अर्कान उपरथी साधेला गणोथी थाय छे आ पछी लईए

(२२) हझज ११ अक्षरी —

मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
लगागागा लगागागा लगागा

त्रीजा सधिनी छेल्ली बे मात्रा अनक्षर छ. 'शाईरी'मा तेनु नीचे प्रमाणे दृष्टान्त छे :

मने तूं ओळखे छे झार छू हूं
महब्बतनी कथानो सार छू हू.

आ छदनी एक गझल गूजराती गझलिस्तानमा मळे छे.

पितानी फोजना साचा सिपाई
पिताना जगमाहे झूझनारा

गूजराती गझलिस्तान, पृ १६२

आ गझलमा आगळ जता रदीफ के क़ाफिया आगळ चलाव्यो नथी अने एक कडीमा स्वतत्र प्रास पण घणी जगाए नथी पछी (२३) हझज १२ अक्षरी लईए :

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईल
लगागागा लगागागा लगागाल

चोथो सधि लुप्त थयो छे अने त्रीजा सधिनी एक मात्रा खडित थई छे. हु मानु छु उपान्त्य गाने त्रण मात्रानो प्लुत करीने ए मेळवी लेवाय छे. दृष्टान्त :

न समजे प्रेमना जे मर्मने झार
महब्बतनो कहेवाये खतावार

(२४) हझज १६ अक्षरी

मफाइलुन् मफाइलुन् मफाइलुन् मफाइलुन्
लगालगा लगालगा लगालगा लगालगा

'शाईरी' कहे छे तेम आ बराबर नाराच छे दृष्टान्तनी जरूर नथी.

(२५) हझज अख्रब छद १४ अक्षरी —

मफ्ऊल मफाईलुन् मफ्ऊल मफाईलुन्
गागाल लगागागा गागाल लगागागा

पठनमा एनो मेळ नीचे प्रमाणे छे;

गा] गाललगा गागागा गाललगा गागा

पहेलो वे निस्ताल मात्रा गगा पछी षट्कलनां आवर्तनो चाले छे पंक्तिना अंते गागा आवे छे, ते पछीनी पंक्तिना निस्ताल गाने मेळवी एक षट्क बने छे आगळ आपी गयेल हझज १४ अक्षरीनो अने आनो मेळ एक ज छे. पठन माटे 'शायरी'नी बे पंक्तिओ उतारु छु:

हूं नैन थकी नैनो अयू यार मिलावीने
बरबाद थयो आजे सदबस्य गुमावीने

हुवे रजझना प्रकारो लईए. (२६) रजझ मत्वी १६ अक्षरी:

मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्तइलुन् मुफ्ताइलुन्
गाललगा गाललगा गाललगा गाललगा

'शाईरी'नु ज दृष्टान्त लईए:

झार तणा हाल थकी आप खबरदार नथी
चेन नथी ऊंघ नथी दर्द तणो पार नथी.

स्पष्ट रीते त्रिकलबद्ध षटकलोना आवर्तनो छे.

हवे (२७) रजझ १६ अक्षरी:

मुस्तफ्इलुन् मुस्तफ्इलुन् मुस्तफ्इलुन् मुस्तफ्इलुन्
गागालगा गागालगा गागालगा गागालगा

'शाईरी'ए नीचेनु दृष्टान्त आप्यु छे सप्तकलनां चार आवर्तनो छे दृष्टान्त:

काया कलेवर कारमू छे गदकीनो घाडवो
समजू जने समजी जई अभिमानने वणसाडवो

आ पछी 'शाईरी' (२८) रजझ मत्वी आपे छे आ पण सोळ अक्षरनो छे अने तेथी उपर आवेला रजझ मत्वीथी तेने जुदो बताववा तेओ तेने १६ अक्षरी बी कहे छे. न्यास:

मुफ्तइलुन् मफाइलुन् मुफ्तइलुन् मफाइलुन्
गाललगा लगालगा गाललगा लगालगा

दृष्टान्त: नीच मळे न ऊंचथी, पुन्य मळे न पापथी
खाक जुदी हवा-थकी तेज मळे न आपथी

हाफिझनी प्रसिद्ध गझल जेने सद्गत न्हानालाले 'अकबरशाह'मा उतारी छे ते आ संधिओनी छे:

मुत्रबें खुश्नवा बगो ताझें व ताझें नौ बनौ
बादयें दिलकुशा बजो ताझें व ताझें नौ बनौ
बरझें हयात कम् खुरी गर न मुदाम मय् खुरी
बादें बखुर् बयादें ऊ ताझें व ताझें नौ बनौ

स्पष्ट रीते निकलवद्ध पट्कलना आवर्तनो छे.

हवे रमल लईए. (२९) रमल सोळअक्षरी नीचे प्रमाणे छे:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन्

आने विषे वधारे कहेवानी जरूर नथी आ पछी जरा क्रमभग करीने ३०माने बदले ३१मो रमल मह्ज़ूफ पदर अक्षरी लउं छु:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
गालगागा गालगागा गालगागा गालगा

चोथा सधिनो अत्य गुरु अनक्षर थयो छे खरी रीते आ ज गुजरातीमा वधारे वपरायो छे. छोडी दीधेलो ३०मो रमल पदर अक्षरी हवे लउ छु:

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
गालगागा ललगागा ललगागा ललगा

आनु दृष्टान्त 'शाईरी'मा नीचे प्रमाणे आप्यु छे:

उन्मतो का न करे शोर सरजाम नथी
मुल् नथी बाग नथी रग नथी जाम नथी.

आ पछी ३२ रमल मज्तून १४ अक्षरी छे ते उपरना जेवो ज छे, फेर मात्र छेल्ला शब्दमा छे. उपरना ३०मानो अत्य शब्द ललगा छे, हवे आवे छे तेमा गागा छे:—

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फअ्लुन
गालगागा ललगागा ललगागा गागा

दृष्टान्तः याद तारी न कदी आह! विसारी दिलथी
बेवफा तें न करी कद्र अमारी दिलथी

आ छेल्ला बे प्रकारनी गजलनु पठन में साभळ्यु नथी. अने केवळ अक्षर-विन्यासथी कोई सधिना आवर्तनो असदिग्ध रीते प्रतीत थता नथी.

आ पछी आपेलो (३३) रमल मजनून १६ अक्षरी पण आने ज मळतो छे:

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलात
गालगागा ललगागा ललगागा ललगाल

दृष्टान्त: आह पर् आह करी आह वडे आग लगाय
पारसी आश तजी आप बळे नाम दिपाय.

आनुं पण पठन में सांभळ्यु नथी अने उपरना छंद करतां आने विशे विशेष कशुं चोकस रीते कही शकतो नथी. पण बधानो मेळ मने एक ज देखाय छे. आना अंत्य सधि करता उपरनानो अंत्य सधि वधारे खंडित छे एटलो ज फेर छे. आनी पछी (३४) रमल मक्गूर गोळ अक्षरी आवे छे, ए स्पष्ट रीते सप्तकलनां आवर्तनोनो छे. उत्थापनिका:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलात
गालगागा गालगागा गालगागा गालगाल
मूळ उत्पादिक् तणा अस्तित्वमा गुम् छे ह्यारा
कोण समजे कयुस लयलामा हतो कोनो निवास

(३५) रमल छंद ११ अक्षरी:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
गालगागा गालगागा गालगा

चोथु सप्तकल आखु लुप्त थयु छे अने त्रीजना छेल्ला सप्तकलनी बे मात्राओ पण खंडित थई छे. दृष्टान्त:

प्रेमपंथे जे मिटावे जातने
ते ज समजे प्रेम केरी वातने

(३६) रमल १२ अक्षरी'

फाइलातुन् फइलातुन् फइलात
गालगागा ललगागा ललगाल

दृष्टान्त: सत्य विण कोइ नथी नेक दिचार
साचने आंच नथी एक लगार

आ प्रकार पण में सांभळ्यो नथी. अने अक्षरन्यास उपरथी मने कोई सधिनां आवर्तनो प्रतीत थतां नथी.

(३७) रमल मजनून छद ११ अक्षरी

फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्,
गालगागा- ललगागा ललगा

दृष्टान्त: मूर्ख मानी न बनावो मुजने
पाठ जूठा न भणावो मुजने.

आ रचना उपरना जेवी छे, मात्र तेनी छेल्ली एक मात्रा खंडित थई छे. आनो पण मेळ हु बतावी शकतो नथी

(३८) रमल मश्कूल छंद १६ अक्षरी

फइलात फाइलातुन् फइलात फाइलातुन्
ललगाल गालगागा ललगाल गालगागा

दृष्टान्त समजी गयो हुवे हू परिणाम दिल्लगीनु
भरवा विना थशु ए नथि ठाम दिल्लगीनु

पठन उपरथी समजाशे के आनो मेळ नीचे प्रमाणे छे

लल, गाल गाल, गागा लल, गाल गाल, गागा
सम, जीग योह, वे हू परि, णाम दिल्ल, गीनु
मर, वावि नाथ, शू ए नथि, ठाम दिल्ल, गीनु —

पहेली बे मात्रा निस्ताल छे पछी गालगालरूपे एक षट्कल आवे छे पछी गागालल, आवी फरी गालगाल, आवी अंते गागा आवे छे जे पछीनी पंक्तिना ललने मेळवी लई षट्कल रचे छे सुंदर षट्कल रचना छे अने आपणी घणीखरी षट्कल रचनाओमा बने छे तेम तेनी पहेली बे मात्रा निस्ताल गया पछी तालबद्ध षट्कलो शरू थाय छे रमलनो मूळ शब्द सप्तकल छे, पण तेने राखीने बीजा विकारी शब्दो वडे थयली रचना त्रिकल षट्कलना मेळवाळी छे बीजे पण आवु आपणे जोयु छे

(३९) रमल १४ अक्षरी

फाइलात फाइलुन् फाइलात् फाइलुन्
गालगाल गालगा गालगाल गालगा

दृष्टान्त हू वहू विलाप कर् मन वहे सबूर कर्
प्रेम राहमा कदी धैर्यने न दूर कर्

दलपतरामनो समानिका छंद छे अने त्रिकल षट्कलनो मेळ छे प्लुतिचिह्न मूकता उत्थापनिका नीचे प्रमाण थाय

गाल गाल गाल गा ऽ गाल गाल गाल गा ऽ

(४०) रमल मह्‌ज़ूफ छंद १५ अक्षरी पहेला आ ज नामनो एक छंद आवी गयेलो छे तेथी आने Bनु चिह्न करेलु छे त्यास

फाइलात फाइलात फाइलात फाइलुन्
गालगाल गालगाल गालगाल गालगा

दृष्टान्त: रोज रोज राचिने रमो ज राग रंगमां
चामरो चलावि चित्त मोहि मोरचंगमां

दलपतरामना चामरनुं दृष्टान्त अही बेसी रहे छे. छेल्लो गा त्रण मात्रानो प्लुत छे, ए प्लुति गणता आमा गालनां आठ आवर्तनो छे.

आ पछी कामिल आवे छे. 'शाईरी' (४१) कामिल २० अक्षरी नीचे प्रमाणे आपे छे:

मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन्
ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा

में आगळ कह्युं तेम दलपतरामनो लगात्मक गीतक छंद बराबर आनुं दृष्टान्त बनी रहे छे.

आ पछी (४२) बसीत १४ अक्षरी आवे छे:

मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
गाललगा गालगा गाललगा गालगा

दृष्टान्त: वात मिलननी सनम् हाल नही तो नही.
आज नही तो नही काल नही तो नही.

स्पष्ट छे के अही पट्कलना आवर्तनो छे. विषम पट्कलो गाललगानां बनेलां छे. सम गालगाना बनेला छे ज्यां अंत्य गा त्रण मात्रानो प्लुत छे. गालगा ∪ ए रीते.

(४३) मुज़ारिअ् छंद १४ अक्षरी

मफ्ऊल फाइलातुन् मफ्ऊल फाइलातुन्
गागाल गालगागा गागाल गालगागा

दृष्टान्त: आनंदनो ज़मानो आनंदमय् हुवा छे
फस्ले बहार आवी चारे तरफ् घटा छे.

अही पट्कलोनां आवर्तनो थाय छे, नीचे प्रमाणे:

गा गालगाल गागागा गालगाल गागा

पहेलो गुरु निस्ताल छोडी आवर्तनो शरू थाय छे, अंत्य गागा पछीनी पंक्तिनो गुरु पकडी षट्कल बने छे आगळ आवी गयेल ३८मो रमल मश्कूल सोळ अक्षरी अने आ बन्नेमां मेळ एक ज छे. फेर मात्र एटलो ज छे के अही पहेलो निस्ताल गुरु छे तेनी जगाए रमलमा बे लघु आवे छे. पठन तद्दन एक सरखुं छे.

(४४) मुझारिअ् अख़्रब छंद १४ अक्षरी

मफ़ऊल फाइलात मफाईल फाइलुन्
गागाल गालगाल लगागाल गाल्गा

दृष्टान्त कामिल गणाय सर्व तहँ हर् कमालमा
तेनी मिसाल थँ न शके कोइ हालमा

आनो मेळ नीचे प्रमाणे छे

गा] गालगाल गाललगा गाल्गाल गा

अही पण पहेलो गुरु निस्ताल छे ते पछी पटक्लो शरू थाय छे अत्य गुरु चार मात्रानो प्लुत छे, जे पछीनी पक्तिना गुरु साथे मळी एक पट्क्ल रचे छे

(४५) मुझारिअ् छंद १५ अक्षरी

मफ़ऊल फाइलात मफाईल फाइलात
गागाल गालगाल ल्गागाल गालगाल

दृष्टान्त वारू हझार वार जोँ पामू हझार जीव
पर्वर्दिगार आप मने तू हझार जीव

सधिन्यास गा] गालगाल गाऽल्गा गालगाल गाल

उपर माफक ज पहेलो गुरु निस्ताल छे पछी पट्कलो शरू थाय छे छेल्लो गाल पठनमा गा ⌣ ल थई चार मात्रानो बने छे अने पछीनी पक्तिना गुरुने मेळवीने पट्कल बन छ

(४६) मुज्तस् छंद १६ अक्षरी

मफाइलुन् फअलातुन् मफाइलुन् फअलातुन्
ल्गाल्गा लल्गागा लगालगा लल्गागा

दृष्टात खरीद लाज करे छ सुजात ताज गुमावी
मझा मनावतोँ मूरख् क्जात ल्राज गुमावी

अही स्पष्ट छे के पट्कलोना आवर्तनो छे एकी स्थान लगालगा छे, बेकी स्थाने ललगागा

(४७) मुन्सरिह छंद १५ अक्षरी

मफ्तइलुन् फाइलुन् मफ्तइलुन् फाइलात
गालल्गा गालगा गाल्ल्गा गाल्गाल

दृष्टान्त ईदक तणी ल्हाय छे चेन मळ ना ल्गार

आ पण षट्कलो ज छे. एटलुं के बीजा षट्कलनी छेल्ली एक मात्रा अनक्षर रही छे.

(४८) सरीअ् छंद १२ अक्षरी :

मफ्तइलुन् मफ्तइलुन् फाइलात
गाललगा गाललगा गालगाल

दृष्टान्त : रंग नथी ढंग नथी ज्यां लगार
प्रेम नथी सार नथी त्यां लगार.

अही पण षट्कलो छे, चोथु अनक्षर रह्युं छे.

(४९) सरीअ् ११ अक्षरी :

मुफ्तइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
गाललगा गाललगा गालगा

दृष्टान्त : वायु हवे मौत तणो वाय छे
प्राण विना प्राण हवे जाय छे.

अही पण उपरनी पेठे त्रण षट्कलो छे, फेर एटलो ज के छेल्ला षट्कलनी अंत्य एक मात्रा अनक्षर रही छे.

(५०) खफीफ छंद १० अक्षरी

फाइलातुन् मफाइलुन् फअ्लुन्
गालगागा लगालगा गागा

दृष्टान्त : आग दिल्नी बुझाव तो जाणुं
दिल् थकी दिल्. लगाव तो जाणुं.

आ पण में साभळ्यो नथी अने एनो मेळ न्यासमां स्पष्ट थतो नथी.

'शाईरी'मां आ रीते कुल पचास छंदो आपेला छे. पण आमा बधा समछंदो ज छे, एटले के बेतनी बन्ने तूको एक सरखी ज छे. पण गझलोमां असम तूको पण होई शके छे. तेनु स्वरूप जोवा माटे हुं थोडा दाखला 'रणपिंगल'माथी लई नीचे उतारुं छुं :

३१२ बहरे मुत्कारिब मुसम्मन अरूज सालिम, जर्ब मकसूर.

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन्
फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल
लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगागा लगाल

दृष्टान्त तमारे तमारी भली रीति सा'वी
भले को लवाडी लवे लक्ष वात

अही बीजी तुकनो छेल्लो शब्द एक मात्रा जेटलो खडित थयो छे आ पछीना ३१३ मा छदमा ए ज प्रमाणे बीजी तुकनो छेल्लो शब्द फअल् एटले लगा बने छे, अर्थात् वळी एक मात्रा वधारे खडित थाय छे ते पछी ३१४ मा छदमा ए ज स्थाने मात्र फअ् गा आवे छे अर्थात् मूळ पचकल लगागा-नी जगाए मात्र एक गुरु ज रहे छे, त्रण मात्राओ कपाय छे ('रणपिंगल भाग ३ पृ ३००—३०२) एव ज विशेष दाखलो आपु छु ४०मा छदमा बन्ने पक्तिओ मुतफाइलुन् एटले ललगालगाना त्रण आवर्तनोनी छे ४१मा छदमा नीचे प्रमाणे छे

मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन्
मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् फइलातुन्
ललगालगा ललगालगा ललगालगा
ललगालगा ललगालगा ललगागा

दृष्टान्त प्रभुने भजो मळने तजो शुभता सजो,
ममता तजो दृढता सजो दृढबाबा

अर्थात् बीजी पक्तिना छेल्ला सप्तकलनी एक मात्रा खडित थई ४२मा छदमा बीजी पक्तिनो छेल्लो शब्द फइलुन् ललगा बने छे अर्थात् सप्तकलनी त्रण मात्राओ अनक्षर बनी बाकी चार मात्राओ रही (एजन, पृ ६०–६२) आटला दाखला बस थश गुजरातीमा आ प्रकारना छदो बहु विरल छे

आ सव दाखला उपरथी जणाश के फारसी छदो के गझलोनो मेळ जातिछदोनो मेळ छ अने तेनो न्यास मूळ लगात्मक छ, जो के गुजरातीमा तेनु लगात्मक रूप शिथिल थर छ 'शाईरी'ना छदोमा थोडानो मेळ बतावी शकतो नथी पण तेनु कारण तेनु पठन हु जाणतो नथी ते छे पण ते छदोने पण पासे पासे मूकी सरखावी जोता ते जातिछदो होय एवु निगमन स्पष्ट बने छे हु नीचे ए बधान पासे पासे मूकी बतावु छु

(३०) फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
(३२) फाइलातुन् फइलातुन फइलातुन् फअलुन्
(३३) फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलात
(३६) फाइलातुन् फइलातुन् फइलात
(३७) फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
(५०) फाइलातुन् मफाइलुन् फअलुन्

३०, ३२, ३३, ३६, ३७ ए बधामा पहेलो शब्द गालगागा सप्तकल छे. बीजो ललगागा षट्कल छे ३०, ३२, ३३ मा त्रीजो पण ललगागा छे ए त्रण रचनाओमा, चोथा संधिमा जे त्रण रूपो आवे छे, फइलात ललगाल फइलुन् ललगा अने फअ्लुन् गागा, एमां पहेलामाथी बीजु एक मात्रा खंडित थईने थयेलु छे, अने फअ्लुन् ए ललगानो ज पर्याय छे ३६-३७ ५० मा ए ज त्रण रूप त्रीजा शब्द तरीके अते आवे छे ५० मा फइलातुन्ने बदले आवतो मफाइलुन् ललगागाने बदले लगालगा छे, अर्थात् रूपान्तर ज छे एटले आमां मेळ बतावी शकतो नथी छता आमा थता फेरफारो जातिछदोना ज लाक्षणिक फेरफारो छे एमा शका नथी अर्थात् आपणे कही शकीए के फारसी छदो लगात्मक रूपना संधिवाळा जातिछदो छे अने गुजरातीमा एना संधिओमा लगात्मक रूप शिथिल बने छे

अते आपणे थोडी गुजराती गझलो लई तेनु स्वरूप अने तेमा आवतु शैथिल्य के फेरफारो जोई जईए तेने माटे हु दी व कृष्णलाल झवेरी सपादित 'गुजराती गझलो' पसद करु छु एक एक गझलनो न्यास हु लगात्मक रूपमा आपतो जईश

१ अहा पूरी, खीँली चदा,
लगा गागा, लगा गागा
शीँतळ मधुरी, छे सुख सदा,
लगा गागा, लगा गागा

२ बलिहारीँ ता,रा अगनी, चबेलीँमा, दीठी नही,[1]
गागा ल गा गागालगा गागालगा गागालगा

पण गुजराती गझलोमा घणांय आ मूळ शब्द पण गझलनी वचमा फरी जाय छे जेमके आ गझलमा

बागमा अनुरागमा के पुष्पना मेदानमा
गालगा गा गाल गा गा गालगा गा गालगा

---

१ सदगत बालाशकरे आ गयलनी राह "गइ यक् बयक जोँ हवा पल्टद्, नाँ तोँ दिलमें मे, रेँ करार है" ए पंक्ति आपी छ फारसी लघुगुरु जोता ए पंक्ति मुतफाइलुन् (ललगालगा)ना आवर्तनोनी छे बालाशकरनी कवितामां पहेलो संधि 'बलिहारिता' ए प्रमाणे छ पण पछीना संधिओ ए प्रमाणे नथी एटले के कर्ताए ललगालगा अने गागालगा वच्चे भद मान्यो नथी एम प्रतीत थाय छ

आमा गालगागाना त्रण आवर्तनो पछी अंते गालगा आवे छे. आवु घणी वार बने छे फारसी गझलोना नियमो प्रमाणे आ दोष गणाय पण आमा फेरफार थईने पण संधि सप्तकल ज रहे छे ए रीते जातिछंदना स्वरूपने ए फेरफार हानि करतो नथी, अने तेथी गुजरातीमा एने अपनावी शकाय. ते साथे ए पण कहेवु जोईए के एक ज पंक्तिमा एक ज संधिमा भिन्नभिन्न लगात्मक रूपोनु मिश्रण नथी ज थतु एम नथी गाललगा अने ललगागाना मिश्रणोवाळी घणी पंक्तिओ मळशे तेवी ज सप्तकलना मिश्रणवाळी पंक्तिओ पण छे दाखला तरीके 'रणपिंगल' भा ३ ना ३४५ मा छंदनु स्वरूप नीचे प्रमाणे छे:

३४५ मुस्तफ्इलुन् फाइलातुन् मुस्तफ्इलुन्
गागा लगा गालगागा गागालगा अने

३४६ फाइलातुन् मफाईलुन् फाइलातुन्
गालगागा लगागागा गालगागा

आमा मिश्रणो छे पण एक वार पहेली पंक्तिमा के मेळमा जे स्वरूप नक्की कर्यु ते पछीथी बदलावी शकातु नथी पण गुजरातीमा मेळवाळु रूप आपणे बदल्याना केटलाक दाखला छे, अने ते जातिमेळने हानि करता नथी, ए तरीके आपणे तेनु समर्थन करी शकीए

३ आ गझलमाथी दाखला माटे सरल बेत पाचमी लउ छु:

करु, गान, गोरु, वान, घु ंघट, मा न, राखि, ए
गा गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा
पुर, वार, करू, प्यार, निगह्, दार, खबर् ले
गा गाल लगा गाल गाल गाल गाल गा

अही क्याक गाल अने क्याक तेनो पर्याय लगा आवे छे तेने उपर कह्यु तेम दोष न गणवो जोईए

४ कोई पण बेत बरावर बेसती नथी पण आखी गझलमा रदीफ 'छे हरी हरी' गाल गाल गा छे, एटले ए त्रिकलना ज आवर्तनो गझलमा छे एम हु मानु छु एम लेता पंक्तिनु पठन नीचे प्रमाणे करवु जोईए

आज झाखी थैकेँ यारनीँ छेह् रीह् री
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा
मात आखड़ीँ जादु गारियेँ छेह् रीह् री
लगा गाल गाल गाल गाल गाल गा

अने तेम छता कोई पंक्ति संतोषकारक जणाती नथी

५. अहि बेवदर् दुनियातणी दरबार महि हुममस्तने
लल गालगा ललगालगा ललगाल गा ललगालगा

पण आगळ जता ललगालगानी जगाए गागालगा क्याक आवे छे.

माशूक तारी बेवदर मरीं ईदमनी एाराइयी
गागाल गागा गालगा लल गालगा गागालगा

वगेरे.

६ जिगरनो मा,र जूदो तो, बघो सता,र जूदो छे
लगा गा गाल गागा, गा लगा गागाल गागा गा

७. मधुर मधुरी, आखडोनीं क,टाक्ष ते क्यम, वीसरे
गाल गागा गालगागा गाल गा गा गालगा

पण चोथी पंक्ति:

दरियाइ मो,जे रड्वड्यो, हु दु ख तो क्यम वीसरे
गागाल गा गा गा ल गा गा गाल गा गागा लगा

सघि गागालगा थाय छे अने तेना पूरा चार आवर्तनो थाय छे

८ वस् द, ईद, गाळ, कहीं दा, कइक, मर्म, वाणीं, मा
वात, हुक्म, भा व, रीस, मां र न, अर्ज, दार, लगाड्

गाल के लगाना आवर्तनो छे पहेली पंक्तिमा छेल्ला आवर्तननी जगाए एक गुरु ज मात्र छे बीजी पंक्तिमा पूरा आठ आवर्तनो छे ए रीते असम पंक्तिवाळी बेत छे

९ अगर ते मा, र शीराझी, महारु म,न मेळावे
लगा भा गा ल गागागा लगा गा गा लगागागा

१० हृदय, कोष, माहीं, प्रेम, रत्न, लावीं, नेध, यूं
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा
साम, पंण म,यूं त,ने अ,मूल्य, में र,ळी र,ळी
लगा गाल गा लगा ल गाल गा ल गा ल गा

पण अदर घणी पंक्तिमा अनियमितता आवे छे

११ उडो नादा,न मा बुलबुल, रहो गुल्झा, रमा ना ना
लगा गागा लगा गा गा लगा गागाल गा गा गा

१२ दिल द्यु दिल ला,च्या पछी खें, चें तु द्यु लो, जाइने
गा ल गा गा गा लगा गा गा ल गा गा गालगा

१३. कहीं लाखो, निराशामां, अमर आशा, छुपाई छे
लगा गागा लगागागा लगा गागा लगागा गा

१४. आसुडां मा, रां लुवे ए, मूरती को, कोण छे
गालगा गा गा लगा गा गालगा गा, गाल गा

१५. अहा हूं ए, कलो दुनिया, बियाबामां, सूँनो भटकूं,
लगा गा गा लगा गा गा लगागागा लगा गागा

१६. कही तूं जा,य छे दोरी, दगाबाजी, करी किस्मत्
लगा गा गा

१७. खतम् अय् द, र्ददिल थै जा, न तारुं को,इ छे अहिं यां,
लगा गागा लगा गा गा ल गागा गाल गा गा गा

१८. छेल्ली कडी

चाक, दिल् बे, हाल, आ म,णीतुं, आय, ना वि, घे
गाल, गा ल गाल गा ल गाल गाल गा ल गा
अहाँ स, नम् ह, वे भ, लाँ दिल्, मा म, कान, देन, दे
गा ल गा ल गा ल ल गा गा ल गाल गाल गा

घणी पंक्तिओ अनियमित छे उपरनी छेल्ली कडी सरलमां सरल छे. अने मेळ ए प्रमाणे जणाय छे.

१९. २०. दिधां छोडी, पितामाता, तजी व्हाली, गुणो दारा
लगा गागा

२१. कटायेलू, अने बूठू, घसीने ती,क्ष्ण तें कीधू
लगागागा

२२. अरेरे ऊ, डतू खजर्, दिले झूटी, हुलाव्यू में
लगागा गा

२३. अरे ते बा,गमा तु पर, नझर में फक्,त कीधी ती,
लगा गा गा

२४. हू जाउं छू, हू जाउ छू, त्या आवशो, कोई नही
गा गाल गा

२५. तूं यार क्या, दुश्मन् कयो, जाणू नही
गा गाल गा, गागा लगा गागा लगा
त्रण ज आवर्तनोवाळी पक्ति छे.

२६. साकी जे शरा, व मने दिधो, दिलदारने, दीधो नही
ल ल गा लगा, ल लगा लगा, ललगालगा, गागा लगा

आखा काव्यमा ललगालगा सळंग सचवातु नथी. गागालगा आवी जाय छे.

२७. पेदा थयो, छू ढूढवा, तू ने सनम्
गागा लगा, गा गालगा, गा गा लगा

त्रण ज आवर्तनो.

२८. आ आतशे, तापे तपे,लो हूं बळे,लो बावरो,
गा गालगा

२९. ज्या ज्या नजर्, मारी ठरे, यादी भरी, त्या आपनी
गा गा लगा

माशुकोना, गालनी ला, ली मही ला, ली अने
गालगागा गालगा गा, गा लगा गा, गा लगा

एम सधिओ बदलाय पण छे.

३०. अमे जोगी
लगा गागा

३१. जो इश्कना, तो शू खुदा
गा गालगा गा गा लगा

३२. चोगानमा आलम तणा
गागालगा गागा लगा

३३. मिट्टी हतो ते आपनो
गागा लगा गा गालगा

३४. थावयो तमारी राहमा
गागा लगा गा गालगा

३५. आवू कहो क्या अेकलो
गागा लगा गा गालगा

३६. फकीरीमा सखीरीमें
लगा गागा लगागागा

३७. सदा मन मस्,त तू मां रहे
लगा गागा ल गागा गा

३८. बन्यो हू प्रे,मनो बंदो
लगा गागा लगागागा

३९. अरे जा शू अवाये नहि
लगा गा गा लगागा गा

४० वगर तू हा,र हैयाना
लगागागा लगागागा

४१. वगर हू ना,इ भावे नहि
लगागागाल गागा गा

४२. मिठा हसवा मही सच्चाइ
लगा गागा लगा गा गा

४३ जग छो गमे ते कहो तने
गा गा लगा गा गा लगा

४४. निगाह् तुजनी, अरे!
लगा गा गा

४५. कतल् आशक्नें करवाने
लगा गा गा ल गागागा

४६. अहा शा आज वर्षावे
लगा गा गाल गागागा

४७. तने हूं जोउं छूं चंदा
लगा गागा लगा गागा

४८. नव सूँ,झे उ,पाय, कँ डोँ,लाय, मारि, किस्ती
गा ल गाल गाल गा ल गाल गाल गागा

*

अन्य दशा जोइ डरत
गाल लगा गाल लगा
धिमे धिमे गती करत्
लगा लगा लगा लगा

क्यांक क्यांक उच्चारमां छूट लेवी पडे छे. पण छंदनु माळखुं आ ज छे.

४९. देंवें दी,धि दया, करि के,वि मने,
लल गा ल लगा ललगा ल लगा
अहों मू,र्ति मनो,हर मा, शुकनी
लल गा ल लगा लल गा ललगा

५०. शरद पू,नमनी, रढिया,ळि सदा
ल ल गा ललगा ललगा ल लगा
मनें सा,भरें आ,पणि रा,त सखी[२]
ल ल गा लल गा लल गा ललगा

५१. क्यां छे मजा
गा गा लगा

५२. अ]खड एक धार अजब् को वही रही
ल]गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा
खु]लीसु, दाइ, त्याजु दाइ को न ही रही
ल]गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा

५३. ताँरों धा, पर धा, मनें मा,रि रह्या
लल गा लल गा लल गा ल लगा

५४. खूब् करी जो, इल्मनी सो,दागरी हा,जी गयो;
गा लगा गा गालगा गा गालगा गा गा लगा

---

२. न. ४९ अने ५० तथा कविश्री न्हानालालनी 'एक ज्वाला जले तुज नेननमें' ए त्रणेय गझलो एक ज छंदनी छे.

५५. मोरा पा,पें ओं अं,तर मे,लु थयुं,
लल गा ल ल गालल गा ल लगा

५६. कदी तलवारनी धमकी
लगा गागा लगा गा गा

५७. आनो न्यास बे रीते थई शके छे.
दुर दिलथी, सहु ससा,र करू के, न करूं
लल गागा, लल गागा, ललगागा, ललगा
हृदें मां आ, पनुं आगा, र करू के, न करू
लल गागा, लल गागा, ललगागा, ल लगा
तमें कहशो, कें जफा मा,रीं वफाने, बदले
लल गागा, ल लगा गा, ल लगागा, ललगा
कहों नेअयु, सनं म्हू प्या,र करू के, न करू
लल गागा, लल गागा ल लगागा, ललगा

कोई कोई कीटी जरा जुदी रीते पण बेसी शके छे.
हृदे, मांआ, पनु, आंगा, रक रू के, न करू
लगा लगा लगा लगा ललगा गा ललगा
कहो, नें अयु, सनम्, हू प्या, र करू के, न करूं
लगा लगा लगा लगा ललगागा ललगा

पण बीजी बधी ए प्रमाणे बेसी शकती नथी. बन्ने पद्धतिमां अनियमितता तो मळे छे ज.

५८. आखोथीं व्हे छें, धारा तो,य जिगर् बळे छे
गा]गाल गाल, गागा गा,गाल गा ल गागा

५९. बीजी कडी:
इश्के शरा, बीनी मजा, जोवा हवे, तैयार छूं
गागा लगा गागा-लगा गागा लगा गागाल गा

६०. तज्यों में राह्
लगा गा गा

६१. यूं मजा फकि,रीथि ढांको, गर् न मुलडू, आपनु
गा लगा गा गाल गागा गा ल गागा, गालगा

६२. खुदाएँ पाय खोलियु न सीव आज रात्
लगा ल गाल गा लगा लगा ल गा ल गा ल

६३. नयी उल्फत्, तमारी पा,स पण् नफ्रत्, सों छे के नें,
लगा गागा, लगागागा, ल गा गागा, ल गा गा गा

६४. अमारा ला,स च्हानारा
लगागा गा, ल गागागा

६५. लपाई प्रेमनी
लगागागा

६६. लख्यूं तें प,त्रमां प्यारा
लगा गा गा

६७. आ प्रेम ए,वी वस्तु छे
गा गाल गा गा गालगा

६८. शब्द, सनम्, आप,शे ? पु,छूं स,नम् जि,वाडशे ?
गाल लगा गाल गा ल गा ल गा ल गाल गा
दिल्थि, दिल् द,बाव,शे तुं, गोद,मां सु,वाडशे
गाल गाल गाल गा ल गाल गा लगालगा

६९. यारों कोइ छे, दर पर अही, हाझर विरा,दर मा नही
ल ल गालगा, लल गा लगा, गा गा लगा, लल गा लगा

अर्थात् गागालगाने ज संधि गणवो जोईए. ललगालगा सळंग चालतो नथी.

७०. जनम्ना जो,गिया छईए
लगागागा लगागागा

७१. गा गा तुं ब,वंत दम् बदम्
गा गा लगा, गा गा लगा

७२. प्रभू परख्या, हृदे जेणे
लगा गा गा, लगा गागा

७३. कहूं हूं यूं
लगा गा गा

७४. व्ययाओ, जोबननी, अदा थइ, गई
लगागा लगागा लगा गा लगा

७५. रंगो वसंतना छे, मुज दागदार दिल्मां
गा]गा लगालगागा गा गालगाल गागा

७६. संताइ रहे,शो क्यां सुधी
गागाल गा, गा गा लगा

७७. विश्व व्यापी, छे छतां सं, ताय छे
गाल गा गा गा लगा गा,गालगा

७८. देह रूपे, चेतनाना, हाथमां
'गालगागा, गालगागा, गालगा

७९. जतां मदफन, तरफ धरथी
लगा गागा लगा गा गा

८०. हता जे वा,फिझाळाओ, मही साथे, थनारा
लगा गा गा ल गागागा लगा गागा, लगागा

अंत्य सप्तकलनी बे मात्राओ अनक्षर रही.

८१. नहीं आ,वना आ,शनायी, जुदो छे
लगा गा,लगा गा,लगा गा, लगा गा

८२. दयानी दृ,ष्टि मारा पर
लगागागा लगागागा

८३ छो]रग ए ज,गत्नो ज्या,रे हवा फरे छे
गा]गाल गा ल, गागा गा,गाल गालगागा

८४. मने आ गझल वेसती नथी.

८५ वा]च्चेथि, प्रेम,-रूप,नाँ पर्, दा उ,ठावीं जा
गा]गाल गाल गाल ल गा, गाल गाल गा

८६. अनुभवयी, वधू मळशे
लगागागा लगागागा

८७ प्रणय लगनी
लगा गागा

८८. अन्य माटे खून आपि जे अहीँयि जाय छे
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

८९. नवू जीवन, बनावा चा,ह
लगा गागा लगागा गा

'गूजराती गझलिस्तानमा'थी बे त्रण नोंधवा जेवा प्रकारो लउ छुः
गझल १४६मी पृ. १४१

परवा नहो, को दाद या, फिरियाद ना, सूणे
गागा लगा गागालगा गागाल गा, गागा
जालिम जहा,थी काम हू, बेकारने, धू, छे
गागा लगा, गा गालगा, गागालगा, गा गा

छेल्ला सधिनी अत्य त्रण मात्रा अनक्षर थई छे.

गझल १७३मी पृ. १६२

पितानी फो,जना साचा, सिपाई
लगागा गा,लगा गागा, लगागा

गझल २१८ पृ. २११

सुदा सौ, खल्कुना पण, अकीलो, तमारो छु
लगा गा लगा गा गा, लगागा, लगागा गा
तमारे, घणा जण पण, प्रथम तु, अमारो छु
लगागा लगा गा गा, लगा गा, लगागा गा

प्रथम लगागागानो अंत्य गा चार मात्रानो थई आखु सप्तकल बने छे. आ एक ज दाखलो एवो छे जेमा प्रथम सधिनी मात्रा अनक्षर बने छे एटले आ गझल सगीत अने देशीना प्रकारना पडे छे आ उपरात हु कान्तनी एक गझल नीचे उतारू छु.

गान विमान

सखी ए दूर मानराना मने रापना मासे :
हवे धाव्यो, बनी लाचा,र पत्रलना, वासे !

गझलनी रीते आखी गझलमा काफिया साळग चाले छे एटले ए गझल छे एमा शका नथी. तेनो सधिन्यास नीचे प्रमाणे छे :

लगागागा, लगागागा, लगागागा, गागा

मने श्री ज ए सजाणए कहेलु के फारसी पिंगलमा आवी कोई गझलनो उल्लेख नथी फारसी गझलमा एमना शब्दने हु प्रमाण मानु छु—अने ए सिवाय पण एमनु पिंगलनु ज्ञान घणु ऊडु अने विस्तृत छे, एटले हु स्वीकारु छु के फारसी पिंगलमा आ छद नथी. तेम छता आनो न्यास जोता आ गझल मेळनी दृष्टिए निर्दोष छे, पठन करता मने सुन्दर जणाई छे तेना छेल्ला सप्तकलनी त्रण मात्रा खडित थई छे उपर 'गझलिस्तान'नी १४६मी गझल उतारी छे तेमा पण छेल्ला सप्तकलनी त्रण मात्रा खडित थई छे. छता बेना पठनमा एक सूक्ष्म भेद छे 'गझलिस्तान'नी गझलनु सप्तकल गागालगा छे, अने तेनी अत्य त्रण मात्रा ऊडी जता गागा रहे छे, तेमा अत्य गुरु प्लुत बने छे प्लुति, सधिने अने पक्तिने अते आवे छे उपर कान्तनी गझलमा, ए अत्य लगागागा सप्तकलनी आदिनो एक अने अतनी बे एम मळीने त्रण मात्रा खडित थाय छे तेथी आगला सप्तकलना गुरुने त्रण मात्रानो प्लुत करवो पडे छे. आ भगीथी गझलना पठनमा एक सुन्दर चमत्कार आवे छे. खडित मात्रा मूकता न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

लगागागा, लगागागा, लगागागा ⌣ गागा —

आथी उपान्त्य सप्तकलनो अत्य अक्षर गुरु होय ए इष्ट छे.

कलापीए पण आ ज मापनी गझल लखी छे जे कान्तनी असरनी ज जणाय छे :

दिलनी वात :

दिले कँ वा,त छूपेली, सखी तूथी, कहेवी !
हृदय अर्प्यूँ, जुदाई त्या, सखी राखे, केवी !

अने कवि न्हानालालनी गझल

भरेला विश्वमा आ दिल,ना सिंहासन्, खाली

अकबरशाह, अ २, पृ ५४

ए पण आ ज मापनी छे, अने संभव छे के एमणे पण कान्तनी गझलना नमूना उपर ज आ लखी होय

उपर में बने तेटला दृष्टान्तो लीधा छे, एटला माटे के गुजराती गझलनो आखो झोक स्पष्ट थाय उपरना दृष्टान्तोमाथी स्पष्ट थयु हशे के घणाखरा दृष्टान्तो सप्तकलना ज छे अने गझलो पण सप्तकलनी ज ओछामा ओछा दोषवाळी छे सप्तकल सिवायनी घणीखरी गझलो बहु ज अनियमिततावाळी छे, जो के एम होवानु कशु कारण नथी — सिवाय के ते प्रकार उपरनु अप्रभुत्व अथवा ते प्रकारना स्वरूपना अस्पष्ट अने शिथिल सस्कारो

उपरना दृष्टान्तोथी ए पण स्पष्ट थयु हशे के गझलोए गुजरातीमा पोतानी रीते प्रगति विकास के फेरफार कर्या छे गझलनी वस्तुनी बाबतमा तो फेरफार थया ज छे, पण तेना बाह्य कलेवरमा पण थया छे गझलना रदीफ काफिया घणाखराए पाळ्या नथी घणा गझललेखको ए जाणता पण नही होय पण में आगळ कह्यु तेम जातिछद तरीके एमा प्रास पळाय तो बस छे वळी गझलना मापमा जे शब्दो अपाय छे ते लगात्मक रूपना छे, तेने बदले गुजरातीमा तेना जात्यात्मक सधिओ ज वपराय छे ए पण महत्त्वनो फेरफार छे अने तेथी जे गुजराती गझलोना मापो आप्या छे तेमा दरेकने मूळ शास्त्रगत-माप साथे मेळववानो प्रयत्न कर्यो नथी कारणके लगात्मक रूप छोड्या पछी एम करवामा झाझो अर्थ रहेतो नथी एटले में तेनो जात्यात्मक मेळ बतावीने ज सतोष मान्यो छे वळी फारसी भाषानी खासियतने लीधे फारसी पारिभाषिक शब्दना बीबामा गुजराती शब्द मूकवो ए पण भाषा पर एक प्रकारनो अत्याचार छे, जो के क्याक क्याक में मात्रा गणवी सहेली पडे माटे एम करेलु छे

आ प्रकरण बध करता फारसी पिंगलना, हु जेने मेळ कहु छु तेवा, मेळना अभ्यास माटे मने नीचेना प्रश्नो विचारवा जेवा जणाय छे ते तरफ अंगुलिनिर्देश करु छु

(१) फारसी पिंगलना लगात्मक पारिभाषिक शब्दोनु स्वरूप केटले अशे अरबी फारसी भाषाने आभारी छे?

(२) गझलोमा पंक्तिनी अंदर यति एटले जातिछंदोमा आवती शब्दान्त यति जेवु कई छे के नहीं? होय तो क्या क्या?

(३) 'शाईरी'नी प्रस्तावनामा लेखके एक कोयडो मूक्यो छे जेने हु नीचेना शब्दोमा मूकु :

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल्

अने ए ज लगात्मक रूप आपता

फऊलुन् मफाईलु मुस्ताफ्इलान्

ए बन्ने न्यासमा एक ज -लघुगुरुक्रम छे, तो बन्नेमा फेर शो? मने मारी रीते काम करता नीचेनो प्रश्न थयेलो

आखोथि व्हे छ धारा तो ये जिगर् बळे छे
गा गा ल गा ल गागा गा गा लगा लगागा

आने माटे

मफ्ऊल फाइलातुन् मफ्ऊल फाइलातुन्

एम थई शके अने

मुस्तफ्इलुन् फऊलुन् मुस्तफ्इलुन् फऊलुन्

एम पण थई शके फारसी पिंगलनी दृष्टिए बन्ने चाले? बन्ने न चाले तो बेमायी एक ज पंक्ति पसद करवानु कारण शु? 'शाईरी'मा पहेली मफ्ऊल० आपी छे—बीजी नथी आपी

४ अने आ प्रश्न पण विचारवानो रहे छे गझलोमाथी रदीफ काफिया छोडी दईए, तेना सघिनु लगात्मक रूप छोडी दईए, कडीएकडीए बदलाता भावोने बदले सळग निरूपण लावीए, तो पछी सामान्य जाति-छदमां—कहो के हरिगीतमा अने दादालदानी गझलमा फेर शो रह्यो? गझलनी लाक्षणिकता शी? दरेक बेने वाक्य पूरु थवु जोईए एने गझलनु लक्षण कही शकाय? अथवा एक प्रकारनी मस्ती के बेपरवाना भावने लक्षण कही शकाय?

आ प्रश्नोनी चर्चा मारा पुस्तकनी योजनामा आवती नथी मारा पुस्तकने अगे मारे एटलु ज बतावबानु छे के गुजरातीमां आवेली गझलनो मेळ जात्यात्मक छे मूळ मेळमा सधिओ लगात्मक हता ते गुजरातीमा शिथिल बनेला छे उपरना प्रश्नो फारसी पिंगलरचनाओना विशिष्ट प्रश्नो छे, जे तरफ तद्विदोनु मात्र ध्यान दोरु छु

१२

संख्यामेळ छंदो अने अनुष्टुप : मेळनी दृष्टिए

आ प्रकारने संख्यामेळनु नाम एटला माटे आप्यु छे के आ छंदोना स्वरूपमा अमुक अक्षरसंख्या आववी जोईए एटलु ज सामान्य रीते आवश्यक गणाय छे. लघुगुरु विशे अनियम प्रवर्ते छे. गुजरातीमां आ प्रकारना बे छंदो छे, घनाक्षरी अने मनहर. कवित ए एमनु सामान्य नाम छे आपणे प्रथम दलपतरामे आपेलां बन्नेना परपरागत लक्षणो जोईए :

१२२. घनाक्षरी छंद अक्षर — ३२

चरण चरण मध्य, चरण बत्रीस वसे,
विश्राम विश्राम ठाम अक्षर ज्या आठ आठ;
घणो तो आनदकंद, छद ते घनाक्षरी छे,
एम छदशृगार पिंगळमा लखेल पाठ;
अते गुरु लघु आण, मा तो जोड लघु जाण,
विश्वपतिने वखाण, ठरावीने ठीक ठाठ;
चारे चरणोमा वर्ण, एकसो अठ्ठावीस छे,
अर्ध छदमा तो चार उपर शोभीत साठ. २३६

द. पि पृ. ६५

आना स्वरूप विशे सौथी पहेला ए जोवानु के लखवामा आनी आठ पक्तिओ थाय छे पण वास्तविक रीते ए चार चरणोनो ज छद छे. चरणो जातिओनी पेठे प्रासबद्ध छे, ए प्रास सळग छे एटलु विशेष छे, अने तेथी चारेय चरणो स्पष्ट देखाई आवशे चरण लाबु बत्रीस अक्षरनु होवाथी सोळ सोळ अक्षरनी पक्ति सामान्य रीते लखाय छे आखा छदमा ए रीते १२८ अक्षरो थाय दलपतराम कहे छे के आठ आठ अक्षरे विराम एटले यति आवे अने अते प्रास आवे. लघुगुरुनो कोई नियम नथी. आगळ कहे छे के अते गुरु लघु आवे अने उपरना दृष्टान्तमा तेम छे. पण ते उपरात दलपतराम जोड लघु — बे लघु पण मूकवानो विकल्प बतावे छे उपरना दृष्टान्तमा तेम तेनी पछी आवता दृष्टान्तमा पण दलपतरामे जोड लघु आपेला नथी. पण आ आखो संख्यामेळ प्रकार मूळ हिंदीमाथी गुजरातीमा

ऊतरी आव्यो छे, अने हिंदीमा ते खूब खेडायो छे, तेमा चरणान्ते बे लघुवाळो प्रकार मळी आवे छे हु दृष्टान्त खातर उतारु छु:

भरत सदाही पूजें पादुका जो सनेम
इते राम सीय बधु सहित सिधारे वन।
सूपनखा के कुरूप मारे खलझुड घने
हरी दससीस सीता राधव विकल मन।
मिले हनुमान त्यो सुकठ सो मिताई ठानि
बाली हति दीनो राज्य सुग्रीवहि जानि जन।
रसिक बिहारी केसरी कुमार सिधु लाधि -
लक जारि सीय सुधि लायो मोद बाढो तन।

छन्द प्रभाकर, पृ २१८

'छन्द प्रभाकर'मा तो घनाक्षरीमा अते लघुगुरु आव्यानो पण दाखलो छे ते उतारवानी जरूर जोनो नथी दलपतरामे आठ आठ अक्षरे यति कही छे पण 'छन्द प्रभाकर' सोळ सोळ वर्णे यति कहे छे "सोलह सोलह वर्णोंके विश्राम से ३२ वर्ण होते हैं।" (एजन) पण एक बीजी आवी ज बत्रीशी रचनाने 'छन्द:प्रभाकर' आठ आठ अक्षरे यतिवाळी गणे छे (जुओ ८ विजया (३२ वर्ण) पृ. २२०) आ पछी मनहर लईए प्रथम दलपतरामनु लक्षण जोईए.

मनहर छद अक्षर ३१

अक्षर जो एकत्रीश, धारी धारीने धरीश,
सीमाडे गुरु सर्जीस, ते पदे तमामने,
आवे वर्ण आठ आठ, पठना पवित्र पाठ,
करावी विश्राम ठाठ, ठीक गणी ठामने,
गुरु लघु गणितथी, नियम ते मध्य नथी,
शीखीने सजो मुखथी हैये राखी हामने,
सारो छद सुखधाम, नक्की मनहर नाम,
रची दल्पतराम, करो शुभ कामने २३४

आमा चरणान्त प्रास उपरान्त दरेक पहेला त्रण यतिखडोमा सळग आतर प्रास छे जे शोभानो छे, छन्दनु अग नथी उपरनी घनाक्षरी रचना साथे सरखावता आमा फेर एटलो ज छे के आमा बत्रीसने बदले एकत्रीस अक्षरनु चरण थाय छे, अने चरणने अते गुरु आवे छे बाकी बन्नेमा आठ अक्षरे यति कहेली छे मनहरमा

अंत्य गुरुनी आवश्यकता सिवाय आ छंदमां गुरुलघुनो कशो ज नियम नथी एम कहेलुं छे अने ए लक्षण घनाक्षरी अने मनहर बन्नेनु छे. दलपतराम अक्षर-संख्या प्रमाणे छदोना क्रम राखे छे एटले एमना पिंगलमा मनहर पहेलो आव्यो त्या एमणे ए लक्षण कह्यु, ते पछीथी आवता घनाक्षरीमा पण समजी लेवानुं. दलपतरामे तालना स्थानो कह्या नथी, पण बन्नेमा पहेला अक्षरथी शरू करी पछी चार चार अक्षरे ताल मूक्यो छे, एटले चार चार अक्षरे ताल छे एम समजवानु. ए स्थिति उपरथी आपणे कही शकीए के आ आवृत्तसंधि मेळवाळो छद छे, अने तेनो सधि चतुरक्षर छे. आमा जे यति कही छे तेमा आपणे दलपतराम अने 'छन्द प्रभाकर' वच्चे तो फरक दीठो, पण के. ह. ध्रुवे, पोते नवा प्रयोजेला वनवेली छदना स्वरूपनी चर्चा करतां आमा यति आवश्यक नथी एम बतावेल छे आपणे एमनु वक्तव्य सविस्तर जोईए :

"कवित सरखा मापना चार चरणनो अक्षरबंध छे. ते घनाक्षरी अने मनहरनी सामान्य संज्ञा छे. घनाक्षरी छदना चरणमां चतुरक्षर सधिना आठ आवर्तन आवे छे. छेल्लो एटले के आठमो सधि त्रण अक्षरनो लेवाथी मनहर छदनु चरण नीपजे छे. आथी घनाक्षरीने बत्रीसू अने मनहरने एकत्रीसू कवित कहेवु प्राप्त छे. छेल्ला संधिमां एक अक्षरनी न्यूनताने लीधे एकत्रीसू कवित अंते गुरु मात्रा ले छे. बीजा छदोनी माफक कवित प्रासबद्ध छे. तेना प्रत्येक चरणने अंते यति एटले विराम छे. चरणनी अदर आठमे, सोळमे अने चोवीसमे अक्षरे यति छे के नहि, तेनो निर्णय नीचेनां कवि दलपतरामना कवितो ज करी आपशे.

घनाक्षरी

पाई पाई प्रेमपान प्रथम तें पुष्ट कर्यो;
पछी पीडा पमाडी वियोगपान पाई पाई.
धाई धाई भेटवाने आवतो हू तारे धाम;
धीरे रही सामो ऊठी आवतो तू धाई धाई.
गाई गाई गीत तने रीझवतो रूडी रीते;
गुजारू छू दिवस हु हवे दुःख गाई गाई.
'भाई, भाई' कहीने बोलावतो तू भाव धरी;
भलो मित्रतानो भाव भजव्यो तें, भाई भाई!

(टीप) प्रस्तुत घनाक्षरी कवित 'फार्बस विरह'माथी आप्यू छे.

मनहर

भूतळना लोके एम ममे इन्द्रभुवनमा
जने जुदी जुदी भेट भावथी धरावी छे
ग्रीके तो ईसपनीति, आरबे नाईट, इग–
लीशे शेक्सपीयरनी पोथी परठावी छे.
हिंदुओए होश धरी पचतत्र तणी पोथी
धरी ते तो इद्रने अधिक भली भावी छे.
कहे दलपतराम, बीजा सौनी वध करी
हिंदुओने हमेशनी पागडी वधावी छे

(टीप) प्रस्तुत मनहर कवित 'दलपतकाव्य'ना 'फार्बसविलास'माथी लीधु छे

प्रथम उदाहरणमा पहेला चरणना चोवीसमा अक्षरे अने चोथा चरणना आठमा अक्षरे विराम लेता 'विजोग' अने 'बोलावतो' पदना कडका थई जाय छे, अर्थात् त्या यति इष्ट नथी तेवी ज रीते द्वितीय उदाहरणमा बीजा चरणना सोळमा अक्षरे विराम लेता 'इग्लीश'—ना कडका थाय छे; एटले त्या पण यति घटती नथी एकत्रीसा बत्रीसा कवितमा बे सधिए यति भणी वार मूकेली जोयामा आवे छे, ते आतर प्रासनी पेठें शोभा सारू ज छे . ." (साहित्य अने विवेचन भाग १ पृ ११४–१५)

उपरना दृष्टान्तो अने तेना स्वरूपनी चर्चामाथी नीचेना लक्षणो प्रतीत थाय छे कवितना बने प्रकारो अमुक सधिना अमुक सख्याना आवर्तनोथी थयेला छे कवितना अत्य सधिनो अत तरफनो भाग लगात्मक रूप ले छे घनाक्षरी पूरी बत्रीसी रचना छे, अने तेना अत्य सधि खडित थई तेमाथी मनहर थयेलो छे तेमा सामान्य रूपे आठ आठ अक्षरे यति कहेली छे, पण पिंगलकार दलपतरामे पोते ए यति पाळी नथी आ बधा लक्षणो जातिओना विशेष लक्षणो छे फरक मात्र ए छे के जातिओना सधिओ अमुक सख्यानी मात्राना होय छे त्यारे कवितना सधिओमा मात्रानी नियत सख्या नथी पण अक्षरनी नियत सख्या छे के ह ध्रुव कहे छे तेम ते चार अक्षरनो बनेलो — चतुरक्षर सधि छे

आ प्रमाणे अक्षरनी सख्याथी कवितनु माप थतु होवाथी परपराना पिंगलकारो तेने अक्षरमेळमा मूके छे दलपतरामे तेने अक्षरमेळमा मूकेलो छे. 'छन्द प्रभाकरे' तेने वर्णमेळमा मूक्यो छे पण यावीना बधा ज लक्षणो तेना जातिमेळना छे अक्षरमेळनु एटले वृत्तोनु मुख्य लक्षण ए छे के एमा सधि-

ओनु आवर्तन होतु नथी अने त्या लघुगुरुनो क्रम स्थिर होय छे कवितमा सधिआनु आवर्तन छे अने लघुगुरुनो नियम नथी लक्षणोनु महत्त्व जोता आ प्रकार वृत्तो करता जातिआने विशेष मळतो छे

आ प्रकारना छदोनु पठन जोता मने ए जाति ज जणाय छे आमा लघु-गुरुनो क्रम नथी ए साचु पण अही दरेक अक्षर बे मात्रानो पठाय छे, अने एम थईने एनो सधि नियत सख्यानी मात्रानो एटले आठ मात्रानो थई रहे छे घनाक्षरीना अत्य सधिनो एक अक्षर खडित थता त्या गुरु आवश्यक बने छे तेनु कारण पण ए गुरु प्लुत थई खडित अक्षरनी बे मात्रा पूरी शके ए छे मने बराबर याद छे के हु गुजराती शाळाना नीचला धोरणोमा भणतो त्यारे अमने महनरनु पठन दरेक अक्षर बे मात्रानो थाय ए रीते ज शीखवता अने ए अमने बहु चटाळा भरेलु लागतु दाखला तरीके अमने नानपणमा नीचेनी पक्तिओमा

गमे तेम रमे कोई समे मन भमे त्यारे
दया तजी दमे प्राणीने परोवी शूळमा

'ग मे ते म र मे' ए दरेक अक्षर एक सरखो लाबो बे मात्रानो बोलावता' 'छन्दोरचना'ना कर्ता पटवर्धन पण आ प्रकार विशे आ ज कहे छे ते आ रचनाप्रकारने छन्द एवु पारिभाषिक नाम आपे छे, अने अभग ओवी घनाक्षरीने ए वर्गमा मूके छे "मराठीतील अभङ्ग, ओवी, घनाक्षरी[१] इत्यादि-काची रचना छान्दस आहे" (छ र पृ ५१४) अने ए रचनाना मात्रामाप विशे कहे छे "छन्दांत प्रत्येक अक्षर, मग ते दिसायला ऱ्हस्व असलें तरी गुरु उच्चारायचें आणि गुरुच समजायचें असतें सारीच अक्षरें गुरु म्हणजे द्विमात्रक मानायची हा छन्दाचा मूलभूत नियम असल्यामूळे छन्दातील पद्य-गण हा चार अक्षराचाच असतो ऱ्हस्व अक्षरच नाही म्हणून ऱ्हगक्रमाचा प्रश्नच उद्भवत नाही म्हणून छन्दाला ऱ्हगत्वभेदातीत अक्षरसख्याक पद्य म्हणतात" (छ र पृ ५१२–१३) भावार्थके छन्दमा प्रत्येक अक्षर, पछी ते देखवामा ऱ्हस्व होय तो पण, गुरु उच्चारवानो अने गुरु ज समजवानो छे बधा ज अक्षरो गुरु एटले बे मात्राना मानवानो आ छन्दोनो मूळभूत

१ भाट चारणो आ छद ए ज रीते नथी पठता तेओ अर्थ प्रमाणे टुकडा करी अनुकूळ पडे तेवी रीते, एटला टुकडामा आवता ऱ्हस्वने लीधे खूटती मात्राओ एक बे वधारे गुरुआने लगाडी आठ बे चार बे मोळ अक्षरामा बमणी मात्राओ करी ले छे एम पठता छदनु पठन स्वाभाविक अने छटादार थाय छे

२ महाराष्ट्री पिंगळोए आपेला घनाक्षरीना लक्षण माटे जुओ परिशिष्ट

नियम होवाथी छंदोमां पद्यगण (अष्टकलसंधि) चार अक्षरोनो ज छे. लघु अक्षर ज नथी एटले लगत्रमनो प्रश्न ज उद्भवतो नथी. अर्थात् छन्द एटले लगत्वभेदथी अतीत अक्षरसंख्यानु पद.

आ रीते मवित सपूर्ण जातिछंद थई रहे छे. ते चतुरक्षर संधिओना आवर्तनोनो बनेलो छे, अने तेमां सामान्य रीते दरेक चतुरक्षर सधि आठ मात्रानो थाय छे. आ आठ मात्रा दरेक अक्षरने बे मात्रानो बोलीने करीए, के अर्थने अनुकूल रहीने, आठ के चार के सोळ अक्षरना खंडमां, लघु बोलाता अक्षरो जेटली मात्राओ तेमा आवता गुरुओमां उमेरीने बोलीए, एम गमे ते रीते करी शकीए. आ प्रमाणे होवाथी मवितनो उत्थापनिका जाति-छंदो जेटली चोकस रीते नही आपी शकीए. छता बहु ज सादा रूपमां नीचे प्रमाणे आपी शकीए:

घनाक्षरी	दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';
	दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';
मनहर	दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';
	दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा गा —;

अही दरेक दा माटे अकेक अक्षर लघु के गुरु आवे छे एटलु विशेष लक्षण समजवानु.

कविश्री खबरदारे आ रचनामा थोडो फेर करी एक नवो छद उपजाव्यो छे तेने तेमणे मुक्तधारा कह्यो छे आमा मनहर करता एटलो ज फरक छे के मनहरनो अंत्य सधि जे त्र्यक्षर छे तेने तेमणे वधारे खडित करी द्वयक्षर कर्यो छे अने ते हमेशा गाल रूपमा आववो जोईए अने आ लघु ते अस्वरित अ ज होवो जोईए एम ठरावेल छे आ दरेक प्रक्रिया जाति-छंदमा आवी गयेली आपणने परिचित प्रक्रिया छे. अत्य सधिनो खडनव्यापार ए तो परिचित छे, अने सत्तावीसा चोपायामा अत्य सधि गाल बने छे ते पण परिचित छे अने दोहराना अत्य सधि गालमा अते अकार आवे छे ए पण आपणे सर्वत्र जोयेलु छे. विशेष शु, आ छद डिंगलमा वपराई गयो छे ते आपणे डिंगलना प्रकरणमा जोई गया (गत पृ. ५०८) आ सिवाय तेओ ताल विशे केटलुक कहे छे ते आपणे बधा छदो विशे अन्यन चर्चवाना छीए त्या चर्चीशु. अही तेनु एक दृष्टान्त बस थशे. कलिकानी प्रस्तावनामां २३० मी कडी तेमणे छदना दृष्टान्त तरीके उतारी छे ते ज लईए.

नवीन वि। चारने हु। लावतो को। कवि जेम
मळामा वी। टातो तेने। देवा अव। तार,
कल्पनाना। वादळोमा। ऊडतो ते। भूमी वळी
वीजळी शी। कविताने। शावी लावे। व्हार,
प्रिया, मारा। प्रेमने हु। एमज हु। लावतो आ
आशामा वी। टातो तारा। गातो गुण। गान
नवनवा। तरंगोना। रंगोने ऊ। डावी जगे
मोंघा तारा। सौंदर्यनी। करावु पि। छान

आमा निशानीओ खबरदारे आप्या प्रमाणे कायम राखी छे तेमा ऊभी लीटी तालनी छे ते दलपतरामना ताल प्रमाणे ज छे ते स्पष्ट छे अक्षर नीचे लीटी करी छे ते खबरदार जेना उच्चारणने 'शान्त' कहे छे तेवो 'अ' छे उपर कह्यु तेम एनी चर्चा हु आगळ उपर करवानो छु

आ कवितने मळतो एक छन्द बंगाळीमा छे जेने पयार कहे छे तेमा दरेक पक्तिमा चौद अक्षर आवे छे अने आठमे यति आवी पक्तिना ८+६ अक्षरोना भाग पडे छे प्रवाही पयारमा कविओ इच्छा मुजब ४, ६, ८ के १० अक्षरे यति मूके छे (सक्षिप्त भापाप्रकाश बागला व्याकरण–सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय, पृ ३५७–९) पयार छद व पक्तिए पूरो थाय छे अर्थात् अही दरेक पक्तिमा चतुरक्षर सधिओना त्रण आवर्तनो थाय अने चोथो सधि खडित थई त्या मात्र बे अक्षर ज रहे आ छद आपणा कविओ क्वचित् वापरे छे श्री उमाशकरना 'आतिथ्य'मायी थोडी पक्तिओ मूकु छु ए काव्य सद्गत रवीन्द्रनाथना एक काव्यना मूळ छदमाथी ज अनुवाद छे एटले दृष्टान्त तरीके ए खास औचित्य धरावे छे

वलिष्ठोने चरणे ना चित्त मारु झूके,
बल आपो दीनने ना हीन गणी मूके

वीर्य आपो, चित्तने हु जेथी शयु राखी
नित्य तणी तुच्छतार्था ऊचे ने एवाकी
वीर्य आपो, चरणे तमारे नामी गिर,
अहर्निश पोताने हु राखी शयु स्थिर

'बल आपो, नाथ!' 'आतिथ्य, पृ ४२

श्री उमाशकरे ८मा अक्षरे यतिनो नियम ५मी पक्तिमा पाळ्यो नथी. आपणा कविनोमा आवा नियमो नथी आ छदो वधारे खेडाता एना मेळनी झीणवटना नियम स्पष्ट थई शके

'छन्दोरचना' घनाक्षरी साथे अभगने गणावे छे अभग मूळ मराठी रचना छे, पण ते घणा वरसोथी गुजरातीमा प्रवेश पामी छे तेने प्रथम गुजरातीमा लावनार भोळानाथ साराभाई छे, जेमणे प्रार्थनाना केटलाक भजनो अभगमा रच्या छे गुजरातमा प्रार्थनासमाज स्थापायो ते पहेला मुबईमा ते स्थपायेलो अने मुबईमा अभगो गवाना एने लीधे ए छद प्रार्थनाओमा आव्यो एम हु मानु छु प्रथम गुजरातीमा जे अभग ऊतरी आव्यो छे तेना स्वरूप विशे अत्यार सुधीमा शु कहेवायु छे ते जोईए 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमा के ह ध्रुव कहे छे

"अपभ्रश काळना उत्तर भागमा ज्यारथी अर्वाचीन साहित्यनो आरभ लेखी शकाय, तेवामा अक्षरबध पुनरुज्जीवित थाय छे ए रचनाना अर्वाचीन वृत्तो आवृत्त सधिना छे आवर्ती अक्षरबध खेडवानु मान हिंदीने अने मराठीने छे ए रचनामा त्रण प्रकारना सधि अत्यारसुधीमा वपराटमा आव्या छे, एकाक्षर, द्व्यक्षर ने चतुरक्षर नीचेना अभगमा पहेला बे सधिना उदाहरण छे —

अभग

पापवासनाओ थाय ज्यारे क्षय,
पामशे उदय पुण्य वृत्ति अभगमाळा

अहि पहेला त्रण चरणो द्व्यक्षर सधिनी त्रण आवृत्तिना बनेला छे छेल्ला चरणमा एकाक्षर सधिनी चार आवृत्ति छे प्रत्येक सधिना आरभमा जोर पडे छे" (साहित्य अने विवेचन भा २ पृ ३००) आगळ जता आ ज अभगने अनुलक्षीने तेओ कहे छे, "अही प्रत्येक चरणनो उपान्त्य अक्षर प्लुत छे" पछी उमेरे छे, "प्लुत उच्चारणनो काळ सगीतमा त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे" (एजन, पृ ३०६)

के ह ध्रुव कहे छे के प्लुत उच्चारणनो काळ सगीतमा त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे पण सगीतमा तो एथी वधारे मात्राना प्लुतो पण आवे छे

अने मात्राना मेळ माटे तो मात्रानी संख्या कोईक रीते मेळवी आपवी जोईए. तेमानु कशु अहीं कर्युं नथी, अने शास्त्रना प्रमाणथी जाणे के निर्णयने आखरी बनाव्या छे. आपणे कवितनी मात्राओ नक्की करी जेम तेनु स्वरूप नक्की कर्यु तेम आनु पण करवु जोईए.

उपर आपणे जनु दृष्टान्त आप्यु ते अभगना पहेला त्रण चरणो छ छ अक्षरोना छे, चोथु चरण चार अक्षरोनु छे. आ प्रकारने 'वृत्तदर्पण'कार मोटो अभग कहे छे. तेनी प्रासरचना उपरथी ते तेना पेटा प्रकारो पाडी बतावे छे ए पण जोवा जेवा छे.

अभग तुकारामाचे

काय वाणू आता ।। नपुरे ही वाणी ।। मस्तक चरणी ।। ठेवीयेला ।।१।।
थोरीव साडिली ।। आपुली परिसें ।। धन्य केले कैसें ।। लोखडासी ।।२।।

बे दृष्टान्तो बस थशे. आमा बीजा चरणनो त्रीजा साथे प्रास छे. पहेलु अने छेल्लु प्रासमुक्त छे. घणा अभगोमा प्रास मात्र अत्याक्षरनो ज होय छे, उपान्त्य स्वर सुधी जतो होतो नथी.

हवे प्रासनी बीजी पद्धतिवाळा अभगो जोईए.

अभग तुकारामाचे

पढरीस जावें ।। जीवन्मुक्त व्हावें ।। केशवा भेटावें ।। जीवलगा ।।१।।
जन हे सुखाचे ।। दिल्या घतल्याचे ।। बा अतकाळीचें ।। नाही कोणी ।।२।।

अहीं अजनीनी पेठे सरखी अत्याना अक्षरवाळा त्रण चरणो सळग प्रासवाळा छे, चोथु छूटु छे.

हवे 'वृत्तदर्पण'कारना नाना अभगो[१] जोईए. ए सबधी ते कहे छे: नाना अभगने बे चरणो होय छे. तेमाना प्रत्येक चरणने आठ आठ अक्षरो होय छे. क्वचित् पहेला चरणने छ अक्षरो होय छे. बन्ने चरणोमा प्रास होय छे. हवे उदाहरणो जोईए.

अभग तुकारामाचे

जरी व्हावा तुज देव ।। तरी सुलभ उपाव ।। १ ।।
करी मस्तक ठेंगणा ।। लागें सताच्या चरणा ।। २ ।।
भावें गावें गीत ।। शुद्ध करोनियां चित्त ।। ३ ।।
तुका म्हणे फार ।। थोडा करी उपकार ।। ४ ।।

एक बीजु आ नाना अभगनु ज दृष्टान्त जोईए.

---

१ अभगना अनेक प्रकारो माटे आ प्रकरणनु परिशिष्ट जुओ.

अभंग तुकारामाचे

देवा पायी नाही भाव ।। भक्ति वरी वरी वाव ।।
समर्पिला नाही जीव ।। जाणावा हा व्यभिचार ।। १ ।।

वृत्तदर्पण पृ ४२, ४३

आ उपरथी जणाशे के आठ आठ अक्षरना चरणवाळा पण अभंगो हता

पठनमा आ अष्टाक्षर अभंगो कवितना जेवा ज जणाय छे अर्थात् तेना पठनमा दरेक अक्षर बब्बे मात्रानो बने छे तेमा अर्थ प्रमाणे टुकडा करी लघुनु लघु पठन करी कोई पासेना गुरुमा मात्रा मेळववानु बनव नथी वळी एनु चरण एटलु टूकु छे के तेना अर्थ प्रमाणे टुकडा पण न पडी शके. आ रीते आ अभंग पण चतुरक्षर संधिना बब्बे आवर्तनोना चरणवाळो थई रहे छे, अने तेना दरेक संधिनो अकेक अक्षर बब्बे मात्रानो बने छे अर्थात् ए चतुरक्षर संधि अष्टमात्रक बनी रहे छे एनी उत्थापनिका बहु ज सादी थाय

दादा दादा, दादा दादा,
दादा दादा, दादा दादा,

एम आ अष्टाक्षर चरणवाळो अभंग दादाना आवर्तनानो होय छे संगीत-प्रधान होवाथी तेना अष्टकल संधिओ पण बताव्या छे आ अभंगने ज हु मूळ प्रकृतिभूत संपूर्ण अखडित अभंग मानु छु

आपणे सौथी पहेलो उतारलो अभंग, आनो संधिओ खडित थई बनेलो छे पठनगानमा ए एम ज बोलाय छे

पाप वासना – ओ –
थाय ज्यारे क्ष – य –
पामश उ द – य –
पु – ण्य – वृ – त्ति –

के हु भुवे आना स्वरूप विशे जे कहेवु छे, तेनु चोक्स रूप उपरनी उत्थापनिकामा मळी रहे छे उपरनो ज अभंग आपी तेओ कहे छे "अहिं पहेला त्रण चरणो द्व्यक्षर संधिनी त्रण आवृत्तिना बनेलां छे छेल्ला चरणमा एकाक्षर संधिनी चार आवृत्ति छे प्रत्येक संधिना आरंभमा जोर पडे छे" वळी आगळ जता कहे छे "अहिं प्रत्येक चरणनो उपान्त्य अक्षर प्लुत छे प्लुत उच्चारणनो काळ संगीतमा त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे"

(साहित्य अने विवेचन भा २ पृ ३०० अने ते पछी ३०६) पहेला त्रण चरणोना प्रारभमा बब्बे अक्षरे एक दादा सधि थतो होवाथी त्या द्वयक्षर सधि छे एम कह्यु ते दरेकना आदिमा दादानो ताल पडे छे ए देखीतु छे चोथा चरणमा दरेक अक्षर चतुष्कल सधिनी मात्रा पूरे छे एटले स्वाभाविक रीते छुट्टो बोलाय छे एटले त्या एकाक्षर सधि कह्यो पहेली त्रण पक्तिओमा उपान्त्य अक्षर चार मात्रानो बने छे एटले एने प्लुत कह्यो — जो के सगीतशास्त्रनो आश्रय लई तेने ३ मात्रानो कह्यो जे खोटु छे अने ए पक्तिओमा अत्य अक्षर पण चार मात्रानो प्लुत छे ए वात, ए अक्षर अत्य होवाथी चरणान्त ललकार गणी के गमे तेम गणी तद्दन छोडी दीधी बर्वे पण अभगना आ बन्ने प्रकारो — अभग मोटो अने नानो बन्ने आपे छे, अने में उपर बतावी ते प्रमाणे ज अक्षर मात्रानी व्यवस्था करे छे षडक्षर चरणवाळा अभगमा पहेला चार अक्षरोनी दरेकनी जेटली मात्रा गणे छे, तेना करता बमणी मात्रा पाचमा छट्ठानी गणे छे अत्य चतुरक्षर चरणमाना दरेक अक्षरनी पण बमणी मात्रा गणे छे बर्वे अभगने एक तालमा बेसारे छे एटले ए दरेक अक्षरनी बे ने बदले एक मात्रा गणे छे, पण प्रमाण में उपर आप्यु ते प्रमाणे साचवे छे (गायन वादन पाठमाळा पु १ वि ३ पृ ४९-५१)

एटले अभगनु स्वरूप आपणे एवु कहीए के एना चारेय चरणमा आठ आठ अक्षरो आवे तो ए घनाक्षरी जेवी ज रचना गणाय चरणनो दरेक अक्षर बे मात्रानो थाय छे अने ते रीते दरेक चरणमा दादा सधिना चच्चार आवर्तनो थाय तेना अत्य सधिओने खडित करता गुजरातीमा ऊतरी आवेल प्रकार निष्पन्न थाय तेमा पहेला त्रण चरणो छ छ अक्षरोना थाय, तेमाना पहेला चार अक्षरो ते दादा दादा बने, अने पछी रहेल अकेक अक्षर प्लुत थई अकेक दादा चतुष्कलने पूरे एटले के छमाना अत्य बे अक्षरो चच्चार मात्राना प्लुत थाय आ अभगनु चोथु चरण चार ज अक्षरनु होय छे, अने तेथी दरेक अक्षरे अकेक दादा चतुष्कल पूरवानु होय छे आ स्वरूप स्पष्ट थया पछी मे हृ ध्रुव प्रमाणे एकाक्षर सधिओ मानवानी जरूर रहेती नथी कारण के ए तो आपणे पिंगळमा स्वीकारेलो प्लुत छे, जेमनी व्यवस्था प्लुतिमात्रासख्या आपी करवानी होय छे आ रीते अभगो पण कवित जवी ज जातिरचनाओ छे तेमा जाति जेवा ज नियतमात्रासख्याना सधिओ छे, सधिओना नियत मात्रासख्याना आवर्तनो छे, चरणनो अत बताववा प्रास होय छे, चरणना अत्य सधिओ खडित करी नवी टूकी रचनाओ करेली होय छे,

एम वधी रीते आ सख्यामेळ छदो जातिना प्रकारना छे तेमा फेर मात्र एटलो ज छे के तेमा सधिनी मात्राओ पूरवानी पद्धति जुदी होय छे. सामान्य रीते जातिछन्दोना सधिनी मात्राओ अक्षरनी मात्राओथी पुराय छे त्यारे आ सख्यामेळ छदोमा बब्बे मात्रा अकेक अक्षरथी — पछी ते अक्षर गुरु होय तेम लघु पण होय — पुराय छे. आ सधि आपणे जोया ते प्रकारोमा तो

। । ।
दादा के दादा दादा; छे एटले के तेमा कोई लघु मात्राने स्थान नथी, एटले सधिमा ज लघु आवे तो केवी रीते मात्रानी व्यवस्था करवी ए प्रश्न ऊभो थतो नथी. जातिछदोथी आनु निरूपण अही जुदु कर्युं छे पण अते तो तेनो समावेश आपणे जातिछदोमा ज करवानो छे परपराथी आने अक्षरमेळ गणवामा आवता, ते प्रकार साथे आने कशो सबध नथी, तेम छता आ प्रकारमा कालमात्रा साथे अक्षरमात्रा मेळववानी एक जुदी ज पद्धति अही अनुसराय छे ए रीते आ प्रकारनु महत्त्व छे

आपणे अही सुधी जोई गया के अनुष्टुपनो आपणे अनावृत्तसधि अक्षरमेळवृत्तमा अतर्भाव करी शकता नथी आ वृत्तोमा अमुक अमुक सधिओ आवे छे, अने एमा लघुगुरुना स्थानो नियत होय छे अनुष्टुपमा वधारेमा वधारे आठ अक्षरोमाथी त्रण के चार स्थानोमा ज लघुगुरु नियत थया छे अने तेमा पण घणा अपवादो छे वधारेमा वधारे आपणे भिन्नभिन्न प्रकारना अनुष्टुपोने एक उपजाति जेवो प्रवाह गणीए, अने ए प्रवाहनु नाम अनुष्टुप कहीए एटलु करी शकीए, एम में प्रकरण ७ मा कहेलु छे (गत पृ २९१). पण ए मने सतोषकारक लागतु नथी प्रसिद्ध उपजाति नियत छदोमाथी थयेली छे अने तेमा मूळ छदथी फेरफारवाळी पक्तिओ मळे छे तेमानी घणीएक तो कोई मळता छदनी होय छे, एम थईने उपजाति थाय छे अनुष्टुपमा पहेलेथी ज कोई प्रकृतिभूत छद होय अने पछी तेमा फेरफार थई बीजा बीजा छदो थया छे एम बतावी न शकीए त्या सुधी आने उपजातिओ मानी शकाय नही एटले आपणे आ सख्यामेळ प्रकारना मेळनी दृष्टिए तेनो विचार करी जोईए

*अनुष्टुपनु एक लक्षण सख्यामेळने बहु ज मळतु छे. ते ए के सख्या-*मेळमा चरणना अक्षरोनी सख्या नियत होय छे अलबत्त वृत्तोमा पण अक्षर-सख्या नियत होय छे, पण तेना बीजा महत्त्वना लक्षणो अनुष्टुपमा नथी एटले वृत्तोमा एनो अतर्भाव न थई शक्यो तो पछी तेने माटे सख्यामेळ प्रकार ज विचारवानो रहे छे. अलबत्त मात्र नियत अक्षरसख्याथी कोई छद सख्यामेळ थई जतो नथी; ए नियत सख्यामाथी, आपणे उपर जोयु

तेम जातिछंदोना संधिओ निष्पन्न थवा जोईए. एटले आपणे मुख्यत्वे संधिनी शक्यता जोवानुं रहयुं

आ माटे 'रघुवंश'ना पहेला सर्गना बधा अनुष्टुपोने लगात्मक रूपे उतारी मारी समक्ष राखी तेनो में अभ्यास कर्यो पहेला सर्गमा कुल ९४ अनुष्टुपो छे, अनुष्टुपोना चार चरणोमा विषम अने सम चरणो भिन्न प्रकारना छे, एटले एनुं एकम श्लोकार्ध गणवो जोईए ९४ अनुष्टुपोनी श्लोकार्धनी पंक्तिओ ए रीते १८८ थाय. आ बधी पंक्तिओमा एक वात तरत नजरे चडे छे, अने ते ए के दरेक श्लोकार्धने अंते लगाल्गा आवे छे संस्कृत पिंगलो आ स्थानना नियताक्षरोनो विचार करता अंत्य अक्षरनो विचार नथी करता, तेनी, पहेलाना त्रण अक्षरोनो विचार करे छे, अने त्र्यक्षर गणोनी परिभाषामा त्या यगण लगाल्ने आवश्यक गणे छे (गत पृ १४२). पण तेथी में अहीं सूचवेला लक्षणने हानि नथी थती, कारणके अंत्य स्थाने लघु आवे तो पण ते पदान्तना नियमथी गुरु करी शकाय छे अने त्या गुरु आवश्यक छे एमा तो कोई शंका ज नथी उपरना १८८ श्लोकार्धमा मात्र २४ पादोमा अंते लघु छे, जे प्रमाणमा घणी ओछी संख्या छे पण आ गुरुने तो में आगळ कणाव्यु तेम एक अणधारी दिशाएथी समर्थन मळे छे व्यंजनान्तने गुरु गणवो जोईए एम कहेता 'वृत्तरत्नाकर'नो विद्वान टीकाकार नारायण भट्ट कहे छे के एम न गणीए तो 'तनुवाग्विभवोऽपिसन्' ए पादमा अंत्य 'सन्' गुरु न थई शके. मारी दृष्टिए आ युक्ति अनुपपन्न छे (जुओ गत पृ २४), पण एथी एटलु अवश्य फलित थाय छे के नारायण अनुष्टुपना अर्धने अंते गुरु आवश्यक माने छे आ उपरथी आपणे एटलु असंदिग्ध निगमन काढी शकीए के अनुष्टुपमा श्लोकार्धे ल्गाल्गा आवश्यक छे

ल्गालगा चतुरक्षर गुच्छ छे जातिओमा अने संख्यामेळमा पण अंत्य संधिने लगात्मक करवानी रूढि जाणीती छे एटले आ शेक बाबतमा आ लक्षण संख्यामेळमा प्रतीत थाय छे आ उपरथी आपणे साधारण रीते विषम चरणना अंतमा चतुरक्षर गुच्छ छे के नहीं ते जोवाने दोराईओ ए पादमा पण पिंगलकारोए अंत्याक्षर छोडी ते पहेलाना त्रिकने माटे यगण लगागा इष्ट गणेलो छे (गत पृ १४१) सम चरणना उपमानना आधारे, अने पादने अंते संस्कृत-पिंगलमा सर्वत्र अंते गुरु आवे छे ए धोरणे, विषम पादने अंते पण आपणे गुरु आवश्यक गणवो जोईए एटले विषम पादना छेल्ला चार अक्षरो लगागागा थया विषमपाद समपाद करता वधारे छूटवाळो छे, एटले आ अंत्य स्थाने विषमपादमा ५३ जेटला लघुओ आवे छे. एटलु ज नहीं,

पिंगलकारोए आपेला त्रिक लगागामा पण अपवादो आवे छे पण आ अपवादो मात्र एकतानतामा भग करवा ज आवता होय एटला ज छे आ १८८ श्लोकार्धमा लगागानी जगाए गालल मात्र ४ वार, ललल ७ वार, अने गागागा ७ वार आवे छे आ फेरफार आवे छे त्या पण ते बधाई एक ज श्लोकना बने श्लोकार्धमा आवतो नथी, अने एकदर आखा श्लोकपूरमा दूर दूर वेरायला आवे छे दाखला तरीके गालल १२क, ३१ख, ७१क, ८१कमा आवे छे ललल १६, २३, ३०, ३४, ५३, ६०, ६१ ए श्लोकोमा आवे छे गागागा २०, २५, २९, ३९, ८७, ९१, ९३ ए श्लोकोमा आवे छे अर्थात् आ अक्षरगुच्छो मात्र अपवाद तरीके एकतानता टाळवा श्लोकना पूरमा आवे छे अने अपवाद रूपे छे आ सर्व उपरथी विषमपादनु प्रकृतिभूत अत्य चतुष्क आपणे लगागागा गणवु जोईए

आ उपरथी एक तर्क थाय छे. सख्यामेळ छदो चतुरक्षर सधिना आपणे जोया छे तेमा दरेक अक्षर बे मात्रानो बोलाय छे वळी तेमा चरणने अते सधिनी मात्राओ खडित कराय छे, घनाक्षरीमा अत्य चतुरक्षर सधिना छेल्ला बे अक्षरो गाल अथवा लल बने छे, मनहरनो अत्य चतुरक्षर सधि गुर्वन्त त्र्यक्षर बने छे, अभगमा पहेला त्रण पादना अत्य चतुरक्षर सधिओ द्व्यक्षर बने छे तो ए रीते आपणे अही शकीए के अनुष्टुप चतुरक्षर सधिनो छे अने तेना विषम चरणना चतुरक्षर सधिओ लगागागा बने छे, अने समचरणना चतुरक्षर सधिओ लगालगा बने छे आ चतुष्को दरेक अष्टकल बनी रहे एने माटे विषम चरणमा लगागागाने अते एक मात्रानी प्लुति के विराम आवे अने समचरणने अते आवता लगालगा पछी बे मात्रानी प्लुति के विराम आवे

अने अही एक वस्तु याद करवा जेवी छे में आगळ (गत पृ. १५०–५१) कह्यु छे तेम 'वृत्तवार्तिक' अनुष्टुपनो न्यास एना बहुलतम गुरुना रूपमा ज आपे छे नीचे प्रमाणे

गागागागा लगागागा । गागागागा लगालगा ।।

एना ए अनेक भेदो स्वीकारे छे, पण मूळ लक्षण आ प्रमाणे ज आपे छे. आने ज प्रकृतिभूत लक्षण गणीए तो अनुष्टुप चतुरक्षर सधिनो गणी शकाय, अने ए सधिने कुल आठ मात्रानो गणी शकाय, अत्य चतुरक्षर सधिओमा, विषम पादमा एक मात्रा खडित थई लगागागा रूप थयु, सममा बे मात्रा खडित थई लगालगा रूप थयु विषममा अत्य लगागागानी

जगाए गागागागा आव्याना दृष्टान्तो आपणे उपर नोध्या, तेथी मूळ प्रकृतिने कशी हानि थती नथी ए खडितनी जगाए त्या अखडित रूप आवे छे एम थयु दरेक चरणमा ज्या ज्या आद्य चतुरक्षर गागागागानी जगाए लघुमिश्रित चतुष्को आवे त्या लघुने लीधे खूटती मात्रा पासेमा पासेना गुरुना विलवनथी मेळवी लेवाय आ मेळववु सुलभ पडे ते माटे पादना आद्य चतुरक्षर सधिओमा वचला बन्ने लघुनो निषेध कर्यो छे, जेथी विलवन करवानो गुरु अक्षर दूर न पडी जाय आद्य चतुरक्षर सधिओमा आदिथी दूरमा दूर गुरु ललगामा बीजो आवे, अने एना बडे आगला लघुनी मात्रा मेळवी लेवी तद्दन सहेली पडे अलबत्त लगागागानी जगाए लललगा पण अपवाद रूपे आवे छे पण त्या त्या आगला चतुष्कोमा अते गुरु आवी गयेलो होय छे अर्थात् पहेला चतुष्कनी खूटती मात्राओ ए चतुष्कनो अत्य गुरु ज पूरी करी ले छे पछीना चतुष्कने पोतानी खूटती मात्राओ ज पूरी करवी रहे छे जे अत्य गुरु सहेलाईथी करी शके अत्य लललगाना दृष्टान्तो 'रघुवश'माथी ज मूकु 'भीमकान्तैर्नृपगुणै' (रघुवश १, १६)मा पहेला चतुष्कमा एक ज मात्रा खूटे छे ते अत्य गुरु विलवनथी पूरी शके छे घणाखरा अत्य लललगा चतुरक्षरवाळा पादोमा आगलो चतुरक्षर सधि गुरुप्रधान होय छे उपर 'भीमकान्तै' एमा त्रण गुरु अने एक लघु छे सात ज एवा दाखला छे, ते बधामानी गुरुनी संख्या आपु १६, २३, ३०, ५३ ए श्लोकोमा पहेला चतुष्कमा त्रण गुरुओ छे श्लोक ३८ अने ६१मा चार गुरुओ अर्थात् आखु चतुष्क गुरुओनु छे एक मात्र ६०मा श्लोकमा 'उपपन्न ननु शिव' एमा लल्गागा ललगा छे, तेमा पहेला चतुष्कलमा बे ज गुरुओ छे पण ए गुरुओ पण चतुष्कमा अते आवे छे, एटले विलवनथी ए चतुष्कनी आठ मात्रा पूरी करवाने समर्थ छे आ ज दृष्टिथी 'रघुवश'नो चोथो सर्ग ऊडती नजरे जोई गयो तो तेमा ज्या ज्या प्रथम चरणमा बीजु चतुष्क लललगा छे त्या सर्वत्र आगला चतुष्कना अतमा गुरु छे तेवा एवा प्रयोगो ८८ श्लोकोमा त्रण ज छे 'वगानुत्खाय तरसा' (३६क) 'उत्कलादर्शितपथ' (३८ग) 'इन्द्रियाख्यानिव रिपून्' (६०ग) पहेलामा पहेलु चतुष्क गागागागा सर्वगुरु छे, बीजामा गालगागा छे, तेमा एक ज लघु छे अने अते गुरु छे, त्रीजामा पहेलु चतुष्क पाछु गागागागा सर्वगुरु छे आ उपरथी आपणे नियम करी शकीए के बीजा चतुष्कमा ज्यारे पहेला त्रणेय लघु आवे त्यारे आगलु चतुष्क गुर्वन्त होय छे, जेथी ए चतुष्कनी खोट पछीना चतुष्क उपर चडती नथी अने आपणे साथे साथे ए पण नोधवु जोईए के नियम पादमा ज्यारे बीजा चतुष्कमा पहेला त्रण लघु होय त्यारे पादान्ते गुरु होय ज छे, पादान्ते

गुरुने बदले लघु आवी शके छे ए विकल्प आ प्रसंगे निरवकाश बने छे. आने पण आपणे महत्त्वनो नियम गणवो जोईए

बधा श्लोको जोतां एक बीजो पण नियम करी शकीए अनुष्टुपमां क्यांई — कोई पण स्थाने — त्रणथी वधारे लघुओ भेगा थई शके नहीं पहेला चतुष्कनी अंदर तो आ कदी न बनी शके कारणके तेनी मध्यनुं बीजुं अने त्रीजुं स्थान बन्ने लघुथी पूरी शकातुं नथी. एटले वधारेमां वधारे लघु मूकतां तेनां बे ज रूप थई शके लगालल ललगाल. अने एनी अंदर तो बेथी वधारे लघुओ भेगा थई शकता नथी तेम ज समपादनुं अंत्य चतुष्क तो लगालगा नियत ज छे, तेमां तो बे लघु पण भेगा थई शकता नथी पहेला पादनुं चतुष्क सामान्य रीते लगागागा छे तेमां तो एक ज लघु छे, पण अपवाद रूपे ते लललगा थई शके छे ते प्रसंगे 'रघुवंश'ना पहेला अने पांचमा सर्गमां जोयुं तेम बीजा चतुष्कमां ज्यारे आदिमां त्रण लघुओ होय छे त्यारे आगलुं चतुष्क गुर्वन्त होय छे, बहुश. तो गुरुबहुल होय छे एटले त्रणथी वधारे लघु भेगा थवानो संभव मात्र पहेला चतुष्कना अंत्य लघुओ बीजा चतुष्कना आदि लघुओ साथे मळीने चार लघुओ भेगा थाय तो ज ऊभो थाय पण एवुं क्यांई आ बे सर्गोमां बन्युं नथी पहेला चतुष्कने अंते वधारेमां वधारे लघुओ भेगा थई शके लगालल के गागालल रूपमां अने तेनी पछी जो ललगागा आवे तो ज त्यां चार लघुओ भेगा थाय पण आपणे उपर जोई गया तेम त्यां कदी ललगागा* आवतुं ज नथी त्यां सामान्य रीते लगागागा आवे छे, अने तेना अपवादमां आपणे उपर जोयुं तेम, गाललगा ललगा अने गागागागा ज आवे छे आ पैकी गाललगा अने गागागागा आवतां तो लघुनी संख्या बेथी वधवानी ज नथी अने ललगा आवे छे त्यारे

* कोई पिंगळ ए स्थाने ललगा एटले ललगागानुं चतुष्क स्वीकारतुं नथी. 'छंद सूत्र'मां एने स्थान नथी पण तेनो टीकाकार हलायुध तेनुं एक उदाहरण आपे छे "सकारेणा(।।ऽ)पि क्वचिद्विपुला दृश्यते। यथा — जिते तु लभते लक्ष्मी मृते चापि वरांगना । क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे।।" अहीं त्रीजा चरणनो न्यास ललगागा ललगागा एवो थाय छे अर्थात् आ सविपुला अनुष्टुप छे अथवा कहो के आनुं अंत्य चतुष्क ललगागा छे पण तेनी पूर्वना चतुष्कने अंते गुरु छे, एटले अहीं पण चार लघुओ भेगा थवा पामता नथी हलायुधना शब्दो जोतां ए पण आ प्रयोगने विरल मानतो जणाय छे अने हलायुध तो बधी विपुलामां चोथो गुरु होय छे एवो आम्नाय टांके छे (गत पृ १४७) एटले सविपुलामां ललगागा पहेलां गुरु होय ज.

तो पहेलु चतुष्क गुर्वन्त होय छे ए हमणा जोयु एटले ए पण अनुष्टुपनो एक फलित नियम गणवो जोईए के तेमां क्याई एक पादमा चार लघुओ भेगा थवा पामता नथी आ लक्षण अनुष्टुपमा सख्यामेळनो सवाद होवानो आपणे विचार करीए छीए तेने अगे महत्वनु छे चार लघुओ भेगा थई जाय तो तेनी खूटती मात्राओ पछी गुरुमा उमेरता मुश्केली पडे सामान्य रीते तो अनुष्टुपमा वेथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी त्रण लघुओ वा तो बे चतुष्कलोना अत्य अने आदि मळीने थाय, वा तो बीजा चतुष्कना आदिमा अपवाद रूपे थाय अत्य चतुष्क लललगा होय त्यारे ते एक ज चतुष्क होवाथी तेना गुरुमा त्रण मात्राओ उमेरी पठन करवु मुश्कर छे प्रयोगथी तेनी खातरी करी शकाशे बे सधिओ वच्चे ज्यारे त्रण लघुओ भेगा थाय त्यारे त्या लगालल लगाभागा के लगालल लगालगा चतुष्को होय आ सयोगमा चतुरक्षर अष्टकल मात्रासधिनो पेटासधि द्वयक्षर चतुष्कल सधि प्रथम छूटो बोलाय छे एटलामा पहेला लघु अक्षरनी खूटती मात्रा पूरवी सहेली पडे छे ते पछी ललगा एक चतुरक्षर सधि बनी रहे छे, अने तेमा पण अत्य गा लवाईने खूटती त्रण मात्राओ पूरी दे थते गागा के लगा आवे तेने खूटती मात्राथी उच्चारवु सुकर छे ए देखीतु छे आ वधा उपरथी एटलु फलित थाय छे के अनुष्टुपमा क्याई त्रणथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी, अने एनु कारण अनुष्टुपना पादमा आठ अक्षरस्थानो छे त्याना वधा अक्षरो मळी सोळ मात्रा करवी सहेली पडे ए छे गुजराती मनहरमा जेम दरेक अक्षर, लघु पण गुरु बोलाई वे मात्राओ करी कुल मात्राओ पूरी थाय छे तेवु सस्कृतमा शक्य नथी एटले सस्कृतमा लघुओ पठनमा लघु ज रहे अने एने लीधे अक्षरथी वमणी मात्रा थवामा जे मात्राओ खूटे ते ते पछीना गुरुने प्लुत करी मेळववी लेवी जोईए. मनहरमा आ पद्धति पण अखत्यार थाय छे अने सख्यामेळमा मुख्य सधिओ चतुरक्षर अने पेटा सधिओ द्वयक्षर होय छे एटले वा तो द्वयक्षर सधिने अते अथवा तो चतुरक्षर सधिने अते गुरु जोईए ज

आ उपपत्ति साची होय तो अनुष्टुपने सख्यामेळमा मूकी शकाय घनाक्षरी मनहरनी माफक ज अनुष्टुप पण आठ मात्राना चतुरक्षर सधिओनो बनेलो गणाय, अभग — खास करीने नाना अभगनी पेठे तेमा पण वे चतुरक्षर सधिओनु एक पाद थाय आगळ कह्यु तेम दरेक पादनो अत्य सधि खडित छे, अने विषमनो एक मात्राखडित अने समनो वे मात्राखडित ए सधि होवाथी अनुष्टुप अर्धसमवृत्त बने छे पादमां ज्यां ज्या लघु आवी शके त्या त्या ए लघुनु उच्चारण लघुनु ज रहे अने एनी खूटती एक मात्रा ते पछी आवता गुरुनो प्लुतिथी पुराय आ एनु स्वरूप थयुं

अने आ विशेष सभवित ए रीते बने छे के, अनुष्टुप गुरुप्रधान छद छे. में 'रघुवश' ना जे पहेला सर्गनु लगात्मक न्यास मूकी पृथक्करण करेलु छ त्या स्पष्ट जणाई आवे छे के पादमा गुरुनी सख्या वधारे होय छे पहेला सर्गमा कुल ९४ श्लोको एटले १८८ विषम चरणो छे तेमा ए अष्टाक्षरी विषमचरणोमा मात्र ३ गुरु आव्या होय एवो एक ज दाखलो छे चार गुरुना २९ चरणो, पाच गुरुना ६५, छ गुरुना ७६, अने सात गुरुना १७ विषम चरणो छे आ आकडा अनुष्टुपने गुरुप्रधान दर्शाववा पूरता सबळ छे. समचरणमा अत्य चतुष्क लगालगा नियत होवाथी आठमाथी चार अक्षरोमा गुरुनी सख्या अरधनी एटले बेनी नियत थई गई होवाथी आ चरणमा विषम चरण जेटला गुरुओ आवी शकता नथी तेम छता एकदर आखा छदने गुरुप्रधान गणवो पडे एटला गुरुओ तेमा छे १८८ सम पादोमा त्रण गुरु अक्षरना २५ पादो छे, चारना ८५, पाचना ५५ अने छना २३ पादो छे एटले समचरण पण गुरुप्रधान छे एटले अनुष्टुप एकदरे गुरुप्रधान बने छे. पादमा अक्षरनी बमणी मात्राओनी नजीक सहेलाईथी जई शकाय एटला माटे गुरुनी सख्या आवडी मोटी छे

अनेक लक्षणोथी अनुष्टुप आ सख्यामेळमा पडतो जणाय छे छता आ हजी मारो तर्क छे ए सिद्धान्त क्यारे थाय के ज्यारे सगीत सिवाय (बे त्रण सगीत स्वरो चाले) एनु विधिपुरसर प्रवाहबद्ध पठन थतु होय, अने तेमा सूक्ष्मकालमापक यत्रथी आपणे साबीत करी शकीए के अनुष्टुपनु दरेक चरण १६मात्रा ले छे त्यारे एवा यत्रनु प्रमाण न मळे त्यासुधी आ तर्क रहे अने कोई तेने न स्वीकारे ए एटलु ज सभवित छे पण ए न स्वीकारवु होय तो एनु बीजु परिणाम स्वीकारवु जोईए के अनुष्टुपनु पठन एक सरखो समय नथी लेतु अने छता तेमा सवाद छे, ए सवाद अनावृत्तसधि वृत्तोनो नथी, पण कदाच, मिश्रोपजाति गणाता छन्द-प्रवाहने मळतो छे, जेमा भिन्न भिन्न छन्दना चरणो भळीने एक प्रवाह बधाय छे, पण तेमा मिश्रोपजाति जेवा भिनभिन छन्दो नही बतावी शकीए, तेम ज अनुष्टुपनु कोई मूळ प्रकृतिभूत स्वरूप पण नही बतावी शकीए ए वाधो हमेशा रहेवानो एने मिश्रोपजाति जेवो छन्द प्रवाह गणवो होय तो समपादान्ते लगालगा आवे छे, ए एक तत्त्व एमा पण कायम छे, ए नोधवु जोईए जोके मात्र एटला एक लक्षणथी कोई समाक्षर पक्तिओ छन्द बनी शके नही, जेम ओवी, मात्र प्रासथी छन्द बनी शके नही तेम छेवटे आ एक छन्द अत्यार सुधीना आपणे पूर्ण अपूर्ण निर्णीत करेला मेळना बधा नियमोने सौथी वधारे कष्टकर नीवडे छे एनी सादाई अने एनी विशाळता ज, नियमशोधनने सौथी वधारे प्रतारक नीवडे छे.

परिशिष्ट १

मराठीमां घनाक्षरीनुं स्वरूप

उपर घनाक्षरी सबंधमा मराठी 'छन्दोरचना'नु समर्थन लीधु तो मराठीमा घनाक्षरी ते ज आपणी घनाक्षरी छे ये येम ते जोवु जोईए. मराठीमा अतिप्रसिद्ध 'वृत्तदर्पण' जोता प्रथम एवो असर थाय के मराठी घनाक्षरी, आपणा घनाक्षरीथी तद्दन भिन्न छे घनाक्षरीनु लक्षण ते नीचे प्रमाणे आपे छे.

"घनाक्षरी छद ओवी प्रमाणे छे, पण तेवा चार मळीने एक घनाक्षरी थाय छे घनाक्षरीना सोळ चरण थाय छे, चार चरण मळीने तेनु पाद थाय छे; प्रत्येक पादना पेटामा चार चरण तेमा पहेला त्रण चरणोमाना प्रत्येकमां आठ अक्षर थई १२ मात्रा थवी जोईए अने चोथा चरणमा सात अक्षरो थई ११ मात्रा थवी जोईए, एवो प्राय नियम छे दरेक पादमा त्रण त्रण चरणोनो यमक अने प्रत्येक पादना चोथा चोथा चरणोनो यमक थवो जोईए" ('वृत्तदर्पण,' पृ ४६) आनो अर्थ ए थाय के गुजराती घनाक्षरीना अष्टाक्षर यतिखडने अही चरण गण्यु अने तेवा त्रण चरणोने सळग प्रासवाळा वर्या चोथा चरणनो प्रास ए तो सळग घनाक्षरीनो ज प्रास छे 'वृत्तदर्पण'ना दृष्टान्तथी ज स्पष्ट करवा प्रयत्न करु

घनाक्षरी वामनाची

अहो कैकेयी हें काय।। केलें तुवा हाय हाय।।
न म्हणवे तुज माय।। जन्मोजन्मी वैरिणी ।। १ ।।
सर्व जगदभिराम।। वना धाडिला तो राम।।
केलें विख्यात कुनाम।। की हें पतिमारिणी ।। २ ।।
तुझ्या वधें न अधर्म।। तुज मारावें हा धर्म।।
परि निंदील हें कर्म।। राम पापकारिणी ।। ३ ।।
नाही तरी प्राण आज्य।। तुझें घालोनिया प्राज्य।।
जाळानिया साम्राज्य।। दाखविता करणी ।। ४ ।।

पठन करता आनु पठन गुजराती मनहर जेवु ज थशे मनहरमा आत्रा ज आतरप्रासो आ ज स्थाने चरणमा आवे छे, ए आपणे उपर आपेला मनहरना दष्टान्तमा जोयु, जो के ए छन्दनु अग नथी अलकार छे अने अष्टाक्षर यति-

खडनी १२ मात्रा अने सप्ताक्षरनी ११ मात्रा कही छे, पण ए नियम पळायो नथी 'सर्वजगदभिराम'नी दस ज मात्राओ थाय छे एटलु ज नही आगळ (वृत्तदर्पण पृ ४७) उपर आपेला मोरोपतना दृष्टान्तमा चोथु चरण जे सात अक्षरनु होय छे, तेमा एक जगाए छ जेटला गुरुओ छे 'पीता धावें जा परी' मोरोपतना एक बीजा उदाहरणमा ए चरण 'झालें तेव्हा सक्षण' छे तेमा पण बे ज लघु छे, पाच गुरु छे पठन एकधारु गुजराती मनहर जेवु ज दरेक अक्षरने सरखो वे मात्रानो करतु चाल्यु आवे छे एटले अही घनाक्षरी ते आपणो मनहर ज छे अलबत अही ओवीना उल्लेखथी गोटाळो थवा सभव छे, कारणके ओवी तो अक्षरसख्या के मात्रासख्यामा बन्नेमा अनियत छे पण 'वृत्तदर्पण' ओवीने उपर प्रमाणे नियतरूप आपी तेने घनाक्षरीनु अग गणे छे पण ते खोटु छे अने सद्गत राजवाडेए एनु स्पष्ट खडन करेलु छे ते कहे छे के गोडवोलेना 'वृत्तदर्पणमा' जे घनाक्षरी छापेला छे, तेमा अक्षरोनु लघुगुरुत्व असल पोथीमा जोईने छपावेल नथी आजकाल गद्यने शुद्ध करी लखवाना नियम प्रमाणे छापेलु छे तेथी करीने तेनु छदस्त्व विना कारण भ्रष्ट थयेलु जणाय छे

पिंगलना घनाक्षरीनु लक्षण रामदयालूए 'वृत्तचद्रिका'मा आ प्रमाणे आपेलु छे —

विचारचर्चा गलयोर्गणाना
न यत्र, भूपै १६ स्तिथिभि १५ र्यतिर्गुरु ।।
अते धरापावक ३१ वर्णपादा
समीरिताऽसौ फणिना घनाक्षरी ।।

पादमा ३१ अक्षरो अने सोळमा अक्षर पर यति, एटलो ज निर्बंध (नियम) आ घनाक्षरीमा छे मराठी घनाक्षरीना पाठमा यति प्रत्येक ८मा अक्षर पर होई, प्रत्येक अक्षरद्वद्वमा एक अक्षर घन एटले दीर्घ थतो जणाय छे सस्कृत घनाक्षरीमा गुरुलघुनो निर्बंध नथी त्यारे ते लक्षण जो मराठी घनाक्षरीने लगाडीए तो गुरुलघु मात्रानी भाजगड नही जेवी थाय छे

रामदयालूए बत्रीस अक्षरोनी घनाक्षरी पण कहेली छे पण तेनो प्रचार मराठीमा अद्यापि नथी (राजवाडे कृत 'मराठी छद' पृ ८)

उपर 'वृत्तदर्पण'माथी आपेला दृष्टान्तोमा कोई कोई पक्तिमा एकातरे गुरु आवे छे, पण तेनो नियम नथी हु तो मानु छु के आमा छदनी दृष्टिए एटलु ज प्रस्तुत छे के गुरुओ लघुनी नजीक ज होवाथी

लघुने ल्घु राखी शब्दने के खडने अक्षरथी अमणी मात्रानो भरवाने खूटती मात्रा पासेना गुरुमा सहेलाईथी उमेरी शकाय छे बाकी में उपर जणाव्यु ते प्रमाणे आ घनाक्षरी ते आपणो मनहर ज छे तेने ओवी साथे गूचमा नाखवानी जरूर नथी

परिशिष्ट २

ओवी अने अभंग

मराठी पिंगलो ओवीनु निरूपण करे छे गुजराती पिंगलोए हजी सुधी ओवीनो पिंगलोमा समावेश कर्यो नथी आपणामा बहु ओछा कविओए ओवी लखी छे नर्मदाशकरे थोडी लखी छे (नर्म कविता, आवृति ४ थी, पृ ७८७) अने नरसिंहावे 'बुद्धचरित'मा किसागोतमीमा थोडी पक्तिओ ओवीनी लखी छे हु पोते एने पिंगलमान्य छद गणतो नथी, छता तेने अपायेला महत्त्वने लीधे मारे तेनु स्वरूप टूकमा पण दर्शावदु जोईए, अने एने मान्य न करवाना कारणो रजू करवा जोईए

'वृत्तदर्पण'मा ओवीनु लक्षण नीचे प्रमाणे आपेलु छे —

"ओवीने चार चरण होय छे त्रण चरणोने अते यमक होय छे, चोथाने होतु नथी पहेला त्रण चरणोमा आठ आठ अक्षरो अने छेवटना चरणमा सात अक्षरो होवा जोईए आ मुख्य नियम, परतु शब्द अर्थ एना अनुरोधमा कवि वधारे ओछा अक्षरो मूके छे

उदाहरण ओवी ज्ञानदेव

जो सर्वां भूतांचे ठायी ।। द्वेषातें नेणेचि काही ।।
आप पर जया नाही ।। चैतन्य पै जैसे ।।

वृत्तदर्पण पृ ४५

आमा उपर कहेलु माप बराबर छे जे ओवीथी घनाक्षरी बन्यानु 'वृत्तदर्पणे' कहेलु ते आ ओवी अल्बत्त एमा मनहरना एक चरण जेटली ज नियतता छे 'रणपिंगले' पण ओवीनु आ ज लक्षण अने घनाक्षरी सार्थेनो तेनो सबध कह्यो छे ते 'वृत्तदर्पण'ने आधारे ज होय एम जणाय छे नरसिंहराव आ बन्नेनी नोंध करी, कहे छे "रणछोडभाई घनाक्षरी अने ओवीने एकरूप ठरावबा जाय छे परतु हजी समवे तो मनहर जोड एकता सभवे ने ते पण ओवीनी शिथिल्ता, तेमा यमकनी योजना, इत्यादि जोता ल्यभेद स्पट छे पद्य करता गद्यनु स्वरूप (लयत्यागने सबधे) हेमा छे, आवी जे णे उच्चारातो सांभळी

हशे, अने अत्य अक्षरो विलक्षण रीते लेवाता साभळचा हशे, तेने ओवीनु स्वतत्र स्वरूप, हेनी अतन्त्रताने लीधे ज, स्पष्ट जणाशे. 'ज्ञानेश्वरी'मायी उदाहरण आप्यायी आ वात स्पष्ट काईक थशे:

जैसी अवघी चि नक्षत्रें वेंचावी। १२
ऐसी चाड उपजेल जं जीवी। ११
तें गगनाची वाघावी। ८
लोय जेवी ।। ४ अध्याय २०,–२५९
जैसें शाखासी फूल फळ। ९
एकि हेळा वेटाळु म्हणिजे सकळ। १३
तरि उपडुनिया मूळ। ९
जेवी हाती घेणे ।। ६ एजन, २६१
तेवी माझे विभूति विशेष। १०
जरी जाणो पाहिजेत अशेप। ११
तरी स्वरूप एक निर्दोप। १०
जाणिजे माझें ।। ५ एजन, २६२

ओवीना पिता ज्ञानेश्वर*नी आ ओवीओमा स्पष्ट रीते चोथा चरणो सात अक्षरना नथी, चार, पाच अने छ अक्षरना छे, ते यथासभव लबावीने लहेकाववाना छे"

*(टीप) श्री श्लोक वामनाचे, अभग वाणी प्रसिद्ध तुकयाची।
ओवी ज्ञानेशाची, किंवा आर्या मयूरपताची।।
ए प्रसिद्ध मराठी गीति सुविदित छे"

बुद्धचरित, (आवृत्ति १ली) टिप्पण, पृ ७९–८०

नरसिंहराव मात्र चोथा चरणनी अक्षरसख्यानो अनियम नोधे छे, पण आगल्या त्रण चरणोमा पण अक्षरसख्या एकसरखी नथी में दरेक चरण सामे अक्षरसख्या नोधी छे

पण ओवीनी अनियमितता आथी पण वधारे छे राजवाडेए 'मराठी छद'मा ओवीनी लाबी चर्चा करी छे तेमा प्रथम पदरमा शतकना भीष्माचार्यनु ओवीनु लक्षण उतारेलु छे, अने पछी तेनी भूमिका उपर ओवीना स्वरूपनी चर्चा करी छे आ लक्षण नीचे प्रमाणे छे

(१३) गायत्रीछदापासौनि धृतिपर्यंत।
(१७) प्रथ वोवीयाचे तीन चरण जाणावे मिश्रित।

(१२) प्रतिष्ठेपासोनि जगतीपर्यंत।
(५) चौथा चरण ॥४२७॥ ज्ञानखंड, मार्गप्रभाकर

' राजवाडे आ विशे कहे छे: "आ ओवीनो अर्थ आ प्रमाणे: पहेला त्रण चरणो गायत्रीथी माडीने धृतिपर्यंतना कोई पण छंदनां होय, अने चोथु चरण प्रतिष्ठाथी माडीने जगतीपर्यंतना कोई पण छंदनु होय. एटले पहेलां त्रण चरणो षडक्षरी वृत्तथी अष्टादशाक्षरी वृत्तपर्यंतना कोई पण वृत्तना होय अने चोथु चरण चतुरक्षरी वृत्तथी द्वादशाक्षरी वृत्त पर्यंतना कोई पण वृत्तनु होय एटले, पहेला त्रण चरणोमां ६थी १८ अने चोथा चरणमां ४थी १२ पर्यंत अक्षरो होय ज्ञानेश्वरना केटलाक ओवीचरण पाच अक्षरना मळी आवे छे अने चोथु चरण त्रण अक्षरनु मळे छे, एटले में ओवीनु लक्षण एवु बाध्यु छे के ओवीना पहेला त्रण चरण सुप्रतिष्ठा (५) थी माडीने धृति (१८) छंद पर्यंतना कोई पण छंदनु होय अने चोथु चरण मध्यमाछंद (३)थी माडीने जगती छंद (१२) पर्यंतना कोई पण छंदनु होय. मात्र तेमां एक वात लक्षमा राखवी जोईए के, प्राय चोथा चरणना अक्षरो पहेला त्रणेय चरणोमा ओछो कमी अक्षरनु जे चरण होय तेना अक्षरोथी वधारे अक्षरोवाळु न आवे आ बधानो इत्यर्थ ए के ओवीना त्रण चरणो सुप्रतिष्ठाथी धृति पर्यंत जेटला कोटयवधि वृत्तो छे ते वृत्तोना होय छे, अने चोथु चरण मध्यमाथी जगती पर्यंत जे लक्षावधि वृत्तो छे ते वृत्तोनु होय छे.

ओवी बे प्रकारनी होय छे, समचरणी अने विषमचरणी समचरणी ओवी ते के जेना पहेला त्रण चरणोमा सम एटले सरखी सख्याना अक्षरो होय, अने विषमचरणी ओवी ते के जेना पहेला त्रण चरणोमा विषम अक्षरो होय" (मराठी छंद पृ. २०–२१) आ पछी सम अने विषम ओवीओना पेटा विभागो पाडे छे ते मने नोंधवानी जरूर लागती नथी ते पछी राजवाडे 'ज्ञानेश्वरी'माथी समचरणी ओवीओना दृष्टान्तो आपे छे षडक्षरी ओवीथी शरू करे छे.

अउ नमो आद्या। वेदप्रतिपाद्या ॥
जय स्वसंवेद्या। आत्मरूपा ॥ १॥ — अध्याय १

आ पछी सप्ताक्षरी, अष्टाक्षरी, नवाक्षरी, दशाक्षरी, एकादशाक्षरी, द्वादशाक्षरीना दृष्टान्तो आपे छे आथी वधारे अक्षरोनी समचरण ओवीओ ज्ञानेश्वरीमा नथी एम कही पछी विषमचरणी ओवीना दृष्टान्तो आपे (एजन, पृ २१–२२) छ उपर नरसिंहरावे एवा आपेला छे एटले हु बीजा दृष्टान्तो लेतो नथी.

विषमाक्षरी ओवी विशे राजवाडे एक नियम कहे छे एक चरण पचाक्षरी होय तो बीजा चरणो षडक्षरी अथवा अष्टाक्षरी होय छे अष्टाक्षरी चरण होय तो बीजा बे चरणो नवाक्षरी अथवा सप्ताक्षरी होय छे एटले के एकथी त्रण पर्यंत प्रत्येक चरणनु न्यूनाधिक्य होय छे आ करतां वधारे न्यूनाधिक्य होय तो वधारे अक्षरो घणे भागे काढी नाखीने बीजा चरणो मळता करी लेवाय छे (एजन पृ २४)

हु आने राजवाडेनो तर्क मानु छु ए प्रमाणे न्यूनाधिक्य करवानु कारण ए एवु आपे छे के 'ज्ञानेश्वरी'मा ओवी छद छे दसमी कलममा पचाक्षर चरणात्मक अभगथी द्वादशाक्षर चरणात्मक अभगपर्यंत अभगना सुप्रतिष्ठादि प्रकारो कह्या छे ते ज प्रकारो ओवीना छे अर्थात् सुप्रतिष्ठा अभग प्रमाणे ज पचाक्षरात्मक ओवी बोलाय छे एटलु ज के जेम अभगमा चरणनो उपान्त्य प्लुत बोलाय छे, तेम ओवीमा अत्य अक्षर प्लुत बोलवानो होय छे

आनो अर्थ ए थयो के राजवाडे ओवीना चरणोने अभग प्रमाणे सम करवा इच्छे छे तेम करवा ते पोते ओवीना शब्दोने छोडी देवानु कहे छे ए तो विलक्षण छे ज पण तेथी पण वधारे विलक्षण ए छे के तेओ ज्या अक्षरो न्यून होय त्या वेदपठनमा थाय तेवी स्वरभक्ति करवा कहे छे 'फाके' शब्दने तेओ 'फआके' करे छे अने 'आठवो' शब्दना अत्य 'वो'ने तोडीने 'आ+उ' करे छे "आ स्वरच्छेदनो प्रकार वैदिक ऋचाओना छन्दःप्रस्तारमा करे छे" एम प्रमाण आपे छे (मराठी छद, पृ २४–२५)

आ प्रतीतिकर लागतु नथी आ साचु होत तो राजवाडेए पदरमा शतकना भीष्माचार्यनु जे ओवीनु लक्षण उतार्युं छे तेना चरणोमा ज आटली बधी न्यूनाधिक्ता न होत एटले हु मानु छु के ओवी मूळ तो एक प्रकारनु सप्रास गद्य छे तेने चरणबद्ध करनार तत्त्व एक मात्र प्रास छे तेमा त्रण चरणो एक ज प्रासना होय छे, अने चोथु टूकु प्रास विनानु होय छे आथी ओवीमा छन्दोना एकमो पडी शके छे तेमा प्रथम तो चरणोनी अक्षरसख्यानो कशो ज नियम नहोतो एम हु मानु छु सिवाय एटलो ज के प्रास बहारनु चोथु चरण आगला कोई चरणथी वधारे लाबु न होई शके पण जेम जेम तेनो वपराश वध्यो तेम तेम बधा चरणोमा अक्षरसख्या सरखी करवानु वलण ऊभु थयु ए अमुक लल्कारथी बोलाती, अमुक स्वरोथी गवाती ए खरू पण एम तो महाराष्ट्रना हरिबुआओ गद्य पण गाय ज छे, अमुक आरोहअवरोहथी बोले छे आटला ज लक्षणोथी हु ओवीने पिंगलमान्य छद कही शकतो नथी राजवाडे तेना चरणोमा आवता जे वोटघवधि छदोनी

वात करे छे ते छन्दस्तत्त्व नही समजवानु परिणाम छे ते ओवीमा वेदकालीन छन्दनी सरलता सादाई विशाळता जुए छे, पण वेदकाळमा पण आपणे बीजा प्रकरणना परिशिष्ट १ मा जोई गया तेम पाचथी वधारे छदो नहोता ए छदोने कोटघवधि कहेवानी प्रथा तो पछीथी पिंगलना गणितकीए ऊभी करेली माया छे आपणा पिंगले बे ज प्रकारना छदो मान्य कर्या छे एक अनावृत्त-सधि अक्षरमेळ, जेमा भिन्न प्रकारना सधिओ कोई गूढ रीते भेगा थई एक सवादी पक्ति रचे छे ते बीजा जातिछदो जेमा अमुक मात्राना सधिना अमुक सख्याना आवर्तनो होय छे आनी बहारनो आपणे कोई छद जाणता नथी ओवीनो उपरना कोई प्रकारमा अतर्भाव थई शकतो नथी ते मात्र अमुक प्रकारनु प्रासबद्ध गद्य छे राजवाडे उपरनी ज चर्चामा एक स्थळे (मराठी छद पृ २५-६) 'ज्ञानेश्वरी'नु ज प्रमाण आपीने कहे छे ते साचु छे आ ओवी नामनो जे बध छे ते गद्याय छे पण खरो, अने केवळ गद्य प्रमाणे—सयमक गद्य प्रमाणे वंचाय छे पण खरो एने गद्य ज गणवु जोईए

राजवाडे अभगना अनेक दृष्टान्तो आपी अभगना पण पुष्कळ प्रकारो बतावे छे अने कहे छे चतुरक्षरी चरणोथी द्वादशाक्षर चरणो पर्यंतना उदाहरणो अने लक्षणो उपर आप्या छे केटलाक अभगोमा चरणोमा तेर के चौद अक्षरो मळी आवे छे परतु एवा चरणो विरल चौद अक्षरोथी वधारे अक्षरो अभगना चरणोमा आवता नथी साराश, चतुरक्षरी वृत्तोथी चतुर्दशाक्षरी वृत्तो पर्यंत जेटला लक्षावधि वृत्तो छे ते सर्व अभग छे एटलु ज के अभगत्व मेळववा माटे वृत्तोनु चोथु चरण ऊनाक्षर होवु जोईए ओवीने पण आ ज सिद्धान्त वत्तोओछो लागु पडे छे (मराठी छद पृ १८).

आगळ जता कहे छे अभगमा चार के साडा त्रण चरण एक साथे बोलाय छे ते समग्रने चतुष्क (मूळ मराठी चौक) कहे छे; ओवीमा दरेक चरण विराळु बोलाय छे अभगमा चरणनो उपान्त्य अक्षर लबावीने प्लुत बोलाय छे ओवीना चरणनो अत्य अक्षर प्लुत बोलाय छे प्राय अभगना सर्व चतुष्को एक ज छद होय छे दरेक ओवी स्वतत्र होवाथी एक ओवीने बीजी ओवी साथे छदोदृष्टिए काई सबध होतो नथी अभग सर्व प्रकारे छदोमय छे ओवीनु वलण पद्यनी अपेक्षाए गद्य तरफ विशेष छे प्राय अभगना चतुष्कना पहेला त्रण चरणोमा नियमित अक्षरो आवता लागे छे ओवीमा अक्षरोनो नियम न होय तो चाले पहेला त्रण चरणोमां यमक साध्यो एटले काम पत्यु एटले ओवी सयमक गद्य छे (एजन, पृ १९)

आ प्रमाणे ओवी अने अभगमा प्रथम सरखी ज अनियमितता हती एम जणाय छे फरक मात्र प्रास मेळववानी पद्धतिनो हतो अभगमा ओवी प्रमाणे प्रास आवी शके छे पण ते सिवाय पहेला बीजा चरणनो, तेम ज बीजा त्रीजा चरणनो प्रास आवी शके छे, एटलु अभगमा विशेष वैचित्र्य छे आखो विकास जोता नरसिहरावनो तर्क के ओवीमाथी ज अभग थयो ए उपपन्न जणाय छे (बुद्धचरित टीका पृ ८१) ओवीना पदो धीमे धीमे समता मेळवता गया अने तेमाथी छेवटे अभगनी सफाईदार रचना थई पण आ एक ऐतिहासिक तर्क छे, तेनी साथे पिगळने खास सबध नथी पिगळ, ओवीने छद न कहेवाना अने अभगने छद कहेवाना कारणो आपे एटले एनु काम पूरु थाय छे ओवी गद्य छे, तेमा कोई छादस माप नथी — मेळ नथी अभगने जे अर्वाचीन स्वरूप मळ्यु छे, अने जे स्वरूप गुजराती साहित्ये स्वीकार्यु छे तेमा माप छे, मेळ छे, मेळनु तत्त्व मनहर जेवा चतुक्षर सधिओ छे, जेमा दरेक अक्षर बे मात्रानो छे, अने षडक्षर अभगमा बीजा सधि खडित थयेलो छे ओवी अने अभगना पठनमा एक भेद राजवाडेए बताव्यो ते साचो छे अने मुद्दानो छे ए भेद ते ए के ओवीमा अत्य अक्षर ज प्लुत थाय छे अभगमा उपान्त्य प्लुत थाय छे (हु उमेरीश के अत्य पण एवो ज प्लुत थई त्या अष्टकल रचाय छे) आ फरकनु कारण खास ए के आवीमा जे काई स्वरोनो आरोह अवरोह आवी शके ते मात्र गद्यना ललकारना प्रकारनो ज आवे, अने अत्य प्लुति पकितनो अत दर्शाववा आवे, ए तालमानाबद्ध न होई शके, अभग — नियत सख्याक्षर अभग, तालबद्ध सगीतनी भूमिका थाय छे, अने तेथी तेनी प्लुति ते तालनी कालमात्रा अमुक विशेष पद्धतिए पूरवा आवे छे, अने छ अक्षरोमाना, छेल्ला बे अक्षरो चारचार मात्राना प्लुतो बने छे, — अत्य चरणना चार अक्षरो पेठे ज

१३

देशी के पद

गेय होवा छता जे पद्यरचनाओ पिंगळना अधिकारमां आवे छे तेनो हु देशी के पदमा अंतर्भाव करवा इच्छु छु प्राचीन गुजरातीमा आवती पद्यरचनाओ देशीना नामे ओळखाय छे एटले आपणे प्रथम देशीनो अर्थ स्पष्ट करीए.

सस्कृत साहित्यमा अने सगीतना सस्कृत पुस्तकोमा आ देशीनो उल्लेख मळे छे सस्कृत पुस्तकोमा 'रामायणना' बालकाडमा लवकुशे ऋषियोनी सभामा रामायण गायु एवु वर्णन छे (सर्ग, ४ श्लोक ३६ नि०) अने त्या छेल्ला श्लोकमा ते 'मार्गविधानसपदा' गायु एवो उल्लेख छे त्या-तेना उपरनी तिलक नामनी टीकामा मार्गनो अर्थ करता कह्यु छे "गान द्विविध। मार्गो देशी चेति। तत्र प्राकृतावलम्बी गान देशी। सस्कृतावलबी तु गान मार्ग।" अर्थात् गान बे प्रकारनु छे मार्ग अने देशी तेमा प्राकृतने अवलबतु गान ते देशी सस्कृतने अवलबतु गान मार्ग मार्गनो अर्थ अहीं आपणे जेने उस्तादी गायन कहीए छीए तेवो छे अने उस्तादी नही एवु जुदा जुदा देशमा प्राकृत जनोमा गवातु ते देशी एवु तात्पर्य जणाय छ सगीत उपर प्राचीनतम ग्रथ ते 'भरतनाट्यशास्त्र' छे अलबत्त एनो मुख्य विषय नाटक छे, पण नाटकनु एक अग सगीत छे, तेथी तेमां सगीत विशे पण घणु आवे छे तेमा मार्ग अने देशी ए भेद आवतो नथी पण ते पछीना सगीत उपरना पुस्तकोमा आ भेदनो स्वीकार आवे छे सगीतनु प्राचीनतम प्रसिद्ध पुस्तक लोचननी 'रागतरगिणी' छे तेमा विषयनी प्रस्तावनामा ज आवे छे:

मार्गदेशी विभेदेन गीत तु द्विविध मतम् ।

मार्गस्तु गन्धर्वादिगीतगतय· देशश्च तत्तद्रागाश्रितास्तास्तास्तत्तद् देशगीत-गतय इह तु मार्गाभावान्नोदाहृता (उत्तर हिन्दुस्तानी सगीतनी सक्षिप्त ऐतिहासिक समालोचना, पृ ८)

अही ग्रन्थकार सगीतना मार्ग अने देशी एवा बे प्रकारो कहे छे मार्गने गान्धर्व पण कह्यो छे, जेने अन्यत्र पण समर्थन मळतु आपणे जोईशु देशी

ए मार्गना भिन्न रागोने आश्रये भिन्नभिन्न देशोमां ते ते रागनी रूढ थयेली भिन्नभिन्न गति के गतो छे. ग्रन्थनो विषय मार्गसगीत छे एटले तेमा देशी गीतोना उदाहरणो आप्या नथी आ पछीनो सगीतनो एवो ज प्रतिष्ठित अने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सगीतरत्नाकर' छे तेना प्रथम स्वराध्यायमा ज कहेलु छे:

> गीत वाद्य तया नृत्य त्रय सगीतमुच्यते ।। २१ ।।
> मार्गो देशीति तद्द्वेधा तत्र मार्ग: स उच्चते ।।
> यो मागितो विरच्याद्यै प्रयुक्तो भरतादिभि ।। २२ ।।
> देवस्य पुरत शभोर्नियताभ्युदयप्रद ।।
> देशे देशे जनाना यद् रुच्या हृदयरजकम् ।।
> गान च वादन नृत्य तद् देशीत्यभिधीयते ।। २२ ।।

सगीतरत्नाकर, पृ ६

गीत वाद्य अने नृत्य ए त्रण सगीत कहेवाय छे तेमा गीत बे प्रकारनु, मार्ग अने देशी जेने ब्रह्मा वगेरेए इछ्यो अने भरत वगेरेए शभुनी आगळ प्रयोज्यो अने जे अवश्य अभ्युदय आपनारो छे, ते मार्ग. जुदा जुदा देशोमा लोकोनी रूचिने लीधे जे हृदयरजक बनेलु छे ते गान वादन अने नृत्य देशी कहेवाय छे आगळ चोथा प्रबन्धाध्यायमा पण आ ज कहे छे

> रजक स्वरसदर्भो गीतमित्यभिधीयते ।।
> गान्धर्वगानमित्यस्य भेदद्वयमुदीरितम् ।। १ ।।
> अनादिसप्रदाय यद् गन्धर्वै सप्रयुज्यते ।।
> नियत श्रेयसो हेतुस्तद् गान्धर्व जगुर्बुधा ।। २ ।।
> यत्तु वाग्गेयकारेण रचित लक्षणान्वितम् ।।
> देशीरागादिषु प्रोक्त तद् गान जनरजनम् ।। ३ ।।

सगीतरत्नाकर, चतुर्थाध्याय, प्रथम भाग, पृ. २७१

रजक स्वरसदर्भने गीत कहे छे तेना बे भेदो होय छे, गान्धर्व अने गान. गन्धर्वोथी प्रयोजातु अनादि सप्रदायवाळु अने निश्चय श्रेयना हेतुभूत जे छे तेने गान्धर्व कहे छे, अने जे लक्षणयुक्त जनरजन करनारु गीत देशी रागो वगेरेमा वाग्गेयकारोए प्रयोजेलु होय तेने गान कहे छे टीकामा कल्लिनाथ आ गान्धर्वने ज मार्ग कहे छे अने स्पष्ट करे छे के वेदनी पेठे गान्धर्व सगीत अपौरुषेय छे अने देशी पौरुषेय छे तेनो रचनार वाग्गेयकार कहेवाय छे:

> वाच गेय च कुरुते य स वाग्गेयकारक ।।

एजन, अध्याय ३, श्लो २, पृ २४३

अर्थात् वाणी अने गीत बन्नेनो रचनार ते वाग्गेयकार आपणा प्रेमानन्द वगेरे वाग्गेयकारो हता अत्यारना कविओ पण गीत रचे त्यारे वाग्गेयकार ज गणाय

आ बधामांथी एटलु फलित थाय छे के संस्कारेलु उस्तादी शास्त्रीय संगीत ते मार्ग अथवा गान्धर्व अने ते सिवायनी भिन्नभिन्न देशोमा रूढ थयेली जे गाननी गतो ते देशी

उपर एवु गृहीत करेलु जणाय छे के देशीओ सर्व मार्गसंगीत उपरथी भिन्नभिन्न देशमा रूढ थयेली ते ते रागनी गतो छे पण आ एक श्रद्धाथी ऊभी करेली मान्यता छे खरु तो अनेक स्थाने जे संगीत प्रचलित होय छे तेमाथी संस्कारीने ज संगीतशास्त्र रचाय छे पंडित ओंकारनाथ स्पष्ट कहे छे के "शिष्ट संगीतनु आरंभस्थान लोकसंगीतमा छे . . मारा घणा वर्षोना अनुभव अने चिंतन पछी कहु छु के शिष्ट संगीतना मूळ लोकसंगीतमा रहेला छे" (नवरात्र महोत्सव, ग्लाठो, शिष्ट संगीत अने लोकगीत, पृ ३३) आ गत ज शास्त्रविद जणाय छे लोकप्रचलित वस्तुमाथी ज संस्कारीने अलग करेली वस्तु पछी पवित्र के दैवी मनाय छे भाषामा आ व्यापारनु बीजु उदाहरण मळी रहे छे आपणे संस्कृत भाषाने दैवी गीर्वाणगिरा कहीए छीए. पण ए लोकभाषाने ज संस्कारीने रचायेली छे संस्कृत शब्दनो ए ज अर्थ छे पण पछी ए ज मूलभूत गणाई अने तेनाथी भिन्नने देश्य गणी तेम अही पण थयु छे अर्थात् देशी गणाती घणी गतो शास्त्रीय संगीतनी सामग्रीरूप हशे ते साथे ए पण स्वीकारवु जोईए के, जेम संस्कृत शब्दोमाथी केटलाक तद्भवो थया छे, तेम शास्त्रीय रागोमाथी भिन्नभिन्न देशमा भिन्नभिन्न गतो रूढ थई हशे अने ते पण देशी ज गणाय आ तो देशीना मार्ग साथेना संबधनी चर्चा थई आपणा प्रयोजन माटे तो आपणे एटलु ज प्रस्तुत छे के दरेक प्रांतमा, अथवा आपणा प्रयोजन माटे भाषामा, अमुक अमुक गतो के ढाळो रूढ थया होय छे, जेमा साहित्य लखाय छे, अने एवा ढाळोमा लखेला साहित्यना गीतप्रकारने देशी कहे छे

पण संगीत ए देशीना स्वरूपनी एक ज बाजु छे एनी बीजी बाजु ते पद्यरचना छे ए देशी गतमा रचायेलु साहित्य पाछु पद्यरचना पण होवु जोईए अने एम होवाथी देशीने पिंगलगत स्वरूप पण होय छे आ रीते देशी ए अमुक अमुक रूढ स्वर रचनामा गवाती रूढ पद्यरचना छे

आ देशीओ आपणा प्राचीन साहित्यमा देशी, ढाळ, पद, गरबी, त्रुटक एम अनेक नामे ओळखाय छे प्राचीन गुजराती छदोना ८मा प्रकरणमा

बताव्यु छे के त्रुटकनो ढाळमा समावेश थाय छे अने ढाळो देशीओ तरीके पण ओळखाय छे एवी ज रीते गरबीओ पहेला पद तरीके ओळखाती अने पदो देशीओ पण कहेवाता आवी रीते आ बधा प्रकारोनो समावेश देशी शब्दमा थई शके एम छे छता आ विशाळ वर्गने माटे हु देशी अने पद एवु सयुक्त मथाळु इच्छु छु, तेनु कारण ए छे के पद शब्द अत्यारे वधारे विस्तृत अर्थमा वपराय छे, अने ते विस्तृत अर्थनी पद्यरचनानु स्थान पण अही ज छे. जूना गुजराती साहित्यमा, हु कही गयो तेम, पद शब्द देशीनो पर्याय हतो पण अत्यारे देश्य रागना अभिप्राय विनानु कोई गेय काव्य होय तेने पण पद कहे छे पद शब्द अही तेना मूळ विशाळ अर्थमा वपराय छे पद एटले गेय पद्यरचना अने ए ज अर्थमा ए शब्द वपराय छे ए इष्ट छे पद्यरचना न होय एवा गीतो मात्र गीत कहेवावा जोईए, जेना दाखला हु प्रकरण ९ मा आपी गयो छु (गत पृ ३५०-५३).

' छदोना बे मुख्य विभागो, सस्कृत वृत्तो अने जातिछदो त्रीजा सख्यामेळ छदोनो में अते जातिछदोमा ज समावेश कर्यो छे ते उपरात देशी अने पदोने पण में एक स्वतत्र प्रकार गणेलो छे पण जातिछदो अने देशी अने पदो वच्चे पण कोई मूलगत भेद नथी एटलु ज नही बहु ज सरखापणु छे बन्नेना मेळनो पायो सधिओना आवर्तनो छे बन्ने वच्चे जे काई भेद छे ते ए छे के देशीओ अने पदोमा गेयता वधारे आगळ पडती छे अने लीधे बन्ने वच्चे जे मुख्य मुख्य तफावतो निष्पन्न थाय छे ते नीचे प्रमाणे गणावी शकाय

जातिछदोमा सामान्य रीते कालमात्राओ, लघु बराबर एक मात्रा अने गुरु बराबर बे मात्रा ए धोरणे पुराती हती क्याक क्याक प्लुति आवती तो ए प्लुतिनी मात्रासख्या अने छदमा तेनु स्थान नियत हता आ धोरण देशीओमां शिथिल थाय छे अने जातिछदोमा जे छूटी छवाई नियत छूटो हती ते बधी अतन्त्र रीते अही भोगवाय छे ए अतन्त्रतानी पण एटली सामान्य मर्यादा छे, के अक्षरविन्यासमाथी सधिओ प्रतीत थवा जोईए एम न थाय त्यारे कृति पिंगल बहार जाय

आ कृतिओ गेयताप्रधान होवाथी घणी जगाए पिंगलना सधिओनी वच्चे आखा सगीतना सधिओ आवे छे आपणे दिंडीमा जोयु के तेनी पक्तिमा प्रथम दाल आवी पछी दादादा आवे छे जातिछदोमा आ पट्कलनु स्थान नियत हतु ते देशीओमा अनियत थाय छे, अने केटलीक तो आखी देशीओ पटकलना ज अक्षरविन्यासवाळी होय छे

उपरना बन्ने लक्षणो दाखलाथी तरत स्पष्ट थशे पहेला एक लोकगीतनी गरबी उतारु छु

नद एक समे गाय गोतवा गया जो;
जता जाणीने श्याम साथे थया जो
मेघ वरसे वरसे ने मेघनी झडी जो,
दिवस आयम्यो ने साझ तो स्हेजे पडी जो
नद कहे छे के शो उपा कीजिये जो
शरी कृष्ण सघाते नव लीजिये जो

साभळेलु

पठनथी जणाशे के आ दालना आवर्तनोवाळी गरबी छे तेमा प्रथम दाल आवी पछी एक दादादा आवे छे — दिडीनी पेठे त्रीजी पक्तिमा 'जाणीने' चोथीमा 'वरसे वर' ते ज प्रमाणे पाचमीमा 'कहे छे के' अने छेल्लीमा 'कृष्ण स' दादादा छे अते गागा छे ते गा⌣गा⌣ थई कुल आठ आवर्तनो थाय छे अने छता आ शुद्ध महीदीप नथी आमा प्रथम दाल निस्ताल जई, पछीथी ताल साथे पट्कलो शरू थाय छे तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाण थाय:

दाल] दादादा, दाल दाल, दाल गा⌣, गा⌣
दाल,]

अत्य गा⌣ पछीनी पक्तिना दाल साथे जोडाई एक पट्कल रचे, अने ए रीते आ चार पट्कलनी रचना छे तेमा क्याक क्याक दालनी जगा एक गुरु ज पूरे छे, जेम के

जता जाणीने श्याम सा⌣ थेय या⌣ जो⌣ तेम ज
नद कहे छे के शो⌣ उपा कीजि ये⌣ जो⌣

उपली लीटीमा 'सा' त्रण मात्रानो प्लुत छे नीचलीमा 'शो' त्रण मात्रानो प्लुत छे एवी ज रीते केटलीक जगाए लघुने गुरु ने केटलीक जगाए गुरुने लघु थवु पडे छे

दिवस] आयम्यो नें, साझ तों स्हे, जे पडी⌣, जो⌣.
अही 'नें' अने 'तों' लघु थाय छे अने

शरी] कृष्ण स, घातें नव, लीजि ये⌣, जो⌣

एमा 'ष्ण' अने 'व' बन्ने लघुने गुरु करवा पडे छे, आ छूटो जातिछदोमां हतो ज, पण अही वधारे सख्यामा आवे छे अत्य प्लुतोने नियत स्थान छे, ते

जातिछदोनु ज लक्षण छे, पण पक्ति वच्चे आवेला 'सा' अने 'शो' ए प्लुतोने नियत स्थान नथी पण आ अनियम छता पक्ति वाचता तरत ज त्रिकलो जीभे चडे छे एटले आ लोकगीत पद्यरचना पण छे ज

बाल जोडकणा अने धूनो पण गान अने ताल साथे अर्धगीतमा गवाय छे अने तेवी रचनाओ पण देशीओ जेवी छूटो भोगवे छे.

रा ᵕ म, लक्ष्मण, जा ᵕ नकी —,
जे बो,लोहनु, मा ᵕ नकी —,

'रा' त्रण मात्रानो प्लुत छे एक न्हाव जोडकण आ छूटना स्वरूपो अने बहुलता बतावव‍ा नीचे उतारू छु

एक् कोठामा, बतरी कोठा,
तेमा रमे, नाना मोटा,
नाने मोटे, नाखी गोळी,
भागी रे हर,णानी टोळी,

हरण खा ᵕ य, हेराफेरा
भाग्या रे दि, ल्हीना डेरा
दिल्ही ऊपर, आ ᵕ ण मा ᵕ ण,
भागी रे सो,नानी मा ᵕ ण,
मा ᵕ ण ऊपर, मो – ती –,
बीबी आवे रो – ती –,
बिबीनाँ हाँथमा, धो – को –,
फोड मियानो, हो – को –,
होकाना बे, का ᵕ चला –,
सोनाना बे, मा ᵕ छला —,

आटली बधी छूट छता पठनना प्रवाहमा माघाना उच्चारणमा क्याय भूल नथी आवती बाळको पण ए बोली शके छे, ए बतावे छे के ते ते पद्य-रचनामा आवी आवी छूटो बहु स्वाभाविक रीते गोठवाई जाय छे अने भाषानी एक प्रकारनी लवचिकता कही शकाय अने कुशळ कवि तेनो सुदर उपयोग करी शके छ जेम के दयारामनी दाणलीलानी गरबी

मारग मूकोनी वहु छु कहाना क्यारनी जो
मने रोकी राखी छे कोण वारनी जो

मारे माथे मटूकी महीतणी तपे जो
मेळा वीत्या पछी गोरस मारु नही खपे जो.

दयारामरससुधा, पृ ३४

आ गरबी आगळ आपेली लोकगीतनी गरबी 'नद एक समे०' ए ज ढाळनी छे. ताल] दादादा; दाल दाल; दाल गा ⌣ गा ⌣ तेमा आगळ जता नीचेनी बे पंक्तिओ आवे छे:

आघा रहो अडशो मा गिरधारि घेला मा थशो जो
जे काई भाळो छो ते अर्थ न्हे सरे कशो जो.

त्रिवलोमा ते नीचे प्रमाणे गवाय छे

आँधाँ रहोँ] अड्शोँ माँ गिर्; धारि घेँला, मा थशो ⌣, जो ⌣
जेँ काइ;] भाळोँ छोँ ते; अर्थ न्हे स; रे कशो ⌣, जो ⌣

लघुना चिन्हो उपरथी जणाशे के केटला बधा गुरुओने लघु करवा पडे छे. बीजी पंक्तिमा 'काई' एक गुरु बोलाय छे अही कविए 'आघा रहो अडशो मा' ए भाव बतावबा गुरुओने लघु कर्या छे, गुरुओने दबावी लघु करवाथी तेना प्रत्याघातनो धक्को अनुभवाय छे अने ए अर्थने पोषे छे पण क्षणघड रचनारने हाथे आ छूटथी रचनामा केवळ कुरूपता आवे छे ए पण साचु छे अने आवी छूट स्वच्छदथी वपराय तो अते संधिओ ओळखाय पण नही, अने रचनानी छादसता ज नाश पामे. वळी आने लीधे ज भाषानी जोडणीमा अतत्रता पण आवे

आपणे जोयु के देशीओ पदोमा सगीततु प्राधान्य होय छे आथी सगीतना केटलाक लक्षणो पद्यरचनामा ऊतरी आवे छे तेमा सौथी महत्त्वनु ए छे के सगीतमा स्थायी अने आतरो एवा बे भाग होय छे तेमाना स्थायीने मळतो अथवा एना उपरथी ऊतरी अवेलो ध्रुव के टेक एवो एक भाग केटलीक देशीओमा के पदोमा होय छे. स्थायी, आतरा पछी फरी वार गावानो होय छे, अने आतरा विभाग फरी वार आवे तो तेनी पछी फरी वार गावानो होय छे, तेम ध्रुव दरेक कडीए कडीए फरी वार गावानो होय छे पद के देशीमा मात्र ध्रुव के टेकनो ज निर्देश करेलो होय छे, आतरानो निर्देश होतो नथी, पण ए आतरानी अनेक पंक्तिओथी ज पद्यरचनानु मुख्य काठु बधाय छे अने तेने ज कडी गणवामा आवे छे ९मा प्रकरणमा आपेला 'सद्गुरु०' पदमा प्रथम बे पंक्तिओ स्थायी के ध्रुवनी छे, अने पछीनी १थी ४ सख्या आपेली कडीओ दरेक आतरो छे, जेनी पछी ध्रुवपंक्ति फरी फरीने बोलाय

कडवु ९मु — राग खट

मूक्या पिडारिया प्रेरी, राधाने, लीधी घेरी,
हृदेमा रोश आणी, बोल्या पछे चक्रपाणी 1
लटके पाग माडे, पोतानी हठ न छाडे,
एनी जो हठ मूकावु, तो दाणी नाम कहावु ७
वढता वाय जो वहाणु सहुने वाज आणु
प्रभुनो रोश जाणी, राधाजी बोल्या वाणी ८

बृ का दो १, पृ १०९–१०

कडवु १२मु राग खट

कृष्ण धूतारी घूमटा वाळी रे, आज्या विना आखडी काळी रे;
जाओ क्या आप्या पाखी रे, राधाने रोकी राखी रे
वढता वाये वहाणु रे, सहुएने वाज आणु रे — टेक

ऊची ने अलबेलडी रे, मुख घणु गुमान,
जोवनियानु जोर जणावे, हु उतारू अभिमान धू आ

एजन, पृ १११

९मा कडवानी कडी जे रीते गवाय छे ते ज रीते १२मा कडवानी टेक पक्तिओ गवाय छे टेक पक्तिओमा मात्र एक रे वधारे छे ते पदरचनामा के सगीतमा कशो तफावत नथी करतो बधी पक्तिओ दादादा एवा पट्कल सधिनी छे

॥ा–प–, डारिया; प्रेरी–, ––
दा] दा दादा; दादादा, दादादा; दादा
रा,]धारो–, ली–धी, घेरी–, ––
दा]दादा दा, दा दादा, दादादा, दा दा
ह्]रैमा–, रो–श, आणी–, ––
दा]दादादा, दादादा, दा दा दा,
बो]ऱ्या प छे, च–क्र, पाणी–; ––
दा]दा दा दा, दादादा,

पक्तिनो पहेलो अक्षर छोडीने पट्कलनो ताल शरू थाय छे अने त्रीजा पट्कलनो छेल्लो अक्षर ए पट्कलने पूरू कर्या पछी आगळ चार मात्रा पूरे छे, जे पछीनी पक्तिना पहेला निस्ताल अक्षरने मेळवी दई आखु पट्कल पूरू करे छे एम आखी पक्ति चार पट्कलनी बने छे, जे प्रासथी अने अत्य सधिथी पछीनी पक्ति साथे जोडायेली होय छे १२मा कडवानी पण ध्रुवनी पक्तिओनो आ ज न्यास छे

घू] तारी–, घूमटा, वाळी–, रे–
दा] दादादा, दादादा, दादा दा, दादा
आ]ज्या विना, आखडी, वाळी–, रे–
दा]दा दादा, दादादा, दादा दा, दादा

बे पक्तिओ बस थशे हवे आ पछीनो आतरो एईए नीचे दादादा नथी लखतो

ऊचो–, ने अल, वे–ल, डीरे–, मुख ध, णुगु–, मा––, ––न,
जोवनि, यानु–, जोर ज, णानेहु,
ऊता–, रु अभि, मान घू, तारी–,
घूमटा, वाळी–, रे–आ, ज्या विना,
आखडी, वाळी–, रे––

आ गरबो घणाए साभळी हशे तेमा आतराथी, सगीत तार स्वरो तरफ जाय छे, अने पछी नीचे ऊतरी टेकने पकडी लई एक आखी अनेक पासां-वाळी सगीत आकृति रचे छे केवळ सगीतकृतिओमा स्थायी अने आतरानो आवो ज सबध होय छे ध्रुव अने आतरामा एकनी एक ज सगीत आकृतिनु आवर्तन थाय, एने पद्यरचनामाथी देशी करवानी पिंगलकृत सादामा सादी युक्ति गणवी जोईए

पिंगलनी ध्रुवोमा बीजी पण केटलीक खासियतो छे. केटलीक ध्रुवोनी सगीतनी स्वतत्र एकमो बनती ज नथी, ए आखी पक्तिने वळगीने ज रही शके छे, अने पक्ति अने ध्रुव बन्ने भेगा मळीने ज एक आवृत्ति रची शके छे देशीओमा घणी ध्रुवो आवी ज छे आने आपणे ध्रुवखड कहीशु. जेम के

जगतनु सुख झाकळनु छे पाणी रे, जाणी ले
वणशी जाता वार नही सत वाणी रे, जाणी ले

बृ का दो १, पृ. ७२१

आखी पक्ति प्लुति सहित ३२ मात्रानी रचना छे अने दरेक पक्तिने अते 'रे—जाणी ले—' बार मात्रानो ध्रुवखड आवे छे ए ध्रुवखडनु स्वतत्र अस्तित्व नथी, भाषा अने अर्थनी दृष्टिए नथी पण अही प्रस्तुत ए छे के सगीतनी दृष्टिए पण एनु स्वतत्र अस्तित्व नथी क्याक आवा ध्रुवखडो, एकी अने बेकी, पक्तिओमा जुदा जुदा आवे छे, तेने आपणे बेवडा ध्रुवखडो कहीशु.

कारतक मासे केम गया छो मूकी रे रसियाजी!
प्राणजीवनप्रभु! शी वाते हु चूकी रे रग रसियाजी.
चूकी छु पण दासीदोष समावो रे रसियाजी
मारा सम, जो मनमा काईक लावो रे रग रसियाजी.

दयारामरससुधा, पृ १०३

अने पछी बधी पक्तिओमा ए ध्रुवखडो ज वाराफरती आव्या करे छे अही पहेलीमा 'रे रसियाजी' अने बीजीमा 'रे रग रसियाजी' बेवडा ध्रुवखडो छे.

सगीतना एकममा ध्रुवखड क्या मूकवो केवडो मूकवो ए कविनी विवक्षा उपर आधार राखे छे

चद्रभागा ने चद्रावळी रे लोल,
चपक लता छे चारुरूप, व्रजवासणी रे लोल,
ताळी देता वागे झाझर झूमखा रे लोल
ललिता, विशाखा, व्रजमगळा रे लोल,
माधवी ने मालती अनूप व्रजवासणी रे लोल,
ताळी देता वागे झाझर झूमखा रे लोल

दयारामरससुधा, पृ. २१

अही दयारामे बीजी पक्तिमा 'व्रजवासिणी रे लोल' एटलो ध्रुवखड, अने ते पछीनी त्रीजी पक्ति आखी ध्रुवनी मूकी छे अर्थात् त्रण पक्तिनी कडीमा बेढ पक्ति ध्रुवनी छे

ध्रुवखडना टूकामा टूका स्वरूपोमा क्वचित् एक ज अक्षरना मळे छे जेम के

आज मने आनद वाध्यो अति घणो मा !
गाया गरवा छद बहुचर मातनणो मा !
बृ० का० दो० २, पृ ६८७

अही 'मा' ए एकाक्षर ध्रुवखड छे ध्रुवखड पक्तिमा अमुक ज जगाए आवे एवो कोई नियम नथी ते अते आवे तेम आदिमा पण आवे, मध्यमा पण आवे अलबत्त ए ज्या आवे त्या सगीतनी दृष्टिए शोभवो जोईए उपरना दाखलामा ध्रुवखड पक्तिने अते छे पण

परमेश्वरीने पाये पडी हो बहुचरी, बहु कळीजुगना कर्म,
अक्कल नथी काई एवडी हो बहुचरी, शक्ति राखजो शर्म
बृ० का० दो० १, पृ ६८९

अही 'हो बहुचरी' ए ध्रुवखड पक्तिनी मध्यमा छे अने

साहेलडी हे ! क्यू कहिये वारोवार जाणो छो मुज मन-वातडी हो लाल
साहेलडी हे ! करुणानी नजरे बोलाव, तो टळे मुज मन भ्रातडी हो लाल
आनदकाव्यमहोदधि, १, पृ १२८

अही ध्रुवखडो आदि अने अत एम बन्ने स्थाने जुदा जुदा छे आदिमा 'साहेलडी हे' अने अते 'हो लाल', एम छे कोई कोई वार पक्तिनो अत बेवडाय छे त्यारे पण ध्रुव जेवी असर थाय छे पहेला एक सादा ध्रुवखड-वाळो दाखलो लईए

लालजी कारतक महिने रथ जादवराये खेडियो हो लाल
व्हेला आवजो महाराज !
लालजी चाखडियेथी रडघासड्या पण घणी खमा हो लाल
व्हेला आवजो म्हाराज !

अही 'व्हेला आवजो म्हाराज' ए ध्रुवखड छे नीचेनो ढाळ उपर जेवो छे, जो के उपरनो पट्कळनो एटले विलबित अने नीचेनो ढाळ द्रुत चतुष्कल छे एटलो फेर छ

देखी कामिनी दोय के कामे व्यापियो रे
के कामे व्यापियो रे
बळी घणो धनलोभ के बाध्यो पापियो रे
के बाध्यो पापियो रे

अही कोई एक ज खड फरी फरीने आवतो नथी पण पक्तिनो ज अमुक भाग बेवडाय छे तेथी ध्रुव जेवी ज असर थाय छे छता आने ध्रुव न कहेवी जोईए एने एक पक्ति दोढवानी खास भगी गणवी जोईए

आ ज जगाए ए पण नोध लईए के देशीओ अने पदोमा रे, जो, लोल, लो, जी, होजी, के, रेके, जेवा तानपूरकोनो छूटथी वपराट थाय छे आमाना केटलाकनो काई अर्थ थतो हशे पण अत्यारे तो ए सर्व पूरक तरीके ज आवे छे पण ते सिवाय तेनी छद विशेनी केटलीक खास असर छे ते जोवा जेवी छे आवा तानपूरको पक्तिने अते आवे त्यारे अतना द्योतक बने छे पक्तिनी मध्यमा ते गमे त्या केवळ मात्रा पूरवा आवे छे, त्यारे छद साथे एने कशो सबध होतो नथी, पण ए कोई कोई वार देशीनी पक्तिमा अमुक नियत स्थाने आवे छे त्यारे तेना स्थानथी त्या शब्दान्त यति थई छदनी एक भगी बने छे हमणा उपर ज आपणे 'देसी कामिनी०' देशी जोई तेमा 'के' अने 'रे' बने छदमा अमुक स्थाने आवे छे, अने बने ए जगाए पक्तिमा शब्दान्त यतिनु काम करे छे पण आ करता पण विशेष खूबीथी ए पक्तिनी अदर प्लुत बनी छदनी विचित्र भगीओ रचे छे हु दृष्टान्तथी स्पष्ट करू मीराबाईनु गीत —

मुखडानी माया लागी रे मोहन प्यारा

एक पक्ति बस थशे आ सप्तकल रचना-छे अने तेनो न्यास नीचे प्रमाणे छे.

मुखडानी, माया लागी, रे–– मो, हन प्यारा,
लदादादा, ल दादादा, लदादादा, लदादादा,

अही 'रे' नी पहेला चरणनु अर्ध आवे छे, बे सप्तकलो पूरा थाय छे, अने पछी आवता 'रे' ने लीधे त्या शब्दान्त यति आवे छे––पण विशेष ए छे के ए 'रे' सप्तकलनी पाच मात्राओ पूरे छे अने तेथी पछीना शब्दनो पहेलो अक्षर बे मात्राने स्थाने आवे छे अर्थात् छेल्ला सप्तकलनो पहेलो द्विमात्रक अक्षर 'रे' साथे मळीने सप्तकल रचे छे, अने त्या जो एकथी वधारे अक्षरनो शब्द होय (अने घणी वार एवु ज बने छे, जेम अही बन्यु छे) तो ए शब्दना बीजा अक्षर उपर पछी ए सप्तकलना ताल पडे अर्थात् एक ज शब्द बे सप्तकलो वच्चे वहेंचाय आ वधायी एक घणी सुन्दर भगी रचाय छे गीतोनो आवो आखो एक प्रवाह बतावी शकाय जे अर्वाचीन युग सुधी चालेलो छे

प्रमनीझ, ल्वछाई, र – – ग,गने आग,
लदादादा, लदादादा, ल्दादादा, लदादादा,

अही 'रे––ग'थी त्रीजु सप्तकल बने छे, 'गगने'ना बीजा अक्षर उपर ताल पडे छे, अने 'गगने' शब्द बे सप्तकलो वच्चे वहेंचाय छे

उपरना मीराबाईना भजनमा अने 'प्रेमनी०' रचनामा ए पण नोंधवा जेवु छे के मनहर के रचितमा जेम चतुरक्षर सधिओ आवे छे अने तेमानो दरेक अक्षर लघु होय के गुरु होय पण दादादादा अष्टकलनो एक दा पूरे छे, तेम अही पण चतुरक्षर सधि आवे छे, अने तेना अक्षरो लघु होय के गुरु पण यथाक्रम लदादादाना स्थानो पूरे छे 'मुखडानी' तेमा 'मु' ल,'ख', दा 'डा' दा, अने 'नी' दा अनुक्रमे पूरे छे तेवी ज रीते 'माया लागी'नो दरेक अक्षर लदादादानां चार स्थानो यथाक्रम पूरे छे अने तेम करवामा अक्षर लघु के गुरु होय तेनो भेद रहेतो नथी पण मनहर जेटलो अव्यभिचारी रीते अही चतुरक्षर सधिओ आवता नथी क्याक एक दानी जगाए बे लघुओ आवी वधारे अक्षरोनु सप्तकल पण बने छे नीचेनी लोकगीतनी कडीमा एनो दाखलो मळी रहे छे

काळी कुबजा, कामणगारी, वशकीधा, वनमाळी,
लदा दादा लदादादा लदादादा लदादादा
हवे अमे, नथी गमतो, रे––ओ धवजी–
लदादादा लदादादा लदादादा लदादादा

मीराबाईना भजनमा 'रे मोहन प्यारा' ध्रुव हतो, अने तेनो छेल्लो सप्तकल आखो अक्षरोथी पुरानो हतो अही छल्ला सप्तकलनी अत्य बे मात्रा अनक्षर रहे छे एटलो फेर छे आखी कडीमा केटलाक सप्तकलो जेवा के 'वशकीधा' 'वनमाळी' चतुरक्षर सधिओथी पुराय छे पण ए अव्यभिचारी नियम नथी 'काळी कुबजा' सप्तकलमा 'कुब' बे लघु मळीने एक द्विकल थाय छे अने ते ज प्रमाणे 'कामणगारी' अने 'नथी गमता'मा पण बने छे

देशीना सगीतनी घणी व्यापक अने एक रीते पठनमा मूलगामी एवी एक बीजी असर ए छ के घणी चतुष्कलसधि रचनाओ पठनमा षट्कल अने सप्तकल बने छे, अने त्यारे मूळ चतुष्कल सधिओ केवी रीते विशेष सख्यानी मात्रावाळा सधिओ बन छे ए पण कौतुकप्रेरक विषय छे आनो सौथी वधारे प्रसिद्ध दाखलो चोपाई छे चोपाई चार चतुष्कल सधिओनी होय छे ए ज चोपाई घणी वार त्रिताली चोपाई तरीके के ओखाहरणनी चोपाई तरीके गवाय

छे त्यारे पट्कल बने छे उदाहरण माटे हु प्रथम नरसिंहरावनी एक चोपाई लउ छु चोपाईनी पक्तिओ उतारता ज साथे साथे अल्पविरामथी चतुष्कलो छूटा पाडु छु

जातु, ए ऋषि, जनने, याच,
औषध, कइ तुज, बाळक, काज,
एह सु,णी का,ले तुज, पास,
आवी, हु धरी, म्होटी, आश

बुद्धचरित, पृ २५

त्रिताली चोपाई पट्कल रचना छे अने उपरनी चोपाई एमा गवाता तेना अक्षरोनो विन्यास नीचे प्रमाणेना पट्कलोमा थाय छे.

जातु] ए ऋषि, जनने –, याच –, –
दादा] दादादा दादादा, दादादा, दा
औषध] कइ तुज, बाळक, काज –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
एहसु] णीका –, लेतुज, पास –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
आवी] हु धरि, म्होटी –, आश –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा

पहेली चार मात्राओ निस्ताल जई, पछी प्रथम मात्रा पर ताल साथे पट्कलो शरू थाय छे त्रण पट्कलो पूरा थया पछी एक कालमात्राद्विक वधे छे ते पछीनी पक्तिनी प्रथम चार मात्राओ लईने आखु पट्कल बनी रहे छे एम आ रचना चार पट्कनी छे हवे आ कालमात्राना पट्कलो अक्षरोथी पूरवानी प्रक्रियामा एवु बने छे के चोपाईनु पहेलु चतुष्कल निस्ताल चतुष्कल पूरे छे, अने पछीना अक्षर-चतुष्कलो कालमात्राना पट्कलोने पूरे छे चोपाईना त्रिकलनो छेल्लो अक्षर प्लुत बनी ए पट्कलने पूरवा उपरात पछीनु द्विकल पण पूरे छे, चोपाईनो ए लघु छ मात्रानो प्लुत बन छे चतुष्कलोमा गागा होय तो ते गागा –– बने छे, जेमके 'म्होटी' 'णीका', गालल होय तो तेनो दरेक लघु गुरु बनी गागागा बने छे जेमके 'हु धरि' 'बाळक' 'ए ऋषि', ललगा होय तो पहेला बे लघु लघु ज रही द्विकलन पूरे छे अने छेल्लो गुरु चार मात्रानो प्लुत बने छे, जेमके 'जनने', चतुष्कल सर्वलघु होय तो तेना प्रथम बे लघु लघु ज रही, पहेला द्विकलने पूरे छे, अने पछीनो दरेक लघु गुरु बने छे जेमके 'कइ तुज' पण चोपाईमा चतुष्कलोनी जगाए लदागालदा के दालगालदा आवे छे

त्यारे मापाने अनुकूळ होय ए रीते कालमात्राओ पुराय छे. अने चतुष्कल रचनामां लगाल अही पण विक्षेप कर्या विना रहेतो नथी. शामळनी पंक्तिओ नीचे उतारुं छुं ते उपरथी ए जणाशे.

सिघपुर, नामे, सुंदर, गाम,
नारसिंह रा; जानु, नाम,
वसे एक ब्रा; ह्मण म्हा, मती,
पतिव्र,ता ते,ने घेर, सती.

आनां पट्कलो नीचे प्रमाणे पुराशे.

सिधपुर] नामे –, सुंदर, गाम –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
नार] सिंह रा, जानु –, नाम –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
वसे] एक ब्रा, ह्मण म्हा –, मती –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
पतिव्र] ताते –, ने घेर, सती –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा

मूळना दालगालदा के लदागालदा संधिओ सिवायना बधा ज संधिओ एना ए ज रह्या छे, अने आपणे आगळ जोई गया ते ज योजना प्रमाणे अक्षरो कालमात्राने पूरे छे. 'नारसिंहरा' ने बदले 'अचलसिंहरा' होत तो 'अच' लघु ज रही बाकीनो लघु ल गुरु बनी त्यां चारमात्रानो थात

अर्थात् लललत्नु ललगा–वगत अने तेम ज ए 'अचल' गालल पण बनी शके. 'पतिव्र, ताते –' ए पट्कलो उच्चारमां सुन्दर लागता नथी. तेनु कारण अही शब्दभंग कुरूप थाय छे ते छे, अने कईक अशे 'पतिव्र' जगण छे ए पण छे. एने

पती] व्रताते, नेघेर', एम करीने सुधारी शकीए. एम सुधारवानी सगवड छे कारण के 'ताते' पछी एक द्विकल अनक्षर रहेलु हतु ते पुराईने, 'नेघेर' चतुष्कल अविक्षिप्त रही शके छे; पण शेम दर वखत न पण बने. दाखला तरीके

ऊनाळे ऊडा जळ जाय
नदी सरोवर जळ सूवाय

ए पंक्तिओमा पंक्ति बीजीमा 'नदीस रोवर' एम ज करवुं पडे छे. 'नदीस' लगाल सुंदर नथी पण पहेलु चतुष्कल 'नदी' करीए तो पछी 'सरोवर'

शब्द पछीना पट्कल माटे अगवड भरेलो नीवडे छे, जो के ए पण 'सरोवर' एम करीने चलावी शकाय. ववतन्न ए छे के कोई वार चतुष्कलोने षट्कलोमा वहेंचता शब्दभग तरफ ध्यान आपवु पडे छे. चतुष्कल करता षट्कल रचना विलंबित होवाथी शब्दभग वधारे कुरूप लागे छे एम हु मानु छु

अक्षरचतुष्कलो षट्कलोमा पडता मात्रानो अवकाश वधे छे अने तेथी कोई कोई वार कवि ए अवकाशो अक्षरमात्राथी अथवा कोई तानपूरकथी पण पूरे छे अने त्यारे ए त्रिताली चोपाई, मात्रामेळचापाईना चतुष्कलोमा समावी शकाय नही नरसिंहरावनो नोनेनी पक्तिओ त्रिताली चोपाईनी छे:

एवु राणीनु सौंदर्यपूर, एवो प्रेम एनो भरपूर
एवु] राणीनु सौंदर्य पूर – –
दादा] दादादा दादादा दादादा दा
एवो] प्रेम ए नोभर पूर – –
दादा] दादा दा दादादा दादादा दा

त्रिताली चोपाईमा शब्दो बराबर बेसी रहे छे पण अहीना षट्कल सधिओ 'राणीनु' 'सौंदर्य' 'प्रेम ए' चतुष्कलामा ठासीने भरता शब्दोच्चार कठोर थाय छे

एवु, राणिनु, सौंदर्य, पूर,
एवो, प्रेम ए,नो भर,पूर

वर्णकठोर लागे छे, अने छता आ षट्कल रचना पण रहे छे चोपाई, अने एने चोपाई गणवामा एक सगवड पण छे

आ चोपाईनी पेठे ज चद्रावळा पण षट्कल तालमा गवाय छे—तेनी रचना आखी चतुष्कलनी छे छता आ चतुष्कल चोपाई सप्तकलमा पण ऊतरी शके छे, अने त्यारे पण मूळ चतुष्कलो ज विशेष मात्राओ लई सप्तकलो रचे छे

मूळ चतुष्कल, तेनो षट्कल, अने सप्तकल विस्तार सहेलाईथी सरखावी शकाय माटे एक जुदी ज पक्ति लई श्रेणेयनी उत्थापनिका नीचे आपु छु:

चाल्यो, श्याम र,जनिमा, चाल्यो
मार्ग, ज्योति अ,नुपनो, झाल्यो

षट्कल :

चाल्यो] श्यामर;　जनिमां – ;　चाल्यो – ; –
दादा]　दादादा;　दादादा,　दादादा;
मार्ग;] ज्योतिश;　नृपनो –;　क्षाल्यो –; –
दादा;] दादादा;　दादादा;　दादादा;

सप्तकल :

चाल्यो] श्या⌣मर;　जनि⌣मा –;　चा⌣ल्यो –; – ⌣
दादा]　दाल दादा;　दाल दादा;　दाल दादा; दाल
मार्ग]　ज्यो ⌣ तिश;　नृप⌣नो –;　क्षा⌣ल्यो –; – ⌣
दादा]　दाल दादा;　दालदादा;　दालदादा; दाल

अहीं सप्तकलनो विस्तार षट्कल विस्तारने बहु ज मळतो छे षट्कलो चालु थाय छे, त्याथी षट्कलनु पहेलु द्विकल अहीं त्रिकल बने छे एटलो ज फेर पडे छे षट्कलना बाकीना बे द्विकलो एम ने एम रहे छे चतुष्कलोनी साथे सरखावीने बोलवु होय तो एम केहवाय के ज्याथी सप्तकलो शरू थाय त्या दरेक चतुष्कलनी पहेली द्विकल त्रिकल बने छे, अने बीजी द्विकल चतुष्कल बने छे

चोपाईनी पेठे दोहरो पण षट्कलमा अने सप्तकलमा गवाय छे, अने त्यारे मूळ चतुष्कलोनो विस्तार उपर जणाव्यु ते ज प्रमाणे थाय छे नरसिंहरावे 'महाभिनिष्क्रमण' काव्यना प्रारभमा 'वैदर्भी वनमा वळवळे' ए चालनी देशीमा थोडी कडीओ आपी छे एमानी केटलीक कडीओ दोहरानी छे :

　　नाथ समीप सूॅती हती, मृदु शय्यामा जेह;
　　अर्ध ऊठीॅ त्या राणीॅए, तजीॅ प्रावरणे देह

आ शुद्ध मात्रामेळ रचनानो दोहरो छे, अने नरसिंहरावे तेने प्रेमानन्दनी वैदर्भी वाळी देशीमा गावा लखेलो छे आ देशी केटलाकने मते षट्कलनी छे, केटलाकने मते सप्तकलनी छे आपणे बन्ने रीते जोईए आ देशी गवाय छे ते रीते हु नीचे अक्षर साधिओ मूकु छु

नाथ स, मीप सू, ती हती, – मृदु श, य्यामा –, जे –⌣ह,
दादा दा, दादादा, दा दादा, दा दा दा, दादा दा, दादा दा,
अर्ध ऊ, ठीत्या –, राणीए, – तजि प्रा, वरणे –, दे – ⌣ह, नाथ•
दादादा, दादा दा, दादादा, दा दा दा, दादादा, दादा दा

कुल छ पट्कलनी रचना बने छे. आनी विशेषता ए छे के दोहराना पहेला यतिखंडनुं दालदा आवी गया पछी एनो छेल्लो अक्षर पछीना एक द्विकल जेटलो लंबाय छे. चोकसाई खातर ध्यान दोरवानुं के 'मृदु' अने 'तजि' बन्नेमां लघुओ लघु ज बोलाय छे, अने अकेकुं द्विकल ज पूरे छे. एने वधारे सादी रीते नीचे प्रमाणे करी शकाय जो के ए एटलुं सुन्दर नथी लागतुं.

. . . . तीहृती, –मृदु, शय्यामा, ...

पण ए पछीना दलमा एम करवुं फावतुं नथी. एम करवा जता आम थाय:

. . . . राणीए, —तजी, प्रावरणे . . .

दादादा

'प्रावरणे' शब्द आखो एक पट्कलमा बेसाडता शोभतो नथी. अने आम करवाथी मूळ चतुष्कलो भागे छे

हवे ए ज दोहराना चतुष्कलोनों सप्तकलोमा विनियोग करी जोईए.

ना⌣थस, मी⌣पसू, ती⌣हृती,– ⌣मृदुश, य्या⌣मा –, जे⌣⌣⌣ह,
स⌣धंऊ, ठी⌣त्या –, रा⌣णीए,– ⌣तजिप्रा, वर⌣णे –, दे⌣⌣⌣ह

दालदादा, दालदादा, दालदादा,दाल दादा, दालदादा, दालदादा

आ तालान्तरव्यापारनी प्रक्रिया टूंकमा कहेवी होय तो एम कहेवाय के दरेक चतुष्कलना पहेला द्विकलने निकल करवो अने बीजा द्विकलने चतुष्कल करवो. 'मृदु' 'तजि' ए चारेय लघु ज रहे छे ए ध्यानमा राखवुं जोईए.

आपणे आगळ जे अनेक चतुष्कल रचनाओ जोईशुं तेमा घणी आ प्रमाणे तालान्तर करे छे—मुख्यत्वे पट्कलमा जाय छे. आ प्रमाणे चतुष्कलो पट्कल अने सप्तकलमा जता जोया छे पण पचकलमा जवाना दृष्टान्तो जोया नथी.

देशीओमा एक विशेष लक्षण ए छे के तेमा एक ज कडीमा क्वचित् अमुक स्थाने ताल बदलाय छे, अने ते अमुक सुधी चालीने, पछी पाछो मूळ ताल आवे छे. आ प्रकरणमा आपणे प्रेमानन्दनी दाणलीलानी जे गरबी जोई तेमा आवती आतरानी लांबी पंक्तिओ अमुक सुधी चतुष्कलमा पण गवाय छे. हुं न्यासथी ते स्पष्ट करुं

ऊंची, ने अल; बे⌣ल, डी रे; मुखे घ,णुं गुं;मा –,–⌣न;
जोबनि, मानुं; जोर ज, णावे.

ऊता–;रु अभि; मान घू; तारी–;
घूमटा; वाळी–; रे–आ; ज्या विना;
आखडी; काळी–; रे– –

अही उपर जणाव्या प्रमाणे 'ऊची. . . जणावे' एटलो भाग त्वरित चतुष्कलोमा गवाय छे, अने पछी 'ऊतारु'थी पाछो षट्कल ताल चाले छे. आगळ जोईशु के धीरानी प्रसिद्ध काफीओमा पण आतरानी दोढ पंक्ति त्वरित चतुष्कलमा चाले छे, अने पछी रचना चालु सप्तकलोमा गवाय छे.

देशीओमा अने पदोमा संगीतनी असरने लीधे एक बीजु वहार पडतु लक्षण तेमा ए होय छे के मात्रामेळ छदोना जेवी सम कडीबद्ध पंक्तिओ तेमा होती नथी. तेमा बे प्रकारनी असमता जणाय छे. दरेक पंक्तिमा संधिसंख्या एक सरखी होती नथी, एटले के पंक्तिओ लाबी टूकी होय छे. अने कडी के ज पंक्तिनी के समसख्य पंक्तिनी होवी जोईए एवो नियम पण रहेतो नथी पंक्तिनी लबाईनु अने पंक्तिनी सख्यानु नियामक सगीत बने छे. सगीतना आरोह अवरोह, वळाव, के सरखापणु बतावबाना चिह्न तरीके घणी वार प्रास जुदी जुदी जगाए आवे छे. ते उपरात शोभा तरीके तो आवे ज छे. एक सादो दाखलो लईए.

अण तेडया जातां रे नदने आगणे,
वण करान्या करता घरना काम जो;
एवे रे मिषे जई मळना मावने,
पलके पलके करती हु परणाम जो.
ओधवजी सदेशो कहेजो शामने— ध्रुव.

बृ० का० दो० १, पृ. ७७६

रचना स्पष्ट रीते प्लवगमनी छे. ध्रुव साथे कडी पाच पंक्तिनी थई. अने प्रासो प्रारभथी नजीक नजीकनी बबे पंक्तिए आववाने बदले बीजी अने चोथीमा आव्या. अने प्रास पछी 'जो' तानपूरक आव्यो. ए प्रास अने तानपूरक, ए बे पंक्तिओनी सगीतगत रचनासमानता दर्शावे छे एथी वधारे अटपटो दाखलो लईए:, पंक्तिओ उतारता ज हुं कौंसवडे अर्धविरामो करं छु:

मोंरु] गा मोरपु–; बासलडीने; शब्दे वानर; का–ळा
हुं तो;] घेलाँ थई–; मारा घरमां; नथी गमतु म्हारां; या–ना–
पुज;] अवर उपर ए; वाजे छे

सुणि;] अंनर मारुं; दाजे छे
एँनों;] शब्द नगनगा; गाजे छे
म्हारु;] मन मोहयु—; वागल्डोने; शब्दे कानड; वा—ळा—

दयारामरगसुधा, पृ. ७

पहेली बे प्रासबद्ध पंक्तिओमा संगीतगत समानता छे. ते पछी ये प्रासबद्ध टूकी पंक्तिओमा पण समानता छे. ए पछीनी पंक्तिना मध्यमा आवतो 'गाजे छे'नो प्रास शोभानो छे, जो के अर्थदृष्टिए 'वाजे छे,' 'दाझे छे'ना अर्थने पुष्ट करे छे, एटले के त्यां ए प्रास अर्थने पुष्ट करवा आवे छे. आ प्रासवैविध्य लगभग असंख्य प्रकारनु छे. एनुं वैविध्य बतावबा अेक बीजो दाखलो लउं : ए पण दयारामनुं ज पद छे.

कामण] दीसे छे धूल; वेला तारी; आं ⌣ समा —; रे —
मोळुं;] मा ⌣ समा —; रे — कामण;
मद हसीने; चितडु चोर्यु;
कुटिल कटाक्षे; काळज कोर्यु;

अदपडियाळो; आवे झीणुं; झा ⌣ समा — ; रे — कामण;

आनी प्रासरचना गया पद साथे सरखावबा जेवी छे. पहेली पंक्तिनो उत्तरार्ध अने पछी तेनी साथे दोडाती अरधी पंक्तिमा सगीतनी समानता छे, अने बन्ने वच्चे प्रास पण छे. पछीनी बे टूकी पंक्तिओ प्रासबद्ध छे, अने ते एक सगीतनु संपुट रचे छे. ए पछीनी पंक्तिने पेली बे टूकी पंक्तिओ साथे अर्थनो के सगीतनो सबंध नथी तो प्रास पण नथी. बन्ने दृष्टिए ते प्रथमनी पंक्तिओ साथे जोडायेली छे, तो एनी साथे एने प्रास छे. आम मूळ मात्रामेळ रचनामा नहोती एवीन बी ज खूबीओ आ देशीओ अने पदोमा आवे छे अने ए एटली बधी सूक्ष्म अने सख्याबंध छे के तेनु मात्र दिग्दर्शन ज करावी शकाय आ छेल्ली बे रचनाओ देशी करता पद तरीके वधारे ओळखाय छे. अत्यारे तो आवी रचनाने पद ज कहे छे.

मात्रामेळ रचनाओ साथे सरखावता देशीओ अने पदोमा अनेक छूटो के शिथिलताओ छे, (जो के ते स्वच्छद नथी) अने तेथी कोई पण देशीना संधिओ शोधवा माटे आखी देशीनु वारवार पठन करी तेनी आदर्श पंक्ति शोधी काढी पछी ते प्रमाणे तेनी उत्थापनिका करवी जोईए. दाखला तरीके प्रेमानन्दनी नीचेनी पंक्तिओ लईए :

म्हेते वजाडयो शरा, समर्या वनमाळी;
लागी हसवा चारे वर्ण, माहोमाहे दे ताळी :
केसर तिलक विशाळ भाले कीधा छे;
कोईए नाना बाळ केडे लीधा छे
कोई जोवा ठाली छाब अवळा ऊठे छे
कोई वहुवारु लजवाळ नणदां पूठे छे.

मात्र मात्राओ गणता आ देशीना सधिओ हाथ आवशे नही, अने अजमायश माटे जुदा जुदा कल्पीने लेता, साचा सधि शोधता घणी वार लागशे, पण अनेक वार पाठ करता आमा

केसर तिलक विशाळ भाले कीधा छे

ए पक्ति आदर्शपक्ति जणाशे. अने पछी बधी पक्तिओनो न्यास ए प्रमाणे करता मुश्केली नही जणाय आ आदर्श पक्ति लघु गुरुना उच्चारणमा सरल चाले छे अने तेमा बे ज जगाए प्लुतिनी मात्रा गणाशे — नीचे प्रमाणे :

केसर, तिलक वि,शा‿ळ, भाले; कीधा, छे – ;
कोइए, नाना; बा‿ळ, केडे ; लीधा, छे – ;

पंक्तिने अते बे मात्रा प्लुतिनी आवे छे, ते, आपणे जोई गया तेम, बधा ‿‿वृत्तसंधि छदोनी सामान्य खासियत छे. वचमा 'शा‿ळ' एम एक मात्रा प्लुतिनी आवे छे, ते अर्ध पक्तिए आवती आ देशीनी एक भंगी छे. ए जगाए कविए गा‿ल सधि मूक्यो छे अने वगाक वगाक ए स्थाने प्रास पण मेळव्यो छे आनो सधि अलबत्त चतुष्कल अने अष्टकल छे, अने रचना रोळानी छे ए देखीतु छे आटलु स्पष्ट थता आपणे आखी देशीनो न्यास करी शकीशु :

म्हे॑ते व,जाडयो; श‿रा, समर्यां, वनमा,ळी
लॉगी॑,] हसवा, चारे; व‿र्ण, मा॑हो॑मा॑हे॑; दे ता,ळी – ;
केसर, तिलक वि;शा‿ळ, भाले; कीधा, छे – ;
कोइए, नाना; बा‿ळ, केडे; लीधा, छे
को॑ई॑;] जोवा, ठाली; छा‿ब, अवळा; ऊठे, छे
को॑ई॑;] वहुवा रुलज; वा‿ळ, नणदां; पूठे, छे

आमां क्याई स्वच्छन्द नथी. बधा सधिओ बराबर पाटया आवे छे. अने कोई कोई पक्तिओमा आदिमा आवता द्विकलो अने तेमा गुरुओने लघु करवा

पड़े छे ते पंक्तिओनो वेग वधारे छे, महेतानी मश्करी करवा चढ़ेली नागराणीओना उत्साहनो वेग बतावे छे. आम देशी अर्थने अनेक रीते पोषे छे, अने शोभावे छे.

आपणे जोई गया छीए के जातिओमा चतुष्कल रचनाओमा अष्टकल संधि क्यांक क्यांक आवे छे, तेम ज त्रिकल रचनाओमा क्यांक षट्कल संधिओ आवे छे; आपणे ए पण जोयु के मूळ चतुष्कल रचना ज्यारे षट्कल देशी बने छे त्यारे तेना बधा ज कालमात्रा संधिओ त्रिकल विनाना केवळ षट्कलो दादादा बने छे. अर्थात् अहीं अर्धतालमात्रानो नहीं पण पूर्णतालमात्रानो संधि पद्यरचनामा वपरायो छे. अहीं आपणे एवा दाखला मात्र अष्टकलना अने षट्कलना जोया. ते सिवायना दस मात्राना अने तालना अने पाँच मात्राना दीपचंदीना एवा संधिओ पद्यरचनामा आवे छे खरा? आनो जवाब मात्र 'हा' के 'ना' थी आपी शकाय एवो नथी. हुं एक दाखलाथी आ वस्तुस्थितिनु पृथक्करण करवा प्रयत्न करु छु. नीचेनी पंक्तिओ घणी ब्राह्मण नातोमा जनोईने प्रसंगे स्त्रीओ गाय छे.

बडवा याने वडी हाथे वींटी हीरे जडी रे
बडवो जै बेठो छे दादाजीने खोळे चडी रे

आ गीत नीचे प्रमाणे दशमात्रामा गवाय छे

बडवा –] याने वडी –, हाथे वींटी–, हीरे जडी–, रे –
दादा दा] दादा दादा दा, दादा दादादा, दादा दादादा, दादा
बडवो –] जै बेठो छे–; दादा जीने–, खोळे चडी–, रे –
दादादा;] दा दादा दादा, दादा दादादा, दादा दादादा; दादा

प्रथम दादादा पछी दशकलो शरू थाय छे दरेक दशकलमा दादा अने दादादा एवा विभागो जणाई आवे छे. प्रथम दादादा बाद करतां, पछी त्रण दशकलो आवे छे, अने अंते आवतो 'रे' दादा बनी पछीनो पंक्तिना दादादा साथे जोडाई जाय, दशकल रची ले छे वळी पिंगलना पंच मात्रक दालदा

संधिमा आपणे जोयेलु के तेमा दालदा ए प्रमाणे पहेलो मुख्य अने बीजो गौण ताल छे. ए तालोथी पाच मात्राओ ३+२ एम विभक्त थती हती. उपरना गीतमा बराबर तेनी ज बमणी मात्राओ ४+६ एम ऊलटे क्रमे विभक्त थयेली देखाय छे. वळी दशकलोमा अंत्य बे मात्रा दरेक दशकलमा अनक्षर छे. एम घणी रीते आ रचना पिंगळनी संधिविन्यासपद्धतिने मळती, एनी

ज खूबीवाळी छे. छतां हुं आवी रचनाओने पिंगलमां मूकवाने बदले पिंगलना अने संगीतना संयुक्त सीमाडानी गणुं. एम करवानुं मुख्य कारण ए छे के पंक्तिना अक्षरो जोतां तेमा दशकलनी कल्पना थई शकशे नही. गमे तेटली वार रटण करतां पण ते दशकलोमां पडशे नही. एटले एने शुद्ध पिंगलनी गणतां वांधो आवे छे. अने तेम छता तेनी भंगीओ एवी-छे के एक वार गवाया पछी तेने पूर्णतालसंधिमा मूकतां तेनी खूबीओ जाणी शकाय. एटले आवी रचनाओनां केटलांक दृष्टान्तो हुं देशीओ अने पदोनुं निरूपण पूरूं थई रह्ये एक परिशिष्टमां मूकीश.

१४

समसंख्यसंधिबद्ध पंक्तिओनी देशीओ

गया प्रकरणमा आपणे जोयु के सगीतथी जातिछदोना सामान्य लक्षणोमा अनेक फेरफारो थाय छे तेमा एक फेरफार ए के रचनानी पक्तिओमा आवता सधिओनी सख्या बधी पक्तिमा एक सरखी रहेती नथी आ दृष्टिए जोता जे पद्यरचनाओनी पक्तिओमा सधिओनी सख्या एक सरखी रहेती होय ते रचनाओ मात्रामेळ छदोनी नजीकमा नजीकनी गणाय एटले आ प्रकरणमा जे रचनाओमा पक्तिमा आवता सधिओनी सख्या एक सरखी ज होय एवी रचनाओ लईशु आ रचनाओ घणी खरी बे प्रासबद्ध पक्तिओनी कडीवाळी हशे पण तेमा अपवाद पण आवशे कारण के कोई कोई रचनाओमा बे पक्तिना प्रासो नथी होता, एने बदले एमा एक आतर प्रास होय छे, जे एक पक्तिनु व्यक्तित्व, स्वतत्रपणु बतावना होय छे.

अही पण रचनाओनु निरूपण हु जातिछदोना प्रकारोने क्रमे ज करीश सौथी पहेला आपणे चतुष्कल रचनाओ जोईए अने तेमा प्रथम थोडकी रचनाओ जोईए चोपाई ज चतुष्कल रचनाओमा सौथी टूकी छे कोई कोई एथी टूकी रचनाओ मळे छे पण ते अतखडित चोपाईनी ज देशीओ छे ए टूकमा प्रथम जोई जईए.

ढाल ऊलालु

जीभ सरि समुखि होई
कोडि वरस कवि जोई

जैन गुर्जर कविओ १, पृ ५७

दादा दादा दागा एवी आनी उत्थापनिका थाय अर्थात् चोथु चतुष्कल अही अनक्षर रहयु छे आ ऊलालु जेवी ज आदोलनी रचना पण छे:

थाई थुमणि थोर
दौलई दोहर दोर,
कचण चूडी ए
रणकइ रूयडी ए

आपणा कविओ, पृ ३३४

अहीं प्रथम बे पंक्तिओ दादा दादा गाल छे अने ते पछीनी बे दादा दादा ए/गा छे, एटले त्रीजु चतुष्कल पण एक मात्रा जेटलुं सडितुं थयु छे, अने द्वितीयार्धमा तो त्रीजुं चतुष्कल पण मात्र एक तालपूरक्थी पुरायु छे आ रचनानो वपराट विरल छे नरसिंह, चातुरीमा ढाळना मुख तरीके बे पंक्तिओ वापरे छे ते उपरनाने मळती ज छे

आजनी, रजनी, जी साभळ, सजनी, जी

नरसिंह महेता कृत काव्यसग्रह, पृ १२०

आ रचना चतुष्कलमा बेनी रहे छे पण यदाच षट्कलोमा गवाती हशे

आजनी, रजनी, जी – –, सांभळ, सजनी, जी– –, ए प्रमाणे.

'जूना काव्योमा दाणोका आवे छे, तेनो अक्षरदेह आ चोपाई जेवो ज जणाय छे जेम के अमराम कुळिना श्लोका

सरस्वती माता ब्रह्मानी बेटी,
बुध्यनी दाता विद्यानी पेटी
गणपत देवना चर्ण आराधु
मान मागीने जिव्हा हु साधु १

मोटा सूवाना करू वखाण,
समजी लेजो चतुर सुजाण
दरलीनो बादशाह् मेहमद शाह जीवा,
नवखंडमा प्रगटचो छे दीवो २

सोमा शिरोमण गुजरात थापी
हेमदखानने सुदागरी आपी
राज भोगवे करे कलोल
शेहेरमा कीत्या मसवाडा सोळ ३

गुजराती सुगला चतुर सुजाण
त्रण्ये भाईना करू वखाण
वडा ते वीरा सुजातखान
तेने पादशाहना अति घणा मान ४

बुद्धिप्रकाश, २३, पृ १९४ सने १८७६

घणी वार देनो कोई मात्रामेळ रचनानी घणो य नजीक चाले छे अने त्यारे ते ते रचनानी देनी तरीके ओळखाय छे आ संदर्भमा तोटकनी चाल एनो सारो दाखलो छे तोटक जो के मूळ ग्गारमेळ छे, पण मेळनी दृष्टिए थोडघो जातिरचना छ तेना उपरनी देशी तेने घणी मळती छे:

पुरुषोत्तम परजनेत्र नमो,
परिपूरण ब्रह्म पवित्र नमो,
रवि कोटिमल्लार रूप नमो,
भगवान सुरासुर भूप नमो.

मृ. मा दो १, पृ. ५५१

अही 'नमो'नो ध्रुवपद अने ते पहेला आवतो प्राग ए देशीना लक्षणो छे. जो के ते उपरात ते देशीमा गवाती तो हशे प उपरनी रचना शुद्ध तोटक छे अने गावामा पण शुद्ध चतुष्कलोमा गाई शकाय एवी छे. पण आपणे आगळ जोईए

भणे इन्द्र मुनीन्द्र उपेन्द्र नमो,
वरणावर श्री हरिचद नमो,
सच्चिदानद श्री अविनाशी नमो,
कमळावर वैकुठवासी नमो

एजन

तोटक जेवी लागती पण आ रचना चतुष्कल रचनाथी दूर गयेली छे अने तेनो अक्षरविन्यास जोता ते षट्कलोमा गवाती हशे एम जणाय छे जरा विलबित लये तोटकना प्रवाहमा गाता ज स्वाभावि रीते षट्कलोना प्रवाहमा पडी जवाय षट्कलोमा तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

भणे] इन्द्र मु,नीन्द्रउ, पेन्द्रन, मो
वरु,] णावर, श्री अवि,नाशी न,मो
सच्चि] दानन्द, श्री अवि, नाशी न; मो
कम] ळावर, वैकुठ, वासीन, मो

आ पक्तिओ शुद्ध तोटकमा पठी ज नही शकाय अने छता एने तोटक साथे सबध छे ए स्पष्ट छे खरु तो एम बने छे के तोटकनो मूळ भ्यक्षर सधि अही षट्कल बनता, मनहर जेवी एक नवी सख्यामेळ रचना बने छे, मनहरमा आठ मात्रानो चतुरक्षर सधि आवे छे, अही छ मात्रानो

त्र्यक्षर संधि आवे छे बनेमा पछी लघुगुरुनो भेद रहेतो नथी, दरेक अक्षर द्विमात्र बने छे डिंगलमा जोयेलो रहचाल (गत पृ ४८६, ५०९–१०) आवी त्र्यक्षर रचना छे उपर जता तोटकनी चाल्ना अवतरणो आवी गया ते ज कवि आगळ जता तोटकनु नाम आप्या विना गोडी गुर्जरीनी देशी आपे छे ते पण तोटकनी देशी ज जणाय छे

राग गोडी गुर्जरी
वर] आपी व,ळ्या चतु,रानन, जो,
पछे] भूपनु, फूल्यु–, तनमन, जो,

एजन, पृ ५५९

आ पण उपर बताव्या प्रमाणेना पट्कलोमा चाल्तु मालूम पडशे अही सर्वल्पु चतुष्कल 'तनमन'मा पहेला बे लघु पठाशे अने म अने न गुरु पठाशे आ हु मात्र अनुमानथी कहेतो नथी अमारी (प्रश्नोरा नागर ब्राह्मणनी) नातमा आवी तोटकनी चाल पट्कलोमा गवाती में साभळी छे तेमाथी थोडी पक्तिओ उतारु:

दरबार तज्या दुरयोधनना,
मधुसूदन आदर मान विना,

विदुरनो भाव, लखनार मडडाकर नागर पृ १५

आ शुद्ध तोटक छे पण ते पट्कलोमा गवाय छे दरेक ल्लगा चतुष्कलना लघुओ, गवाता गुरु बने छे अने ताल ल्लगाना गा उपर आवे छे गागागा ए रीते अही सळग ल्लगा छे पण ए पट्कल छे तेथी कवि बे लघु मूकवानी दरकार करतो नथी आनी पछीनी पक्तिओमा ज ए प्रतीत थशे

जळहळे गोख आकाशथी जाळिया,
सुंदिर मंदिर मेडीने माळिया,
नवरंगी चित्रामण जे नाळिया,
जडघा काच लोला ते भीये ढाळिया

एजन, पृ १६

आमा बे लघुवाळो ल्लगा क्वचि क्याक ज देखाशे 'जळहळ'मा 'जळ' लघु पठाय छे, अने 'ह' अने 'ळे' बन्ने गुरु पठाय छे घणाखरा त्र्यक्षर संधिओ छे, अने तोटकनी पटकज चाले गवाय छे क्याक तो त्र्यक्षरने बदले चतुरक्षर अने द्वयक्षर संधिओ पण आवे छे

१४. समसख्यसंधिबद्ध पक्तिओने.

भिक्षुकोनी पेठे विदुर पेट भरे,
ते कृष्ण तणी नोकरी शू करे?

एजन, पृ २६

पक्तिओना पट्कल सधिओ नीचे प्रमाणे पडे छे:

भिक्षुको, नी पेठे, वीदुर पे,ट भरे
दादादा, दादादा, दादादा, दादादा
ते–कृ, ष्ण तणो, नोकरी, शू करे
दादादा, दादादा, दादादा, दादादा

'वीदुरपे' एमा चार अक्षरे पट्कल थाय छे, अने 'ते–कृ' मा बे अक्षरे पट्कल थाय छे आगळ उतारेल गोडी गुर्जरीनी बधी अनियमितता आमा आवे छे माठु तोटकनु छे

आ ज पट्कलविधान गालल सधिना आवर्तगोवाळी रचनामा पण बने छे; न्हानालालनी 'विलासनी शोभा' काव्यमा आवती गीतरचना आ प्रकारनी छे तेनी पहेली चार पक्ति पट्कलोमा गदाय छे ए रीते उतारु छु:

ओ सखि!, ओ मुज, देखि प,धारो–, आ वन,नो निर,खो महि,मा– –
तेज त,णा भरि,या सुस, रोवर, तेजस, त्या रम,लो छप,छपा– –
तेजने, माडव, तेजना, पुष्पो–,तेजनु, मदिर, रस नु ब,ढू– –
तेजनी, वेलीशु, लावेशु, लोनिज, अन्तर, म्हारुय, झोलेच,ढ्यु– –

बेटलाक काव्यो, भाग० २, पृ. ५३

आ काव्य पट्कलोमा उपर प्रमाणे गदाय छे आ सबधी कवि पोते कहे छे·
"गुजराती पिंगळमा बावीश अक्षरना अक्षरमेळ बावीसा सवैया जाणीता छे, ए आ ढाळनु शुद्ध वधारण मानी शकाय ते सवैयाने मात्रामेळ कर्ये, तेमा बे कम्हाक कम्हाक मात्राओ वधार्ये पण आ ढाळनु रूप साधी शकाशे"

एजन, टीका पृ ११

महीं कहेलो बावीसो सवैयो ते दलपतपिंगलनो मदिरा छे

।   ।   ।   ।   ।   ।   ।   ।
गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा अक्षर २२

उपरनी गरबी बावीसो सवैयो छे एम कह्यु छे ते यथार्थ छे पण ते शुद्ध अक्षरमेळ होय तो तेने मात्रामेळ कर्या पछी पण तेमा क्याक क्याक मात्राओ वधारी न शकाय ए सिद्धान्त कविना ध्यानमा नथी खरी रीते उपरनी रचना मूळ चतुष्कलनी पण देशी थता पट्कलमा पडे छे अने दरेक मूल चतुष्कल पट्कल

थवाने लीधे तेमा मात्रा वधारी शकाय छे पहेली ये पंक्तिमा सर्वत्र चतुष्कलो ज छे, एवं 'धारा' शिवाय बधा गालल पण छे पण पछी त्रीजी पंक्तियो ज मूळ गाल्लमा मात्राओ वधता माडे छे, अने छाली गरबीमा पण पछी मात्रा वधीने थयला पट्कलो ज आवे छे

आ देशीने अंगे थतो चतुष्कलनो विचार के विस्तार हिंदी पिंगल 'छन्द प्रभाकर'ना ध्यानमा पण छे सवैयाना ल्गात्मक छन्दो आपता मत्तगयद (इन्द्रविजय)नु स्वरूप आपी ते लखे छ

"सवैयाओमें अर्थात् मदिरा, चकोर, मत्तगयन्द, सुमुखी, किरीट, प्रभृति वृत्तोमें बहुधा गुरुलघुका क्रम ठीक न मिलनेके कारण विद्यार्थियोको भ्रम होता है कि यथार्थमें यह सवैया है या कोई विशेष मात्रिक छद है। इसका एक उदाहरण नीचे देते हैं यथा—

आई भले हौं चली सखि मानमें पाई गोविंदके रूपकी झाकी
यह भगणके लिये इस प्रकार पढा जायगा।
आइ भले हु चली सखि मानम पाइगु विंदक रूपकि झाकी
'छन्द प्रभाकर, पृ २०३

'प्रभाकर' अही भाषा पर अत्याचार करीने पण शब्दोने मूळ गालल रुपमा ठासवा मागे छे पण एम करवानी जरूर नथी खरी वात तो ए छे के ए गालल रुप पट्कल बन्यु छे अने तेथी वधारे मात्राने अवकाश मळे छे आथी गाल्लनु जे नवु स्वरूप बने छे तेनो प्रख्यात दाखलो गगनु नीचेनु काव्य छे

ताराकी ज्योतमे चन्द्र छूपे नहि
सूर छूपे नहि बादर छायो।
चचल नारीको नैन छूपे नहि
दाता छूपे नहि मागन आयो।
रन चढयो रजपूत छूपे नहि
प्रीत छूपे नहि पीठ दिखायो।
कहे कवि गग सुणो शाह अकबर
कर्म छूपे न भभूत लगायो।

आमा त्र्यक्षर नधिता बीजा केटलाक रूपो मळी रहेशे 'ताराकी,' 'नारीको' गागागा छे 'रन च' ललल छे 'ज्योतमें,' 'नैन छू' गालगा छे पठन करता मालूम पडशे के आमा मूळ गालल रूप नष्ट थई तेनी जगाए त्र्यक्षर

दादादा वीज आवेलु छे रचना बधी रीते मनहर जेवी थई गई छे फेर मात्र एटलो के मनहर चतुरक्षर संधिनी रचना छे, अने उपरनी त्र्यक्षर संधिनी रचना छे बाकी बन्नेमा चारेय पंक्तिओमा सळग प्रास छे, (हिंदी पिंगल प्रमाणे सवैयामा चारेय पंक्तिमा सळग प्रास जोईए) बन्नेमा दरेक पंक्तिमा संधिना शास्त्र आवर्तनो आव्या पछी आठमु खंडित थाय छे आ प्रमाणे आ मूळ चतुष्कलनु षट्कलीकरण घणा नवा रूपानु निष्पादक बने छे

आ रीते ललगा अने गालल बनेमाथी षट्कल त्र्यक्षर संधि निष्पन्न थाय छे पण बन्नेमा एक फेर रही जाय छे ते ए के ललगामाथी निष्पन्न थता संधिमा छेल्ला गा उपर ताल आवे ज्यारे गाललमाथी निष्पन्न थता संधिमा पहेला गा उपर ताल आवे अहीं गा ललगा अने गालल संधिनी देशीओनु प्रकरण पूरु करी मूळ षोडशी जातिओनी देशोना ढाळो उपर जईए

आपणा कविओनी घणी देशीओ चोपाईनी छे कडवाना मुखबंधमा घणी वार चोपाईनी रचना आवे छे 'कादंबरी'नी पंक्तिओ

अति ऊचु ने शाखा प्रूढ जी
वनकलि ढांकि कोटर गूढजी

अति] ऊचु ने, शाखा –, प्रूढ –, जी
वनकलि,] ढांकि–, कोटर, गूढ –, जी

आ प्रमाणे षट्कलो आवे पण गावामा नीचे प्रमाणे अक्षरविन्यास कराय छे, अने ए वधारे खूबीवाळो छे

अति] ऊचुने, शाखा –, – प्रूढ, जी
वनकलि,] ढांकी –, कोटर, – गूढ, जी

अहीं त्रीजा षट्कलनो ताल धनक्षर मात्रा उपर पडे छे अने गावामा ए भगी सुदर लागे छे घणी देशीओमा आपणे आ खूबी जोईए छीए

हवे एक बीजो प्रकार लईए

राग गरबी

शोभा शी कहु रे रूडी,
वरणन करता जाय चित्त बूडी,
हरिवर जोया रे रगमा,
मोहि हु तो रसियाजीना अगमा १

बृ का दो १, पृ ८०३

चतुष्कल तालनी ज रचना छे न्यास नीचे प्रमाणे :

शोभा, शी कहु, रे–, रूडी,
वरणन, करता, जॉयचित, बूडी,
हरिवर, जोया, रे–, रंगमा,
हू तो, रसिया, जीना, अंगमा,

देशीनी खासियत ए छे के तेमा विषम पक्तिमा पक्तिना अर्ध एटले एक अष्टकल पछी चार मात्रानो रे आवे छे

न्हानालालनी गरबी

सुखदुख आवे रे–स्हेजो
मार्जीना चरणकमलमा रहेजो

उपर प्रमाणे ज छे न्हानालाले घणी जगाए ए रीते स्वामीनारायण सप्रदायना ढाळोनो उपयोग कर्यो छे

लग्नगीतनी नीचेनी पक्तिओ पण आनाथी उरा उदी १८ चोपाईनी ज देशी छे

एक झारा उपर झारी रे
ए तो कन्या थै अमारी रे

गावामा नीचे प्रमाणे सधिओ पडे छे·

एक, झारा, ऊपर, झॉरीरे,
एतो, कन्या, थै अ, मॉरी रे,

देशीओमा आम घणी वार गुरुओने टूका करेला होय छे

अही चोपाईनी देशीओ पूरी करी आपणे रोळानी देशीओ लईए.

पद राग गरबी

हरिजन साचा रे जे उरमा हीमत राखे,
विपते वरची रे कदि दीन वचन नव भाखे १
जगनु सुखदुख रे माइक मिथ्या करी जाणे,
तनधन जाता रे अतरमा शोक न आणे २
पर उपकारी रे जन प्रम नियममा पूरा,
देहिक दुखमा रे दाझे नहि साधू शूरा ३

वृ का दो ३, पृ ६८१

वृति बहु ज सफाईवाळी छे चतुष्कलो सुंदर रीते चाल्या आवे छे. आ देशीनु एक लक्षण ए छे के पहेला बे चतुष्कलो पछी द्विकल रे आवे छे. रोळामां अगियारमी मात्राए यति आवती हती. अहीं रोळानी ९मी अने १०मी मात्रा 'रे' थी थने छे. आथी जरा फेरवाळी बीजी रचना लईए.

गरबा छंद

केशव कृपानिधान अरजो उरमा आणो;
भक्तप्रिय भगवान जीवदया मन जाणो. १
सेवकने सनमान, धरिने सोंपो धामु,
दास हुं ठरी दुकान नित्य लउं निज नामु. ६
रहता राजद्वार पंडित थईने पक्का;
देवडिए छडिदार सहि ले तेना धक्का. २३

वृ. का दो १, पृ. ७४६–४७

उपर जेवी सफाईवाळी अने जरा वधारे खूबीवाळी आ रचना छे. चतुष्कल विन्यासथी ए वधारे स्पष्ट थशे

केशव, कृपानि, धा-न, अरजो; उरमा, आणो;
भक्त, प्रिय भग, वा-न, जीवद, यामन, जाणो,

वृ. का. दो १, पृ. ७४६

त्रीजुं चतुष्कल सर्वत्र गा-ल आवे छे, अने बन्ने पंक्तिओनो ए मध्यसंधि प्रासथी जोडायेलो छे अने आगळ जोयेली

गरबा छंद

आज मने आनंद वाध्यो अती घणो मा,
गावा गरबाछंद बहुचर माततणो मा
रसना जुग्म हजार ते रटने हार्यो मा;
ईशे अंश लगार लै मन्मथ मार्यो मा.

वृ का दो २, पृ. ६८७–८८

आ पण उपर जेवी सुघड सुरेख रचना छे फेर मात्र एटलो छे के आमां 'मा' शब्द ध्रुवखंड तरीके आवे छे

आ बन्ने रचनाओ मूळ रोळाथी केवी रीते जुदी पडे छे ते जरा जोईए. रोळा अने आ रचना, बन्नेनो न्यास पासे पासे मूकीए.

रोळा : दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा
गरबो दादा दादा गा॰ल' दादा दादा दादा

रोळाना त्रीजा चतुष्कलमा यतिने लीधे साधारण रीते दाल तो आवतुं हतुं अने ते पछी एक लघु आवी चतुष्कल पूरु थतु हतु. अही ए यति आगळना दालनु ज गा॰ल करी आखु चतुष्कल बनाव्यु, अने ए गाल्यान्त खडोनो एक मध्यप्रास बनाव्यो पठन करी जोता आ नवी भगी आ ज रीते अस्तित्वमा आवी एम लागशे. पण आम थवाथी दादा दादा गाल एक यतिखड बने छे अने ते दोहराना उत्तर यतिखड जेवो ज देखाय छे. अने छता एम नही कही शकाय के उपरना गरबा छदमा पूर्व यतिखड ए दोहरानो उत्तर यतिखंड छे.

हवे बीजी जातनी देशीओ लईए :

थाळ

कारेला कडवा रे रूडो रसपोळी
हरि हेतें जमाडु रे घीमा झबकोळी
अळवीने सूरण रे मेथीनी भाजी
कढीने कूरज रे तरत करी ताजी
राइना अथाणा रे गगाजळ झारी
प्रेमीजन कहे छे रे ए छे बहु सारी
बृ का. दो. २, पृ. ६९७

चतुष्कलोनो न्यास नीचे प्रमाणे छे.

का।] रेला, कडवा, रे—, रूडो, रसपोळी
हरि;] हेतें'ज, माडु; रे–, घीमा, झबकोळी

अही पहेली बे मात्राओ निस्ताल छे, ते पछी चतुष्कलो चाले छे. बीजु चतुष्कल पूरु थया पछी एटले प्रारभथी गणता दस मात्रा थया पछी चार मात्रानो प्लुत 'रे' आवे छे, अने तेनु स्थान नियत छे, तेथी ते देशीनु लक्षण बने छे क्वचित् आ 'रे' ओछी मात्रानो होय तो पण चाले—ज्या सुधी एनु स्थान नियत होय त्या सुधी जेम के

अवि]नाशी, आवो; रे–, जमवा; कृष्ण ह, रि
श्री,] धर्म भक्तिसुत, रे॰ज, माडु, प्रीत क, री

बीजी पक्तिमा 'रे' त्रण मात्रानो छे, एटला अपवादथी देशीनु लक्षण बदलाई जतु नथी .

आनायी जरा भिन्न दाखलो लईए:

राग गरबी

सती नारनु साधन रे, के हरिवरने गमवा;
सती देह दमे छे रे, के रसिया सग रमवा. १
लगनी दृढ लागी रे, के श्यामळिया सगे;
सती रसवश थै छे रे, के रसियाने रगे. ४

बृ. का. दो. २, पृ. ६३२

सती] नारनु, साधन; रे-कें, हरिवर; ने गम,वा
सती;] देहद, मे छे, रे-कें, रसिया; सग रम,वा
एम चतुष्कलो पडी रहे छे ठना रचना मिताली चोपाईनी पेठे षट्कलमा पण स्वाभाविक रीते पडी शके छे

सती] नारनु; साधन, रे-के, हरिवर; ने गम; वा
दादा दादादा दादादा, दादादा दादादा; दा दादा; दा

सती;] दे ह द; मेछे -, रे -के; रसिया-, सगरम, वा
दादा; दादादा; दादादा, दादादा, दा दादा, दादादा, दा
आ बन्नेमा गाई शकाय छे पण नीचेनी षट्कलोमा ज लेवाशे. हठथी चतुष्कलोमा नाखवा जता शोभशे ज नहीं

पद राग गरबी

व्हाले मोरली लीधी छे हाथ वजाडे छे घेरी रे,
आवी ऊभा छे जमुनाने तीर पीतांबर पेरी रे ३
व्हाले पेर्या छे फुलडाना हार बाध्या छे बाजु रे,
एने ल्हेके छे कानो माय कुडलिया काजु रे ४
व्हाले मृगला पमाडया मोह वनोने नादे रे,
हरि गाय छे सुदर गीत मधुरा सादे रे. ५
हरिने हेते करीने हाथ झाल्यानो हेवा रे,
सखी ब्रह्मानदनो नाथ रमवा जेवा रे ६

बृ का दो. १, पृ. ७९१

उत्थापनिका

व्हाले] मोरली, लीधीछे, हाथव; जाडेछे; घेरी -; रे
दा दा] दादादा दादादा दादादा दादादा दादादा दा

रोळा : दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा
गरबो दादा दादा गा-ल' दादा दादा दादा

रोळाना त्रीजा चतुष्कलमा यतिने लीधे साधारण रीते दाल तो आवतु हतु अने ते पछी एक लघु आवी चतुष्कल पूरु थतु हतु अही ए यति आगळना दालनु ज गा-ल करी आखु चतुष्कल बनाव्यु, अने ए गालान्त खडोनो एक मध्यप्रास बनाव्यो पठन करी जोता आ नवी भगी आ ज रीते अस्तित्वमा आवी एम लागशे पण आम थवायी दादा दादा गाल एक यतिखड बने छे अने ते दोहराना उत्तर यतिखड जेवो ज देखाय छे अने छता एम नही कही शकाय के उपरना गरबा छदमा पूर्व यतिखड ए दोहरानो उत्तर यतिखड छे

हवे बीजी जातनी देशीओ लईए

थाळ

कारेला वडवा रे रूडी रसपोळी
हरि हेतें जमाडु रे घीमा झबकोळी
अळवीने सूरण रे मेथीनी भाजी
वढीन कूरज रे तरत करी ताजी
राइना अथाणा रे गगाजळ झारी
प्रभोजन व्हे छे रे ए छे बहु सारी

वृ का दो २, पृ ६९७

चतुष्कलोनो न्यास नीचे प्रमाणे छे

का] रेला, वडवा, रे—, रूडो, रसपोळी
हरि,] हेतें ज, माडु, रे—, घीमा, झबकोळी

अही पहेली ब मात्राओ निस्ताल छे, ते पछी चतुष्कलो चाले छे. बीजु चतुष्कल पूरु थया पछी एटले प्रारभथी गणता दस मात्रा थया पछी चार मात्रानो प्लुत 'रे' आवे छे अने तेनु स्थान नियत छे, तेथी ते देशीनु लक्षण बने छे क्वचित् आ 'रे' ओछी मात्रानो होय तो पण चाले—ज्या सुधी एनु स्थान नियत होय त्या सुधी जम के

अवि]नाशी, आवो, रे—, जमवा, कृष्ण ह, रि
श्री,] धर्म भक्तिसुत, रे-ज, माडु, प्रीत क, री

बीजी पक्तिमा 'रे' त्रण मात्रानो छे, एटला अपवादथी देशीनु लक्षण बदलाई जतु नथी

आनायी जरा भिन्न दाखलो लईए:

राग गरबी

सती नारनु साधन रे, वे हरिवरने गमवा;
सती देह दमे छे रे, वे रसिया सग रमवा. १
लगनी दृढ लागी रे, वे श्यामळिया सगे,
सती रसवश थै छे रे, वे रसियाने रगे ४

बृ का दो. २, पृ ६३३

सती] नारनु, साधन; रे-वे, हरिवर, ने गम,वा
सती;] देहद, मे छे, रे-वे, रसिया; सग रम,वा

एम चतुष्कलो पडी रहे छे छता रचना त्रिताली चापाईनी पेठे षट्कलमा पण स्वाभाविक रीते पडी शके छे

सती] नारनु, साधन, रे-के, हरिवर, ने गम, वा
दादा दादादा दादादा, दादादा दादादा, दा दादा, दा

सती,] दे ह द, मेछे –, रे –वे, रसिया–, सगरम, वा
दादा, दादादा, दादादा, दादादा, दा दादा, दादादा, दा

आ बन्नेमा गाई शकाय छे पण नीचेनां षट्कलोमा ज लेवाते हठथी चतुष्कलोमा नाखवा जता शोभश ज नहीं

पद राग गरबी

व्हाले मोरली लीधी छ हाथ वजाडे छे घेरी रे,
आवी ऊभा छे जमुनाने तीर पीताम्बर पेरी रे ३
व्हाले पेर्या छे फुलडाना हार बाध्या छे बाजु रे,
एने ल्हेके छे कानो माय कुडलिया काजु रे ४
व्हाले मृगला पमाड्या माह वसीने नादे रे,
हरि गाय छे सुदर गीत मधुरा सादे रे. ५
हरिने हेते करीने हाथ झाल्यानो हेवा रे;
सखी ब्रह्मानदनो नाथ रमवा जवा रे ६

बृ का दो १, पृ. ७९१

उत्थापनिका

व्हाले] मोरली, लीधीछे, हाथव, जाडेछे; घेरी –, रे
दा दा] दादादा दादादा दादादा दादादा दादादा दा

आवी] ऊभाछे; जमनाने; तीरपी; तावर; पेरी–; रे
दादा] दादादा; दादादा; दादादा; दादादा दादादा; दा
हरिने] हेतेक; रीने–; हायझा; ल्यानो–; हेवा–; रे
सखी] ब्रह्मा–; नदनो, ना–थ; रम वा–; जेवा–; रे

अते द्विकल 'रे' आवे छे, अने तै पछीनो पक्तिना निस्ताल चतुष्कल साथे जोडाईने पट्कल बने छे ए देखीतु छे पण बीजी कदाच तरत ध्यानमा न आवे एवी खूबी ए छे के त्रीजा पट्कलमा दरेक पंक्तिमा गाल आवे छे. आने रोळानो ज भगी गणवी जोईए. रोळामा त्रीजा चतुष्कलमा दाल' आगळ शब्दान्त यति आवती एवी ज रीते अही त्रीजा पट्कलमा आवे छे. एम थवाथी पक्ति त्रिताली चोपाई जेवी जणाय. जेम के:

म्हाले मोरली लीधी छे हाथ
आवी ऊभा छे जमनाने तीर
हरिने हेत करीने हाथ

उपरनी पक्तिओ त्रिताली चोपाई जेवी छे, पण ए उपरथी त्रिताली चोपाईनी पक्ति आ देशीना बधारणमा छे एम कहेवु यथार्थ नथी. पठन करतां स्पष्ट जणाशे के जेम त्रिताली चोपाई पट्कलोमा वहेती तेम ज आ रोळा पट्कलोमा वहे छे चोपाई करता रोळा लाबो छे, एटले चोपाईनी पक्तिना अंत आगळ शब्दान्त आवता चोपाईनी पक्ति जोवी होय तो जोवाय पण एम करवाने बदले एम कहेवु ज योग्य छे के अही रोळामा अमुक स्थाने गाल आवे छे एवी भगी छे अहीना गाल आगळ पट्कल पण पूरु थतु नथी. पछीना पट्कलनो आद्याक्षर गाल साथे जोडाय छे: 'हाथव' 'तीरव' ए प्रमाणे. पण छेल्ली पक्तिमा 'नाथ' आवु पट्कल पूरे छे त्या पण एने चोपाईनी पक्ति कहेवी अप्रामाणिक छे जेम चोपाईमा गाल आवे छे ए एक घोडनी रचनानी भगी छे, तेम अही मध्यमा गाल आवे ए एक रोळानी भगी छे. बन्नेमां भगीनी प्रक्रिया एक ज छे जेम आ प्रकरणमा आगळ आपेला गरबाछदना यतिखडो दोहराना उत्तर यतिखडो जेवा छे, छता त्या दोहरानो यतिखड नथी लेना जेवु ज आ छे कवि न्हानालालनो प्रसिद्ध गरबी

मारा नयणानी आळस रे न निरख्या हरिने जरी;
एक मटकू न मायूं रे न ठरिया हारी करी.
केटलाक काव्यो – भा. २. पृ.९६

उपरना ज काठानी छे:—' [सहेलाईथी समजाय तेवा लघुना गुरुचरणो चिह्नित कर्या नथी]

मारा] नवणानी; आळस, रे–ने; गिरख्या–; हरिने ज; री

एक,] मटकू न, मार्यु–, रे–,न; टरिया–; झासी व; री

रोळामा ध्रुवखड आवतो होय, अने ए ध्रुवखड बाद करता बाकी चोपाईनी पक्ति ज रहेती होय त्यारे ए देशीमा चोपाईनु काठु वधारे बहार पडनु देखाय, जेम के

वागी स्वयवरमा हाक, ते नळ आव्यो रे;
भागा भूप सर्वना नाक, ओ नळ आव्यो रे
जाणे उदयो नैषध भाण, ते नळ आव्यो रे;
अस्त थया सौ तारा समान, ओ नळ आव्या रे

वृ का दो १, पृ. १५१

वागी] स्वय–, वरमा, हा–क, ते नळ, आव्यो–, रे

भागा,] भूपस,वंना–, ना–क; ओ नळ; आव्यो–, रे

ध्रुवखड अर्थनी दृष्टिए तरत अलग पडी जाय छे एटले बाकीनी पक्ति अलग जोवानो प्रसग मळे छे छता सगीतनी दृष्टिए ध्रुवखड साथेनी आखी पक्ति ए ज रचनानु एकम छे रचनी वखते पण कवि मनमा चोपाई रचीने ध्रुव खडो वळगाडी देतो हशे एम मने लागतु नथी रचना दरमियान ध्रुवसहित आखी पक्तिने ए गणगणतो हशे एवी मारी कल्पना छे तेम छता कवि पण आ चोपाईनी पक्ति जोई शके एम हु मानु छु अत्यारनो कवि तो अवश्य जोई शके. रचनाव्यापार वखते ते ए भाग विशे सभान होय, अने तेथी ए भागने चोपाईनी दृष्टिए पण साथे साथे सुघड करतो जाय ए शक्य छे एटले आ रचनान रोळामा आवती चोपाईनी भगी कहेवी होय तो कही शकाय. पण ए रचना तो रोळानी ज छे नरसिंहनु एक रोळानु पद जोईए:

पद २ जु

वद्रावनमा माननी मध्ये मोहन राजे,
वठे परस्पर बाहूलडी धून नेपूर वाजे १
काला कृष्ण त्या सचरे, नाद निर्घोष थाय,
मडप माहे भलपता, व्हालो वासळी वाय ५
ताळी देता तारुणी, झाझरनो झमकार,
कटि किंकिणी रणझणे, घुघरीना घमकार. ७

घन रे धन ए सुंदरी, घन शामळवान,
नरसैंयो त्या दीवी घरी रह्यो, करे हरिनु गान ८

नरसिंह मेहेताकृत काव्यसग्रह, पृ १८७-८८

आना षट्कलो नीचे प्रमाणे पडे

वद्रा-, वनमा-, मा-न, नो मध्ये, मोहन, राजे-,
कठेप, रस्पर, बाहुल, डी धून, नेपुर, बाजे-,

मडप, माहे-, मल-पं, ताव्हालो, वासळी, वाय-,
ताळी-, देता-, ता-रु, णी झाझर, नौझम, कार-,

कटि-, किंकिणी, रण-झं, णे घुघरी, नाघम, कार-,

घन रे-; घन ए-, सु-दं, रीघन, शामळ, वान-,
नरसैंयो, त्या दीवी, घरीर, ह्योकरे, हरि नु-, गान-,

षट्कलोमा अक्षरनी वहेंचणी कोई क्याक जुदी रीते पण करे, पण गवाता एकदर आ रीते अक्षरो वहेंचाय हवे आ देशी वाचता अदर केटलीक पक्तिओ दोहरानी जणाय छे उपरना अवतरणमा ५ अने ७ सख्यावाळी कडीओ दोहरानी लागे तो प्रश्न ए थाय छे के आ देशीने दोहरानी देशी गणी शकाय? आ आखी कृति जोता तो तेमा दोहरा अकस्मातथी आवतो जणाय छे दोहराना अर्धनी मात्राओ २४ थई रहे छे एटले दोहरो रोळा जेवो देखाय ए सभवित छे पण आ आखी कृति दोहराना नमूना पर थई नथी ज १ली अने ८मी कोई रीते दोहरामा बेसे तेवी नथी एटले आने दोहरानी नही पण रोळानी ज देशी कहेवी जोईए छता तेमा त्रीजा षट्कलमा दालदा लावे छे, अने अत गाल आवे छे ते दोहराना जेवी भगी छे एटलु स्वीकारवु जोईए आगळ जोई गया तेम केटलीक देशीओमा धुवखडो बाद करता बाकीनी खडित पक्तिओ वधारे दोहरा जेवी जणाय छे जेम के —

पछी सुदामाजी बोलिया, सुण सुदरी रे,
हु बहु ते शिख मान, घेली कोणे करी रे,
जे निर्म्यु छे ते पामिये, सुण सुदरी रे,
विधिए लखी बुद्धिहाण, घेली कोण करी रे

बृ का दो १, पृ २४२

षट्कलोमा अक्षरविन्यास नीचे प्रमाणे थाय

पछी सु, दामोजी, बो-लि, यासुण, सुदरी, रे--;
हु बहु; ते शिख; मा-न, घेली को, णे करी, रे-

जे;] निर्म्यु–; छे ते–, पा–मि, में गुण, सुंदरी; रे
विधि;] ए लखी; वृद्धि–; हा–ण, घेली को, णे मरी, रे

आमा दोहरानी भंगी वधारे सारी रीते प्रतीत थाय छे आमा ध्रुवखडो बाद करता विषम पंक्तिने अते दाल्दा अने समपंक्तिने अते गाल एवधार चाल्यु आवे छे, अने प्रास गालना ज मळे छे, ए बन्ने लक्षणो दोहराना ज छे तेम छता आखी पंक्ति रोळानी छे, ए तरफ दुर्लक्ष न करवु जोईए मन पठनसमये त्या अमुकभंगीविशिष्ट रोळा ज मूर्त थाय छे अलबत्त आगळ आवा प्रसगे कह्यु हतु तेम रचनार रोळा साथे साथे दोहरा तरफ पण समान रही रोळाना काळामा दोहरो पण उतारे ए सभवित छे एवो एक दाखलो मळी पण रहे छे अने ते पण एक प्राचीन कविमाथी.

कडवु ३२. राग रामग्री

वचन प्रभुना सामळी मन वाळीए जी
चरणे कर्या प्रणाम बोल्यु पाळीए जी
एक अमारी वीनती मन वाळीए जी
साचु सुणीए स्वाम बोल्यु पाळीए जी

बे नळाख्यान, पृ ५७

अही ध्रुवखडो बाद करता शुद्ध दोहरो रहे छे :

वचन प्रभुना सामळी, चरणे कर्या प्रणाम
एक अमारी वीनती, साचु सुणिये स्वाम

आपणे पट्कलोनो न्यास जोईए

वचन प्र,भूना–, सा–म, ळी मन, वाळीए, जी – –;
चरणे–, कर्या प्र,णा–म, बोल्यु–, पाळीए, जी – –;

दोहरानी भंगीयो सम विषम पंक्तिओना अतोमा वैविध्य आव्यु, एकमा अते गालगा बीजीमा अते गाल आव्यु, तेथी बेवडा ध्रुवखडोने स्थान मळ्यु अने ते ध्रुवखडो पण भिन्नभिन्न लवाईना बन्नेमा छेल्लु पट्कल 'जी'नु छे. उपान्त्य पट्कल गालगा प्रासबद्ध छे तेनी आगळ विषमपंक्तिमा पट्कलनी छेल्ली बे द्विकलो ध्रुवखडना आद्य बे अक्षरो पूरे छे त्यारे सम पंक्तिमा ए आखु पट्कल ध्रुवखडना आद्य बे गुरु अक्षरो पूरे छे, एम अनेक रीते वैविध्य आवे छे प्राचीन कविओए आ भगीने खूब विकसावी छे जैन कविओए आ दोहराने अणीशुद्ध राखवा काळजी राखी छे.

ढाळ· माटी फूटी अति घणी मन गमरा रे· ए देशी १५ मी.

भव नाटिकमा जोयता चित्त चेतोरे।
एक जीव बहु, भाव चतुर चित्त चेतोरे
- आ का म १, पृ २३४

अलबत्त आने षट्कलमा तो लई ज शकाय पण आ एटलु सुघड छे के तेने चतुष्कलोमा पण लई शाय

भव ना, टिकमा, जो-य, ता चित; चेतो,रे—;
एक जीव बहु, भावच, तुर चित; चेतो, रे—;

अही दोहरानो रोळाना अगमा विनियोग थता तेमा विषम यतिखडोमा दालदामा अते आवती बे प्लुत मात्राओ अही अनवकाश बनी जाय छे

आपणे मात्रामेळ छदोमा जोयु के प्लवगम ए रोळानी ज प्लुतिबद्ध रचना छे ए प्लवगम पोते ज देसीओ तरीके वपराय छे दल्पतरामे प्लवगमनु लक्षण आप्या पछी दाखला आप्या छे तेमा नीचेनो दाखलो पण आप्यो छे :

माटे मारा मित्र, विचारो वात रे,
पापी मटी पवित्र, बनो भलि भात रे,
जीवननु फळ जाणि, भजो_भगवान रे,
अतर प्रीती आणि, धरो नित ध्यान रे
द पि पृ १५

आमा अते गालगा आवे छे अने तेना अत्य गाने स्थाने तानपूरक 'रे' आवे छे, जे देशीनु लक्षण छे आमा अगियार मात्राए यति मूकी छे अने तेने लीधे त्या गाल आवे छे, अने गालान्त खडो पाछा प्रासथी साध्या छे छता आ गाल ते बराबर गरबा छदना गाल जेवो नथी केम जे गरबा छदनो गाल उच्चारणमा गा-ल छे

प्रसिद्ध 'ओधवजी सदेशो कहेजो श्यामने' ए देशी शुद्ध प्लवगमनु दृष्टान्त छे आपणे तेनु एक आधुनिक दृष्टान्त लईए

सुरतानी वाडीना मीठा मोरला!
ऊछळता शा उरसागर उल्लास जो!
निर्झरती सौभाग्य सुहागन ज्योत्स्निका:
नयणे झळवे नमणु निर्मळ हास जो;
सुरतानी वाडीना मीठा मोरला!

संधिओ बराबर प्लवगमना छे तेमा देशीना तत्त्व एटलां छे के तेमां एक पंक्ति टेकनी छे, अने अंते आवता गालगामा छेल्ला गानी जगाए सम पंक्तिओमा जो आवे छे अने ए जो पहेलाना गालनो प्रास छे एटले प्रास पण समपंक्तिनो ज छे बडो'चारने बदले पांच पंक्तिओनी छे अने तेमा छेल्ली पंक्ति ए पहेली पंक्तिनु टेक तरीकेनु पुनरावर्तन छे

प्लवगम ए रोळानो पंक्तिना अंत्य संधिओना सरनथी थाय छे, एटले बन्नेमा तालसंधिओ सरखा ज छे अने तेथी बन्नेना मिश्रणनी रचना शक्य बने छे एवी एक रचना आपणने अर्वाचीन साहित्यमा मळे छे कवि न्हानालालना 'धण'मा

ऊग्यो सूरज जो लीलूडा वनमा रे
ऊग्यो ऊग्यो सरवर-गिरिवरने तटे
जाग्या घोर घटामाना पक्षेरू रे
जाग्या जाग्या मेना, पोपट, मोरला.

विषम पंक्ति रोळानी छे अने तेमा छेल्ला चतुष्कलनी जगाए तानपूरक रे—आवे छे बीजी पंक्ति शुद्ध गालगाना प्लवगमनी छे आश्चर्यनी वात छे के आखा काव्यमा क्याई प्रास आवतो नथी आ मिश्रण एक रीते रोळा अने प्लवगमनी समानतानो पुरावो छे

हवे सवैयानी रचनाओ लईए

आखी बत्रीसी रचनाओ थोडी ज मळशे कारण के देशीओ गावा माटे छे अने तेथी तेने अंत तरफ ललकार माटे प्लुतिनो अवकाश जोईए छे नीचेनी कृति त्रीशी देशी छे

राग गरबानो

पडवे, ब्रह्मा, पास पु,कारी, वसुधा, सुरभी, रूप ध,री—,
सुर सर, वे श,कर अज, आदि, आव्या, ज्या अवि,नाश ह, री—

सफाईबध चतुष्कलो आवे छे डाकोरना रणछोडजीनो प्रसिद्ध गरबो आ ज ढाळनो छे

चाॅलोॅनेॅ जैॅ, येॅरेॅदेॅव, दरशन, करवा, डाॅकाॅरमाॅ, ठाॅकोॅर वि,राजे,छे—,
दीना,नाथ द,याळ दाॅमोदर, दरशन,थी दुख, भागे, छे—,

पहेली पंक्तिमा एक साथे सात दीर्घने लघु करवा पडे छे प्रसिद्ध 'वैष्णव-जन'नु पद पण त्रीशी रचना छे

वैष्णव, जन तो, तेने, कहिये, पीड प,राई, जाणे, रे –
परदुःखे उप,कार क,रे तोंय, मन अभि,मान न, आणे रे, –,

हवे एक बीजी प्रसिद्ध ढाळ लईए:

वैशंपायन ऐंणिपेरें बोल्या सुज जनमेजय राय जी
विस्तारी तुजने संभळावु भारतनो महिमाय जी

चतुष्कलो करवामां कशुं विशेष नथी पण आना अंतना अक्षरो नीचे प्रमाणे गवाय छे ते ध्यानमां राखवा जेवुं छे:

भारत, नो महि, मा–, यजी,

परंपराथी आ रीते ज गवाय छे. 'जी' अंतवाळी घणी ढाळोमां आ प्रमाणे ज प्लुतिओ आवे छे. वधारे तानपूरकोवाळा दाखला लईए:

महाकाळीनो गरबो

मा तुं पावानी पटराणी के काळी काळिका रे लोल.
मा तारो डुंगरडे छे वास के चेंडवु दोहलुं रे लोल.
बृ. का. दो. २, पृ. ६९६

न्यास:

मा तु] पावा,नी पट;राणी के,काळी; का~ळि, कारे; लो~ल,
मा तारों;] डुंगर,डे छे; वास कें, चडवु; दो~ह, लुरे; लो~ल.

पहेला चतुष्कल पछी तालबद्ध अष्टकलो शरू थाय छे. बराबर मध्ये एटले चोथा चतुष्कलमा छेल्ला लघु तरीके 'के' आवे छे. अन्त्य चतुष्कल लो~ल आवे छे. ते पछीनो पविनना चतुष्कल साथे मळी अष्टकल रचे छे. लो~ल पहेलां द्विकल 'रे' आवे छे जे उपान्त्य चतुष्कलमा भळे छे. तेम ज छेल्लेथी त्रीजा चतुष्कलमा गा~ल आवे छे. आ बधानां गरबामा नियत स्थानो छे.

हवे ध्रुवखंडोवाळी देशीओ जोईए:

वड सासुं घणुं भारे माणस बोल्यां परम वचंन वहुजी
वडीं वहुरर तमें काइ न जाणो म्हेता वैष्णव जंन वहुजी

छेल्लुं चतुष्कल ध्रुव छे. तेनी पहेला गा~ल आवे छे: 'चं~न', 'जं~न'.

ए वळिया साथे बाथ, नाथ केम भीडो रे जादवजी;
हुं नहुं छुं तमारी दासी, नाथीने हीडो रे जादवजी. २
बृ. का. दो. १, पृ. ६९

उत्थापनिका.

ए] बळिया, साथे, बाय नाय पे'म, मीडो रे–, जादव,जी,
हु;] कहु छु त,मारी, दासि नासिने, हीडो रे–, जादव,जी

'रे जादवजी' ध्रुवखड छे अने उपर प्रमाणे सधिओमा व्यापे छे वचला अष्टकलमा आवती प्रास सावळी, अंत्य ध्रुवखड वगरे देशीना खास लक्षणो स्पष्ट छे

जगत,नु सुख, झाकळ,नु छे, पाणी, रे–, जाणी, ले–,
वणशी, जाता, वार नही रात, याणी,रे–, जाणी ले–,

'रे जाणी ले' ध्रुवखड छे आ पंक्तिमाथी 'जाणी' वाढी नाखता बाकीनी पंक्ति रोळानी जणाय छे पण एटला माटे आ रचनाना अगमा रोळा छे एम नही धारवु नही आ ज जातनी एवं बेवडा ध्रुववाळी पंक्तिओ जोईए:

बारतव मासे मेली चाल्या कत रे म्हालाजी,
प्रीतलडी तोडीने आप्यो अत म्हारा म्हालाजी
बृ का दो १, पृ ८३६

बारत, मासे, मेली, चाल्या, क ⌣त, रे–, म्हाला, जी–,
प्रीत ल,डी तो,डीने, आप्यो, अ ⌣त, म्हारा, म्हाला, जी–,

आमा बेवडा ध्रुवखडो छ 'रे–, म्हाला जी–,' अने 'म्हारा, म्हाला, जी–,' बन्ने छल्ला त्रण चतुष्कलो रोके छे

ए तो बळिया साथे वाय हो रे हठीला राणा,
त तो जोईने भरिय नाय हो रे हठीला राणा ४

ए तो, बळिया, साथे वा ⌣थ, हो–, रे–⌣ह,ठीला, राणा,
बृ का दो १, पृ ७०

लटकाळा तारे लटके रे लेरखडा हु लोभाणी,
वासलडी केरे कटके रे चितडाने लीधु ताणी
बृ का दो १, पृ ७८९

लट] काळा, तारे, लटके रे–, ले रख डा हु, लोभा णी
वा,] सलडी, केरे, कटके रे–, चितडा, ने ली, धुता णी

चोथु चतुष्कल आखु 'रे–'थी पुरायु छे, अने त्या पडता यतिखडो प्रासथी जोडाया छे

पहेरोने पीतांबर लाल पलवटडी तमे वालोजी
जुवती जनने मोह्या रे लाल लटग्रहतो गते चालोजी

'लाल'नी 'ला' अग मात्रानो प्लुत होई ए ध्रुवपद शब्द आखु चोथु चतुष्कल रोके छे. पछोनी पक्तिमा ध्रुव जरा मोटु बने छे अने तेथी आगलु चतुष्कल जरा विक्षिप्त थाय छे:—

जुवती, जनने; मोॅह्या रेँ, ला ⌣ ल;

एम थाय छे, अने ए जाणी जोईने करेलु जणाय छे कारण के 'रे' काढी नाख्यो होत तो गुरुने टूकाववो पडत नही देशीकारो एम घणो वार जाणी जोईने रचनामा अमुक स्थाने लचक मूकवा गुरुने लघु करे छे.

जतने जाळव्यु रे जोवन भूधर भेट करेश;
जो हरि नहो मळे रे, महारा पापी प्राण तजेश. ८
बृ. का. दो. १, पृ. ११

उत्थापनिका:

जतने, जा⌣ळ; व्यु–, रे–; जोवन, भूधर; भेट क,रे⌣श;
जो हरि, न्हें⌣म; ळे –, रे–; म्हारा, पापी; प्राण त, जे⌣श;

'जाळव्यु' 'न्हेमळे' ए अष्टकलव्यापी गाळगा छे, जे चतुष्कल जाति-रचनाओमा अनेक जगाए आवे छे. घणुखरु ते अतमा आवे छे, जेम के प्लवगममा अने पदोमा —'सद्गुरु०' (गत पृ ३४७) जेवी रचनाओमा; अहीं विशेष ए छे के ए गालगारे पक्तिना पूर्वार्धमा आवे छे. बे बीजा दृष्टान्तो जोईए.

वळता व्हालमा रे चाव्या ललचाव्या लोचन

वळता, व्हा⌣ल, मा –, रे⌣न; चाव्या ललचा; व्यालो, च⌣न;

अही मध्यमा आवता 'रे' नी मात्रा घटी छे, पण तेवु घणी वार देशीओमा थाय छे तेथी रचना बदलाती नथी.

सज्जन साभळो रे हरिनी बाळ लिला कं गाशु.
दयारामरससुधा पृ. २५ अने ५३

अही आपणे सवैयानी देशीजो वध करीए अने तेनायी टूकी चोपायानी देशीओ लईए.

प्रथम २८सा चोपायानु एक प्रसिद्ध अने सुदर सगीतवाळु लोकगीत लईए:

राजल पाणी ग्याता अमे सैयर पाणी ग्याता
माधवपुरनो मारग अमने वेरी थैने लाग्यो
तारा हाथनी आगळियो राजल हाथनी आगळियो
जाणे चोळा मगनी फळियो राजल चोळा मगनी फळियो
(साभळलु)

आटलु बस थशे 'माधवपुरनो०' ए पक्ति शुद्ध २८सा चोपायानी छे बीजी पक्तिओ पण चोपायानी छे ज पण तेमा देशीना लक्षणो छे जे नीचेनी उत्थापनिका उपरथी स्पष्ट थशे –

राजल, पाणी, ग्याता –अमे, सैयर पाणी, ग्याता – –,
माधव, पुरनो, मारग अमने, वेरी थैने, लाग्गो–

तारा,] ह–ाथनी आ,गळियो राजल, ह–ाथनी आ,गळियो –
जाणे,] चोळा मगनी, फळियो राज–, चोळा मगनी, फळियो

पहेली पक्तिमा बीजा अष्टक–मा प्लुति गोठवाई छे ते ध्यानमा लेता पक्ति अठ्ठावीसा चोपायानी थई रहे छे चोपायामा अत्य चतुष्कल अनक्षर छे तेनी कालमात्रा मूकता रचना बत्रीसी थई रहे छे माधवपुरवाळी पक्ति तो पहेला महधु तेम चोपायानी छ ज पण तेना अत्य सातमा चतुष्कल पछी बे ज मात्रा अनक्षर रहे छे, ते पछीनी पक्तिनी आद्य बे मात्रा साथे मळीने आखु अष्टकल पूरु करे छे बघी पक्तिओ पछी ए प्रमाण ज पूरी थाय छे 'तारा' अने 'जाणे' बन्ने मात्राना ज छे पठनभेदे कोई पहेली पक्तिमा प्लुति घटाडी 'अमे' त्रण मात्रानु पण करे, 'ग्याता–अमे,' ए प्रमाणे

प्लवगममा अते जवी गालगानी भगी आवे छे तेवी भगी चोपायाना पूर्वार्धमा आवती एक रचना जोई छे ते नीचे उतारु छु

नारी कुजरनी वसु पहेर्यां सायल घासें रे,
ते तो मारू धानळा, प्हेरे केम तमासें रे, ४
देववसन प्हेरे वहू, नजर न आवे तेई रे,
मेंदे मूक्या मोदसो, पासे मूक्या लेई रे ५
आ का म १, पृ १०

उत्थापनिका .

रे
दादा दादा गा–लगा – दादा दादा दादा गा –

पठनमां चोपायानी देशी जणाशे, पण पूर्वार्धमां दोहरानी भंगी छे.—दोहरानो ज यतिखंड छे.

जाति प्रकारनो चोपायो २८नो अने २७नो होय छे पण देशीओमां २९नो चोपायो पण मळे छे. रचना सादी छे, हुं चतुष्कलो अने अष्टकलोमां पंक्तिओ मूकुं छु.

जाते, छो अति; रसिया, रे जग; जीवन, वाला; रे –, – – ;
तमो मों, रे मन; वसिया, रे जग; जीवन, वाला; रे –, – –;

बृ. का. दो. ३, ७७७

कोई पाठभेदे बीजी पंक्तिनो प्रारंभ 'तमों' मा,' एम पण करे. पण मने ए पाठ सुन्दर नथी लागतो. अने में अनेक लोकगीतो देशीओ सांभळी छे तेनी परंपरा जोता पहेलो पाठ मने सारो लागे छे. आवा पठनभेदो तेम छतां होई शके अने दरेक जणाए ते हु नोंधीश पण नहीं. आ देशीनी एक विलक्षणता ए छे के पंक्तिमां अंत्यनी वधारे लावो ध्रुवखंड छे, जे बहु विरल होय छे, छव्वीस मात्रानी पंक्तिमां पहेलां भण चतुष्कलो ज स्वतंत्र छे, बाकीनो भाग ध्रुवमां जाय छे.

आवी ज एक भिन्न प्रकारनी रचना लईए:

पछे गुरुजीए तेडियो रंगीला कूवर रे;
लइ मस्तक मूक्यो हाथ रंगीला कूवर रे.
एकला गाम नव चालिये रंगीला कूवर रे;
काम पडे जो कोट रंगीला कूवर रे. १५

बृ. का. दो. १, पृ. ५६२

उत्थापनिका :

पछे गु,रुजिये॑; पू–छि,यु र; गीला, कूवर; रे–,–

लई,] मस्तक, मूक्यो; हा–, थ॑ र; गीला, कूवर; रे–,– –
ऍकला, गॉम नव; चा–लि, ये र; गीला, कूवर; रे–,– –

काम प,डे जो; को–,टॅ र; गीला, कूवर; रे–, – –

'अंत्य 'रे' साथे छव्वीस मात्रा थाय छे. आमा चोपाया साथे दोहरानी भंगी छे, पण पठन दोहरा प्रमाणे नथी, चोपाया प्रमाणे छे. दोहरामां 'पूछियु' पछी बे मात्रा अनक्षर रहे ते अहीं 'र' थी पुरायेली छे. तेम ज दोहरामां अंत्य लघु लघु ज बोलाय छे, अहीं ते गुरु बने छे.

एक जगाए रासामा मळी आवती प्रतीव पक्ति जोवा जेवी छे ते नीचे उतारू छु

केशर, वरणो, हो–श्याड म,सूवो, मारा, ला– –⌣ल,

पक्ति सुदर छे अने बीजी रीते पण गाई शाय पण उपरनी रीत सादी छे ते में स्वीकारी छे

प्लवगममा अत तरफ आवती भगी एटले अष्टकलव्यापी गालगानी भगी जेवी भगी चोपायामा पण एक जगाए जोई छे ते नीचे उतारु छु

जो जो परम् अघोर के कपि मनस्यू रड रे,
धिक धिक भयणविकार के गुरुजरने नडे रे
त्रिया एह स्वभाव के कोइनी नही रे,
आ ससार असार मे धर्म करो सही रे

आ का म ३ १३५

उत्थापनिका

जा जो, परम, अ,घोर कें,कपि मन, स्यू⌣रडे–, रे–, – –,

अही अत्य गालगा अष्टकलव्यापी छे

मात्रामेळ छदोनी चर्चामा आपणे जोयेलु के दोहरो ए खडित चोपायानु एक स्वरूप छे ए क्रमे चालता हवे आपण दोहरानी देशीओ जोईए आगला प्रकरणमा में बतावेलु छ के चतुष्कल रचनाओ केवी रीते षट्कल बने छे अन त्या दोहरो षट्कल अन सप्तकल बने त्यारे तेनु केवी रीते पठन थाय छे, एटले ए बाबत अही फरी लखतो नथी मात्र एटलु स्मरण करावबु बस थश के 'नळाख्यान'मा आवती 'वैदरमी वनमा वलवले' ए देशी अने तेनी जोडेनी 'भूली भमे छे रे भामिनी' ए बन्ने देशीओ दोहराने मळती छे, अने ते षटकलमा तेम ज सप्तकलमा सुदर रीते गवाय छे अही तो हवे केटलाक जैन कविओए शुद्ध दोहरानु बाधु लई तेनी आसपास ध्रुवो के बीजा अशो लगाडीने देशीओ करेली छे ते जोईशु

जो माणस करि लेखवो तो मत जाओ छडि, लालरे,
जास्यो तोही राखशु बाळक जिम रा मडि, लाल्रे

आ का म १, पृ ३२

अही शुद्ध दोहरान अते 'लाल्रे' ध्रुवखड लगाडलो छे, ते पाच मात्रानो छ अन तेथी उत्तर यतिखड पूरी सोळ मात्रानो थई रहे छे एटले

दोहरना अत्य यतिखण्डो खण्डित थयेलो भाग अहीं ध्रुवथी पुराय छे एम बीजी कृति ल्ईए

> ईतना दिन हु जाणतो रेहा, मिलस्यें वार बे चार, मेरे नदना,
> हवे वच्छ मेळो दोहिलो रेहा, जीवन प्राण-आधार, मेरे नदना
>
> एजन, पृ ४५

मध्य ध्रुवखड 'रेहा' अने अत्य ध्रुवखड 'मेरे नदना' बाद करतॉ रहेता अक्षरपिण्ड काठु दोहरानु जणाशे अने छतॉ तेमा क्यॉई क्योई चतुष्कलोमा मात्रा वधेली जणाशे 'वारबे' 'हवे वच्छ' 'प्राण आ' वगेरेमां चारथी वधारे मात्राओ आवे छे, तेने चतुष्कलमा नाखता उच्चारण बगडे छे, अने पठन करता आ रचना सहेलाईथी षट्कलमा पडी जती जणाय छे एना ध्रुवखडो पण षट्कलमां ज स्थान अने अवकाश पामी शके छे, एटले आ दोहरानी षट्कलनी देशी छ हु षट्कला जुदा रूनु छु

> ईतना॰, दिन हु॰, जाण तोरें, हां – –, मील्स्ये॰, वारबे॰, चारमेरें;
> नदना॰,
>
> हवे वछ, मे॰ळो॰, दोहिलो रें, हा – –, जी॰वन, प्रा॰णआ, धारमेरें
> नदना॰,

आवी दोहरा उपरथी करेली देशीओना घणा दृष्टान्तो जैन कविओनी कृतिओमा मळे छे, पण आ रचना अत्यारे आपणने परिचित नथी एटले ए बधी अहीं लेतो नथी

अही चतुष्कलनी देशीओ बध करी हवे त्रिकलनी देशीओ उपर आवीए आमां सौथी प्रथम ए कहेवानु के मात्र त्रिकलो आवे एवी मात्रामेळ रचनाओ पण विरल छे, महीदीपमा पण षट्कलो आवे छे, तो षट्कलो विनानी देशीओ अशक्य होय एमा आश्चर्य नथी देशीओना सामान्य प्रास्ताविक प्रकरणमा आपणे षट्कलमिश्र त्रिकल रचनानी गरबीओ जोई छे 'नद एक समे॰' अने 'राध रूपाळी॰' अही केटलीक लोकगीतनी गरबीओ जरा जोईए

> चड मुड चपटीमा चोळघा रे
> आज दैतोने रणमा रोळघा

उत्थापनिका

> चड, मुड, चपटीमा, चोळघा –, रे॰
> आज,] दैतोने, रण मा॰, रोळघा –,– – –,

अत्य तानपूरक 'रे'नी पहेला वे गुरु आवी आखु पट्कल पूरे छे. एनुं स्थान नियत छे एटले ए गरबीनु लक्षण छे. ते सिवाय घणाखरा त्रिकलो आवे छे. पण 'दंतोने' पट्कल छे. घणी त्रिकल गरबीओमा जोयु छे के पहेला त्रिकल पछी तरत एक पट्कल आवे छे. अहीं पण बीजी पंक्तिमा एम बनेलु छे. एव बीजी कृति लईए:

बॉळा रेशमीं ते आगळा बिराजे जो
नया नतियामा[1] घूघरी गाजे जो

उत्थापनिका:

बॉळा] रेश, मिते; आग, ळाबि; राजे –; जो ⌣
नवा;] नतिया मा; घूघरी ⌣; गाजे–; जो ⌣

उपरनी कृतिने बहु मळती था गरबी छे. दरेक पंक्तिने अंते त्रिकल 'जो' आवे छे, जे पछीनी पंक्तिना त्रिकल साथे मळी जई पट्कल रचे छे अर्थात् पहेला त्रिकल पछी ताल सहित पट्कलो आवे छे, जेमानु पहेलु कोई वार त्रिकलबद्ध न होता पट्कल होय छे बाकीमा त्रिकलो आवे छे. क्याक एक प्लुत गुरुथी त्रिकल बने छे:

हवे वधारे अटपटी त्रिकल देशीओ लईए:

चिक्षुर आव्यो क्षुर धार असि हाथमा रे लोल;
नाथ व्होणो जेम खूट बुदे साथमा रे लोल.
रथ खिवणी अनेक घोर घमक्ती रे लोल;
धजा फरफरे ने कलश वाति चमक्ती रे लोल

बृ. का दो. २, पृ. ७३८

उत्थापनिका:

चिक्षुर] आव्यो क्षुर; धार, असी, हाथ,मारें, लोल
नाथ,] व्होणो जेंम; खूट, बुदे, साथ,मा रें; लोल

वगेरे. *न्हानालालनी 'भेदना प्रश्न'नी गरबी आ ज ढाळनी छे:*

म्हें तो कंकुए लींप्यु म्हारु आंगणु रे लोल;
कोई भेदु आवो तो भेदने भणु रे लोल
मारी आखे अदृश्य आसुडा वहे रे लोल:
विधि जोई जोई का हसी रहे रे लोल;

---

१. 'नतियो' ए शकु आकारनी बाळकने पहेरावबानी टोपी छे जुदा जुदा रगनी त्रिकोणाकार पट्टीओथी ए शकु आकार बनेलो होय छे.

न्यास:

म्हें तो] कंकु,ए नी; प्यू॰, म्हारु; आग,णू रें; लोल
कोइ;] भेंदुआ; वो तों, भेद; ने भ; णू रें; लोल

म्हारीं;] आखे अं; दुरय, आसु; डाव, हेरें; लोल
विधी;] जोई जों; ई॰, नाह; सीर; हेरें; लोल
दाल] दादादा; दालदाल, दालदाल; दाल

आवी पण वधारे लावी, वधारे अटपटी अने वधारे सुंदर एक बीजी गरबी लईए.

ब्रह्मा विष्णु ने सुरराय, नामी शीश सकल देवता रे
माना सुंदर जश गाय, शरण आव्या चरण सेवता रे.
पाहि पाहि जगत मात पाहि पाहि भुवनेश्वरी रे
पाहि दानव कुळ घात, पाहि पाहि विश्वंभरी रे
बृ. का. दो. २, पृ. ७५०.

न्यास: ब्रह्मा] विष्णु, ने सुर; राय, नामि; शीश, सकल; देव, ता॰; रे॰,
मॉना,] सुंद,रजश; गाय, शरण, आव्यॉ,चरण; सेव, ता॰; रे॰,
पाहि;] पाहि, जगत; मात, पाहि; पाहिभुव; नेश्व, री॰; रे॰,
पाहि;] दान, वकुळ; घात, पाहि; पाहि वि; श्व भ,री॰; रे॰,
बृ॰ का॰ दो॰ २, पृ. ७५०

रचना घणी लावी कुल दस त्रिकलोनी छे पहेला चार त्रिकलो बे वार गवाई पछी पंक्ति आगळ चाले ए रीते गवाती में साभळी छे. उपाड घणो जोरवाळो छे चार त्रिकले यति पडी त्या थता यतिखडो अही प्रासथी जोडाया छे, एम कृतिमा बेवडा प्रासो छे दादादानु कोई नियत स्थान अही जणातु नथी, पण 'पाहिभुव' अने पाहिवि' पदकलो छे एक पंक्तिमा पहेला त्रिकल पछी दादादा आवे छे:

दीन शरणागत देव त्राण व्यविका गौरी करी रे
दीन] शरणागत, देव, त्राण; व्यवि, कॉगौ; रीक,री॰; रे॰
दाल] दादादा; दालदाल, दाललदा, दालदाल; दाल

में साभळेली आवी ज रचना नीचे प्रमाणेनी छे:

नमू] गणपतिने, पाय नमू; गणपतिने, पाय भोंळा; शीव शकर; नेन मूरें; लोल

आमी पण वधारे लावी रचना मळी आवे छे:

सुणो कृष्ण तणी वाण छे प्रमाण रे ताण पडी मेली रे;
भजो चैतन्य अखंड तजो सर्व विषय वासना घेली रे. १
शोक दुःख थये सुखेथी आनंद रे मनमा न आणो रे;
रागद्वेष वीक स्नेह काम क्रोध रे शत्रु करी जाणो रे. २

सू. धा. दो. ३, पृ. ६९६

सुणो] कृष्ण, तणी; वाण, छे प्र; माण, रे ⌣; ताण, पडी; मेली–; रे ⌣
भजो;] चैत,न्य अ; खंड, तजो; सर्व, विषय; वास, ना ⌣; घेली–; रे ⌣
शोक;] दुःख, थये; सुखे, थिआ; नद, रे ⌣; मन, मान; आणो–; रे ⌣
राग] द्वेष, वीक; स्नेह, काम; क्रोध, रे ⌣; शत्रु, करी; जाणो –; रे

कुल बार त्रिकलो छे अने 'रे' नियत छे, पण वचमा 'रे' आवे छे तेने निमत स्थान नथी. एटले ए छंदनु अंग नथी.

जरा जुदी रचना तरीके न्हानालालनी एक गरबी लईए:

मने पाछु आणी ने पेलु आपो रे प्राण म्हारु पारेवु;
पेली पुण्ये हो! बाधेली पाख: प्राण म्हारु पारेवु;
मणिफूल जेवी कलगी नचवतु, रे प्राण म्हार पारेवु;
लावो मीठी ए नेहभरी आख, प्राण म्हार पारेवु.

के. का. २, पृ. ३७

उत्थापनिका:

मने] पाछु आ, णीने पेलु, आपो रे, प्राण मारु, पा ⌣ रे ⌣; वु ⌣
पेली,] पुण्ये हो, बाधेली, पा ⌣ –ख; प्राणमारु; पा ⌣ रे ⌣; वु ⌣

पहेलु त्रिकल छोडया पछी सताल षट्कलो शरू थाय छे तेमा पहेलु त्रिकल विनानु षट्कल छे, ते पछी आवतु षट्कल पहेली पंक्तिमा त्रिकलवद्ध छे, पण बीजीमा नथी, ते पछी एटले त्रीजु वळी पहेली पंक्तिमा त्रिकल विनानु षट्कल छे, अने बीजी पंक्तिमा त्या प्लुतिबद्ध गाल (गा ⌣ –ल) आवे छे ते आ रचनानी विशिष्ट भगी छे चोथु षट्कल त्रिकलवद्ध छे अने त्यांथी ध्रुवखड शरू थाय छे जेनो अंत उपर आप्या प्रमाणे आवे छे. आ कृतिमा षट्कलो वधारे छूटथी आवे छे. सम पंक्तिमा गाल आवे छे, पण तेने दोहराना गाल साथे कशो संबंध नथी ए आ देशीनी एक भगी छे.

भोजा भगतना चाबखा, उपर जेवी ज त्रिकल–षट्कल मिश्र रचना छे.

मूरखो रळी रळी भमाणो रे माथे मेलसे मोटो पाणो
पाईघूतीने धन भेळु कीधु कोटीध्वज कहेवाणो,
पुण्यने नामे पा जे न वावर्यो अधवचथी लूटाणो मूरखो०

वृ का दो १, पृ ८२६

उत्थापनिका

मूरखो‿, रळोर, ळी‿क‿, माणो‿रे, मा‿थे‿, मेलसे‿, मो‿टो‿,पाणो–;
–––, पाईधू, तीने धन, भे‿ळु‿, की‿धू‿, को‿टी‿, ध्वजकहे‿, वाणो–
–––, पुण्यने, ना‿मे‿, पाजे न, वावर्यो‿, अधवच, थी‿लू‿, टाणो–
मूरखो‿, रळोर . . पहेली पंक्ति प्रमाणे

आमां केटलाक पट्कलो त्रिकलवद्ध छे अने केटलाक त्रिकलरहित छे पण विशेष ए छे के दरेकनु स्थान नियत छे स्थान विशे टूकमा कही शकाय के पंक्तिना प्रारभथी बीजु पट्कल त्रिकलरहित छे एटले ध्रुवमा 'रळोर' त्रिकलरहित छे अने आतरानी बने पंक्तिनु पहेलु अनक्षर पट्कल पछीनु बीजु पण त्रिकलरहित छे ते उपरात ध्रुवना अतनु अने आतराना बधा प्रासना पट्कलो पण त्रिकलरहित छे आतरानी पहेली पंक्ति ध्रुवरहित छे छता आखी रचना समसख्य सधिबद्ध छे, कारण के ध्रुवपंक्ति अने आतरानी दरेक पंक्तिमा सधिमख्या सरखी छे ते साथे ए नोधवा जेवु छे के आतरानी पंक्तिनु पहेलु पटकल अक्षर जाय छे, पण तेने गणनामा लेवु जोईए अने एम करता सधिसख्या सरखी थई रहे छे अत्यार सुधी आपण सधिसख्या ए ज रीते गणता आव्या छीए एक बीजी बाबत तरफ ध्यान खेंचवा जेवु छे ते ए के सामान्य रीते मात्रामेळ छदोमा पंक्तिने अते अक्षर सधिओ आवे छे अही पंक्तिना प्रारभमा अनक्षर सधिओ आवे छे आ विलक्षण जणाय पण तेमा आश्चर्य जेवु कइ नथी कारण के रचना सगीतप्रधान छे, अने सगीतमा एकम आखु सळग छे, तेमा पंक्तिभेद होतो नथी एटले ए अनक्षर विभाग जे पहेलो देखाय छे ते बीजी रीते कहीए तो आगली पंक्तिनी पछी ज आवे छे आपणे तेम छता एवी रीते पंक्तिओ पाडी शकीशु नही कारण के एम करवा जता ध्रुवना पहेला शब्द 'मूरखा'नी व्यवस्था बरावर थई शकती नथी अनक्षर विभाग पंक्तिने अते आणवानो आग्रह राखवो होय तो नीचे प्रमाणे उत्थापनिका आपवी पडे (मात्र पट्कलो बतावीश)

मूरखो,
खीर, ळी य, माणा रे, माये, मेल्ने, मोटो, पाणो, ---,
थाईयु, तीने था, भेळु, कायु, कोटी, ध्वज ये, वाणो,---
पुण्यने, नामे, पार्जुन, वादर्यो, अवयच, धीलू, टाणो, मूरखो
खीर, ---

आवी रीते उत्थापनिका आपता ... सधिओ पक्तिने अते स्पष्ट देखाशे आतराना ए अनक्षर विभागमा ज ध्रुवनु पहेलु पद्कल्म थई रोपाय छे ए वधी वधारे स्पष्ट थशे पण एम करवा जता ध्रुवनो मात्र एक पहेलो शब्द पक्तिमाथी टाळीने तेनी स्वतत्र पक्ति बनाववी पडशे, अने ए पण विलक्षण ज लागशे खरु ता आ सगीतना प्राधान्यनु परिणाम छे अने अही पण आपणे पिंगलना सादा स्वरूपने वळगी रही उत्थापनिका घटावीए ए योग्य छे हवे नीचेनु पद ल्उ

रे शिर साटे नटवरने वरिये, रे पाछा ते पगला नव भरिये रे शिर०
रे अतर दृष्टि करी खोळयु, ये ड्हापण झाझु नव डोळयु,
ए हरि सारु मायु पाळयु, रे शिर०

वृ का दो १, पृ ७९५

आम पहेली दृष्टिए आनी पक्तिओ वधारे ओछी सख्याना सधिओनी जणाय पण सगीतना एकम तरफ ध्यान राखी उत्थापनिका करता पक्तिओ समसख्य सधिओनी जणाश रचना घटकल्मा गवाय छे अने हु पद्कलोमा ज उत्थापनिका करू छ

रे] शिरसाटे, नटवर, ने वरी, ये-
रे,] पाछा ते, पगला-, नव भरी, ये-
रे,] शिर साटे, नटवर, ने वरी, ये-
रे,] अंतर, दृष्टि क, री जो-, यू-
वे,] ड्हापण, झाझू-, नवडो-, ळयू-
ए,] हरिमा-, रू मा-, यू घो-, ळयू-
रे,] शिर साटे, ------

आ ज पद आटली सरलताथी सप्तकलमा पण गवाय छे, त्यारे उपरनो दरेक पद्कल संधि एनो ए ज रहे छ, अने तेमा दरेकमा बीजी मात्रा पछी

એક માત્રા ઉમેરાય છે, અને એ રીતે સપ્તકલ બને છે. વધારાની માત્રા સર્વત્ર ⏑ ચિન્હથી હું બતાવીશ.

રે] શિર⏑સાટે; નટ⏑વર; ને⏑વરી; યે⏑–

રે;] પા⏑છા તે; પગ⏑લા–, નવ⏑મેરી; યે⏑–(ટેકની પંક્તિ ફરી લખતો નથી)

રે;] અ⏑તર; દૃ⏑ષ્ટિ કે; રી⏑જો–; યૂ⏑–

કે;] ઇહા⏑પણ; ગ્રા⏑સૂ–; નવ⏑ડો–; ળયૂ⏑–

એ;] હરિ⏑સા–, રૂ⏑મા–; થૂ⏑ધો–, ળયૂ⏑– (ટેક નથી લખી)

સપ્તકલ રચનામા સધિ લઘુથી શરૂ થાય ત્યારે લદાદાદા સધિ અને ગુરુથી શરૂ થાય ત્યારે દાલદાદા સધિ વપરાયો છે તે સ્પષ્ટ છે. આ પ્રમાણે :

શિર⏑સાટે; નટ⏑વર, ને⏑વરી; યે⏑–
લદા દાદા; લદાદાદા; દાલદાદા; દાલદા

આ બન્ને સધિઓ એક જ રચનામાં મળી શકે એવા છે એ આપણે સપ્તકલના જાતિછદોની ચર્ચામા જોઈ ગયા છીએ (ગત પૃ ૪૭૩).

અહીથી સપ્તકલ રચનાઓ જ હવે લઈએ જાતિછદોમા ત્રિકલ પછી પચકલ આવતા હતા પણ પચાલની સ્પષ્ટ દેશીઓ બની નથી પ્રેમાનન્દે ભુજગી છદની દેશીઓ લખી છે, તે માત્ર વધારે શિથિલ કરેલો ભુજગી જ છે તેમા દેશીઓના બીજા કોઈ ખાસ લક્ષણો નથી અલબત્ત પિંગલ અને સગીતના સમાન અધિકારની ભૂમિમા દશકલ રચનાઓ આવે છે તે આપણે તે સબધીના પરિશિષ્ટમા જોઈશુ એટલે હવે સપ્તકલની દેશીઓ લઈએ

સપ્તકલની દેશીઓમા સૌથી પહેલી ઢાળની રચના સ્મરણમા આવે છે. આ રચના એટલી બધી પ્રસિદ્ધ છે કે અહી માત્ર તેનુ એક જ દૃષ્ટાન્ત આપીશ.

ધરા જીતી, ધર ધનીરા, ખડગ તણિ પર, તાપિ
મત્રીનિ તે, રાજ સોંપી, મોગરી ગુરુ, આપિ ૪૫
યૌવન ત્યાગી, પ્રીત આણી, રાણી બહુ અતિ, રમ્ય
તજી યોડા, કરિ ક્રીડા, અપ્સરાનીં, અ, ગમ્ય ૪૬
- માદવરી, પૃ. ૩૬

મેં પાઠમા ય ગણ્ના ગલો દર્શાવતા અલ્પવિરામો મૂકેલાં છે તે ઉપરથી આનુ સામાન્ય સ્વરૂપ દાલદાદા દાલદાદા દાલદાદા ગાલ છે એ સ્પષ્ટ થશે

क्वचित् तेमा लदादादानु मिश्रण थाय छे, जे संवादने प्रतिकूळ नथी. संगीतना जे ताल उपरथी आ संधि निष्पन्न थयो छे, एटले के दीपचंदी ताल ते संगीतमां जरा कठण अने अटपटो गणाय छे पण गुजरातने ते बहु फाव्यो गयो छे. अने अभण स्त्रीओ आ तालना लोकगीतो अने अभण बावा आ तालना भजनो बहु आसानीथी गाय छे. नीचेनी लोकगीतनी पंक्तिओ सप्तकलनी छे:

जोगीडापणु रे शिवजी तमारूं में जाण्यु रे
जटामां घालीने कोने आवु ययाथी आण्यु रे

जोँगीडाप, णु रे शिवजी, तमारूं में, जॉण्यु रे –
लदादादा, ल दा दा दा, लदा दादा, ल दा दादा
जटामा घा,लीँने कोनें, आँवु ययाथी, ऑण्यु रे –

नरसिंह महेताना, झूलणामा न होय एवां घणा भजनो आवी रचनानां होय छे. एनु नागदमननु पद आ जातनी रचना छे.

जल कमल छाडी जाने वाला स्वामी अमारो जागशे;
जागशे तने मारशे मने बाळहत्या लागशे.
नरसिंह मेहताकृत, काव्यसंग्रह, पृ. ४६३

जल] कमल छाडी, जानें वाला, स्वॉमीँ अमारो, जागशे –
दाल दादा, दाल दादा, दा लदादा, दालदादा

परभातिया पण आ संधिरचनाना होय छे:

माता रे ज, सोँदा हरिने, घूँमण घा, लेँ– – –
ल दा दादा, ल दा दादा, लदादा दा, लदादादा
एजन, पृ. ४६५

तेम ज

जाँगो रे जशोँ, दाँना जीवन, व्हाँणेला था, यां – – –
लदा दा दा, लदा दादा, लदा दा दा, ल दादादा

ए ज प्रमाणे

भोँळी रे भर,वाँडण हरि ने, वेचवा चा, ली – – –
ल दा दा दा, लदा दा दा, दालदा दा, लदादादा

छेल्लां त्रण दृष्टान्तोमा जेमा एक ज अक्षर आखु सप्तकल पूरे छे त्या ए अक्षर लघु थईने सप्तकल पूरे छे एम मानवानी जरूर नथी एनो नीचे लखेलो ल ए त्या पारिभाषिक ल छे ए अक्षर आखु सप्तकल पूरे छे एटलो ज अर्थ छे बाकी आवी घणी रचनाओमा गुरु पण लघुनु स्थान साचववा लघु बने छे, ए उपरना दृष्टान्तोमा जोयु हशे. एक वधारे अटपटी रचना लईए.

सारस्वती छंदनी चाल

श्री गुरु प्रतापे गाईए फिरपा ते साधु जन,
परिब्रह्म मारो आतमा मारु मन ते अरजुन्न.
अरजुन सुणो गीतासार, पाडव मानजो निर्धार,
ससार सु सरसो रहेने मन मारी पास,
ससारमा लेपाय नहि ते जाण मारो दास अरजुन

उत्थापनिका :

श्री] गुरु प्रतापे, गाइए फिर, पातें साधु, जन्न
दालदादा, दाल दा दा, दा ल दादा, दालदा
परि,] ब्रह्म मारो, आतमा मारु, मन ते अर,जुन्न
दा, दाल दादा, दालदा दा, दालदादा, दाल

अरजुन] सुणो गीता, सार पाडव, मानजो निर, धा॒र
दादा, लदा दादा, दाल दादा, दा लदादा, दालदा

स] सार सु सर, सो रहे ने, मन मारी, पा॒स
दा, दाल दा दा, दालदादा, दाल दादा, दालदा
स] सारमा ले, पाय नहि ते, जाण मारो, दास
दा, दालदादा, दाल दादा, दाल दादा, दाल
अरजुन] सुणो गीता, ...
दादा, लदादादा . . . .

आतरो अने ध्रुवो बधी पक्तिओनी सधिसरख्या सरखी ज छे. सप्तकलोनी बहु सुदर पासादार रचना छे

एक जरा जुदा ढाळनी गरबी लईए :

कानूडो रे कानूडो रे जमनाजीने आरे पाणीडा कारे रे वेनी कानूडो
" " " " ओचिंतो आवे, आवीने बोलावे रे " "
" " " " फोडे जळनी हेलु, बोले कालु घेलु रे " "

" " " " वृंदावननी वाटे वाझे महिने माटे रे " "
" " " " डोलरियो थै डोले, जेम तेम बोले रे " "
" " " " ब्रह्मानद पहेली, वीधी मुने घेली रे " "

वृ मा दो २, पृ ८१५

बन्ने पक्तिनी वडी नथी, पण दरेक पक्ति स्वतत्र छे एवु होय त्यारे सामान्य रीते पक्तिनी अदर आतरप्रास होय छे ते आमा छे आनो न्यास:

कॉनूडॉरे, मानूडॉरे, जमूनाजीने, ऑं रे पॉणी टा, वॉरिरे वेंनीं, वॉनूडो–
लदादादा, लदादादा, लदादादा, ल दा दा दा, लदादा दा, लदादादा,

ओ-चितो, आॅवे आॅत्रीं नेंवों, लॅवि रे वें नीं,
दालदादा, लदा दा दा, ऊदा दा दा

दरेक पक्तिमा कुल छ सप्तकलो छे पक्तिना आदिमा अने अतमा एम बन्ने छेडे ध्रुवखडो छे प्रारभनो ध्रुवखड पहेला बे सप्तकलो रोके छे अतनो ध्रुवखड पाचमा सप्तकलना छेल्ला बे द्विकलो अने छेल्लु छठ्ठु सप्तकल आखु रोके छे आतर प्रासनी खूबी एवी छे के चोथा अने पाचमा सप्तकलोना आद्य लदामा ए आवे छे आ कृतिमा केटलीक पक्तिओमा गुरुओने ठासी ठासीने भरेला छे एवु जणाशे 'ओचितो॰' ए पक्तिमा एक ज सप्तकलमा पाच गुरुने लघु करवा पडे छे, ते हु मानु छु भावनी घनता अने त्वरा माटे छे ए ज ढाळनु एक बीजु वैराग्यनु गीत छे तेमा एवु गुरुनु भरतर नथी:

जावु छे रे जावु छे, जावु छे नेदान, भज भगवान, रे जीव जावु छे
जावु छे रे जावु छे रे, रेवानु छे काचु, मानी लेजे साचु, रे जीव जावु छे
जावु छे रे जावु छे रे, माल धन मेली, ठालु ठेली, रे जीव जावु छे

कीर्तनसग्रह, पृ ७६, ७७.

आमा उपरना करता रचना बहु ज सरल अने प्रसन्न प्रवाहवाळी जणाशे.

१५
असमसंख्यसंधिबद्ध पंक्तिओनी देशीओ

एवी केटलीक देशीओ मळे छे जेमा संगीतना प्राधान्यने लीधे, दरेक पक्तिमा संधिओनी सख्या सरखी न होय, अर्थात् ओछीवत्ती सख्याना संधिओ पक्तिओमा होय अही पण आपणे रचनाओ बने त्या सुधी गया प्रकरणना क्रमे ज लईशु

सत्यभामानु रूसणु

जाण्यु जाण्यु हेत तमारु जादवा रे लोल,
हेत ज होय तो हैडामा वरताय जो,
अमे तमारी आखडिये अळखामणा रे लोल,
वाल्प होय तो नयणामा झळवाय जो

बृ का दो १, पृ ८३९

चतुष्कल रचना छे -यास

जाण्यु, जाण्यु, हेत त,मारु, जा ᴗ द, वारे, लो –, – ᴗ ल,
हेत ज, होय तो, हैडा, मा वर, ता ᴗ य जो –,
अमे त,मारी, आखडि, ये अळ, खा ᴗ म, णारे, लो –, – ᴗ ल,
वाल्प, होंय तो, नयणा, मा झळ, वा ᴗ य, जो –, ध्रुव

पहेली पक्तिमा एटले के विषम पक्तिमा चार अष्टकलो एटले आठ चतुष्कलो छे बीजीमा एटले समभा त्रण अष्टकलो छ चतुष्कलो छे पहेली पक्ति ३२ नी छे, बीजी २४नी, प्लवगमनी, 'ओधवजी सदेशो ०' देशीनी छे

जरा जुदा ढाळनी पण आने मळती बीजी देशी लईए

सजनी श्रीजी मुजने साभर्या रे
हैडे हरख रह्यो उभराय,
नेणे आसूनी धारा वहे रे
विरहे मनडु व्याकुळ थाय
सजनी श्रीजी मुजने साभर्या रे

बृ का दो, १, पृ ८०१

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

सजनी] श्रीजी, मुजने; सा ⌣ भ,र्या रे ⌣;
हेडे, हरग र,हया उभ, रा⌣य,
नेणे, आसू,नी धा, रा ⌣ य, हूँ रे ⌣,
विरहे, मनडू, व्याकुळ, था ⌣ य,
सजनी, श्रीजी, मुजने, सा ⌣ भ,र्या रे ⌣;

आ पाच पक्तिओना एक सगीत एकेम बने छे एमा एकी पक्तिओमा पाच चतुष्कलो छे, अने बेकीमा चार छे बधी एकी पक्तिओ एक ज ढाळथी गवाय छे, अने बेकी पक्तिओ तेनाथी जुदा पण एक ज ढाळमा गवाय छे छता तेमा एक भेद छे पहेली अने श्रीजी पक्ति एक सरखी गवाय छे पण पहेलीमा पहेलु चतुष्कल मूक्या पछी अष्टकल ताल शरू थाय छे, अने श्रीजीमा पक्तिना प्रारभथी ज अष्टकल ताल शरू थाय छे, बन्ने बेकी पक्तिओमा पण एवो ज भेद छे बीजी पक्तिमा पक्तिना प्रारभथी ज अष्टकल ताल शरू थाय छे चोथीमा पहेला चतुष्कले आगली पक्तिना चतुष्कल साथे सधायेलु अष्टकल पूरु थई, पक्तिना पहेला चतुष्कल पछी अष्टकल शरू थाय छे आ भेदनु कारण ए छे के पहेली पक्तिमा पाच एटले के एकी सख्याना चतुष्कलो छे तेनी आगळ आवी गयेली 'जाण्यु जाण्यु हेत०' वाळी देशीमा एम नथी थतु कारण के दरेक पक्ति बेकी सख्याना चतुष्कलोनी छे उपरना 'सजनी०' गीतमा चार पक्तिए बेकी चतुष्कल सख्या (१८) थई रहे छे एटले त्या 'सजनी०' पक्तिनी ध्रुव मूकीने छदनो एकम पूरो कर्यो छे, अने त्या ध्रुव पक्तिनो मूळ ताल एनो ए ज रहे छे ध्रुवने पहेली बे पक्तिओ पछी मूकी होत तो ए ध्रुवमा तालव्यवस्था त्रीजी पक्ति जवी करवी पडत. एम एक ज ध्रुव पक्तिने जुदा जुदा तालमा मूकवी पडे ए सगीतनो दोष गणाय एटले आवी असमसख्यसधि पक्तिओमा ध्रुवपक्ति एक सरखा तालवाळी आवे एने माटे सभाळ राखवी जोईए पण कोई कोई लोकगीतोमा आ तालनी चीवट एटली बधी रखाई होती नथी त्या अष्टकल ताल एक सरखो गवाती पक्तिओमा पण फरतो रहे छ पण लोकगीत तेनी दरकार करतु नथी नीचेनी प्रसिद्ध देशी एवा प्रकारनी छे

सोनला गडि रे रूपला दडूलो रे
कान कुवर गेडीदडे रमवा जाय
झाडवे चडीने दडूलो दोटोवियो रे
जई पडयो जळ जमनानी माह्य

• • •

वा तो तारी माताए तुजने मारियो रे
का तो तारे दादे दीधी गाळ
वा तो तारे भेहए तुजने भोळव्यो रे
वा तो तारे घरडे नार कजात

पक्तिओ साभळेली ते प्रमाणे लखी छे गीत गवाता तेना नीचे प्रमाणे चतुष्कलो पडे छे

सोॅनला, गेॅटिरे, कपलाॅ द,डूॅ‿ड,लोॅ रे‿, १
काॅनकुवर्, गेॅडिदडेॅ, रमवा, जा‿य, २
झाॅडवे; चडिने, दडुलोॅ दोॅ, टा‿वि, योॅरे‿, ३
जै पडयोॅ, जळ जम, नानी, मा‿ह्य, ४
वाॅ तोॅ ताॅरीॅ, माॅताॅए, तुजने, मा‿रि, यारे‿, ५
काॅ‿ तोॅ ताॅरेॅ, दादे, दीधी, गा‿ळ, ६
वाॅ तोॅ ताॅरेॅ, भेॅहए, तुजने, भो‿ळ, व्योॅरे‿, ७
वाॅ तोॅ ताॅरेॅ, घरडे, नार क, जा‿त; ८

आमा 'सजनी॰' देशीनी पेठे ज एकी पक्तिमा पाच चतुष्कलो पडे छे, बेकीमा चार आम एकी सख्या आववाथी एकी पक्तिओ एक ज रीते गवाता छता तेना अष्टकलो एक ज जगाए आवता नथी पक्ति १ अने ५मा प्रारभथी अष्टकल शरू थाय छे, पक्ति ३ अने ७मा पहेलु चतुष्कल छोडीने अष्टकलनो प्रारभ थाय छे पक्ति २ अने ६मा पहेला चतुष्कल पछी अष्टकल शरू थाय छे पक्ति ४ अने ८मा प्रारभथी ज अष्टकल शरू थाय छे सामान्य दृष्टिए जोईए तो बब्बे पक्तिओनी कडी पडे छे, अने छता दरेक कडीमा अष्टकल एक ज रीते शरू नथी थतु कोई पण कडीथी शरू करवा जता विमासणमा पडीए के ए कडीमा अष्टकल ताल क्याथी शरू करवो 'सजनी॰' देशीमा आ वाधो नही आवे कारण के पाच पाच पक्तिना एकमो ध्रुवथी नक्की थई गया छे, अने दरेक एकम एक सरखो ज गवाय छे 'सोनला॰' गीतमा पण जो चारचार पक्तिए पाच चतुष्कलनो ध्रुव आवत तो आ मुश्केली न रहेत पण लोकगीते सगीतनी सफाई तरफ एटलु ध्यान आप्यु नथी पण तालनी आ अस्थिरता छता, चतुष्कलनो प्रवाह चालया करे छे, एटले गवाता तेनो दोष देखातो नथी सगीतनी दृष्टिए आने माटे एम कहेवाय के आमा तालव्यवस्था दूषित छता, लय सचवाई रह्यो छे आ जातनी गरबीओ नरसिहमा छे नरसिहनी चार पक्तिओ लईए:

मोरलीनेॅ वाॅळाॅ रे वाॅई माॅरेॅ मन वस्योॅ रे

सुदर मुखड् श्याम वदन,
मोर मुगट रे वालाजीने शोभतो रे
कुडळ झळके हरिने करण
मोरलीने वाळा रे बाई मारे मन वस्यो रे

नरसिंह महेताकृत काव्यसग्रह, पृ ४०४

गावामा अने तालमा पण बराबर 'सोनला•' गरबीने आ मळती छे फेर मात्र एटलो छे के चार पंक्तिए ध्रुव थावे छे एटले ताल पाच पाचना एकममा एक सरखो चाल्या करे छे नरसिंह महेताना सग्रहमा आ ढाळनी गरबीओ एवी रीते छपाई छे के ए आ गरबीना ढाळनी छे एवो सशय पण न जाय छापवामा पंक्तिओनी एवी व्यवस्था राखवी जोईए के जेथी बने त्यासुधी ढाळनु सूचन थाय—छेवट पंक्तिओ तो बराबर देखाय

पंक्तिओमा विषमसंख्य संधिओ होय त्यारे तालव्यवस्था केवी रीते थाय छे ते स्पष्ट करवा 'सजनी•'ना ढाळनी ज पण जरा जुदा बधवाळी एक रचना न्हानालालनी आ नीचे लउ छु कदाच न्हानालालने ए रचनानो ढाळ उपरनी 'सजनी•' रचना उपरथी ज सूझ्यो हशे, कारण के सजनी रचना स्वामिनारायण सप्रदायना कविनी छे कवि उपर ए सप्रदायना काव्योनी घणी असर छे

जगत उतारी दिध वर देवने रे
साचवजो ए प्राणविराम जो।
भीजे दानसमय श्रम आखडी रे
नथि अपशुकन घडी अभिराम जा
ल्यो, ने करजो जतन अधीकडु रे

'धर्मरायना पार्षदने'—केटलाक काव्यो भा २

आ गरबी गवाता तेना चतुष्कलबद्ध अष्टकलो नीचे प्रमाणे पडे छे

जगत उ,तारी, दिध वर, देऽव, नेरेऽ,
साचव, जो ए, प्राण वि,राऽम, जो–,
भीजे, दान स,मय श्रम, आऽख, डीरेऽ,
नथि अप,शुकन घ,डी अभि, राऽम, जो–
ल्यो ने, करजो, जतन अ,धीऽक, डु रेऽ,

'सजनी•'नो ज ढाळ छे, पण एक तफावत छे 'सजनी•'मा एकी पंक्ति, पाच चतुष्कलनी हती, बेकी चारनी हती, अही एकी तो पाचनी ज छे

पण बेकी पण पाचनी होवाथी, बब्बे पंक्तिए संधिओनी संख्या सम(१०) थई रहे छे, एटले बधी एकी पंक्तिओना अने बधी बेकी पंक्तिओना अष्टकलो एक सरखा ज चाले छे 'सजनी०' अने ते पछी अहीं सुधी लीधेली बधी ज गरबीओमा एकी पंक्तिना छेल्ला बे संधिओ गा–ल, लगा–; एवा सरखा आवे छे अने तेमां विशेष ए छे के अंत्य लगा–ना आद्य लनी जगाए सर्वत्र गुरु छे जेने लघु बोलवानो होय छे एथी गावामा एक जातनी लचक आवे छे, ते सुंदर लागे छे. 'सोनला गेडी०' लोकगीतमा घणा गुरुओने लघु करवा पडे छे. न्हानालालनी रचनामा पण घणी कडीओमा एम करवु पडे छे पण में एवी ओछामा ओछी छूटवाळी कडी दृष्टान्त माटे पसंद करी छे आ प्रमाणे गुरुओने लघु करवा पडे छे छता गावामा कशी कढगता आवती नथी, क्याक एक प्रकारनी उच्चार-विलक्षणताथी — लचकथी त्या गीत सुदर पण लागे छे. एक बीजी चतुष्कल रचना लउं छु जेमा उपर करता वधारे लांबी प्लुति आवे छे:

माता जसोदा झुलावे पुत्र पारणे;
झूले लाडकडा पुरुषोत्तम आनदभेर;
हरखी निरखीने गोपीजन जाये वारणे,
अति आनद श्रीनदाजीने घेर. माता०

दयारामरससुधा, पृ. ९२

परंपरा प्रमाणेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे·

माता] जसो,दा झु; लावे, पुत्र, पा –, –रं; णे –,
झूले;] लाडक, डा पुरु; षोतम, आनद, भे ⌣ र,
हरखी;] निरखी, ने गो, पीजन, जाये; वा–,–रं; णे –,
अती,] आन,दश्री, नदा, जीने; घे ⌣ र,
माता;] जसो,दा झु, लावे, पुत्र; पा–, –रं, णे –

आमा एकी पंक्ति आठ चतुष्कलोनी छे अने बेकी छ चतुष्कलोनी छे बन्नेमा चतुष्कलोनी संख्या बेकी छे अने अष्टकल ताल एक सरखो बधी पंक्तिओमा चाले छे अलबत्त पहेली पंक्तिमा प्रारंभथी अष्टकल शरू थतु नथी, पण पहेलु चतुष्कल छोडीने थाय छे, पण बधी पंक्तिओमा संधिसंख्या बेकी होवाथी पछी दरेक पंक्तिमा, एटले बेकी बधी ज पंक्तिओमा पहेलु चतुष्कल छोडया पछी अष्टकलो शरू थाय छे एकी पंक्तिने अंते गा–, –गा; गा – आवे छे ए देशीनो भंगी छे तेथी न रीते बेकीमा गा ⌣ ल थाय छे. गीत प्रसिद्ध छे.

उपर आपेली 'सोनला गेडी०'नु लोकगीत पट्कलमा पण गाई शकाय :

सोन, ला ⌣, गेडि, रे ⌣, रूप, ला द, डू ⌣, –ड, लो ँ रे,–⌣,

वान, कुवर, गेडि, दडे, रम,ता ⌣; जा ⌣ – य,

आमा दरेक पंक्तिमा पट्कलो आठा आवी जाय छे, पहेलीमा पाच, बीजीमा चार, एटले दरेक पंक्ति पट्कलथी शरू थाय छे, अने ताल्व्यवस्थामा कशी भांजगड करवी पडती नथी

आपणे त्रिकल पट्कल रचनाओमा ज हवे आगळ चालीए प्रथम एक त्रिकलपट्कल देशी लईए जे ढाळमा 'सजनी०'ने मळती छे.

सहु कोई भावे भजो भगवानने रे,
मारु महेषु करोनी भ्रात,
ए क्षण सार नही ससारमा रे,
मन जोजो विचारी वात सहु कोई०

वृ का दो १, पृ ५८६

सहु को ँ] भावे भ, जो ⌣ भग, वानने ⌣, रे ⌣
दा ल] दा दा दा, दाल लदा, दाल दाल, दाल

मा ँरु, महेषु क, रो ⌣ नी ⌣, भ्रात
लदा, दा दादा, दाल दाल, दाल

ऍक्षण, सारन, ही ⌣ स ⌣, सारमा ⌣, रे ⌣
दाल, दादादा, दाल दाल, दाल दाल, दाल

मन, जो जो वी, चा ⌣ री ⌣, वात,
लदा, दादादा, दाल दाल, दाल

सहुकों, भावे भ, जो ⌣ भग, वान ने ⌣, रे ⌣ – ⌣

घणी त्रिकल पट्कल रचनाओमा बने छे तेम अही प्रथम एक ताल बहारनु त्रिकल आवी, पछी पट्कल ताल शरू थाय छे तेमा पण विशेष ए छे के पहेला त्रिकल पछी एक त्रिकलरहित पट्कल ज आवे छे, अने पछी त्रिकल-बद्ध पट्कलो आगळ चाले छे आ प्रकारनी घणी रचनाओमा एम बने छे उपरनी रचनामा पहेली पंक्तिमा तालरहित त्रिकल पछी कुल त्रण पट्कलो आवी अते एक त्रिकल आवे छे, अने बीजी पंक्तिमा प्रथम तालरहित त्रिकल आवी पछी बे पट्कलो आवी अते एक त्रिकल आवे छे.

એ રીતે બેકી પંક્તિમાં એક પટ્કલ ઓછું છે. દરેક પંક્તિના અંતમાં એક દાલ આવે છે જે પછીની પંક્તિના પહેલા દાલ સાથે જોડાઈ પટ્કલ બને છે. એમ દરેક પંક્તિ પછીની પંક્તિ સાથે રેણાઈ જાય છે. ધ્રુવની પંક્તિ એ જ રીતે આગલી સાથે રેણાઈ જાય છે. માત્ર ધ્રુવથી પૂરું ગરબું હોય, ત્યારે અંત્ય દાલને જ લંબાવીને પટ્કલ પૂરું કરવું જોઈએ. આ જ પ્રકારની એક બીજી રચના છે:

પર પ્રભુ રાગાયે દૃઢ પ્રીતડી રે,
મરી જાવું મેલી મનમાલ;
અંતકાળે રાખૂ નહી કોઈનું રે.

બૃ. કા. દો. ૧, પૃ. ૭૧૬

ઉત્થાપનિકાની જરૂર નથી. એક બીજી પ્રસિદ્ધ ગરબી લઈએ:

આજની ઘડી રે રળિયામણી
હારે મ્હારા વ્હાલાજી આવ્યાની વધામણી જી રે   આજની૦
હારે સોહાગેણ પૂરોની સાથિયા
હારે ઘેર મરપતા આવે તે હરિ હાથિયા જી રે   આજની૦

ઉત્થાપનિકા:

આજની ઘ; ડી રેં રળી; યામણી⌣;

હા રેં મ્હા`રા; વ્હાલા` જીઆ; વ્યાની વ; ધામણી⌣; જી રે–; આજની

આવી જ એક પ્રસિદ્ધ ગરબી:

આનદ સાગર ઊલટયો રે લોલ
શ્રી વસુદેવ દેવકીને દ્વાર જો
આઠમ ભાદરવા વદી રે લોલ
રોહિણી નક્ષત્ર બુધવાર જો
પ્રગટયા શ્રીકૃષ્ણ મન ભાવતા રે લોલ.

ધોળ પદસાગર ભા. ૧, પૃ. ૪૧૯

ઉત્થાપનિકા:

આનંદ; સા⌣ગર; ઊલટયોરેં; લો⌣લ

શ્રી] વસુદેવ; દેવકીંને; દ્વાર જી⌣;

આઠમ; ભા⌣દ ર; વાવદી રેં; લો⌣–લ;

रोहिणी न,क्षत्र बुध, वार जो~,

प्रगटया श्री,कृष्णमनँ, भावतारें, लो~–ल,

दयारामनी 'गरबे रमवाने गोरी नीसर्यां रे लोल' ए गरबो आ ज ढाळनी छे ध्रुवना दृष्टान्त तरीके आपणे ए गरबो १२मा प्रकरणमा जोई गया हवे दयारामनी एक त्रिकल–पट्कल गरबी लउ छु

श्याम रग समीपे न जावु, मारे आज थकी श्यामरग समीपे न जावु
जेमा काळाश ते तो सौ एकसरखु,
सर्वमां कपट हशे आवु मारे आज थकी श्यामरग समीपे न जावु
कस्तूरी केरी बिंदी तो करू नहीं '
काजळ ना आखमा अजावु, मारे आज थकी श्याम रग समीपे न जावु
द र गु पृ १७

उत्थापनिका

श्याम रग, समीपेन, जावु मारें। आज थकी, श्याम रग, समीपेन, जा~वु~;
जेमावा, ळाश तें तो, सौ~एक, स~रखु~,
सर्वमा~, कपट हशे, आवु मारें, आज थकी, श्याम रग, समी पन, जा~वु~;

प्रथम एक नानी वात नोंधी लईए पहेली पंक्तिमा 'जावु' बेवार आवे छे तेमा प्रथम 'जावु' त्रिकल छे, अने अत्य 'जावु' पट्कल छे प्रास आखा काव्यमा सळग छे, एकनो एक प्रास चाल्यो आवे छे, अने ते पहेली पंक्तिना पहेला 'त्रिकल 'जावु' साथे मळे छे सामान्य रीते ध्रुवखड आखो लखातो नथी, तेनो पहेलो शब्द मात्र प्रतीक तरीके लखाय छे पण ए ध्रुवखड मळीने ज सगीतनो एकम बने छे माटे ध्रुवखडनी आखी पंक्ति में लखी छे अने पंक्तिओ परपरा प्रमाणे न पाडता, सगीतना आखा एकमना अवयवो प्रमाणे पाडी छे गावामा 'सर्वमा०' 'काजळ०' ए पंक्तिओ पहेली 'श्याम रग०' पंक्ति साथे समान्तर स्वरे गवाय छे, माटे लखवामा पण तेने ए ज स्थान आपेलु छे 'जेमा काळाश०' 'कस्तूरी०' ए पंक्तिओ आतरा पेठे आरोहथी गवाय छे, ते में जुदी पाडीने बतावी छ ए रीते आमा लाबी पंक्ति सात पट्कलोनी थाय छे अने टूकी पंक्ति चार पट्कलोनी थाय छे अने एम वारा फरती आवती पंक्तिओमा गरबी आगळ चाले छे एक बीजी लोकगीतनी गरबी लईए

शरद पूनमनी रातडी ने
काई चादो चड्यो आकाश रे

आवेल आशा भर्यां रे
वनरा ते वनना चोकमा
वाई नाचे नटवर लाल रे
आवेल आशा भर्यां रे

न्यास[१]

शरद पू,नमनी ⏑, रा⏑–त, डी नें
काइ,] चांदो चं,डचो ⏑आ⏑,काश रे ⏑,
आ ⏑वेल, आशा भ,र्यां रे –,
वनराते, वनना ⏑, चो ⏑ – क, मा ⏑
वाइ,] ना ⏑चे ⏑, नटवर, लाल रे ⏑
आ⏑वेल, आशा भ,र्यां रे –,

पहेली अने चोथी पंक्तिमा आखु त्रीजु षट्कल मात्र गाल रोके छे ए गरबीनी मगी छे षट्कलो बहु सुंदर रीते वहेंचायेला छे पहेली बे पंक्तिओमा दरेकमा त्रण षट्कलो अने एक त्रिकल छे छता पिंगल दृष्टिए भेद छे के पहेली पंक्ति सताल षट्कलोथी शरू थई तेमा त्रण षट्कलो पछी एक त्रिकल आवे छे, ज्यारे बीजी ताल बहारना त्रिकलथी शरू थाय छे अने त्रण षट्कलो ते पछी आवे छे अलबत्त एम थवाथी पहेलीनु अंत्य त्रिकल बीजीना आद्य त्रिकल साथे जोडाई त्या आखु षट्कल बनी रहे छ पंक्तिओमा कोई जगाए प्रास नथी प्रासनी अपेक्षा दर कडीए आवती आखी पंक्तिव्यापी ध्रुवथी सतोषाय छे

उपरनी रचनाओमा कडीओ बब्बे पंक्तिओनी नथी, कोई कोई विषम-पंक्तिओनी छे, ते तरफ ध्यान गयु हशे देशीओमा केटलीक त्रिपदीओ होय छे प्रबन्धोमा त्रिपदीओ मळे छे

कडवु ११ मु — राग परजियो त्रिपदबंध
रोतो देखी प्रजानो साथ रे,
प्रभावती घसे छ हाथ रे,
केम पेणामा पडशो नाथ, विधाताए दु ख्ख्यु रे १
वारे चडजो देव मोरार रे,
रूवे सुधन्वानी मार रे,
जाय घरमा नें आवे बहार, भूली जम मरघली रे २
वृ का दो १, पृ ७४

न्यास :

रोती] देगी प्र;जानो –; सार्थ –; रे

प्रभा;] वंती घ; से छे –; हार्य –; रे

केमं;] देणामां; पटशो–; नार्थ नि;धाताए: मु लह्युं;– – –; रे

आवी रचना त्रिकल विनाना पट्कलोनी छे. विशेष चर्चानी जरूर नथी. आपणां सायणा पण एक शिथिल प्रकारनी रचना छे ते साधारण त्रणं पंक्तिओमा लखाय छे :

पाणी भरूने ओढणी मारी फरके
पादरे टोपी झळके
के मारा वीरनी

घणां सायणामा, मात्र अक्षरविन्यास तरफ जोनां, चतुष्कल के त्रिताली चोपाई जेवा चतुष्कलो जणाय छे.

पाणीँ भ,रूने, ओढणीँ, मारी, फरके
पादरेँ, टोपी, झळकेँ
केँ, मारा, वी ⌣ र,नी –

एम वाचता चतुष्कलो तरत जणाई आवे छे. पण सायणां पट्कलोमा लावे सूरे गवाय छे अने जो के लखवामा त्रण पंक्तिओ आवे छे पण गावामां बीजी त्रीजी पंक्ति भेगी करी गवाय छे एटले ए बे पंक्तिने एक लखवी वधारे प्रामाणिक छे.

पाणी भ;रूने –, ओढणी; मारी –; फरके –;

पादरे, टोपी –, झळकेके; मारा –, वीरनी⌣;

सायणा अनेक रीते गवाता साभळ्या छे. गुजरातमा उपरनी रीते गवाय छे. *काठियावाडमा नीचे प्रमाणे गवाता साभळ्या छे : [गुरुचिह्नो नथी मूक्तो]*

पाणी भ; रूने –, ओढणी, मारी –, फरके –; जो – –;
पादरे; टोपी –; झळकेके; मारा –, वीरनी ⌣; – – –:

अर्थात् पहेली पंक्तिमा एक प्लुत 'जो'नु पट्कल वधे छे. अने बीजीमां एक अनक्षर पट्कल वधी बन्ने पंक्तिओमा कालसंधिओ सरखा थई रहे छे.

क्याक ए अनक्षर पद्कल पछी 'सायणा' शब्द अति त्वरित बोलाई नवा पद्कलनी चारेनी मात्राओ शून्य रहे छे:

वीरनी⌣; ———; सौंयणा ⌣ ⌣;

अर्थात् आखो शब्द बे मात्रामां बोलाई पछी चार मात्रा अनक्षर तेम ज शून्य रहे छे. एम *थाय त्यारे बीजी पंक्ति पहेली करतां एक पद्कल जेटली* वधारे लांबी थाय. आ रचनामां वच्चेने अंते आवतो गालगा, अने 'करके' ‹-नळके'नो प्रास तेनी खासियत गणाय.

हवे वधारे अटपटी रचनाओ लईए. तेमा प्रथम मात्र ध्रुवने लीधे पंक्तिओ नानी मोटी थती होय तेवी रचनाओ लईए.

राजकाज मूकीने पडता नाखि नजर ज्या पुगे नही
दरियापारे गियो पाछळ राजरमत संताई रही बालक म्हारा
भणवार

प्रासबद्ध बे पंक्तिओ बीसो सवैयो छे, बन्ने पंक्तिओ सरखी छे पण बीजी पंक्तिने अष्टमात्रक ध्रुवखंड लागेलो होवाथी पंक्तिओ असमसरूप संधिनी बनी छे एवं बीजी रचना लईए.

फूलना पेरी रे जामा फूलना पेरी
फूल्यो रसिक सुजाण जामा फूलना पेरी टेक
फूलनो मूगट कुंडळ फूलना छे कान
ओढी उपरणी फूलोनी शोभे वालो भीने वान जामा०

उत्थापनिका:

फू⌣लना पे; री रे जामा; फू⌣लना पे; री———;
फूल्यो रसिक सु; जा⌣ण जामा; फू⌣लना पे; री———;

फू⌣लनो मू; ग⌣ट कुंडळ; फू⌣लना छे; का——⌣न;
ओढि उपरणि फु; लोनी शोभे, वालो भीने, वा⌣न जामा;
फू⌣लना पे, री———;

आ रचना बत्रीस मात्रानी पण चोपायानी देशी छे ध्रुवने लीधे ध्रुवयुक्त पंक्ति एमा लांबी बने छे चोपाया पछी दोहरानो वर्ग आवे. दोहरा विशे हु आगला प्रकरणमा कही गयो छु एटले अही तो मात्र ध्रुवने लीधे दोहरानी देशी असमसरूप संधिवाळी यती होय एवा दाखला ज जोवाना रहे एवा दाखला में गया प्रकरणमा कह्यु हतु तेम जैन कवियोमा विशेष आवे छे जे अत्यारे

बहुपरिचित नहीं होवाथी ते लेतो नथी. पण एक ध्रुवकडी बहु सुन्दर छे, अने साभळ्या विना पण समजी शकाय एवी सादी छे ते उतारु छु:

मधुर हुवे अति ऊजळो रे, वलिय सुगन्ध विलास
तो पण भमरो केतकी रे, जाये लेण सुवास
हे सजनी! जेहसु लागो रंग

अंत्य वळगण अने वचमा आवतो तानपूरक 'रे' काढी नाखता काठु स्पष्ट रीते दोहरानु थई रहे छे. तेनी पद्कल उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

मधुर हु;वे अति;ऊजळो;रे – –;वलियसु;गन्धवि;ला – –;– –⏑स;
तो पण; भमरो–; केतकी; रे – –; जाये–; लेणसु; वास हो;सजनी–;
जेहसु; लागो –; रं – – ; – – ⏑ग;

विशेष वहेवानी जरूर नथी.

हवे वधारे अटपटी रचनाओ लईए. तेमा प्रथम नर्मदाशकरनी लावणी लईए:

जय जय गरवी गुजरात
दीपे अरुण परभात
जय जय गरवी गुजरात
ध्वज प्रकाशशे झळळ कुसुबी प्रेमशौर्य अकीत
तु भणव भणव निज सतति सहुने प्रेमभक्तिनी रीत
ऊची तुज सुदर जात
जय जय गरवी गुजरात

आखी कृति शुद्ध चतुष्कल-अष्टकल रचना छे, उत्थापनिका:

जय] जय गर,वी गुज, रा –,⏑त
दी,] पे अर,णु पर, भा–,⏑त
जय,] जय गर,वी गुज, रा –,– ⏑त;
ध्वज प्रकाशशे, झळळ कु,सुबी; प्रेम शौर्य अ;की –, ⏑त
तु,] भणव भ,णवनिज; सतति, सहुने; प्रेम भक्तिनी; री –,⏑त
ऊ,] ची तुज, सुदर, जा –, ⏑त
जय,] जय गर,वी गुज; रा –, – ⏑त;

बधी लावी चतुष्कल रचनाओमा आनरे आतरे वैविध्य माटे $\frac{\text{दाल}}{\text{लदा}}$ शालदानो द्वैतीयीक मधि आववो जोईए, ते अही आवे छे ए नोधवा जेवु छे मणिलाल नभूभाईनी प्रसिद्ध लावणी आने मळनी ज छे.

प्रिये रे ते ते वयम विसराय ?
घडी घडी चमकि चित्त उभराय
अग तव मार्ग गमन न खमाय,
श्रमित वळि लुलित मुग्ध देखाय,
आलिगन आशियीलथी चापु ते घरी प्रेम,
चूथायेली मृणालि सरखा दुर्बळ दीसे तेम,
एम मम उर धरि ज्या ऊवाय—प्रिये रे०
प्रियेरे] ते ते, वयम विस, राय
घ,डीघडि, चमकि चित्त उभ, राय
अग तव, मार्ग ग,मन नख, माय
श्र,मितवळि, लुलित मुग्ध दे, खा–,–⌣य,
आलिगन अशि,थी⌣ल,थी–, चापु ते घरि, प्रे–,–⌣म,
चूथा,येली, मृणालि, सरखा, दुर्बल, दीसे, तेम
एम मम, उर धरि, ज्या ऊ, धाय
प्रिये रे, ते ते वयम विस, रा–,–⌣य,

आना अष्टकलोनी गोठवण 'जय जय गरवी गुजरात' करता जरा भिन्न छे अने चतुष्कलो करता अष्टकलो ज वधार आगळ पडता छे खरु तो लावणी मूळ ताल ज छ, अने पछी ए तालवाळी रचनाने ए नाम लगाडवामा आव्यु छे अने लावणी ताल अष्टकल ज छे

नर्मद अनेक प्रकारनी लावणीओ ल्ख छ एक सादामा सादी

वहा गयू वनेथी म्हारु रमरडु प्यारु
यू थयू हतु यू धार्यु हवे दिल हार्यु
नर्मकाव्य, पृ ७२८

न्यास

कहा] गयू वनेथी, म्हारु, रमवडु, प्यारु,–
यू,] थयू हतु यू, धार्यु ह वे दिल, हार्यु,––,

आनायी वधारे अटपटी

जो नि हरणी पली त्याह्, ऊट वहु ज्याह्, एवली झूरे,
नव खाय झागरा तेह् ऊचि ते नूरे

एजन, पृ ७२८

न्यास

जोनि] हरणी, पेली, त्याह् ऊट वहु, ज्याह् एवली, झूरे,–
नव,] खाय झाखरा, तेह् ऊचि ते, नूरे ––,

आवी पंक्तिओ आवी गया पछी वधारे टूकी आवे छे

शी थान लाळीं ते स्होय!
मुख राक डाहयु गू होय!
शी आस आसो जाय!

मने जोइ झट्ट जइ माह्य हसी शरमाय, हरख छे ऊरे — नव०

शी] थान लाळिते, स्होय‿,–
मुख,] राक डाहयु गू, होय‿,–
शी,] आस आवन, जोय‿,–
मनें,] जोइ झट्ट जइ, माह्यह् सीशर, मायह्, रख छ, ऊरे,–नव, खाय०

लावी पंक्तिओनी अदर आतर प्रास छे अने ते प्रास आगळ छेल्ला प्रकरणमा 'वानूडो रे०' वाळी गरबीमा जम अडाअड आवला वे सप्तकलोना प्रारभमा आवता ल्दानो प्रास हतो तम अही पण व अडाअड अष्टकलोमा अष्टकलोना प्रारभमा आवता गाल्ना ज छ नर्मदाशकरे वीरसिंह काव्यमा जे नवो छद योजलो छ ते आ लावणीमानी लावी पंक्तिनो ज विस्तार छे

वीरवृत्त

शुभ प्रभात श्रावणमास। पाणिनो भास। एवु आकाश। दीपतू स्होय
मथि प्रकाशतो रह्या सूर्य। स्वेतन रक्त। सृष्टि आसक्त। थई रहि जोय

नमकविता पृ ४३२

न्यास नीचे प्रमाणे थाय, अन ए आपता कवितामा आपेला दडो काढी नाखवा पडशे

शुभ] प्रभात श्रावण, मास पाणिनो भास एवु आ, काश दीपतू, स्होयॅ–
मथि,] प्रकाशतो रह्या, सूर्य स्वेतन, रक्त सृष्टि आ, सक्त थई रहि, जोयॅ––,

'जोनि हरणी०' करता अही एक अष्टकल वधारे छे एटला ज फरक छे प्रास एनो ए ज छे हजी एक जुदा प्रकारनी लावणी जोईए

देश दुःखथी जे जन दाझे, शख सुणी ऊठे,
जसद शुभ शख सुणी ऊठे,
शख सुणी ऊठे रे तेहपर प्रभु पण झट भूठे —१
नर्मकविता पृ ५०२

उत्थापनिका

देश दुःखथी, जे जन, दाझे, शखसु, णीऊ, ठे॰
ज, सद शुभ, शखसु, णीऊ, ठे –,– –;
शखसु, णीऊ, ठे॑ रे तेह पर, प्रभु पण झट भू,ठे –,– –;

पठन गानमा आ रचना बहु प्रबल छे आमा पुनरावर्तित थता शब्दोना उपयोगथी कुशळ कवि घणी प्रबल असर उपजावी शके अही जे प्रासो, पुनरावर्तनो, अने प्लुतिओ दर्शावी छे ते सर्व आ छदनी अगभूत छे बीजी पक्तिमा 'ठे॑' लघु थाय छे एने पण छदनी भगी ज गणवी जोईए

आ पछी मराठी चाल्नी साखी लईए आ रचना मराठीमाथी आवी छे मराठीमा आ नामनी बे रचनाओ छे, जेमाथी पहेली ते शुद्ध चोपायो छे तेने आपणे आ साखीने नामे ओळखता नथी आपणे ए नाम वधारे जटिल रचनाने आपीए छीए आ रचनाने कान्ते लोकप्रिय करी छे पण तेनो पहेलो प्रयोग तेमना साहित्यमित्र राजाराम रामशकरे करेलो छे आपणे प्रथम एमनु ज दृष्टान्त लईए

साखी (मराठी चाल्नी)

शिरा तणा मुखमाथी वहे आ शोणितनी बहु धारा
भक्ष्य योग्य घणु दिसे हजी आ मास देहमा मारा
बेठो शू थाकी, नहि तुज तृप्ति दिसे पाकी

आखी रचना चतुष्कल — अष्टकल्नी छे उत्थापनिका

शिराक्षणा मुख, माथी, व्हे आ, शोणित, नी बहु, धारा, – –,
भक्ष्ययोग्य घणु, दिसे ह, जीआ, मास देहमा, मारा,
बेठो, शू था की –, नहि तुज, तृप्ति दि, से पा,की –,– – – –,

पहेली पक्ति २८सा चोपायानी छे, अने तेनु आखु आठमु चतुष्कल प्लुतिथी पुराई पूरी बत्रीस मात्रा थई रहे छे बीजी पक्ति पण पहेली साथे प्रासथी बधायेली चोपायानी ज छ, पण तेना छेल्ला चतुष्कल पछी प्लुति नथी आवती, पण ए चतुष्कल त्रीजी पक्तिना पहेला चतुष्कल साथे जोडाई त्या

अष्टकल पूर थाय छे एटले के त्रीजी पक्तिमा 'बेठो;' आगळ अष्टकल पूरु थयु. ते पछीना अष्टकलनी अत्य बे मात्रा अनक्षर रहे छे, जे में --थी दर्शावेली छे. ते पछी पक्तिनु बीजु अष्टकल आवे छे, अने ते पछी एक अष्टकल आवे छे, ते ए पक्तिना पहेला अष्टकल जेवु प्लुतिबद्ध अने एनी साथे प्रासथी जोडायेलु होय छे. 'मूथा, की–,' अने 'से पा, की–,' ए प्रमाणे. ए पछी एक आखु अष्टकल अनक्षर रहे छे त्रीजी पक्तिमा ए रीते अते कुल दस मात्रा अनक्षर रहे छे. बीजी रीते कहीए तो, पहेली पक्ति चोपायानी अने एक अनक्षर चतुष्कल मळी बत्रीस मात्रानी. बीजी पक्ति चोपायानी, अने त्रीजी पक्तिना पहेला चतुष्कल साथे बत्रीस मात्रानी. ए चतुष्कल बाद करता, बाकीनी त्रीजी पक्ति, कुल दस मात्रानी प्लुति साथे बत्रीस मात्रानी. आ रचनाना प्रासो अने प्लुतिओ एनी विशेषता छे. कहेवानी भाग्ये ज जरूर रहे छे के बीजी पक्ति अने त्रीजी पठनगानमा सळग बोलाय छे.

आ पछी आपणे कान्तनो रचना लईए जेमा उपर करता थोडो फेर छे.

मानस सर

अतर उछळ्यु हो! सहसा धैर्य गळ्यु हो!
क्षोभ थयो वृत्तिमा अतिशय तरग जब्बर चाले,
मानस सर मारू डोळायू, खूब चलित जल हाले
स्थानक न मळ्यु हो! सहसा धैर्य गळ्यु हो

पूर्वालाप, पृ ४३

उत्थापनिका ·

अतर] उछळ्यु हो–, सहसा, धैर्य ग,ळ्यु हो,––, ––––;
क्षोभ थ,यो वृ,त्तीमा, अतिशय, तरग, जब्बर; चाले,––,
मानस, सरमा, रू डोळायू, खूब च लित जल, हाले,
स्थानक,] न मळ्यु हो–, सहसा, धैर्य ग,ळ्यु हो––; ––––;

आमा पण पूर्व दृष्टान्तनी पेठे ज चोपायानी प्रासबद्ध पक्तिओ आवे छे पण तेना प्रारभमा तेमणे त्रीजी पक्ति जेवी ज पक्ति मूकी मुखबध करेलो छे अने ए मुखबधमा त्रीजी पक्ति जेवो ज प्रास, अने प्रासना स्थळे प्लुति मूकी छे वळी प्रारभमा मूकेली पक्तिना प्रथम प्लुतिबद्ध अष्टकल पछीनो भाग ध्रुव करेलो छे, अने ए एटले के पहेली छेल्ली पक्तिना अगत् छेल्लु चतुष्कल अनक्षर करेलु छे एटले के अत्य पक्ति पछी बार मात्रानी प्लुतिथी बत्रीस मात्राओ थाय छे

सद्‌गत नर्वेए आ रचना आपी छे पण तेओ अनक्षर रहेली मात्रा गणतरीमा एटले के न्यासगा वतावता नथी एटले एनो अही उल्लेख करतो नथी पण उपर आपेलु मारु निरूपण एनी साथे सरखावी शकाय एवु छे

सद्‌गत मेघाणीए आ ज रचना प्रसिद्ध 'कोईनो लाडकवायो' काव्यमा योजेली छे पण तेमा चोपाया पछी आवती पक्तिना बधमा थोडो फेर करेलो छे आपणे जोईए

एवी कोई प्रियानो प्रीतम आज चिता पर पोढे
एकलडो ने अणनूझेलो अगनपिछोडी ओढे
कोईना लाडकवायाने
चूमे पावकज्वाला माडे

आनी उन्यापनिका नीचे प्रमाण थाय

एवी, कोइ प्रि,यानो प्रीतम, आज चि,तापर, पोढे,– –;
एकल,डोने, अण बू,झेलो, अगन पि,छोडी, ओढे
कोंइना, लाडव, वाया, ने – चूमे, पावक, जवाला, मोडे, – – ,

मराठी चाल्नी साखीमा त्रीजी पक्तिमा पहेला चतुष्कल पछीना अष्टकलने अते बे मात्रानी प्लुति आवती तेने बदले अही बीजा अष्टकलना पहेला चतुष्कलमा आवे छे अने ए प्लुतिबद्ध मधि साथे त्रीजी पक्तिनो आतर प्रास आववाने बदले त्रीजी पक्ति पहेली बे चोपायानी पक्तिओ साथे प्रासथी जोडाय छे आ रचना पण सुन्दर छे आम आ मराठी चालनी साखीने पण अनेक रीते विकसावी शकाय

आनी पछी नवलरामे योजेलो मेघ छद लउ

एक कुबेर तणो गण रक्षण रोज करे फुल बाग
जे गुणवत सुजाण चतुर रसरगी प्रेमी अथाग
सगीत रूप सलूणो
निज पत्नी पद्मिनी नारनु पाळे व्रत प्रेमे
छे सहज सुगम रहेवु सदा प्रीतिना नेमे

मात्र सादा पठन उपरथी ज समजाशे के पक्तिओ चतुष्कलोमा बहु सरल रीते वहे छे त्रीजी पक्ति दोढायेली छे ते सळग गवाय छे

एक कु,बेर त,णो गण, रक्षण, रोज क,रे फुल, बा–,–⌣ग;
जे गुण,वत सु,जाण च,तुर रस,रगी, प्रेमि अ,था⌣ग, सगित,
रूपस, लुणो,– –,–

निज;पत्नी, पद्मिनी ̆; ना ⌣ र, नू पा;ळे व्रत, प्रेमे;––,–
छे; सहज सु,गम रे; बू ⌣ स,दाप्री; तीना, नेमे; ––––;

पण गावामा जेम केटलीक चतुष्कल रचनाओ षट्कलोमा गवाय छे तेम आ पण षट्कलोमा शरू थई अंत सुधी षट्कलोमा गवाय छे. षट्कलोमा तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय : (खास जरूर होय त्या ज गुरुचिह्न मूकु छु)

एक कु;बेर त;णो गण, रक्षण;_रोज द, रे फुल, बा ––; ––⌣ग;

जे गुण; वत सु; जाण च; तुररस; रगी –; प्रेमी अ; – थाग; सगीत;
रूपस; लूणो–;–

निज;पत्नी–, पद्मिनी,– नार; नूपा–, ळे व्रत; प्रेमे– ; –

छे –; सहजसु; गमरे –; बू–स; दाप्री –, तीना –, नेमे –;

पण आवी आतरावाळी रचनाओ कोई वार बे भिन्न तालोमा गवाय छे तेम आ पण गाई शकाय तेवी छे बीजी पक्ति 'तुर रस'; सुधी चतुष्कल–अष्टकलमा चाली पछीथी षट्कलोनो प्रवाह चाले एम पण गाई शकाय. प्रेमानन्दनी दाणलीलानी गरबीमा एम थाय छे ए हु कही गयो छु

नरसिंहनी एक बहु ज प्रसिद्ध कृति लउ :

नागर नदजीना लाल
रास रमता मारी नथडी खोवाणी
काना जडी होय तो आल
रास रमता मारी नथडी खोवाणी.
नानी नानी नथडी ने माही घणेरा मोती
नथडीने कारणे हु नित्य फरू छु जोती जोती जोती नागर०

घोळपदसागर, भा १, पृ. ५२८

न्यास·

नागर] न⌣द, जीना, ला –, – ⌣ ल;
रा –, सर, मन्ता, मारी, न ⌣ थ,डीखो, वाणी,
काना, जडी, हो̆य तो, आ –, – ⌣ ल, रा –,सर,
मन्ता, मारी, न ⌣ थ,डीखो, वाणी, ––,
नानी, नानी, न ⌣ थ, डीने, माहि घ,णेरा, मोती, ––;
न ⌣ थ,डी ने;का ⌣ र,णे हु, नित्य फ,रू छु; जोती, जोती;जोती नागर;

आखी चतुष्कल रचना छे अने प्लुतोनो न्यास बहु खूबीथी कर्यो छे. आनाथी वधारे जटिल एक बीजी रचना नरसिंहनी ज लईए :

जमो तो जमाडु रे जीवन मारा टेक
वालाजी मारा, सोवण थाळ भरी लावु
काई मोतीडे वधावु रे जीवन मारा

नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह, पृ. ५६६

न्यास :

जमो, तो ज, माडु, रे–; जी–,वन; मारा,–

वा;लाजी मारा; –सो वण, था ⌣ळ भरी, लावू,–

कँ; मोती डे वं;धावू रे–; जी–, वन, मारा,– –;

आखी कृति चतुष्कलमा वहे छे रचना अटपटी छे, पण गवाता बराबर आ रीते ज आ ज प्लुतबद्ध अक्षरन्यासथी गवाय छे बीजी पंक्तिमां पहेला अष्टकल पछीना अष्टकलमा पहेली बे मात्रा अनक्षर रहे छे, अने ए उपर रचनानो ताल पडे छे, अने ते पछी गा ⌣ ल चतुष्कल आवे छे, ए बधी आ रचनानी मर्गीओ छे पण खरी रीते जोईए तो बधा प्रकारनी रचनाओनी बधी मर्गीओ गणावी शकाय एम नथी मात्र दिग्दर्शन थई शके

प्रकरण १२मामा 'मारु मन मोह्यु॰'' अने 'वामण दीसे छे' कृतिओ आपी छे जे विशेषे करीने पद कहेवाय छे ते घणाखरा असमसख्यसंधिनी पंक्तिवाळा होय छे एनी अनेक रचनाओ मळे छे ते बधी अही उतारवी शक्य नथी एटले आगळ चालीए.

हवे षट्कल रचनाओ लईए तेमा प्रथम हु दयारामनी एक सुदर गरबी लउ छु :

पाघरे पधे जा !
नेण नचावता नदना कूवर पाघरे पधे जा !
सुदरी सामु जोई विट्ठल वामल्डी मा वा
गुमानी पाघरे पधे जा !
आव ओरो एक वात बहु तुने कानमा कानूडा !
बीद हठीला अटके ? हु तो तारी छु सदा, गुमानी पाघरे पधे जा

दयारामरससुधा, पृ ८१

आ षट्कल संधिओनी रचना छे उत्थापनिका :

नेणन; चावता, नदना, कूवर; पाघरे, पथे –; जा – – ; – – – ;
सुदरी; सामु – ; जो – ई; विठ्ठल; वासल; डीमा–; वा –गु;
मानी–; पाघरे, पथे –, जा – –; – – –;

पहेली पंक्तिमा 'जा' आवे छे ते ज स्थाने बीजी पंक्तिमा 'वा' आवे छे. पण ए 'वा' ना ज षट्कलमा ध्रुवनो पहेलो अक्षर स्थान मेळवे छे. अही ध्रुव गरबीना प्रारभमा 'पाघरे पथे जा' एम आपेल छे पण त्या खरी रीते ध्रुवपंक्ति नीचे प्रमाणे जोईए :

पाघरे पथे जा गुमानी पाघरे पथे जा

उत्थापनिका :

पाघरे; पथे –; जा – गु; मानी –; पाघरे; पथे –; जा – –; – – –;

घणी ध्रुवोमा, आ प्रमाणे प्रथमना शब्दो फरी अत तरफ आवे छे त्यारे वचमा थोडा बीजा शब्दो होय छे, तेवी आ पण छे आगळ जोयेली 'श्याम रग०' अने 'फूलना पेरीने०' एवी ध्रुवो छे एवी ध्रुवोमा आतरा पछी ध्रुवखडनो मध्यभाग जोडाय छे जेमके उपरनी ध्रुवमा 'गुमानी' थी ध्रुवखड जोडाय छे

हजी दयारामनी एक त्रिकल-षट्कलबद्ध अति प्रसिद्ध पण अति जटिल रचना लउ :

चाल व्हेली अलबेली प्यारी राधे !
तने तारो कान बोलावे,
तने घनश्याम बोलावे;
तने तारो पियु बोलावे, सरस समय साधे साधे प्यारी राधे.
एम वही पति अति रतिस्मृति करावी,
सजाव्या शृगार जेमतेम समजावी,
लावी ललिता पटराणीने पधरावी
सोपी श्याम, सोपी श्याम, सुदर श्याम करी प्रणाम,
वळी वाम कुजधाम पुरणकाम निगमयाम,
शो विश्राम ते गुणग्राम कथे आम दयाराम
हर्ष वाधे, वाधे, प्यारी राधे

दयारामरससुधा पृ ७४

उत्थापनिका

चाल] ब्हेली अल, ब्रेलि प्यारि, रा ⌣ घे ⌣, –
तनें तॉरों,] व्हॉन वॉलॉवि, –
तनें पन,] श्यॉम वॉलॉवि, –
तनें तॉरा,] पियु वॉलॉवि, सरस समय,
साधेसा, घे प्यारी, रा ⌣ घे ⌣, –⌣

एम,] कहि पति अति, रति स्मृति य, रा – –, वी ⌣
सजा,] व्या शृंगार, जेंमतेंम सम, जा – –, वी ⌣
लावि,] ललिता पट, राणिनें पथ, रा – –, वी⌣
सोपि,] श्याम सोपि, श्याम सुंदर, श्याम करि प्र, णाम
वळी,] वामबृज, धाम पुरण, काम निगम, याम

शोंवि] श्राम तें गुण, ग्राम क्वे, श्राम दया, राम
हर्ष] वाघेवा, घेप्यारी, रा ⌣ घे⌣,

घणी अटपटी रचना छे दयारामे टूंका प्रासो नाखी तेने वधारे अटपटी करी छे छतां पठनगाननमां सुंदर छे दलपतरामे अने नर्मदाशंकरे बन्नेए आनी नकल करी छे

हवे हुं देशी अने पदोमां सप्तकल रचनाओ लउं छुं सप्तकल संधि दीपचंदी तालमांथी आवेलो छे, अने ए ताल साधारण गायक माटे अघरो गणाय छे पण गुजरातमां तो अनेक-लोकगीतो भजनो सप्तकल रचनामां बहु आसानीथी गवाय छे

मन मतवालो प्यालो चाखियो
प्यालो प्रेमहुंदो पीधो रे
जरा रे मरण वाको गम नही
सदगुरु शबदे सियायो रे मन मतवालो०
अमर वरसे न अभर्युं भरे
भीन धरणी आकाशा रे
नटे कुमारी प्यालो भरी दीये
बोल्या लछमण दासा रे मन मतवालो०
(स्मरणमांथी)

उत्थापनिका

मन मत, वालो प्याला, चाखियो,⌣ –
ल्दा दादा ल्दा दा दा दाल दादा, ल्दा

प्यालो, प्रेम हूदो, पीधोरे –
दादा, लदादादा, ल दादादा
जरारे म, रण वाको, गम नही,‿ –
लदा दा दा, लदा दादा, लदा दादा, लदा
सदगुरु, शवदे सि, धायोरे –,
दा दा, लदा दा दा, लदा दादा,
मन मत, वालो प्यालो, चा‿खियो,‿– – –
अमर वर, से‿ने अभ, यूँ‿भं रे,‿–
भीजे, धरणीया, काँदा रे –,
अटलकू, मॉरी प्यालो, भरी दीये,‿–
बोल्या, लछमण, दॉसा रे –
मनमत, वालो प्यालो, चा‿खियो,‿– – –

भजनोमा घणी वार 'हे जी' आवे छे ए अही पण आवे छे. ते प्रारंभमां 'चाखियो' पछी आवे छे अने त्यारे ए सप्तकल नीचे प्रमाणे पुराय छे:

चा‿खियो, ‿–
हेँजि प्यॉलोँ

अर्थात् 'हेँ जि' उमेराता पछीना गुरुओ लघु थाय छे एक बीजु गीत लउं:

वन गया फकीर मेरे दाता वन गया फकीर जी
अखड धारा अमर वरसे स्वात्यू वरसे नीरजी
देवी देवता मेळे मळिया गुणपती गभीर मेरे दाता०
सात समुदर खारा भरिया तेमा मीठी एक वीरडी
डुगर माथे देरी दीठी दीठो घडनारो पीर मेरे दाता०

उत्थापनिका·

वन गया‿फ,कीर मेँरेँ दाँताँ, वन गया‿फ,कीर जी –,
अखॅड धारा, अमर वरसे, स्वाँत्यू वरसे, नीरजी –,
देँवी देँवता, मेँळे मळिया, गुणपती ग,भीर
मेँरेँ दाँताँ, वन गया‿फ, कीर जी –
सात समुदर, खाँरा भरिया, तेँमा मिठि एँक, वीरडी –
`डुगर माथे, देँरी दीठी, दीँठो घडनाँरोँ, पीर
मेँरेँ दाँनाँ, वन गया‿फ, कीरजी –

मयाव दाल्दादा अने मयाव ल्दादादा संधि आवे छे ते सहेलाईथी जोई शकाय आमा भजननी हवे मयाव 'रे' भळे छे एम थाय त्यारे आसपासनी मात्राओ घटे छे, जेमके 'देँवीँ रेँ देँवता', 'मेँळेँ रेँ मळिया' एवी ज रीते 'भाई' पण भळे जेमके 'अस्ँढ धोँरोँ भाँई', सातेय अक्षरो लघु आपणे 'श्यामरग०' 'फूलना फेगे०' वगेरेमां ध्रुवमा जोयु हतु तेम अही पण ध्रुवमा आदिना शब्दो अतमा फरी आवे छे अने वचमा थोडा शब्दो मुकाय छे, अने ए वचमा मुकायला शब्दोथी ज ध्रुवरूढ अतरानी पक्ति साथे जोडाय छे आ प्रक्रिया एटली रूढ छे के एक नाटकमा मदवरीनी रचना साभळेली तेमा पण ए ज पद्धति छे रचना सप्तकल छे, अने हास्यनी वृत्ति पण सप्तकलमा आवी शके छे ए आ उपरथी जणाशे, जो के हास्य ऊचा प्रकारनु नथी

हॉको वालो लागे भाई भाई होनो वालो लागे
चलम तो चतुराई मरेने हावो हरिनी माया
खलेचीमा हाथ ज नास्यो जाणे गगाजीमा नाया भाई०

उत्थापनिका

होँको वालो, लाँगे भाँइ भाँइ, होँको वालो, लाँगे——,
चलम तो चतुराँइ करेने, होँको हरिनी, काँया——,
खलेचीमा, हाँथ ज नाँख्योँ जाँणेँ, गँगाजीमा, नाँया
भाँइ भाँइ, होँको वालो, लाँगे——

बराबर 'बन गया फकीर'नी ज आ रचना छे 'हायज०' वाळा सप्तकलमा सात अक्षरो छे, अलबत्त आ बधा लघु ज छे, अने तेमा पाच गुरुओने लघु करवा पडे छे एथी हास्य ठीक पोषाय छे एम मने लागे छे हवे हु धीरानी काफी नामे आळखाती रचनानो दाखलो लउ छु एमा आतरो अथवा आतरानो अमुक सुधीनो भाग चतुष्कल छे, बाकी आखी रचना सप्तकल छे आ काफीओ पण पद कहेवाय छे

मत मळे साचारे अगमनी ते खवर्युं करे
भावे भेटु तेने रे, सरवे सारा कारज सरे सत०
उलटी सरिता चडी गगन पर विण वादळ वरसाय
विना आभ त विजळी चमके, गेवा गरजना थाय
धीरे धीरे वरसे रे, वरसीने अभर्युं भरे सत०

उत्थापनिका :

स॑त॑ मळे, सा॑ऽचा–, रे॒ऽ––, अगमनी ते, खव॑यू॑ऽक, रे॒ऽ––,

भाँवे भेटू, ते ऽने –, रे ऽ––,सॅवे॑ मारा, कॉरज ऽस, रे ऽ––,

घणे भागे आटली ध्रुव गवाया पछी अते हो ऽ––, जी ऽ––, एम आवे छे आतरानी रचना चतुष्कल छे, अर्थात् ताल बदलाय छे तेने माटे होजीवाळा बे सप्तकलोनी जरूर पडे छे प्रथम, आखो आतरो चतुष्कलमा लउ छु

उलटी, सरिता, चढी ग, गनपर, विण वा, दळ वर, सा –,– ऽ य,
विना आभ ते, विजळी, चमके, गेबि ग,रजना, था ऽय, ऽ

धी] रे ऽधीरे, वरसे –, रे ऽ––, वरसीने, अभयूँ ऽभ,रे ऽ––,

स॑त॑ मळे, ...

उपरना आतरानो अत्य शब्द 'था ऽय' बोलाईने पछी ध्वनिरहित विराम आवे छे अने पछी पाछा सप्तकलो चाले छे अने तेनी साथे ध्रुवपंक्ति जोडाई जाय छे ए आखो आतरो साखी क्हेवाय छे एम स्मरण छे, अने ते दरमियान तबला बंध रहे छे पण घणी वार ए आखो आतरो चतुष्कलमा नथी चालतो, बीजी पंक्तिना अर्ध पछीथी सप्तकलमा सरे छे आ प्रमाणे —

गे ऽबी ग,रजना –, था ऽय

धी] रे ऽधीरे, . . .

आखी रचना बहु चमत्कारवाळी अने सुदर छे आनी भंगीओ तरत ध्यानमा आवे एवी छे ध्रुवनु बीजु सप्तकल घणे भागे बे ज गुरुओथी आखु भराय छे, अने ते पछीनु त्रीजु 'रे'थी भराय छे, क्वचित ज तेमा पछीना शब्दना एकाद अक्षरने स्थान आपवु पडे छे अत्य सप्तकलमा पण एक ज गुरु आवे छे उपान्त्य सप्तकलनी एक खासियत पण ध्यान आपवा योग्य

छे 'खवयूँ ऽक' 'कारज ऽस' अने 'अभयूँ ऽभ' त्रणेयमा अते लघु छे अने तेनी पहेला त्रण मात्रानो प्लुत गुरु छे एम आ रचनामा खूबीदार भंगीओ छे में क्वचित ज आमा अपवादो जोया छे

आटलाथी आवी रचनानु दिग्दर्शन थई जशे एवी आशाथी आ प्रकरण पूरु करु छु

देशीओ अने पदोनुं परिशिष्ट

प्रकरण १४मा में कह्युं के केटलीक रचनाओ एवी होय छे के तेना अक्षरविन्यास उपरथी सामान्य रीते सधिओ प्रतीत थाय नहीं, पण एक वखत गाता सभळ्या पछी तेना सधिओ पाडी शकाय अने तेनी उत्पापनिकामा देशीओ जेवी ज खूबीदार भगीओ जोई शकाय आमा में मुख्यत्वे दशकल अने चौदकल रचनाओनो उल्लेख कर्यो हतो आगला प्रकरणोमा षट्कल रचनाओनो एक वर्ग तरीके में देशीओमा समावेश कर्यो हतो पण एनो अर्थ एवो नथी के षट्कल रचनाओ बधी ज गाता साभळ्या विना मात्र अक्षर-विन्यासथी पकडी शकाय छे अर्थात् केटलीक षट्कल रचनाओ पण आ परिशिष्टनो विषय बने छे अने तेने हु पहेली लईश नीचे कवि न्हानालालनु एक लग्नगीत उतारु छु

सूरज ऊग्यो रे केवडियानी फणशे·
  के व्हाणेला वाये नवला रे
सूरज ऊग्यो रे मणि माणेकनी टशरे;
  के व्हाणेला वाये नवला रे.

आ गीत न्हानालालनु छे पण ते मूळ एक लोकगीत उपरथी लीधेलु छे अने तेनी आ कडीमा तो बहु थोडो फेरफार कर्यो छे ए लोकगीत प्रसिद्ध छे अने नीचे प्रमाणे षट्कलमा गवाय छे गीत, उपर, चार लीटीमा छे पण गवाता ते बे लीटीनु ज बने छे, जेनी दरेक पक्ति ध्रुवबद्ध छे नीचे प्रमाणे :

सूरज] ऊग्यो–, रे के–, वडियानी, फणशेके; व्हाणे–; लावाये, नवला–, रे

सूरज] ऊग्यो–, रे मणिमा, णेक्नी; टशरे के, व्हाणे–, लावाये, नवला–; रे

केवळ अक्षरविन्यास जोता तेनी षट्कल रचना ध्यानमा नहीं आवे अलबत्त जेणे साभळ्यु हशे ते तरत षट्कलने पकडशे, पण नहितर नहीं पकडाय. पण पकडाया पछी आ गीत एक पिंगल कृति होय एवी रीते ज उत्थापनिकामा पछी जशे आपणे जोई गया तेवी घणीखरी षट्कल रचनाओ पेठे ज पहेली बे द्विकल मात्राओ पछी तालबद्ध षट्कलप्रवाह चाले छे बीजा षट्कलमा 'रे', चोथामा 'के' अने अते 'रे'नु स्थान निश्चित छे आखी रचना षट्कलनी छे, तेमा मिश्रणो आवता नथी एवी रचना पकडवी वधारे अघरी

छे वयाक पण त्रिक्ल नजरे पडे तो त्रिकल पट्कल वने पकडाय छे, अने गरबीओ अने लोकगीतो घणा दादरा तालमा होय छे ए सभारीने त्रिकल षट्कलनो प्रयोग स्वाभाविक रीते वाचनार करे, पण त्रिकलरहित षट्कल पकडवु वधारे अघरु छे सरखाववा माटे एक गीतनी लीटी लउ छु.

वडताल गामने गोदरे हिंडोळो आवानी डाळ

आमा 'वडताल' गालगाल तरत नजरे पडे छे अने तेने लीघे 'हिंडोळो' 'आवानी' पट्कलो पण नजरे पडे छे बाकीना 'गामने⏑' 'गोदरे⏑' त्रिकलबद्ध षट्कलो तरत प्रतीत थाय छे पण त्रिकलरहित पट्कलो एम पकडाता नथी बीजु लग्नगीत अमारी नातमा गवातु अही लउ छु·

पीळो पीळो ते वानो में सुण्यो
पीळो हळदरनो छोड
सोय रे वानो में निरखियो
गोरा किया भाई रे तमने पिठडा करीश
ज्यम रे साजनिया सलोखशे
दुरिजन दुरिजन रे हरखे डावले पाय
दशमनिया रे दाझे वळे
रातो रातो ते वानो मे सुण्यो, वगेरे

सात पक्तिनी पीळा वानानी एक कडी छे पछी राता वानानी एवी ज बीजी कडी शरू थाय छे गीत गवाता पट्कल संधिओ नीचे प्रमाणे पडे छे

पीळो] पीळो ते, वानो–,–मे सू, ण्यो
पीळो, हळदरनो, छो––⏑ड,
सोंय रेवा, नो में–,–निरखी, यो
गोरा, किया भाँइ, रे तमने, पिठडा क, री–⏑श,
ज्यमरे सा, जनिया स,–तोख, शे
दुरिजन, दुरिजन, रे हरखे, डावले, पा–⏑य,
दशमनी, यारे दा,–झे व, ळे
रातो]

बहु खूबीथी अमुक अमुक पक्तिने अते संधि अधूरो राखी पछी आवती पक्तिना आदि शब्दथी आखु पट्कल रचेलु छे गवाता ताल शोधनारने मुश्केली पडे पण

गानाराने में बहु सरलतायी ताल साचवी अर्थात् संधि साचवी गातां सांभळ्या छे अमुक अमुक स्थाने अनक्षर मात्राओ उपर ताल पडे छे अने तेथी कृति बहु सूरीवाळी जणाय छे

उपर आपेला बन्ने लग्नगीतो में सप्तकलमा पण गवाता सांभळ्या छे पट्कल अने सप्तकल वच्चे मात्र एक ज मात्रानो फेर होवाथी आम थवुं सहेलुं छे बन्नेनी सप्तकल उत्थापनिका नीचे टूंकमां आपुं छुं

सूरज] ऊ⌣ग्यो –; रे⌣वे –; बडोयानी, फणदो के; व्हा ⌣णे –; ला⌣वाये;

नवला –; रे ⌣

सूरज, ऊ⌣ग्यो –; रे ⌣ मणिमा, णे⌣कैनी, टशरे के; . . . .

हवे 'पीळो०' नी उत्थापनिका :

पीळो] पी ⌣ ळो ते, बा ⌣ नो –,– ⌣ में सू; ग्यो ⌣

पीळो, हळदरनो, छो ⌣ – ड,

सोंये रे बा; नो ⌣ मे–, – ⌣ निरखी, यो ⌣

गोरा, किया भाई, रे ⌣ तमने, पिंडा के, री⌣ – शा,

ज्यमं रे सा,जनीया स, – ⌣तोस, शे ⌣

दुरिजन, दुरीजन, रे⌣ हरने, डा ⌣ बले, पा ⌣ – य,

दशमनी, या ⌣ रे दा,– ⌣ झे वे,ळे ⌣

रातो]

एकी पंक्तिमा अते अधूरो रहेतो संधि, ए ज पंक्तिमां अनक्षर मात्राथी शरू थतो उपान्त्य संधि, बेकी पंक्तिमा मात्र गालथी पुरातो आखो अन्त्य संधि, ए बधी आ गीतनी भंगीओ छे

नीचेनुं बाळगीत पण पट्कल रचना छे :

चकली तारा खेतरमा में झीझवो वाव्यो
झीझवे चडी जोउ रे कोई मानवी आवे
लीली घोडी पीळो चाबखो कीया भाई आवे
घूघरियाळी व्हेल्यमा वेई बा आवे
खोळामा बावन बेटडो धवरावती आवे
दूधे भरी तलावडी नवरावती आवे.

तेनी उत्थापनिरा·

चवाली, तारा –; सेतरमां ; – में –, झांझियो, वाग्यो –;
झांझवे, घडी –, जोउ रे, – मोई, मानवी, आवे –;
लीलांधो, डींपीळो, घावसो, – धी –, यामाई, आवे –
घूघरी, माळी –, म्हेल्यमां, – े –, ई या –; आवे –
खोळामा; वावन, वेंटडो, – पव, रावती, आवे –
दूधेम, रोते –, लावडी, – नेन, रावती, आवे –

आनी एक भगी अंत्य द्विकल अनक्षर ए तो सादी अने तरत पकडाय एवी छे पण वधारे सुंदर भर्गी तो चाथा पद्कल्नु प्रथम द्विकल आक्षर रहे छे अने एना उपर ज ताल आवे छे ए छे उपर प्रमाणे उत्थापनिका कर्या विना आ गीतनी ए खूबी पकडवी अघरी छे कोई कोई वार आगानें आसो पद्कलो अनक्षर आवे छे अने एवी रचनाओ गवाती साभळया विना पकडवी अशक्य छे हु नीचे बे पक्तिओ उतारु छु

मानूडा मानूडा तें तो घू वीधु जो गोरस पीधु गोरी गायनु .
नायनें धारण धउनी छे पाळी जो धीए शबोळी ल्यो माय पीरसु.

उपरनी बे पक्तिमां अंत्य प्रास नथी, अर्थात् आ प्रासबद्ध कडी नथी दरेक पक्ति छुट्टी छे, अने तेमा आतरप्रास आवे छे पक्ति घणी लाबी छे, पण तेमा अनक्षर प्लुत पद्कलो मूकता ते घणी वधारे लाबी छ ते जणाई आवशे ए घोडिया गीत छे, जेमा लाबा प्लुत उच्चारणोने स्वाभाविक रीते स्थान मळे छे

मानूडा, मानूडा, तें तो घू, – – –, वीधु जो, – – –, गोरस, – – –;
पीधू –, गोरी –, गायनू, – – –;
नायने, धारण, धौनी छे, – – –, पोळीजो, – – –, घी ए श, – – –;
बोळी –, ल्योना ∽ य, पीरसू, – – –;

कुल वार पद्कलो गवाय छे, तेमा चार पद्कलो अनक्षर छे आ प्लुत पद्कलो कृतिनु अंग छे धारण के बाळकने ऊघाडवाना प्रयोजन माटे ते आवश्यक छे आमा पहेला बे पद्कलो 'मानुडा ∽', एम करीने त्रिवर्णबद्ध करी शकाय पण आखी रचना जोता ए कृतिनु अग नथी एम समजाशे

पचकलनी तो देशीओ ज नथी मळती. पण दशकलनी देशीओ मळे छे. अने अक्षरविन्यास उपरथी ए पकडाय एवी नथी, ए नीचेना दाखला उपरथी तरत समजाशे. अमारी नातमा—ब्राह्मणनी घणीखरी नातोमा—जनोईमां बडवानु नीचेनु गीत गवाय छे. हु बे ज पक्तिओ उतारु छु:

बडवा काने घडी हाथे वीटी हीरे जडी रे
बडवो जै बेठो छे दादाजीने खोळे चडी रे.

अक्षरविन्यास जोईए तो रचना स्पष्ट रीते चतुष्कलनी जणाशे पण ए दश-कलमा गवाय छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

बडवा—] काने घडी—; हाथे वीटी—; हीरे जडी—; रे—
दादादा] दादा दादादा; दादा दादादा; दादा दादादा; दादा

बडवो—, जै बेठो छे—; दादाजीने—; खोळे चडी—; रे—
दादादा; दा दादा दादा; दादादादादा; दादा दादादा; दादा

पहेला त्रण द्विकलो पछी पाच द्विकलनी परपरा शरू थाय छे. अते चतुष्कल 'रे' आवे छे जे पछीनी पक्तिना त्रण द्विकल साथे जोडाई दशकल रचे छे. रचनानी एक खासियत ए छे के दरेके दरेक सधिमा पाचमु द्विकल अनक्षर छे, ते आगळना अक्षरनी प्लुतिथी बनेलु होय छे. पचकल सधिना, बे मात्रा अने त्रण मात्रा (के त्रण मात्रा अने बे मात्रा) एवा बे अवयवो छे, दा-लदा के दाल-दा एम तो अहीया पाच द्विकलो त्रण अने बे के बे अने त्रणमां वहेचायेलो छे. काने, कडी—; हाथे, वीटी—; ए प्रमाणे एक बीजु गीत लउ छु जे अमारी नातमा कन्या वोळावती वखते गवाय छे

लीलूडा ते वासनी वासळी शेरीए गाजती जाय रे
गरवा ते वागनी बेटडी केई बेन सासरे जाय रे.

गवाता आनी पचद्विकल उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय छे:

लीलूडाते—; वा—सनी—; वा—सळी—; शे—रीये—, गा—ज——;
ती————; जा—यरे—;

गरवाते—, वा—पनी—; बे—टडी—, केई बेन—, सा—स——;
रे————; जा—यरे—;

परपरा प्रमाणे उपर प्रमाणे गवाय छे दरेक लघु द्विकल तो छे ज, जो के बधी जगाए गुरुना चिह्नो कर्यां नथी आमा पण दरेक दशकल सधिनु छेल्लु

द्विकल अनक्षर रहे छे. हजी एक बीजी रचना लउ. ए पण लग्नगीत ज छे, अने केटलीक नातोमा गवाय छे.

ढोलीडा ढबूक्या लाडी चालो आपणे घेर रे
ऊभा रहो तो मागु मारा दादाजीनी शीख रे
हवे केवी शीख रे लाडी हवे केवा बोल रे
परण्या एटले प्यारा[1] लाडी चालो आपणे घेररे

उत्पादनिका :

ढोलीडा ढ–; बूक्या लाडी–; चालो आॅपणे–; घे–ररे–;
ऊभा रहोतो–; मागु मारा–; दादाजीनी–; शी–खरे–;
परण्यां एटले–; प्यारा लाडी–; चालो आपणे–; घे–ररे–;

६ दरेक दशकल सधिमा छेल्लु द्विकल अनक्षर छे. 'चालो आपणे' सधिमा पाच अक्षरो छे, दरेकने द्विकल राखी दशकल करी शकात, पण तेम न करता 'आप' बन्ने लघु बोलाई पाचमु द्विकल अनक्षर राखेलु छे. 'परण्या एटले' ए सधिमा छ अक्षरो छे छता द्रुत अक्षरोने खोडा करीने पण छेल्लु द्विकल अनक्षर करेलु छे आम करवामा भाषाना साधारण उच्चारण उपर वधो अत्याचार थतो नथी,—गीतनी विलबित गतिने लीधे, हु धारु छु हजी एक बीजी आवी ज दशकल रचना लउ छु ए पण लग्नगीत छे :

माडवडे वाई ढाळो ने बाजोठी– १
के फरती मेलावो ककावटी
तेडावो के आशापरीना जोशी– ३
के आज मारे लखवी छे ककोतरी
वधावो मारा कीया भाईने छेडे– ५
के जाय मारा केई बेनने नोतरे
बेनी रे तमे सूता छो के जागो– ७
तमारे मैयर पगरण आदर्यां

---

१. 'प्यारा'नो अर्थ 'पारका' एवो छे एक दूहामा पण आ शब्द आ अर्थमां आवे छे

घोडाने घी पाते, मामळ करगरिये नही
चमकी दी चडथे, प्यारा पोताना करे

उत्थापनिका :

माँड ⌣ व] डे काँइ ढाळो –; ने बाजोठी ⌣ के ँ;
दादादा]　दा दा　दादादा; दा दा दा दा दा;

फरती मेला –;　वोकवाव –; टी –
दादा　दादादा; दादादादादा; दादा
तेडा –; वो कँ आशा –; परिना जोशी ⌣ के ँ;
दादादा; दा दा दा दा दा; दादा　दादा　दा;
आँज मॉरेँ तसवी –; छे ककोत –, री –
दा　दा　दादादा; दादादादादा; दादा
बधा –; वो मॉरोँ कीया –, मोँइने छेडे ⌣ केँ;
दादादा; दा दा दादादा;　दा दा दादादा;

जॉय मॉरोँ केई –; बेँनने नोत –; रे –
दा　दा　दादादा, दादा दादादा; दादा
वेनी –; रे तमेँ सूता –; छो के जागो ⌣ त;
दादादा; दा दा　दादादा, दा दा दादादा

मारे मेंय ⌣ र; पगरण आदे –, यी –
दादा दादादा, दादा　दादादा, दादा

आमा पण नियम तरीके जोईशु तो दरेक सधिमा पाचमु द्विकल अनक्षर ज रहेतु जणाशे तेमा थोडा अपवादो देखाय छे तेनो ज मात्र विचार करीए पहेली त्रीजी अने पाचमी पक्तिमा अत्य सधिमा आखु द्विकल अनक्षर नथी होतु, तेमा उपान्त्य मात्रा अनक्षर होय छे, पण अत्य मात्रा पक्तिना 'के' थी पुरायेली होय छे पण आ 'के' तो तानपूरक छे, सगीतनु अग छे, एटले एने खरी रीते हु अनक्षर द्विकलनो अपवाद नथी गणतो पछी अपवाद तरीके मात्र ७मी पक्ति रहे छे जेमा छेल्ली मात्रा तानपूरक नही पण पछीनी पक्तिना शब्दनो आद्य अक्षर ले छे आ एक ज अपवाद आखी कृतिमा छे, तेने अग्रेजी कहेवत प्रमाणे, नियमसमर्थक अपवाद गणु छु एटले आ गीतमा पण पाच द्विकलसधिनो छेल्लो द्विकल अनक्षर रहे छे. एक बीजी बाबत पण लक्षमा राखवा जेवी छे आ गीतमा पहेला त्रण द्विकलो पछी दशकलपरपरा शरू थाय छे, अने उत्थापनिका आपता में ते चोक्साईथी बतावेलु छे पण जो ए सरत न राखीए, अने आदियी ज पचद्विकल सधि गणवा माडीए तो, सधिना अतनो अनक्षर द्विकल अछतो थई जशे, ध्यानमां

नहीं आवे एटले के उत्थापनिवा पटावर्ता आ सगाळ हमेशा आवश्यव समजवी जोईए पहेली पक्तिमा 'भाई' पाचमीमा 'भाई' बन्ने अनेक गुरु छे, पण ते दर्शाववा कोई खास सज्ञानो उपयोग करवाने बदले में बन्ने अक्षरो लघु करी एक गुरु साधेलो छे.

में आ परिशिष्टमा प्रारभमा कहयु के पद्दलने जातिछदोमां स्वीकारेलुं छे छता केटलीक रचनाओमा ते गवाया विना पकडी शकातु नथी, अने तेथी ते प्रकारनी रचनाओ आ परिशिष्टमां पडे छे ए ज वात सप्तकल माटे पण खरी छे केटलीक सप्तकल रचनाओ गवाया विना पकडाय तेवी नथी. अने तेथी तेनो एक दाखलो, चौदकल रचनाओमां प्रवेश कर्या पहेला जोता जईए आ दाखलो पण लग्नगीतनो छे

मोर जाजे ऊगमणे देश
मोर जाजे आथमणे देश
वळनी जाजे रे वेवायुने माडवे हो राज
किया वेवाई सुतो छु के जाग
किया वेवाई सुतो छु के जाग
किया भाई वरराजाए सीमाडा घेर्या माणाराज

गीत सप्तकलमा नीचे प्रमाणे गवाय छे

मो॑र जाजे, ऊ॒गमणे, दे॒–॒शे॑
लदा दादा, दालदादा, दाल दादा
मो॑र जाजे, आ॒थमणे, दे॒–॒श
लदा दादा, दाल दादा, दालदादा

वळतीजा, जे॑ रे वे॑वा॑यु॑ने॑, मा॑डवे॑ हो, रा॒–॒ज
ल्दादादा, ल दा दा दा, लदादा दा, दाल दादा
किया वेवॉइ, सुतो छू के, जा॒–॒ग,
लदा दादा, ल्दा दा दा, दाल दादा,
किया वेवॉइ, सुतो छू के, जा॒–॒ग,
ल्दा दादा, ल्दा दा दा, दाल दादा,
किया भॉइवर, रॉजॉएँ सिमॉडा, घे॑र्यामाणा, रा॒–॒ज.
लदा दा दा, ल्दा दा दा, ल्दा दादा, दाल दादा,

गीत बहु प्रसिद्ध छे गीतमा आवता 'मोर जाजे' 'ऊगमणे' 'आथमणे' वगेरे चतुरक्षर सधिओ सप्तकलनी सूचना करे, अने एम थाय तो

उत्थापनिका वदाच गीत सांभळ्या विना पण करी शकाय, पण बाकीना संधिओमा ह्रस्व दीर्घनी छूट एटली वधी छे के संधिओ प्रतीत न थाय

हवे हु चौदकल रचनाओ लउ छु प्रथम एक लग्नगीत लउ छु जे घणी नातोमा गवाय छे

दादाने आंगण आंबलो
आवो घेर गंभीर जो
एक पांदडलु में तोडियु
दादा गाळ मा देश जो
लिलुडा ते वननी चरकलडी
ऊडी जाशु परदेश जो
आजे दादाना देशमां
काले जाशु परदेश जो

उत्थापनिका

दादाने, आ–ंगण, आंबे–, लो–
दादादा, दादादादा, दादादा, दा दा

आवो, घेरंग, भी◡र जो–,
दादा, दादादा, दादा दादा,

एकपां, द◡डलूमें, तोडी–, यू–
दादादा, दादादादा, दादादा, दादा
दादा, गाळमा, दे◡श जो–,
दादा, दादादा, दादा दादा,

लिलुडाते, व◡नी–, चरक◡ल, डी–
दादादा, दादा दादा, दादा दा, दादा
ऊडी, जाशु पर, दे◡श◡जो–,
दादा, दादा दा, दादा दादा,

आजेदा, दा–ना–, देशं–, मां–
दादादा, दादा दादा, दादादा, दादा
काले, जाशुपर, दे◡श जो–,
दादा, दादादा, दादा दादा,

उदाहरणमा जेम आपणे पाच द्विकलोमा बे अने त्रणना सधिओ बताव्या, तेम अही सात द्विकलोमा पण सधिओ पडे छे दाल्दादा अने दादाल्दामा सप्तकल सधि जेम त्रण अने चार अने चार अने त्रण मात्रामा वहेंचातो हतो तेम अहीया सप्तद्विकल सधि त्रण अने चार के चार अने त्रण द्विकलोमा वहेंचाय छे आ उत्थापनिका जोवाथी सरत समजाशे के सप्तद्विकलो पक्तिओमा केवी रीते विभक्त थया छे ×

आ जातनी देशीओ पण घणी छे, अही तेनु दिग्दर्शन मात्र करवानो उद्देश छे

परिशिष्ट घ

'प्रवाही छंद' के सळंग पद्यरचनाना प्रयत्नो

आपणे अग्रेजी साहित्यना परिचयमा आव्या ते साथे तेना अनेक प्रकारोना प्रयत्नो अने प्रयोगो करवाना आपणा साक्षरोने कोड जाग्या तेमा अग्रेजीमा जने 'एपिक' (epic) काव्यो कहे छे, जेने माटे आपणे 'वीररस महाकाव्य' नाम योजेलु छे ते रचवाना पण कोड जाग्या कवि नर्मदाशकर घणी बाबतोमा नवा जमानाना कोड मूर्तिमन्त करे छे ते पोताना 'वीरसिंह' काव्य नीचेनी टीपमा कहे छे "ज्यारथी मने समजायु के हवे हु कोई पण विषयनी कविता करवामा फावीश त्यारथी मने एवो बुट्टो ऊठेलो के जिंदगीमा एक मोटी वीररस कविता तो करवी ज" आ बुट्टो सिद्ध करवा आगळ विचार करता ते कहे छे "पछी वृत्तना विचारमा पड्यो"

अग्रेजीमा एपिक महाकाव्यो जे छदमा व्यापक रीते लखाय छे तेने अग्रेजीमा 'ब्लॅंक वर्स' कहे छे महाकाव्यने माटे गुजरातीमा पण 'ब्लॅंक वर्स'नु काम आपी शके तेवी कोई पद्यरचना जोईए एम समजाता अनेक कविओए तेना प्रयत्नो कर्या पिंगळमा आपणे आ प्रयत्नोने पण पिंगळ दृष्टिए जोई जवा जोईए

अही अग्रेजीमा 'ब्लॅंक वर्स' कोने कहे छे, अने काव्यरचनामा ते केवी रीते उपयोगी के अर्थवाहक थाय छे ते प्रथम जोवु जोईए एने विशेनी 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका'ए आपेली व्याख्या हु प्रथम उतारु छु

Blank verse, the unrhymed measure of iambic decasyllable adopted in English epic and dramatic poetry The epithet is due to the absence of the rhyme the ear expects at the end of successive lines[1]

'ब्लॅंक'नो वाच्यार्थ 'खाली' एवो थाय छे 'ब्लॅंक वर्स'–एटले 'खाली पद्यरचना' खाली शब्द अमुक अपेक्षित वस्तुनो अभाव दर्शावे छे 'एनसाइक्लोपीडिया' कहे छे के कवितानी एक पछी एक आवती पंक्तिओने अंते कान जे प्रासनी अपेक्षा राखे छे ते आमां नथी माटे आ पद्यरचनानु नाम ब्लॅंक एवु पडेलु छे तेना स्वरूप विशे ते कहे छे के ते दशाक्षरी होय छे, अने तेमा अमुक संधिना आवर्तनो आवे छे आ संधि एक लघु अने एक गुरु एवा क्रमे बे अक्षरोनो बनेलो होय छे अर्थात् आ पद्यरचनानी पंक्तिमा ए संधिना पाच आवर्तनो आवेला होय छे आपणे जातिछंदोमा जोई गया के प्रास के तुकांत शब्दप्रवाहमाथी पंक्तिओने छूटी पाडी आपे छे ए प्रास काढी नाखवाथी शब्दप्रवाह पाछो अबाधित वहेवा माडे छे एपिक कवितानो, महाकाव्यनो विषय, जेम महान व्यक्तिओ महान कार्यो, महान बनावो, महान अने उदात्त विचारो, होय तेम तेनी शैली अने तेनी भाषा पण महान अने उदात्त होय छे, अने तेने माटे घणी वार लाबा वाक्यो आवे सप्रास रचनाओमा पंक्तिओना छेडा आवे, त्या लाबा वाक्योने एमा वहेवामा विघ्न आवे, अने तेथी प्रासनो लोप करीने अंग्रेजी काव्ये सळंग रचना साधी पण अंग्रजी ब्लॅंक वर्सनु सामर्थ्य मात्र आटला उपर आधार राखतु नथी अंग्रेजी कविता गवाती नथी, ते बोलाय छे, ते पाठ्य होय छे, गेय होती नथी आ लक्षणने लीधे ते निष्प्रास बनता महान वाक्यो अने प्रबळ शब्दप्रवाहने धारण करवा समर्थ थाय छे एटले ब्लॅंक वर्सनु नाम आपनार पद्यरचना अगेय पण होवी जोईए आ लक्षण अंग्रेजी विवेचन उल्लेखे नही पण आपणे पहेलेथी ज ए ध्यानमां राखवु जोईए

'ब्लॅंक वर्स'ना स्वरूप विशे अंग्रेजी विवेचक सेंट्सबरी शु कहे छे ते जोईए ए एना त्रण लक्षणो आपे छे (१) the overrunnig of the line एटले के वाक्यनु एक पंक्तिमाथी ऊभराईने बीजीमा वहेवु (२) the variation of the pause एटले यतिने पंक्तिमा यथेच्छ स्थाने मूकवानी सगवड अने (३) the employment of the trisyllabic feet एटले त्र्यक्षर संधि के बीजनो प्रयोग'

1 Manual of English Prosody

आमाना पहेला बे लक्षणो महावाक्यमा महावाक्यो आवे एम आपणे कहयु तेनो सगवड माटे ज छे ज्या सुधी प्रास होय त्या सुधी पक्तिने अत छे, अने ते अत आगळ वाक्यने विरमवानी जरूर पडे ज प्रास जता वाक्य पक्तिना अतने वटीने पण आगळ जवु होय त्या सुधी जई शके पण ए ज रीते वाक्यने जवु होय त्या सुधी जईने पछी अर्थाधीन विराम पण लेवो पडे. एटले जे स्थाने विरमवु होय त्या विरमवानी पण तेने सगवड जोईए. अर्थात् पद्यरचनामा यथेच्छ यति मूकवानी सगवड पण होवी जोईए त्रीजु लक्षण अग्रेजी कविताना स्वरूपने लगतु छे, जो के तेमा रहेलो सिद्धान्त सर्व सळग पद्यरचनाने लागु पडे छे आगळ जोई गया तेम ब्लॅंक वर्स रचना लघु-गुरु घटित सधिना आवर्तनोनी बनेली छे, पण एवा एक सरखा आवर्तनोथी रचना कटाळाजनक थई जाय, तेमा वैविध्य आणवा तेमा व्यक्षर सधिनी छाट आवती होय छे तेनो अही उल्लेख करेला छे

आपणा विवेचकोमा प्रो बळवतराय ठाकोरे सौथी पहेला विचारपूर्वक सळग पद्यरचनानो प्रयोग कर्यो अने एनु विवेचन पण कर्यु तेमना प्रमाणे गुजराती ब्लॅंक वर्सना लक्षणो आ प्रमाणे तारवी शकाय (१) अगेयता. (२) सळगता के अखडितता जे सेन्ट्स्वरीना पहेला लक्षण साथे सबध धरावे छे, (३) यतिस्वातत्र्य, जे सेन्टस्बरीनु बीजु लक्षण छे, अने (४) अभावात्मक लक्षण के ए रचना एकविध थई कंटाळाकर थवी न जोईए.

अर्थात् प्रो ठाकोरे सेन्ट्स्वरीना लक्षणोमा एणे नही कथेल अगेयतानो उल्लेख कर्यो अने तेने प्रथम स्थान आप्यु अने आपणे पण आपणी कसोटीमा एने मुख्य महत्त्व आपवु जोईए

आ अगेयतानो ख्याल आधुनिक ज छे, अग्रेजी कविताना ससर्गजन्य छे ए पहेला आपणे आगळ जोई गया तेम सस्कृत प्राकृत अपभ्रश गुजराती सर्व कविता गवाती ज आ अगेयतानो ख्याल नर्मदने हतो ते एक जगाए लखे छे "हु बोल्यो के हमारी प्राकृत कविता अग्रेजी प्रमाणे सादी रीते नथी बोलाती पण कईक गवाय छे "[२] नवलराम आ दृष्टिए नीचेनो *अभिप्राय आपे छे ते पण नोंधवा जेवो छे* "आपणी भाषामा कविता बोलाती नथी पण गवाय छे एक दोहरो पण रागडा ताण्या विना आपणे बोलता नथी कविता बोलवी ज ए शु ते आपणामा थोडा समजता हशे . आ रीति सपूर्णपणे अग्रेजीमा प्रवर्तमान छे—तेमा तो कविता वाचती वेळा

२ मारी हकीकत, पृ ८९

राग जरा पण काढवो ए अति निंद्य गणाय छे पण आपणे जे आव भणनार पण राग काढे छे त्यारे ज राजी थईओ छईए, तो परभाषानी काव्य सबंधी आवो विरागी नियम शा कामनो ? छदोबद्ध कविताओमा पण एक वृत्तना काव्योवाळी भाषानी पदवीए पहोचता हजी गुजरातीने वार छे, अने ते वखत आववा पहेला अवश्यनु ए छे के कविता गावानी रीत जई आपणामा ते बोलवानी रीत पडवी जोईए " [3] आ तेमनो लेख १८८२नो छे

आ प्रकारनी रचना माटे जुदा जुदा लेखकोए जुदा जुदा नामो आप्या छे प्रो बल्वतराय ठाकोर जेमणे आनी सौथी पहेली चर्चा करी तेमणे चर्चानु मथाळु 'सळग अगेय पद्यरचना' एवु करेलु एक शब्द नही पण वर्णनात्मक शब्दगुच्छ ए एने रूढ थवामा विघ्नकर छे, नहितर 'ब्लॅंक वर्स'नो बधो अर्थ आमा बरावर आवी रहे छे तेमणे पाछळथी चर्चामा 'प्रवाही' छदनो उल्लेख करेलो छे ते नाम अत्यारे वधारे रूढ थतु जाय छे प्रवाही छद एटले मापना प्रवाहित्वने अविघ्न धारण करवाने समर्थ छद एवो हु करु सद्गत के ह ध्रुव, पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचनामा आने अबद्ध छद कहे छे "मेळना झराथी छूटतो पद्यरचनानो प्रवाह निबद्ध होय, अथवा तो अबद्ध होय अमुक मापनी पक्तिओना जूथमा के जूथोमा प्रसरतो प्रवाह ते निबद्ध मापसर रचायली पक्तिने चरण, पद के दल कहे छे, अने चरण के दलना जूथने छद नाम आपे छे चरणोनी संख्याना बधन वगर छूटथी पसरती पद्यरचना ते अबद्ध इग्रेजीमा स्पेन्सरकृत Faerie Queene पोपकृत Iliad ए काव्यो निबद्ध पद्यरचनाना छे, अने मिल्टनकृत Paradise Lost तथा टॅनिसन कृत Princess अबद्ध रचनामा छ (प ऐ आ पृ १५) टूकामा कहेवु होय तो श्लोकबद्ध के कडीबद्ध ते निबद्ध अने जेमा श्लोक के कडी पडती नथी ते अबद्ध आ शब्द पण सारो छे अग्रेजी ब्लॅंक शब्दनी पेठे ए पूरेपूरो अभावात्मक छे, पण प्रवाही शब्द जेटलो ते रूढ थयो नथी कविश्री खबरदार आने 'अखड पद्यरचना' कहे छे ए पण सारो प्रयोग छे जो के रूढ थयो नथी

आ प्रकरणमा ब्लॅंक वर्सने माटे जे जुदा जुदा प्रयत्नो थया छे ते आपण जोईशु तेमा ब्लॅंक वर्स होवाना दावा विना थयेला प्रयोगो पण जाईशु आमाना घणाखरा प्रयोगो आपणा पिंगळमा आवी गयेला छदोना ज छे अने तेथी आ छदोने पण आपणा पिंगळना प्रकारोना अनुसधानथी जोवा वधारे अनुकूळ पडशे पण आ प्रयत्नोमा सद्गत कविश्री न्हानालालनो अपवाद

३ नवलग्रथावलि (शाळोपयोगी आवृत्ति) भा २, पृ २२६–२७

के डोलनशैलीने नामे ओळखातो प्रयत्न पिंगळना छंदो बहारनो छे. ए वाहन रीते, आपणे समजीए छीए तेवो कोई छंदनो नथी, तेने पहेलो लईशुं.

छंद विशेनो एमनो अभिप्राय स्फुट करवा आपणे प्रथम जरा छंदोनी भूमिका जोई जईए. पूर्व अने पश्चिम बन्नेनी विवेचन-मीमांसा प्रमाणे काव्य एटले वाङ्मयसर्जन गद्यमां होई शके. शाराला तरीके 'कादंबरी' ए काव्य ज छे. पण काव्यकलानी कोई गूढ आवश्यकता पूरी पाडवा काव्यने क्यारेक गद्यथी इतर कोई खास वाहननी जरूर पडे छे, अने त्यारे काव्य पद्यमां वहे छे. आवु वाहन ते छंद छे, जे आ पुस्तकनो विषय छे. कविश्री आ वाहनने पण स्वीकारे छे, अने तेमनां केटलांय काव्यो आ मतनु समर्थन करे छे. पण काव्यनी ए विशिष्ट आवश्यकता माटे छन्द सिवायनु पण वाहन होई शके अने तेमनी डोलन के अपद्यागद्य शैली ए प्रकारनु वाहन छे एवो एमनो दावो छे. 'इन्दुकुमार' भा. १लानी प्रस्तावनामां तेओ कहे छे: "ए सत्य छे के उछळतु धसमसतु के धीर गंभीर रसनु झरणु मनुष्य हृदयमां फूटे छे, त्यारथी ज कंईक अनेरा आंदोलने डोलतु ते वहे छे. . . अस्फुट कल्पना स्फुट थाय, वाणीयो पर भाव वाणीमां ऊतरे, अने रस रूपी आत्मा कविता देहे अवतरे, त्हेनी साथे ज देहनी सुन्दरतानी पेठे, वाणीनु डोलन पण जन्मे छे" डोलन ए तेमणे अंग्रेजी Rhythm (सवाद) माटे प्रयोजेलो शब्द छे. एमनी शैलीना विरोधीओ पण अहीं सुधीनी एमनी मीमांसा कबूल करे छे ए कहेवानी भाग्ये ज जरूर होय पण, तेओ आगळ कहे छे . " वाणीनु ए डोलन सौन्दर्यना अने कलाना महानियम प्रमाणे रचावु घटे छे, कारण के अर्थनी आंतर सुन्दरतानी वाणी तो बाह्य मूर्ति छे सौन्दर्य अने कलानो परमनियम Symmetry[4] समप्रमाणतानो छे, एक ज अवयवनी पुनरुक्ति-परंपरानो नथी सुन्दर एक फूल[5] के सुन्दर एक चित्र अनेक अणसरखी पांदडीओ के रेखाओनु बनेलु बहुधा होय छे, एवी ज रीते अनेक अणसरखा चरणरूप अवयवो गूथाई एक सुन्दर काव्य पण बने . . आरसनी चोरस गोळ के त्रिकोण लादीनी हारो वडे कलाविधायक सुन्दर फरसबन्दी बनावे

---

४. कविना वक्तव्य माटे आ अंग्रेजी शब्द सारो नथी — ऊलटो भ्रामक छे सिमेट्रीमां तो एक ज आकार के अंगनी पुनरुक्ति होई शके छे

५. आ दृष्टान्त पण बराबर नथी घणा खरा फूलोमां पांदडीओ एक ज आकारनी के सरखा आकारनी होय छे अणसरखी पांदडीओवाळां फूलोने पण वच्चे लीटी दोरीने एवी रीते दु-भागी शकाय के जेथी जमणी अने डाबी बाजूना आकारो बराबर सरखा थई रहे आने ज सिमेट्री कहे छे. वधारे पारिभाषिक शब्द कहेवो होय तो bilateral symmetry.

छे, पण ह्‌मो ज सकल सुन्दरतानो समावेश थवानो दावो कोई करतु नथी आकाश पाटे प्रकृतिनो कलानायक वारवार जे नवरग अद्‌भुत फरसबन्दी माडे छे ते कईक ओर अणसरखा रगशकलोनी होय छे तेम ज कवितामा पण वाणीनी गोळ के चोरस तत्त्वोओनी परपरा के पुनरुक्तिमा वाणीनो सर्वसौन्दर्य डोलननो समावेश थई जतो नथी, अने कुदरतने वधारे मळता अणसरखा सौन्दर्यडोलनवाळी वाणीने माटे स्थान रहे छे . एटले वाणीनु डोलन एकसरखु नियमित – Regular होवु जोईए एम पण सिद्ध थतु नथी कविताने आवश्यक वाणीनु डोलन अणसरखु Irregular होय तो पण जो रसने अनुरूप होय तो, सौन्दर्यना तेम ज कलाना महानियमानुसार ज ते छे" वाणीनु नियमित डोलन काव्यनु वाहन थई शके ए कोटि कविने मान्य छे एमा सदह रहेतो ज नथी प्रश्न एटलो ज रहे छे के नियम विनानी कोई रचना छद जेटलु ज काव्यनु वाहन थई शके के केम ?

कवि पोते आने छद कहेता नथी तेओ पोते ज कहे छे "सार्चे ज मारी शैली अपद्य छे अगद्य छे अपद्यागद्य छे एने छद में भाख्यो नथी ने सदाये उच्चार्यु छे के ए गद्य नथी " आटला उपरथी ज एमनी शैली आ पिंगलना अधिकारनी बहार जाय छे एटले ए सबधी वधु कहेवानु अहीं प्रस्तुत नथी मात्र एटलु उमेरीश के कविना पोताना विधानो उपरथी पण कही शकाय के अछान्दस रचना काव्यनु विशिष्ट वाहन थई शके नहीं पोतानी घडतर कथामा पराजयना उच्चारणमा तेओ कहे छे "अने चोथु' आजे त्रीस त्रीस वर्षोना अनुभव अते कबूल्त आपु छु . हु शोधवा गयो महाछन्द, ने मागर्यो जईने डोलनशैलीना शब्दमडलमा महाछदने आरे में पगलुये माड्यु नथी " वळी कहे छे "डोलनशैली ए वीसमी सदीनी पहेली पच्चीसीनी गुर्जर साहित्यनी हार अने जीत ए महाछद नथी, एटली एनी हार छे, एनाथी वधारे रसवाहि छद शोधाशे त्यारे ए हारशे, एटली एनी जीत छे" आ कबूल्तमा कवि ए पण कबूल करे छे के कविता माटे जे जोईए छे ते तो छद ज एओ पोते शोधवा तो गया हता छद ज, अने हजी पण महाछदनी जरूर छे एटलु ए स्वीकारे ज छे एटले आ चर्चा आ पुस्तकना अधिकारनी नथी कवि कहे छे तेम ए अपद्य छे मात्र एटलु विशेष हु उमेरीश के तेओ आने अगद्य गाने छे पण हु एने रागयुक्त गद्य गणु छु'

६ आने विशेनी विशेष चर्चा माटे जुओ मारो लेख 'अर्वाचीन काव्य साहित्यमा सळग अगेय पद्यरचना (ब्लॅंक वर्स)ना प्रयत्नो ' वार्षिक व्याख्यानो–२, पृ ९९–१२०

अपद्यागद्य शैलीने आम टूकमा पतावी हु विषयनी चर्चानी सगवड खातर प्रथम मात्रामेळी सधिथी निष्पन्न करेला सळग छदाना प्रयत्नो लईश आमा मुख्यत्वे कटाव अने रामछद आवे छे पण ए वे पहेला सस्कृत पिंगलोना दडको जोई जवा जाईए

आपणे जोई गया के सस्कृत पिंगलोमा समवृत्तोनु वर्गीकरण वृत्तोना अक्षरोनी सख्याने अवलबीने करेलु होय छे ते प्रमाणे एक अक्षरथी छव्वीस अक्षरो सुधीना वृत्तोने भिन्नभिन्न नामो आपेला होय छे छव्वीसथी वधारे अक्षरोवाळा वृत्तो दडक कहेवाय छे दडकनु स्वरूप एवु छे के तेमा प्रथम छ लघु अक्षरो आवे छे अने पछी गाल्गाना सात के वधारे आवर्तनो एक चरणमा आवे छे एवा चार सरखा चरणायी एक वृत्त थाय छे गाल्गाना आवर्तनोनी सख्या सबधी कोई खास नियम जणातो नथी 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामा नारायण भट्ट ९९९ अक्षर सुधीना दडको होई शके एम कहे छे अही मारे खास कहेवानु ए छे के सत्तावीस अक्षरथी ओछी सख्याना दडकना स्वरूपनी रचना एक मळी आवे छे, ते जोता हु अनुमान करु छु के ओछी सख्याना पण दडको हशे, पण १ थी २६ सुधीनी सख्याना समवृत्तोना नामो पाडी दई तेथी वधारे अक्षरोनी सख्यावाळा वृत्तो माटे ज दडक नाम रूढ करेलु होवाथी आ नानी कृतिओने दडक कही नथी दाखला तरीके 'रघुवश'मा आवतो नीचेनो श्लोक

रघुपतिरपि जातवेदोविशुद्धा प्रगृह्य प्रिया
रघुवश, १२, १०४

श्लोक आखो लखवानी जरूर नथी अही मल्लिनाथे वृत्तनु नाम आपेलु नथी पण 'शिशुपालवध'मा आ ज वृत्त आवे छ अने त्या मल्लिनाथ तेन महामालिनी कहे छे पिंगलना 'छन्द सूत्र'मा छेल्ला गाथा प्रकरणमा तेने नाराचक कहेलो छे गमे ते नाम आपो पण आ स्पष्ट रीते दडकनी ज रचना छे

न्यास ललललललल गालगा गालगा गालगा गाल्गा

पहेला छ लघु छे अने पछी गालगाना चार आवर्तनो छे हु मानु छु के आ पहेला छ लघु ललकारनो आद्य गति मेळववाना प्रयोजनथी आवे छे, बाकी आखी रचना गालगाना आवर्तननी ज छ अर्थात् आ रचना मात्रामेळ पचकल सधिना गालगा एवा लगात्मक रूपनां आवतनोनी छे सस्कृत साहित्यमा दडको घण भाग पाडित्यप्रदर्शन माटे आवे छ

गुजराती पिंगलो आ रचनानो उल्लेख करता नथी पण आपणा साहित्यमा एक जगाए आ रचनानो प्रयोग थयो छे सदगत छोटालाल

नरभेराम भट्ट 'शान्तिसुधा' काव्यमां अनेक छंदोना प्रयोगो कर्या छे तेमां दडक पण आवे छे:

> निरखि निरखि पेठा मुनि बागना भागमा, मार्ग रूडो निहाळी,
> वनी बाड बे पास गूलाबनी, सड्क वच्चे रहीं, कैंक क्यारा निहाळ्या
> एडा छोडना बेय पासे, सिच्या पाणिये, अमृते जाणिये, नीक रूडी
> करी, वीक राखी खरी, ठीक ठामे ठरी माळिये, भाळिये, कैंक चमेलि
> चपो अने मोगरो, कैंक दाडीम अजीर जातिफळो, कैंक बादाम
> नारिग लीबूडि छे, कैंक अक्षोट ने जमरुखी रूडि छे, कैंक
> वेली चढी शोभती माडवे, कैंक नाची रही छे लता ताडवे,
> कैंक हार्यो दिसे केळ केरी वडी, जेम पखा धरी ऊभि साहेलडी.[७]

आ दडकमा आवर्तन लेतो पचकल सधि गागाल छे ए ध्यानमा आव्यु हशे. गालगाने बदले गागालना आवर्तनो पण आवी शके तेमा नवाई नथी. अने आगळ जई कही शकीए के बाकी रहेल लगात्मक सधि लगागामा पण आवी शके.

सळग रचनानी अपेक्षाए आ रचना कटाळाजनक छे ते तरत नजरमा आव्यु हशे. अने कदाच ए कटाळो ओछो करवा ज कवि अही तही प्रासो मूके छे—पहेला अनियमित आतरे, अने 'कैंक चमेलि चपो अने मोगरो' ए स्थानथी तो गालगा गालगा गालगा गालगा एम चार गालगाना आवर्तनोनी प्रासबद्ध पक्तिओ ज अत सुधी चाले छे. पहेला छ लघुओ पछी गागाल सधि शरू थाय छे पण-पठन करता जणाय छे के कर्ता तरत ज गालगाना आवर्तनोमा सरी पडे छे, जे दडकनी दृष्टिए अनियमितता गणाय. पण आपणे तो ए ज जोवानु छे के आ रचना लवाण सहन करी शके एवी नथी. अने तरत ज भुजगीना ढाळमा सरी पडे छे अर्थात् अगेय रही शकती नथी.

आ पछी आपणे रामछदनी चर्चा हाथमा लईए. प्रथम तेनु दृष्टान्त उतारु छु:

> जय थजो जय थजो
> ज्या वस्या
> आर्य सस्कारनी विमळ प्रसरावता
> परशु निज स्कंध पर निरतर धारता
> प्रलयकालाग्निसम अरिदल विदारता
> रूद्र अवतार भडवीर विप्रेन्द्र तें

७. शान्तिसुधा, पृ. २७५

राम भार्गव वडा —
शत्रुने मारता, मित्रने तारता,
प्रेमने शौर्यना सूत्र स्वीकारता
कर्महीँन जगतने परम कर्तव्य निष्कामनो पाठ — शिखवाडता
विष्णुना अश योगीन्द्र गरुडध्वज
कृष्ण यादवपति —

आनी स्वतंत्र चर्चा करवा पहेला कविश्री खबरदारे अखंड पद्य रचना तरीके आनी चर्चा करी छे ते जोईए 'गुजराती कवितानी रचनाकळा' ना भाषणोनी चोथी रचनामा 'अखंड पद्य'ना प्रयोगोमा तेओ नीचेनी पंक्तिओ प्रथम उतारे छे ·

सरयूँना तट उपर पूर्ण अत्यंत धनधान्यथी,
वृद्धि पामेल उत्तरोत्तर नित्य आनंदमय
देश कोशल महा, त्या वसे अयोध्या
नामनी लोकविख्यात जे नगरीँ
मनु मानवेंद्रे स्वहस्ते ज निर्मी हती
* * *

गोठव्या हाट चहुटा वहु सुन्दर विभागमा
अटारी उच्च पर सहज फरफर थती . . .

गुजराती कवितानी रचनाकळा, पृ १६५

खबरदार आ फकरा विशे लखे छे "आ रचनामा 'दालदा' बीज बे पंक्तिमा बे वखत भागी पडयु छे जुओ

वृद्धि पा। मेल उत्। तरोत्तर। नित्य आ। नदमय।
देश को। शल महा। त्या वसे। अयोध्या।

अही पहेली पंक्तिमा त्रीजा सधिमा 'दाल्दा'ने बदले 'लदादा' — 'तरोत्तर' — गूथणी थई छे अने लय तूटे छे बीजी पंक्तिमा चोथा सधिमा 'अयोध्या' शब्द समायो छे ते पण 'लदादा' बीजनो छे बीजी बे पंक्तिओ पण जोईए.

गोठव्या। हाट चहु। टा वहु। सुदर वि। भागमा
अटारी। उच्च पर। सहज फर। फर थती .

अही पहेली पंक्तिमा चोथा सधिमा देखावमा पाच मात्रा अने 'दालदा' बराबर लागे छे, पण 'सुदर वि' एम बोलता 'सुदर' शब्दनी छेवटनी श्रुति

'र' पर मोटो भार तालनो आवे छे, अने तेथी ए शब्द घणो कढंगो सभळाय छे . बीजी पंक्तिमा पहेला ज संधिमा पाछो 'अटारी' शब्द आव्याथी 'दालदा' बदले 'ल्दादा' बीज वापर्यु छे ने उघाडो ल्यभंग थाय छे वळी एम कहीए के अंग्रेजी अखंड पद्यमा पण तालनु परिवर्तन एक बे संधिमा थई शके छे, पण अंग्रेजी छंद मात्रामेळ नथी गुजराती मात्रामेळमा अने ते पण 'दालदा' बीजना संधिमा आवु परिवर्तन कदी नभे नहीं 'दादा' 'दादा' बीजमा 'दाल्दाल्दा' जेवु परिवर्तन चाली शके, केमके त्या लय नभी शके छे, 'दाऽदादाल्दा' मा 'लदादादालदा' के ''दाल्दालदादा' करता भण 'दा' साथे थाय छे एटले आवा बीजमा, जे मात्रा पर ताल पडे त्या ताल शुद्ध सघावो ज जाईए नहीं तो रचना लगडी थई जाय छे वळी रा मनहररामे प्रत्येक पंक्तिना संधि एक सरखा राख्या नथी, पण पंक्तिनी गमे तेटली स्वैच्छिक लंबाई राखी छे, अने गमे तेटला संधि तेमा समाव्या छे लयने नियममा राखवा पंक्तिमा संधिनी संख्या एकसरखी रहेवी जोईए, तो ज एक पंक्तिमाथी उभराईने बीजी एक के अनेकमा कविना विचार – भाव – कल्पना आदि समाववानी छूट मळी कहेवाय 'अखंड पद्य' माटे आ रामछंदनी योजना सफळ थई शकी नथी " (एजन, पृ १६६)

अही खबरदारनो पहेलो वाधो ए छे के रामछंदमा दालदानो प्रवाह छे ते क्याक क्याक ल्दादा बीज आववाथी विक्षिप्त थाय छे आगळ पच-कल रचनाना स्वरूपनी चर्चामा ए संधिना त्रणेय लगात्मक स्वरूपानी संवा-दितानी हु चर्चा करी गयो छु त्या में बतावेलु छे के ल्दादा संधि दालदा साथे तद्दन संवादी छे ए चर्चा अही फरी न करता मात्र एटलु ज कहीश के प्राचीन काव्योमा पण दालदा साथे ल्दादानु मिश्रण थतु आगळ तेना दाखला आप्या छे पण अही फरी एक आपु

लोकनी लाज मरजाद ते परहरो,
नीरभे थैन हरि गुण गावो,
मनना मनोरथ पूरशे मावजी,
तजी संसार-वैकुंठ जावो
नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह, पृ ४८४

आखो प्रवाह दालदानो छे अने तेमा 'तजीस' लदादा छे पंचकल रचनानी चर्चामा में कहेलु छे के दाल्दा साथे दादाल एटलो संवादी नथी जो के ते पण नरसिंहना भजनोमा आवे छे

ग्रथ गरवड करी, वात न करी खरी,
जेहने जे गमे, तेने पूजे,
मन कर्म वचनथी आप मानी ल्हे,
सत्य छे ए ज मन एम सूजे

एजन, पृ ४८५

अहीं दालदाना आवर्तनप्रवाहमा 'मनकर्म' ए दादाल छे एं कंक विक्षेपक छे ए पठनमा ज वरताय एवु छे पण ए पण आवी शके छे एटलु ज नही, हु आगळ जईने एम कहेवा इच्छु छु के लाबी सळग रचनामा आवा विक्षेपक सधिओ ऐकविध्य टाळवा आवश्यक छे अग्रेजीमा ए प्रमाणे भिन्न प्रकारना सधिओ आवे छे पण श्री खबरदार कहे छे के अग्रेजी रचना मात्रामेळ नथी एटले ए दाखलो काम न आवे पण हु मानु छु के अग्रेजीनो दाखलो अहीं उपपन्न छे जे ऐकविध्य टाळवानु जरूरी छे, ते ऐकविध्य सधिना आवर्तनथी थाय छे अग्रेजी रचनामा सवाद जातिछदोनी पेठे सधिना आवर्तनोथी निष्पन्न थाय छे तो त्या जेम सधि बदलाववानी जरूर ऊभी थाय छे तेम अही पण सधि बदलाववानी जरूर ऊभी थाय छे ज अने दालदामा लदादा सधि सवादने साचवीने विविधता लावे छे ते इष्ट छे वळी छेल्लेथी बीजी पक्तिमा 'सुन्दर वि' एवो सधि आवे छे त्या ते 'सुन्दर' शब्दना 'र' अक्षर पर आवता तालनो वाधो ले छे एमनु कहेवु छे के 'र' उपर मोटो ताल आवे छे अने ए तालथी उच्चारण कढगु थाय छे प्रथम तो ए के 'र' उपर ताल छे ते पिंगलनो ताल नथी, सामान्य पिंगलो एनो उल्लेख करता नथी हु एना पर ताल मानु छु पण ते गौण छे अने ए गौण तालथी कशु वाधा भरेलु कढगापणु आवतु नथी खरु तो त्या जे विलक्षणता जणाय छे ते 'विभाग' शब्द बे सधिओ वच्चे वहेंचाई गयो छे तेनी छे सुंदर वि। भागमा, ए रीते आवी विलक्षणता पिंगल ऐकविध्य टाळवा प्रयत्नपूर्वक आणे छे ते में आर्या अने गीतिनी चर्चामा बतावेलु छे ए रचनामा पहेला दलमा छठ्ठु चतुष्कल ज्यारे *ललल* होय त्यारे पहेला *ल* आगळ *यति* आवे छे, अर्थात् त्या एक शब्द पाचमा अने छठ्ठा चतुष्कलो वच्चे वहेंचाय छे अने अखड रचनामा ऐकविध्य टाळवा आ युक्ति पण उपयोगमा लेवा जेवी छे श्री खबरदारना छेल्ला वाधो ए छे के रामछदमा दरेक पक्तिमा सधिनी सख्या एक सरखी नथी खरी रीते आ वाधा सळग रचनानी सामे लई शकाय नही आपणे ज वळा प्रास लोपी कडी तोडीए छीए, ते साथे ज पक्तिनो बध पण तूटे ज छे जातिछदोनो प्रवाह स्वरूपथी ज सळग छे, अने तेने प्रासथी आपणे पक्तिमा बाधता हता, ए प्रास तूटता ए प्रवाह तेना मूळ स्वरूपनो एटले

सळंग थई रहे छे. पछी एने अर्थ प्रमाणे क्याथी टूकी पंक्तिओमा लखवामा कशो दोष नथी श्री खबरदार कहे छे के पंक्ति अणसरखी करवाथी एक पंक्तिनो अर्थप्रवाह उभराईने बीजी पंक्तिमा जई शकशे नहीं पण नहिंतर एकसरखी लखाती पंक्तिओमा पण जेने पंक्ति गणीए छीए ते खरेखर पंक्ति छे ज नही, नजरथी वाचता पंक्ति छे, पण पाठ करता के साभळता पंक्ति नथी ज, पंक्तिनो अंत त्या श्रवणमा आववानो नथी शेक्सपियरना नाटको भजवाय छे त्यारे, ते केवळ अर्थने अनुकूळ रीते ज बोलाय छे त्या पंक्ति होती नथी अंग्रेजी ब्लॅंक वर्स पंक्तिओमा लखाय छे ते तो एक मात्र रूढि छे, ब्लॅंक वर्सना मूळ प्रारब्ध स्वरूपनो आवश्यक साचवी राखेलो अवशेष छे वक्तृत्व कळा शीखववाना पुस्तकोमा घणी वार पंक्ति छोडीने ब्लॅंक वर्स गद्यमा ज लखाय छे अही वर्स एटले पद्यरचना, जीवातुभूत तत्त्व पंक्ति के संधिनी सख्या नथी, पण आवर्तन पामतो संधि पोते ज एक मात्र छे

आ प्रमाणे रागछद विशे श्री खबरदारे दर्शाविला बाधा हु स्वीकारतो नथी अने छता ते ब्लॅंक वर्सनु काम आपी शके एम हु मानतो नथी अने तेनु अेक ज मुख्य कारण के ते जोईए तेवो अगेय नथी शब्दा अने तेना बीजा के पर्यायो सहेलाईथी झूलणाना ढाळ के लडणमा पडी जाय छे अने ते घणी मोटी ऊणप छे पण ते सिवाय आ छदनु सामर्थ्य स्वीकारवा जेवु छे अुदात्त भावोने लाबा समय सुधी वहेवानी एनी शक्ति छे परभातियामा आ संधिनी रचनाओ पुष्कळ आवे छे, अने त्या आपणे जोईए छीए के धीर गभीर रीते प्रौढ भावोने वाणीमा टकाववानी एनामा ताकात छे वळी केटलाक प्राचीन काव्योमा झूलणा रणागणोना अने लडाईना वर्णनामा पण वपरायेलो जोवामा आवे छे, जे एनी ए दिशानी शक्ति पण दर्शावे छे अने हु मानु छु के पूरो ब्लॅंक वर्स थया विना ए एपिक काव्योमा वापरी शकाय खरो

आ पछी आपणे भटाव लईए भटावन काई गिंगले छद तरीके स्वीकार्यो नथी प्रागर्वाचीन काव्यमा कोई कविए तेने प्रयोज्यो नथी अर्वाचीन युग पहेला ते मात्र बालजोडकणामा ज देखाय छे नर्मदाशकरे तेने आगगाडी काव्यमा (नर्म० कविता पृ १८६) अने पछी 'शाकुन्तल'ना अनुवादमा वापर्यो कदाच ते दाखला उपरथी मणिभाई नभुभाईए तेने 'उत्तररामचरित'ना अनुवादमा वापर्यो

आ छद लाबा सळग वर्णनो माटे अनुकूल छे, कारण के तेमा प्रास नथी ते मात्र बे चतुष्कलनो अथवा तेना द्वितीय अष्टकलनो सतत अविराम

प्रवाह छे. माटे ज कदाच पिंगलोए एने स्वीकार्यो नही होय, कारण के पिंगलो पाद विना पद्य अशक्य गणता. आपणे मणिभाईनुं दृष्टांत जोईए :

> कोको ठामे स्निग्ध रम्य ने नयन हसावे, वळि को काळी,
> वळि को भूरी, कोको ठामे रूप भयंकर धारी कर्कश
> देतीं त्रास बहु ठामे ठामे वळी भरेली झम झम
> झम झम व्हेतां झरणो तेना शब्दे, दिशा रूपाळी;
> पणे जणाये तीर्थ पुण्यना, आश्रम ऋषिना; पर्वत
> पेल्ग डोका करता, सरिता धीमी, उछळी व्हेती; अरण्य
> व्होळा मध्ये न्हानां रमणीय लीला उपवन दीसे;
> एवा एवा विविध प्रदेशो परिचित मुजने दृष्टे आवे;
> दीसे दीसे सत्य दडका अरण्य आजे! कोको ठामे०"

वर्णननुं प्राबल्य अने प्रौढि तरत जणाई आवे एवा छे. साथे साथे ए पण नोंधवा जेवुं छे के अही दरेक पंक्तिमां संधिओनी संख्या सरखी नथी, मारा मत प्रमाणे एनी जरूर पण नथी. आ रचना सळंग छे. पण तेनी सामे मारो मुख्य वांधो ए छे के कटाव अष्टकल रचना छे, तेनो ताल बहु जोरदार छे अने तेथी तेमा आठ आठ मात्राना चोसला पडी जाय छे, आठ आठ मात्राए अल्पविराम के अल्पतरविराम मूकवु ज पडे छे प्रो० ठाकोर तेम छता आ रचनानी सळंग छंद तरीके हिमायत करे छे. 'आपणी कविता समृद्धि'मां गोवर्धनराम त्रिपाठीनु लाबु काव्य 'वृष्टि पछी कुदरतनु सौंदर्य' मूकी टिप्पणमा एनो रचना विशे लखे छे · "श्री रामनारायणे कटावना गुणदोष आपणा युगमा थयेला वृत्तविकासनी चर्चा करता सारा चर्च्या छे.' पोते ए रचना अजमावी अजमावी तेना परिचयी थशे तो हु धारु छु के रचनानी गुणवत्ता एमने वधारे आकर्षशे. ('आपणी कविता समृद्धि' १९३९नी आवृत्ति २, पृ. १२२) १९४६नी आवृत्तिमा लखे छे. "एमनी आ कृति गुजराती कविता अने तेनी 'blank verse' (ब्लॅंक वर्स)ना बळ वैविध्य समृद्धि, कटावमा पूरेपूरा खोली शके छे ते बतावी आपनार ए प्रथम पहेला कवि छे. मुक्त लयशक्तिनो आ कृति एक उत्कृष्ट नमूनो छे." (एजन, बीजी आवृत्तिनु त्रीजु मुद्रण, पृ. १३७) आपणे समृद्धिमा उतारेल ए काव्यनो अंत भाग जोईए.

---

८. 'अर्वाचीन काव्य साहित्यमा सळंग पद्यरचना' ए लेखनी चर्चा अही अभिप्रेत छे, जेनो आ प्रकरणमा में आ पहेलां उल्लेख करेलो छे.

पडी रह्यो ए मेघ एटले त्यां गोचरनां
टोळे टोळां स्वतन्त्र थातां, स्वयूथ घेरा
अथ विदो फरि फलोरयी गोलाहून वरतां
आवे पाछां! हर्षप्रमत्त थईने आवे,
एक बीजाने आटीवाळे, उड़े उपर ने
नीचे पाछां! मन्त्रगति धरि राग रमी गित
गाइ मनोहर आणि मुग्ध वृंदावन आजे
विष्णुपदमां धू आ पाछू!
अहो, म्हणे पण
जो ने अधिक ज कौतुकवर्षा थाय धू घेलू?
स्नेहविष्णुरूप — कृष्णमुकुट — शिखिकलाप घेरी
कमान सुदर! आछी आछी दिवसदीप शम
प्रथम भागतां!
वध्यो ज प्रकाश! वध्या वळि रंग!
विलासि चन्द्रा रतिमूढ करावर सूर्यतणा
जलदोदरमां प्रसरी नव रूप ग्रहे अति सुंदर:
नाम वहे जग 'अंबुदचाप' म्हने पण लागति
स्नेहकमान विटी सउ भूमि अने नभने
लइ लेति स्वगोळ विशे जयिनी
मन जो! मन जो!
रतिरंग करे इतरेतर धू बहु आज सहू:.....

आटलु बस थशे अही पण मने तो स्पष्ट अष्टकल मात्राना चोसला पडी जता जणाय छे, क्वचित् सोळमात्रानु चोसलु पडे छे; तालनो थडको एटलो प्रबल छे के रचना एम थडके थडके थमती ज चाले अने ए चाल पण लांबी फलग नथी, खदता घोडा जेवी टूंकी चाल छे रामछंद करतां आ चाल वधारे टूंकी छे, रामछंदना जेवा आना प्रलब आदोलनो नथी. अमुक जातना वर्णनकाव्यो, जेमां वेगी कार्य बताववानु होय तेमा आ रचना शोभे एवी छे त्रिभुवन गौरीशकर व्यासना बालकाव्योमां आनो सारो प्रयोग थयो छे उपरना काव्यमा अंत तरफ दगाल के (पहेलो ल कापी नाखता) गालगाना आवर्तनो आवे छे, आणवा पडया छे तेने पण हुं तो कटावनी मर्यादा गणु छु

आ ज वर्गमा प्रो ठाकोरे शरू करेल गुलबकी अने प्रवाही हरिगीत आवे गुलबकी विशे तो प्रो ठाकोरे पण कदी ब्लॅंक वर्सनो दावो कर्यो नथी

आपणे अही चर्चेली बधी रचनाओमा एनु पगलु सौथी टूकु छे हरिगीतनो सधि लावो छे, एना लगात्मक रूपोनु वैविध्य वधारे, पण एमा वे ताल आवे छे जे एने सगीत तरफ वहेलु घवे छे तेम छता प्रवाही छद तरीके एना अनेक प्रयोगो थया छे, केटलाक खरेखर सुदर थया छे मात्र एटलु ज के एमाना कोईने ब्लॅंक वर्सनु स्थान आपी शकाय नहीं अने एटलु विशेष नोधवु जोईए के आ प्रयोगोमा लगभग बधे ज पक्तिओमा सधिसख्या अर्थ प्रमाणे ओछीवत्ती राखवामा आवेली होय छे

आवी अर्थ प्रमाणे सधिओनी ओछीवत्ती सख्यावाळी पक्तिओनी रचनाने हमणा 'परपरित' एवु नाम मळ्यु छे, जेम के परपरित झूलणा, परपरित हरिगीत ए रीते गुलबकी रचना परपरित समानिका के प्रमाणिका छे. आवी रचनाओमा क्याक पक्तिने छेडे आखो सधि पूरो करेलो होतो नथी त्या विरामथी सधि पूरो करी मेळ साचवीने आगळ चालवु जोईए, एटलु प्रसंगवशात् कहेवानु प्राप्त थाय छे जेमके·

जुवो उघाडु आ कमाड, जाव ज्या रुचे;
स्वल्प बिंदु ये दयानु ना खपे हुने

भणकार, पृ १९

लगात्मक न्यास. लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

पहेली पक्तिमा लगा आव्यु बीजी लगाथी शरू नथी थती पण गालथी थाय छे, एटले लगाना आवर्तनो अविच्छिन्न राखवा पहेली पक्ति पछी एक ल जेटलो विराम लेवो जोईए अर्थात् लगा ⌣एम करीने मेळ साचववो जोईए.

एवी ज रीते परपरित हरिगीतमा पण जेम के :

तू जगतनू आश्चर्य छे
जगतमा छे ताज, नें छे ताज जेवा कंक के,
तू तो परतू ताजनो ये ताज छे

एनो न्यास दा] दालदादा दालदा
दालदादा दालदादा दालदादा दाल्दा
दा] दालदादा दालदादा दालदा

पहेली पक्तिमा अते दाल्दा आवे छे बीजी पक्तिमा पहेलो सधि दालदादा छे तेनी साथे तेनो मेळ बेसाडवा पहेली पक्तिने अते एक दा पूरतो विराम लेवो जोईए एम विरामोथी एक ज सधिना सळग आवर्तनो करवा जोईए. उपर रामछद कह्यो ते परपरित झूलणा गणाय.

प्रौढिने पोषे छे, विषयने गौरव आवे छे सद्‌गत नवलरामे मेघदूतना भाषान्तर माटे छदनी पसदगीनी चर्चा करता कह्यु छे के सस्कृत वृत्तो प्रौढिने पोषे छे, छता तेमणे वृत्तबद्ध मेघदूत माटे गेय मेघछद योज्यो तेनु कारण तेमना कहेवा प्रमाणे ते समये सस्कृत छदोनो लोकोने परिचय नहोतो, अभ्यास नहोतो ए हतु ए कारण अत्यारे रह्यु ज नथी, एटले सस्कृत वृत्तो प्रवाही रचना तरीके काममा आवी शके छे अने आवे छे, ए योग्य छे सॉनेटना गाभीर्य माटे वृत्तो ज अनुकूळ गणाया छे ते योग्य छे, अने तेमा अनेक रचयिताओ चरणान्ते ऊभराता वाक्यो रचे छे, एटले ए सबधी विशेष कहेवानु नथी

पण आ बधा वृत्तो ब्लॅंक वर्सनु काम आपी शके ? कविश्री न्हानालाले मान्यु, के सद्‌गत गोवर्धनरामे सस्कृत वृत्तोमा अत्यप्रास छोडी दई, गुजरातीमा ब्लॅंक वर्स दाखल कर्यो (साहित्यमथन पृ १२३–२४) पण प्रथम विचारीए के एटलु करवाथी रचना ब्लॅंक वर्स बने ? दृढ यतिवाळी रचनाओ मदाक्रान्ता, मालिनी, स्रग्धरा, शिखरिणी वगेरेमा मध्ययति आडी आव्या विना न ज रहे वळी ए बधी रचनाओमा आवती लाबी लघुनी अक्षरावलिओने लीधे वाक्यरचना गद्यनी निबद्ध थाशी न ज शके ए लघुओनु पठन एटलु त्वरित थाय छे ए लघुओ वच्चे अर्थयति मूकी न ज शकाय अर्थात् यथेच्छ यति तेमा शक्य नथी ए बधामा ह्रस्वदीर्घना स्थानो एटला दृढ छे के ह्रस्वदीर्घनी छूट लेता पण वाक्यने सरल चलावी शकाय नही एटले आ छदो, भले प्रवाही वाक्योने धारण करे, तो पण ब्लॅंक वर्स बनी न शके

ब्लॅंक वर्सने माटे प्रो० ब० क० ठाकोरे पृथ्वीने समर्थ गण्यो अने तेना प्रयोगो करी बताव्या त्यारथी वर्णनकाव्यो माटे अनेक कविओए एने सळग रचना तरीके वापर्यो छे ए जोता हव एनी हिमायत करवानी जरूर रही नथी पण श्री खबरदार घणा समयथी पृथ्वीनी ए शक्ति स्वीकारता नथी आपणे एमनो मत जोई तेनी चर्चा करीए पृथ्वी सामे तेमनो सौथी मोटो वाधो ए छे के तेमा शब्दोनु उच्चारण अगुजराती थई जाय छे हु तेमणे ¹ आपेलु अवतरण ज लउ छु

आ। त मुख जे। स्फुरे । स्फुरणमा। ज नी। वी रहे,
विचा। र अभिला। ष गा। न रति ते। तणा । भास्कर
भजे। उर उम। ग थी। सरल दी। न शिशु। भावथी
अने। क युग दे। शना। अगण न्हा। नुभा। वो रहने

श्री खबरदार कहे छे: "गुजराती वाग्व्यापारने नियमे शब्दनी छेल्ली लघु श्रुति तो द्रुत, जाणे व्यंजन जेवी बोलाय छे. तेम ज शब्दागमा पण गुरु पछीनी लघु श्रुति द्रुत बोलाय छे. . . .उपरना उदाहरणमां बीजी पंक्तिना 'विचार'नो 'र', 'अभिलाप'नो 'प', 'गान'नो 'न', 'भास्कर'नो 'र' ए बधा अक्षरो शुद्ध रीते द्रुत ज उच्चाराय छे. तो पछी आ छ संधिमा चार श्रुतिओ आखी बोलाय तो गुजरातीना उच्चार कढंगा थाय ने तेम थतां श्रवण कठोर बने तो नवाई नथी. त्रीजी चोथी पंक्तिमा ग, न, क, श ए श्रुतिओ पण पूरा भार साथे बोलवी पडती होवाथी ते कर्कश थई जाय छे, अने उच्चार तूटे त्या लयभंग पण थाय."[१] आ वाधो जो साचो होय तो गुजराती माटे बधां ज वृत्तो प्रतिकूल गणाय. कारण के वृत्तोमा लघुना अनेक स्थानोमाथी घणी जगाए शब्दान्त अ आवी जवानो. पण आ वाधो वृत्तो उपरात जातिछंदोने पण लागु न पडे? जातिछंदोमा पण लघुना नियत स्थानो होय छे, एटलु ज नही नियत स्थान न होय त्या पण लघुओ वपराय ज छे.

ओ ईश्वर तूं एक छे
सरज्यो तें संसार

आ दोहरामां 'एक' अने 'संसार'मा आवता लघुओनां स्थानो पिंगल-नियत छे. पण ते सिवाय पण श्व र स र लघुओ आवे छे. आमाना बन्ने 'र' श्री खबरदार कहे छे तेवा साधारण वातचीतमा द्रुत बोलाय छे, पण उपरनी काव्यपंक्तिओमा तो पूरा लघु बोलाय छे. 'ईश्वर'मा बन्ने लघुओ अने 'सरज्यो'ना बन्ने लघुओ सरखा बोलाय छे अने सरखो काल ले छे. एटले आ वाधो साचो होय तो कोई पण कविता लखाय नहीं. खरुं तो में पहेला प्रकरणमा कह्यु तेम गुजराती बोलाती भाषामां कोई बे स्वरो एक सरखो वखत लेता नथी, कोई गुरु कोई लघुथी वमणो समय लेतो नथी. कवितामां पडती भाषा एटले अमो पोतानु नैसर्गिक उच्चारण खुवे ज छे. अने नहितर पण पठन थता काव्यनु उच्चारण गद्य करतां वधारे धीमु होय ज छे. एटले ए वाधाने हु वाजवी गणी शकतो नथी. अने श्री खबरदार पोते स्वीकारे छे तेम पृथ्वी तेना जूना नाम 'विलंबितगति' प्रमाणे विलंबित रीते पठाय छे एटले तेमा पूरु यतिस्थातन्त्र्य छे. ए रीते आ वृत्त श्लोक वर्गनी एक आवश्यकता पूरी पाडे छे.

१. गुजराती कवितानी रचनाकला, पृ. १६९–१७०

श्री खबरदारनो बीजो वांधो श्री ठाकोर पृथ्वीने अगेय कहे छे ते सामे छे तेओ कहे छे "कोई पण समर्थ संगीतकार गमे तेवी गद्य पंक्तिने पण अमुक राग-तालमा बेसाडी गाई बतावशे, पछी तेम करता तेना केटलाक स्वरोने लबावशे या टूकावशे एम छे तो पद्यनी नियमित लयमा लखायेली पंक्तिओ तो कदी अगेय बने ज नही" (एजन, पृ १७३) पण अही अगेय शब्द तेना मात्र यौगिक अर्थमा वपरायो नथी संदर्भ उपरथी तरत जोई शकाशे के 'अगेय'नो अर्थ अही, लावु पठन करता पण जे रचना गावानी आवश्यकता ऊभी थती नथी, जे कोई पण प्रकारना संगीतमा सरी पडती नथी एवी ब्लॅंक वर्सनी मुख्य आवश्यकता ए छे के तेनु गद्यनी पेठे पठन शक्य होवु जोईए पछी गद्य पण गाई शकाय छे ते अर्थमा आ रचना पण गाई शकानी होय तो तेनो वांधो नथी पृथ्वीना पठनमा गावानी आवश्यकता आवती नथी, अने तेथी ते गेय नथी आ लक्षण ब्लॅंक वर्सने माटे आवश्यक छे के केम ते विशे श्री खबरदार स्पष्ट हा के ना कहेता नथी तेओ एम मानता जणाय छे के एवु अगेय पद्य गुजरातीमा होई शके ज नही. तेओ आ ज संदर्भमा आगळ कहे छे के "कविताने गद्य जेवी बोलवा ज मागो तो बोली शकाशे . पण तेम करता पण अमुक पंक्तिओ अनेक वार बोलाता पद्यमानु तालतत्त्व अने तेनु नियमित सुस्वरत्व तो पाठक के श्रोता आगळ छतु थया वगर रहेवानु नथी अने आखरे तेथी कवितानी गेयता प्रत्यक्ष थवानी ज" (एजन, पृ १७३–७४) अल्बत्त तालतत्त्वने लीधे गेयतामा सरी पडाय तो गेयता आवी जवानी पण अही श्री खबरदारनी ध्यान बहार ए वात रही जाय छे के अनावृत्तसंधि वृत्तोमा तालतत्त्व छे ज नही अने तेवी तालतत्त्वानुगामी गेयता तेमा आवी जवानी नथी ए दृष्टिए पृथ्वी ब्लॅंक वर्सनु काम आपवाने लायक छे तेना अनेक अखतरा थया छे अने ते बधा ज बतावे छे के लाबा वाक्योने धारण करवाने ते समर्थ छे

अने छता पृथ्वी ब्लॅंक वर्सनु पूरेपूरु काम आपी नही शके ब्लॅंक वर्स अंग्रेजीमा बे काम करे छे एक, एपिक एटले वीररस काव्यमा ते सळग रचना तरीके वपराय छे, अने बे, नाटकमा पात्रोनी उक्तिमा वपराय छे पृथ्वी एपिक माटे लायक छे, अत्यार सुधी तेनो जे सफळताथी उपयोग थयो छे ते सर्व एपिकमा ज थयो छे पण नाटकमा ते सफळ थई शक्तो नथी एक तो, एना संधिओमा आवता लघुगुरुना निश्चित स्थानोने लीधे, तेमा वाक्य गद्यनी सरलताथी आवी शकशे नही ए संधिओने अनुकूळ थवा वाक्य-रचनाने मरडावु पडशे ज अने बीजु, पृथ्वीनो मेळ आवर्तनात्मक नथी, तेमा आदि मध्य अने अंत छे, एटले तेमा वाक्य गमे त्याथी शरू करी गमे त्या

पूर्ण करतां तेनो मेळ अखंड आवी शकशे नही अने ठाकोरे पृथ्वीमा यतिस्थानभ्रमता उदाहरण तरीके नीचेनी पंक्तिओ आपी छे.

वहे वसत। प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे
खिले। उर निमग्नता अचुक एक र्‌हारा भणी

अलबत्त दडनी निशानी करेली जगाए यति आवी शके छे ए रीते ए दृष्टान्त साचु छे पण वे यतिचिन्होनी वच्चेनु वाक्य एकलु वाचवा आप्यु होय तो तेमा पृथ्वीनो मेळ वरतारो नहीं "प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे खिले" एटलु ज वाक्य वाचता पृथ्वीनो मेळ तेमा प्रगट देखाशे? हु मानु छु नही देखाय पंक्तिओमा ए वाक्य जे स्थान भोगवे छे ते स्थान दर्शावीने मूकना —आ रीते—

प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे
खिले। उर निमग्नता अचुक एक र्‌हारा भणी

ए पृथ्वी छे एम जाण्या पछी पण, खडनी आगळनो भाग पृथ्वीमा बेसाडीने वाचता ज मेळ हाथ आवशे, ते सिवाय नहीं आवे अने 'खिले' आगळ वाक्य बध करीशु तो मेळ अधूरो रहेलो जणाशे ए मेळनु एकम पक्तिना आदिथी अत सुधी बोलता ज व्यक्त थाय छे नाटकने माटेनी सळग पद्यरचना तो वाक्य गमे त्याथी उपाडी गमे त्या पूरु करता पण मेळ सचवाई रहे एवी जोईए अग्रेजी ब्लॅंक वर्स रचना एवी छे एटले पृथ्वी बधी रीते ब्लॅंक वर्सनु काम आपी नही शके एपिकमा पृथ्वी सळग पद्यरचना तरीके चाली शकशे, नाटकमा नहीं चाले

जातिछदोना सधिओ अने अनावृत्तसधि वृत्तोना सधिओथी बनती सळग रचनाओने जोता एम जणाय छे के जातिछदवाळी रचनाओ प्रास काढवाथी सळग तरत थई शके छे, पण तेनो सधि सगीतना तालमाथी निष्पन्न थयेला होवाथी ते रचना थाडे जई सगीतमा रागे पडे छे, ए एनी अपूर्णता छे त्यारे कोई पण अनावृत्तसधि वृत्तने सळग करता मुश्केली ए आवे छे के एना गानदनु एकम पक्तिना आदिथी शरू थई अते यति आवे छे त्या पूरु थाय छ जातिछदवाळी रचनाओ स्वरूपत अनत आवर्तनवाळी होई सळग हती, तेने प्रासथी ज आपणे बधीबद्ध करी हती ते प्रास नीकळी जता पाछी सळग बनी रहे छे वृत्तोमा पक्ति प्रासथी बधाती नहोती पण, लघुगुरुना स्थिर क्रमवाळा अमुक अमुक सधिओना नियत न्यासथी बधाती हती, प्रास विना पण तेमा पक्तिने आदि ने अत छे ए एनी विशेषता छे, खूबी छे, एटले वृत्तोनी प्रवाही रचनामा मेळनु एकम व्यक्त थवा पक्तिनो अत व्यक्त थवो

ज जोईए. वृत्तोमां आपणे जोई गया के तेमां खरो विराम श्लोकार्ध एटले बे पंक्तिए आवे छे, एटले सामान्य रीते वृत्तोनी पंक्तिओ बे सुधी सळंग करी शकाय. अने ए मुश्किल नथी कारण के सत्तर अक्षरना पृथ्वीमां बे पंक्तिए पूर्णविराम नहीं तो अर्धविराम अने अर्धविराम नही तो अल्पविराम आपवामा मुश्केली आवे नही. एटले एपिक माटे सळंग पद्यरचना तरीके पृथ्वी आवी शके. पण तेनी लघुगुरुना स्थिरक्रमवाळी रचनाने लीधे अने तेना मेळना एकमना आदिथी अंत सुधीना विस्तारने लीधे ते नाटकने आवश्यक ब्लॅंक वर्स बनी शके नही. नाटकना ब्लॅंक वर्स माटे आपणे हजी अन्यत्र जोवु रह्युं.

जे कारणोथी पृथ्वी जेवी रचना नाटकोचित सळंग पद्यरचना नथी थई शकती ते ज कारणोथी अनुष्टुप पण न थई शके. अनुष्टुपने अमुक चोकस वर्गमां हजी नि:शंकपणे हु मूकी शकतो नथी, पण एक वात नक्की छे के तेना संवादने पण आदि अने अंत छे. अनुष्टुप अर्धसम वृत्त छे, तेमां विषम चरणनो छेल्लो चतुरक्षर संधि घणेभागे लगागागा आवे छे अने समचरणनो छेल्लो चतुरक्षर संधि लगालगा आवे छे. हजीकेय लगागागा पूर्ण नियत नथी पण श्लोकार्ध लगालगा तो कोई पण वृत्त जेटलु स्थिर छे. एटले एना श्लोकार्धनो अंत दृढ छे. लाबा वर्णनकाव्योमा ए चाले पण नाटकनी उक्तिओमा ए अंत नडे. नाटकने माटे श्रीमती हसा बहेनें आ छद वापर्यो छे, पण तेनु परिणाम मने अनुष्टपना लाभमा जतु जणातु नथी,—एमनो प्रयत्न समर्थ छे छता. एक टूको दाखलो लउ ·

ओफेलिया : ना जाणु हु पिता मारा ! शु मारे तो विचारवु.
पोलोनियस · वाह ! हु शीखवीश ए, तु तो छे बाळकी खरी
जो माने दान आवाने खरा सिक्का. नथी खरा
सिक्का ए. मूल्य आकवु घटे तारू विशेष तो.
नही तो — बस वाक्य आ हाफे लवाणथी अने
तूटे प्हेला करू पूरु — मने मूर्ख ठरावशे.

हेमलेट, पृ. २७

आमा पक्ति वच्चेथी शरू थई पक्ति वच्चे पूरा थता वाक्यो छे. ते स्वतंत्र वाचवा आप्या होय तो तेने अनुष्टुपमा बेसाडता बहु वार लागशे. "तु तो छे बाळकी खरी, जो माने दान आवाने खरा सिक्का." आ वाक्य सम चरणथी शरू थाय छे एटले कदाच बेसे. पण "नथी खरा सिक्का ए." आ वाक्य बेसाडता बे त्रण प्रयत्नो अवश्य करवा पडे. "मूल्य आकवु घटे तारू विशेष तो" ए वाक्य पण तरत नही बेसे एटले आ रचना नाटकने अनुकूळ न

पडी शके आपणा पुराणो अनुष्टुपमा रचाया छे, अने तेवी रीते महाकाव्य अनुष्टुपमा रची शकाय पण नाटकने माटे ए रचना अनुकूल नही पडे

नाटकनी उक्तिओ माटे हु ते ह ध्रुवना वनवेलीने समर्थ गणु छु ते मनहर घनाक्षरीना चतुरक्षर संधिना आवर्तनानो बनेलो छे ए संधिमा लघुगुरुनो काई क्रम नथी एटले वाक्यरचनाने कोई लघुगुरुस्थान साचववा के अमुक मात्राओ पूरी करी आपवा मरडवानी जरूर पडती नथी वाक्यरचना गद्यना क्रमने यथेच्छ अनुसरी शके छे, तेटली ज भावने आवश्यक हरकोई वाक्यभंगीने पण धारण करी शके छे वळी तेमा वाक्यो गमे तेटला लाबाटूका आवी शके छे, अने वाक्यो पंक्तिमा गमे त्याथी शरू थई गमे त्या पूरा थता तेना मेळने हानि थती नथी मूळ रचनाना प्रास काढी नाख्याथी तेमा पक्ति पण रहेती नथी, जो के सामान्य रीते तेमा संधिना चार आवर्तनोनी एटले सोळ अक्षरनी पंक्ति पडाय छे आनो मेळ आवर्तनात्मक छे एटले तेमा यतिनो प्रश्न रहेतो नथी मनहर घनाक्षरी लाबी परपराथी अर्थने अनुसरीने गेयता विना, पठाता आव्या छे नवलराम कविता बोलवी श् कहेवाय तेना दाखला तरीके "हिन्दुस्ताननी कविता भाट चारणो बोले छे तेनो विचार" करवा कहे छे रमणभाई पण कवितने वीररसकाव्यने उचित गणे छे "मिल्टनना वाक्योच्चय (period)नी कल्पना गुजराती भाषामा बतावकी बहु अघरी छे तथापि आ प्रकारना वाक्योच्चयनु उदाहरण आपवानो एक निर्बल प्रयत्न करीशु" कही तेओ प्रेमानन्दना ओखाहरणना लडाईना वर्णनने निष्प्रास कवितमा मूके छे

अनिरूद्ध बारीएथी जोई रह्यो हाथमा तो
भोगळ लीधेली ने अळगी करतो पीठे
खेंचती ओखाने,— रोती जे कालावाला करती
तेना भणी वळी बोल्यो, 'महिला ! तु घेली छे,
क्षत्रिओ युद्धमा जता रोकाया कदी सुण्या छे ?
धननु गर्जन थये केसरीए फाळ ना
भरी एवु कदी बन्यु छे ? तथा मोवर वागे
ने नाग त्या डोले नही एवु कदी जोयु छे ?

कविता अन साहित्य वॉ १ लु, पृ १६७

अर्थात् आ मनहर के कवितने के ह ध्रुव पहेला पण आपणा समर्थ विवेचकोए अगेय गण्यु छ, पाठ्य गण्यु छे, वाक्योच्चय माटे योग्य गण्यु छे

आनी सामे श्री खबरदारनो वाधो नीचे प्रमाणे छे "ए निबधमा तेमणे जणाव्यु हतु के वनवेलीमा यति नथी, ताल नथी, प्रास नथी, मात्र

चतुरक्षर संधि छे अने प्रत्येक पंक्तिमां एवा चार चार संधि छे, आवी रचना जेने आपणे शुद्ध पद्यरूपे ओळखीए तेवी, तेने पद्यरूप कहेवाय नहीं अने ए माटे में . . उल्लेख कीधो ज हतो के "वनवेली"मां "मात्र अक्षरगणना सिवाय बीजुं कशुं नियामक तत्त्व ना होवाथी हुं तेने पद्यमां के छंदमां गणतो नथी" (गुजराती कवितानी रचनाकळा" पृ १६७–१६८) अलबत्त के ह ध्रुवे वनवेलीनो पुरस्कार करता निबंधमां कहेलुं के तेमां ताल नथी, मात्र चतुरक्षर संधि छे (साहित्य अने विवेचन भा १, पृ ११७) पण हुं पूछुं छुं के वनवेलीनो चतुरक्षर संधि जे मनहरमांथी लीधेलो छे ते सताल के निस्ताल होवा संबंधी श्री खबरदार पोते शुं माने छे? तेओ तो कबूल करे छे ज के "'कविता' नी रचनामां चतुरक्षर संधि छे, पण एनो लय तो प्रत्येक संधिनी पहेली तथा त्रीजी श्रुति पर अनुक्रमे मुख्य अने गौण ताल आव्याथी ने राख्याथी ज सधाय छे" (गुजराती कवितानी रचनाकळा पृ १६८) तो पछी वनवेलीमां ए ताल छे एम मानीने तेओ वनवेलीने अखंड रचना तरीके स्वीकारता शा माटे नथी? हुं पण मानुं छुं के मनहरना चतुरक्षर संधिमां पहेला अने त्रीजा अक्षर उपर अनुक्रमे प्रधान अने गौण ताल छे अने ए ताल ए ज वनवेलीनुं पद्य तरीकेनुं जीवातुभूत तत्त्व छे भले के ह ध्रुवे ए न स्वीकार्युं पण आपणे ए स्वीकारता होईए तो एने मानीने वनवेलीनुं महत्त्व स्वीकारवुं जोईए अने तालने न स्वीकारता छता के ह ध्रुव कहे छे के "एना बंधना सरखापणाने माटे एक बाबतनी सावधानी राखवी इष्ट छे प्रत्येक पूर्णवाक्यनो आरंभ एमां एकीना अक्षरथी थवो जोईए छे एम करवाथी गमे ते वाक्य वाचता अथवा उतारता घटनामां वैषम्य आवतुं नथी" (साहित्य अने विवेचन भा १, पृ १२०) अहीं वाक्यारंभ चतुरक्षर संधिना पहेला के त्रीजा अक्षरथी करवा कह्युं तेनुं कारण ए ज छे के वाक्यना प्रारंभनो प्रयत्न, पद्यना ताल साथे मेळमां आवे अने आ मेळ मात्र वाक्यना प्रारंभे ज होय एटलुं हुं बस मानतो नथी श्री खबरदार साथे सहमत थई हुं कहुं के वनवेलीमां संधिनो प्रधान ताल शब्दना आदि उपर आवे ए इष्ट छे कारण के गुजरातीमां शब्दनो आद्याक्षर हमेशां सप्रयत्न होय छे, अने एम न बने त्यां ताल शब्दनी अंदर पण गुरु अक्षर, जे तालक्षम होय छे, तेना पर पडे एम थाय तो सारुं आवी सूचना के ह ध्रुवनी चर्चामां स्पष्ट रूपे नथी पण तेमना वनवेलीना नमूनामां ताल बराबर ए ज रीते सळंग सचवायो छे हुं आ नीचे वनवेलीनी १३ पंक्तिओ उतारुं छुं अने तेमां चतुरक्षर संधिना आद्याक्षर पर तालदर्शक टूको दंड करुं छुं

मारा, सउ शहेरी बंधुओ ने मित्रो! सांभळिये.
सीझरना शबने हु दाह देवा आव्यो छुः हुं
गुण गावा नथी आव्यो गुण तो मुआनी गते
मुआ वासे जाय छे; ने अवगुण एकला ज
अहिंया गवाय छे; तो सीझरनू पण एम
भले थाय. महत्तानी मूरती जे ब्रूटस, ते
सीझरने लोभी कहे छे खरेखर, एम ज जो
होय, तो ते शोचनीय दोष हतो; अने तेनो
दंड पण मरनारे घणो भारे भर्यो छे ज.
एने विशे मैयतना प्रसंगे हू बे ज बोल
बोलवा ऊभो छू, मने ब्रूटसनी ने बीजानी
परवानगी मळी छे. ब्रूटस, खरेज सारा
माणस छे; ने एवा ज सारा एओ सरवे छे

उपरनी १३ पंक्तिओमां बावन चतुरक्षर संधिओ आवे तेमां शब्दना आद्याक्षर पर ताल न पडतो होय एवा दाखला 'मुआनी' (प. ३) 'गवाय छे' (प. ५) 'ऊभो' (प. ११) 'परवानगी (प. १२) एटला चार ज छे. अने ते दरेकमां ताल दीर्घ अक्षर उपर पडे छे पण मारे आथी आगळ जईने एम कहेवानु के आम लाबे अंतरे ताल क्याक छूटो छवायो शब्दना आद्याक्षर पर न पडे त्यां एकाद ताल तिरोहित रहे तो पण सामान्य प्रवाहने वाधो न आवे. "मने ब्रूटसनी ने बीजानी परवानगी मळी छे." एम तालव्यवस्था करीए तो तालमा क्षति न आवे. 'ने' अव्यय होई लघु प्रयत्न छे तेना पर ताल न नाखीए तो पण वांधो न आवे. नियमित मात्रामेळमां पण चतुष्कल ताल क्यांक तिरोहित थतो आपणे जोयो छे आम वच्चाथी पठन गतनी वधारे समान्तर चाली शके छे, अने तालनु स्पंदन जीवन्त रहे छे आ उपरांत हजी एक छूट धनवेलीना वधारणमां अंतर्गत रहेली छे. मनहरमां आठमां चतुरक्षर संधिने स्थाने त्र्यक्षर संधि आवतां अर्थात् एक अक्षरनी कालमात्रानो विरामथी पुरातां. धनवेली सळंग छे, तेमां चरणो नथी, पण तेमां पण ज्यां

वाक्य पूरु थाय त्या एटले वाक्यान्ते न्यक्षर के एथी पण नानो मधि मूकी शकाय अने ए रीते वाक्यान्ते आवश्यक पूर्णविराम लई शकाय वाक्यान्ते आसा चतुरक्षर सधिना काल जेटलो विराम तो लई ज शकाय ए कहेवानी जरूर नथी

आ रीते श्री खबरदारनी दृष्टिथी विचार करता पण जणाशे के के हु ध्रुवनी वनवली श्री खबरदारनी अखड रचनानी बधी आवश्यकताओ पूरी पाडे छे

वनवेली विशनु मारु वक्तव्य पूरु कर ते पहेला हजी एक वात कहेवानी रहे छे सख्यामेळ छदोना प्रकरणमा हु कही गयो के मनहर के कवितनो जे चतुरक्षर सधि छे ते कालमात्रानी दृष्टिए अष्टकल छे अर्थात् ए चतुरक्षर सधि आठ मात्रा रोके छे जूना समयमा कवितना पठनमा दरेक लघु के गुरु गमे ते बब्ब मात्रा रोके ए रीते उच्चाराता अने एम आठ मात्रा थई रहेती माटे ज तेमा लघुगुरुना नियत स्थान नथी एम कहेवाय छे पण त्या में कहेलु के आ आठ मात्रा आम दरेक अक्षरने बे मात्रानो करी पूरी करवी ए कढगु छे, कटाळाजनक छे, सधिमाना ज गुरुने योग्य रीते लवावी खूटती मात्रा पूरवी ए खरी रीत छ ए ज दृष्टिने आगळ लवावी हु एम पूछु के नाटकनी उक्तिओनु पठन एवी रीते न करी शकाय के चार आठ के सोळ अक्षर सुधीमा अर्थने आवश्यक विराम मूकी ए खूटती मात्रा पूरी दईए? आ न ज थई शके एवु मने नथी लागतु पण आ काम आ दृष्टिवाळा नटोए करी जोवु जोईए जो एम थई शके तो हु मानु छु के वनवेलीनो ए एक मोटामा मोटी सिद्धि गणाय पण आ तो मात्र मारी कल्पनानी वात छे कुशल पठनकोविदोए ए करी जोवु जोईए

वनवेलीनो प्रतिस्पर्धी छद श्री खबरदारनो 'महाछद' छे आ महाछद एक रीते भ्रमरावळी छद छे जेमा लगाना पाच आवर्तना आवे छे अग्रेजी ब्लॅक वर्स पचावर्तनी छ एटले एमणे लगाना पाच आवर्तनो लीधा छे आ लगा सधि अही ए ज सादे रूपे आवतो नथी श्री खबरदार कहे छे के हिंदीमा लगा के गालना आवर्तनोवाळा लगात्मक सवैयामा सधिमाना लघु स्थाने गुरु पण आवे छ तेम ज कविश्री न्हानालाले आ ज लगा रचना उपरथी करेली देशीमा — 'विलासनी शोभा'ना काव्यमा — लघुनी जगाए गुरु मूकेलो छे ते प्रमाणे आ महाछदमा यथेच्छ लघुने स्थाने गुरु आवी शके एटले लघु-गुरु दृष्टिए तेमा नियत मात्र एटलु ज के लगामा अत्य गा उपर ताल पड छे त्या गुरु जोईए ते सिवाय लघुगुरु सबधी कशो नियम आवश्यक नथी अने आ महाछदमा तेमणे एक काव्य कर्यु छे अने तेमाथी लाबा उतारा तेमणे 'गुजराती कवितानी रचनाकळा'ना चोथा व्याख्यानमा आपेला छे (पृ १८० १८५-१९५)

एक वात अहीं श्री खबरदारने पूछवानु मन थाय छे बीजी अनेक रचनाओ तालबद्ध होई गेयतामा खरी पडे छे एम कही बीजा रचयिताओनी ते ते रचनामा तेमणे दोष बताव्यो छे तेमनी पोतानी रचना पण तालबद्ध तो छे ज. त्यारे तेमा गेयताना दोषनु शु थयु ? 'वनवेली'मा ए दोष एमणे एक प्रकारनी पाशयुक्तिथी बताव्यो के ह ध्रुव कहे छे के वनवेलीमा ताल नथी, तो ते पद्य ज नथी, माटे ते अखडपद्यरचना नथी. पछी पोतानो अभिप्राय आपे छे के वनवेलीमा ताल छे, एक नही पण बे ताल छे, एक प्रधान अने एक गौण, माटे ते गेयरचना छे, माटे ते अखड पद्यरचनाने लायक नथी. अने पोतानी रचनाना ताल विशे ते कशु कहेता ज नथी पण एमना तालनी दृष्टिए एमनी रचनानी पण परीक्षा करवी ज जोईए. खरु तो ललगा अने गालल सधिमा लघुने स्थाने गुरु आवे छे ते केवी रीते आवे छे ते प्रथम जोवु जोईए आ सवधी में आगळ लक्षणथी अनेक दृष्टान्तो आपी जणावेलु *छे के चतुष्कलसधि रचनाओ विलबित रीते गवाता दरेक चतुष्कल षट्कल बने* छे तेथी ललगा अने गाललमा लघु स्थाने गुरु आवी शके छे (पृ. ५९९-६०१ अने पृ. ६०२-०३) आ रीते आ प्रक्रिया पोते सगीतनी ज छे, अने श्री खबरदारना लावा उदाहरणोना अनेक वारना पठनोना सस्वारना पृथक्करणथी हु कहु छु के आ रचनाओ सहेलाईथी सगीतमा ऊतरी जाय छे—वनवेली करतां वधारे सहेलाईथी. पण सगीतमा न ऊतरवा दईए तो पण तेनो ताल कटाव जेवो भारे छे अने तेथी गद्य वाक्यो ताले ताले ठोकराय छे तेनो सधि पण टूको छे अन तेथी तेना पठनमा प्रलवता आवती नथी. ए सघळी बाबतमां वनवेलीनी लायकात वधे छे पण विशेष तो घणा लावा समयथी कवित अने मनहरनु अगेय पाठ्यताथी पठन करवानी परपरा छे तेनो सघळो लाभ वनवेलीने मळे छे, ललगा के गालल रचनाने एवो कोई लाभ मळतो नथी में आगळ वनवेलीना फकरा आपेला छे अहीं श्री खबरदारना छदमानी थोडी पक्तिओ नीचे उतारु.

अहो भक्तिनो आनद तो कई ऑर ज छे !
अने नाथनी आ अपरपार लीला यथी
नही को पण आत्मा कदी निज कोटि जीभे !
जगमा पूरी गाई शके; प्रभुनी करुणा,
कई लाख झरा सरिता अने धोध रूपे
चिरकाल अखड आ विश्वे वही रही छे

• • •

वधे विश्वमा आपणे ऊंडी फरी वळिये
अने नाथनी आज्ञानु पालन नित्य करी,
वधी सृष्टिना चक्रोतणी गति साचविये,
तोय नाथनी शक्तिनो पार नथी जडतो

गुजराती कवितानी रचनाकळा, पृ १८९

पठन करता दरेक ताल वाक्यरचनाने विक्षेप करे ए रीते थडकाय छे सगीतस्वरोनो प्रयोग न करीए तो पण आ रचना जे ढाळमा साधारण रीते गवाय छे ते रागनु अनुसधान सतत राखवु पडे छे मारो तो एवो पण अनुभव छे के ए रागना मनमा उद्भावन विना आ रचनाना तालनो प्रारभ ज करी शकातो नथी एटले वनवेली जेवी होवा छता आ रचना वनवेली जेटली कार्यकर नीवडे एम हु मानतो नथी आ गेय छे, एनी चाल टूकी छे, अने तालनो थडको वधारे विक्षेपकारक छे

वधा मात्रामेळ सधिओमा आ दादादादा अने दादादा एटले के अष्ट-मात्रक अने षण्मात्रक सधिओमाथी बनेला आ चतुरक्षर अने त्र्यक्षर सख्यामेळ सधिओ ज मात्र सळग पद्यरचना माटे काम आपी शके सप्तमात्रक अने पच-मात्रक सधिओमाथी पण चतुरक्षर अने त्र्यक्षर सधिओ बनी शके ए जातनु वरुण आपणे 'मुखडानी माया लागी' ए गीतमा अने एना जेवा वीजा गीतोमा आगळ जोयु छे (गत पृ ५८६) ए गीतमा आगळ पण एवा ज चतुरक्षर सधिओ आवे छ मुखडु में जोयु तारु सर्व जग, थयु खारु, वगेरे त्य। चतुरक्षर सधिना अक्षरो अनुक्रमे लदादादानी मात्राओ अनुक्रमे पूरे छे, लने स्थाने गुरु होय तो ते लघु थाय छे, अने दाने स्थाने लघु होय तो ते पण गुरु थाय छ आ ज प्रक्रिया पचकलना बीजमा पण थाय छे पण तेना दाखला आपतो नथी पण प्रक्रिया अमुक अमुक गीतोमा रूढ थाय तो पण एनो चतुरक्षर के त्र्यक्षर सधि सळग पद्यरचनानु काम न आपी शके कारण के तेमा लघु आवे छे अने त्या पठन लचक खाय जे प्रवाही रचनाने अनुकूळ नथी अर्थात् आ जातना प्रयोगोमा मात्र चतुरक्षर दादादादा अने त्र्यक्षर दादादा ए ज काम आपी शकशे

आखा प्रश्नने समग्र रीते जोता एम जणाय छे के आपणा साहित्यमा सळग रचना तरीके कोई एक ज छद कदाच न वपराय अनेक कविओ जुदा जुदा छदो वापरे, अने वर्णन अने नाटक बन्नेने माटे पण भिन्नभिन्न छदो

वपराय नाटकने माटे हजी सुधीना बधा प्रयत्नोमा मने सौथी कावेल वनवेली' छद ज जणायो छे पण तेना पण खूब प्रयत्नो थवानी जरूर छे विस्तृत प्रयत्ना विना एनी खरी कसोटी थई शके नही वनवेलीमा अनेक रीते नवा नवा प्रयत्नो थई शके एवा मने तर्को थाय छे, पण ए प्रयोगो थाय नही ते पहला एने विशे अहीं कहेवु बहु फलदायी नथी अने लाबा वर्णनकाव्यो, महाकाव्यो, वीररस काव्योने माटे हु मानु छु अनेक छदो वपराशे एन माटे वनवेली बहु वपराशे एवु मने जणातु नथी एने माटे सस्कृत साहित्यमा नीवडेला अनुष्टुपने माटे मोटु क्षेत्र छे एम हु मानु छु पृथ्वीने माटे तो हवे कदाच भलामणनी पण जरूर रहशे नही, तेणे पोतानु क्षेत्र नक्की करी लीधु छ पण आ उपरात हु वसन्ततिलकाने पण आ क्षेत्रने माटे तक छे एम मानु छु तेमा लाबा लघुगुरना गुच्छो नथी तेमा लघुगुरनी सख्या एकसरखी छे ते मधुर छे तेम ज भारक्षम पण छे, सतत चाली शके तवा छे साधारण रीत गुजरातीमा लाबा प्रवाहनो निवाहं करवा १६नी नजीकनी सख्याना अक्षरोना वृत्तो आवे छे अनुष्टुप (अर्ध), पृथ्वी, मदाक्रान्ता, शिखरिणी, मनहर, कवित, श्री खबरदारनो महाछद ए बधामा अक्षरसख्या १६ के तेनी नजीकनी छ वसततिलका १४ अक्षरनो छे, घणो ज नजीक छे पण आ बधामा आपणे स्या मिश्रोपजातिने नामे जे छदोमिश्रणो प्रवाही छद तरीके प्रयुक्त थवा माड्या छे, ते कदाच सळग रचनाना दावा विना, घणु मोटु क्षेत्र कबजे करी ले तो ना नहीं हवे, तो आ मिश्रणमा ११थी माडीने गमे तेटली लाबी रचनाओ–पृथ्वी सुधीनी आव्याना दाखला छे छदमा एक पक्ति छदना सवादनु एकम छ एम गणता, गमे ते छदनी पक्ति, अने घणी जगाए यतिखडमा पण स्वतत्र मळ छ एम गणता, यतिखड पण आ मिश्रणमा आवी शके छ ए रीते आ मिश्रणना वैविध्यनो पार नथी तेमा अनावृत्तसधि अक्षरमेळ साथे आवृत्तसधि लगात्मक छदो पण आवे छे आ सवथी वाक्यभगीन माटे पुष्कळ अवकाश रहे छे अल्बत्त आ छदोवैविध्यन माटे वाचकवर्ग हजी जोईए तवा पावरधो थयो नथी गुजरातीमा हवे कविसमेलनो थाय छे, कविओ पोताना काव्यो गाई बतावे छ, पठन करी बतावे छ एवा प्रसगो वधता श्रोतावगने पण आ वैविध्यनो अभ्यास थई जाय ए बनवाजोग छ बाकी कविताना खरा रसियाओने तो आ ववि‍ध्य समजवु अने प्रयोजवु सहज साध्य थई गयु छे

अल्बत्त आ आखु क्षेत्र हजी प्रयोगो ज दखाए छे एनु भविष्य विशाळ छे अने कौतुककारी छ

*

बे शब्दो उपसंहार रूपे

बधा छदो अने छद प्रवाहोने समग्रताथी जोता उपसहार रूपे मने एक वात कहेवा जेवी लागे छे ते ए के छन्दनी पठनपद्धति बदलाता छन्दोविकासनी नवी दिशा ऊघडे छे भारतवर्षना प्राचीनमा प्राचीन छदो वैदिक छदो छे. एने में आ पुस्तकमा विषय कर्या नथी पण तेमाथी सस्कृत वृत्तो एटले के अनावृत्तनधि वृत्तो विकस्या छे ए स्पष्ट छे आ विकासना बधा कारणो आपणे जाणता नथी, पण वैदिक भाषा उदात्त-अनुदात्तादि स्वरो साथे पठाती हती, ते स्वरो, पछीनी सस्कृत भाषामाथी लुप्त थया, ए पठनपद्धतिना फरकने नवा वृत्तविकासनु एक कारण हु मानु छु

उपर कह्या ते सस्कृत वृत्तो सगीतना अमुक अमुक स्वरोमा पठाता, अने ए वृत्तोनु एकम श्लोक हतु, अने श्लोकना चरणो अने यतिखडो तेना अगो अने उपागो हता पठनमाथी अर्वाचीन कालमा सगीत नीकळी जता, अने सळग पठनपद्धति अस्तित्वमा आवता श्लोकबंध छूटी गयो, अने सळगतानी, दिशाए वृत्तोना मिश्रणो थया, वृत्तोना बधारणमा फेरफार थया वळी वृत्तो ए कृत्रिम रीते योजेला मगणादि अक्षरगणोथी घडाया नथी, पण लघुगुरुओना भिन्नभिन्न सयोजनोथी थयेला सधिओ तेना घटको छे ए समजाता, एक नवी दिशाए वृत्तोनो विकास थवो शक्य छे, जो के आ सधिओनी स्पष्ट समजण के स्वीकार विना, एना अवलबनथी सस्कृत वाङ्मयमा पण वृत्तविकास थयो छे ए आपणे जोई गया (प्रकरण ७)

आ वृत्तोथी तद्दन स्वतत्र छद प्रवाह जाति छदोनो छे ए छदोनो प्राण नियतसख्य मात्रासधि छे ए प्रवाह सस्कृत छदोमा भळता, लयात्मक मात्रामेळी छदो अस्तित्वमा आव्या, अने सस्कृत साहित्यमा तालबद्ध छन्दोगाननो प्रवेश थयो, एनी देखादेखी, अनावृत्तसधि अक्षरमेळ वृत्तो, जे गवाता छता स्वरूपत तालहीन हता, तेने तालबद्ध गानमा ढाळवानो प्रयत्न मौलाबक्षे कर्यो (पृ २९६) आवा प्रयत्नो मौलाबक्ष पहेला पण थया होय ए जयत सभवित छे, अने तेनो पुरावो कदाच सगीतशास्त्रना पुस्तकोमाथी मळी जावे

आ पुस्तकमा आवता मात्रामेळ छदो, सख्यामेळ छदो, अने पद के देशी ए सर्वना प्राणभूत सधिओ एक ज होवाथी, आ त्रणेय जाति छदोमा

स्वाभाविक रीते अंतर्भाव पामे छे. पण त्रणेयमा पठनपद्धति भिन्न छे अने मात्रागणनानी पद्धतिओ भिन्न छे तेथी ए त्रणेयनो विकास भिन्नभिन्न रीते थयो छे — थाय छे

मात्रामेळ रचनाओ भिन्न भिन्न सधिओना भिन्न भिन्न सख्याना आवर्तनोने अवलबीने विकसी आ सधिओ सगीतना तालमाथी निष्पन्न थया होवाने लीधे तुकान्तप्रास आवश्यक बनता, ए प्रासना अवलबने आतरप्रासनी हिकमतथी छदो नवी दिशाअे विकस्या अने सगीतना अनुसधानने लीधे मात्राओनी प्लुतिथी पण एक नवीन विकासरेखा आलेखाई

जेम सस्कृत वृत्तो सगीतरहित थई, तेमाथी सळग रचनानी दिशाए वृत्तो विकस्या, तेम मात्रामेळ रचनाओमाथी पण सगीत नीकळी जता, अमुक आवर्तनोनो पक्तिबध तूटता, परपरित रचनाओ शरू थई अानो विकास हजी चालु छे

पद अने देशीओ, मात्रामेळ रचनाथी बहु भिन्न नथी मात्रामेळ रचनाना नियमो तेमा शिथिल थाय छे, अने बीजी बाजु रचना सगीतप्रधान बने छे एटलो ज फेर छे अत्यारे सगीतनी दृष्टिए अनेक नवा प्रयोगो थाय छे पण तेनी पिंगळबाजु जोईए तेवी विकसती नथी केटलाक प्रतिभाशाळी कविओ सहज सूझथी नवी रचनाओ करे छे पण घणा तो हलका गीतोनी नकलथी भाषा पिंगल अने सगीत त्रणेयने बगाडे छे

सख्यामेळ छदोमा पण मात्रामेळ सधिओ ज छे, ए जोई गया पण एनी पठनपद्धति अग्रेजी ब्लॅन्कवर्सने अनुकूळ कराय छे ए एना विकासनी नवी दिशा छे अने ए दिशानी शक्यता घणी मोटी छे नवा नाटकोमा अने तेमा नही तो शेक्सपियरना नाटकोना भाषान्तरोमा एनो प्रयोग थवो सभवित छे में आगळ बताव्यु तेम सप्तकल सधिना चतुरक्षर सधिनी हजी अपूर्णस्ब सख्यामेळ रचनाओमा क्याक क्याक एक गुरुनी जगाए बे लघु आवे छे, तेम वनवेली जेवी सख्यामेळ रचनामा पण, अलबत्त विरल स्थाने, एक गुरुनी जगाए बे लघु मूकी शकाय के केम, अने ए दिशाए विकास शक्य छे के केम ते जोवानु रहे छे अनुष्टुप, जे मारी दृष्टिए सख्यामेळ होवानो घणो सभव छे, तेमा पुराणोना कर्ताओए पादमां क्वचित् नव अक्षरो मूक्या छे, अने अर्वाचीन युगना अनुष्टुपोमा पण एवा दाखला कदाच मळी आवशे मेळ साचवीने एम करी शकाय एमां मने सदेह नथी वळी आपणी मात्रामेळ कविताओमा क्वचित् पद्य बहार पक्तिना प्रारभमां एकबे गद्यना शब्दो आवे छे (प्राचीन गुजराती छदो पृ १६४) अत्याना

छप्पामा अखानु नाम एम क्याक पद्य बहार रही गयेलु जोवा मळे छे. 'वळी' 'अने' 'पण' जेवा अव्ययो एम गद्यमा बोली अथवा अनुक्त राखी कवितानो अर्थ घणी वार करवो पडे छे जेम के

नदनदनी वामलडी रे, विरहतणो भडारजी
मन हीसे छे हरि मळवाने पण पीडे लोकावार वेणु वाजे छे
(दशमस्कघ, कडवु ६२ मु)

अही 'पण' शब्द पद्य बहारनो छे आ बधी हिकमतो वनवेलीने काम लागे के नही ए जोवानु रहे छे कविने आ दिशामा घणा अखतरा करवाने क्षेत्र वहोळु छे, अने एम आपणा पिंगळने पण दायके दायके नही तो जमाने जमाने कईक उमेरवानु, कईक नवी व्यवस्था करवानु रहेशे पिंगळ वधियार विषय नथी, पण भाषानी पेठे, काव्यनी पेठे, विकासशील विषय छे.

सूचि

[छंदना नाम पछी फूदडी मूकी छे, विशेष नामो जाडा अक्षरमा छापेलां छे, अने पुस्तकनुं नाम एकवडां अवतरण चिह्नोमां मूकेलु छे.]